श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोषः

तृतीयो विभागः

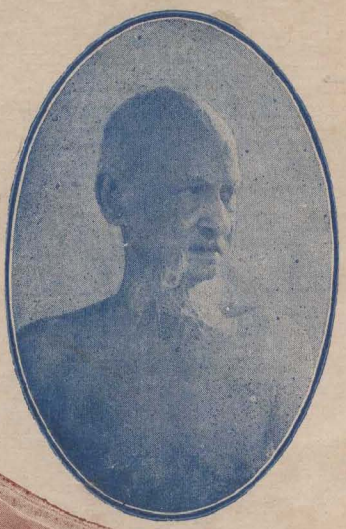

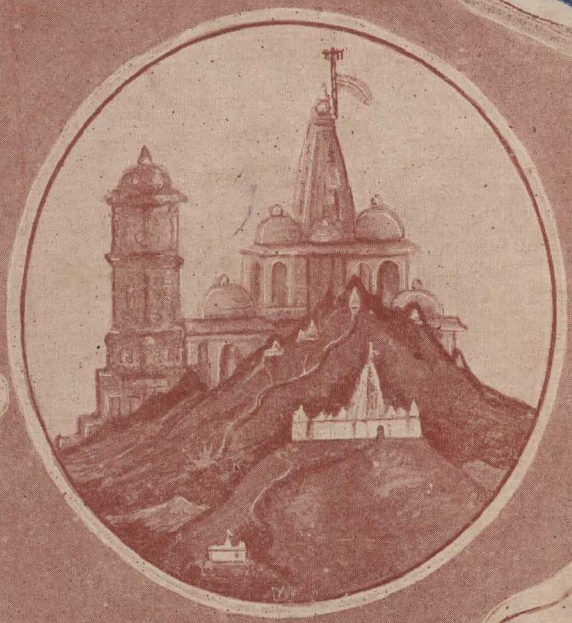

सङ्कलयिता—

आगमोद्धारक आचार्य

श्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी म.

* * *

चित्र परिचय—

हिन्दुस्तानना नकशामां आवेला

तीर्थोनो ख्याल

१ श्री सिध्धाचलजी

२ श्री तारंगाजीनुं जिनालय

३ श्री चीतोडगडनो कीर्तिस्तंभ

प्रकाशक—

शेठ देवचंद लालभाइ

जैन पुस्तकोध्धारक फण्ड

कार्यवाहक—

चोकसी मोतीचंद मगनभाइ

सूरत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥ णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

॥ श्रेष्ठि-देवचन्द्रलालभाई-जैनपुस्तकोद्धारे ग्रन्थाङ्कः ११

आगमोद्धारक-आचार्यश्रीआनन्दसागरसूरिसङ्कलितः—

अल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोषः ।

('ट'तः 'प'पर्यन्तो तृतीयो विभागः)

सम्पादकौ—आगोद्धारक—आचार्यश्रीआनन्दसागरसूरीश्वरान्तेवासिनौ
गणिकञ्चनसागर-प्रमोदसागरौ ।

संग्राहकः—आगमोद्धारकान्तेवासी मुनिगुणसागरः ।

प्रकाशकः—सुरतवास्तव्य-श्रेष्ठि-देवचन्द्रलालभाई--जैनपुस्तकोद्धारकोशस्य
कार्यवाहकः—चोकसी मोतीचन्द मगनभाई ।

वीराब्दः २४९५ । विक्रमाऽब्दः २०२५ । शकाब्दः १८९१ । खिस्ताब्दः १९६९
प्रथमं संस्करणम्] निष्क्रयः रूप्यसप्तकम् [प्रतयः ५००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इदं पुस्तकं ललितपुरे श्रेष्ठि-देवचन्द्रलालभाई जैनपुस्तकोद्धारसंस्थाया कार्यवाहक-
मोतीचन्द मगनभाई चोकसी इत्यनेन
जैनेन्द्रमुद्रणालये पं० परमेष्ठिदास जैन न्यायतीर्थ द्वारा मुद्रापितम् ।

अस्य पुनर्मुद्रणायाः सर्वेऽधिकारा एतद्भाण्डागारकार्यवाहकैरायत्तीकृताः ।

All Rights Reserved By The Trustees of the Fund.

Printed by :—
Pt. Parmeshthidas Jain at the Jainendra Press, LALITPUR, U. P.

Published by Sheth Devchand Lalbhai Jain Pustakoddhar Fund, Surat. By the Hon : Managing Trustee, Motichand Maganbhai Choksi.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Sheth Devchand Lalbhai Jain Pustakoddhar Fund Series No. 116

Shree Alpaparichit Saidhantik Shabda-Kosh

THIRD PART

—: Author :—

Agmoddharak Acharya Shree Anandsagarsurishwarji

—: Editor :—

Agmoddharak Shree Anandsagarsurishwarji's Antewasi
Gani Kanchansagar and Muni Pramodsagar

Collected:—
SHREE GUNSAGARJI
SHREE ANANDSAGARSURISHWARJI'S ANTEWASI

—: Publisher :—
Motichand Maganbhai Choksi

Managing Trustee For :—
Sheth DEVCHAND LALBHAI JAIN PUSTAKODDHAR FUND
SURAT.

First Edition
Copies 500

Price Rs. 7·00

Vikram Samvat 2025
Christation Era 1969

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

The Board of Trustees :

Shri Nemchand Gulabchand Devchand Zaveri
„ Talakchand Motichand „
„ Ratanchand Sakerchand „
„ Amichand Zaverchand „
„ Keshrichand Hirachand „
„ Motichand Maganbhai Choksi
Hon. Managing Trustee.

卐

संस्थानुं ट्रस्टीमंडलः—

श्री नेमचन्द गुलाबचन्द देवचन्द झवेरी
„ तलकचन्द मोतीचन्द „
„ रतनचन्द साकेरचन्द „
„ अमीचन्द झवेरचन्द „
„ केशरीचन्द हीराचन्द „
„ मोतीचन्द मगनभाई चोकसी
मेनेजिंग ट्रस्टी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

THE LATE
SHETH DEVCHAND LALBHAI JAVERI

Born 1853 A. D., Surat **Death 13th January 1906 A. D., Bombay**

શ્રેષ્ઠિ દેવચંદ લાલભાઈ ઝવેરી

જન્મ :
વિક્રમ સંવત ૧૯૦૯
કારતક સુદ ૧૧ સુરત.

સ્વર્ગવાસ :
વિક્રમ સંવત ૧૯૬૨
પોષ વદ ૩ મુંબઈ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय

आ अवसर्पिणी कालना दुःषम आरामां चरमशासनपति श्रमण भगवान् महावीर स्वामीना शासनमां शासनना पुण्यप्रतापे ते ते समये आचार्य भगवंतोए 'आगम' वगेरे साहित्यनो उद्धार, पुनरुद्धार करीने आ कलिकालमां वीसमी सदीमां जे विद्यमान राख्युं छे ते आपणुं अहोभाग्य छे, तेथी तेवा साहित्यने प्रकाशन करवा माटे अमारी आ संस्था सं० १९६४ मां प० पू० आगमोद्धारक गुरुदेवश्रीना उपदेशथी स्थपाई हती. आ संस्था मारफत अमे आज सुधी ११० ग्रन्थो प्रकाशित करी चूक्या छीए अने अमे ११६मां ग्रंथाङ्क तरीके श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोषना भाग ३ नामे आ ग्रन्थने सहर्ष प्रगट करीओ छीए.

तारक आगमोद्धारक गुरुदेवश्रीए आ कलिकालना विषम वातावरणमां आगमोनो बोध दुर्बोध न थई जाय ते हेतुए आगमोदयसमितिनी स्थापना करावी अने आगमवाचना आपववानुं शरू कर्युं. तेथी ते समितिए आगमो छपाववानुं कार्य शरू कर्युं. तेमज आ संस्थाए पण अनुयोगद्वार वगेरे आगमो छपाव्यां. ते वखते अने पछीथी आगमोद्धारक गुरुदेवश्रीए आगमोना जुदा जुदा विषयो तारवतां 'आगमकोष'नो पण एक विषय तारव्यो हतो अने कोष छपाववो हतो. आ विचारोत्पत्ति आजथी ४६ वर्ष पहेलां थई हती.

ते हेतुए प० ता० गुरुदेवश्रीना सदुपदेशथी नीचेना सद्गृहस्थो तरफथी नीचेनी रकमो अमारी संस्थाने पूर्वे मली हती. ते आ प्रमाणे—

१. अमदावाद निवासी शाह डाह्याभाई पितांबरदास रु० १५०१)
२. सुरत निवासी झवेरी सोभागचन्द सूरचन्द रु० १००१)
३. सुरत निवासी झवेरी साकेरचन्द सूरचन्द रु० ५०१)

आचार्यदेवनो विहार मालवा, बंगाल तरफ लंबायो होवाथी ते काय घणी मुदत सुधी पडी रह्युं हतुं (ते छपाववानुं कार्य) अमे आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीनी संमतिथी शरु कर्युं. आ निर्णय सं० २००४मां थयो अने कार्य आरम्भायुं हतुं.

आथी प० ता० गुरुदेवश्रीनी आज्ञानुसार पू० मुनिमहाराज श्रीगुणसागरजी पासेथी श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोषनुं प्रेस मेटर अमे मेलव्युं. ते श्रीसरस्वतीमुद्रणालय, सुरतमां छपाववा माटे आप्युं अने तेनुं संपादन करवा माटे मुनि महाराज श्रीकंचनविजयजी तथा श्रीक्षेमंकरसागरजीने विनंति करी. तेओश्रीए आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीना अनन्य पटधर, विद्याव्यासंगी, श्रुतस्थविर, आचार्य महाराज श्रीमाणिक्यसागरसूरीश्वरजी महाराजनो संयोग मल्यो त्यां सुधी प्रूफ वंचाववा पूर्वक अने ते पछीथी स्वतन्त्रपणे (ते मुनिवर्योए) आ संपादनकार्य छर्युं, तेथी अमो आ अद्वितीय आगमतलस्पर्शीज्ञाता, आगमतत्वपारदृश्वा, आगमज्योतिर्धर, शासनसंरक्षणबद्धकक्ष, तत्वशिरोमणि,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आगमाव्युछित्तिकर, शिलाताम्रपत्रोत्कीर्णागमकारापक, गंभीरानेकग्रन्थप्रणेता, अन्त्यसमये पक्षावधि अर्द्धपद्मासनस्थायी, ध्यानस्थस्वर्गत आगमोद्धारक आचार्यवर्य श्रीआनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराजे 'संकलित' करेलो श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोषनो 'ट थी प' सुधीनो त्रीजो भाग सहर्ष प्रकाशित करीए छीए.

आ संस्थाना प्रथम पुस्तकना संपादक तरीके पण आचार्यदेव श्रीआनन्दसागरसूरीश्वरजी म० हता अने बीजा सेंकडानी शरुआतना प्रथम पुस्तक तरीके पण तेओश्रीनो संकलित अमूल्य कोष नो प्रथम भाग २०१२मां प्रसिद्ध थयो.

कोषनी विशिष्टता अंगे संपादकीय निवेदनमां घणु कहेवानुं छे ते कहयुं नथी ते भविष्यमां कहेशे. छतां अमारी संस्थाए आना प्रकाशनमां वधारे रस लीधो तेनुं मुख्य कारण ए छे के आज सुधी छपायेला प्राकृतकोषोमां अभिधानराजेन्द्रकोष, पाइयसद्दमहण्णवो आदि केटलाक कोषो छे पण तेमां न्यूनाधिकरूपे विचार करतां उपयोगितामां बाध आवे छे—जेमके अभिधानराजेन्द्र कोष प्रमाणमां एटलो बधो मोटो छे के तेमांथी कोई शब्द शोधवा माटे वधारे परिश्रम पडे अने छपाईमां के संपादनमां त्रटी रहेवाने लीधे सूत्रो अने ते ते प्रकरणो घणा परिश्रम पछी पण जडतां नथी. पाईय-सद्दमहण्णवोमां जैनसैद्धान्तिक शब्दो उपर वधारे भार मूक्यो होय तेम जणातुं नथी. पण प्रस्तुत ग्रन्थमां कोई पण जैन के जैनेतर विद्वान् प्रचलित जैन पारिभाषिक शब्दोनो यथार्थ परिचय टूंकमां अने सहेलाइथी प्राप्त करी शके एवी तक छे, तथा मुनिराजो पण ग्रन्थसम्पादनना कार्योमां सहायता लइ शके तेम पण छे.

अमे इच्छिए छीए के आना प्रकाशनने विद्वज्जनो योग्य आदर करशे ज.

आ कोषने अंगे संज्ञाओनी समजणो तथा ते ते ग्रन्थोनां पानांओनी सूची पण संपादक पू० महाराजोए आपी छे. ते अंगे 'संपादकीय' वांचवा वांचकवर्गने अमारी विनंति छे.

प्रस्तावना संयोगवशात् अत्यारे आपी शक्या नथी, पण आ पछीना चोथा भागमां जरूर आपशे एवी आशा राखीए छीए.

आ त्रीजा भागना प्रकाशन कार्यमां जे जे महानुभावोए अमने अने संपादकने मदद करी होय ते बधानी संस्था ऋणी छे.

वि० सं० २०२५
ज्येष्ठ सुद ८
ता० २५-५-६९

लि० भवदीय
मोतीचंद मगनभाई चोकसी
विगेरे ट्रस्टिओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम भागनु संपादकीय वक्तव्य

卐

"ॐ णमो चउवीसाए तित्थयराणं उसभाई महावीरपज्जवसाणाणं । णमो गोयमाई हामुणीणं । इक्कारस अंगाइं, बारसुवंगा पयन्नगा दस य । छेया छ चऊ मूला, नंदी अणुओगाय पणयाला ॥१॥"

साहित्यमां ऊंडा ऊतरेला रसिकोने विविध विषयोना बोधनी आवश्यकता रहे छे. जे विषयनो बोध जे मनुष्यने होवो जोइए ते बोध सिवायनो मनुष्य ते विषयने ग्रहण करवा जाय तो अज्ञानी वांदरानी जेम "मने पकडयो-मने पकडयो" जेवी एनी दशा थाय. तेथी ते विषयना बोध माटे ते विषयना शब्दना ज्ञाननी, अर्थना ज्ञाननी अने तेना भावार्थना ज्ञाननी, अर्थात् ते पदार्थना शब्दार्थ, भावार्थ अने ऐदंपर्यायनी जरूर छे. जो ते समइया सिवाय प्रवृत्ति कराय तो भोजन करवा बेठेलो 'सैंधव' मगावे अने 'घोडो' लावे तेना जेवुं थाय.

शब्दना बोधने करनारुं जे साहित्य होय तेने 'शब्दकोष' आदि शब्दथी संबोधी शकाय. एवा 'शब्दकोषो'नी उत्पत्ति कां तो आगमोमां आवेला पर्यायो रूपे आपी होय कां तो निघण्टु जेवा 'शब्दकोषो' रूपे होय, अथवा बीजा घणाए 'शब्दकोषो' रूपे होय, आथी दरेक भाषावार अनेक 'शब्दकोषो' योजाया छे अने योजाय छे.

जैन दर्शन माटे तो ते शब्दोना अर्थ टीकाकारोए प्रकरणना आधारे जे रीते मंजूर कर्या छे ते रीते ज लेवा योग्य छे. शब्दो यौगिक, रूढ अने मिश्र एम साहित्यकारोए मान्या छे. ते यथार्थ छे. आथी जैन दर्शनमां ऊंडा उतरवावालाने पण ते बोधनी जरूर तो छे ज, तेथी तेवा प्रकारना 'शब्दकोष'नी जरूरियात मानवी'ज पडे. आ उद्देश लक्ष्यमां लइशुं तो जैनदर्शनमां आवता शब्दोना अर्थवाला अनेक कोषो होवा छतां पण आ नवा कोष माटे स्थान छे ज.

संकलनाकार:—ग्रन्थकार स्वतन्त्र लेखिनीथी जे ग्रन्थ करे ते तेमनी ज कृति कहेवाय छे. परन्तु बीजा ग्रन्थोमांथी एकत्रित करेलुं होय तो आ बधुं बीजा ज ग्रन्थोमांनुं छे, एम जणाववा माटे पोते संकलना करी छे एम जणावे छे. तेथी महत्वपूणे अनेक जैन ग्रन्थोना संपादक अने संशोधक, तेमज संस्कृत, प्राकृत अने गुजरातीमां विविध विषयोनी कृतिओ रचनारा, आगमोद्धारक आचार्यश्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराजे सैद्धान्तिक शब्दोनी आ कोषमां संकलना करी छे, आथी आ ग्रन्थना 'संकलनाकार' प० ता० आममोद्धारकगुरुदेवश्री छे.

आगमोनुं मुद्रण-वांचना:—आ कलिकालमां विक्रमनी वीसमी सदीमां एवो पण एक समय आव्यो के ज्यां शास्त्रीय बोध ओछो थवा लाग्यो अने हस्तलिखित प्रतो वांचवानी तेमज वांचवा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माटे प्रतो मेलववानी पण मुश्केलीओ ऊभी थई. आथी जो लखाण छापेलुं मली जाय अने तेनो जो बोध अपाय तो ते हितावह निवडे. आ हेतुथी आगमो छपाववा अने तेनी वाचनाओ आपवी एम प० पू० आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीनी प्रेरणाथी नक्की थयुं. अने संपादननुं कार्य अने वाचनानुं कार्य आगमज्योतिर्धर, अप्रमादी, आगमोद्धारकश्रीने ज करवानुं थयुं. आथी जेम जेम आगमो छपाता तेम तेम पाटण आदि स्थलोए 'वाचनाओ' अपाई अने तेनो सेंकडो साधुसाध्वीओए लाभ लीधो.

आगमो रूपी सागर अने तेमां आवता विषयो पण ए सागरना उपसागरो जेवा छे. परंतु ते अखात रूपे छूटा छूटा पडया होय तो उपसागर रूपे देखाय, तेथी ते बधा प्रवाहो एकत्र करी जुदा जुदा उपसागरो बनाववा. आ मुद्दाए जेम आगमो छपाता गया तेम तेम वर्तमान श्रुतना ज्ञाता आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीए—आगमोमां जुदा जुदा विषयो जणावनारा बावन (५२) अंको पडया अने 'शब्दकोष' माटेना शब्दो अंगे पण 'फूल'नुं एक निशान कर्युं. ए निशानो एवां हतां के—अङ्कोमां कया शब्दथी क्यां सुधीनो भाग लेवानो छे ते जणाववा माटे आदिमां अने अन्तमां निशाननी साथे अङ्क मूकवामां आवतो हतो. ज्यारे आ कोषना शब्दोने अंगे फूलनुं निशान मूकवामां आवतुं हतुं. तेमां पण खूबी करवामां आवती हती के—जो शब्द एक अक्षरनो होय तो एकनी नीचे, बे नो होय तो बे नी बच्चे, यावत् जेटला अक्षरनो होय तेना मध्यबिन्दुए निशान मूकवामां आवतुं हतुं. आवी रीते शब्दोनी संकलना थई, आ बधा विषयो अने शब्दो लहिया द्वारा उतराईने एकत्रित करावता हता.

नाम—आ कोषनुं नाम 'श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोष' राखवामां आव्युं छे. कारण ए छे के—आ कोषमां आगमोमां वपरायेला तमाम शब्दो नथी, परंतु जे शब्दनो परिचय अल्प छे, तेवा आगमगत—सैद्धान्तिक शब्दोनो आमां संग्रह करवामां अवेलो छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

અર્પણ

શ્રી આગમોદ્ધારક

આપે જીવનની અંદર પ્રભુના માર્ગની શ્રદ્ધામાં સ્થિર કરવાનું સાધન એવું જ્ઞાન, જગતને આપવાને માટે અનોખો ઉદ્યમ કર્યો અને જગતને શબ્દ અને અર્થથી લેખિત અને મૌખિક તે આપ્યું અને આપવાની અમારા જેવી અનેક સંસ્થાઓ સ્થપાવીને જગતના જીવોને સમ્યગ્દર્શન, જ્ઞાન અને ચારિત્રના માર્ગમાં સ્થિર કરવાનું પ્રબળ બળ આપ્યું, એવા આપશ્રીને અમે આ ગ્રંથ અર્પણ કરીએ છીએ.

: ટ્રસ્ટીઓ :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

આચાર્ય શ્રીઆનંદસાગરસૂરીશ્વરજી મહારાજ

સંપાદિત આગમીક કૃતિઓ

::

છેદ સૂત્રાણિ

કલ્પસૂત્ર (બારસા)	૧૯૭૦	કલ્પકૌમુદિ	૧૯૯૩	કલ્પસમર્થન	૧૯૯૪
કલ્પસુબોધિકા	૧૯૬૭			કલ્પસુબોધિકા	૧૯૯૫

અંગાનિ

આચારાંગચૂર્ણિ ૧૯૯૮
આચારાંગસટીક ૧૯૭૨
સૂત્રકૃતાંગચૂર્ણિ ૧૯૯૮
સૂત્રકૃતાંગસટીક ૧૯૭૩
સ્થાનાંગસટીક ૧૯૭૫
સમવાયાંગસટીક ૧૯૭૪
ભગવતીસટીક (અભય૦) ૧૯૭૪
ભગવતીટીકા (દાનશેખર) ૧૯૯૨
જ્ઞાતાધર્મકથા સ. ૧૯૭૬
ઉપાસકદશા સ. ૧૯૭૬
અંતગડ-અનુત્તર-વિપાક સટીક ૧૯૭૬
પ્રશ્નવ્યાકરણસટીક ૧૯૭૫
અંગ-અકારાદિ ૧૯૯૩

પયન્ના

તંદુલવૈચારિકસટીક
ચતુઃશરણસાવચૂરિક
૧૯૭૮
ચતુઃશરણાદિમરણ-સમાધ્યન્તપ્રકીર્ણદશક
૧૯૮૩
ગચ્છાચારપ્રકીર્ણક સટીક ૧૯૮૦

ઉપાંગાનિ

ઔપપાતિકસટીક ૧૯૭૨
રાજપ્રશ્નીયસટીક ૧૯૮૧
જીવાજીવાભિગમ ૧૯૭૫
પ્રજ્ઞાપનાતાત્પર્યવૃત્તિકસટીક (મલય૦) પ્રથમ
પ્રજ્ઞાપનાસટીક (હારી૦) ૨૦૦૩
સૂર્યપ્રજ્ઞપ્તિસટીક ૧૯૭૬
જંબૂદ્વીપપ્રજ્ઞપ્તિ સટીક ૧૯૭૬
ઉપાંગપ્રકીર્ણક વિષયાનુક્રમાદિ ૨૦૦૧

મૂલસૂત્રાણિ

આવશ્યક સટીક (હારી) ૧૯૭૨
આવશ્યક સટીક (મલય૦) ૧૯૮૪
આવશ્યકચૂર્ણિ ૧૯૮૭
ષડાવશ્યકસૂત્રાણિ ૧૯૯૨
પાક્ષિકસૂત્ર સ. ૧૯૬૭
વિશેષાવશ્યક (કો.આ) ૧૯૯૩
ઓઘનિર્યુક્તિસટીક ૧૯૭૫
દશવૈકાલિકચૂર્ણિ ૧૯૮૯
દશવૈકાલિકસટીક ૧૯૭૪
પિંડનિર્યુક્તિસટીક ૧૯૭૪
ઉત્તરાધ્યયનચૂર્ણિ ૧૯૮૯
ઉત્તરાધ્યયનસટીક ૧૯૭૨

શ્રીઆગમરત્નમંજુષા (૪૫ આગમો મૂળ નિર્યુક્તિયુક્ત સં. ૧૯૯૯)

નંદીસૂત્રચૂર્ણિ
નંદીસૂત્રવૃત્તિ (હારી) ૧૯૮૪
નંદીસૂત્રસટીક (મલય૦) ૧૯૮૦

અનુયોગદ્વાર ચૂર્ણિ
અનુયોગદ્વારવૃત્તિ (હારી) ૧૯૮૪
અનુયોગદ્વાર સટીક મ૦ હેમ૦ ૧૯૭૨

નંદ્યાદ્યકારાદિ ૧૯૮૪
આગમીયસુતાક્વલ્યાદિ ૨૦૦૫

(શે. દે. જ્ઞા. જે. પુ.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ 'श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोष' माटे हवे पछी 'अ. सै. श.' एवी संज्ञानो उपयोग कराशे.

शब्द अने तेना अर्थो—अ. सै. श. मां जे शब्दो जणाव्या छे ते शब्दो घणे भागे तो जेवा छे तेवा ज राखवामां आव्या छे. अर्थात् अकार अने थोडा आकार सिवायना बाकी बधा शब्दो जे मूलना छे ते अर्धमागधीमां छे अने टीकाकारोए टीकामां आपेला जे शब्दो जे भाषामां छे ते ज भाषामां मोटे भागे कायम राख्या छे, एटले के अकार अने थोडा आकारमां आवेला संस्कृत शब्दो अर्धमागधीमां पण आप्या छे.

शब्दोना बहुश्रुत टीकाकारोए भिन्न भिन्न टीकाओमां भिन्न भिन्न अर्थो कर्या छे, तेथी भिन्न भिन्न स्थलोमांथी ते ते अर्थो लईने ते ते टीकाकारोना अर्थोने कायम राख्या छे. आ कारणथी आ अ. सै. श. मां छेदना त्रगना ज शब्दो लेवामां आव्या छे. तेमज बृहत्कल्प जेवा कोइकमां आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीना हाथना उतारेला शब्दो छे. तेमां टीकाकारोना आधारे अर्थोनुं टुंकाववापणुं पण छे.

आ अ सै. श. मां भिन्न भिन्न शब्दो व्याकरणना प्रयोगो रूपे, कोई तेवां नामो रूपे, कोई इतिहास तरीके, कोइ भूगोल तरीके तथा कोई पर्यायो तरीके पण आव्या छे.

काचो खरडो—शरूआतमां लहियो एकेक आगम लईने कापलीमां ते शब्दने ऊतारतो अने टीकाकारनो बतावेल अर्थ लक्ष्यमां आवे तो ते अर्थ लखतो. आवी रीते ऊतारेली छुटी कापलिओने प० पू० आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीना विनयगुणसंपन्न, तीक्ष्णबुद्धि, स्वर्गस्थ मुनिराज श्रीमहेन्द्रसागरजीए अकारादि क्रममां गोठवी कागलमां सलंग चोटाडीने तैयार करी ते उपरथी ए लखाण लहिया आदि द्वारा लखावीने तेमज तेओश्रीए (श्रीमहेन्द्रसागरजीए) पोते पण लखीने काचो खरडो तैयार कर्यो.

प्रकाशननो तैयारी—आ अ. सै. श. ने छपाववानी प० ता० आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीनी घणी इच्छा हती. तेथी लगभग त्रण दशका उपर सद्गृहस्थो पासेथी अ. सै. श. ना प्रकाशनने अंगे रूपिइया शेठ देवचन्द्रलालभाई जैन पुस्तकोद्धारक फंडने अपाव्या हता. ते पछी वि० २००४ मां ते संस्थाए आ अ० सै० श० छपाववा माटे ठराव कर्यो. आथी मुद्रणपुस्तिका करवानुं कार्य पू० स्व० मुनिश्रीमहेन्द्रसागरजी म० ना शिष्य मुनिश्रीसौभाग्यसागरजीने (तेओश्रीना लघुबन्धुने) सोंपायुं. तेथी तेओ दरेक आगमना ते ते पत्रमां ते ते शब्दो मेलवता अने तेना अर्थोने पण मेलवता. तेमज ज्यां टीकाकारना शब्दो लेवाना हता त्यां प० ता० आगमोद्धारकगुरुदेवश्री पासेथी तेना मूल शब्दो बनावी लेता अने जे शब्दोना अर्थ टीकाकारे न आप्या होय तेना अर्थो पण पूछी लेता. आवी रीते तेमणे लगभग बार फर्मा सुधीनुं मेटर तैयार कर्युं.

उपर जणावेली संस्था (दे+ला) ना ट्रस्टीओए प० ता० आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीनी जीवन पर्यंत सेवा करनार मुनिराज श्रीगुणसागरजी महाराज पासेथी आ (कोपीनुं) लखाण मेलव्युं अने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छपाववा माटे प्रबंध कर्यो. तेमज अमने संपादन माटे विज्ञप्ति करी. तेथी अमे आ संपादननुं कार्य शरू कर्युं. साथे साथ मेटर पण तैयार करवा मांडयुं.

सम्पादन पद्धति—दरेक दरेक शब्द ते ते आगमनी साथे मेलववो अने तेमां जणावेल अर्थ मेलवी लेवो. ते रीते कार्य करतां केटलाक आगमोना अंगे शब्दोना प्रश्नो उभा थया. तेमां श्रीव्यवहारसूत्रना त्रीजा उद्देशाना शब्दो हता पण ते सिवायना बाकीना उद्देशाना शब्दो न हता. तेथी प० ता० आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीए व्यवहारनी आखी प्रतमां निशानो करी आप्यां आथी तेनी कापलीओ उतारी तेना शब्दोनो उमेरो कर्यो. आगल जतां बीजा पण आगमोना शब्दो नथी एम देखायुं, तेनी तपास करतां नंदी, अंतगड, अणुत्तरोववाइय, उपासकदसा, रायपसेणीय अने निरया वलिना शब्दो न हता. तेथी तेना शब्दो पण उतार्या. अने ते शब्दो धीरे धीरे मेलववामां आव्या. आगल चालतां नायाधम्मकहाना शब्दो बिलकुल नथी एम मालम पडयुं. नायाधम्मकहानी प्रत तो प० ता० आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीनी निशानवाली प्राप्त न थई. तेमज जे समये शब्दो नथी तेवी शंका थई ते समये तो अमारू पुण्य पण न हतुं के पू० गुरुदेवश्री 'विद्यमान' होय, आथी अमे अमारी मंदमति अनुसारे आ आगमनी सटीक प्रतमां निशानो कर्या, शब्दो तारव्या अने ते तारवेला शब्दोने कोषमां स्थान आप्युं.

आ अ० सै० श० मां अग्यार अंग ११ बार उपांग, त्रण (बृहत्कल्प, व्यवहार अने निशीथ) छेदसूत्र, चारमूल, ओघनिर्युक्ति, विशेषावश्यक, नंदी, अनुयोगद्वार अने दशवैकालिकचूर्णीना शब्दोनो संग्रह करवामां आवेल छे. तेमज दशाश्रुतस्कंध, दशप्रकीर्णक, पउमचरिय, उपदेशमाला अने तत्त्वार्थसूत्रना केटलाक शब्दो पण लेवामां आवेल छे.

संज्ञापत्रक—अ० सै० श० मां जे शब्दोनो संग्रह करवामां आव्यो छे अने तेमां आगमो शास्त्रो वगेरेनी जे संज्ञाओ आपवामां आवेली छे, ते संज्ञाओना स्पष्टीकरण माटे तेमज लीधेली प्रत--टीका वगेरे शेनी छे ते जणाववा अने तेना संपादक तथा प्रकाशक जणाववा एक संज्ञापत्रक नामथी प्रकरण राख्युं छे. तेमज बीजी बीजी प्रतोनी साथे पण शब्दो मेलववानुं शक्य बने ते उद्देशथी पत्रांकसूची नामथी एक प्रकरण आप्युं छे.

वर्णक्रम—अ० सै० श० मां अनुस्वारने पहेलुं स्थान आपवामां आव्युं छे. कारण के शरूआतमां प० ता० आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीए आ रीते शरू करवानुं जणाव्युं हतुं. आथी ए पद्धति कायम राखी छे. पण आनो हेतु हमे जाणी शक्या नथी, तेथी अत्रे हेतु आप्यो नथी.

विद्वज्जनो प्रत्ये—सुज्ञ विद्वज्जनो ? अमो गुर्जर भाषाना संपादनना कार्यमां अनुभव मेलवतां संपादनमां आगल वध्या छीए. ते रीते संस्कृत अने प्राकृतना संपादनमां प्रवेश करता थया. एवा समयमां प० ता० गुरुदेवश्रीनी सेवाना प्रतापे अमने 'अ० सै० श०' नुं संपादन.....मलयुं आथी अमे ते कार्यमां रस लीधो ने संपादन कार्य शरु कर्युं. आथी पंडितोनी अपेक्षाए के विद्वानोनी अपेक्षाए अमारा आ संपादनना अंगे जे सूचनाओ करवी उचित छे ते अमे विद्वज्जनोनी समक्ष रजू करिए छीए.—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१ मूल शब्दो विभक्तिवाला तेम विभक्ति वगरना अेम बन्ने प्रकारना छे. तेथी ते जे लिंगनो शब्द होय ते शब्द तेवी तेवी विभक्तिथी ते ते लिंगमां समजी लेवो. जेमके--अंकुर (पृ० १, २) अंकूसयं (पृ० १, २,) इत्यादि (कोई एक शब्दकोषमां विभक्ति सहित शब्दो नथी तेवुं पण प्राये अमारा जाणवामां छे.)

२ जो के शब्दो बधा एक जातना विभक्ति विगर अगर एक विभक्तिथी भेगा लेवा जोईए, परंतु आमां भिन्न भिन्न लेवाया छे. जेमके-अंकावइ (पृ० १, २) अंकावइओ (पृ० १, १) इत्यादि.

३ वैकल्पिक शब्दोना विकल्पनो साचववा माटे अर्थात् तेवा प्रयोगोने साचवी राखवा माटे आमां भिन्न लेवाया छे. जेमके—अंकवडेंसए (पृ० १, १), अंकावडिंसए (पृ० १, १) इत्यादि.

४ टीकाकार महाराजे जे शब्दोना प्रयोगो टीकामां कर्या छे ने ते शब्दो मूलमां नथी तेवा शब्दोनुं प्राकृत जे कौसमां अपायुं छे ते प० पू० आगमोद्धारक गुरुदेवश्रीने पूछीने मुनिश्री सौभाग्यसागरजीए आपेलुं छे. वली तेवा शब्दो कोई वखत शरुआतमां अपाया छे अने कोई वखत संस्कृत शब्दनी पछी पण अपाया छे. तेनी बन्ने बाजुअे बनतां सुधी क्रौंस आप्यो छे. जेमके (अंकील्ल) नर्तकः (पृ० १, १) अंगारः (इंगाल) (पृ० २, २) इत्यादि.

५ शरुआतमां तो शब्दोनां अर्थो अने शब्दोना संग्रहनी शैली नियमित रही नथी. पण जेम जेम अनुभव थतो गयो अने तेना अभ्यासमां वधारो थतो गयो तेम तेम पद्धतिमां सुधारे थतो गयो छे. छतां एटलुं कहेवानी जरूर छे के पहेला भाग करतां बीजा भागमां पद्धती इत्यादिनो सुधारो मलेला अनुभव प्रमाणे करी शकीशुं एवी आशा छे.

६ (१) अध्ययन, (२) विशेषनाम, (३) वनस्पतिना नामना अंगे तेनी साथे अर्थना रूपमां संस्कृतमां अपायुं छे. जेमके (१) अंडे--विपाकश्रुताद्यश्रुत० (पृ० २, २), (२) अंगारवई-अंगारवती संवेगोदाहरणे० (पृ० २, २), (३) अंकोल्ल-वृक्षविशेषः (पृ० २, १) इत्यादि.

७ टीकाकारोए शब्दोना जे जगो पर अर्थ नथी कर्या तेवा शब्दो पण अत्रे अर्थ वगर अपाया छे. जेमके ओल्ली (पृ० २२४, २), उवट्टगा (पृ० २०७२) इत्यादि, वली आ शब्दोना अर्थो जो कदाच मेलवी शकीशुं तो परिशिष्टमां आपवा विचार छे.

८ देशी शब्दोना अंगे 'देशीय' अगर 'देशी' एवुं कौसमां लखायुं छे. अर्थात् टीकाकारे आपेलुं कायम राख्युं छे, जेमके-उत्तइउ (देशी०)-गर्व्वे (पृ० १८७, १)

९ चूर्णिकार महाराज चूर्णिनी अंदर प्राकृत अने संस्कृत एम बन्ने भाषाना प्रयोगो करे छे. तेथी चूर्णिना शब्दोना अर्थोमां प्राकृतना अने संस्कृतना बन्नेना प्रयोगो छे. परन्तु बहुधा तो प्राकृत ज होय छे.

१० आ अ० सै० श० मां एवा पण शब्दो छे के जे अभिधानराजेन्द्र के पाइयसद्दमहण्णवोमां न पण होय.

अ० सै० श० नुं संपादन कार्य शरू थतां सुरतमां हता त्यां सुधी एक वखतनुं प्रूफ जोई

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आपवा प० ता० आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीना एकैव पट्टधर, श्रुतवारिधि, शास्त्रतत्त्वदर्शी, श्रीगच्छनायक, आचार्यश्रीमाणिक्यसागरसूरीश्वरजी महाराजे कृपा करी हती.

ए रीते संपादननुं कार्य चालतुं हतुं, तेमां प्रथम भागनुं पंदर आनी काम थई गया पछी सूरतथी दक्षिण तरफ बिहार थवाना कारणे अने प्रेस आदिना प्रतिकूल संयोगोमां अमारी अनिच्छाए पण नहि जेवा कार्यमां वर्षोनां वर्षो वीती गया बाद आजे आ श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोषनो 'प्रथम भाग' विद्वानोना करकमलमां उपस्थित करी शक्या छीए.

आ प्रथम भागमां 'सम्पूर्ण स्वरो' आपवामां आवेला छे. स्वरोमां तेमज बीजा रही गयेला 'शब्दो' तथा देशीनाममालाना शब्दो श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोष पूर्ण थतां 'परिशिष्ट' तरीके आपवा विचार छे.

प० पू० आगमवाचनादाता, देवसूरतपागच्छसामाचारीसंरक्षणकटिबद्ध, अनेकग्रन्थोना प्रणेता, वादीमानमर्दक, चरमशासनपति महावीर परमात्माना शासनमां आगममंदिरोना संस्थापक, जैनआनन्दपुस्तकालयादि संस्थाना संस्थापक, सैलानानरेशप्रतिबोधक, युगप्रधानसदृश, वर्तमान श्रुतना ज्ञाता, स्वआराधनार्थे आराधनामार्गकरनारा, मौनपणे रही अर्धपद्मासने स्वर्गे संचरनार, प० पू० आगमोद्धारक आचार्यवर्यश्रीआनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराजनी पुनित सेवाना प्रतापे जे कंई बोध शक्ति मेलवेल छे, ते आधारे अमे अमारी बुद्धि केवलीने कालजीपूर्वक आ श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिक-शब्दकोषनुं संपादन कर्युं छे.

मुनिराज श्रीअभयसागरजी महाराजे संजोग मलतां आमां मार्ग बताव्यो छे. तेओश्रीने तेमज प्रो० हीरालाल र० कापडियाने पण हमे अत्रे भूलता नथी.

आमां जे अशुद्धिओ जणाई छे तेनुं शुद्धिकरण पण आप्युं छे, छतां विद्वज्जनो प्रति अमारी प्रार्थना छे. के क्षति देखाय तो जणाववा उदारता दाखवे.

वीर सं० २८८०, वि० सं० २०१०
जेष्ठ पूर्णिमा
हींगनघाट
(मध्यप्रदेश)

आगमोद्धारकउपसंपदाप्राप्त शिष्याणु
कंचनविजय तथा
आगमोद्धारक शिष्यलव
क्षेमंकरसागर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वितयभागगतं स्वरूपम्

॥ णमो चउवीसाए तित्थयराणं उसभाइमहावीरपज्जवसाणाणं ॥

अमोने जणावतां हर्ष थाय छे के आगमोद्धारकश्रीए संकलित अल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्द-कोषना प्रथम भागनुं संपादन कार्य अमोने (मने तथा स्व० मुनिश्री क्षेमंकरसागरजीने) मल्युं हतुं अने ते प्रथम भागनुं कार्य अमे पूर्ण कर्युं हतुं. तेना बाकी रहेला बीजा भागोनुं संपादन करवानुं कार्य मने सं० २०१५ मां मल्युं. ते कार्य में यथाशक्य शरु कर्युं, एना परिणामे आजे तेनो बीजो भाग 'क थी झ' सुधीनो पूर्ण कर्यो छे अने तेनी आगलनुं सम्पादन कार्य पण चालु ज राख्युं छे.

अमोए यत्किंचित् आ कोषना अंगेनुं मार्गदर्शन प्रथम भागमां सम्पादकना वक्तव्यमां आप्युं छे, तेथी अत्यारे ते अंगे कांई विशेष कहेवुं नथी, पण त्रीजा के चोथा भागमां ज्यारे प्रस्तावना आपीशुं ते वखते लखवानी इच्छा छे.

प्रसंगवशात् एटलुं जणाववुं जोइए के—अमारी सम्पादक बेलडिए 'क थी झ' सुधीनुं मेटर लगभग तैयार कर्युं हतुं पण नवी प्रेस कोपी बनाववानी हती अने कांईक सुधारो करवानो हतो. एटला पूरतुं ज ते अधूरूं हतुं. एटले आ बीजा भागनी अंदर तो रंधायेलुं खावानुं हतुं. पण टथी मांडीने मेलवेला, अधूरा मेलवेला, नहि मेलवेला, बधाय अक्षरोनुं कार्य मारे करवानुं हतुं. कारण के मारा जोडीदार मुनिश्रीक्षेमंकरसागरजी म० सं० २०११ ना चैत्र वदि: ०, नी रात्रे पोणा अगिआर वागे झेरी जानवरना करडवाथी काल धर्म पाम्या, एटले वैशाख महिनाथी जवाब-दारी मारा एकलाने शिरे आवी. परंतु गुरुदेवश्रीना पुण्य प्रतापे ते जवाबदारी हुं उठावी शक्यो अने आ बीजा भागनुं संपादन करी शक्यो. एटले हवे ट थी पचास टका तैयार करेला मेटरने तैयार करवुं अने सम्पादन करवुं ए बधीए जवाबदारी मारे शिर रही.

आ भागनी अंदर 'क थी झ' सुधीना अक्षरो आपेला छे. पण त्रीजा अने चोथा भागमां 'ट थी ह' सुधीना अक्षरो अने ज्ञाताजी विगेरेना तेमज बीजा मेलवतां भिन्न भिन्न निकलेला शब्दो तेमज व्याकरणना 'उणादिशब्दो' अने देशी नाममालाना शब्दो परिशिष्टमां आपवानुं विचार्युं छे.

संज्ञापत्र, पत्रांकसूची अने शुद्धिपत्र आमां आपवामां आव्यां छे. वली शेठ देवचन्द लालभाई० (आ फंडना) नो देवानंदाङ्कमांनुं मेटर पाना १ थी ४४ आपवामां आव्यां छे. तेमां पाना १ थी १० भेट प्रचार योजना, पाना १ थी ३९ प्रसिद्ध थएला ग्रन्थोनी यादी अने ४० थी ४४ ग्रन्थ प्रकाशन नवी योजना एटलुं आपवामां आव्युं छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संकलनकार परमगुरुदेवना चरणे तो आ सरजः मस्तक सदाए नमेलुं ज छे.

मने आ संपादननी अंदर मदद करनार मुनिश्रीप्रबोधसागरजी तथा मुनिश्रीप्रमोदसागरजी ने (गुरुशिष्य वेलडीने) याद करूं छुं. तेमज बीजाओए मने सहाय करी होय ते बधानो हुँ ऋणी छुं. एक वात जरूर याद देवी घटे छे के मने उत्साह आपवामां भाई श्रीकेशरीचन्द झवेरी तो छे ज.

सं० २०२०
पोष वद १ मंगलवार
ठि० नवरंगपुरा, पोस्ट पासे,
जैन उपाश्रय
अमदावाद नं० ९

लि०
आगमोद्धारक उपसंपादप्राप्त
चरणरेणु
कंचन.

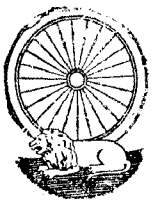

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृतीय भागस्य यत्किंचित्

नमो वीतरागाय

आशा अमर छे पण धारेलुं कार्य थतुं नथी पण थाय तेनाथी संतोष मानवो ज पडे छे. ए हिसाबे 'श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोषनो त्रीजो भाग' अमे अत्रे तैयार करी संपादन करि इवया छीए. आ कोषना पहेला बीजा भागमां आपेल 'संपादकीय अने स्वरूपम्' पूर्वनो सम्बन्ध जोडवा अत्रे आपेल छे. जो के प्रस्तावना जेवुं लखवुं छे, उमंग छे, तेवुं साहित्य पण भेगुं कर्युं छे पण अनुकुल समरना अभावे तेने मुलतवी राखी चोथा भागमां लखवानो विचार राख्यो छे.

आ भागमां 'ट' थी 'प' शुद्धिना शब्दो आव्या छे, ज्यारे चोथा भागमां 'फ' थी 'ह' शुद्धिना शब्दो उपरांत 'रहि गयेला शब्दो' तेमज 'देशी नाममाला वगेरेना' शब्दो पण लेवाना छे. जो चोथा भागमां न समाय तो आगल विचाराय.

केशरीचन्द हीराचन्द झवेरीए तैयार करावेल 'श्रुतस्थवीरोनुं लखो अत्रे लेवाया छे.

सम्पादन कार्यमां मुनि प्रमोदसागरने जोडीमां जोडी दीधो छे. तेथी ते धीरे धीरे तैयार थशे. शुद्धिपत्रक तैयार करवानो परिश्रम गणिश्रीप्रबोधसागरजीए लीधो छे.

बाकी जेओ जेओए मारा आ संपादन कार्यनी पूर्व भूमिकाथी अत्यार सुधीमां जे सहकार आप्यो छे ते बधाने अत्रे याद करुं छुं.

वाचक महाशयोने शुद्धिपत्रकनो उपयोग करवा नम्र विनंति छे. इत्यलम्

नवरंगपुरा जैन उपाश्रय
अमदाबाद नं० ६
सं० २०२५ जे० सु० ८
२५-५-६९

लि० भवदीय
आगमोद्धारक उपसंपदाप्राप्त
गणिकंचन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पत्रांकसूची

श्रीआचाराङ्गम्

अध्ययनानि	आपत्रं
प्रथमः श्रुतस्कंधः	
१	८१
२	१४८
३	१७४
४	१९५
५	२३१
६	२५८
८	२९६
९	३१७
द्वितीयः श्रुतस्कंधः	
चूला-१	
१	३५८
२	३७४
३	३८४
४	३९१
५	३९८
६	४०१
७	४०६
चूला-२	४२७
,, ३	४२९
,, ४	४३२

श्रीसूत्रकृताङ्गम्

अध्ययनानि	आपत्रं
प्रथमः श्रुतस्कंधः	
१	५२
२	७७
३	१०१
४	१२१
५	१४१
६	१५३
७	१६५
८	१७५
९	१८६
१०	१९५
११	२०७
१२	२२९
१३	२४०
१४	२५२
१५	२६०
१६	२६६
द्वितीयः श्रुतस्कंधः	
१	३०३
२	३४२
३	३६०
४	३७०
५	३८५
६	४०५
७	४२७

श्रीस्थानाङ्गम्

अध्ययनानि	आपत्रं
१	३८
२	१०१
३	१७९
४	२८९
५	३५२
६	३८०
७	४१५
८	४४३
९	४६९
१०	५२८

श्रीसमवायाङ्गम्

आविषयं	आपत्रं
सागरोवम-कोटाकोटी	१०५
गणिपिटकं	१३३
अवसरर्पिणि	१५२
निगमनम्	१६०

श्रीभगवतीजी

शतकानि	आपत्रं
१	१०८
२	१५२
३	२०२
४	२०६
५	२४९
६	२८६
७	३२७
८	४२४
९	४९२
१०	५०८
११	५५२
१२	५९२
१३	६२९
१४	६५८
१५	६९६
१६	७१९
१७	७३१
१८	७६०
१९	७७३
२०	८००
२१	८०२
२२	८०४
२३	८०५
२४	८५१
२५	९२८
२६	९३७
२७	९३८
२८	९३९
२९	९४१
३०	९४८
३१	९५०
३२	९५३
३३	९६४
३४	९७०
३५	९७१
३६	९७१
३७	९७१
३८	९७१
३९	९७१
४०	९७५
४१	९८१

श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गम्

अध्ययनानि	आपत्रं
प्रथमः श्रुतस्कंधः	
१	७७
२	९०
३	९६
४	९९
५	११३
६	११४
७	१२०
८	१५५
९	१६९
१०	१७०
११	१७३
१२	१७७
१३	१८२
१४	१९२
१५	१९५
१६	२२६
१७	२३४
१८	२४२
१९	२४५
द्वितीयः श्रुतस्कंधः	
१-१०	२५४

श्रीउपासकदशांगम्

१-१०	५४

श्रीअन्तकृद्दशांगम्

वर्गः	आपत्रं
१-८	३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुत्तरोपपातिक दशांगम्

वर्गाः	आपत्रं
१–३	८

श्रीप्रश्नव्याकरणाङ्गम्

अध्ययनानि	आपत्रं
१	२५
२	४१
३	६४
४	९०
५	९८
६	११३
७	१२१
८	१२९
९	१४१
१०	१६५

श्रीविपाकश्रुताङ्गम्

		आपत्रं
प्रथमः श्रुतस्कंधः		
१	३३ तः ४४	
२–१०		८८
द्वितीयः श्रुतस्कंधः		
१–१०		९६

श्रीऔपपातिकसूत्रम्

आदिषयः	आपत्रं
राजधान्यादि	२४
साधुगुणाः	४८
पर्षन्निर्गमनम्	७७
सिद्धवर्णनं	११९

श्रीराजप्रश्नीयं

आविषयः	आपत्रं
सूर्याभः	१७
यानविमानादि	४४
कुटाकारदृष्टान्तः	५९
स्नानपूजादि	११३
मोक्षवर्णनं	१५०

*

श्रीजीवाजीवाभिगमं

प्रतिपत्तयः	आपत्रं
१	५१
२	८८
३	४०७
४	४०९
५	४२६
६	४२८
७	४३१
८	४३२
९	४६७

श्रीप्रज्ञापनोपांगम्

पदानि	आपत्रं
१	७०
२	११२
३	१६७
४	१७८
५	२०३
६	२१८
७	२२०
८	२२३
९	२२७
१०	२४५
११	२६८
१२	२८३
१३	२८८
१४	२९२
१५	३१६
१६	३२९
१७	३७३
१८	३९४
१९	३९५
२०	४०७
२१	४३४
२२	४५२
२३	४९१
२४	४९३
२५	४९४
२६	४९६
२७	४९७
२८	५२४
२९	५२७
३०	५३१
३१	५३४
३२	५३५
३३	५४२
३४	५५२
३५	५५८
३६	६११

श्रीसूर्यप्रज्ञप्तिः

प्राभृतकानि	आपत्रं
१	४४
२	६२
३	६६
४	७५
५	७८
६	८२
७	८३
८	९१
९	९९
१०	१९६
११	२०१
१२	२३३
१३	२४३
१४	२४४
१५	२५५
१६	२५६
१७	२५७
१८	२६७
१९	२८४
२०	२९७

श्रीजंबुद्वीपप्रज्ञप्तिः

वक्षस्काराः	आपत्रं
१	८८
२	१७८
३	३८०
४	३८२
५	४२४
६	४३२
७	५४६

श्रीनिरयावलिका

वर्गाः	आपत्रं
१	१८
२	१०
३	३६
४	३८
५	४२

*

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सचूर्णिकं श्रीनिशीथसूत्रम्

हस्तपोथी			लीथोप्रिन्ट मुद्रितम्			श्रीबृहत्कल्पसूत्रम् हस्तपोथी				श्रीव्यवहारसूत्रम् हस्तपोथी मुद्रितः			
भागः	उद्देशकः	आपत्रं	भागः	आपत्रं	भागः आपत्रं	भागः	उद्देशकः	आपत्रं	आगाथाः	भागः	उद्देशकः	आपत्रं	उद्देशकः आपत्रं
१	१	१२९	१	२०२	१ १७६	१	१	७७	५००	१	१	१७४	१ १-६१
					२ ६६			१६६	१०००			०	१-९९
	२	१८२	१	३०८	१९७			२३५	१५००			०	१-३७०
	३	१९४		३३४	२२६			३१७	२६३०		२	२१९	२ १-८७
	४	२२२		४०४	३०५	२		१११	३०००		३	२५८	३ १-७३
	५	२४७		४४५	३७०			१५५	३२९२	२	४	११०	४ १-१०४
	६	२५३	३	४६३	३६४		२	२०३	४६४		५	१३५	५ १-२९
	७	२५७		४७८	४१३		३	२९३	७२८		६	१९९	६ १-७१
	८	२७०		५०५	४४७	३		६४	११९२		७	२८३	७ १-९५
	९	२७७		५३३	४७०		४	१६८	८०५		८	३३६	८ १-६०
	१०	३६१		६६५	३ १७०		५	२१२	३७५		९	३५५	९ १-२३
२	११	५८	४	७७३	३१३		६	२६७	४३०		१०	४५८	१० १-११४
	१२	८२		८३२	३७४		— मुद्रितं —						
	१३	१०३		८७५	४२६	१	१	२५४	८०५				
	१४	१२३		९१६	४७७	२		६१०	२१२४				
	१५	२७३	५	१००८	५९४	३		९२१	३२८९				
३	१६	५६		११४१	४ १६३	४	२	१०२२	३६७२				
	१७	६२		११६०	२०३		३	१३०६	४८७६				
	१८	६५	६	११६७	२१८	५	४	१५०२	५६८१				
	१९	८४		१२१२	२६९		५	१५९९	६०५९				
	२०	१७२		१३३८	४११	६	६	१७१२	६४९०				
				+२									
				+३५	४४३								

श्रीदशवैकालिकम्

टीका मुद्रितः		चूर्णि हस्त०	मु०
अध्ययनानि	आपत्रं	आपत्रं	आपृष्ठं
१	८१	३२	७०
२	९९	४१	९२
३	११९	५२	११७
४	१६०	७२	१५८
५	१९०	८९	२०६
६	२०६	१०१	२३४
७	२२३	११५	२६५
८	२३८	१२८	२९४
९	२५८	१४३	३२९
१०	२६८	१५२	३४८
चू०१	२७७	१६०	३६६
चू०२	२८६	१६६	३८०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीआवश्यकसूत्रम्

आविषयः	आपत्रं
पिठिका	५०
प्रथमवरवरिका	१३६
द्वितीयवरवरिका	१८८
गणधरवादः	२५६
निह्नववादः	३२५
नमस्कारनिर्युक्तिः	४५२
१ सामायिकनिर्युक्तिः	४९१
२ अध्ययनम्	५१०
३ ,,	५५०
४ ,,	७६३
५ ,,	८०१
६ ,,	८६६

श्रीविशेषावश्यकम्

आविषयः	आपत्रं
आभिनिबोधिकज्ञानं	२४९
केवलज्ञानं	२९९
उद्देशादिद्वारव्याख्या	६६२
गणधरवादः	८३६
निह्नववादः	१०४४
अर्हन्नमस्कारः	११८०
सिद्धनमस्कारः	१२२७
प्रशस्तिः	१३६०

श्रीओघनिर्युक्तिः

आविषयः	आपत्रं
प्रतिलेखनादि	१२७
पिण्डद्वारम्	२०७
विशुद्धिद्वारम्	२३७

श्रीपिण्डनिर्युक्तिः

आविषयः	आपत्रं
पिण्डनिरुपणम्	२८
उद्गमादिदोषाः	११९
उत्पादनादिदोषाः	१४६
ग्रासैषणाः	१७८

श्रीनंदीसूत्रम्

आविषयः	आपत्रं
पर्षद्	६४
अवधिज्ञानम्	९८
मनःपर्यवज्ञानम्	१२१
केवलज्ञानम्	१२९
मतिज्ञानम्	१८४
श्रुतज्ञानम्	२४७

श्रीउत्तराध्ययनानि

अध्ययनानि	आपत्रं	अध्ययनानि	आपत्रं
१	७०	१९	४६५
२	१४०	२०	४८१
३	१८९	२१	४८७
४	२२८	२२	४९६
५	२५४	२३	५१२
६	२७०	२४	५१९
७	२८५	२५	५३१
८	२९७	२६	५४७
९	३१९	२७	५५३
१०	३४१	२८	५६९
११	३९३	२९	५९७
१२	३७३	३०	६०९
१३	३९२	३१	६१८
१४	४११	३२	६३९
१५	४१९	३३	६४८
१६	४३०	३४	६६२
१७	४३६	३५	६६८
१८	४४९	३६	७१४

श्रीअनुयोगद्वाराणि

आविषयः	आपत्रं
आवश्यकश्रुतस्कंध-निक्षेपा	४२
आनुपूर्वी	१०४
दशनामाधिकारः	१५०
प्रमाणद्वाराधिकारः	२४१
निक्षेपाधिकारः	२५७
अनुगमाधिकारः	२६२
नयाधिकारः	२६७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

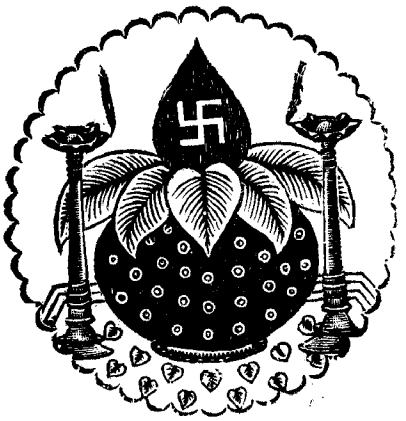

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शुद्धि-पत्रकम्

पृष्ठं	कोलम	पंक्तिः	अशुद्धं	शुद्धं
४५७	२	६	०यप्लुत्य	व्योत्प्लुत्य
४६०	१	२	स्थितिः	स्थितः
४६४	१	२	०दीक्षं ।	०दीक्षौ (?) ।
४६५	२	२	तृयीयः	तृतीयः
४६८	१	२७	०ऽप्यवं	ऽप्येवं
,,	२	५	ज्ञानमहो	ज्ञानमोहः
,,	२	६	०ज्ञाननां	ज्ञानानां
,,	२	२५	०प्रत्यो०	प्रत्ययो०
४७२	२	३१	०निपेक्षो	०निरपेक्षो
४७३	१	२४	वध्य	वध्यं
४४७	२	२१	०विरहतः	विरहितः
४७५	२	२७	०लोभतः	०लाभतः
,,	२	३१	०राज्ञा.	०राज्ञः
४७८	१	१२	नारके०	नारकै०
,,	१	१६	निश्चवयन्	निश्रावयन्
,,	१	१७	वरण कर्मनिर्जयनु	वरणं कर्म निर्जरयनु
४८२	२	६	तजाए	तज्जाए
,,	२	२६	०मख०	०मुख०
४८३	१	२८	रा ४५रण्यतृण-लक्षणम्	रालका४ऽरण्य-तृणलक्षणम् ५
४८४	१	१४	बादरा०	बादर०
,,	२	१७	०धऽऽस्थायी	०धःस्थायी
४८५	१	१	प्राप्तादव्यस्या-ऽयेच्छा	प्राप्तद्रव्यस्या-व्ययेच्छा
,,	१	२	०वञ्छा	०वाञ्छा
४८५	२	२६	न उद्विग्नः	उद्विग्नः
४८७	१	१४	०नाकराणां	नारकाणां
,,	२	१७	पुनर्भ्रि०	पुनर्भ्रिय०
४९०	२	१३	०बन्धः—	०बन्ध·
४९३	१	६	भवन्ति:	भवन्तः
४९६	२	१५	०नाद्याः	०नद्याः
४९६	२	३४	०गन्तरोऽपि	०गन्तारोऽपि
४९७	१	१८	०गोत्रनाम्	गोत्रम्
,,	२	३३	०भावात	०भावात्
४९८	२	१४	त्रिष्वषेषु	त्रिष्वर्थेषु
५०१	१	२८	भारणाम्	भरणम्
५०२	१	३४	रौद्राः	रौद्राः
,,	१	३५	तीव्र०	तीव्रा०
,,	२	१३	पिय०	प्रिय०
५०३	१	१३	कला०	काला०
५०५	१	२३	हृदटस्थः	हृदयस्थः
,,	,,	,,	कोष०	कोप०
५०६	२	८	तूषण्णीका	तूष्णीका
५०७	१	६	०मध्य०	०मध्य०
५०८	,,	१३	०वद्०	०वद०
५०९	१	४	०प्रभावा	०प्रभवा
,,	१	२२	त्रिनी०	त्रिभी
,,	२	११	ओया०	शीता०
५१०	२	१६	०रोदि०	०रादि०
५१३	१	१४	दर्पण०	दर्पणा
,,	२	६	०भेदनीका	०भेदनीका

१-अनुस्वार, दीर्घाई, दीर्घो, बे मात्रा, रेफ इत्यादिमां जीणा टाइपना कारणे आकस्मिक भूल थवानो संभव छे. तेमज श, ष, स, य के थ ध के घ व के बमां पण भूल थवा संभव छे. तेथी ते क्षन्तव्य गणवि जोइए.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृष्ठं	कोलम	पंक्तिः	अशुद्धं	शुद्धं
५१४	२	२२	परिणा०	पारिणा०
५१५	१	२६	जातिश्रत०	जातिश्रुत
५१७	२	४	०विपाण०	०विषाण०
५१६	१	१२	पृष्ठंव	पृष्ठंव
५२०	१	९	आष्टा०	अष्टा०
५२१	१	२१	०मियन्या०	०मिन्या०
,,	१	२४	आपद्यति	आपद्यपि
,,	२	५	०पलया	०वल्याः
५२२	१	२२	वीथीः	नवीथीः
५२३	२	१	दगभारंका	दमगा-आरम्भगाः
५२६	१	५	सर्वा०	सर्व०
,,	१	१७	दृव०३६८।	+ ०
५२८	२	११	विद्या	विधा
,,	२	१७	०कत्दा०	०कृत्वा०
५२९	१	११	०ग्रह्णार्थं	०ग्रहणार्थं
५३०	१	१६	दातुः	दातुं
५३१	२	२४	०नयां	०न्यां
५३३	,,	६	साया	सारो
,,	,,	१९	एसणा विधि	एसणाविधि
५३४	१	६	आचारोदयो	आचारादयो
५३६	२	४	०चिन्यन्ति	चिन्वन्ति
५३७	१	२७	दीणाजाती	दीणजाती
५३८	,,	१६	जाठ–	जठ-
,,	,,	१९	०गता०	०गत०
५४०	,,	२५	०श्रा०	०श्रा०
५४१	,,	९	दुखा०	दुःखा०
५४३	,,	१७	दुर्दशं	दुर्दशं
,,	२	१५	अशुभः	अशुभ०
५४४	१	७	पदात्व०	पदान्य०
५४६	२	१९	बाह्यो०	बाह्वो
५४७	१	३	०खद्वा०	०खट्वा०
५४८	,,	१४	दूयरत्नं	दूष्यरत्नं
,,	२	९	०वपर्या०	०विपर्या०
,,	,,	,,	०विपर्या०	०विपर्या०

पृष्ठं	कोलम	पंक्तिः	अशुद्धं	शुद्धं
५४९		२४	गह्वारम्	गह्वरम्
५५०	१	३३	तमुकायस्य	कृष्णरात्रे-
			द्वादशमं	रष्टम
५५१	१	१८	०ज्ञप्तेः	०ज्ञप्तिः
,,	२	९	०रात्रोनाम्	०रात्रिनाम
५५२	१	१४	०दर्शनाभि०	०दर्शनमभि०
,,	,,	१६	०काल०	०काला०
५५३	२	३३	दशेन	देशेन
५५४	२	१३	मविग्र०	मवग्र०
५५५	१	३५	निश्चितं	निश्चितं
५५६	२	११	राणं	राणां
५५७	१	३१	०स्मोपायम्०	०स्योपायम्
,,	२	१७	बह्वो०	बाह्वो०
५५८	१	२४	चम्पयां	चम्पायां
५६०	२	,,	प्रतपन्तं	पतन्तं
५६१	१	२६	०ध्ययम्	ध्ययनम्
५६२	१	३१	०कामः	०कामाः
,,	२	९	धन्म०	धम्म०
५६७	,,	१४	मानसो०	मानसा
५६८	१	२७	०क्रुद्द०	०क्रुद्ध०
५६९	१	७	अनित्य०	नित्य०
,,	१	२०	ज्ञानाद	ज्ञानादि
,,	,,	२८	०चित्स्वात्	०दित्स्वात्
,,	२	१४	आन्तप्रान्ता–	अन्तप्रान्ता–
			दाता०	दावा०
५७०	१	१६	पाशुः	पांशुः
५७१	,,	४	धायः	धार्यः
५७२	१	१६	०की बुद्धयं	०कीबुद्धयो
५७३	१	,,	दीपः	द्वीपः
५७४	,,	२४	०निर्यं	०निर्गम०
,,	,,	३५	०गगो	०मग्गो
५७५	,,	२	०दृश्यो	०दृश्य०
५७७	,,	१७	सश्चेति	साश्चति
५८०	,,	२२	०णण०	०दप०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृष्ठं	कोलम	पंक्तिः	अशुद्धं	शुद्धं
५८०	२	३४	विभावकं	विर्भाविकं
५८२	,,	३०	०मगस्य	०गमस्य
५८३	१	११	०येता०	०यतो
५८५	२	१२	०हार	०हारं
५८६	१	२	निरावणा	निरावरणा
,,	,,	१४	काङ्क्षित	काङ्क्षित
,,	२	,,	०दसम०	०दशम०
,,	,,	२०	०दैव्य०	०दैर्व्य०
५८८	,,	६	कणपट्टके	कषपट्टके
५८९	२	३३	०णवासी	०णभासी
५९३	२	११	०क्षदा	०क्षुदा०
,,	,,	१३	उद्वंत्त०	उद्वर्त्त०
५९५	,,	२४	जम्द्वीपभरते आगामी०	जम्बूद्वीप–भरते आगामि०
५९६	१	२८	साधवा:	साधव:
५९७	,,	१५	आत्याद०	अत्याद०
५९१	१	२७	०विशेष:	विशेषा:
,,	२	६	०पञ्चमः	०पञ्चम०
५९८	१	३	शाश्व०	शाश्वत०
,,	,,	१७	०शत०	०शत्त०
,,	,,	२७	निदान	निदानं
,,	२	३४	निरणकंप	निरणुकंप
५९९	१	१०	विषते	विद्यते
६०१	२	५	निमिण	निर्मिणं
६०२	,,	,,	०म्युयत०	म्युदत०
,,	,,	१६	निपन्नः	निष्पन्नः
६०३	,,	२८	निवण्ण	निव्वण्ण
६०४	१	२३	धम०	धर्म०
,,	२	१५	०सव	०सत्व
६०५	,,	,,	निवृद्धिः	निर्वृद्धिः
६०६	,,	११	०प्रतिनि०	०प्रति०
६०७	१	२०	निसाम०	निशाम०
,,	,,	२४	नसालोढे	निसालोढे
६०८	१	१६	निषधेन	निषेधेन
६०९	२	५	०वशगां	वशगा
६१०	२	४	०पर्थ	०पथ
६११	१	८	०क्रान्त	०क्रान्तं
,,	,,	२४	ज्ञाता०	ज्ञाता० २४२ ।
६१२	,,	३३	द्विन्द्रिय०	द्वीन्द्रिय०
,,	२	३०	भूमि०	भूमे०
,,	,,	३५	तद्योगा	तद्योगात्
६१४	१	५	वचन०	वचनो
,,	२	४	कषाय:	कषाया:
६१५	२	१८	चतुश्चुष्वपि	चतसृश्वपि
,,	२	२९	भक्षु०	भिक्षु०
६१६	१	४	द्विप०	द्वीप०
,,	,,	१०	जन्मादिक–ल्याण०	चवनादिकल्या णक०
,,	२	९	अन्त०	अन्तः
६१७	,,	१९	पाण्डरो	पाण्डुरो
६१८	,,	४	प्रलोकितं	प्रलोकितुं
६१९	१	२६	छेदसुता०	छेदसूत्रा०
,,	२	७	विविक्त	विविक्तं
६२०	१	२२	०रपिण्यां	०पिण्यां
६२३	१	१०	व्यापरण	व्यापारणं
,,	,,	३५	०राधप्रहर:	राद्यप्रहर:
,,	२	२६	बन्धाति	बध्नाति
६२४	,,	,,	०दश:	०देश:
६२५	,,	२४	यत्र	यत्र
६२७	,,	२९	०कल्पादि०	०कल्पादि०
६२८	१	१८	प्राया०	प्रत्या०
,,	,,	२८	०मुख	०मुखं
,,	,,	३५	निषिध्यम्	निषिद्धम्
६२९	,,	१०	०यार्थी०	०यार्थो०
,,	,,	१४	प्रत्यय:	प्रत्यया:
,,	,,	२९	हेतुड०	हेतुर०
६३०	२	७	०देा०	०देर्दा०
६३१	१	३२	चरमा:	चरम:

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृष्ठं	कोलम	पंक्तिः	अशुद्धं	शुद्धं
६३१		७	साङ्क०	साऽङ्कु०
,,	,,	१५	६६७	७६७
६३३	१	१८	अक्षरार्थः	अक्षराथं
,,	२	२६	क्षुराय०	शुर इव
६३५	१	१९		वाग्गमी
,,	१	२०	याकम्	व्यक्तम्
६३८	१	२	निष्ठरं	निष्ठुरं
,,	,,	१९	भावता	भावतो
६३९	,,	३२	०तितं	०तितमं
,,	२	२३	०घोष०	०घोषैर०
६४०	१	५	०Sथोग०	०Sर्थग०
६४१	१	७	प्रति०	प्रति तेषु
,,	,,	१७	पयोण०	पर्याण०
,,	,,	२४	०कुलक०	०कुलकर०
,,	,,	३१	०शिष्ट	शिष्टं
६४३	२	१८	०माद्यभि-	०(माद्यभि)-
६४३	१	१	विध्वसन्ते	विध्वंसन्ते
,,	२	८	कुले–	कुल–
६४३	१	१८	श्यामिति	श्यमिति
६४४	,,	१५	०हायः	हार्यः
६४५	,,	१९	आषाढ	आषढ०
६४७	१	११	०प्लोमिते	०प्लाविते
६४८	,,	२८	षिकः	षीकः
,,	२	२१	०द्विन्दुः	०बिन्दुः
,,	,,	२२	वर्जणत्	वर्जनम्
६४९	,,	१	Sर्थाऽ	Sर्थोऽ
,,	,,	४	०युष्य०	युष
,,	,,	९	प्रज्ञापन्ति	प्रज्ञापयन्ति
६५०	१	१२	०वर्तिनो	०वत्तिनो
,,	२	१७	०भकर	०भयकर
६५१	१	२६	०द्रव्या०	०द्वया
६५२	२	३२	प्राथयति–वाचते	प्रार्थयति–याचते

पृष्ठं	कोलम	पंक्तिः	अशुद्धं	शुद्धं
६५३	२	१८	प्रदतः	प्रदत्तः
६५५	,,	२१	जन्तो	जन्तोः
,,	,,	३०	३३३	२३३
६५६		२२	प्रस्फाटयेत्	प्रस्फोटयेत्
,,	२	१५	त्रीणि०	त्रय
,,	२	२४	०विजस्य	विजयस्य
६५८	,,	९	०दिर्भानम्	देर्मानम्
६५९	१	८	०नुमा०	०नुद्यमा०
,,	,,	२९	०ध्यवने	०ध्यवने
६६०	,,	१२	०स्थितिका०	स्थितिक०
६६१	,,	१	प्रकर्ष	प्रकर्षे
,,	,,	२४	भाजना०	भाजन०
६६२	,,	२०	पदसम्	पदसमम्
,,	,,	२२	स्त्रयो	स्त्रियो
६६३	२	३२	०विषयो	०स्वविषयो
,,	,,	३२	पर्ययो०	वीर्ययो०
६६५	,,	२	भर०	पर०
६६६	१	१३	परग०	परम०
६७०	,,	२३	०पाद०	०पादान
६७१	१	६	परिवदधे	परिविदधे
,,	,,	२६	०निष्ठततां	निष्ठिततां
६७३	,,	७	०यत्तियं	०वत्तियं
६७४	२	१५	शक्य०	शक्त्य०
,,	,,	१९	तथा	तथा
,,	,,	३२	०क्षमेन	०शमेन
६७५	१	६	०रागा०	०रोगा०
,,	१	२७	अवर्तान्	आवर्तान्
,,	२	१८	ऽनुम्यु०	ऽनम्यु०
,,	,,	२८	णामं	माणं
,,	,,	३४	०णामं	०माणं
,,	,,	२४	०णामतः	०माणतः
६७६	१	१९	०भागा०	०भोगा०
,,	,,	२३	भुङ्ते	भुङ्क्ते
,,	२	२०	०णामम्	०माणम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृष्ठं	कोलम	पंक्तिः	अशुद्धं	शुद्धं
६७७	,,	१०	लोभ०	लोभा०
,,	,,	१४	पर्यापनं	पर्यापानं
६७८	१	८	०लोकादि०	०लोका०
,,	,,	१४	श्रामणिः	श्रामण्यः
,,	,,	२६	सद्द	सद्दं
६८०	,,	३	पर्युषितः–स०	पर्युषितः–सं–
,,	२	८	पच्चम्	पच्चम
६८१	१	१७	दक्षः	दक्षः
६८३	,,	,,	वर्तन्त	वर्तन्ते
,,	२	१२	०पर्या०	०पर्याय०
६८४	,,	२०	०वासी०	वासि०
६८५	१	३	पायन्ते	पादयन्ते
६८६	१	७	पलय०	पल्य०
,,	२	१०	प्रलिङ्घनम्	प्रलङ्घनम्
,,	,,	३४	आखतं	अखातं
६८८	१	२४	प्रवत्तीनि	प्रवर्त्तिनी
,,	२	२७	०वर्णा०	०वर्णं०
६८९	,,	६	भृगवो	भृगुः
,,	,,	,,	मुमूर्षवो	मुमूर्षुः
६९०	१	२२	०मयान्य०	०मयम०
,,	,,	३३	०धान्याद्वि०	धान्यद्वि०
६९०	१	३४	०विभूति०	०विभूति
६९१	१	११	०नगर-	०नगार-
६९३	२	२६	०भिलाषी	०षाभिलाषी
६९४	१	२९	प्रश्नाश्नः–	प्रश्नाप्रश्नः–
६९६	,,	१६	वीरली०	विरली०
,,	,,	३१	प्रहसति०	प्रहसित०
६९७	,,	१८	०मल्या०	०मण्या०
६९८	१	१६	तद्योगो०	तयोगा०
,,	,,	२३	पाद०	पादप०
,,	,,	३५	ब वान्	बलवान्
६९९	२	१३	०पत्रं	०पुत्रं
७००	१	२८	शितोष्ण०	शितोष्णा०
७०१	,,	५	०स्थि०	स्थित०
,,	२	६	गृह०	गृहा०
७०३	,,	५	दास्वामी०	दास्यामी०
७०५	,,	६	पाद	पादं
७०८	,,	८	पत्रो	पुत्रो
७०९	,,	६	तुं	तु
,,	२	२६	शेषव्रतिः	शेषव्रती
७११	१	२८	आयामा०	आयामाद्दु
,,	२	१९	प्रासाद०	प्रासादा०
७१३	१	१४	श्रावसती	श्रावस्ती०
,,	२	१८	०भाजम्	०भाजनम्
७१६	१	२७	वाधिषु	बाधिषु
,,	२	२४	प्रेमकर्त्तः	प्रेमकर्त्ता
७१८	,,	३०	अस्थाने	आस्थाने
७१९	,,	११	प्रीयावादी	प्रीयवादी
७२२	,,	२६	स्पष्टः	स्पृष्टः
७२३	,,	२४	पुडवी०	पुढवी०
७२४	,,	५	श्रमणानानां	श्रमणानां
७२६	,,	९	०स्थिक०	०स्थितिक०
७२७	१	१७	पुप्फवासा	पुप्फवासा
,,	२	७	०त्यागेन	त्यागेन
७२८	१	२	०व्रतम्	०वृतम्
७२९	,,	२५	काड०	०कड
७३०	,,	१९	०नातिधि०	०नातिधि०
,,	२	२३	पृरुषः	पुरुषः
७३१	१	२०	०वादी	०वादि उ०
,,	२	३२	चूर्णन सम-	चूर्णनसम-
			र्थः लब्धे-	र्थाः लब्धे-
			स्सजीवनेन	रुपजीवनेन
,,	,,	३३	०चार०	०चारा०
७३२	,,	११	पव्वं–	पव्वं–
७३४	,,	७	पुष्पकेतुः	पुष्पकेतोः
७३७	१	१२	पूरावेरयं	पूरावरेय
७३८	२	१०	पेच्छयण	पेच्छणय
७३९	१	२१	आगमि०	आगामि०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पृष्ठं	कोलम	पंक्तिः	अशुद्धं	शुद्धं
७३१	१	२५	प्राप्तिः	प्राप्तः
७४०	,,	३०	सूक्ष्मचर्म- पक्षोः चर्म- सुक्ष्मपक्ष०	चर्मसूक्ष्म- पक्ष्म०
७४०	२	८	०द्दोषा०	०द्दोषावि०
,,	,,	१७	प्रेष्यते	प्रेष्यंते
,,	,,	२४	प्रेक्षमाण:	प्रेक्षमाण:
७४१	१	१४	पेहुण०	पेहुण
७४२	१	४	मासम्	मांसम्
,,	,,	१८	यवता	यावता
,,	,,	२०	अन्त०	अनन्त०
७४४	१	१६	व्यायम्	यामम्
,,	२	३	पौरपत्य	पौरपत्यं
७४६	१	७	०ताङ्गलो०	०ताङ्कुलो०
,,	२	२६	०सता०	०साता०

संज्ञा–पत्रकम् ।

क्र०	संज्ञा	सूत्रनाम	सम्पादकः	प्रकाशकः
१	अनु.	मल्लधारगच्छीयश्रीहेमचन्द्राचार्यविरचितवृत्तियुक्तं श्रीअनुयोगद्वारसूत्रम् ।	आगमोद्धारकः	दे.[1] ला. जै.
२	अनुत्त.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीअनुत्तरोपपातिकदशाङ्गम् ।	,,	आ.[2] स.
३	अन्त.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुत श्रीअन्तकृद्दशाङ्गम् ।	,,	आ. स.
४	आउ.	श्रीआतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णकम् (गाथा) ।	,,	आ. स.
५	आचा	निर्युक्तिकलितशीलाङ्काचार्यविहितवृत्तियुतं श्रीआचाराङ्गसूत्रम् ।	,,	आ. स.
६	आव.	निर्युक्तियुतभाष्यकलितश्रीभवविरहहरिभद्रसूरि- विहितवृत्तियुत श्रीआवश्यकसूत्रम् ।	,,	आ. स.
७	उत्त.	निर्युक्तियुतानि वादिवेतालश्रीशान्तिसूरिसूत्रित- वृत्तियुतानि श्रीउत्तराध्ययनानि ।	,,	दे. ला. जै.
८	उप.मा. गा.	श्रीधर्मदासगणिदृब्धा श्रीउपदेशमाला (गाथा) ।	,,	
९	उपा.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुत श्रीउपासकदशाङ्गम् ।	,,	आ. स.
१०	ओघ.	भाष्ययुता श्रीद्रोणाचार्यसूत्रितवृत्तिविभूषिता श्रीओघनिर्युक्तिः ।	,,	आ. स.

१ दे. ला. जै. = शेठ देवचन्द लालभाई जैनपुस्तकोद्धार फण्ड

२ आ. स. = श्रीआगमोदयसमिति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११	औप.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीऔपपातिकोपाङ्गम् ।	आगमोद्धारकः	आ. स.
१२	ग.	श्रीगच्छाचारप्रकीर्णकम् (गाथा) ।	,,	आ. स.
१३	गणि.	श्रीगणिविद्याप्रकीर्णकम् (गाथा) ।	,,	आ. स.
१४	चउ.	श्रीचतुःशरणप्रकीर्णकम् (गाथा) ।	,,	आ. स.
१५	ज. प्र.	उपाध्यायश्रीशान्तिचन्द्रविहितवृत्तियुत श्रीजम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्युपाङ्गम् ।	,,	दे. ला. जै
१६	जीवा.	श्रीमलयगिर्याचार्यसूत्रितविवरणयुत श्रीजीवाजीवाभिगमोपाङ्गम् ।	,,	दे. ला. जै.
१७	ज्ञाता.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गम् ।	,,	आ. स.
१८	ठाणा.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीस्थानाङ्गसूत्रम् ।	,,	आ. स.
१९	तं.	श्रीतन्दुलवैचारिकप्रकीर्णकम् (गाथा) ।	,,	आ. स.
२०	तत्त्वा.	भाष्योपेतं श्रीतत्त्वार्थसूत्रम् (अध्यायः, सूत्रम्) ।	,,	ऋ.[1] के.
२१	दश.	निर्युक्तिभाष्योपेत श्रीभवविरहहरिभद्रसूरिविरचितविवरणयुतं श्रीदशवैकालिकसूत्रम् ।	,,	दे. ला. जै.
२२	दशचू.	श्रीदशवैकालिकचूर्णिः *	हस्तपोथी	जै.[2] पु. नं. १६७३
२३	दशाश्रु.	श्रीदशाश्रुतस्कन्धः ।	,,	
२४	देव.	श्रीदेवेन्द्रस्तवप्रकीर्णकम् ।	आगमोद्धारकः	आ. स.
२५	नंदी.	श्रीमलयगिर्याचार्यविहितवृत्तियुतं श्रीनन्दीसूत्रम् ।	,,	आ. स.
२६	निरय.	श्रीचन्द्रसूरिविरचितवृत्तियुत श्रीनिरयावलिकापंचकम्	श्रीदा.वि.गणी	वीर.[3]
२७	नि. चू प्र.	*भाष्यचूर्ण्युपेतस्य श्रीनिशीथसूत्रस्य प्रथमो विभागः	हस्तपोथी	जै. पु नं. ४८३
२८	नि. चू. द्वि.	,, ,, द्वितीयो ,,	,,	जै पु नं.४८४
२९	नि. चू. तृ.	,, ,, तृतीयो ,,	,,	जै पु नं. ४८५
३०	पउ.	श्रीविमलाचार्यविरचितं 'पउमचरियं' (उल्लासः)	प्रो.हर्मनजेकोबी	[4]जै. ध.

१ ऋ. के.=शेठऋषभदेवजीकेशरीमलजी, रतलाम

२ जै. पु. नं०=श्रीजैनआनन्दपुस्तकालय, सूरत, हस्तपोथी नम्बर

३ वीर.=श्रीवीरसमाज, अमदावाद.

* सूत्र, निर्यक्ति अने भाष्यगाथानां मात्र प्रतीक छे.

४ जै. ध.=श्रीजैनधर्मप्रसारकसभा, भावनगर.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३१	पिंड पिण्ड.	भाष्यश्रीमलयगिर्याचार्यविहितवृत्तियुता पिण्डनिर्युक्तिः	आगमोद्धारकः	दे. ला. जै.
३२	प्रज्ञा.	श्रीमलयगिरिसूरिविहितविवरणयुतं श्रीप्रज्ञापनोपाङ्गम् ।	,,	आ. स.
३३	प्रश्न	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीप्रश्नव्याकरणाङ्गम् ।	,,	आ. स.
३४	बृ. प्र.	निर्युक्तिभाष्यटीकोपेतस्य श्रीबृहत्कल्पसूत्रस्य प्रथमोविभागः	हस्तपोथी	जै. पु. नं. ३०३
३५	बृ. द्वि.	,, ,, द्वितीयो ,,	,,	जै. पु. नं ३०४
३६	बृ. तृ	,, ,, तृतीयो ,,	,,	जै. पु. नं ३०५
३७	भक्त.	श्रीभक्तपरिज्ञाप्रकीर्णकम् (गाथा) ।	आगमोद्धारकः	आ. स.
३८	भग.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीभगवतीसूत्रम् (श्रीव्याख्याप्रज्ञप्तिः) ।	,,	आ. स.
३९	मर. मरण.	श्रीमरणसमाधिप्रकीर्णकम् (गाथा) ।	,,	आ. स.
४०	महा. महाप्र	श्रीमहाप्रत्याख्यानप्रकीर्णम् (गाथा) ।	,,	आ. स.
४१	राज.	श्रीमलयगिर्याचार्यसूत्रितविवरणयुतं श्रीराजप्रश्नीयोपांगम्	,,	आ. स.
४२	विपा.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीविपाकश्रुताङ्गम् ।	,,	आ. स.
४३	विशे.	मल्लधारिश्रीहेमचन्द्रसूरिविरचितबृहद्वृत्तियुतं श्रीविशेषावश्यकभाष्यम् ।	पंहरगोवनदास	य[१] जे.
४४	व्य प्र.	*निर्युक्तिभाष्यटीकोपेतस्य श्रीव्यवहारसूत्रस्य प्रथमो विभागः	हस्तपोथी	जै. पु. नं.४८७
४५	व्य. द्वि	,, ,, ,, द्वितीयो ,,	,,	जै. पु. नं. २६६
४६	स.	श्रीसंस्तारकप्रकीर्णकम् (गाथा) ।	आगमोद्धारकः	आ. स.
४७	सम.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीसमवायाङ्गम्	,,	आ. स.
४८	सूत्र.	निर्युक्तिभाष्यशीलाङ्काचार्यविरचितविवरणयुतं श्रीसूत्रकृताङ्गम् ।	,,	आ. स.
४९	सूर्य.	श्रीमलयगिरिसूरिविहितविवरणयुतं श्रीसूर्यप्रज्ञप्त्युपांगम्	,,	आ. स.

१ य. जै. = श्रीयशोविजयजी जैनग्रन्थमाला.

* सूत्रादिना मात्र गाथाक ज छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

અંગ

છેદ

ઉપાંગ

શ્રી ચતુઃશરણ પ્રકીર્ણ

૪૫

શ્રુત આગમ

મૂળ સૂત્ર

નંદિસૂત્ર

અનુયોગદ્વારસૂત્ર

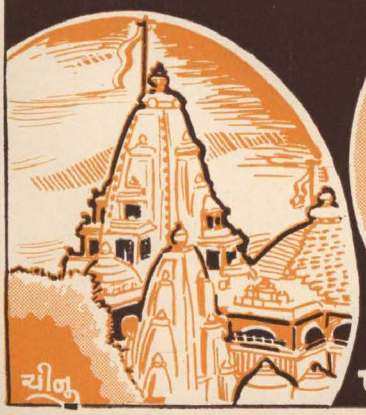

ચીનુ

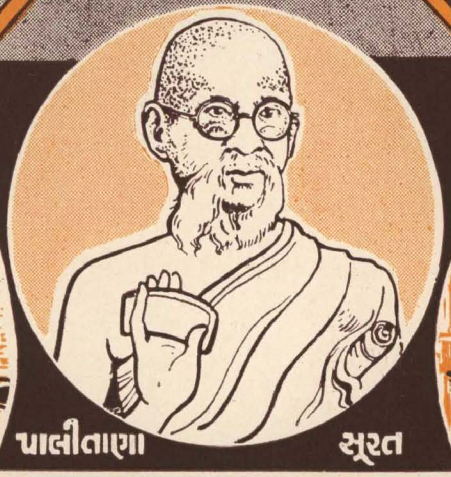

પાલીતાણા

સૂરત

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

* ॐ अर्हम् *

णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ।

श्रेष्ठि-देवचन्द्रलालभाई-जैन-पुस्तकोद्धारे-ग्रन्थाङ्कः-

आगमोद्धारक-आचार्यश्रीआनन्दसागरसूरिसङ्कलितः-

अल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोषः

तृतीयो-विभागः

टकारः

टंकं-उपकरणविशेषः । प्रज्ञा० २७ । टङ्कं-नतिदोषे दृष्टान्तः । आव० ५२६ । छिन्नटङ्कम् । अनु० १७३ । छिन्नतटं टङ्कम् । नंदी० २२८ । टङ्कः-छिन्नटङ्कः । आव० ६६ । भग० २३८ । एकदिशि छिन्नः । ज्ञाता० ६७ ।

टंकण-अनार्यविशेषः । भग० १७० । उत्तरापथे म्लेच्छदेशे क्वचिद् टंकणाभिधाना म्लेच्छाः । विशे० ६२४ । टङ्कणः-मिलेच्छविशेषः । सूत्र० ६३ ।

टंकणओ-टङ्कणकः-म्लेच्छजातिविशेषः, आचार्यशिष्ययोर्दृष्टान्ते नामविशेषः । आव० ६६ ।

टंकणा-टङ्कणा-उत्तरापथे टङ्कणानामानो म्लेच्छाः । आव० ६६ ।

टकारठकारडकारढकारणकारप्रविभक्तिनामा-सप्तदशो नाट्यविधिः । जीवा० २४७ ।

टक्क- । नि० चू० प्र० १३३ आ ।

टक्करा-खड्डुका । उत्त० ६२ ।

टगकं-अवचूलम् । औप० ६३ ।

टप्पर-अनालीनः । प्रश्न० ८२ । जीवा० २७३ । जं० प्र० ११३ ।

टाल-टालं-अबद्धास्थि, कोमलफलादि । दश० २१६ ।

टाला-टालानि-अनवबद्धास्थीनि, कोमलास्थीनि । आचा० ३६१ ।

टिठियावेति-आस्फालयति । आव० १२३ ।

टिट्टिआविंति-परस्परं ताडनेन टिट्टीतिशब्दोत्पादनपूर्वकं वादयन्ति । जं० प्र० ३६१ ।

टिट्टियावेति-शब्दायमानं करोति । ज्ञाता० ६६ ।

टेंकणा-चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषाः । जीवा० ३२ ।

टेम्बरूपं-फलविशेषः । आचा० ३४६ ।

टोप्परिकया- । आचा० ३४६ ।

टोप्परिया-टोप्परिका- । आव० ४१२ ।

टोलगइ-टोलगति-टोलगतयः-उष्ट्रादिसमप्रचाराः । भग० ३८ । येन तिड्डवदुत्प्लुत्यप्लुत्य विसंस्थुलं वन्दते तत् । कृतिकर्मणि पञ्चमो दोषः । आव० ५४३, ५१२ ।

टोलगति-टोलाकृतयः-अप्रशस्ताकाराः । जं० प्र० १७० ।

टोलागइ-टोलाकृतिः-अप्रशस्ताकारः । भग० ३०८ । टोलगतयः-उष्ट्रादिसमप्रचाराः । जं० प्र० १७० ।

ट्ठाइ-तिष्ठति । आव० ५७८ ।

ट्ठाण-स्थानं-अवस्थारूपकालः । व्य० द्वि० ४४६ अ । स्थानं-तेषामेव स्थिति परिणामः । विशे० २६७ ।

ठ

ठप्पाइं-स्थाप्यानि-असंव्यवहार्याणि । अमुखराणि स्वस्वरूपप्रतिपादनेऽप्यसमर्थानि । गुर्वनधीनत्वेनोद्देशाद्यविषयभूतानि । अनु० ३ ।

ठवण-पात्रकं च निक्षिप्यते-एकदेशे स्थाप्यते । ओघ० ११८ ।

ठवणकुलं-स्थापनाकुलम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठवणकुला–सेज्झातरमामगाइ कुला ठवणकुला । नि० चू० प्र० २०७ अ । स्थापनाकुलानि, लोके गर्हितानि कुलानि । व्य० प्र० १६० अ । स्थापनाकुलानि । ओघ० ६५ ।

ठवणकुलापुच्छणया–स्थापनाकुलानि पृच्छति भिक्षार्थम् । ओघ० ५६ ।

ठवणसच्चा–स्थापनासत्या–पर्यायितसत्याभाषायास्तृतीयो भेदः । प्रज्ञा० २५६ ।

ठवणा–पज्जुसणा, वासावासो, पढमं समोसरणं, जेट्ठोग्गहो । नि० चू० प्र० ३३६ आ । अणागाढजोगणिक्खेवो । नि० चू० प्र० १९८ आ । स्थाप्यत इति स्थापना । सत्याभाषायास्तृतीयो भेदः । ठाणा० ४८९ । प्रज्ञापनामात्रम् । नि० चू० प्र० २८३ अ । व्यवस्था । बृ० तृ० १४७ अ । तिष्ठतीति स्थापना । विशे० २४ । स्थापना–वस्तुसंस्थानरूपा । जं० प्र० ११ । स्थापना–उदाहरणस्य तृतीयो भेदः । दश० ३५ । स्थापनालक्षणं–लकारादिवर्णानामाकारविशेषः । आव० २८१ । सद्भावासद्भावरूपा प्रतिकृतिः स्थापना । आचा० ९१ । तिष्ठतीति स्थापना इति स्थापनात्वेन समये निर्दिष्टमेव । स्थापना–यद् वस्तु सद्भूतेन्द्रार्थशून्यं सत् तद्बुद्धया तादृशाकारं वा निराकारं वा, स्तोककालं यावत्कथिकं वा स्थाप्यते सा । विशे० २३ ।

ठवणाकप्पो–स्थापनाकल्पः । बृ० तृ० २६० आ ।

ठवणाकम्मे–स्थापनं–प्रतिष्ठापन स्थापना तस्याः कर्म्मकरणं स्थापनाकर्म्म येन ज्ञातेन परमतं दूषयित्वा स्वमतस्थापना क्रियते तत् स्थापनाकर्म्म । ठाणा० २५३ ।

ठवणापाहुडिया–या भिक्षाचरेभ्यः स्थापिता भिक्षा स्थापनाप्राभृतिका । आव० ५७५ ।

ठवणादिणं–पर्युषणादिवसः । बृ० तृ० २७७ अ ।

ठवणिज्जा–परूवणिज्जा । नि० चू० तृ० १३२ अ ।

ठवणिज्जाइं–स्थापनीयानि । अनधिकृतानि । अनु० ३ ।

ठवयंति–पर्युवासयंति । नि० चू० प्र० ३२२ आ ।

ठवितगदोसो–स्थापनादोषः । आव० ८३८ ।

ठविअगदोसा–स्थापनाकृताश्चैवं दोषा भवन्ति । ओघ० १४८ ।

ठविएल्लग–स्थितः । आव० ६९८ ।

ठवितं–न्यस्तम् । उत्त० ३४८ ।

ठवियं–स्थापितम् । भग० २३१ । स्थापितं–प्रयोजने याचितं गृहस्थेन च तदर्थं स्थापितं यत् । प्रश्न० १५४ ।

ठविय–यत्प्रायश्चित्तमापन्नस्तत्तस्य स्थापितं कृतं, न वाहयितुमारब्ध इत्यर्थः । ठाणा० ३२५ ।

ठवियगो–विस्मृतः । आव० ४१६ ।

ठविया–आवण्णो । नि० चू० तृ० १३९ आ । मासादीय छद्धं, जं पुण भासादी आवण्णं णिक्खित्तंति वेयावच्चटुया ठवियं कज्जति सा । नि० चू० तृ० १३९ आ ।

ठवेति–गृण्हाति । नि० चू० प्र० ३३७ अ ।

ठाइउं–स्थातुम् । आव० ७७८ ।

ठाओ–अवकाशः । बृ० द्वि० २९३ अ । नि० चू० प्र० ५१ अ ।

ठागं–अवकाशम् । बृ० तृ० ६१ अ ।

ठाणं–स्थानम् । सम० ३९ । स्थापनं एषणा दोष इत्यर्थः । नि० चू० प्र० २०२ अ । कायोत्सर्गः । बृ० द्वि० ११२ अ । कायोत्सर्गः । ओघ० ५८ । तिष्ठत्यनेनेति स्थानं कारणम् । प्रज्ञा० २९० । स्थानं–ऊर्द्ध्वस्थानं, निषीदनस्थानं, त्वग्वर्त्तनस्थानं च । प्रश्न० १०७ । तिष्ठन्त्येऽतेषु सत्सु शाश्वते स्थाने प्राणिन इति स्थानानि महाव्रतानि । आव० २६४ । स्थानं–ऊर्द्ध्वस्थानं कायोत्सर्गः । आव० २६६ । स्थीयतेऽस्मिन्निति स्थानं दुर्गतिगमनादिकम् । पक्षमभ्युपगतमित्यर्थः । सूत्र० १५२ । तिष्ठन्ति–विशेषा अस्मिन्निति स्थानं सामान्यम् । प्रज्ञा० ५०१ । कायोत्सर्गः । औप० ४० । तिष्ठन्त्यस्मिन्निति स्थानं क्षीणकर्मणो जीवस्य स्वरूपं लोकाग्रं वा । औप० १५ । कायोत्सर्गस्थानं निषीदनस्थानं वा । ज्ञाता० २०६ । पदार्थः, सङ्ख्यास्थानं वा । प्रज्ञा० १४७ । तिष्ठति–विशेषा अस्मिन्निति स्थानं सामान्यमेकवर्णं द्विवर्णं त्रिवर्णमित्यादि रूपम् । जीवा० १९ । उस्सग्गो । नि० चू० प्र० ५६ आ । दारं । नि० चू० प्र० ६७ अ । तिष्ठति–अनवस्थाननिबन्धनकर्माभावेन सदाऽवस्थितो भवति यत्र तत् स्थानं–क्षीणकर्मणो जीवस्य स्वरूपं लोकाग्रं वा । भग० ७ । स्थानं–प्रदेशवृद्धया विभागः । भग० ७१ । पादन्यासविशेषलक्षणम् । भग० ३२३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवगाहः । पिण्ड० २२ । ऊर्द्ध्वस्थानम् । आव० ५२६ । अवकाशलक्षणम् । आव० ५६२ । आश्रयः । आव० ६४५ । निमित्तं, भेदः, पर्यायः । आव० ६६१ । कायोत्सर्गः । आव० ७३४ । ऊर्द्ध्वस्थानम् । आव० ७८० । व्यवहारतः सिद्धक्षेत्रं, निश्चयतो यथाऽवस्थितं स्वं स्वरूपम् । जीवा० २५६ । स्थानं-आलयः । दश० ७६ । स्थानं-एकत्रैव स्थितिः । दश० १५५ । तिष्ठन्त्यस्मिन्निति स्थानं-सामान्यं यथैकवर्णं द्विवर्णमित्यादि । भग० २० । आसनम् । भग० १२५ । भेदः । भग० २३६ । उत्कटादि । पिण्ड० १२६ । स्थानम् । आचा० ४२४ । कारणम् । ठाणा० १८७ । कायोत्सर्गं उपवेशनं वा । ठाणा० ३१४ ।

ठाणइल्ला-गोमिया । नि० चू० द्वि० ११ आ ।

ठाणगुणे-स्थानं वा स्थितिर्गुणः-कार्यं यस्य स स्थानगुणः, स हि स्थिति परिणतानां जीवादिनामपेक्षाकारणतया स्थानं-कार्यं करोति, स्थाने वा स्थितौ गुणः-उपकारो यस्मात् स तथा । ठाणा० ३३४ ।

ठाणपदे-स्थानपदं-प्रज्ञापनायां द्वितीयपदम् । भग० १४२, ६६१; ६४ ।

ठाणपयं-स्थानपदं-प्रज्ञापनायां द्वितीयं पदम् । जीवा० १६३ ।

ठाणपालया- । नि० चू० द्वि० ११ आ ।

ठाणा-स्थानानि-स्वस्थानादीनि । प्रज्ञा० ७२ ।

ठाणाइं-स्थानानि-प्रज्ञापनायां द्वितीयं पदम् । प्रज्ञा० ६ ।

ठाणाइए-स्थानं कायोत्सर्गादिकमतिशयेन ददाति गच्छतीति वा स्थानातिदः, स्थानातिगः । भग० ६२४ ।

ठाणाइया-ऊर्द्ध्वस्थानं निषीदस्थानं त्यग्वर्त्तनस्थानं तदभिग्रहविशेषेणाददति विदधति । प्रश्न० १७२ ।

ठाणातिते-स्थानायतिकः स्थानातिगः, स्थानातिदो वा कायोत्सर्गकारी । ठाणा० ३६७ ।

ठाणादीए- । भग० ६२१ ।

ठाणिल्ला- । निरया० ११ ।

ठाणुक्कुडुए-स्थानं-आसनमुत्कुटुकं-आधारे पुतालगनरूपं यस्यासौ स्थानोत्कुटुकः । भग० १२५ ।

ठाणुप्पाइयमहो-अपूर्वः कोऽप्युत्सवः । ज्ञाता० ७३ । बृ० प्र० २८१ आ ।

ठामि-तिष्ठामि-करोमि । आव० ७७६ ।

ठायंतओ-तिष्ठन् । आव० ६३१ ।

ठायंति-स्वपन्ति । ओघ० ६२ ।

ठावका-स्थापकाः-गृहस्थधर्मे दारादिसङ्ग्रहणात् । ज्ञाता० २४२ ।

ठावणं-अपुनर्ग्रहणं तया स्थापनं, न्यासः, परित्यागः । जं० प्र० १४८ ।

ठासि-स्थितवान् । आव० २२८ ।

ठाहि-स्थितिः स्थानम् । आव० ७०८ ।

ठिअप्पाण-स्थितात्मा-महासत्त्व । दश० २०३ ।

ठिइ-स्थितिः । विशे० १४ । स्थितिशब्देन देवभवो जीवितं च । जं० प्र० १५४ । स्थितिः क्वचिद्विवक्षित भवे जीवेनायुः कर्मणा वा यत् स्थातव्यं सा । भग० २८ । स्थितिः-आहारयोग्यस्कन्धपरिणामेनावस्थानम् । भग० २० ।

ठिइक्खएणं- । आचा० ४२१ ।

ठिइचरमे-स्थितिचरमः । प्रज्ञा० २४५ ।

ठिइपदं-प्रज्ञापनायां चतुर्थं पदम् । भग० ५३५ ।

ठिएपागो-स्थितिपाको नामानुभागः । प्रज्ञा० ३३० ।

ठिइबंधज्झवसाण-स्थितिबन्धस्य कारणभूताध्यवसायस्थानम् । अनु० २४० ।

ठिइवडिया-स्थितौ-कुलमर्यादायां पतिता-अन्तर्भूता या प्रक्रिया पुत्रजन्मोत्सवसम्बन्धिनी सा स्थितिपतिता । ज्ञाता० ४१ । स्थितिपतिता-कुलक्रमागता वर्द्धमानकादिका पुत्रजन्मक्रिया । विपा० ५१ ।

ठिइवडिवाए-स्थितौ-कुलस्य लोकस्य वा मर्यादायां पतितागता या पुत्रजन्ममहप्रक्रिया सा स्थितिपतिता । भग० ५४४ ।

ठिई-स्थितिः-अभावः । जीवा० ३४६ । जं० प्र० ४६२ । सूर्य० २८१ । स्थितिः-वेदनाकालः । प्रज्ञा० ६०२ । मर्यादा । भग० ५४५ । स्थितिः-प्रज्ञापनायाश्चतुर्थं पदम् । प्रज्ञा० ६ । स्थीयते-अवस्थीयते अनया आयुः कर्म्मानुभूत्येतिस्थितिः, आयुः कर्मानुभूति जीवनमिति । प्रज्ञा० १६६ । आहारयोग्यस्कन्धपरिणामत्वेनावस्थानम् । प्रज्ञा०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५०१ ।

ठिओ-स्थितिः-कायोत्सर्गेणेषन्नतादिना । आव० ५६४ ।

ठिक्किरिय-ठिक्करिका-कपालम् । आव० ३६६ ।

ठिच्चा-स्थाता-आसीनो भवति । सम० ५६ ।

ठितकप्पा-स्थितकल्पिकाः-प्रथमचरमजिनसाधवः । बृ० तृ० २५४ आ ।

ठिति-ठिति-नरकावस्थानरूपा नरकायुष्करूपा । भग० ६४३ ।

ठितिपए-प्रज्ञापनायाश्चतुर्थपदम् । भग० २६, ८४२ ।

ठितिपकप्पं-स्थितौ-अवस्थाने बलिचञ्चाविषये प्रकल्पः-संकल्पः स्थितिप्रकल्पः । भग० १६७ ।

ठिती-साद्यपर्यवसितमुक्तिस्थितेर्हेतुत्वात् स्थितिः, अहिंसाया द्वाविंशतितमं नाम । प्रश्न० ६६ ।

ठितीओ-स्थितः । आव० ८३८ ।

ठितिणामं-यद्यस्मिन् भवे उदयमागतमवतिष्ठते तद् गति-जातिशरीरपञ्चकादिव्यतिरिक्तं स्थितिनाम । प्रज्ञा० २१७ ।

ठितीणामनिहत्ताउए-स्थितिर्यत्तेन भवेन स्थातव्यं तत्प्रधानं नाम तेन सह निधत्तमायुः स्थितिनामनिधत्तायुः । प्रज्ञा० २१७ ।

ठितीपए-स्थितिपदं-प्रज्ञापनायां चतुर्थं पदम् । जीवा० ३८५ ।

ठितो-णिसण्णो, उब्भतो । नि० चू० प्र० ३५ आ ।

ठिय-स्थितं हृदिव्यवस्थितमप्रच्युतमित्यर्थः । विशे० ४०५ । ऊर्द्ध्वस्थित उपविष्टो वा । बृ० द्वि० ३२ आ ।

ठियकप्प-स्थितकल्पः प्रथमपश्चिमतीर्थकरतीर्थकालः । प्रज्ञा० ६४ ।

ठियनिसन्नो-स्थितनिषण्णः । उत्त० २१६ ।

ठियप्पा-स्थित आत्मा यस्याऽसौ स्थितात्मा । आव० ७८२ ।

ठियलेसा-स्थितलेश्या-अवस्थिततेजोलेश्याकाः । प्रज्ञा० ६६ ।

ठियलेस्सा-स्थितलेश्या-अवस्थिततेजोलेश्याकाः । जीवा० १७५ ।

ठियल्लओ-स्थितः । उत्त० १६८ ।

ड

डंको-डङ्कः-भक्षणदेशः । आव० ६०५ ।

डंगरा-लाकुटिधारकाः स्तेनाः । बृ० द्वि० २७३ आ । नि० चू० प्र० ३५८ आ ।

डंड-दण्डः-दण्डिकः । आव० ६६० बाहुप्पमाणो । नि० चू० प्र० २१३ अ ।

डंडगि-उत्तरापथे कुंभकारकडस्स णगरे रण्णो । नि० चू० तृ० ४४ आ ।

डंडपणगं- । नि० चू० प्र० १८१ अ ।

डंडपती-डडउग्गमेति जो सो डंडपती । नि० चू० प्र० १५८ आ ।

डंडपरिहारो-महंता जण्णकंबली सरडिता डंडपरिहारो । नि० चू० प्र० २२६ आ ।

डंडाइतिउ-दण्डायतिकः ।

डंडाइए-दण्डायतिकः-दण्डस्येवायतं-संस्थानं यस्यास्ति सः दण्डायतिकः । प्रश्न० १०७ ।

डंडारक्खितो-रण्णो वयणेण इत्थिं पुरिसं वा अंतेपुरं णीणंति, पवेसेंति वा एस डंडारक्खिओ । नि० चू० प्र० २७१ अ ।

डंडिए-राजा । नि० चू० द्वि० १५१ आ ।

डंडिमं-दण्डेन-निग्रहेण निर्वृत्तं-राजदेयतया व्यवस्थापितं दण्डिमम् । विपा० ६३ ।

डंडियपरिग्गहे- । नि० चू० प्र० ११८ अ ।

डंडिया- । नि० चू० प्र० ७८ आ ।

डंडिसिव्वणी- । नि० चू० प्र० १२७ अ ।

डंबइल्ला-देशविशेषः । आव० १४७ ।

डंभणा-यैरग्निप्रतापितैर्लोहशलाकादिभिः परशरीरेऽङ्कः उत्पाद्यते तानि दम्भकानि । विपा० ७१ । दम्भः-मायाप्रयोगः । प्रश्न० १०६ ।

डक्को-दष्टः । उत्त० २१३ । नि० चू० प्र० ५२ अ । आव० ५६६ । प्रश्न० २१ ।

डगरं-बोलं । नि० चू० प्र० १३२ आ ।

डगलं-अदीहं विसमं चक्कलियागारेण जं खंडं तं डगलं भण्णति । नि० चू० प्र० ३४४ अ । नि० चू० द्वि० १२४ आ । नि० चू० ३५७ आ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डगलका–इष्टकाखण्डाः । ओघ० १३३ । पुतनिर्लेपनाय लेष्टुकाः । बृ० प्र० ६८ आ । अधिष्ठानप्रोञ्छानार्थमिष्टकाखण्डका लघुपाषाणकाः । ओघ० १२२ । प्रोञ्छनलेष्टुकाः । बृ० प्र० ३०६ अ ।

डगलग–डगलकः– पुरीषोत्सर्गानन्तरमपानप्रोञ्छनकपाषाणादिखण्डरूपः । पिण्ड० ९ । डगलकः–अपानप्रोञ्छनार्थं लघुपाषाणः । ओघ० १३० ।

डगलगसरक्खसूइय– । ठाणा० ३३९ ।

डगलगा–उवलमादि । नि० चू० प्र० ७३ अ ।

डगला–पुतप्रोञ्छनोपयोगिनो लेष्टवः । बृ० द्वि० २५३ अ ।

डत्ति–ड इति । आव० ७८२ ।

डब्ब–वामः । बृ० तृ० १४८ अ ।

डमर–स्वराष्ट्रक्षोभः । सूत्र० २७८ । परराजकृत उपद्रवः । जीवा० २८३ । कायवाङ्मनोभिस्ताडनादिगहनम् । आव० ३९९ । दुरितविशेषः । भग० ८ । परकीयग्रामादिदाहकरणरतिकं राज्यम् । बृ० द्वि० ८१ आ । प्राणिघातादिभिस्तद्वर्जकः । उत्त० ३५७ । विड्वरस्थानम् । प्रश्न० ३९ । राजकुमारादिकृतवैराज्यादि विड्वरः । औप० १२ । डमरः–स्वदेशोत्थो विप्लवः । व्य० प्र० १७२ अ । डमरः–विड्वरः । प्रश्न० ४३ । डमराणि–परराजकृतोपद्रवाः । जं० प्र० ६६ । राजकुमारादिकृतविड्वराः । ज्ञाता० ६ । निरया० ४ । डमरः–एकराज्य एव राजकुमारादिकृतोपद्रवः । भग० १९८ । राजकुमारादिकृतविकृतविड्वराः । राज० ११ ।

डमरकर–विड्वरकारिणः । भग० ४७९ । परस्परेण कलहविधायकाः । ज्ञाता० ५८ । डमरकरः–विड्वरकारी । औप० ६९ । कायवाङ्मनोभिस्ताडनादिगहनकरणशीलः । आव० ४९९ ।

डमराइं–डमरकानि–अशोभनानि । आव० ५५७ ।

डमराणि–कुमारादिव्युत्थानादीनि । ठाणा० ४६३ ।

डल्ला–गवां चरणार्थं यद्वंशदलमयं महद्भाजनं डल्लेति प्रसिद्धं द् गोकलिञ्चमुच्यते । जं० प्र० ५८ ।

डसू–पच्चंतिया आरुट्ठा दंतेहिं दसंति तेण डसू । नि० चू० तृ० ४३ अ ।

डसेज्जा–दशेत् । आव० ४०५ ।

डहणं–दहनं–उल्मुकादिभिः । आव० ५८८ ।

डहणो–दहनः–आचारविषये हुताशनब्राह्मणलघुपुत्रो मायाबहुलः । आव० ७०७ ।

डहर–लघुतरम् । बृ० तृ० १५८ आ । डहरकम् । ओघ० २१५ । लघुः । सूत्र० ३५६ । डहरः–अपरिणतः बालः । दश० २४४ । आषोडशवर्षीयः । व्य० प्र० २४५ । क्षुल्लकः । ओघ० ७७ । लघवः । कुन्थ्वादयः सूक्ष्मा वा । सूत्र० २२३ ।

डहरए–डहरकं–लघु । ओघ० १६९ ।

डहरओ–डहरकः । ओघ० १५९ । लघुः । आव० ३०२, ३७१, ४१५ ।

डहरगं–यावत् परिपूर्णानि पञ्चदशवर्षाणि षोडशाद्वर्षादर्वाक् वा तद्डहरकम् । व्य० प्र० २४५ अ । आसोलसगं तु डहरगं जन्मपर्यायेण । व्य० द्वि० ११२ आ । डहरकः–बालकः । उत्त० ३९५ । डहरकः । ओघ० १६३ । व्य० द्वि० २४८ अ । क्षुल्लकः । आव० ८२३ ।

डहरतरतो–लघुतरः । नि० चू० प्र० ३५० आ ।

डहरिआ–लघ्वी । आव० ६६६ ।

डाइणि–डाकिनी–शाकिनी । प्रश्न० ५२ ।

डाए–डायं–शाकम् । पिण्ड० ८४ ।

डाग–शाकम् । आचा० ३३९ । डालप्रधानं शाकम् । आचा० ४११ ।

डागो–पत्तसागो । नि० चू० प्र० १२८ आ, १९२ आ । वस्तुलादिर्भर्जिका । प्रश्न० १६३ । डाकः–वास्तुलकादिर्भर्जिका । भग० ३२६ ।

डामरिओ–डामरिकः–विग्रहकारी । प्रश्न० ३६ ।

डायं–पत्रशाकः । आव० ७२६ ।

डायालो– । नि० चू० प्र० १२० आ ।

डालं–वृक्षशाखा । दश० १५४ ।

डालंडालिओ–इओ इओ पडिहिंडइ डालंडालिओ । नि० चू० प्र० २८७ आ ।

डालगं–आम्रश्लक्षणखण्डानि । आचा० ४०५ । शाखैकदेशः । आचा० ३५४ ।

डाला–वृक्षशाखा । दश० २१८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डिगरा–पादमूलिया । नि० चू० द्वि० १४४ अ ।
डिंडिम–कंशकांस्यभाजनम् । आचा० ३५७ । डिण्डिमः–प्रथमप्रस्तावनासूचकः पणवविशेषः । जं० प्र० १०१ । जीवा० २६६ । प्रथमप्रस्तावनास्तम्बकः पणवविशेषः । राज० ५० । गर्भः । बृ० द्वि० २५८ आ ।
डिंडीर–फेनः प्रचुरधवलः । प्रश्न० ५० ।
डिंडीरोत्कर–फेनपुञ्जः । जं० प्र० ५५ ।
डिंब–स्वदेशोत्थो विप्लवः । जीवा० २८३ । डिम्बानि–स्वदेशोत्थविप्लवाः । जं० प्र० ६६ । डिम्बः–परानीकश्रृगालिकः । सूत्र० २७८ । डिम्बः । औप० १२ । ज्ञाता० ६ । भग० १६८ । ठाणा० ४६३ । राज० ११ ।
डिंभ–डिक्करूवं । नि० चू० तृ० १३ अ । अर्भकरूपाणि । ओघ० ५१ । अर्भकः । ओघ० ५१ । डिम्भः–लघुबालः । आव० ७१७ ।
डिंभक्खोभ–डिंभक्षोभः–गन्त्रीक्षोभः । ओघ० १४२ ।
डिक्करिका–दारिका । आचा० ४१३ ।
डिक्करओ–पुत्रः । आव० ८६३ ।
डिक्करूवं–डिंभो । नि० चू० तृ० १३ अ । डिम्भरूपम् । उत्त० ३०१ ।
डित्थं–अनर्थकं शब्दं निरर्थकमभिधीयते तत् । आव० ३७५ ।
डुंग–डुङ्गः–शिलावृन्दं, चौरवृन्दं वा । भग० ३०७ । जं० प्र० १६८ ।
डुंब–सुस्वराः । जं० प्र० १६६ । डुम्बो–मिण्ठः । पिण्ड० ११५ ।
डुहे– । अन्त० १७ ।
डूसग–गुच्छाविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।
डेपनं–लङ्घनम् । व्य० प्र० २२३ अ ।
डेरगं–लघु । आव० ४०४ ।
डेवणं–उत्प्लवनम् । गच्छ० । लङ्घनम् । ओघ० ३४ । देहल्यादेः उल्लंघनम् । ठाणा० ४०६ ।
डेवंती–गच्छन्ति–परिभुंजन्ति । बृ० द्वि० ३६ आ ।
डेवेमि–लङ्घयामि–अतिक्रमामि । आव० २६४ ।
डोंगर–डुङ्गराः–डुङ्गानां-शिलावृन्दानां चौरवृन्दानां चास्तित्वात् डुङ्गराः–शिलोच्चयमात्ररूपाः । भग० ३०७ । बिलं । नि० चू० द्वि० ७० अ । नि० चू० द्वि० ४२ आ । डुङ्गराः–शिलोच्चयमात्ररूपाः । जं० प्र० १६८ । डोङ्गरः–पर्वतः । ओघ० २० ।
डोंडिणि–ब्राह्मणी, नोआगमेऽप्रशस्ते दृष्टान्तः । आव० ५५ ।
डोंब–डोम्बः–मातङ्गः । उत्त० १०२ । मंठो । नि० चू० द्वि० १०७ अ ।
डोंबा–जातिभेदः । नि० द्वि० ४३ आ । येषां गृहाणि सन्ति गीतं च गायन्ति ते । व्य० प्र० २३१ अ । डोम्बाः–लङ्घकाः–चाण्डालविशेषगायकाः । व्य० द्वि० ४१६ आ ।
डोंबिल–म्लेच्छविशेषः । प्रज्ञा० ५५ ।
डोए–दर्वी–वर्द्धकिः । कर्मजायां बुद्धौ चतुर्थो दृष्टान्तः । नंदी० १६५ । डोयः–बृहद्दारुमस्तकः । महांश्चटुकः । पिण्ड० ८४ ।
डोओ–डोवः–कुण्डिका । आव० ४२७ ।
डोग्गरं–पव्वओ । नि० चू० प्र० २६३ आ ।
डोडिकता–वल्लयः, फलाभिमुखवल्लयः । जं० प्र० २०६ ।
डोडिणि–ब्राह्मणी अप्रशस्तभावोपक्रमे दृष्टान्तः । अनु० ४६ ।
डोड्डिनी–अप्रशस्तभावोक्रमे दृष्टान्तः । ठाणा० १५५ ।
डोब–डोम्बः–चिलातदेशवासी म्लेच्छविशेषः । प्रश्न० १४ ।
डोबा–हस्तिमिठः । बृ० द्वि० २५६ आ ।
डोबिलग–डोबिलकः–चिलातदेशवासीम्लेच्छविशेषः । प्रश्न० १४ ।
डोल–तिडुकाः । बृ० द्वि० २५६ आ । चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः । जीवा० ३२ । चतुरिन्द्रियजन्तुभेदः । उत्त० ६६६ ।
डोल्लति–कम्पते । नि० चू० प्र० ३४६ अ ।
डोवलियं–दर्व्वी । आव० ८४४ । इङ्गुदीतैलान्वितम् । आव० ८५७ ।
डोहलो–दोहदः–स्त्रिया गर्भस्थितो या इच्छा । आव० ५०४ ।

ढ

ढंक–काकः । भग० ३०६ । ढङ्कः–लोमपक्षिविशेषः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीवा० ४१ । ढङ्कः-प्रियदर्शनाप्रतिबोधकः कुम्भकारविशेषः । उत्त० १५६ । ढङ्कः-कुम्भकारविशेषो यः श्रमणोपासको जातः । प्रियदर्शनाप्रतिबोधकः । आव० ३१३ । सुदर्शनासंबुद्धः श्रावकविशेषः । विशे० ९३६ ।

ढंकयित्वा-पिधाय । ओघ० १५० ।

ढंका-ढङ्कारः-काकविशेषः । जं० प्र० १७२ । लोमपक्षिविशेषः । प्रज्ञा० ४९ ।

ढंकादी-ढङ्कादिः । आव० ३४८ ।

ढंकिउं-छादित्वा । आव० ६६१ ।

ढंकुण-चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः । प्रज्ञा० ४२ ।

ढंढो-ढण्ढः-ढण्ढकुमारः, जन्मान्तरनाम्ना कृषिपारासरः वासुदेवसुतः, अलाभपरीषहे दृष्टान्तः । उत्त० ११८ ।

ढक्का-भेरी । राज० २५ । विशे० ३५३ ।

ढक्किंत-ढक्कयताम् । बृ० द्वि० २५ आ ।

ढक्किंतो-स्थगितद्वारः । व्य० द्वि० १३८ अ ।

ढक्कियं-स्थगितम् । दश० ९४ ।

ढक्केंति-स्थगयन्ति । बृ० द्वि० १६७ अ ।

ढक्केउं-स्थगयित्वा । आव० ५६१ ।

ढड्ढरं-यत् महता शब्देनोच्चारयन् वन्दते, कृति कर्मणि एकत्रिंशत्तमो दोषः । आव० ५४४ ।

ढड्ढर- । सूर्य० २८७ ।

ढड्ढरं-महान्तं स्वरम् । ओघ० १३७ ।

ढड्ढरसरो-ढड्ढरस्वरः-महास्वरेण भाषकः । बृ० द्वि० ५४ आ ।

ढड्ढराभासा-ढड्ढरभाषा-स्थूरस्वरभाषा । व्य० प्र० ५४ आ ।

ढड्ढरेण-उच्चैः । ओघ० १७७ ।

ढाक्किक-ढक्कावादकः ।

ढिंक-ढिङ्कः पक्षिविशेषः । प्रश्न० ८ ।

ढिंकणे-चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः । उत्त० ६९६ ।

ढिंकुणा-ढिंकुणा, मत्कुणाः । जं० प्र० १२४ ।

ढुक्कइ-ढौकते । आव० ३६९ ।

ढुक्काहि-व्रज । आव० ३९६ ।

ढुक्को-स्पृष्टः । आव० ३५१ । आश्रितः । आव० ३९९ ।

ढुक्कोमि-आगतोऽस्मि । आव० ८१२ ।

ढेक्कियं-दृप्तम् । आव० ७१९ ।

ढेणिकालः-तिडुः । अनुत्त० ४ ।

ढेणिया-ढेणिका-कङ्कढेणिका, पक्षिविशेषः । अनुत्त० ४ ।

ढेणियालग-ढेणिकालकः-पक्षिविशेषः । प्रश्न० ८ ।

ढोंढसिवा-हेलना । आव० २१९ ।

ढोक्कति-ढौकयति । बृ० तृ० ७८ अ ।

ढोयं-गमनं-मिलितुम् । आव० ६८३ ।

ण

णं-एनम् । आव० १७५ । पिण्ड० १२२ । एतम् । उत्त० १८५ । इमं भरतराजा इत्यर्थः । जं० प्र० २३३ । निश्चितम् । प्रज्ञा० ३०३ । निश्चये । प्रज्ञा० ३०३ । तम् । बृ० प्र० १२३ आ ।

णंगलई-साधारणबादरवनस्पतिकायः । प्रज्ञा० ३४ ।

णंगला-नङ्गला-ग्रामविशेषः । आव० २०५ ।

णंगलिअ-लाङ्गलिका-गलकावलम्बितसुवर्णादिमयहलधारिणो भट्टविशेषाः । जं० प्र० १४२ ।

णंगोला-नाङ्गोलिक नामा अन्तरद्वीपः । प्रज्ञा० ५० ।

णंगोलाभंगसिरोधरे-लाङ्गुलाभङ्गवत्-सिंहादिपुच्छवक्रीकरणमिव शिरोधरा-ग्रीवा यस्य स । ज्ञाता० ९६ ।

णंगोलियदीवे- । ठाणा० २२५ ।

णंगोलिया- । ठाणा० २२५ ।

णंतं-(देशी०) वस्त्रशिल्पम् । आव० १३२ ।

णंतंए-गच्छमपेक्ष्य सदौपग्रहिकं नन्तकं-मृताच्छादनसमर्थं वस्त्रम् । आव० ६२९ ।

णंतगं-अणंतगं-कम्बलादिवस्त्रम् । ओघ० ३४ । वस्त्रम् । बृ० तृ० ६८ आ ।

णंद-नन्दः-पाटलीपुत्रे राजा । उत्त० १०५ । राजगृहे मणिकारश्रेष्ठी । ज्ञाता० १७८ । नन्दः-कुसुमपुरराजा । दश० ५२ । नन्दः-चन्द्रगुप्तनिष्काशितः । दश० ९१ । नन्दः-गङ्गायां नाविकविशेषः । आव० ३८९ । नन्दः-परिणामिकीबुद्धिदृष्टान्ते वणिग्विशेषः । आव० ४३६ । सम० २९ । ज्ञाता० १७८, १५२ ।

णंदकंतं- । सम० २१ ।

णंदकूडं- । सम० २१ ।

णंदज्झयं- । सम० २१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णंदग–नन्दकः–खड्गविशेषः। प्रश्न० ७७। साधुजुगुप्सकः कौशाम्ब्यां जन्मदीक्षे।

णंदण–सप्तमो बलदेवः। आव० १५६। मायोदाहरणे कोशलपुरे श्रीमतीकान्तिमती पिता। आव० ३६४। ज० प्र० ३५६।

णंदणवण–नन्दनवनं–विजयपुरनगर उद्यानम्। विपा० ६५। रैवतके उद्यानम्। ज्ञाता० ६६।

णंदनवणकूडे–नन्दनवनकूटं, नन्दनवनकूटनाम। जं० प्र० ३६७।

णंदणवणा– । ठाणा० ८०।

णंदणवने–नन्दनवनं, नन्दयति–आनन्दयति देवादीनिति नन्दनम्।

णंदप्पभं– । सम० २६।

णंदलेसं– । सम० २६।

णंदवण्णं– । सम० २६।

णंदसिगं– । सम० २६।

णंदसिट्ठं– । सम० २६।

णंदा–नन्दति नन्दयतीति वा नन्दः–समृद्धः समृद्धिप्रापको वा। ज्ञाता० ५५। ठाणा० २३०, २३१। नन्दा–पूर्वदिग्रूचकवास्तव्या दिक्कुमारी। आव० १२२। नन्दा–सुगुप्तामात्यपत्नी मृगावतीवयस्या च। आव० २२२। नन्दा–अचलभ्रातृमाता। आव० २५५। नन्दा–दक्षिणदिग्भाव्यञ्जनपर्वतस्य दक्षिणस्यां पुष्करिणी। जीवा० ३६४। नन्दा–उत्तरपूर्वरतिकरपर्वतस्य दक्षिणस्यामीशानदेवेन्द्रस्य कृष्णराजस्य राजधानी। जीवा० ३६५। नन्दा–पौरस्त्यरुचकवास्तव्या द्वितीया दिक्कुमारी। जं० प्र० ३६१।

णंदावत्त–महाशुक्र कल्पे विमानम्। सम० २६। दृष्टिवादे सूत्रस्य द्वादशभेदः। सम० १२८। नि० चू० प्र० ५५ अ। नन्द्यावर्तः–गृहविशेषः। जं० प्र० २०६। नन्द्यावर्तः–अष्टमङ्गलेषु अष्टमं मङ्गलम्। जं०प्र० ४१६।

णंदि–द्वादशतूर्यसंघातः। जं० प्र० ५३। नन्दिः। राज० ६८।

णंदिआवत्त–नन्द्यावर्तः–प्रासादविशेषः। जं० प्र० १०६। नन्द्यावर्तः। जं० प्र० ४०५।

णंदिकर–नन्दिकरः–वृद्धिकरः। ज्ञाता० १८।

णंदिघोसा–नन्दिघोषा–स्तनितकुमाराणां घण्टा। जं० प्र० ४०७।

णंदिकला–वृक्षविशेषाः। ज्ञाता० १६४।

णंदिमित्ते– । ज्ञाता० १५२।

णंदियगो–नन्दितकः। उत्त० २७२।

णंदियावत्ते– । ठाणा० १६८।

णंदिरुक्खे–नन्दिवृक्षः–बहुबीजकवृक्षविशेषः। प्रज्ञा० ३२।

णंदिवद्धणा–नन्दिवर्धना पूर्वदिग्रुचकवास्तव्या दिक्कुमारी। आव० १२२। नन्दिवर्धना–पौरस्त्यरुचकवास्तव्या चतुर्थी दिक्कुमारी। जं० प्र० ३६। नन्दिवर्द्धना–दक्षिणदिग्भाव्यञ्जनपर्वतस्योत्तरस्यां पुष्करिणी। जीवा० ३६४।

णंदिवद्धणे–नन्दिवर्द्धनः–श्रीदामराजस्य कुमारः। विपा० ७०।

णंदिसेणा– । ठाणा० २३०।

णंदिस्सरा–नन्दिस्वरा–वायुकुमाराणां घण्टा। जं० प्र० ४०७।

णंदी–नन्दी–भगवत्प्रियमित्रम्। आव० २२२। ठाणा० ३६३।

णंदीतूरं–नन्दीतूर्यं–मङ्गलतूर्यम्। उत्त० ३०२।

णंदीफले–नन्दीफलं–षष्ठाङ्गे पञ्चदशं ज्ञातम्। उत्त०६१४।

णंदीरुक्खे– । सम० १५२।

णंदीसरवर– । ठाणा० २२६।

णंदीसरो–नन्द्या–समृद्धया ईश्वरः–स्फातिमान् नंदीश्वरः। जीवा० ३६५।

णंदीसरोदे–नन्दीश्वरोदः–नन्दीश्वरे द्वीपे समुद्रः। नन्दीश्वरद्वीपोदकं यत्रासौ, नन्दीश्वरवरं द्वीपं परिवेष्ट्य स्थित इति, नन्दीश्वरं प्रतिलग्नमुदकं यस्या सौ वा। जीवा० ३६५।

णंदुत्तखंडिसगं– । सम० २६।

णंदुत्तरा–नन्दुत्तरा पूर्वदिग्रूचकवास्तव्या दिक्कुमारी। आव० १२२। नन्दोत्तरा–पौरस्त्य रूचकवास्तव्या प्रथमा दिक्कुमारी। जं० प्र० ३६१। ठाणा० २३०, २३१।

णंदोत्तरा–नन्दोत्तरा–दक्षिणदिग्भाव्यञ्जनपर्वतस्य पूर्वस्यां दिशि पुष्करिणी। जीवा० ३६४। उत्तरपूर्वरतिकरपर्वतस्य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूर्वस्यामीशानदेवेन्द्रस्य कृष्णाऽभिधाग्रमहिष्याः राजधानी। जीवा० ३६५ ।

ण–वाक्यालङ्कारे । विशे० ६८७ । वाक्यालङ्कारे । उत्त० १८१ । णगारो देसिवयणेण पादपूरणे । नि० चू० प्र० २१ अ ।

णउअंगाति– । ठाणा० ८६ ।

णउआति– । ठाणा० ८६ ।

णउए– । भग० २१० ।

णउलओ–नकुलकः । दश० ३५ ।

णउलगं–नकुलकम् । उत्त० २७६ ।

णउलो–नकुलः । प्रश्न० ८ ।

णओ–नयः । प्रज्ञा० २८४ ।

णकरं–ण करा जत्थ तं णकरं । नि० चू० द्वि० ७० आ ।

णक्का–मत्स्यविशेषाः । प्रज्ञा० ४४ ।

णक्खत्तं–नक्षत्राणि । सूर्य० १०० । नक्षत्रं–राज्याभिषेकोपयोगि श्रुत्यादित्रयोदशनक्षत्राणामन्यतरत् । जं० प्र० २७३ ।

णक्खत्तविजये–विचयनं–विचयो नक्षत्राणां नक्षत्रविचयः–नक्षत्राणां स्वरूपनिर्णयः । सूर्य० १७५ ।

णक्खत्तसंवच्छरे–यावता कालेनाष्टाविंशत्यपि नक्षत्रैः–सह क्रमेण योगपरिसमाप्तिस्तावान् कालविशेषो द्वादशभिर्गुणितो नक्षत्रसंवत्सरः । सूर्य० १५३ । ठाणा० ३४४ ।

णक्खत्तसीमच्छेए–नक्षत्रसीमाछेदः । सूर्य० २४७ ।

णक्खत्ता–नक्षत्राणि–अश्विन्यादिरेवत्यन्तानि; सोमस्याज्ञोपपातवचननिर्देशवर्तिन्यो देवताः । भग० १९५ ।

णगधारा–पर्वतनितम्बः । नि० चू० प्र० ३४५ आ ।

णगरं–करो जत्थ न विज्जति णगरं । नि० चू० प्र० २२९ अ । नगरम् । सूत्र० ३०९ ।

णगरगुत्तिय–नगरगुप्तिकः । विपा० ५२ ।

णगरनिद्धमण– । प्रज्ञा ५० ।

णगररक्खिओ–कोटवालो । नि० चू० प्र० १९५ अ ।

णगरविणट्ठ–नगरविनष्टः । आव० ६६ ।

णगराति–नैतेषु करोऽस्तीति नकराणि । ठाणा० ८६ ।

णगा–पव्वता । नि० चू० प्र० १९ आ ।

णगारमग्गे–अनगारमार्गः–उत्तराध्ययनेषु पञ्चत्रिंशत्तमम-ध्ययनम् । उत्त० ९ ।

णग्गई–न्यग्गतिः–क्षत्रीयपरिव्राजके तृतीयः । औप० ९१ ।

णग्गती–नग्गतिः–द्रव्यव्युत्सर्गे गान्धारजनपदे पुरिमपुरनगरेऽधिपतिः, यः पुष्पिताम्रं दृष्ट्वा संबुद्धः सः । आव० ७२० ।

णग्गभावे– ज्ञाता० २२७ ।

णग्गोधपरिमंडलं–न्यग्रोधपरिमण्डलं-न्यग्रोधवत् परिमण्डलं यस्य यथा न्यग्रोध उपरिसम्पूर्णः प्रमाणोऽधस्तु हीनस्तद्वत् यत्संस्थानं, नाभेरुपरि संपूर्णमधस्तु न तथा, उपरिविस्तारबहुलमिति भावः, द्वितीयं संस्थानम् । जीवा० ४२ ।

णग्गोह–न्यग्रोधः, वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३२ । भग० ८०३ । सम० १५२ ।

णग्गोहमंडले–न्यग्रोधमण्डलं– विस्तारबहुलं संस्थानम् । आव० ३३७ ।

णच्चावियं–नर्त्तयितव्यः । ओघ० १०८ ।

णज्जति–ज्ञायते । आव० ३०० ।

णट्ठ–गीतेण विरहितं णट्ठं । नि० चू० तृ० १ अ । नटाः–नाटयितारः । नृत्यन्ति स्म नृत्ताः–नृतविधायिनः । जं० प्र० १२३ ।

णट्ठमालए–नृत्तमालकः–खण्डप्रपाताधिपतिः । जं० प्र० ७४ ।

णट्ठमालगे–नाट्यमालकः, नृत्तमालकः । जं० प्र० २५५ ।

णट्ठमाला–नृत्तमालाः । जं० प्र० ९८ । एकोरुकद्वीपे वृक्षविशेषः । जीवा० १४५ ।

णट्ठवाइत्तं–नर्तकीत्वम् । बृ० तृ० २४७ आ ।

णट्ठविही–नाट्यविधिः–सामान्यतो नर्त्तनविधिः । जीवा० २४७ । नृत्यविधिः–नाट्यकरणप्रकारः । जं० प्र० २५९ ।

णट्टेहिं–द्वात्रिंशत्पात्रोपलक्षितैर्नाट्यैः । उत्त० ३८६ ।

णट्ठमतीते–चक्षुर्ज्ञानस्य विषयानिश्चायकत्वात् । ज्ञाता० २३० ।

णट्ठसण्णे–नष्टसंज्ञो मनसो भ्रान्तत्वात् । ज्ञाता० २३० ।

णट्ठसुतीते–नष्टश्रुतिको–निर्यामकशास्त्रेण दिगादिविवेचनस्य करणे अशक्तत्वात् । ज्ञाता० २३० ।

णड– । नि० चू० तृ० १८ अ ।

णडवेलंबं–बालरोदनादि । नि० चू० द्वि० १०६ अ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णडा–णाडगाणि णट्टे वा । नि० चू० द्वि० ४३ आ । नि० चू० प्र० २८४ अ ।

णडेइ–बाधते । आव० २१८ ।

णत– । सम० ३७ ।

णतावगोज्जोआ– । नि० चू० ७ ।

णत्तंभागा–नक्तं भागानि–चन्द्रस्य समयोगीनि । ठाणा० ३६८ ।

णत्ता–नप्ता–पुत्रपुत्रः । जं० प्र० १४६ ।

णत्तिण्णो–गिलाणो । नि० चू० तृ० ८२ आ ।

णत्ती–ज्ञप्तिः, आदेशः । बृ० प्र० १६२ आ ।

णत्तुणिअत्ति–नप्तः । दश० २१५ ।

णत्थं–न्यस्तं–साध्वर्थमुपकल्पितं, अर्द्धदत्तं वा । सूत्र० १०६ ।

णदिणिसेज्जा–नदीतीरे नैषेधिकी । मर० ।

णदिमुह– । नि० चू० द्वि० ७८ अ ।

णदीति– । ठाणा० ८६ ।

णदीमहो–नदीमहः–नदीसत्क उत्सवः । जीवा० २८१ ।

णपुंसगवेदो–तणकट्ठमहासंचयचिविधिधणघोरजणियमणुवसंतो तत्तलक्खणो महाणगरडाहसमाणो । नि० चू० द्वि० ३१ अ ।

णपुंसगवेय–नपुंसकवेदः–स्त्रीपुंसोरप्यभिलाषः । जीवा० १८ ।

णभसूरए– । सूर्य० २८७ ।

णभसेणो–नभःसेनः–उग्रसेनपुत्रः । आव० ६४ ।

णमंसइ–नमस्यति–प्रणमति । जं० प्र० १५६ ।

णमंसण–नमस्यनं–प्रणमनम् । ज्ञाता० ४५ ।

णमंसमाणे–नमस्यन्–प्रणमन् अभिमुखः । ज्ञाता० १० ।

णमइ–नमति–प्रव्हीभवति । उत्त० ६५ ।

णमि–नमिः–श्रीऋषभस्वामि महासामन्तकच्छसुतः । जं० प्र० २५२ । आव० १५१ । नमिः–परीषहोपसर्गादिनमनात्, एकविंशतितमो जिनः । आव० ५०६ ।

णमिपव्वज्जा–नमिप्रव्रज्या–उत्तराध्ययनेषु नवममध्ययनम् । उत्त० ६ ।

णमुदए– । भग० ३७० ।

णम्मोक्कार–नमस्कारः–नमस्करणम् 'णमो अरिहंताणं' अयम् । दश० १८० । आव० ६८५ ।

णमोक्कारसहिता–नमस्कारसहितः । आव० ८३८ ।

णयगई–नयगतिः–यन्नयानां नैगमादीनां स्वस्वमतपोषणं, यद्वा यन्नयानां सर्वेषां परस्परसापेक्षाणां प्रमाणाबाधितवस्तुव्यवस्थापनं सा । प्रज्ञा० ३२६ ।

णयणकंता–नयनकान्ताः–लोचनाभिरामाः परिणयनभर्तारो वा । प्रश्न० ७० ।

णयमाला–एकोरुकद्वीपे वृक्षविशेषः । जीवा० १४५ ।

णयरगुत्तिय–नगरगुप्तिकः । आव० ३७१ ।

णयरमयहरो–नगरमहत्तरः । आव० ४२६ ।

णयरिबाहिरिया–नगरीबाहिरिका । आव० ४२६ ।

णयवादसुहुमया–णेगमादिसत्तणया एक्केक्कते सत्तविधो तेहिं सभेदा जा दव्वपरूवणा दिट्ठिवाए कज्जति । नि० चू० तृ० ६७ आ ।

णरकन्ता–नरकान्तानदीदेवीकूटम् । जं० प्र० ३८० ।

णरवाम–पुरुषव्यामः–सुप्रसारितः । जं० प्र० २६ ।

णरवाहण– । नि० चू० प्र० २५७ आ ।

णरसीहरूव–नरसिंहरूपः । ज्ञाता० २१६ ।

णल–पर्वतविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

णलगिरि–प्रद्योतनस्य हस्तिः । नि० चू० प्र० ३४८ आ ।

णलदाम–नलदामा कुसुमपुरे कोलिकः । दश० ५२ ।

णलिअंगे–नलिनाङ्गं–चतुरशीत्या लक्षैः पद्मैः । अनु० १०० ।

णलिणंगं–नलिनाङ्गं–चतुरशीतिः पद्मशतसहस्राणि । जीवा० ३४५ ।

णलिणंगाति– । ठाणा० ८६ ।

णलिण–नलिनं–ईषद्रक्तं पद्मम् । राज० ८ । नलिनं चतुरशीतिर्नलिनाङ्गशतसहस्राणि । जीवा० ३४५ । नलिनं–चतुरशीत्या लक्षैर्नलिनाङ्गैः । अनु० १०० । नलिनो विजयः । जं० प्र० ३५७ । जलरुहविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

णलिणकूड–नलिनकूटं वक्षस्कारपर्वतः । जं० प्र० ३४६ । नलिनकूटं नाम वक्षस्कारपर्वतः । जं० प्र० ३४६ । ठाणा० ३२६ ।

णलिणा–नलिना, पुष्करिणी नाम । जं० प्र० ३३५ । ठाणा० ८० । जं० प्र० ३६० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णलिणावई–नलिनावती विजयः। सलिलावतीति पर्यायः। जं० प्र० ३५७।

णलिणिगुम्मं–नलिनिगुल्मं–सौधर्मकल्पे विमानविशेषः। उत्त० १६०। आव० ३१६। पुष्कलावतीविजये पुण्डरीकिणीनगर्यामुद्यानविशेषः। उत्त० ३२६।

णलिणिवणे–पुण्डरीकिणीनगर्यां उद्यानविशेषः। ज्ञाता० २४२।

णल्लग–नल्लकः। जं० प्र० १०१।

णवं–नवं–अभिनवम्। सूर्य० १८।

णवंतेपुरं–जोव्वणयुत्ता परिभुञ्जमाणीओ। नि० चू० प्र० २७१ अ।

णवग–पासत्थादि पंच काहिकादी चउरो। नि० चू० द्वि० ६२ अ।

णवग्गाइं–प्रत्यासन्नानि। बृ० तृ० ४३ अ।

णवणीइआगुम्मा–नवनीतिका गुल्माः। जं० प्र० ६८।

णवणीतं–नवनीतं–म्रक्षणम्। जीवा० १६२।

णवणीयं–नवनीतं–म्रक्षणम्। सूर्य० २६२।

णवतगच्छइं– । नि० चू० प्र० ३२६ आ।

णवपज्जए–नवं–प्रत्यग्रं प्रतापितस्यायोधनकुट्टनेन तीक्ष्णं कृतस्य पायनं–जलनिबोलनं यस्य तन्नवपायनम्। भग० ६५०।

णवपज्जुणए–नवं–प्रत्यग्रं पायनं–नोहकारेण तापितं कुट्टितं तीक्ष्णधारीकृतं पुनस्तापितानां जले निबोलनं यस्य तत्। ज्ञाता० ११६।

णवमिआ–नवमिका–पाश्चात्यरूचकवास्तव्या षष्ठी दिक्कुमारीमहत्तरीका। जं० प्र० ३६१।

णवमिका–नवमिका–पश्चिमरूचकवास्तव्या षष्ठी दिक्कुमारी। आव० १२२।

णवमिता– । ठाणा० २०४।

णवमितातें– । ठाणा० २३१।

णवमिया–नवमिका दक्षिणपश्चिमरतिकरपर्वतस्यापरस्यां गोस्तूपराजधान्यधिष्ठात्री शक्रदेवेन्द्रस्य तृतीयाऽग्रमहिषी। जीवा० ३६५। नवमोत्क्षेपस्य षष्ठमध्ययननाम। ज्ञाता० २५३।

णवमीपक्ख–नवमीपक्षः–अष्टमीदिवसः, नवमीदिवसः जं० प्र० १४१।

णवयए–नवत्वक्–दुष्प्रतिलेखितदूष्यपञ्चके चतुर्थो भेदः। आव० ६५२।

णवरी–केवल इत्यर्थः। नि० चू० प्र० १० अ।

णवायए–नवायतः–नव हस्तायतः। ज्ञाता० ६६।

णविया–नविकाः–अग्रेतन भवभाविनी। ज्ञाता० २४१।

णहरणी– । नि० चू० द्वि० १८ अ।

णहसिहा–नखाग्राः। नि० चू० प्र० १६० अ।

णहा–नखा–नखराः। ज्ञाता० १३६।

णांगोली–नाङ्गोलिकः–अन्तरद्वीपविशेषः। जीवा० १४४।

णाइ–ज्ञातिः–सजातीयः। भग० १६३। ज्ञातिः–समानजातीयाः। विपा० ५८।

णाइए–नादितं, प्रतिरवः। जं० प्र० १६२।

णाइलो–नागिलः–श्रमणोपासकः,चम्पायां सुवर्णकारकुमारनन्दिनो मित्रम्। आव० २६६।

णाई–ज्ञातिः–मातुलादिस्वजनः। औप० ८६। ज्ञातिः–सजातीयः। औप० १०३। ज्ञाताः–क्षत्रिया ज्ञातं वा वस्तुजातं विद्यते यस्य स ज्ञाती, विदित समस्तवेद्य इति। सूत्र० ३६६।

णाए–ज्ञातं–प्रसिद्धं दृष्टान्तभूतं प्रधानं वा। सूत्र० १५०।

णाओ–निश्चये नायनं–विशिष्टस्थानप्राप्तिलक्षणं यस्मिन् सति सः न्यायः–सम्यक्चारित्रावाप्तिरूपः चारित्रयोगः। सूत्र० १६७।

णाग–द्रुमविशेषः। जं० प्र० ४६। नागः–भवनपतिविशेषः। जं० प्र० १२३। नागो–वक्षस्कारः पर्वत। जं० प्र० ३५७। नागः–द्रुमविशेषः। जीवा० २००। नागः–द्वीपविशेषः समुद्रविशेषश्च। जीवा० ३७०। नागः–नागवंशप्रसूतः। औप० २७।

णागजत्ता– । नि० चू० प्र० २६१ अ।

णागदंतगा–नर्कुटिको, अङ्कुलिको। जं० प्र० ५०।

णागदंत–नागदन्तः–अङ्कुटकः। राज० ६४। जीवा० ३६१।

णागदत्ता– । सम० १५१।

णागदत्ते–नागदत्तः–मणिपुरनगरे गाथापतिः। विपा० ६५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णागदारे- । ठाणा० २३० ।
णागनत्तु-नागनप्ता वरुणनामा । भग० ३२० ।
णागपव्वता- । ठाणा० ८० ।
णागपव्वते- । ठाणा० ३२६ ।
णागपुर-नगरविशेषः । ज्ञाता० २५२ ।
णागपुप्फ-नागपुष्पं नागकेसरकुसुमम् । जं० प्र० १८३ ।
णागभद्दो-नागभद्रः-नागद्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३७० ।
णागमहाभद्दो-नागमहाभद्रः नागद्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३७० ।
णागमहावरो-नागमहावरः-नागसमुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३७० ।
णागरगो-नागरः-पौरः । आव० ४०६ ।
णागरुक्खे- । सम० १५२ ।
णागलया-लताविशेषः । प्रज्ञा० ३२ । वल्लीविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।
णागवरो-नागवरः-नागसमुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३७० ।
णागवोहो- । ठाणा० ४६८ ।
णाडइज्जो-नाटकीयः-नाटकप्रतिबद्धपात्रः । ज्ञाता० ४० । आव० ३५६ ।
णाडगविही-नाटकविधिः अभिनयप्रबन्धप्रपञ्चनप्रकारः । जं० प्र० २५६ ।
णाढाइ-नाद्रियते । आव० ३७४ ।
णाणं-ज्ञानम् । आव० ७६३ ।
णाण-ज्ञानं-श्रुतज्ञानम् । ठाणा० ६४ । ज्ञातम् । ठाणा० ३२७ ।
णाणकुसील-कषायकुशीलोऽप्येवं नवरं क्रोधादिना विषयादिज्ञानं प्रयुञ्जानो ज्ञानकुशीलः । ठाणा० ३३७ ।
णाणत्तं-विसेसो । नि० चू० प्र० १३३ आ । वर्णादिकृतं नानात्वम् । भग० ७४१ ।
णाणनाणोपगए-ज्ञानज्ञानोपगतः-ज्ञानमिह श्रुतज्ञानं तेन ज्ञानं-अवगमः प्रक्रमाद् यथावत्क्रियाकलापस्य तेनोपगतो-युक्तः । उत्त० ४८७ ।
णाण पवायं-पञ्चमं पूर्वनाम । ठाणा० १६६ ।
णाणपुलाए-ज्ञानपुलाकः-पुलाकस्य प्रथमो भेदः, ज्ञाननिस्सारत्वं य उपैति स पुलाकः । उत्त० २५६ । स्खलितमिलितादिभिरतिचारैर्ज्ञानमाश्रित्यात्मानं असारं कुर्वन् ज्ञानपुलाकः । ठाणा० ३३७ ।
णाणमोहे-ज्ञानं मोहयति आगच्छतीति ज्ञानमहः-ज्ञानावरणोदयः । ठाणा० ६६ ।
णाणसंकिलेसे-ज्ञानस्य सङ्क्लेशः-अविशुद्धयमानता स ज्ञान सङ्क्लेशः । ठाणा० ४८६ ।
णाणविणए-ज्ञानविनयो-मत्यादिज्ञानानां श्रद्धानभक्तिबहुमानतद्दृष्टार्थभावनाविधिग्रहणाभ्यासरूपः । भग० ६२४ ।
णाणायरे-ज्ञानाचारः-श्रुतज्ञानविषयः कालाध्ययनविनयध्यानादिरूपो व्यवहारोऽष्टधा । सम० १०८ ।
णाणायारे-आचरणमाचारः-व्यवहारो ज्ञानं-श्रुतज्ञानं तद्विषय आचारः कालादिरष्टविधो ज्ञानाचारः । ठाणा० ६४ । आचरणमाचारो ज्ञानादिविषयाऽसेवेत्यर्थः । ज्ञानाचारः-कालादिरष्टधा । ठाणा० ३२६ ।
णाणिंदे-ज्ञानेन्द्रः-ज्ञानेन ज्ञानस्य ज्ञाने वा इन्द्रः परमेश्वरो ज्ञानेन्द्रः अतिशयवच्छ्रुताद्यन्तरज्ञानवशविवेचितवस्तुविस्तारः-केवली वा । ठाणा० १०४ ।
णाणिड्ढी-ज्ञानर्द्धिः-विशिष्टश्रुतसम्पत् । ठाणा० १७३ ।
णाणुप्पयं-ज्ञानस्योत्पादनमुत्पत् ज्ञानोत्पत् । उत्त० ३२२, २८४, ३०६ ।
णात-दृष्टान्तः । नि० चू० प्र० २८५ आ । ज्ञातं-ज्ञायते अस्मिन् सति दार्ष्टान्तिकोऽर्थ इति अधिकरणे कप्रत्ययोपादानात् ज्ञातं-आख्यानकरूपं उपमानमात्रं उपमिति मात्रम् । ठाणा० २५४ ।
णातगं-ज्ञातकं-स्वजनम् । बृ० द्वि० १८८ आ ।
णाता-समत्थो गीयत्थो वा । नि० चू० प्र० २२१ ।
णाभी-लोकनाभिः, मेरुनाम । जं० प्र० ३७५ । ऋषभदेवपिता । सम० १५० । नाभिः-मध्यः । आव० ४३७ । नाभिः-चतुर्दशं कुलकरनाम । जं० प्र० १३२ । सगडरहाइण भवइ । दश० चू० १११ ।
णाभोगे-अनाभोगः-विस्मृतिः । ठाणा० ४८४ ।
णाम-यथाभूतार्थनिरपेक्षमभिधानमात्रं नाम । आचा० ६१ । नामपदं-अव्युत्पन्नेतरभेदाद् द्विधा । प्रश्न० ११७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नामकर्मणउत्तरप्रकृतिविशेषरूपम् । प्रज्ञा० २१७ । विभक्तिपरिणामेन नाम्नेति । जं० प्र० प्रस्ता० १५ । प्राकृतत्वात् विभक्तिपरिणामेन नाम्ना । जं० प्र० प्रस्ता० ४७ । नाम-शास्त्रीयउपक्रमः । आचा० ३ । णाम इति पादपूरणे, अहवा णाम इत्युपसर्गः, अयं वार्थविशेषे । नि० चू० द्वि० ६६ अ । पादपूरणे, अवधारणे । नि० चू० प्र० २१२ अ । शिष्यामन्त्रणे । जं० प्र० ३१ ।

णामगं–नामकं प्रतिज्ञा । उत्त० १०१ ।

णामधेज्जा–सार्थकाणीत्यर्थः । नि० चू० प्र० ५ अ ।

णाय–निश्चित आयः । लाभः न्यायः मुक्तिः । उत्त०२१३ । ज्ञातं–सामान्येनावगतम् । भग० ६५ । ज्ञातं सामान्यतः । भग० ३१६ । ज्ञातं–ग्रन्थः । आव० ६७७ । उदाहरणम् । ज्ञाता० १० । दृष्टान्तः । बृ० तृ० २६ अ । ज्ञातः–इक्ष्वाकुवंशविशेषभूतः । औप० २७ । ज्ञातः–उदारक्षत्रियः । उत्त० २७० । नावः । उत्त० १५० ।

णायए–नायकः प्रणेता, यथावस्थितवस्तुस्वरूपप्रणेतृत्वम् च । सूत्र० २५४ । प्रधानः न्यायको वा । ज्ञाता० ६७ । ज्ञाति–बन्धुः । सूत्र० १७१ । ज्ञातकः–स्वजातीयः यद्वा ज्ञातकः–संवासादिना ज्ञातः–सहज परिचितः । जं० प्र० १२३ ।

णायग–स्वामिनो ज्ञानादि प्रापका वा । व्य० प्र० २३५ । णायगो–स्वजनः । नि० चू० प्र० २६८ आ । स्वजनः नातगो–प्रज्ञायमानः । नि० चू० द्वि० २५ अ ।

णायज्झयणा–ज्ञातानि-दृष्टान्तास्तत्प्रतिपादकान्यध्ययनानि षष्ठाङ्गप्रथमश्रुतस्कन्धवर्त्तीनि । सम० ३७ ।

णायपुत्ते–ज्ञातपुत्रः–वर्तमानतीर्थाधिपतिर्महावीर इति । उत्त० २७० ।

णाया–ज्ञाताः–उदारक्षत्रियाः । बृ० द्वि० १५२ अ । कुलार्यभेदः । प्रज्ञा० ५६ ।

णारए–नारदः । औप० ६१ ।

णारदो–द्वारकायां ऋषिः । आव० ६४ ।

णारायं–नाराचम् । जीवा० ११७ । नाराचाः–सर्वलोहबाणः । जं० प्र० २०६ ।

णारायणो–कमलामेलोदाहरणे द्वारकाधिपतिः, नारायणः–कृष्णः । आव० ६४ ।

णारी–नारीकूटं–नारीकान्तानदीसुरीकूटम् । जं० प्र० ३७७ ।

णारीकन्ता–नारीकान्ता–नदीविशेषः । जं० प्र० ३७६ ।

णारीकन्ताए–नारीकान्तायाः । जं० प्र० ३७६ ।

णालंद–सूत्रकृताङ्गस्य त्रयोविंशमध्ययनम् । उत्त० ६१६ ।

णालंदइज्जं–सूत्रकृताङ्गे त्रयोविंशमध्ययनम् । सम०४२ ।

णालंदा–नालंदा–राजगृहे शाखापुरम् । आव० १६६ ।

णालबद्धं–नालबद्धम् । जीवा० १३६ ।

णालबद्धा–माता–पिता–भ्राता आदि । नि० चू० तृ० ३० अ ।

णालातिबद्धेणं– । नि० चू० प्र० २११ आ ।

णालिआ–नालिका–यष्टिविशेषः । जं० प्र० ६४ ।

णालिएरिवणं–नालिकेरवनम् । जीवा० १४५ ।

णालिएरी–वलयविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

णालि–घडिया । नि० चू० प्र० २२ आ ।

णालिआ–नालिका । आव० ३६० ।

णालिउ–घडिउदग गलेणो व लक्खितो कालो । नि० चू० तृ० ११८ आ ।

णाले–नालं–कन्दोपरिमध्यवर्त्यवयवः । जं० प्र० २८४ ।

णावणिज्जुत्तीए–एतेहिं सुत्तपदेहिं सव्वे उग्गमुप्पादणएसणा दोसा य सूचिता तेण । नि० चू० तृ० ६३ अ ।

णावत्ति–पसत्ती । नि० चू० प्र० १२१ आ ।

णावमज्जे–(णायमेज्जा) नाचमेत–न निर्लेपनं कुर्यात् । सूत्र० १८१ ।

णावाकडए–नावाकटकं–नौशकलम् । आव० ४०१ ।

णावाकडओ–नावाकटकं नौशकलम् । आव० २१४ ।

णावागती–नावागतिः यन्नावा महानद्यादौ गमनं, विहायोगतेः सप्तमो भेदः । प्रज्ञा० ३२७ ।

णावाभूयं–नौभूतं–नौतुल्यम् । जं० प्र० २२० ।

णावावाणियगा–नौवाणिजकाः–पोतवणिजः । ज्ञाता० १३६ ।

णावासंठिते–नौसंस्थितम् । सूर्य १३० ।

णाविय–नाविकः–कैवर्त्तः । ज्ञाता० १५६ ।

णाविया–नौका–द्रोणिका । भग० २१६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णासकरणं-णासारिसादिरोगणासणत्थं णासकरणं । नि० चू० द्वि० ८९ अ ।
णासिऊणं-नंष्ट्वा । दश० ११ ।
णासिक्कं-नासिक्यं, पारिणामिकीबुद्धिदृष्टान्ते नगरम् । आव० ४३६ ।
णासो-नियतं निश्चितं वाऽऽसनं-नामादिरचनात्मकं क्षेपणं न्यासः-निक्षेपः । उत्त० ७२ ।
णाह-नाथः-योगक्षेमकारिन् । ज्ञाता० १६७ ।
णाहरा-सणप्फया । नि० चू० तृ० ८ आ ।
णित-निर्गच्छन् । ओघ० ९० । निन्तो निर्गच्छन् । आव०
णिताणं-निर्गच्छत् । नि० चू० प्र० १२० आ । २६५ ।
णिदणया-निन्दनं-आत्मनैवात्मदोषपरिभावनम् । उत्त० ५७९ ।
णिदुयं-निर्द्रुतं निर्यातं, मृतमिति । विपा० ५१ ।
णिदू-निन्दुः-म्रियमाणप्रजनिका स्त्री । आव० २०५ । निन्दूः-मृतापत्यप्रसूः । आव० ३६७ ।
णिंब-निम्बः, एकास्थिकवृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३१ ।
णिंबोलियाए-निम्बगुलिका-निम्बफलं, निर्बोलिता निमज्जिता । ज्ञाता० १९९ ।
णिअंसेइ-निवासयति-परिधापयति । जं० प्र० १६१ ।
णिअग-निजकाः-मातापितृभ्रात्रादयः । जं० प्र० २७० ।
णिअमो-नियमः शौचादिः । जं० प्र० ५२२ ।
णिअल्लओ-निजकः । दश० ११ ।
णिइंति-निर्यान्ति-निर्गच्छन्ति । प्रश्न० ११५ ।
णिइयं-नैत्यिकं-सार्वदिकमवस्थितं मनुष्यपोषादिप्रमाणम् । प्रश्न० १५४ ।
णिउडुक्कुडिया-निकृत्युत्कटता । आव० २०६ ।
णिउण-निपुणम् । प्रश्न० ३६ । सुहुमो । नि० चू० तृ० १३ अ ।
णिउत्तो-नियुक्तः । आव० ८१९ ।
णिउर-वृक्षविशेषः । ज्ञाता १६१ ।
णिओइओ-चोदितो । नि० चू० द्वि० ९१ अ ।
णिओगी-नियोगी-कृत्यकरः । उत्त० ३०५ ।
णिओगे-नियोगः-उपकरणम् । जं० प्र० ४०३ ।
णिओदणं-भिक्खकूरो । नि० चू० प्र० ३२८ अ ।
णिकट्ठा-निकृष्टा-कोशाद्वहिष्कृता असियष्टिः । ज्ञाता० २३९ ।
णिकसो-सद्भावः । उप० गा० ४१५ ।
णिकाईयं-निकाचितम् । उत्त० १७४ ।
णिकायकाय-निकायकायः-षड्जीवनिकायः । दश० १३४ ।
णिक्कंकड-निष्कवचा, निरावरणाः । जं० प्र० २१ । निष्कङ्कटाः-निष्कवचा निरावरणाः । औप० ११५ ।
णिक्कंतारं-निर्गतः कान्ताराद्यिष्कान्तारस्तन्निष्क्रमितारं वा । ठाणा० ११८ ।
णिक्कं-सर्वथा विगतमलः । ज्ञाता० ५३ ।
णिक्कलिस्सति- । नि० चू० प्र० १७२ अ ।
णिक्कसाए- । सम० १५३ ।
णिक्का-सारणी । नि० चू० प्र० ७२ आ । अन्नेकवाडसंजुत्ताओ णिक्का । नि० चू० द्वि० ७० आ ।
णिक्किव-निष्कृपः-मम दुःखिताया अप्रतीकारात् । ज्ञाता० १६७ ।
णिक्कोडणं-निष्कोटनं-बन्धनविशेषः । प्रश्न० ५६ ।
णिक्कोरणं-मुहस्स अवणयणं णिक्कोरणं । नि० चू० द्वि० १२१ आ ।
णिक्खमइ-निक्षिप्यते । दश० ५४ ।
णिक्खमणं-निष्क्रमणम् । आव० ५१४ । णिप्फेडणं । नि० चू० प्र० २५८ आ ।
णिक्खमे-निष्क्रामेत्-गच्छेत् । उत्त० ५९ ।
णिक्खित्तं-णाम गरलिगाबद्धं स्थापयति । नि० चू० प्र० ८३ आ ।
णिक्खित्तचरगा-गोचरचर्यायामभिग्रहविशेषः । नि० चू० तृ० १२ आ ।
णिक्खिवति-गोपयति । नि० चू० प्र० ८३ आ । पहे मुंचति । नि० चू० प्र० २१३ अ । गोपयति । नि० प्र० ८३ अ ।
णिक्खुडं-निष्कुटं भागम् । जं० प्र० २५५ । निष्कुटं-कोणवर्तिभरतक्षेत्रखण्डरूपम् । जं० प्र० २१८ ।
णिक्खुडाणि-निष्कुटानि-अवान्तरक्षेत्रखण्डरूपाणि । जं० प्र० २१८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिक्खेवगणिक्खित्तं–निक्षेपकनिक्षिप्तम् । आव० ६७ ।
णिगओ–निगमः–वणिग्जननिवासः । प्रश्न० ५२ । निगमः कारणिकः, वणिग् वा । औप० १४ । निगमः–प्रभूततरवणिग्वर्गावासः । प्रज्ञा० ४७ ।
णिगमण–निगमनं–प्रतिज्ञाहेत्वोः पुनर्वचनं निगमनम् । दश० ६२ ।
णिगमा–निगमः–कारणिकाः; वणिजः । जं० प्र० ११० । वणिग्विशेषाः । बृ० द्वि० ४५ अ ।
णिगरिअ–निगरितं–सारीकृतम् । जं० प्र० १११ ।
णिगिणं–नग्नं । नि० चू० द्वि० ३८ अ ।
णिगिणाउ–मुक्तपरिधाना । आच० ३७१ ।
णिगिणिणं–नाग्न्यम् । उत्त० २५० ।
णिगुंजमाणो–विगुञ्जन्ती–अव्यक्तशब्दं कुर्वन्ती । ज्ञाता० १५८ ।
णिगुणं–निगुणं–निहतगुणम् । प्रश्न० ३६ ।
णिगुहिज्जा–अवगूहयेत्–प्रच्छादयेत् । आचा० ३५४ ।
णिगोय–निगोदाः–कुटुम्बानि । जं० प्र० १७१ ।
णिग्गंथा–क्षमणा । नि० चू० द्वि० ९८ अ ।
णिग्गमं–वणिया जत्थ केवला वसंति तं निग्गमं । नि० चू० प्र० २२९ अ ।
णिग्गमए–प्रस्थानम् । नि० चू० प्र० १५८ अ ।
णिग्गयरिणो–कृतप्रत्युपकारा । नि० चू० प्र० २९२ आ ।
णिग्गया–निर्गता–जे तवं वोलीणा छेदादिपत्ता । नि० चू० तृ० १२२ अ ।
णिग्गिलिओ–निर्गिलितः । आव० ३९५ ।
णिग्गुणा–निर्गुणाः–उत्तरगुणविकलाः । जं० प्र० १७१ ।
णिग्गू–गुच्छाविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।
णिग्गोहवरपायव–न्यग्रोधवरपादपः । जं० प्र० १५० ।
णिग्घरिस–कपपटः । नि० चू० प्र० २४२ आ ।
णिग्घाए–निर्घातः–वैक्रियाशनिप्रपातः । प्रज्ञा० २९ ।
णिग्घाएति–गालयति । नि० चू० प्र० ११७ आ ।
णिग्घाओ–निर्घातः–गगने व्यन्तरकृतो महाध्वनिः । प्रश्न० ५१ ।
णिग्घायण–निर्घातनं–विश्लेषणम् । जं० प्र० १५० ।
णिग्घिण–निर्घृणः–निर्दयः । ज्ञाता० १६७ ।
णिग्घोसो–निर्घोषः महाध्वनिः । औप० ७३ । निर्घोषः महाध्वनिः । प्रश्न० २० ।
णिच्चणियंसणं–जं दिया रातो य परिहिज्जेइ । नि० चू० द्वि० १६२ अ ।
णिच्चालोए–अष्टाशीतौ महाग्रहे चतुष्षष्ठितमः । ठाणा० ७९ ।
णिच्चालोयं–नित्यमालोको–दर्शनं–दृश्यमानता यस्य तत् नित्यालोकम् । जीवा० ३९९ ।
णिच्छउ–परमार्थः । नि० चू० प्र० ९७ अ ।
णिच्छय–निश्चयः–निर्णयः निर्गतकर्मचयो निश्चयः-मोक्षः । प्रश्न० २ । तत्त्वानां निर्णयः । ज्ञाता० ७ ।
णिच्छल्लेति–त्वचं अवणेति, महामणि प्रकाशयति । नि० चू० प्र० ११६ आ ।
णिच्छाणं–निःस्थानं–स्थानवर्णितम् । विपा० ५७ ।
णिच्छुब्भते–आददाति–तुदति । आव० १०२ ।
णिच्छुहति–निस्पृशति । उत्त० २७७ ।
णिच्छूढं–निष्क्षूतम् । दश० ३८ ।
णिछुभति–धाडयति । नि० चू० प्र० ३०३ अ ।
णिजुत्ता–नियुक्ता–स्थापिता । जं० प्र० २१२ ।
णिजुद्धं–नियुद्धम् । उत्त० १९२ । सव्वसंधिविक्खोवणं णिजुद्धं । नि० चू० द्वि० ७१ अ ।
णिज्जंतो–नीयमानः । आव० ६३१ ।
णिज्जरापोग्गलो–निर्जरापुद्गलः–अपगतकर्मभावः–परमाणुः । प्रज्ञा० ३०३ ।
णिज्जाणं–णगर गाम वा जं ठियं तं । नि० चू० प्र० २६५ अ । निर्याणं–अनावृत्तिकगमनम् । औप० ८० ।
णिज्जणियकेणाइ–नगरनिर्गमगृहाणि । भग० ६१७ ।
णिज्जाणिया–रायादियाण निग्गमणं ठाणं । नि० चू० प्र० २६५ अ ।
णिज्जामिय–निर्यामितः । उत्त० १३३ ।
णिज्जास–निर्यासः रसः । जं० प्र० १०० । निर्यासः । ओघ० १०० ।
णिज्जाहि–निर्यास्यति–निर्गमिष्यति । ठाणा० ४५९ ।
णिज्जिए–निर्जितः भग्नबलम् । जं० प्र० २७७ ।
णिज्जितं–उपार्जितम् । नि० चू० द्वि० १०६ अ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिज्जुत्ती-निर्युक्तिः निश्चयेन आदौ वा युक्ता अर्थास्तेषां-युक्तिः निर्युक्तार्थव्याख्या वा । आव० ६७ ।

णिज्जूढा-कालावधीए जे ठप्पा कया ते णिज्जूढा । नि० चू० प्र० १६६ अ । जे ठप्पा कया । नि० चू० तृ० ४५ आ ।

णिज्जूह-गवक्खो । नि० चू० द्वि० ८४ अ । निर्यूहो-द्वारोपरितनपार्श्वविनिर्गतदारुः । जं० प्र० १०७ । णिज्जूहकं-निर्यूहकं-द्वारपार्श्वविनिर्गतदारुः । ।

णिज्जूहितो-परित्यजन् । पिण्ड० १७६ ।

णिज्जूहिऊण-परित्यज्य । उत्त० ६६८ ।

णिज्झर-निर्झराः-गिरितटादुदकस्याधः पतनानि तान्येव सदावस्थायीनि । जं० प्र० ६६ ।

णिज्झवणा-निः-आधिक्येन यान्ति प्राणिनः प्राणास्तेषां-निर्यातां-निर्गच्छतां प्रयोजकत्वं निर्यापना, प्राणवधस्याष्टाविंशतितमः पर्यायः । प्रश्न० ६ ।

णिट्ठवियं-निष्ठितम् । आव० ५५८ ।

णिट्ठवेतित्ति-मारेज्जा । नि० चू० द्वि० १३३ आ ।

णिट्ठाणं-णिप्फत्ती । नि० चू० प्र० ३३ आ । जं सव्वगुणोववेयं सव्व संभरसंभियं तं । दश० १२२ ।

णिट्ठाणकहा-निष्ठानकथा शतपञ्चशतरूपका, निष्ठानं यावत् शतसहस्रमिति, भक्तकथायाश्चतुर्थभेदः । आव० ५८१ ।

णिट्ठावेति-व्यापादयति । नि० चू० प्र० ३०३ अ ।

णिट्ठिए-निष्ठितोऽपनेतव्यद्रव्यापनयनमाश्रित्य निष्ठां गतः विशिष्टप्रयत्नप्रभार्जितकोष्ठागारवत् । जं० प्र० ६६ ।

णिट्ठियं-परिसमत्तणं । दश० चू० ११२ आ ।

णिट्ठिया-कालगता । नि० चू० प्र० २०७ आ ।

णिट्ठुरं- । नि० चू० प्र० २६६ आ ।

णिट्ठुहति-निष्ठीवति । उत्त० ३५६ ।

णिडुगालति- । नि० चू० प्र० २२० आ ।

णिणाए-निनादः-प्रतिशब्दः । औप० ७३ । निनादः-प्रतिध्वनिः । जं० प्र० १६२ ।

णिण्णं-खड्डा । नि० चू० द्वि० १२६ अ ।

णिण्णओ-निर्नयः-निर्वचनम् । बृ० तृ० १२५ अ ।

णिण्णय-निर्णयः । आव० ६७ ।

णिण्णाइं-(देशी) अधोगच्छति । उत्त० २६३ ।

णिण्हए- । नि० चू० प्र० २६० आ ।

णिण्हवो-जो पुच्छिओ संतो सव्वहा अवलवइ । दश० चू० १२४ ।

णितंब-नितम्बः-कटकः । जं० प्र० २५२ ।

णितावादी-नियतं-नित्यं वस्तु वदति यः स । ठाणा० ४२५ ।

णितितो-णिच्चमवत्थाणातो णितितो । नि० चू० द्वि० ६१ आ । एते संथारगादि दव्वे कालदुगातीतं अपरिहरंतो । नि० चू० प्र० १४३ अ ।

णितियं-ध्रुवं, सासतं । नि० चू० प्र० १४२ अ । णिच्चणिमंतं । नि० चू० द्वि० ६० आ ।

णितियादि-नित्यवासादि । ओघ० ५६ ।

णित्थक्क-अनवसरज्ञ अनुरक्ता या ममाकाण्डे एव त्यागादित्यर्द्धम् । ज्ञाता० १६७ ।

णित्थरहल्लेज्ज-फोडणं । नि० चू० तृ० ५७ अ ।

णित्थरिउं-पारं प्राप्तुम् । महाप० ।

णित्थरिहिह- । ज्ञाता० २४० ।

णित्थारणा-निस्तारणा-तत्पारप्रापणा । जं० प्र० २३७ ।

णिदाणा-भवान्तरीयाः धर्मोत्साहपराकृताः प्रार्थनाविशेषाः-दुर्लभबोध्यादिफलाः नवभेदाः । दशा० ।

णिदाहो-निदाघः एकादशं मासनाम । सूर्य० १५३ ।

णिदोच्चं-निर्भयम् । नि० चू० तृ० ७१ अ ।

णिद्दा-निद्रा-सुखप्रतिबोधलक्षणा । भग० २१८ ।

णिद्दारो-निर्धारः । आव० ८५५ ।

णिद्देज्जं-पुव्वं पडिहारितो दत्तो इदाणिं णिद्देज्जं देहित्ति । नि० चू० प्र० १७७ आ ।

णिद्धं-स्निग्धं-मनोहरम् । जीवा० २६७ । स्निग्धं-स्नेहलम् । जीवा० २६६ ।

णिद्धंधस-अत्यन्तमैहिकामुष्मिकापायशङ्काविकलः अत्यंतं जन्तुबाधनिपेक्षो वा परिणामोऽध्यवसायो वा । उत्त० ६५६ ।

णिद्धंमा-पासत्था । नि० चू० प्र० ७६ आ ।

णिद्धबंधणपरिणामे-स्निग्धबन्धनपरिणामः-स्निग्धस्य सतो बन्धनपरिणामः । प्रज्ञा० २८८ ।

णिद्धमण-निर्धमनम् । आव० ६४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिद्धमहुरणिवायविणीयववहारा–घृतगुडसद्वसतिविनयादिजातपक्षव्यवहाराः । व्य० प्र० २५३ ।

णिद्धम्मो–निर्गतो धर्मात्–श्रुतचारित्रलक्षणादिति निर्धर्मः । प्रश्न० ५ ।

णिद्धा–स्निग्धा । आव० २६२ ।

णिद्धाइऊण–निर्गत्य । आव० २१६ ।

णिद्धाइस्संति–निर्द्धाविष्यन्ति-शीघ्रया गत्या निर्गमिष्यन्ति । जं० प्र० १७१ । निर्गमिष्यन्ति । जं० प्र० १७६ ।

णिद्धुणे–निर्धुनोति–नितरामपनयति । उत्त० १८५ ।

णिद्धो–स्निग्धः स्वस्मिन् रूपेऽत्यर्थमुत्कटः । जीवा १८७ ।

णिधणं–निधनं–पर्यवसानम् । प्रश्न० ५ ।

णिन्नामए–निश्चयेन नामयेत् निर्नामयेत्–अपनयेत् । सूत्र० २३७ ।

णिपुरो–नन्दीवृक्षः । आचा० ३४८ ।

णिप्पंका–कलङ्कविकला कर्दमरहिता वा । जं० प्र० २१ ।

णिप्पंको–निष्पङ्कः–आर्द्रमलरहितः अकलङ्को वा । ओप० ११५ ।

णिप्पच्चक्खाणपोसहोववासा–निष्प्रत्याख्यानपौषधोपवासा–असत्पौरुष्यादिनियमा अविद्यमानाष्टम्यादिपर्वोपवासाश्चेत्यर्थः । जं० प्र० १७१ ।

णिप्पडिकम्मया–प्रशस्तयोगसङ्ग्रहायैव निष्प्रतिकर्मशरीरता सेवनीया, योगसङ्ग्रहे षष्ठो योगः । आव० ६६३ ।

णिप्पिवासो–निर्गतः पिपासाया वध्य प्रति स्नेहरूपाया इति निष्पिपासः । प्रश्न० ५ ।

णिप्फडइ–निःसरति । दश० ६१ ।

णिप्फाव–औषधिविशेषः । प्रज्ञा० ३३ । निष्पावाः–वल्लाः । जं० प्र० १२४ । वल्ला । नि० चू० प्र० १४४ आ । नि० चू० द्वि० १२० अ ।

णिप्फिडति–निस्सरति । आव० ९६ ।

णिप्फिडिओ–निष्काशितः । आव० ४२६ ।

णिप्फिडिता–निर्गता । आव० ३५० ।

णिप्फिडिया–निर्गता । दश० ९८ ।

णिप्फेडओ–निस्फेटः स्थानं स्वातन्त्र्यं वा । आव० ५१५ ।

णिप्फेडियं–निष्कासितं भूमौ पातितम् । आव० ३६९ ।

णिप्फेडो–निर्गमः । आव० ३५५ ।

णिब्बंधो–निर्बन्धः । आव० ५६५ ।

णिब्बुडो–निमग्नः । आव० १८२ ।

णिब्भरा–मत्ता । नि चू० द्वि० २२ आ ।

णिमग्गजला–निमग्नं जलं यस्यां सा निमग्नजला । जं० प्र० २३० ।

णिमित्तं–निमित्तं–अङ्गस्फूरितादि । प्रश्न० ४० । निमित्तं अनागतार्थपरिज्ञानहेतुर्ग्रन्थः । ओघ० १४ ।

णिमित्ति–नैमित्तिकः । आव० ५६० ।

णिम्मंसा–निर्मांसा । ज्ञाता० ३३ ।

णिम्मला–निर्मला–आगन्तुकमलरहिता । जं० प्र० २१ । फुल्ला । नि० चू० तृ० १०३ आ । अमिला । नि० चू० प्र० २५५ अ ।

णिम्मलो–निर्मलः–कठिनमलरहितः । औप० ११५ ।

णिम्माया–निष्णाता–निपुणा । आव० ६७४ ।

णिम्मिय–न्यस्तः । ज्ञाता० १४ ।

णिम्मेरा–निर्मर्यादाः–अविद्यमानकुलादिमर्यादाः । जं० प्र० १७१ ।

णिम्मोअणं–संठवणं । नि० चू० प्र० १२३ अ ।

णियंठ–निर्गतो ग्रन्थात्–मोहनीयकर्माख्यादिति निर्ग्रन्थः । भग० ८९० । अभितरबाहिरगंथणिग्गतो । उत्त० २५७ ।

णियंसेइ–नियस्ते–परिधत्ते । जीवा० २५३ ।

णियइयाओ–नैयतिवयः–नियता न तु त्रिप्रभृतय इति पञ्चैवेत्यर्थः । भग० ४४ ।

णियए–नियतः एकस्वरूपत्वात् । भग० ११९ ।

णियगो–निजकः । उत्त० २२६ । निजकः–गोत्रीयः । औप० ८९ ।

णियच्छति–नियच्छति निश्चयेन यच्छति–अवतरति–युज्यते । सूत्र० ३५ । गच्छति–प्राप्नोति । बृ० तृ० ७९ आ ।

णियट्टिबायरो–क्षपकश्रेण्यन्तर्गतः क्षीणदर्शनसप्तको जीवग्रामो निवृत्तिबादरः, भूतग्रामस्याष्टमं गुणस्थानम् । आव० ६५० ।

णियडि–निकृतिः–बकवृत्त्या कुर्कुटादिकरणेन दम्भप्रधानवणिक्श्रोत्रीयसाध्वाकारेण परवञ्चनार्थं गलकर्त्तकानामिवावस्थानम् । सूत्र० ३२९ । परस्य व्यञ्जकत्वेन अधिका कायक्रिया णियडी । नि० चू० प्र० २८९ आ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णियमपगंपं-नियमप्रकम्पः-कायोत्सर्गः । बृ० द्वि० १३० आ ।

णियमसा-नियमेन-अवश्यभावेन । उत्त० ६५१, ५३५, ५४४ ।

णियमसो-नियमशः-नियमात् । उत्त० ७६ ।

णियमारक्खिओ-सव्वपगईओ जो रक्खति सो णियमारक्खिओ । नि० चू० प्र० १६५ अ ।

णियमो-निगमः-वणिग्जनप्रधानस्थानम् । प्रश्न० ६६ । नियमः-पिण्डविशुद्धयादिः उत्तरगुणः । द्रव्याद्यभिग्रहः । प्रश्न० १३२ । अवश्यम्भावी । प्रश्न० १३३ ।

णियय्वित्ती-नियतवृत्तिः । व्य० द्वि० ३६१ अ ।

णियया-सदैव स्वस्वरूपा । जं० प्र० २७ ।

णियाग-णियगः-स्वजनः । नि० चू० प्र० १४० आ । नियागः-मोक्षमार्गः सत्संयमो वा । सूत्र० २६६ । संयमो विमोक्षो वा । सूत्र० ३०२ ।

णियाणमरणे-ऋद्धिभोगादिप्रार्थना निदानं तत्पूर्वकं मरणं निदानमरणम् । ठाणा० ६३ ।

णियोग-नियोगः-आज्ञा । जं० प्र० १६६ ।

णिरंगणो-निरङ्गनः-कौशाम्ब्यां राजमल्लः । उत्त० १६३ ।

णिरंतरता-निरन्तरभूमिस्पर्शिता । बृ० द्वि० २२३ आ ।

णिरई-निरति देवानन्दाया नामान्तरम् । जं० प्र० ४६२ ।

णिरक्किय-निराकृता-अपास्ता । उत्त० ३१६ ।

णिरणुग्गहकसिणं-छम्मासिए पट्ठविए पंचमासा चउवीसं च दिवसा वूढा, ताहे अण्णं छम्मासियं आवणो ताहे तं वहति पुविल्लिस्स छद्दिणा जो सो । नि०चू०तृ० १३५ आ ।

णिरति-निसृजति । बृ० द्वि० १४४ आ ।

णिरभिग्गहो-दंसणसावगो । नि० चू० प्र० १२० अ ।

णिरयपडिरूविया-निरयप्रतिरूपिका नरकसदृशी । ज्ञाता० ६२ ।

णिरयविभत्ति-सूत्रकृताङ्गस्य पञ्चममध्ययनम् । उत्त०६१४ ।

णिरवच्चो-निरपत्यः-शिष्यगणरहितः । आव० २४० ।

णिरवलावे-निरपलापः-आचार्यस्यापरिश्रावित्वम् । प्रश्न० १४६ ।

णिरवेक्खो-निरपेक्षः । आव० ८२० ।

णिरालए-निरालयः-वसतिप्रतिबन्धवन्ध्यः, यथोचितं सततविहारित्वात् । जं० प्र० १४६ ।

णिरालोआ-निरालोकाः-निरस्तप्रकाशा निरस्तदृष्टिप्रसरा वा । जं० प्र० १६७ ।

णिरुंभिऊण-निरुध्य । महाप० ।

णिरुच्चारो-निरुच्चारः-निरुद्धपुरीषोत्सर्गः, अविद्यमानसञ्चरणः नष्टवचनोच्चारणो वा । प्रश्न० ५७ । प्राकारस्योर्ध्वं जनप्रवेशनिर्गमवर्जितः । उच्चारः-पुरीषं तद्विसर्गार्थं यजनानां बहिर्निगमनं तदपि सः । ज्ञाता० १४६ ।

णिरुद्धपरियागो-जस्स तिण्णि वरिसाणि परियायस्स संपुण्णाणि । नि० चू० तृ० ८४ अ ।

णिरुद्धा-निरुद्धा । आव० ३४५ । निरुद्धा-मूर्छिता निरुद्धचेष्टा । उत्त० १६० ।

णिरुवकिट्ठ-निरुपक्लिष्टः-व्याधिना प्राक् साम्प्रतं वाऽनभिभूतः । जं० प्र० ६० ।

णिरुवद्दवा-निरुपद्रवा-अविद्यमानराजादिकृतोपद्रवा । औप० २ ।

णिरुवमा-णिग्गया उवमा जत्थ अत्थो दृष्टान्ताभावः । नि० चू० द्वि० १४६ आ ।

णिरुवहत-ण अञ्जणखञ्जणोवलित्तं ण वा अग्गिविदड्ढं मूसगखइयं वा । नि० चू० प्र० १३८ आ ।

णिरुवहय-निरुपहतः-स्फोटादिदोषविरहतः । ज्ञाता० ६७ ।

णिलुक्क-निल्लुकः-अन्तर्हितः । ज्ञाता० १५३ ।

णिलुक्का-निलीनाः । आव० ६० ।

णिल्लेव-निर्लेपः-अत्यन्तसंश्लेषात्तन्मयतागतवालाग्रलेपापहारादपनीतधान्यलेपकोष्ठागारवत् । जं० प्र० ६६ ।

णिल्लेवगो-रजकः । आव० ५६२ । रयगो । नि० चू० तृ० १२६ आ ।

णिल्लेवणं-णिग्गंधं । नि० चू० प्र० २२२ अ ।

णिल्लेवेति-धोवति । नि० चू० प्र० २११ अ ।

णिवज्जंति-निष्पद्यन्ते । मर० ।

णिवज्जे-स्वपिति । ओघ० ८४ ।

णिवण्णेति-अवलोकयति-पश्यति । आव० ६८८ ।

णिवन्ना-निवन्नाः-सुप्ताः । ज्ञाता० १२६ ।

णिवाणतडं-निपानतटम् । दश० ६४ ।

णिवाय-निपातः-पतनम् । ज्ञाता० २६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिवायगंभीरा–निवाता–वायोरप्रवेशात् किल महद् गृहं निवातं प्रायो न भवति तत आह निवातगम्भीरा, निवाता सती गम्भीरा निवातगम्भीरा, निवाता सती विशाला इत्यर्थः । राज० ५८ ।

णिवायग– । भग० ८०३ ।

णिवारणं–नितरां वार्यते– निषिध्यतेऽनेन शीतवातादीति निवारणं सौधादि । वस्त्रादि वा । उत्त० ८८ ।

णिवारितो–निवारयन्तम् । उत्त० ३०५ ।

णिविज्जए–शेते । उत्त० ५५१ ।

णिविज्जणं–निर्विजनम् । आव० ५०६ ।

णिविट्ठो–परिणीओ । नि० चू० प्र० १४५ अ ।

णिविण्णो–निर्विण्णः–निविष्टः । उत्त० २२४ ।

णिवुज्झमाणि–अश्वादीनां नीयमाना । आचा० ४१३ ।

णिवुड्डित्ता–निर्वेष्ट्य–हापयित्वा । सूर्य० १२ ।

णिवुड्डेमाणे–निर्वेष्टयन्–हापयन् । सूर्य १२, ३८ ।

णिवेएति–समर्पयति । नि० चू० प्र० ३३२ अ ।

णिवेदनं–आख्यानम् । नि० चू० प्र० ७३ आ ।

णिवेदे–निवेदयित्वा । ओघ० ५७ ।

णिवेसण–महाघरस्स परिवारघरा णिवेसणं । नि० चू० प्र० १८७ अ । आसमंतावसा समादि सत्थट्ठाणं । नि० चू० प्र० २२६ अ । नि० चू० द्वि० १२७ आ । गृहम् । नि० चू० तृ० ७३ अ ।

णिव्वक्खा–णिल्लज्जा । नि० चू० तृ० १७ अ ।

णिव्वण–निर्व्रणः छिद्रग्रन्थ्यादिदोषरहितः । जं०प्र० २४१ ।

णिव्वणा– । नि० चू० प्र० १२१ अ ।

णिव्वत्तणाहिकरणिया–यच्चादितस्तयोर्निर्वर्त्तनं सा निर्वर्त्तनाधिकरणिकी । ठाणा० ४१ ।

णिव्वया–निर्व्रताः महाव्रताणुव्रतविकलाः । जं० प्र० १७१ ।

णिव्वविति–उण्हवेऊण । नि० चू० तृ० ६० अ ।

णिव्वहणा–निर्वहणा–वधूवरम् । बृ० तृ० २४ आ ।

णिव्वहति–विफलीभवति । नि० चू० प्र० ८ अ ।

णिव्वाघाइमं–णिरुअस्स–अखुतदेहस्स णिव्वाघाइमं । नि० चू० द्वि० ५३ अ । निर्व्याघातिमं–व्याघातिमान्निर्गतं स्वाभाविकम् । सूर्य० २६६ ।

णिव्वाण–घनघातिकर्मचतुष्टयक्षयेण केवलज्ञानावाप्तिः । सूत्र० १९८ । सम० १५४ ।

णिव्वाय–निर्वातः–निर्व्याघातः । ज्ञाता० ४१ ।

णिव्वाव–निर्वापकथा–दशपञ्चरूप्यका इयञ्च व्यञ्जनभेदादिरिति प्रशंसनं द्वेषणं वा । भक्तकथाया द्वितीयो भेदः । आव० ५८१ । नि० चू० प्र० ३३ आ ।

णिव्वावकहा–पक्वापक्वान्नभेदा व्यञ्जनभेदा वेति निर्वापकथा । ठाणा० २०९ ।

णिव्विट्ठं–निर्विष्टं ससेवम् । दश० १८१ ।

णिव्विट्ठकप्पट्ठिती–निर्विष्टा–आसेवितविवक्षितचारित्रा अनुपहारिका इत्यर्थः, तत्कल्पस्थितिर्यथा प्रतिदिनमायाममात्रं तपो भिक्षा तथैवेति । ठाणा० १६७ ।

णिव्विण्णकामभोगो–निर्विण्णकामभोगः । आव० ५१२ ।

णिव्विण्णो–निर्विण्णः । आव० ३४३ ।

णिव्विन्नवरा–निर्विण्णा वराः परिणेतारो यस्याः सा निर्विण्णवराः । ज्ञाता० २५० ।

णिव्वियतिए–निर्विकृतिकः-निर्गतघृतादिविकृतिकः । औप० ४० ।

णिव्विसओ–निर्विषयः । आव० ५२ ।

णिव्विसताणि–निर्विषयीकृतौ । आव० ३५१ ।

णिव्विसति–प्रविशति । नि० चू० प्र० २९४ आ ।

णिव्विसमाणो–पच्छित्तं वहंतो । नि० चू० तृ० १३९ अ ।

णिव्विस्सो–अमंसमक्खी । नि० चू० द्वि० १४० अ ।

णिव्वुइ–निर्वृतिहेतुत्वात् निर्वृत्तिः–क्षीणमोहावस्थेति । सूत्र० १९७ । निर्वृत्तिः–निर्वाणं–सकलकर्ममलापगमनेन स्वस्वरूपलोभतः परमं स्वास्थ्यं तद्धेतुः सम्यग्दर्शनाद्यपि कारणे कार्योपचारात् निर्वृत्तिः । प्रज्ञा० ४ ।

णिव्वुड्ढी–निर्वृद्धि वृद्धेरभावः । जं० प्र० ४३७ ।

णिव्वुती–निर्वृत्तिः–मथुरायां पर्वतराज्ञः सुता । आव० ३४४ ।

णिव्वुतो–निर्वृतः–मुक्तिपदवीमधिरूढः । बृ० तृ० २३१ अ ।

णिव्वुया–निर्वृता–स्वस्थीभूतेन्द्रिया । बृ० द्वि० २१७ अ ।

णिव्वेढेइ–निर्वेष्टयति–मुञ्चति । सूर्य० ४९ ।

णिव्वेढेउं–उत्तरं दातुम् । आव० ७०६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिसंतं-निशान्तं-अवधारितम् । सूत्र० १४४ ।
णिसंत-णिरय । नि० चू० प्र० २०८ आ ।
णिसंते-नितरां-अतिशयेन शान्तः-उपशमवान्, अन्तः क्रोधपरिहारेण बहिश्च प्रशान्ताकारतया निःशान्तः। उत्त० ४६ ।
णिसंतपडिणिसंत-निशान्तप्रतिनिशान्ते-अत्यन्तं भ्रमणाद्विरते निशान्तेषु वा गृहेषु प्रतिनिशान्ते-विश्रान्ते-निलीने-अत्यन्तजनसञ्चारविरह इत्यर्थः । ज्ञाता० ६८ ।
णिसग्ग-परिट्ठावणियासमिती । नि० चू० प्र० ३१ अ ।
णिसज्जकरणं- । नि चू० प्र० २३७ आ ।
णिसज्जण-जंघा । नि० चू० प्र० १५५ आ ।
णिसज्जा-निषद्या-समपुतोपवेशनादिका । प्रश्न० १०७ ।
णिसट्ठं-णदत्तं । नि० चू० प्र० २४६ आ, २६१ अ । जं णिदेज्जं दिण्णं तं णिसट्ठं । नि० चू० द्वि० १०५ आ ।
णिसट्ठतेण-अक्कंतिया वेला अवहरंति । नि० चू० तृ० १६ आ ।
णिसट्ठा-खरा । नि० चू० प्र० २४५ आ । निसृष्टा-निर्लज्जा । बृ० द्वि० १७६ आ ।
णिसढे-निषधः-वृषभः । जं० प्र० ३०८ । यादवविशेषः । ज्ञाता० २०३ । निषधः-वर्षधरपर्वतः । जं० प्र० ३०८ ।
णिसण्णो-निषण्णः-उपविष्टः । ओघ० २२ ।
णिसम्म-निशम्य-हृदये परिणमय्य । जीवा० २४३ ।
णिसह-निषधः-उत्तरकुरौ प्रथमद्रहनाम । जं० प्र० ३५५, ३०४ । नितरां सहते स्कन्धे पृष्ठे वा समारोपितं भारमिति निषधो-वृषभः, तत्संस्थानसंस्थितानि-वृषभसंस्थितानि निषधाश्चात्र देवाधिपत्यं परिपालयति, तेन निषधाकारकूटयोगान्निषधदेवयोगाद्वा निषधः । जं० प्र० ३१० ।
णिसहकुडे-निषधकूटं-नन्दनवनकूटनाम । जं० प्र० ३६७ । निषधवर्षधराधिपवासकूटम् । जं० प्र० ३०८ ।
णिसा-निशेव नित्यान्धकारत्वात् निशा-नर्कभूमिः । सूत्र० ४०१ ।
णिसाओ-निषादः-ब्राह्मणेन शूद्रयां जातः । उत्त० १८२ ।
णिसाते-निषीदन्ति स्वरा यस्मिन् स निषादः । ठाणा० ३६३ ।
णिसामिअ-निशम्य-आकर्ण्य तत्राक्षिप्तचित्ततयेतिभावः । उत्त० ४३४ ।
णिसासमणो-निःश्वसन्तीव अधोगमनसाधर्म्यात् तद्गतजननिःश्वाससाधर्म्याद्वा निःश्वसन्ती । ज्ञाता० १५८ ।
णिसिट्ठं-निषेधनं-निषेधम् । बृ० तृ० २२३ आ । निसृष्टम् । आव० ३६७ । अनुज्ञातम् । पिण्ड० ११३ ।
णिसिभत्तं- । नि० चू० प्र० ६१ आ ।
णिसिरणा-परिट्ठावणिया । नि० चू० प्र० ८७ आ ।
णिसिरामो-प्रयच्छामः । आचा० ३५० ।
णिसिरिय-निसृज्य-पातयित्वा । सूत्र० ३१४ ।
णिसीयणं-उवविसणं । नि० चू० प्र० ६० अ ।
णिसीयति-निषीदति-उपविशति । जीवा० २०१ ।
णिसीयव्वं-निषीदितव्यं-उपवेष्टव्यं संदंशकभूमिप्रमार्जनादिन्यायेनेत्यर्थः । ज्ञाता० ६१ ।
णिसीहं-अप्रकाशम् । नि० चू० प्र० २३ अ, १८७ अ ।
णिसीहादि-छेदसुत्तं । नि० चू० तृ० ३० आ ।
णिसीहिया-समणट्ठाण णिमित्तं णिसीहिया । नि० चू० प्र० २२३ अ । नैषेधिकी-निषीदनस्थानम् । जीवा० २०५ । निषदनस्थानम् । जं० प्र० ५१ ।
णिसुढंते-आद्रीभवत्सु । नि० चू० प्र० ३५४ आ ।
णिसेगो-शुक्रपुद्गलाहरणलक्षण ओजः । बृ० तृ० १०४ अ ।
णिसेज्जणा-पुत्ता । नि० चू० प्र० २४७ अ ।
णिसेज्जा-निषद्या । आव० २२७ । निषद्या स्त्रीभिः-कृता माया, स्त्रीव सती वा । सूत्र० ११० । निषद्या-प्रणिपत्य पृच्छा (गौतमस्य तिसुः अनियताः शेषाणां । आव० चू०) एगाए निसज्जाए एक्कारस अंगा चोद्दसहिं । चोद्दसपूव्वाणि नं० चू०)
णिस्संचार-द्वारापद्वारैः जनप्रवेशनिर्गमवर्जितः । ज्ञाता० १४६ ।
णिस्संसो-नृशंसाः-निःशूकः; निष्क्रान्तो वा शंसायाः श्लाघाया इति । प्रश्न० ५ । नृशंसः-निस्तृंशो जीवान् विहिंसन् मनागपि न शङ्कते, निशंसो वा परप्रशंसा रहितः । उत्त० ६५६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णिस्सरणं–प्रस्खलम् । बृ० द्वि० १५८ आ ।
णिस्सरणणंदी–निःसरणेन–गच्छादेर्निर्गमेन नन्दति यो नन्दिर्वा यस्य सः । ठाणा० २१७ ।
णिस्साकरउ–जो किंचि अववादपदं लभित्ता मुसलं पक्खिवइ । नि० चू० तृ० १४६ अ ।
णिस्साणं–आलंबणं । नि० चू० प्र० १०२ आ ।
णिस्सारो–निस्सारः । आव० ३५३ ।
णिस्सासनिरुंभण–निःश्वासं निरुणद्धि–नासिकां दृढं गृण्हाति निःश्वासनिरोधार्थम् । ओघ० ८४ ।
णिस्सीला–निश्शीलाः–गताचाराः । जं० प्र० १७१ ।
णिस्सेस–निःश्रेयसो–मोक्षः । उत्त० ३०५ । निःश्रेयसः–निश्चितकल्याणः । राज० १०२ ।
णिहए–निहतः–अपहृतसर्वसमृद्धिः । जं० प्र० २७७ ।
णिहट्टु–निहत्य–निवेश्य । जं० प्र० १८७ ।
णिहणाहि–निजहि । आव० ३६६ ।
णिहणिऊण–निहत्य । दश० ५६ ।
णिहया–णिक्खाया । नि० चू० तृ० ७२ आ ।
णिहरति–निर्हरति–अपनयति उद्धरति । सूत्र० ३१३ ।
णिहा–कोहमाणादि । दश० चू० ३३ आ ।
णिहाणपउत्तं–निधानप्रयुक्तम् । आव० ३५७ ।
णिहाय–निधाय–परित्यज्य । सूत्र० २४० ४१० ।
णिहालेयव्वं–निभालयितव्यः । उत्त० ५१ ।
णिहिअ–निहितः–उप्तः । जं० प्र० २४३ ।
णिहिणिउं–निहितुम् । उत्त० २२१ ।
णिहितं–पक्खितं । नि० चू० तृ० ८२ आ ।
णिहिरण्णो–निर्हिरण्यः–असारः । ओघ० १८८ ।
णिहुए–निभृतः–अनुयुक्तः । सूत्र० १७३ ।
णिहुओ–प्रशान्तवृत्तिः । औप० ४८ ।
णिहुय–उपशान्तः । प्रश्न० ४३ ।
णिहुया–करचरणिंदिएसु जे सत्था अच्छंति ते णिहुया । नि० चू० तृ० ६ अ ।
णिहे–निहा–माया । सूत्र० १७३ ।
णिहोडणा–निवारणम् । व्य० प्र० २५३ ।
णीअदुवारं–नीचद्वारं–नीचनिर्गमप्रवेशः । दश० १६७ ।
णीइ–निर्गच्छति । ओघ० १५६ । निरेति–निर्गच्छति । आव० ११२ । निस्सरति । आव० १०२ ।
णीइआ–गुल्मविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।
णीणवेंति–प्रापयन्ति । बृ० द्वि० १४२ आ ।
णीणाविता–आनायिता । आव० ३५७ ।
णीणाविते–निष्काशितः–दापितः । उत्त० १६८ । निष्काशितः । आव० ३१८ ।
णीणावियं–अपनायितः । आव० ४३४ ।
णीणिओ–नीतः । आव० २०४ ।
णीणितो–णिव्वूढो–धाडितेत्यर्थः । नि० चू० प्र० ३१ आ ।
णीणियं–निष्काशितम् । आव० ४०६ । आनीतम् । उत्त० १५६ ।
णीणिया–चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषाः । प्रज्ञा० ४२ ।
णीणेइ–निष्काशयति । उत्त० ४५५ ।
णीणेऊण–निष्काश्य । उत्त० ११८ ।
णीणेति–निष्काशयति । आव० २६७ ।
णीणेतुं–निर्गमितुम् । आव० ३४८ ।
णीणेहि–व्यपनय । आव० २२६ ।
णीता–नेत्रा–स्वस्थानं प्रापिता । ज्ञाता० २२१ ।
णीति–णिग्गच्छति । नि० चू० प्र० ३४ आ ।
णीती–नीतिः निर्गमप्रवेशरूपा । आव० ३४६ ।
णीध–निर्गच्छत । आव० १६१ ।
णीमे–नीपः, वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।
णीरए–नीरजाः निर्गतरजः कल्पसूक्ष्मवालाग्रोऽपकृष्टधान्यरजः कोष्ठागारवत् । जं० प्र० ६६ ।
णीरते– । ठाणा० ३६७ ।
णील–नीलः, मरकतमणिः । जं० प्र० ११३ ।
णीलवंतद्दहे–उत्तरकुरुषु नीलवद्द्रहो नामद्रहः । जं० प्र० ३२६ ।
णीलवंते–नीलवान् दिग्हस्तिकूटं द्वितीयः । जं०प्र० ३६० । जम्बूद्वीपे द्वीपे नीलवन्नाम्ना द्वितीयः वर्षधरपर्वतः । जं० प्र० ३७७ ।
णीली–गुच्छविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।
णीलीगुलिया–नीलीगुलिका–नीलीगुटिका । जं०प्र० ३३ ।
णीलीभेए–नीलीभेदो–नीलीच्छेदः । जं० प्र० ३३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णीले–अष्टाशीतौ महाग्रहे पञ्चविंशतितमः । ठाणा०७९ । नीलवत्कूटं–नीलवद्वक्षस्काराधिपकूटम् । जं० प्र० ३७७ ।

णीलोभासे–अष्टशीतौ महाग्रहे पञ्चविंशतितमः । ठाणा० ७९ ।

णीवातय–वनस्पतिविशेषः । भग० ८०३ ।

णीवट्टमाणो–निवर्त्तमानः । उत्त० १३९ ।

णीवारे–निवारः–सूकरादीनां पशूनां वध्यस्थानप्रवेशनभूतो-भक्ष्यविशेषः । सूत्र० २५८ । निवारः–भक्ष्यविशेषः । सूत्र० ११४ ।

णीसंकं–निशङ्कं–अविद्यमानसन्देहम् । भग० ५४ ।

णीसट्ठ–निसृष्टं–प्रकामम् । बृ० तृ० १२९ आ । निसृष्टः–नारकेर्विमुक्त आत्यन्तिको वा । प्रश्न० २० । निष्प्रसरम् । उप० मा० ३५९ ।

णीसन्दं–निष्पन्दः । प्रज्ञा० ६ ।

णीसरइ–निःसरति । दश० ६१ ।

णीसवमाणो–निश्चवयन्–यस्मात्सामायिकं प्रतिपद्यते तदावरणं कर्मनिर्जयन् । आव० ३४० ।

णीसहो–निस्सहः । उत्त० १९३ ।

णीहट्टु–निःसार्य । आचा० ४०१ ।

णीहारि–निर्हारि–प्रबलो गन्धप्रसरः व्यापि वा । आव० २३१ ।

णीहारिम–निहारिमा–दूरदेशगामिनी । औप० ८ । यद्वसतेरेकदेशे विधीयते तत्ततः शरीरस्य निर्हरणात्–निस्सारणान्निर्हारिमम् । ठाणा० ९४ । यत्पादपोपगमनमाश्रयस्यैकदेशे विधीयते तन्निर्हारिमम् । भग० ६२५ ।

णीहारो–नीहारी–अतिक्रामी । औप० ७८ ।

णीहि–निर्गच्छ । आव० ३९४ ।

णीहू–अनन्तकायभेदः । भग० ३००, ८०४ ।

णीहूय–कन्दविशेषः । उत्त० ६९१ ।

णीहूया–निर्व्यापारा । व्य० प्र० २५४ ।

णु–वितर्के । विशे० ३० ।

णुज्झ–नुद्य–सौंदर्यम् । व्य० द्वि० १७३ अ ।

णुवन्नो–अनुपन्नस्त्वग्वर्तितः । बृ० द्वि० २३७ आ ।

णुवोहेज्जा–उपबृंहयेत्–परिणामवृद्धिं कुर्यात् । दश० ४८ ।

णूणं–नूनं एवमर्थे । भग० १४ । तूनं–उपमानावधारणतर्कप्रश्नहेतुषु । प्रज्ञा० २४६ । निश्चितम् । ज्ञाता० ६६ ।

णूमं–दवियं, भिन्नं । नि० चू० द्वि० ७० आ । माया । सूत्र० ३४ । गहनं, मायेति । सूत्र० ५२ । प्रच्छन्नं गिरिगुहादिकम् । सूत्र० ८९, ३०७ । न्यवमम् । सम० ७१ । सूत्र० ३०७ ।

णूमए–आच्छादयेत् । बृ० प्र० १७७ अ ।

णूमगिहं–भूमिघरं । नि० चू० द्वि० ६९ आ ।

णूमियं–गोपितम् । उत्त० ११५ ।

णूमेंति–नूमन्ति–गोपयन्ति । ज्ञाता० २२७ ।

णूमेस्सति–स्थापयिष्यति । नि० चू० द्वि० १५४ अ ।

णेंति–निर्गच्छन्ति । आव० ६३२ ।

णे–आत्मनिर्देशः । नि० चू० प्र० ३३० आ । अस्माकम् । बृ० द्वि० ८८ आ । नो–अस्माकम् । विशे० ९८४ । सूत्र० ११३ । नः । भग० १०० ।

णेउणिअ–नैपुण्यं–आलेख्यादिकला लक्षणम् । दश० २४९ ।

णेउणियवत्थु–निपुणं वस्तु–अनुप्रवादपूर्वे आलापकविशेषः । उत्त० १६३ ।

णेउरं–नुपुरं–पादभूषणम् । आव० ३४९ ।

णेउरपंडिया–नुपुरपण्डिता । उत्त० ४९६ ।

णेउरा–द्वीन्द्रियजन्तुविशेषः । प्रज्ञा० ४१ ।

णेक्कंतितो–व्यतिक्रमः । नि० चू० प्र० २०२ अ ।

णेक्कारो–जुगुच्छितो, कोलिगजातिभेदो णेक्कारो । नि० चू० द्वि० ४३ आ ।

णेगमं–वणियवग्गो जत्थ वसति तं णेगमं । नि० चू० द्वि० ७० आ । निगमेषु वा भवो नैगमः, निगमाः–पदार्थपरिच्छेदाः । आव० २८३ । न एकं नैकं–प्रभूतानि, नैकैर्मानैः–महासत्तासामान्यविशेषज्ञानैर्मिमीते मिनोतीति वा नैकमः । आव० २८३ । नैकेन–सामान्यविशेषग्राहकत्वात् तस्यानेकेन ज्ञानेन मिनोति–परिच्छिनत्तीति नैकमः, अथवा निगमाः–निश्चितार्थबोधास्तेषु कुशलो भवो वा नैगमः, अथवा नैको गमः–अर्थमार्गो यस्य स प्राकृतत्वेन नैगमः । ठाणा० १५२ । नैगमः । प्रज्ञा० २८४ । नयविशेषः । प्रज्ञा० ३२७ ।

णेगामोसा–न एके आमर्शाः अनेकामर्शाः, अनेकस्पर्शाः । ओघ० ११० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णेडुं–नीडम् । आव० १८६ । गृहम् । आव० ३६५ ।
णेति–उत्पादयति, करेति । नि० चू० प्र० २०५ आ ।
णेतियंति– । नि० चू० प्र० ३४७ आ ।
णेत्तं–नेत्रम् । सूत्र० ३१२ ।
णेदूर–म्लेच्छविशेषः । प्रज्ञा० ५५ ।
णेमा–भूमेरूर्ध्वं निष्क्रामन्तः प्रदेशाः । जं० प्र० ४२ णेमा नाम भूमिभागादूर्ध्वं निष्क्रामन्तः प्रदेशाः । जं० प्र० २३ ।
णेमि–बाह्यपरिधिः । जं० प्र० ३७ । नेमिः–बाह्यपरिधिः । जीवा० १६२ ।
णेमिपासेसु–नेमिपार्श्वेषु । जं० प्र० २०६ ।
णेमो–नेमिः–कृतिकर्महृष्टान्ते भगवान् । आव० ५१५ । नेमिः–धारा । जं० प्र० २०४ ।
णेम्मं–निभ–सदृशम् । प्रश्न० १३४ । विज्जादिएहिं रुक्खादी णमिज्जंतीति णेम्मं वट्टं सिक्खा विज्जंतस्स अंगाणि णमिज्जंति । नि० चू० द्वि० ७१ अ ।
णेयगहणत्तणं–ज्ञायते इति ज्ञेयं–धर्मास्तिकायादि तद्ग्रहनत्वं गह्वरत्वं ज्ञेयगहनत्वम् । आव० ५६७ ।
णेयठवं–नेतव्यं–संवेदनविषयतां प्रापणीयं प्रापयितव्यम् । उत्त० ८ । नेतव्यं–स्मृतिपथं प्रापणीयः । जं० प्र० २७ ।
णेयाउय–न्यायेन चरति–प्रवर्त्तत इति नैयायिकः–न्यायोपपन्नः । उत्त० १८५ । निश्चित आयो–लाभो न्यायः–मुक्तिरित्यर्थः स प्रयोजनमस्येति नैयायिकः । उत्त० २१३ ।
णेवत्थं–नेपथ्यं–देशनेपथ्यं–स्त्रीपुरुषाणामाभूषणसम्बन्धीविचारः । देशकथायाश्चतुर्थो भेदः । आव० ५८१ ।
णेवत्थकहा–तासामेव अन्यतमायाः कच्छाबन्धादिनेपथ्यस्य यत्प्रशंसादि नेपथ्यकथा । ठाणा० २०६ ।
णेवालं–नेपालं–देशविशेषः । उत्त० १०६ ।
णेठवे– । नि० चू० प्र० २३२ आ ।
णेसज्जिते–नैषद्यिकः–समपदपुतादिनिषद्योपवेशी । ठाणा० ३६७ ।
णेसत्थिएसु–सालिमादियं पोतिएसु । नि० चू० प्र० ३२७ आ ।
णेसप्प–निधौ नैसर्पनामनि । जं० प्र० २५८ । नैसर्पः–नवनिधौ प्रथमः । ठाणा० ४४८ ।
णेहावगाढ–स्नेहावगाढं–स्नेहव्याप्तम् । ज्ञाता० १६६ ।
णेहिं–तैः–एतैः । उत्त० ३५६ । तैः । आव० ११६ ।
णेहोवरते– । नि० चू० प्र० १६७ आ ।
णोइंदियओ–मणो । नि० चू० द्वि० ८५ आ ।
णोथलेण– । नि० चू० द्वि० ७६ अ ।
णोमालिआगुम्मा–नवमालिकागुल्माः । जं० प्र० ६८ ।
णोमालिय–गुल्मविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।
णोल्लावेहिति– । भग० ६८६ ।
णोल्लिय–नोदिता–स्वदेशगमनवैमुख्येन यमपुरीगमनाभिमुखीकृता । ज्ञाता० १६८ ।
णोसद्दो–नोशब्दः, एकदेशवचनः । विशे० ६२० ।
णोसुअ–नोश्रुतं प्रत्याख्यानम् । आव० ४७६ ।
ण्हं–निपातः पूरणार्थो वर्तते । आव० १६७ । वाक्यालङ्कारे अवधारणे वा । सूत्र० ४१० । प्रश्न० २० ।
ण्हवणं–स्नपनं–सौभाग्यपुत्राद्यर्थं वध्वादेर्मज्जनम् । प्रश्न० ३६ ।
ण्हाण–स्नानम् । आव० ४१, ८३१ । रथयात्रा स्नानं वा । बृ० द्वि० १८७ अ । अर्हत्प्रतिमास्नपनम् । बृ० तृ० ६१ आ ।
ण्हाणगोल्लो–स्नानीयार्द्रः । उत्त० २१६ ।
ण्हाणपीढं–स्नानपीठम् । आव० ३५६ । ओवारा, कामजलं । नि० चू० द्वि० ८३ आ । स्नानपीढं–स्थानयोग्यं आसनम् । जं० प्र० १८६ ।
ण्हाणमल्लिआ–स्नानयोग्या मल्लिकाविशेषः । जं० प्र० ३५ ।
ण्हाणाई–स्नानादि । ओघ० १५१ ।
ण्हाणि–स्नापय । पिण्ड० १२४ ।
ण्हाणिओ–स्नपितः । आव० ३५८ ।
ण्हाणोवदाइ–स्नानोदकदायिका । ज्ञाता० ११७ ।
ण्हायंते– । नि० चू० द्वि० ७७ आ ।
ण्हारु–स्नायवः शरीरान्तर्वर्ध्राः । ज्ञाता० २२२ । भग० ४६६ । स्नायूनि । सम० १५० । स्नायु–शेषशिरा । जीवा० ३४ ।
ण्हारुणि–स्नायुः । प्रश्न० ८ । स्नायवः–शरीरान्तर्वर्ध्राः । जं० प्र० २०१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ण्हारू– । भग० २२९ ।
ण्हाविई–नापिती । आव० ३९६ ।
ण्हाविओ–नापितः–क्षौरकारः । आव० ४२६ ।
ण्हाविता–कम्मजुंगितावितेसो । नि० चू० द्वि० ४३ आ ।
ण्हावित्र–नापितः– । आव० २२४ । नापितः–मुण्डनकारः । दश० १०५ । नि० चू० प्र० ९ आ ।
ण्हावियपसेवओ– । उपा०
ण्हावियसालिग–नापितशाला । आव० ६९० ।
ण्हुया–स्नुषा–वधूः । दश० ९७ ।
ण्हे–अनयोः । उत्त० ३९४ ।
ण्होरगं–निहोरकम् । बृ० तृ० १२ अ ।

त

त–तावत् । प्रज्ञा० ७ । तदा । आव० ३५८ ।
तंगंधं–तद्गन्धं तादृग्गन्धवत् । ओघ० २२३ ।
तंजहा–तद्यथा–वक्ष्यमाणभेदकथनप्रकाशनार्थः। प्रज्ञा० ७ । तद्यथा–प्रतिज्ञातार्थोदाहरणम् । आचा० १३ । तद्यथा । सम० १५० । तद्यथा–उपप्रदर्शनार्थः । आचा० १३० ।
तंडवेति–ताण्डवयति ताण्डवरूपं नृत्यं करोति । जीवा० २४७ ।
तंडुल–यूपविशेषः । सूर्य० २९३ ।
तंडुलीयक–हरितविशेषः । प्रज्ञा० ३१ ।
तंत–तन्यतेऽनेनास्मादस्मिन्निति वा अर्थ इति तन्त्रम् । आव० ८६ । तन्त्रं–तुरीवेमादिः । भग० २५४ । तान्तः–कायेन खेदवान् । ज्ञाता० १३९ । तान्तः–तरकाण्डकाङ्क्षावान् । ज्ञाता० २२७ । तान्ता– मनःखेदेन । विपा० ४१ । 'तनु विस्तारे,' तन्यते–विस्तार्यते यद् यस्मादनेन, अस्मात् अस्मिन् वाऽर्थ इति तन्त्रम्, तन्यते विशिष्टरचनया तदेव विस्तार्यत इति तन्त्रम्, सूत्रस्य द्वितीयो पर्यायः । विशे० ५९१ ।
तंतमस्सति–आक्रन्दति । दश० ११ ।
तंतयं–तन्त्रं–वेमविलेखन्याञ्छनिकादि, तस्माज्जातं तन्त्रजं, उभयत्र वस्त्रं कम्बलो वा । उत्त० १२२ ।
तंतवा–चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः । जीवा० ३२ । प्रज्ञा० ४२ ।
तंतागार– । नि० चू० प्र० १०४ आ ।
तंतिचरत्ता– । नि चू० द्वि० ४३ आ ।
तंतिसमं–नट्टभेओ । नि० चू० तृ० १ अ । तन्त्रीसमं–वीणादितन्त्रीशब्देन तुल्यं मिलितं च । ठाणा० ३९४ ।
तंती–तन्त्री वीणा । जं० प्र० ६१ । सूर्य० २६७ । प्रज्ञा० ८९ । जीवा० २१७ । तन्त्री–वीणाविशेषः । प्रश्न० १५९ ।
तंतु–तन्यते भवोऽनेनेति तन्तुः–भवतृष्णा । उत्त० ५०५ ।
तंतुअं–तन्तुकम् । आव० ३५५ ।
तंतुग्गयं–तूरिवेमादेरुतीर्णमात्रम् । भग० ३७६ ।
तंतुवाए–तन्तुवायः । अनु० १४९ ।
तंतुवाय–पटकारकः । प्रश्न० ३० । तन्तुवायः–शाटिकाकारः । आव० ४२१ ।
तंतुवायसाला–कुविन्दशाला । भग० ६६३ ।
तंतुवाया–तन्तुवायाः–कुविन्दाः । प्रज्ञा० ५६ ।
तंतू–सूत्राष्टिका । बृ० तृ० ९ आ ।
तंदुल–तन्दुलं–औषधिः । आव० १३१ । तन्दुला–निस्वचितकणाः । जं० प्र० १०४ ।
तंदुलकणिया–तन्दुलकणिका । आव० ८५५ ।
तंदुलपलम्बं–भुग्नशाल्यादितन्दुलानिति । आचा० ३५७ ।
तंदुलमच्छो–तन्दुलमत्स्यः मत्स्यविशेषः । जीवा० ३६ । जलचरविशेषः । जीवा० १२९ । प्रज्ञा० ४४ ।
तंदुलमत्स्य–निरपेक्षितायां दृष्टान्तः । विशे० ७४८ ।
तंदुलीयकं–हरितभेदः । आचा० ५७ । हरितविशेषः । जीवा० २६ ।
तंदुलेज्जग–वनस्पतिविशेषः । भग० ८०२ ।
तंदुलेज्जगतणे–हरितविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।
तंदुलेयकं–हरितविशेषः । उत्त० ६९२ ।
तंदुलोदयं–तन्दुलोदकम् । आव० ६२० ।
तंबं–ताम्र–शुभ्रं (शुल्वं) । प्रश्न० १५२ । ताम्रं–पृथिवीभेदः । आचा० २९ । ताम्रा–रक्ताः । जं० प्र० ११० । ताम्रम् । प्रज्ञा० २७ ।
तंबकरोडयं–ताम्रकरोटकम् । प्रज्ञा० ३६० ।
तंबगाइ–चतुरिन्द्रियजीवभेदः । उत्त० ६९६ ।
तंबयागर– । भग० १९९ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तंबागर–ताम्राकरः–यस्मिन्निरन्तरं महामूषास्वयोदलं प्रक्षिप्य ताम्रमुत्पाट्यते सः । जीवा० १२३ ।
तंबायं–तम्बाकं ग्रामः । आव० २०७ ।
तंबिता–ताम्रमयाः । नि० चू० द्वि० ४३ आ ।
तंबिया–ताम्राः । आव० ३५६ ।
तंबे–ताम्रम् । प्रज्ञा० ३६० ।
तंबोलिआ–नारुकाया नवमभेदः । जं० प्र० १६३ ।
तंबोली–ताम्बूली–नागवल्ली । ज०प्र० ४६। जीवा० २००।
तंसबलं– । नि० चू० प्र० १२५ आ ।
तंससण्ठाणपरिणया–त्र्यस्रसंस्थानपरिणताः । प्रज्ञा० ११ ।
तंसे–संस्थानविशेषः । भग० ८५८ । त्र्यस्रःसंस्थानविशेषः । प्रज्ञा० २४२ ।
तअ–ततः–विस्तीर्णः, विस्तृतनामकः । जं० प्र० २१६ ।
तइओ–तृतीयः । बृ० तृ० २२५ अ ।
तइयकसाया–तृतीयकषायाः–अप्रत्याख्यानावरणः । आव० ७८ ।
तइया–सञ्जातत्वचः । ज्ञाता० ११६ ।
तउअ–पृथिवीभेदः । आचा० २६ ।
तउयं–त्रपुकं–वङ्गम् । प्रश्न० १५२ । त्रपु । प्रज्ञा० २७ ।
तउयागरा– । भग० १६६ ।
तउस–त्रपुषः । दश० ६१ । त्रपुषम् । प्रज्ञा० ३७ ।
तउसमिंजगा–त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः । उत्त० ६६५ ।
तउसमिंजिया–त्रपुषभिञ्जिका त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः । जीवा० ३२ ।
तउसी–वल्लीविशेषः । प्रज्ञा० ३२ । वनस्पतिविशेषः । भग० ८०३ ।
तओ–तकः । उत्त० ८६ । तदनन्तरं तको वा प्राणी । उत्त० १८२ ।
तओसिमिंजिया–त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः । प्रज्ञा० ४२ ।
तकारयकारदकारधकारनकारप्रविभक्ति–नामा अष्टादशो नाट्यविधिः । जीवा० २४७ ।
तकेत–परम्परतो । नि० चू० द्वि० २१ आ ।
तक्क–तर्कः–विमर्शः । भग० ५६ । ठाणा० ४६६ । तर्कणं तर्को–विमर्शः अवायात् पूर्वा ईहाया उत्तरा प्रायः शिरः कण्डूयनादयः पुरुषधर्म्मा । ठाणा० २१ । तर्कः–विमर्शस्तत्स्वभावेहा । विशे० १६४ । तक्रं–तक्राख्यम् । पिण्ड० १६८ ।
तक्कणं–तर्कणं प्रार्थनम् । बृ० प्र० ३१२ अ ।
तक्कर–तस्कराः–सर्वदा चौर्यकारिणः । जं प्र० ६६ । चौरः । ज्ञाता० ८० । तदेविक्कं करोतीति तक्करो । नि० चू० द्वि० ३८ आ । तदेव कुर्वन्तीति तस्कराः–सर्वकालं चौर्यकारिणः । उत्त० ३१२ ।
तक्करघराणि–तस्करगृहाणि–तस्करनिवासान् शृङ्गाटकादीनि प्राग् व्याख्यातानि । ज्ञाता० ८१ ।
तक्करट्ठाणाणि–तस्करस्थानानि–शून्यदेवकुलागारादीनि । ज्ञाता० ८१ ।
तक्करत्तणं–तस्करत्वं–अधर्मद्वारस्य नवम नाम । प्रश्न० ४३ ।
तक्करपओगे–तस्करप्रयोगः चौराणा हरणक्रिया प्रेरणम् । आव० ८२२ ।
तक्कलि–वलयाकारवृक्षविशेषः । भग० ८०३ ।
तक्कलिमत्थए–तक्कली–कन्दली तन्मस्तकं–तन्मध्यवर्त्तीगर्भः । आचा० ३४६ ।
तक्कली–वलयविशेषः । आचा० ५७ । प्रज्ञा० ३३ कन्दली । आचा० ३४६ ।
तक्कसेणे–अतीतायां उत्सर्पिण्यां पञ्चमः कुलकरः । ठाणा० ५१८ ।
तक्का–तर्का स्वकीयविकल्पना । सूत्र० ३७ । तर्कः एवमेव चायमर्थ उपपद्यते इत्यादिरूपा । दश० १२५ ।
तक्कारो–तदेव–चौर्यं करोतीत्येवंशीलः तस्करः । प्रश्न० ४६ ।
तक्कि–याच्ञा । बृ० द्वि० १८० अ ।
तक्किया–तर्कयित्वा–पर्यालोच्य । आचा० २७३ ।
तक्की–उपजीवकः । बृ० प्र० २६६ अ ।
तक्कोयणं–तक्रोदनं–तक्रसहितमोदनम् । ओघ० ४६ ।
तक्खणओलुग्ग–तत्क्षणमेव–प्रव्रजामीतिवचनश्रवणक्षण एव अवरुग्णं–म्लानम् । भग० ४६७ ।
तक्खलम्हासती–तत्स्थानवर्ती । नि० चू० प्र० २०८ अ ।
तक्खः–रथः । उत्त० ४१३ । सूत्रधारः । अनु० २२३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तक्षकः-रथकारः । अनु० ४१३ ।

तक्षशिलातलं- । आव० १४७ ।

तगर-सुगन्धिद्रव्यम् । अनु० १५४ ।

तगए-गन्धद्रव्यविशेषः । भग० ७१३ । प्रश्न० १६२ । ज्ञाता० २३२ । गन्धद्रव्यम् । जीवा० १९१ । जं० प्र० ३५ ।

तगरसमुग्गयं-तगरसमुद्गकम् । जीवा० २३४ ।

तगरा-सुव्यवहारकाचार्यस्थानम् । व्य० प्र० २५७ अ । नगरीविशेषः । उत्त० ९०, १०० ।

तगरायडं-तगरासमीपं नगरम् । अनु० १४९ ।

तग्गयं-तद्गतं-तत्संसूचकम् । जीवा० २६९ ।

तच्चंपि-त्रिरपि । आव० २६२ ।

तच्च-तथ्यां-अविपरिता । उत्त० ४७२ । अवितथा । उत्त० ५५५ । तत्त्वरूपः ऐदम्पर्यसमन्वितः । ज्ञाता० १७७ ।

तच्चकम्म-तथ्यानि-सत्फलानि अव्यभिचारितया यानि कर्माणि क्रियास्तत् । उपा० ४० ।

तच्चणिओ-तच्चनीकः बौद्धः । दश० ५४ । आव० ४११ ।

तच्चणिय-तच्चनीकः बौद्धः । दश० ४७ ।

तच्चणियसड्ढो-तच्चनीकश्राद्धः । आव० ७९९ ।

तच्चण्णिओ-तच्चनीकः बौद्धः । आव० ४१९ । तच्चनीकः बौद्धः । आव० २९५ । दश० ५३ ।

तच्चनिकः-बौद्धः । आव० ५६५ ।

तच्चन्नि-तच्चनीकः बौद्धः । औप० ७४ ।

तच्चा-तत्त्वानि-वस्तूनामैदम्पर्याणि । ठाणा० ४९१ ।

तच्चावातो-तत्त्ववादी-शतानीकराज्ञो धर्मपाठकः । आव० २२२ ।

तच्चावातेति-तत्त्वानि-वस्तूनामैदम्पर्याणि तेषां वादस्तत्त्ववादः, तथ्यो वादः-सत्यो वादस्तथ्यवादः । ठाणा० ४९१ ।

तच्चासत्तराइंदिया-सप्तरात्रिन्दिवानि-अहोरात्राणि यासु ताः सप्तरात्रिन्दिवास्ताश्च तिस्रो भवन्तीति । सम० २१ ।

तच्चिण्णगा-चरगविसेसो । नि० चू० तृ० ३१ अ ।

तच्चित्ते-तस्यामेव चित्तं-भावमनः सामान्येन वा मनो यस्य स तच्चितः । विपा० ५३ ।

तच्छण-तक्षणं-क्षुरादिना त्वचस्तनूकरणम् । विपा० ४१ । त्वचः-क्षुरप्रादिना तनुकरणम् । ज्ञात० १८३ ।

तच्छमान-तक्षणुवान्-तनूकुर्वन् । अनु० २२३ ।

तच्छिओ-तक्षितः त्वमपनयनतः । उत्त० ४६१ ।

तजाए-तज्जातः सदृक् शब्दैः आचार्यं प्रत्युत्तरदाता शिष्यः । आव० ७२६ ।

तज्जइ-तर्जयति-अङ्गुलिशिरश्चालनेन तिरस्करोति । भग० १६६ ।

तज्जण-तर्जनं-ज्ञास्यसि रे ! इत्यादि वचनम्, वचनविशेषः । प्रश्न ५६ । परं प्रति ज्ञास्यसि रे ! जाल्मेत्यादि भणनम् । औप० १०७ ।

तज्जणा-तर्जना-शिरोऽङ्गुल्यादिस्फोरणतो ज्ञास्यसि रे जाल्मेत्यादिभणनम् । औप० १०३ । तर्जना-असूयादिभिः । दश० २६७ । ज्ञास्यसि रे जाल्मेत्यादि भणनम् । अन्तः १८ । तर्जना-तर्जनीचालनेन ज्ञास्यसि रे दुष्ट इत्यादि भणनरूपा । प्रश्न० १०९ ।

तज्जना-तर्जना-अंगुलिभ्रमणभ्रूत्क्षेपादिरूपा । उत्त०४५६ ।

तज्जमाणे-कृतावष्टम्भान् तर्जयन् ज्ञास्यथ रे यन्मम इदं च इदं च न दत्स्वेत्येवं भेषयन् । विपा० ४० ।

तज्जा-तर्जा-हस्तादिना चौर्यं प्रति प्रेषणादि संज्ञाकरणम् । प्रश्न० ५८ ।

तज्जाइणी-तज्जातीया-त्वग्दोषा । आव० ७१० ।

तज्जातं-वेच्चं । । राज० ३७ । द्रव्यप्रकारः । ठाणा० २९८ ।

तज्जातदोसे-तस्य गुर्वादेर्जातं-जातिः प्रकारो वा जन्ममर्मकर्मादिलक्षणः तज्जातं तदेव दुषणमितिकृत्वा दोषस्तज्जातदोषः, तथाविधकुलादिना दूषणमित्यर्थः अथवा तस्मात्-प्रतिवाद्यादेः सकाशाज्जातः क्षोभान्मखस्तम्भादिलक्षणो दोषस्तज्जातदोषः । ठाणा० ४९२ ।

तज्जातपारिस्थापनिकी-पारिस्थापनिक्याः प्रथमो भेदः आव० ६१९ ।

तज्जातीयरूवं-तज्जातीयरूपम् । आव० ६७६ ।

तज्जायं-तज्जातं-तुल्यजातीयम् । आव० ६२२ ।

तज्जायसंसट्ठकप्पिय-यत्प्रकारं देयं द्रव्यं तज्जातेन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्प्रकारेण–द्रव्येण ये संसृष्टे हस्तभाजने ताभ्यां दीयमानं ग्राह्यमित्येवंरूपः कल्पः समाचारो यस्य सः तज्जातसंसृष्टकल्पिकः । प्रश्न० १०६ ।

तज्जायसंसट्ठचरए–तज्जातेन देयद्रव्याविरोधिना यत् संसृष्टं हस्तादि तेन दीयमानं यश्चरति स तज्जातसंसृष्टचरकः । औप० ३६ ।

तज्जिओ–तर्जितः भर्त्सितोऽत्यन्तपीडित इति । उत्त० ८६ ।

तज्जियं–तर्जितं यत् न कुप्यसि नापि प्रसीदसि काष्ठशिव इत्येवादि तर्जयन् निर्भर्त्सयत् वन्दते, अंगुल्यादिभिर्वा तर्जयन्, कृति कर्मणि एकोनविंशतितमो दोषः । आव० ५४४ ।

तज्जिय–तर्जयित्वा–भयमुपदर्श्य । आच० ३४१ ।

तज्जेज्जा–तर्जयामि । उपा० ४२ ।

तज्जेंति–ज्ञास्यसि पापे ! इत्यादि भणनतः । ज्ञाता० २०० ।

तत्थंतिया–समानकुलगणसंघवर्तिन्यः भगिनी वा । व्य० प्र० २४८ ।

तटाक–कासारः । नंदी० १५३ ।

तट्ट–तट्टं–स्थालम् । प्रज्ञा० ७६ ।

तट्ट–त्वष्टा–द्वादशं मुहूर्त्तनाम । सूर्य० १४६ । तष्टं–घट्टितम् । सूत्र० १६५ । त्वष्टा–त्वष्टृनामको देवस्तेन त्वाष्ट्री चित्रेत्यपरनाम । जं० प्र० ४६६ ।

तडं-तीरं– । नि० चू० प्र० ६८ अ ।

तडउडा–तडवडा–आउली । जं० प्र० ३४ ।

तडउडाकुसुमं–आउली तस्याः कुसुमं तडवडाकुसुमम् । जं० प्र० ३४ ।

तडतडं–त्रटत्रटत् । उत्त० ११३ ।

तडतडेंत–तटतटायमानाः–तथाविध ध्वनिं विदधानाः । ज्ञाता० १५६ ।

तडफडंता–भृशं आकुलतया गमनागमनं कुर्वाणाः । बृ० तृ० ।

तडफडा–गमनैः । बृ० तृ० ५५ आ ।

तडफडेति–विवदति । । नि० चू० प्र० ११२ अ ।

तडवडा–आउली । जीवा० १६१ । राज० ३३ ।

तडाग–खननसम्पन्नमुत्तानविस्तीर्णजलस्थानम् । उपा० १० ।

तडागं–तडागं । प्रज्ञा० २६७ । सरः । जं० प्र० १२३ । जीवा० १८६ । तडागः–कासारः । भग० २३७ ।

तडागमहो–तडाकमहः–तडाकसत्क उत्सवः । जीवा० २८१ ।

तडि–तटी–पार्श्वम् । अनुत्त० ६ ।

तडिओ–आरामिकः । आव० २६५ । बद्धः । आव० ४२१ ।

तडिग–तटिकः । आव ३८४ ।

तडिगा–उपानहौ । ओघ० ३४ ।

तडिगादिडेवणय–उपानहौ परिधाय डेवनं–लङ्घनमग्नेः कृत्वा व्रजति । ओघ० ३४ ।

तडितं–पिंजितं रुतं । बृ० द्वि० ११६ आ ।

तडिय– नि० चू० प्र० १८६ अ ।

तडियकप्पडिओ–तटिककार्पटिकः । आव० ११५ ।

तडिया– । नि० चू० प्र० ३४४ अ ।

तडी–चिंचणी । बृ० द्वि० ३० अ । तटी–नद्यादीनां तटम् । ज्ञाता० ६७ । आव० २७४ । छिण्णटेंका । नि० चू० प्र० ३० अ ।

तड्डेति–लाएति । नि० चू० प्र० १२४ आ ।

तण–तृणं विरणादि । उत्त० ३७० । तृणानि–कुशजंजुकाऽर्जुनादीनि । प्रज्ञा० ३० । तृणं दर्भादि । दश० २२६ । आचा० ३० । वीरणादि । भग० ३०६ ।

तणइओ–तनूजः । आव० ३४४ ।

तणकट्ठ–तृणकाष्ठः । आव० ४२३ ।

तणगं–तृणविशेषः । सूत्र० ३०६ ।

तणणं– । नि० चू० द्वि० १६६ अ

तणपणए–तृणपञ्चकं–शालि १ व्रीहि २ कोद्रव ३ रा[illegible] ४५ रण्यतृणलक्षणम् । आव० ६५२ ।

तणपणगं–तृणपञ्चकम् । ठाणा० २३४ ।

तणपिंडिगा–तृणपिण्डिका–तृणभारः, तृणपूलिका वा । आव० ६६७ ।

तणपिंडियं–तृणपिण्डिका । आव० ६८२ ।

तणपीढगं–एलालमयं तणपीढगं । नि० चू० द्वि० ६२ आ ।

तणपूलिअं–तृणपूलम् । आव० १५२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तणफासा–तृणस्पर्शः अशुषिरतृणस्य दर्भादेः परिभोगः, सप्तदशपरीषहः । आव० ६५७ ।
तणबेंटका–त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः । जीवा० ३२ ।
तणबेंटिया–त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः । प्रज्ञा० ४२ ।
तणमूल–तृणमूलम् । प्रज्ञा० ३४ ।
तणय–सत्कम् । आव० ३१४ । उत्त० १६० ।
तणवणस्सइकाइए–तृणवनस्पतिकायिकाः बादरवनस्पतिकायिकान् । जं० प्र० १६८ ।
तणवणस्सइकाइय–तृणवनस्पतिकायिकाः–बादरवनस्पतयः । भग० ३०६ ।
तणवणस्सइगणो–तृणवनस्पतिगणः-बादरवनस्पतीनां समुदायः । प्रश्न० १२ ।
तणवणस्सति–तृणवद्वनस्पतयः तृणवनस्पतयः । ठाणा० ५२१ । बादरावनस्पतयोऽग्रबीजादयः । क्रमेण कोरण्टका उत्पलकन्दा वंशाः शल्लक्यो वटा एवमादयः । ठाणा० ३२५ । तृणवनस्पतयो बादरा इत्यर्थः । ठाणा० १२२ ।
तणवणस्सतिकातिता–वनस्पतिः स एव कायः शरीरं येषां ते वनस्पतिकायाः त एव वनस्पतिकायिकाः तृणप्रकारा वनस्पतिकायिकास्तृणवनस्पतिकायिका बादरा इत्यर्थः । ठाणा० १८६ ।
तणवत्थुल–वनस्पतिविशेषः । भग० ८०२ ।
तणसाला–दब्भादितणद्ठाणं अवोपगासं तणसाला । नि० चू० प्र० २६५ अ ।
तणसूए–तृणसूकं–तृणाग्रम् । भग० ६७७ ।
तणसूयं–तृणाग्रम् । भग० ३७६ ।
तणसोल्लिअ–मल्लिकापुष्पम् । जं० प्र० २१२ । ज्ञाता० २२२ ।
तणहार–तृणहारकः त्रीन्द्रियजीवभेदः, त्रीन्द्रियजन्तुजीवा ३२ । उत्त० ६९५ । प्रज्ञा० ४२ ।
तणहारिगो–तृणहारकः । आव० ६७९ ।
तणु–तनु–तनुकम् । तनवः प्रतलाः । जं० प्र० ११० । तनु–कृशम् ।
तणुअंतं–प्रश्रवणपरिणामि । तं० ।
तणुअ–तन्तुकः–सूक्ष्मोर्णा । जं० प्र० १०७ ।
तणुइ–तन्वी–शेषपृथिव्यपेक्षयाऽतितनुत्वात्, ईषत्प्राग्भाराया तृतीयं नाम । प्रज्ञा० १०७ ।
तणुए–तनुकं लघु सुजरम् । ज्ञाता० १७७ ।
तणुओ–तनुकः–कृशम् । आव० ७६४ ।
तणुतणूइ–अतितनुत्वात्तनुतनुरिति, ईषत्प्राग्भाराया श्चतुर्थं नाम । ठाणा० ४४० । तनुम्योऽपि तन्वी मक्षिकापत्रतोऽपि पर्यन्तदेशेऽतितनुत्वात् तनुतन्वी, ईषत्प्राग्भाराया श्चतुर्थं नाम । प्रज्ञा० १०७ ।
तणुनमियं–तनु–कृशं नतं तनुनतमीषन्नतम् । जीवा० २७५ ।
तणुय–तनुकं, सुजरम् । भग० ६७२ । तनुकः–दरिद्रः । भग० १०१ । प्रतलम् । ज्ञाता० १३८ ।
तणुया–तनुः–शरीरं तत्र जाता तनुजा । उत्त० ४०७ ।
तणुल–तनुः–शरीरं सुखस्पर्शतया लाति–अनुगृह्णाति इति तनुलं तनु सुखादि । जं० प्र० १०७ ।
तणुवाए–तनुवातः–विरलपरिणामो घनवातस्याधस्थायी । जीवा० २९ । तनुवातः–विरलपरिणामो घनवातस्याधऽस्थायी । प्रज्ञा० ३० ।
तणुवाएसु– । प्रज्ञा० ७७ ।
तणुवायवलएसु– । प्रज्ञा० ७७ ।
तणू–तनुः–बोन्दिः शरीरम् । प्रज्ञा० १०८ ।
तणूइ– । सम० २२ ।
तणूति–तनुः–ईषत्प्राग्भारायास्तृतीयं नाम । ठाणा० ४४० ।
तणूयतरिति– । सम० २२ ।
तण्डुल–धुष उपयोगो । सूर्य० २९३ ।
तण्णगाइं–तर्णकाणि–वत्सरूपाणि । बृ० प्र० ३१७ अ ।
तण्हा–तृष्णा–प्राप्तार्थानामव्ययेच्छा । भग० ५७३ । तृष्णा–प्राप्तार्थसंरक्षणरूपा । ० ९२ । धनाद्याकांक्षा–परिग्रहस्य सप्तविंशतितमं नाम । । प्रश्न० ९२ । तृष्णा–द्रव्याव्ययेच्छा । प्रश्न० ९७ । तृष्णा–विद्यमानद्रव्याव्ययेच्छा । प्रश्न० १२४ । प्राप्तद्रव्यस्याव्ययेच्छा । प्रश्न ४४ । तृष्णा–द्रव्यादिविषया । उत्त० ५९० । सति मुर्च्छा । उत्त० ६२३ ।
तण्हाइओ–तृष्णार्दितः–पिपासितः । प्रश्न० १९ ।
तण्हाएत्तो–तृषितः । उत्त० ८७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तण्हागेहि–तृष्णागृद्धिः–तृष्णा–प्राप्ताद्रव्यस्याव्येच्छा गृद्धिः अप्राप्तस्य प्राप्तिवाञ्छा, तृतीयाधर्मद्वारस्याष्टाविंशतितमं नाम । प्रश्न० ४४ ।

तण्हावुच्छेअणं–तृड्व्यवच्छेदनं–तद्विषयावभिलाषनिवृत्तिः । आव० ८५१ ।

तत–तत वीणादि । प्रश्न० ८ । ततं–वादित्रविशेषः । जं० प्र० ४१२ । आउज्जविसेसो । नि० चू० तृ० १ अ । तन्त्रीवघ्रादिबद्धमातोद्यम् । ठाणा० ६३ । वीणा-विपञ्चीबद्धीसकादि तन्त्रीवाद्यम् । आचा० ४१२ । ततं–वीणादिकम् । जं० प्र० १०२ । तकः ततो वा । उत्त० २५६ । ततः–तको बालः । उत्त० २८० । तत्र । उत्त० १५६ ।

ततगइ–ततस्य ग्रामनगरादिकं गन्तुं प्रवृत्तत्वेन तच्चा-प्राप्तत्वेन तदन्तरालपथे वर्त्तमानतया प्रसारितक्रमतया च विस्तारं गतस्य गतिस्ततगतिः, ततो वाऽवधिभूतग्रामा-देर्नगरादौ गतिः । भग० ३८१ ।

ततगती–तता–विस्तीर्णा सा चासौ गतिश्च ततगतिः, यं ग्रामं सन्निवेशं वा प्रति प्रतिष्ठितो देवदत्तादिस्तं ग्रामा-दिकं यावदद्यापि न प्राप्नोति तावदन्तरा पथि एकैकस्मिन् पदन्यासे तत्तद्देशान्तरप्राप्तिलक्षणा गतिरस्तीति तत-गतिः । प्रज्ञा० ३२६ ।

तता–विस्तीर्णा । प्रज्ञा० ३२८ ।

ततोपाए–ततः प्रभृति । ओघ० ७३ ।

ततोहुत्तो–ततः सकाशात् । उ० १५६ ।

तत्–सर्वलिङ्गवचनेष्वव्ययम् । प्रज्ञा० ८ ।

तत्करा–आसङ्गः सम्बन्धः–तत्करा:–रागद्वेषकारिणः । आचा० २१६ ।

तत्त–तप्तं–तापितम् । ज्ञाता० ६ ।

तप्तं–तापितम् । विपा० ३४ । तत्त्वं–वस्तुस्वरूपम् । प्रश्न० ३५ । तप्तं संक्रान्ततापम् । भग० १६६ । तापः । भग० ३०७ ।

तत्तकवल्लकडभूय– । भग० १६६ ।

तत्तजला–तप्तजला, अन्तरनदी नाम । जं प्र० ३५२ ।

तत्तजलाओ– । ठाणा० ८० ।

तत्तजुत्त–तोत्रयोक्त्रः–प्राजनकबन्धनविशेषः मर्माघट्टनाहना-म्यामिति । उत्त० ४६० ।

तत्तडिया–सरचनाका । ग० ।

तत्ततवो–तप्तं तपो येन स तप्ततपाः । सूर्य० ४ ।

तत्तऽनिव्वुडं–तप्तानिर्वृतं-अप्रवृत्तत्रिदण्डम् । दश० १८५ ।

तत्तफासुअ–तप्तप्रासुकं तप्तं सत्प्रासुकं त्रिदण्डोद्वृत्तं, नोष्णोदकमात्रं, प्रतिगृह्णीयाद् वृत्त्यर्थम् । दश० २२८ ।

तत्तमासगाइओ–तप्तमाषकादिः–द्रव्यप्रत्ययः । आव० २८० ।

तत्तवती–अर्जुनराज्ञी । विपा० ६५ ।

तत्तानिव्वुडभोइत्तं–तप्तानिर्वृतभोजित्वं–तप्तञ्च तद-निर्वृतञ्च–अत्रिदण्डोद्वृत्तं चेति विग्रहः, उदकमिति विशेषणान्यथानुपपत्त्या गम्यते, तदभोजित्वं-मिश्र-सचितोदकभोजित्वम् । दश० ११७ ।

तत्ति–तप्तिः । पिण्ड० ७३ । व्यापारः बृ० द्वि० ४० अ ।

तत्तिला–अर्थिनः । ओघ० ७१ । यत्नवती, परायणा । नंदी० ६४ ।

तत्तिल्लो–दक्षः । आव० २११ ।

तत्ती–तप्तिः चिन्ता । आव० ६८३ । तप्तिः–तापः । उत्त० ४३३ । गवेषणं पालनं वा । प्रश्न० ६७ । तप्तिः-सारा । व्य० प्र० १७१ अ ।

तत्तवज्ञः–सर्वज्ञस्तीर्थकृत् । आव० ।

तत्त्वार्थश्रद्धानं–तत्तत्थसद्दहाणं तत्त्वानां निश्चितं वा-ऽर्थानां प्रत्ययः । तत्त्वा०१-२ । प्रशमादिपञ्चलक्षणव्यंग्ज्यः ।

तत्त्वानुरूपं–विवक्षितवस्तुस्वरूपानुसारिता, पञ्चदशो वच-नातिशयः । सम० ६३ ।

तत्थ–तस्मात् । व्य० द्वि० ७७ आ । त्रस्तः–न उद्विग्नः । उत्त० ४६१ । त्रस्तम् । भग० १६६ ।

तत्थगए–तत्रगतः । आव० ७२६ ।

तत्था–त्रस्ता उद्विग्नाः–सञ्जातभया भयप्रकर्षाभिधाना-यैकार्थाः । विपा० ४३ । ज्ञाता० ६४ । नष्टाः । जं० प्र० २३६ ।

तत्पदं–तस्य पद्यते–गम्यते येनार्थस्तत्पदं–अभिधानम् । आचा० २३१ ।

तत्परं–तत्र द्रव्यपरं तावत्तद्रूपतयैव वर्त्तमानं–परमन्यत्त-त्परम् । आचा० ४१५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्वं-शब्दार्थरूपम् । विशे० २२ । लक्षणम् । विशे० १०७ ।

तत्रस्था-स्वरूपस्था । आव० ३३८ ।

तत्समर्थं- । उपा० ७ ।

तथा-आनन्तर्ये । आव० १० । अवधिज्ञानसारूप्य-प्रदर्शनार्थः । आव० ८ ।

तथाकारः-गुर्वादिषु ब्रुवाणेषु यथाऽऽदिशत यूयं तथैवेति भणनम् । बृ० प्र० २२२ अ ।

तथाज्ञानः-जानत्प्रश्नः । ठाणा० ३७६ ।

तथाभव्यत्वं-भव्यत्वभेदः । प्रज्ञा० ११२ ।

तथारूपः-तथाविधोऽविज्ञातव्रतविशेष इत्यर्थः । भग० ६६४ ।

तदंतरे-यवनिकान्तर इत्यर्थः । उत्त० ४२५ ।

तदज्झवसाणे-तस्यामेवाध्यवसानं-भोगक्रियाप्रयत्नविशेष-रूपं यस्य स तदध्यवसानः । विपा० ५३ ।

तदट्ठोवउत्ते-तदर्थं-तत्प्राप्तये उपयुक्तः-उपयोगवान् यः स तदर्थोपयुक्तः । विपा० ५३ ।

तदन्नं-तदन्यत्-तस्मात् घृतादेः अन्यत्-क्षीरगुडादि । ओघ० १७० ।

तदन्नवत्थुते-तस्मात्-परोपन्यस्ताद् वस्तुनोऽन्यदुत्तरभूतं वस्तु यस्मिन्नुपन्यासोपनये स तदन्यवस्तुकः । ठाणा० २५४ ।

तदन्नवयणे-तदन्यवचनम्, तस्माद्-विवक्षितघटादेरन्यः पटादिस्तस्य वचनम् । ठाणा० १४१ ।

तदप्पियकरणे-तस्यामेवार्पितानि-ढौकितानि करणानि इन्द्रियाणि येन स तदर्पितकरणः । विपा० ५३ ।

तदुपरि-तत्र जङ्घार्द्धप्रमाणे उदकसंस्पर्शे संघट्टः, नाभि-प्रमाणे उदकसंस्पर्शे लेपः, तत उपरि उदकसंस्पर्शो तदुपरि । व्य० प्र० २५ आ ।

तदुब्भवो-तदुद्भवः-शरीरोद्भवो गण्डादिः । आव० ७६४ ।

तदुभयपतिट्ठिए-तदुभयप्रतिष्ठितः-आत्मपररूपोभयप्रति-ष्ठितः । प्रज्ञा० २६० ।

तदेक्कदेसभाए-तदेकदेशभागे मंदरादिवाप्यादिषु । प्रज्ञा० ७६ ।

तदेक्कदेसो-तदेकदेशः द्रव्यहेतुभूतः । आव० ३२७ ।

तद्दव्वं-तद्द्रव्यं-पटादेर्द्रव्यं तन्त्वादि । आव० २७८ ।

तद्दव्वसुद्धी-यद् द्रव्यमन्येन द्रव्येण सहासंयुक्तं तच्छुद्धं भवति क्षीरं दधि वा असौ तद्द्रव्यशुद्धिः । दश० २११ ।

तद्दव्वकरणं-तद्द्रव्यमिति तस्यैव पटादेर्द्रव्यं तद्द्रव्यं-तन्त्वादि, तदेव कारणमिति द्रष्टव्यम् । आव० २७८ ।

तद्दव्वनानाता-द्रव्यनानातायाः भेदः । आव० २८१ ।

तद्दिट्ठी-तस्य आचार्यस्य दृष्टिस्तद्दृष्टिः । सततं वर्त्तितव्यं हेयोपादेयार्थेषु, यदि वा तस्मिन् संयमे दृष्टिस्तद्दृष्टिः स एव वाऽऽगमो दृष्टिस्तद्दृष्टिः । आचा० २१५ ।

तद्दिवसं-प्रतिदिनम् । बृ० प्र० २६३ अ । प्रतिदिवसं-दिने दिने इत्यर्थः । व्य० द्वि० २६७ आ ।

तद्देक्कदेसेणं-तेषां-द्रव्याणामेकदेशेन इत्यर्थः । ठाणा० २६० ।

तद्देसे-तस्य देशस्तद्देशः । दश० ३५ ।

तद्दोस-त्वग्दोषः-कुष्ठी । ओघ० १६३ । तद्दोषः । दश० ३५ । नि० चू० प्र० १८८ आ ।

तद्दोसाई-त्वग् दोषा त्वग्दोषं क्षयव्याध्यादिः । व्य० द्वि० १६० आ ।

तद्दोसी-त्वग्दोषी-कुष्ठी । पिण्ड० १३६ ।

तद्धितो-तद्धितः-तस्य हितः । आव० १५५ ।

तद्धिय-तद्धितः-तस्मै हितं तद्धितमित्याद्यर्थाभिधायको यः प्रत्ययः । प्रश्न० ११७ ।

तद्धुत्तं-बलीवर्द्दादिभिः । ठाणा० २४० ।

तनु-स्तोकं मन्दं यतनयेति । उत्त० ४११ ।

तनुवर्गणा-ध्रुवानन्तरं वर्गणानामुपरि प्रत्येकमेकोत्तर-वृद्धियुक्तानन्तवर्गणात्मिकाश्चतस्र एव तनुवर्गणा भवन्ति । विशे० ३३१ । भेदाभेदपरिणामाभ्यामौदारिकादियोग्य-ताऽभिमुखा । आ० ३५ ।

तन्नगं-बालवच्छं । नि० चू० द्वि० ५६ अ ।

तन्नपालः-दण्डनायकः । भग० ३१८ ।

तन्निवेसणे-तस्य-गुरोर्निवेशनं-स्थानं यस्यासौ तन्निवेशनः, सदागुरुकुलवासी । आचा० २१५ ।

तपआचारः-अनशनादिभेदो द्वादशधा । ठाणा० ३२५, ६५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तपः–सिद्धत्वे दशमः भेदः । ठाणा० २५ । लिङ्गः । ठाणा० ३३७ । तपः प्रायश्चित्तः–त्रिविधे प्रायश्चित्ते द्वितीयम् । बृ० प्र० ४८ आ ।

तपः–संयमरक्षणार्थं कर्मनिर्जरार्थं च चतुर्थषष्ठाष्टमादि सम्यगनशनम् । तत्त्वा० १–१९ ।

तपःक्षपणं–सम्यगुपक्रमेणानुदीर्णोदीरणदोषक्षपणवदन्यनिमित्तप्रक्रमेणापरिक्लेशम् । दश० २७४ ।

तपति–दुनोति । ठाणा० ३६४ ।

तपसढं–जं बहु देवसियं । दश० चू० ८१ आ ।

तपोऽर्हं–प्रायश्चित्तविशेषः । व्य० प्र० १८७ आ ।

तप्प–तप्रः काष्ठसमुदायविशेषः । प्रज्ञा ५४२ । नंदी० ८८ । उडुपकः । भग० ५२४ । तप्रः–मत्स्यग्रहणार्थं तरकाण्डविशेषः । प्रश्न० १३ । तप्र–उडुकस्तस्येवाऽऽकारो यस्याऽसौ तप्राकारोऽवधिर्नाकाराणां मन्तव्यः, तप्रश्च किलाऽऽयतत्र्यस्रो भवति । विशे० ३५३ ।

तप्पक्खिओ–तत्पाक्षिकः–तस्य हितैषी । बृ० द्वि० १९५ अ ।

तप्पक्खिय–तत्पाक्षिकः–तस्य सोमस्य प्रयोजनेषु सहायः । भग० १९६ । तत्पाक्षिकः–केवलिपाक्षिकः स्वयंबुद्धः । भग० २२२ ।

तप्पडिरूवगववहारे – तत्प्रतिरूपकव्यवहारः – अधिकृतेन सदृशस्य प्रक्षेपः । आव० ८२२ ।

तप्पढमं–तत्प्रथमं तत्कालम् । जीवा० २७१ ।

तप्पण–वण्णबलादिणिमित्तं घयादिणेहपाणं तप्पणं । नि० चू० द्वि० ८९ अ । तर्पणं–स्नेहादिभिः शरीरबृंहणम् । विपा० ४१ । स्नेहद्रव्यविशेषैर्बृंहणम् । ज्ञाता० १८३ ।

तप्पणादूयालिया–मथ्यमानसक्तुकः । दश० ५९ ।

तप्पती–तप्यते–पीड्यते क्लेशभाग्भवति । सूत्र० १८३ ।

तप्पभेएणं–तेषां मूलजातिभेदानां येऽन्ये प्रकृष्टाः सूक्ष्मतरा भेदास्तैरित्यर्थः । विशे० ९२२ ।

तप्पागारे–तप्राकारः–उडुपकाकारः । आव० ४१ ।

तप्पुरक्कारे–पुरस्करणं पुरस्कारः–सर्वकार्येष्वग्रतः स्थापनं, तस्य–आचार्यस्य पुरस्कारस्तत्पुरस्कारः । आचा० २१५ ।

तप्रादिरूपः–आकारविशेषः । प्रज्ञा० ५३६ ।

तबरि–गुच्छाविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

तब्भत्तिय–तद्भक्तिकः–तत्र सोमे भक्तिः–सेवा बहुमानो वा यस्य स तद्भक्तिकः । भग० १९६ ।

तब्भवं–तद्भवमरणं, मरणस्य सप्तमो भेदः । उत्त० २३० । तस्मिन् भवे जीवितं तद्भवजीवितम् । आव० ४८० । तत्थेवकाए उब्भवो । नि० चू० प्र० १८८ आ ।

तब्भवजीवियं–तद्भवजीवितं तस्यैव पूर्वभवस्य समानजातीयतया सम्बन्धि जीवितम् । ठाणा० ७ । तद्भवजीवितम् । दश० १२२ ।

तब्भवजीवो–तद्भवजीवः तद्भव एवोत्पन्नः । दश० । १२१ ।

तब्भवमरणं–जंमि भवे वट्टइ तस्सेव भवस्स हेउसु वट्टमाणो आउयं बंधित्ता पुणो तत्थोववज्जिउकामस्स जं मरणं तब्भवमरणं । नि० चू० द्वि० ५२ आ । यस्मिन् भवे–तिर्यग्मनुष्यभवलक्षणे वर्त्तते जन्तुस्तद्भवयोग्यमेवायुर्बद्ध्वा पुनः तक्षयेण म्रियमाणस्य यद्भवति तत्तद्भवमरणम् । सम० ३३ । यस्मिन् भवे वर्त्तते जन्तुस्तद्भवयोग्यमेवायुर्बद्ध्वा पुनर्म्रियमाणस्य मरणं तद्भवमरणम् । ठाणा० ९३ ।

तब्भविय–तद्भविकमरणं–यस्मिन्नेव मनुष्यभवादौ मृतः । पुनस्तस्मिन्नेवोत्पद्य यन्म्रियते इति । उत्त० २३० ।

तब्भारिया–तस्य सोमस्य भार्या इव भार्या अत्यन्तं वश्यत्वात्पोषणीयत्वाच्चैति तद्भार्याः, तद्भारो वा येषां वोढव्यतयाऽस्ति ते तद्भारिकाः । भग० १९६ ।

तब्भाव–तद्भावः । ठाणा० ३३१ । तस्य भावस्तद्भावः पुंवेदः । व्य० द्वि० १७५ आ ।

तब्भावणाभाविए–तद्भावनया–कामध्वजाचिन्तया भावितो–वासितो यः स तद्भावनाभावितः । विपा० ५३ ।

तमंतमेति–तमस्तमा यतः प्रबलान्धकारतया परिणमते । बृ० द्वि० १९७ आ ।

तमंपविट्ठ–तमःप्रविष्ट इव तमःप्रविष्टः । भग० ३१२ ।

तमंपविट्ठा–तमःप्रविष्टाः–अज्ञानमग्नाः । प्रश्न० ९८ ।

तम–तमयति–खेदयति जनलोचनानीति तमः । उत्त० ३८ । दुःखसमुद्घातेन सदसद्विवेक प्रध्वंसित्वाद्यातनास्थानम् । अज्ञानरूपं, ज्ञानावरणादिरूप महत्तरं तमः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्र० २२ । कण्हचउद्दसीए राओ भासरदव्वाभावो । नि० चू० प्र० ३०२ आ । तमः-अज्ञानम्, बद्धस्पृष्ट-निधत्तं ज्ञानावरणीयं वा । आव० ७८८ । अप्काय-परिणामरूपोऽन्धकारः । ठाणा० २१७ । तमः-अंधकार-रूपत्वात् । भग० २६६ । नरकः । उत्त० ४०० । कृष्ण-चतुर्दशी रात्री ध्वान्तम् । बृ० तृ० १५४ आ । न किंचि-त्पश्यतीत्यर्थः । नि० चू० प्र० ३०२ आ ।

तमतमप्पभा-तमःतमःप्रभा । प्रज्ञा० ४३ ।

तमतमा-अतिशयतमोरूपद्रव्ययुक्ता पृथ्वी । अनु० ८६ । प्रकृष्टं तमस्तमस्तमः । तमस्तमःप्रभेत्यर्थः । भग० ६८ । तमस्तमःप्रभा नाम्नी सप्तमी पृथिवी । भग० ६८ ।

तमतिमिरं-रातो जदा रयरेणु धूमिगा भवति तदा तमतिमिरं । नि० चू० प्र० ३०२ आ । सरजो धूमि-कादिकं कृष्णचतुर्दशी रात्रि तमः । बृ० तृ० १५४ आ ।

तमतिमिरपडलं-समेघ दुर्दिनरजोधूमकादिकं कृष्णचतु-र्दशीरात्रिध्वान्तं तदा तमतमिरपडलम् । बृ० तृ० १५४ आ । रातीए रायादिआ मेह दुद्दिणं व भवति, अंधकार-विशेषः । नि० चू०, प्र० ३०२ आ ।

तमतिमिरपडलविद्धंसणं-तमस्तिमिरपटलविध्वंसनः-अ-ज्ञानतिमिरवृन्दविनाशनम् । आव० ७८८ ।

तमपडलमोहजालपडिच्छन्न-तमःपटलमिव तमःपटलं-ज्ञानावरणं मोहो-मोहनीयं तदेव जालं मोहजालं ताभ्यां प्रतिच्छन्ना-आच्छादिता ये ते तमःपटलमोहजा-लप्रतिच्छन्नाः। भग० ३१२ ।

तमप्पभा-तमःप्रभा । प्रज्ञा० ४३ ।

तमबलपलज्जणे-तमो बलेन-अन्धकारबलेन सञ्चरन् प्रलज्जते इति तमोबलप्रलज्जनः प्रकाशचारी । ठाणा० २४६ । तमो-मिथ्याज्ञानं अन्धकारं वा तदेव बलं तत्र वा अथवा तमसि-उक्तरूपे बले च सामर्थ्ये प्ररज्यते-रतिं करोति इति तमोबलप्ररञ्जनः । ठाणा० २४६ ।

तमरय-तमोरजसी-अज्ञानपातके । सम० ११५ ।

तमस-तमसं तमोवत् । दश० १६७ ।

तमःप्रभा-नरकपृथ्वी । आव० ३६३ । कृष्णद्रव्योप-लक्षिता पृथ्वी । अनु० ८६ ।

तमा-रात्रिस्तदाकारत्वात्तमाऽन्धकारेत्यर्थः । भग० ४६३ । ठाणा० १३३ । तमा-अन्धकारयुक्तत्वेन रात्रितुल्य-त्वादधोदिशश्च । ठाणा० ४७८ । अधोदिक् । आव० २१५ । तमोरूपद्रव्ययुक्ता पृथ्वी । अनु० ८६ ।

तमाल-वनस्पतिविशेषः । भग० ८०३ ।

तमालपत्तं-तमालपत्रम् । उत्त० १४२ ।

तमालपत्रं-पत्रविशेषः । जीवा० २३६ ।

तमाले-वलयविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

तमिति- । ठाणा० २१७ ।

तमिश्रागुहा- । ठाणा० ७१ ।

तमिसगुहा-तमिश्रगुहा । आव० १५० ।

तमुए-भगवतीसूत्रस्य षष्ठशतकस्य तमस्कायार्थनिरूप-णार्थः पञ्चमः । पञ्चमोद्देशकः । भग० २५० ।

तमुकाए-तमस्कायः अन्धकारराशिरूपत्वात् । भग० २७० ।

तमुक्काए-तमसां-तमिश्रपुद्गलानां कायोराशिस्तमस्का । भग० २६८ ।

तमुक्कातेति-तमसः-अप्कायपरिणामरूपस्यान्धकारस्य कायः-प्रचयस्तमस्कायः । ठाणा० २१७ ।

तमूयत्ता-तमस्त्वं अत्यन्तान्धतमसत्वं जात्यन्धता, अत्यन्ता-ज्ञानवृतता वा । सूत्र० ३१६ ।

तमोकसिय-तमसि काषी तमसि कषितुं-शीलं यस्य सः । पराविज्ञाताः क्रियाः कुर्वन्तीत्यर्थः । सूत्र० ३१३ ।

तमोरूवत्ता-तमोरूपता-अन्धबधिरता । सूत्र० ४२२ ।

तम्प्रति-तमाश्रित्य-तद्व्यवच्छेदायेत्यर्थः । विशे० ३३२ ।

तम्मण-तन्मनाः द्रव्यमनः प्रतीत्य विशेषोपयोगं वा । विपा० ५३ । ओप० ६० । तत्रैव अर्थादौ मनः-विशेषोपयोगरूपं यस्य सः । भग० ८६ ।

तम्मुत्ती-तेनोक्ता सर्वसङ्गेभ्यो विरतिर्मुक्तिः । आचा० २१५ ।

तम्मुहो-तन्मुखः । आव० ४११ ।

तय-ततं-मृदङ्गपटहादि । जीवा० २४७ । ततं-वीणा-दिकम् । भग० २१७ । जीवा० २६६ । ततं-विस्ती-र्णम् । उत्त० ४०७ । त्वक्-वल्कलम् । ओप० ७ । बाह्यवल्कम् । ठाणा० १८६ । तिलतुसतिभागमेत्तं । नि० चू० प्र० ३५५ अ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तया–त्वक्–छल्ली । जं० प्र० २९ । त्वचः–छल्लयः । प्रज्ञा० ३१ । त्वक् । सूत्र० ३१२ । त्वक्–त्वगिवासारं भोक्तव्यमित्यर्थसूचकत्वात् त्वगुच्यते, साधोरूपमानम् । दश० १८ । त्वक्–चातुर्जातिकाङ्गम् । उत्त० १४२ । त्वचासनादिकम् । जं० प्र० १४७ ।

तयापाणए– । भग० ६८० ।

तयाहारा–तृणाहाराः । निरय० २५ ।

तयाविस–त्वग्विषः । आव० २७४, ४२६ ।

तयाविसा–त्वचि विषं येषां ते त्वग्विषाः । जीवा० ३९ । प्रज्ञा० ४६ ।

तरंगवइकारे– । अनु० १४९ ।

तरंगवती–कामकथायां अनुभूतमधिकृत्य निजानुभवनिवेदयित्री । दश० १९० । मिश्रकथाव्याख्याने स्त्री । दश० ११४ । धर्मकथाविशेषः । व्य० द्वि० ११३ आ । बृ० तृ० १६ अ ।

तरंड–पोतः । ओघ० ३१ ।

तरंति–शक्नुवन्ति । ओघ० ७५ ।

तर–तरः वेगो बलं वा । जं० प्र० ५३० । भग० ४८० । औप० ७० । शय्यातरः । बृ० द्वि० १४७ आ ।

तरइ–तरति–शक्नोति । विशे० ८४ ।

तरई–तरति–क्षेमेण वर्त्तते । पिण्ड० १२३ ।

तरच्छ–तरक्षवः मृगादनाः । जं० प्र० १२४ । तरक्षुः व्याघ्रविशेषः । भग० १९१, ३०९ । ज्ञाता० ७० । तरक्षुः–व्याघ्रजातिविशेषः । प्रज्ञा० २५४ । तरक्षः–व्याघ्रविशेषः । प्रश्न० ७ । तरक्षः–सनखपदश्चतुष्पदविशेषः । जीवा० ३८ । तरच्छ–वनजीवाः । मर० ।

तरणं–बाहू । आव० ५९ । णित्थारणं । नि० चू० प्र० ९५ अ ।

तरणीयं–उडुप नद्यादि । आव० ५९ ।

तरतमजोगो–तरतमयोगः–साकारोपयोगः । विशे० ११९८ ।

तरति–शक्नोति । नि० चू० प्र० २७ अ ।

तरत्थम– । नि० चू० द्वि० १३३ आ ।

तरपणट्ठा– । ओघ० ३३ ।

तरपण्णं–तरपण्यम् । बृ० तृ० १६० आ ।

तरपन्नं–तारणमूल्यम् । नि० चू० द्वि० ७८ अ ।

तरमल्लिहायणा–तरो–वेगो बलं वा तथा 'मल्लमल्लिधारणे' ततश्च तरो धारको वेगादिकृत् हायनः–संवत्सरो वर्तते येषां ते तथा यौवनवन्तः । भग० ४८० । जं० प्र० २६५ ।

तरमाण– । नि० चू० प्र० २६ अ ।

तरसि–शक्नोषि । आव० ३०५ ।

तरा–त्वरा–मानसौत्सुक्यम् । जं० प्र० ३८८ ।

तरामि–शक्नोमि । दश० ७९ ।

तरियव्वो–तरणीयः । ज्ञाता० १६९ ।

तरी–तरिका–उडुपः । पिण्ड० १०२ ।

तरुगणा–तरुगणाः नालिकेर्याद्यारामाः । दश० १९३ ।

तरुगणगणो–तरुगणगणः–वृक्षगुच्छादिवृन्दसमूहः । प्रश्न० २४ ।

तरुण–प्रवर्द्धमानवयाः । अनु० १७६ । नवम् । जीवा० २७१ । प्रत्यग्रः । ज्ञाता० २२२ । तरुणः–उद्गच्छत् । जं० प्र० १८३ । तरुणः–प्रवर्द्धमानवयाः विशिष्टवर्णादिगुणोपेतमभिनवं वस्तुजातम् । जीवा० १२१ । यद् द्रव्यं विशिष्टवर्णादिगुणोपेतमभिनवं च तत्तरुणम् । राय० २२ । वर्धमानवयाः, वर्णादिगुणोपचितः । उपा० ४६ । अर्वाक् चत्वारिंशतो वर्षेभ्यः । व्य० प्र० २४५ । चत्ता सत्तरुणो । व्य० द्वि० ११२ आ । जन्मपर्यायेण षोडशवर्षाण्यारभ्य यावच्चत्वारिंशद्वर्षाणि तावत्तरुणः । व्य० प्र० २४५ अ । तरुणः–प्रथमकुमारत्वे वर्त्तमानः । व्य० प्र० १४३ अ ।

तरुणइत्ते–तरुणः युवा । दश० १०५ ।

तरुणगं–अभिनवम् । भग० ६८४ । अहुणुट्ठियं । दश० चू० ८६ अ ।

तरुणदिवायरनयणो–तरुणदिवाकरनयनः–रक्ताक्षः । आव० ५६६ ।

तरुणधम्मो–तस्य तावन्तं कालमसमापयन् तरुणधर्म्मा अविपक्वपर्यायः । बृ० प्र० १२९ आ । जस्स वा सुत्तस्स जो कालो भणितो तं अपूरेंतो तरुणधम्मो भवति । नि० चू० तृ० ८१ अ ।

तरुणा–तरुणा अभिनवा कोमलेति । अनुत्त० ४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तरुणरहस-रोगः । ओघ० ६४ ।
तरुणसहयरि-तरुणसहचरी-युवतिमयूरा । ज्ञाता० २६ ।
तरुणा-असञ्जाता । दश० १८५ ।
तरुणिमानः-तारुण्यम् । नंदी० १६१ ।
तरुणी-अपरिपक्वा । आचा० ३२३ ।
तरुणीपडिकम्म- । ज्ञाता० ३८ ।
तरुणीपरिकम्म-तरुणीपरिकर्म युवतीनामङ्गसत्क्रिया वर्णादिवृद्धिरूपा । जं० प्र० १३८ ।
तरुपडणे-तरुपतनम् । ठाणा० ९३ ।
तरुपतनस्थानानि-यत्र मुमूर्षव एवानशनेन तरुवत्पतितास्तिष्ठन्ति तरुभ्यो वा यत्र पतन्ति । ठाणा० ।
तरोमल्लिन-बलाधायिनो वेगाधायिनोवा । ज्ञाता० ५८ ।
तरोमल्लिहायणे-तरोमल्लिहायनः तरोधारको - वेगादिधारको हायनः संवत्सरो यस्य सः यौवनवानिति । जं० प्र० ५३० ।
तरोमल्लो-तरोधारकः वेगादिकृत् । जं० प्र० २६५ ।
तर्कणं-मनसा यदि मह्यमसौ ददातीति विकल्पनम् । उत्त० ५८७ ।
तर्कुकः-वनीपकः । प्रश्न० १५४ ।
तर्कणवृत्तीनि- । ठाणा० ४२० ।
तर्णकं- । उत्त० ३०५ ।
तर्प्पणालोडिकयेति-सक्त्वालोडनेन जलाद्यालोडितसक्तुभिरित्यर्थः । ठाणा० २६१ ।
तर्षः-तृष्णा । उत्त० १८३ ।
तलं-रूपम् । औप० १६ । उपरितनो भागः । जीवा० १८९ । प्रतिष्ठानम् । प्रश्न० ६३ हस्तपुटम् । जीवा० २६६ । भूमिका । जीवा० १०३ । तालवृक्षः । अनु० १७७ । घुटिकाकालः । बृ० द्वि० ७ अ । हस्ततलः । जं० प्र० ६३ । तलः-तालवृक्षः । जीवा० १२२ । तलः-हस्तकः । जीवा० १६० । तलः-हस्ततलः । जीवा० २१७ । तलः-उपरितनो भागः । सूर्य० ६९ ।
तलउदाडा-गुच्छाविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।
तलणं-तलनम् । प्रश्न० १४ ।
तलताला-हस्ततालाः । सूर्य० २६७ । ज्ञाता० २३३ । प्रश्न० १५९ ।
तलपत्त-तलपत्राणि-तालाभिधानवृक्षवर्णानि । ज्ञाता० २३१ ।
तलभंगय-तलभङ्गकम् । औप० ५५ । तलभङ्गकं-भूषणविधिविशेषः । जीवा० २६९ । तलभङ्गकं-बाह्वाभरणम् । औप० ४९ । तलभङ्गकः-बाह्वाभरणविशेषः । प्रज्ञा० ९१ । जीवा० १६४ । तलभङ्गकं-बाह्वाभरणम् । जं० प्र० १०६ ।
तलवर-परितुष्टनरपतिप्रदत्तरत्नालङ्कृतसौवर्णपट्टविभूषितशिराः । अनु० २३ । परितुष्टनरपतिप्रदत्तपट्टबन्धभूषितः । ठाणा० ४६३ । प्रभुस्थानीयो नगरादिचिन्तकः । उत्त० ३४३ । तलवरः-परितुष्टनरपतिप्रदत्तपट्टबन्धविभूषितः राजस्थानीयः । प्रज्ञा० ३२७ । भग० ३१८, ४६३ । तलवरः-प्रतुष्टनरपतिवितीर्णपट्टबन्धःविभूषितो राजस्थानीयः । भग० ११५ । तलवरः-सन्तुष्टनरपतिप्रदत्तसौवर्णपट्टालङ्कृतशिरस्कचौरादिशुद्धयधिकारी । जं० प्र० १२२ । तलवरः-राजवल्लभः, राजसमानः । अन्त० १६ । राजप्रतिमाचामरविहितो तलवरो । नि० चू० प्र० २७० अ । तलवरः-परितुष्टनरपतिप्रदत्तपट्टबन्धविभूषितः । औप० १४ । तलवरः-परितुष्टनरपतिवितीर्णपट्टबन्धविभूषितः राजस्थानीयः । औप० ५८ । तलवरः-कृतपट्टबन्धराजस्थानीयः । प्रश्न० ९६ । तलवरः-राजप्रसादवान् राजोत्थासनिकः । विपा० ४० । तलवरः-परितुष्टनरपतिप्रदत्तरत्नालङ्कृतसौवर्णपट्टविभूषितशिराः । जीवा० २८० । परितुष्टनरपतिदत्तसौवर्णतलवरपट्टालंकृतशिरस्कः । बृ० तृ० २५५ आ । राजवल्लभः । भग० ४६३ ।
तलवरा-तलवराः-परितुष्टनृपदत्तपट्टबन्धविभूषिता राजस्थानीयाः । जं० प्र० १९० । परितुष्टनरपतिप्रदत्तपट्टबन्धविभूषिताः । राज० १२१ ।
तला-तलौ-हस्ततलौ । जीवा० १६२ । प्रज्ञा० ८९ । हस्तकाः । प्रज्ञा० ८६ । सम० १३८ । जं० प्र० ७६ । औप० ५ । तलं-भूमिका । प्रज्ञा० ८० । हस्तालाः । प्रश्न० १५९ ।
तलाग-तडागः । प्रश्न० ८ । तडागः-पुरुषादिकृतो जलाशयविशेषः । प्रश्न० १३४ । तडागः-कृतको जलाशय-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विशेषः । प्रश्न० १६१ । तडागः–खानितो जलाशयविशेषः । अनु० १५६ ।

तलागमह– । आचा० ३२८ ।

तलागाति–तडागादीनि । ठाणा० ८६ ।

तलानि–मध्यखण्डानि । ठाणा० ४३५ ।

तलाय–तडागम् । प्रज्ञा० ७२ । तडागः–कृत्रिमजलाशयविशेषः । भग० ३७३ ।

तलाहणा– । नि० चू० तृ० ८० अ ।

तलिगा–सोपानत्काः उपानद्रूढपादाः । ओघ० ५५ । तलिका–चर्मपञ्चके प्रथमो भेदः । आव० ६५२ ।

तलिणो–तलिनः प्रतलः । औप० १६ । जीवा० २७२ । प्रश्न० ८१ ।

तलिना–सूक्ष्मा । बृ० प्र० ११३ अ ।

तलिय–तल्पं–शयनीयः । ज्ञाता० २०५ ।

तलिया–उवाहणा । नि० चू० प्र० ६० अ । तलिका । ठाणा० २३४ । तलिका–उपानहः । बृ० द्वि० १०१ अ । पात्रीविशेषाः । भग० ५४८ ।

तल्लग–तल्लकः–सुराविशेषः । जं० प्र० १०० ।

तल्लिच्छा–तत्तद्विवक्षितं वस्तु लब्धुमिच्छत इति तल्लिप्सुः । ज्ञाता० ६८ ।

तल्लेश्यः–प्रत्युपेक्षणाभिमुखः । ओघ० ११६ ।

तल्लेस–तल्लेश्यः कामध्वजा शुभात्मपरिणामविशेषः । विपा० ५३ । तल्लेश्यः–तच्चित्तः । ओघ० ११७ । तल्लेश्यः–भगवद्वचनगतशुभात्मपरिणामविशेषः । लेश्यादि–कृष्णादि द्रव्यसाचिव्यजनित आत्मपरिणामः । औप० ६० ।

तव–तपः–अनशनादि । प्रश्न० १३२ । तपः–उत्तराध्ययनेषु त्रिंशत्तममध्ययनम् । उत्त० ६ । तपः–भद्रमहाभद्रादि । उत्त० १२८ । तपोमदः–यत्तपसो मानम् । आव० ६४६ । तपस्त्यागयोः सतो निर्वर्त्तितवान् । ज्ञाता० १२३ । ठाणा० २०० । तपः–अनशनादिपूर्वकर्मनिर्जरणफलम् । प्रश्न० १०२ । तपः–धर्म्मध्यानादि । सूर्य० ४ । तपः–अनशनादि । सूर्य० ४ । जं० प्र० ५२२ । दश० ११० । तपः–भक्तपरिज्ञानादिकमनशनम् । उत्त० ७०७ । तपः–धर्मध्यानादि । भग० १२ । तपः–पृथिव्यादिसंघट्टनादौ निर्विग(कृ)तिकादि । आव० ७६४ । तपः–ध्यानम् । ज्ञाता० ६ ।

तवए–तक्कं–सुकुमारिकादितलनभाजनम् । विपा० ५८ ।

तवकरणं–तपःकरणं तपःकृतिः । आव० ४६६ ।

तवगं–तापिका । प्रश्न० १४ ।

तवणा–तपनं रविकरनिकरसन्तापरूपम् । उत्त० ५६६ ।

तवणि–घृतपात्रविशेषः । औप० ६६ ।

तवणिज्जं–तपनीयं–आरक्तं सुवर्णम् । जं० प्र० २४ । जीवा० १८१, १६४ । तपनीयं–सुवर्णविशेषः । सूर्य० २६४ । प्रज्ञा० ६६ । जीवा० २७३, १७५ । तपनीयं रक्तसुवर्णम् । जं० प्र० ५४ ।

तवणिज्जपट्ट–तपनीयपट्टः–रक्तस्वर्णमयपट्टकाः लोके महलू इति प्रसिद्धौ । जं० प्र० २११ ।

तवणिज्जमया–तपनीयमयानि रक्तस्वर्णमयानि । जं० प्र० २८४ ।

तवणिज्जुज्जलंबूसगं–तपनीयोज्ज्वललम्बूसकम् । आव० १२४ ।

तवणीयपवरलंबूस–पलंबंतमुत्तदामम् । आचा० ४२३ ।

तवति–तपति–तप्तो भवति । जीवा० २४८ ।

तवतेणे–तपस्तेनः–क्षपकरूपकल्पः । दश० १८६ । तपस्तेनः–परसम्बन्धि तप आत्मनि परप्रतिपत्तितः सम्पादयंस्तपस्तेनः । प्रश्न० १२५ ।

तवतेयसिरी–तपस्तेजःश्रीः । आव० ७६३ ।

तवनियम–तपोनियमो–नियन्त्रितं तपः । सम० ११७ ।

तवविणय–तपोविनयः–अपनयति तपसा तमः–अज्ञानं उपनयति च स्वर्ग-मोक्षं यः स विनयः । दश० २४१ ।

तवसंजमपडियारं–तपःसंयमप्रतिकारः–तपः संयमावेव प्रतिकारः । आव० ५८६ ।

तवसंजमो–तपःसंयमः तपःप्रधानः संयमः । आव० ३२६ तपःसंयमः–तपः–अनशनादिस्तत्प्रधानः संयमः पञ्चाश्रवविरमणादिः । उत्त० १४४ ।

तवसमाहो–तपःसमाधिः–तृतीयं विनयसमाधिस्थानम् । दश० २५५ ।

तवसा–अनशनादिना । जं० प्र० १६ ।

तवस्सी–विकिट्ठतवकारी । नि० चू० प्र० १४ आ । अनशनादि विचित्रतपो युक्ताः सामान्यसाधवो वा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्ञाता० १२३ । तपस्वी-उग्रतपश्चरणरतः । दश० ३१ । तपस्वी-विकृष्टक्षपकः । दश० २०५ । तपस्वी-तपोऽस्यास्तीति, विकृष्टाष्टमादि तपोऽनुष्ठानवान् । उत्त० ८४ । तपस्वी-निदानादिविरहिततया प्रशस्ततपोऽन्वितः । उत्त० १८५ । करवीरलताभ्रामकः कश्चित् । उत्त० २९५ । शिष्यः । औप० ३३ । विचित्रानशनादिलक्षणं तपो विद्यते यस्य सः सामान्यसाधुर्वा । आव० ११९ ।

तवाइसओ-तपोऽतिशयः । दश० १०५ ।

तवारिहे-तपोऽर्हं-निर्विकृतादिकं तपः । औप० ४२ । निर्विकृतिकादि तल्लक्षणां शुद्धिं यदर्हत्यतिचारजातं तत्तपोऽर्हम् । भग० ९२० ।

तवेंति-तापयन्ति । सूर्य० ६३ । तपन्ति मन्दाङ्गाररूपतां प्रतिपद्यन्ते । जं० प्र० ४१९ ।

तवेइ-तपति अतीतशीतं करोति, यथा वा सूक्ष्मं पिपीलिकादि दृश्यते तथा करोति । भग० ७८ ।

तवोकम्मं-तपःकर्म । आव १८८ । तपःकर्म-तपोऽनुष्ठानम् । दश० १९९ ।

तवोमग्गो- सम० ६४ ।

तवोवहाणे-तपउपधानं विशिष्टतपोविशेषः । सूत्र० १४९ । तपउपधानं-अनशनादिकम् । बृ० प्र० २१५ आ । तपउपधानं-द्वादशविधं तपः । सम० १०७ ।

तव्वं(च्चं)णिगि-रत्तपडा । नि० चू० प्र० ७७ आ ।

तव्वइरित्ततंसणे-तद्व्यतिरिक्तदर्शने अभिग्रहीतमिथ्यादर्शनप्रत्ययिकीक्रियायाः द्वितीयो भेदः । आव० ६१२ ।

तव्वज्जं-तद्वर्जः बुद्बुदवर्जं-वर्षम् । आव० ७३३ ।

तव्वणिय-सुगतः । विशे० ४८२ । रक्तपट्टलिङ्गः । आव० ६२८ । तद्वर्णिकः, तच्चवर्णिकः-बौद्धः । आव० ६३६ ।

तव्वण्णिगिणी-तद्वर्णिकी । आव० ६४० ।

तव्वण्णियसङ्गा-तच्चनिकश्राद्धी । आव० ७९९,८०० ।

तव्वत्थुए-तदेव-परोपन्यस्तसाधनं वस्त्विति-उत्तरभूतं वस्तु यस्मिन्नुपन्यासोपनये स तद्वस्तुकः । ठाणा० २५९ ।

तव्वत्थूपन्नास-तद्वस्तूपन्यासः, उपन्यासस्य प्रथमो भेदः । दश० ५५ ।

तव्वन्निए- । नि० चू० द्वि० ३३ अ ।

तव्विवरीए-यादृशं वस्तु स्वप्ने दृष्टं तद्विपरीतस्यार्थस्य जागरणे यत्र प्राप्तिः स तद्विपरीतस्वप्नो यथा कश्चिदात्मनं मेध्यविलिप्तं स्वप्ने पश्यति जागरितस्तु मेध्यमर्थं कंचन प्राप्नोतीति । भग० ७०९ ।

तव्विहायरियविरहो-तद्विधः सम्यगविपरीततत्त्वप्रतिपादनकुशलः आचर्यतेऽसावित्याचार्यः सूत्रार्थविगमार्थं मुमुक्षुभिरासेव्यत इत्यर्थः, तस्य विरहः-अभावः तद्विधाचार्यविरहः । आव० ५९७ ।

तस-तस्य । उप० मा० गा० ४२४ ।

तसरेणु-त्रस्यति-पौरस्त्यादिवायुप्रेरितो गच्छति यो रेणुः स त्रसरेणु । अनु० १६३ । पौरस्त्यादिवायुप्रेरितस्त्रस्यति-गच्छतीति त्रसरेणुः । ठाणा० ४३५ । त्रस्यति-पौरस्त्यादिवायुप्रेरितो गच्छति यो रेणुः स त्रसरेणुः । भग० २७७ । जं० प्र० ९४ ।

तसवाइया-त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः । जीवा० ३२ ।

तसा-त्रसाः तेजोवायुद्वीन्द्रियादिकाः । सूत्र० १५५ । त्रसाः-त्रसन्ति अभिसन्धिपूर्वकमनभिसन्धिपूर्वकं वा ऊर्ध्वमधस्तिर्यक् चलन्तीति त्रसाः-तेजोवायवो द्वीन्द्रियादयश्च । जीवा० ९ । तसा-त्रसन्ति-उष्णाद्यभितप्ताः सन्तो विवक्षितस्थानादुद्विजन्ते गच्छन्ति च छायाद्यासेनार्थं स्थानान्तरमिति त्रसाः-द्वीन्द्रियादयः । प्रज्ञा० ४७४ । त्रस्यन्तीति त्रसाः-चलनधर्माणः त्रसनामकर्मोदयवर्त्तित्वात् त्रसाः । ठाणा० १३४ । त्रस्यन्ति-तापाद्युपतप्तौ छायादिकं प्रत्यभिसर्पन्तीति त्रसाः-द्वीन्द्रियादयः । उत्त० २४४ । त्रसाः-तेजोवायवो गतियोगात् त्रसाः । ठाणा० १३४ ।

तसिए-शुष्कः-आनन्दरसशोषात् । ज्ञाता० ६८ ।

तसिया-त्रसनं त्रस्तं-दुःखादुद्वेजनम् । दश० १४१ । उद्विग्नः । ज्ञाता० ९४ । भग० १६६ ।

तस्करावस्कन्दः-चौरावपातः । नंदी० ६३ ।

तस्सन्नी-तस्य संज्ञा तत्संज्ञा-तज्ज्ञानम् । आचा० २१५ ।

तस्साभवइ-तस्या भवति । आव० २२५ ।

तस्सेवी-यमपराधमालोचयिष्यति तमेवासेवते यो गुरुः स तत्सेवी तस्मै यदालोचनं तदपि तत्सेवीति । भग० ९१९ । य दोषा आलोचयितव्यास्तत्सेवी यो गुरुस्त-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्य पुरतो यदालोचनं स तत्सेविलक्षण आलोचनादोषः । ठाणा० ४८४ ।

तह–तथा तथैव । भग० १२१ । सेवकः सन् यथैवादिष्यते तथैव यः प्रवर्तते सः । ठाणा० २२४, २१४ ।

तहक्कार–सूत्रव्याख्यानादौ प्रस्तुते गुरुभिः कस्मिंश्चिद् वचस्युदीरिते सति यथा भवन्तिः प्रतिपादयन्ति तथैवैतदित्येवं करणं तथाकारः–अविकल्पगुर्वाज्ञाभ्युपगमः । अनु० १०३ । भग० ६२० । तथाकरणं तथाकारः, स च सूत्रप्रश्नादिगोचरः, यथा भवद्भिरुक्तं तथैवेदमित्येवं स्वरूपः वाचनाप्रतिश्रवणयोः उपदेशे सूत्रार्थं कथने अवितथमेतदिति तथाकारः, प्रतिश्रवणे च तथाकारः । ठाणा० ४६६ ।

तहणाणे–यथा वस्तु तथा ज्ञानं यस्य तत्तथाज्ञानं सम्यग्दृष्टिजीवद्रव्यं तस्यैवावितथज्ञानत्वात्, अथवा यथा तद्वस्तु तथैव ज्ञानं–अवबोधः प्रतीतिर्यस्मिंस्तत्तथाज्ञानम् । ठाणा० ४८१ ।

तहत्ति–यथापूर्वसाधवो गृह्णन्ति । ओघ० १५५ ।

तहनाणे–यथा प्रच्छनीयार्थे प्रष्टव्यस्य ज्ञानं तथैव प्रच्छकस्यापि ज्ञानं यत्र प्रश्ने स तथाज्ञानः जानत्प्रश्नः । ठाणा० ३७६ ।

तहमेय–यद्भवद्भिः प्रतिपादितं तत्तथैवेत्यर्थः । ज्ञाता० ४७ । आप्तवचनावगतपूर्वाभिमतप्रकारवत् । भग० ४६७ ।

तहा–तथाशब्दः–अनुक्तसमुच्चयार्थः । उत्त० ५१५ । तथा निर्देशे । आव० ४६६ ।

तहाकारो–तथाकारः–सूत्रप्रश्नगोचरः यथा भवद्भिरुक्तं तथेदमित्येवंस्वरूपः । आव० २५६ ।

तहाभाव–यथा वस्तु तथा भावः–अभिसन्धि यत्र ज्ञाने तत्तथा भावं, अथवा यथैव संवेद्यते तथैव भावो–ग्राह्यं वस्तु यत्र तत्तथाभावम् । भग० १६३ ।

तहामुत्ति–तथामूर्त्ति–कथञ्चित्तत्स्वरूपम् । दश० २१४ ।

तहारूवं–तथारूपं तथाविधिस्वभावं भक्तिदानोचितपात्रमित्यर्थः । भग० २२६ । तथारूपं–उचितस्वभावः कश्चनपुरुषः श्रमणा वा तपोयुक्तः । उपलक्षणत्वादस्योत्तरगुणवान्नित्यर्थः । भग० १४१ ।

तहारुव–तथारूपं सङ्गतरूपम् । भग० १५५ ।

तहारुवा–तत्प्रकारस्वभावाः–महाफलजननस्वभावाः । निरय० ७ ।

तहिंगोलं– । नि० चू० २२ अ ।

तहिंतहिं–तत्र यत्र देशे एकः । जीवा० १८१ । तस्यैव देशस्य तत्र-तत्रैकदेशे । जं० प्र० ४४ ।

तहिए–तथ्याः–सत्याः । ज्ञाता० १७७ ।

तहिया–तथ्याः–अवितथा निरूपचरितवृत्तयः । उत्त० ५६२ ।

ता–तावत्–क्रमार्थः । सूर्य० ६ ।

ताइ–त्राता–आत्मारामः साधुः । दश० २०६ ।

ताइणं–तायिनां त्रायिणां वा । उत्त० ४६६ ।

ताई–तायी त्रायी वा । उत्त० ३५३ । तायी वा त्रायी–मोक्षम् । भगवान् सर्वस्य परित्राणशीलः । सूत्र० ३६४ ।

ताए–तायः सुदृष्टमार्गोक्तिः । दश० २६२ ।

ताओ–तातेत्यामन्त्रणम् । ज्ञाता० ३४ ।

ताडणं–ताडनं उरःशिरःकुट्टनकेशलुञ्चनादि । आव० ५८७ ।

ताडनं–वधः । आव० ५८८ ।

ताडिओ–ताडितः–आहतः । उत्त० ४६१ ।

ताणं–त्राणं–बन्धुभिः पालनं जरातो वा रक्षणम् । उत्त० १६३ । त्राणं–स्वकृतकर्मणो रक्षणम् । उत्त० । २२१ । तानः–तानकः । भग० ५४२ । आव० ६६१ ।

तात्पर्यं–आसेवां विदितकर्मपरिणामो विदध्यात् । आचा० ११८ ।

तान–तता तन्त्री तानो भण्यते । ठाणा० ३६७ । अनु० १३३ ।

ताप–सविता । ठाणा० १३३ । तपतीति ताप इह सविता । विशे० १०७४ ।

तापक्षेत्रं–उदयास्तान्तरं, प्रकाशक्षेत्रम् । जं० प्र० ४५५ । उदयास्तान्तरम् । जं० प्र० ४४२ ।

तापिका–कटकद्वितयोपेता लोहस्थाली (तवी) । भग० ८५ ।

तापोदकं–राजगृहनगरभाविस्वभावादेवोष्णं ।

तामरसे–जलरुहविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

तामलि–तापसविशेषः । उत्त० ६८ । भग० ५१४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तामलित्त–ताम्रलिप्तः–ईशानेन्द्रस्य वैक्रियरूपकरणादिसामर्थ्योपदर्शने बालतपस्वी । भग० १६४ ।

तामलित्तग–तामलित्तिकः सैन्धवः । व्य० द्वि० २०४ अ ।

तामलित्ती–सिन्धुसौवीरदेशे नगरी । बृ० द्वि० २२६ आ । वङ्गेषु ताम्रलिप्ती आर्यक्षेत्रम् । प्रज्ञा० ५५ । ताम्रलिप्ती–ईशानेन्द्रस्य वैक्रियरूपकरणादिसामर्थ्योपदर्शकतापसनगरी । भग० १६१ ।

तामली–तामलिप्तानगर्यां गाथापतिः । भग० १६१ ।

तामसबाणाः–यः पर्यन्ते सकलसंग्रामभूमिव्यापि महान्धतमसरूपतया परिणमन्ते । जीवा० २८३ । सकलसंग्रामभूमिव्यापि महान्धसरूपतया परिणताः प्रतिवैरिवाहिनीषु विघ्नोत्पादका भवन्ति । जं० प्र० १२५ ।

ताम्रलिप्तिः–नगरविशेषः । उत्त० ६०५ ।

तायओ–तायते–सन्तानं करोति पालयति च सर्वाधद्भ्य इति तातः–स एव तातकः । उत्त० ३६८ ।

तायत्तीस–त्रायस्त्रिंशः महत्तरकल्पः पूज्यस्थानीयः । औप० ५३ ।

तायत्तीसए–त्रायस्त्रिंशकः गुरुस्थानीयाः देवाः । जं० प्र० १५६ ।

तायत्तीसगा–त्रायस्त्रिंशाः मन्त्रिविकल्पाः । भग० ५०२ । मन्त्रिकल्पाः । भग० १५४ । महत्तरकल्पाः पूज्याः । ठाणा० ११७ ।

तायत्तीसा–त्रायस्त्रिंशाः पूज्या महत्तरकल्पाः । उपा० २७ ।

तार–ताराः तारकाः अर्धचन्द्राः । जं० प्र० २१६ ।

तारए–संसारसागरमिति गम्यते तेन तथा तारयति परानप्युपदेशवर्त्तिन इति तारकः । सम० ५ ।

तारओ–तारकः–अन्यास्तारयतीति । जीवा० २५६ ।

तारगा–पूर्णभद्रयक्षेन्द्रस्य चतुर्थी अग्रमहिषी । ठाणा० २०४ ।

तार(य)ग्गं–ताराग्रं तारापरिमाणमभिधेयम् । सूर्य० ६ ।

तारग्गहा–तारकाकाराग्रहाः तारकग्रहाः । ठाणा० ३५५ ।

तारय–तारकः–द्विपृष्ठवासुदेवशत्रुः । आव० १५६ ।

तारया–यक्षेन्द्रस्य चतुर्थी अग्रमहिषी । भग० ५०४ ।

तारा–ताराः–ज्योतिष्कभेदविशेषः । प्रज्ञा० ६६ । ताराः अश्विन्यादिनक्षत्राणि । सूत्र० ४०२ । सुभूममाता । आव० १६१ । कार्त्तवीर्यपत्नी । आव० ३६२ । ज्योतिष्कविमानानि अधिकारान्नक्षत्रजातीयज्योतिष्कानां विमानानीत्यर्थः । जं० प्र० ४६६ । ज्योतिर्विमानरूपा । ठाणा० ३६ । भग० १६५ । भरतक्षेत्रे सप्तमचक्रवर्त्तिमातृनाम । सम० १५२ ।

ताराइणे– । निरय० ३६ ।

तारारूपाणि–तारका एव । सम० १४० ।

तारारूव–तारारूपं–तारकजातीयम् । सम० १६ । ठाणा० ४४८ । तारारूपाः–तारिकारूपाः । जं० प्र० २६२ । तारकमात्रम् । ठाणा० ११५ । तारारूपः तारिकारूपः । जीवा० १६६ ।

तारावलि–पञ्चमनाट्यभेदः । जं० प्र० ४१६ ।

तारूवत्ता–तद्रूपता–नीललेश्यास्वभावः । भग० २०५ ।

ताल–तालाभिधान एकः । भग० ३६६ । कंशिकादिशब्दविशेषः । ठाणा० ३६६ । वृक्षविशेषः । ठाणा० १८५, ५०० । हस्ततालः । ठाणा० ६३ । हस्ततालासमुत्थ उपचाराच्छब्दः । अनु० १३२ । तालवृक्षफलविशेषः । बृ० प्र० १३५ आ । तालः–हस्तगमः । दश० ८८ । ताडः । भग० ८०३ । कंशिका । जं० प्र० ६३ । गीतादिमानकालः । जं० प्र० १३७ । तालः–घनवाद्यविशेषः । जं० प्र० २०६ । वलयविशेषः । प्रज्ञा० ३३ । तालः । जीवा० २६६ । कंसिका । जीवा० १६२, २१७ । प्रज्ञा० ८६ ।

तालउडं–तालपुटं तालमात्रव्यापात्तिकरविषकल्पमहितमिति । विषविशेषः । दश० २३७ । ज्ञाता० १६० ।

तालए–आवत्तणपेढियाए । नि० चू० तृ० ५६ आ ।

तालजंघ–तालो वृक्षविशेषः स च दीर्घस्कन्धो भवति ततस्तालवज्जङ्घे यस्य तत् । ज्ञाता० १३७ ।

तालणा–ताडना चपेटादिदानानि । औप० १०३ । चपेटादिदानम् । प्रश्न० १०६ । ताडना–करादिभिराहननम् । । उत्त० ४५६ ।

तालतोयाणि–तालतोयानि । बृ० द्वि० १७३ अ ।

तालनं–चपेटादिना हननम् । औप० १०७ ।

तालपलंब–फलविशेषः । आचा० ३४८ । तालप्रलम्बः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भग० ३६६ ।

तालपिशाच–पिशाचविशेषः । ठाणा० ५०२ । पिशाचभेदविशेषः । प्रज्ञा० ७० ।

तालपिसाय–तालवृक्षाकारोऽतिदीर्घत्वेन पिशाचः तालपिशाचः । ज्ञाता० १३७ ।

तालपुटं–विषविशेषः । उत्त० ३१८ । सद्यो घाति यत्रौष्ठपुटान्तर्वर्त्तिनि तालमात्रकालविलम्बतो मृत्युरुपजायते तत् । उत्त० ४२६ ।

तालपुडं–तालपुटं विषविशेषः । आव० ३७४ । जेणं तालासपुडिज्जइ तेणं भरेणं मारयतीति । दश० चू० १२७ अ ।

तालफलं–प्रलम्बं फलविशेषः । दश० १७६ ।

तालवेंटं–तालपत्रशाखेत्यर्थः । नि० चू० प्र० ६० आ ।

तालमत्थकडं– । भग० ४३६ ।

तालयंटं–तालवृन्तं–वायूदीरकमेव द्विपुटादि । प्रश्न० ८ ।

तालवंट–तालवृन्तं तालाभिधानवृक्षपत्रवृन्तं पत्तछोट इत्यर्थः । ज्ञाता० ४८ ।

तालवृन्तं–वीजनकम् । उत्त० ६० । व्यजनम् । जं० प्र० ४११ ।

तालवेंट–तालवृन्तं विद्याविशेषः । व्य० द्वि० १३३ आ । भग० ४७४ ।

तालसमं–नट्टविशेषः । नि० चू० तृ० १ अ । यत्परस्पराहतहस्ततालस्वरानुवर्त्ति भवति तत् तालसमम् । ठाणा० ३६६ । यत्परस्पराभिहतहस्ततालस्वरानुसारिणा स्वरेण गीयते तत् । अनु० १३२ ।

तालसुसंपउत्तं–परस्पराहतहस्ततालस्वरानुवर्त्ति यद् गीतं तत्,यद् मुरजकंशिकादीनामातोद्यानामाहतानां यो ध्वनिर्यश्च नृत्यन्त्या नर्त्तक्याः पादोत्क्षेपस्तेन समं तत् तालसुसंप्रयुक्तम् । जं० प्र० ४० । तालसुसंप्रयुक्तं–परस्पराहतहस्ततालस्वरानुवर्त्ति यद् गीतं तत् । यत् मुरजकंसिकादीनामातोद्यानामाहतानां यो ध्वनिर्यश्च नृत्यन्त्या नर्त्तक्याः पादोत्क्षेपस्तेन समं तद्वा । जीवा० १६५ ।

ताला–कंसिकाः । प्रश्न० १५६ ।

तालायरा–तालाद्यादिभिः विद्याविशेषैः चरन्ति तालाचरा । नि० चू० द्वि० १६७ आ । तालादानेन प्रेक्षाकारिणः । राज० २ । ज्ञाता० ४० । प्रेक्षाकारी । विपा० ६३ ।

तालाद्यादि–विद्याविशेषः । नि० चू० द्वि० १६७ आ ।

तालायर–तालाचरः–तालादानेन प्रेक्षाकारी । औप० ३ । तालाचरा नटाः । बृ० प्र० १०३ अ । तालाचरः तालादानेन प्रेक्षाकारी दण्डपाशिको वा । औप० ७२ । तालाचरः प्रेक्षाकारिविशेषः । प्रश्न० १४१ ।

तालायरा–तालाचराः प्रेक्षाकारिविशेषः । जं० प्र० ११४ । चारणाः । ओघ० २२३ । नर्तकघट्टादयः । बृ० द्वि० २७३ आ । भडचेडणडादिया । नि० चू० प्र० ३५८ अ ।

तालिअंटे–तालवृन्तं व्यजनविशेषः । दश० १५४, २२८ । जं० प्र० १६१ ।

तालिज्जंताणं–ताडनम् । राज० ५२ ।

तालियंट–तालवृन्तं मयूरपिच्छकृतव्यजनमित्यर्थः । आचा० ३४५ । तालाभिधानवृक्षपत्रं वृन्तं तत्पत्रच्छोट इत्यर्थः । भग० ४६८ । तालवृन्तं–व्यजनकम् । आव० १२२ । तालवृन्तं–वीजनकम् । प्रश्न० १६३ ।

तालियंटक–तालवृन्तकं व्यजनविशेषः । प्रश्न० १५२ ।

तालु–काकुदम् । जीवा० २७३ । काकुन्दम् । ज्ञाता० १३८ । आचा० ३८ ।

तालुगागारो– । ओघ० २०६ ।

तालुग्घाडणीए–विद्याविशेषः । नि० चू० प्र० ७६ अ ।

तालेइ–ताडयति हस्तादिना । भग० १६६ ।

तालोदगं– । नि० चू० तृ० १५ आ ।

तालोदा–तालोदकानि । बृ० द्वि० १७३ अ ।

ताव–तावत् । ठाणा ४६७ । तापः–आतापनामकर्मोदयाद्रविमण्डलानामुष्णः प्रकाशः । जं० प्र० ४३३ ।

तावखित्तं–तापक्षेत्रं सूर्यातपव्याप्ताकाशखण्डम् । जं० प्र० ४५३ ।

तावखेत्तपुव्व–तापक्षेत्रपूर्वं आदित्योदयमधिकृत्य यत्र या पूर्वादिक् । दश० ८५ ।

तावणिज्जं–तापनीयं–तापसहम् । भग० ६७२ ।

तावण्णत्ता–तस्या इव नीललेश्या इव वर्णो यस्याः सा तद्वर्णा तद्भावस्तत्ता तद्वर्णता । भग० २०५ ।

तावस–तवेट्ठिओ । दश० चू० ३३ आ । तापसः– कौशा-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

म्ब्यां श्रेष्ठिविशेषः । उत्त० ६६ । तापसः-परिशटितपत्राद्युपभोगवान् बालतपस्वी । प्रज्ञा० ४०५ । पतितपत्राद्युपभोगवान् बालतपस्वी । भग० ५० ।

तावसपल्लि-तापसपल्ली । आव० ३६१ ।

तावसा-भिक्षुविशेषः । नि० चू० द्वि० ६८ अ ।

ताविया-तापिका । आव० ८५४ ।

तावेइ-तापयति अपनीतशीतं करोति । जं० प्र० ४६१ । नि० चू० तृ० १५ अ ।

तासणं-त्रासनं फेत्कारादिवचनं भयकारि । प्रश्न० १६० ।

तासणओ-त्रासः आकस्मिकं भयं अक्रमोत्पन्नशरीरकम्पमनःक्षोभादिलिङ्गितत्कारकत्वात् त्रासनकः । प्रश्न० ५ ।

ताहो-तदा तस्मिन् काले । ओघ० ११५ ।

तिंता-उल्ला । नि० चू० प्र० ४६ अ । भिन्ना क्लिन्ना आर्द्रा । दश० ६६ ।

तिंतिण-सखेदं वचनम् । भग० ६१६ ।

तिंतिणि-तिंतिणी यत्र तत्र वा स्तोकेऽपि कारणे कर-करायणं । व्य० प्र० २३० अ ।

तिंतिणिए-तिंतिणिकोऽलाभे सति खेदाद् यत् किञ्चनाभिधायी । ठाणा० ३७४ ।

तिंतो-क्लिन्नः । नि० चू० द्वि० ८१ आ ।

तिंदुका- उत्त० ५७१ ।

तिंदुग-एकादशतीर्थंकरस्य चैत्यवृक्षनाम । सम० १५२ । तिन्दुकः-त्रीन्द्रियजीवविशेषः । उत्त० ६६५ । तैन्दुकं श्रावस्त्यामुद्यानम् । विशे० ६३५ ।

तिंदुगुज्जाणं-तिन्दुकोद्यानं श्रावस्त्यामुद्यानविशेषः । उत्त० १५३ ।

तिंदुयं--तिन्दुकं तेंदुरुकीफलम् । दश० १७६ । प्रज्ञा० ३६४ । तिन्दुकं श्रावस्त्यामुद्यानविशेषः । उत्त० ४६८ । फलविशेषः । प्रज्ञा० ३७. ३२८ । वनस्पतिविशेषः । भग० ८०३ ।

तिंदुसय-तेन्दूसकः । आव० १८१ । ज्ञाता० १८४ ।

ति-तृतीया सप्तरात्रिकी । आव० ६४७ ।

तिअं-त्रिकं-कटिभागः । उत्त० ४७४ ।

तिउट्टई-त्रुट्यति अपगच्छति । आचा० २६० ।

तिउड-त्रिकूटनामवक्षस्कारपर्वतः । जं० प्र० ३५२ ।

तिउडग-त्रिपुटकाः धान्यविशेषः । दश० १६३ ।

तिउण-त्रिगुणं त्रिःप्रदक्षिणीकृत्य । आव० २३३ ।

तिउलं-त्रीन् मनः प्रभृतीन्-तुलयति तुलामारोपयति कष्टावस्थीकरोतीति त्रितुलम् । प्रश्न० १५६ । तोदकः व्यथकः । उत्त० ४७५ ।

तिउला-त्रीन् मनोवाक्कायांस्तुलयति अभिभवति या सा त्रितुला । प्रश्न० १७ । त्रीनपि मनोवाक्कायलक्षणानर्थांस्तुलयति, जयति तूलारूढानिव वा करोति त्रितुला । ज्ञाता० ६८ ।

तिकट्टु-इतिकृत्वा । आव० ७६३ ।

तिकडुय-त्रिकटुकं शुण्ठीमरिचपिप्पल्यात्मकम् । उत्त० ६५३ ।

तिकणइयाइं-नयत्रिकाभिप्रायाच्चिन्त्यन्ते यानि तानि नयत्रिकवन्तीति त्रिकनयिकानि । सम० ४२ ।

तिकूडा-शीतामहानद्याः दक्षिणतटे स्थितः वक्षस्कारपर्वतविशेषः । ठाणा० ८० ।

तिकूडे- । ठाणा० ३२६ ।

तिक्ख-तीक्ष्णा भेदिका । भग० ५४० । तीक्ष्णः-कटुः । उत्त० ६५३ । तीक्ष्णा वेगवती । भग० ३०६ । तीक्ष्णा छेदकरणात्मकम् । दश० २०१ । तीक्ष्णा निशिताः । उत्त० ३४६ ।

तिक्खदाढ-तीक्ष्णाः निशिता दंष्ट्रा एव यस्य स तीक्ष्णदंष्ट्रः । उत्त० ३४६ ।

तिक्खसिंगे-तीक्ष्णे निशिताग्रे शृङ्गे विषाणे यस्य स तीक्ष्णशृङ्गः । उत्त० ३४६ ।

तिक्खा-परुषा । भग० ७६७ ।

तिक्खुत्तो-त्रिःकृत्वः । आव० १२४, ३५६ । त्रीन् वारान् त्रिकृत्वा । भग० १४ ।

तिखुत्तो-तिण्णिवारा । नि० चू० प्र० २१८ अ ।

तिग-त्रिकं यत्र रथ्यात्रयं मिलति । औप० ४ । त्रिकम् । आव० १३६ । त्रिकं यत्र स्थाने रथ्यात्रयमीलको भवति । औप० ५७ । त्रिकं-रथ्यात्रयमीलनस्थानम् । भग० १३७, २००, २३८ । त्रिकः-जीवाजीवनोजीवराशित्रयं तदभ्युपगन्तरोऽपि तथैव त्रिकाः । उत्त० १५२ । त्रैराशिकः-राशित्रयख्यापकः । आव० ३११ । त्रिकं-त्रिपथसमा-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गमः । अनु० १५६ । यत्र रथ्यानां त्रयं मिलति । ठाणा० २६४ । कटिभागम् । उत्त० ४७५ ।

तिगडुगाईयं–त्रिकटुकादिकं सुण्ठीपिप्पलीमरिचकादिकम् । पिण्ड० ६५ ।

तिगपरिहीणो–त्रिकेण ज्ञानदर्शनचारित्रलक्षणेन हीनः । ओघ० १७३ ।

तिगिंछि–किंजल्कः । ठाणा० ४८२ ।

तिगिंछिकूडे–तिगिंछी–किंजल्कस्तत्प्रधानकूटत्वात्तिगिंच्छिकूटः । ठाणा० ४८२ ।

तिगिंछी– । ठाणा० ७३ ।

तिगिच्छ–विमानविशेषः । सम० ३८ । चिकित्सा । ज्ञाता० ११३ । आव० ३४८ ।

तिगिच्छकूडे–उत्पातपर्वतः । भग० १७२ ।

तिगिच्छा–रोगप्रतिकारः । नि० चू० द्वि० ६५ आ । रोगप्रतीकारः । पिण्ड० १२१, १३२ । चिकित्सा । व्य० द्वि० १६५ अ । मतिविभ्रमः । आव० ८१५ । प्रश्न० १० ।

तिगिच्छायणसगोत्ते–ज्येष्ठागोत्रनाम् । सूर्य० १५० ।

तिगिच्छायणे–चिकित्सायनं–ज्येष्ठागोत्रम् । जं प्र० ५०० ।

तिगिंच्छि–प्राकृते पुष्परजःशब्दस्य तिगिंछि इति निपातः देशी शब्दो वा । जं० प्र० ३०७ ।

तिगिंच्छिकूट–शिखरिणिवर्षधरे एकादशकूटनाम । ठाणा० ७२ । उत्पातपर्वतः । ,प्रश्न० ६६ । उत्पातपर्वतः । ठाणा० ३७६ । चमरेन्द्रस्य उत्पातपर्वतनाम । ठाणा० ४८२ । सम० ३३ । तिगिंच्छिद्रहपतिकूटम् । जं० प्र० ३८१ ।

तिगिंच्छिदृह–तिगिंछिः पौष्परजस्तत्प्रधानो द्रहस्तिगिंछिद्रहो नाम द्रहः । जं० प्र० ३०६ ।

तिगिच्छिते–चैकित्सिकं आयुर्वेदः । ठाणा० ४५१ ।

तिगिच्छी–नगरीविशेषः जितशत्रुराजधानी । विपा० ६५ ।

तिगुणं–तिस्रवाराः । ओघ० ११७ ।

तिगुणक्कंडो–त्रिगुणं त्रीन् वारान् यावत् उत्–प्राबल्येन कण्डनं–छटनं यस्य स त्रिगुणोत्कण्डः । पिण्ड० ६५ ।

तिघरंतरं–गृहत्रयात्परतः तृतीयान्तरात्परतः । नि० चू० प्र० १८७ अ ।

तिचक्खू–त्रिचक्षुः उत्पन्नमावरणक्षयोपशमेन ज्ञानं च श्रुत्वावधिरूपं दर्शनं च अवधिदर्शनरूपं यो धारयति वहति स तथा य एवंभूतः सः चक्षुरिन्द्रियपरमश्रुतावधिभिरिति वक्तव्यं स्यात् । ठाणा० १७१ ।

तिजमलपदं–त्रयाणां यमलपदानां समाहारस्त्रियमलपदम्, चतुर्विंशत्यङ्कस्थानलक्षणं अथवा तृतीयं यमलपदं षोडशानामङ्कस्थानानामुपरितनाङ्काष्टकलक्षणमिति वर्गषट्कलक्षणम् । अनु० २०६ ।

तिट्ठइ–तिष्ठति वर्त्तते आसेवते । दश० २४३ ।

तिट्ठाणं–तिस्रो वाराः । ओघ० १६३ । मणिबंधहस्ततलभूमिकालक्षणम् । बृ० १०७ आ । तिस्रो वाराः आ । आव० ६४२ ।

तिट्ठाणकरणपुद्धं–त्रीणि स्थानानि उरःप्रभृतीनि तेषु करणेन क्रियया शुद्धं त्रिस्थानकरणशुद्धम् । जीवा० १६५ । त्रीणि स्थानानि उरःप्रभृतीनि तेषु करणेन क्रियया विशुद्धम् । अथवा उरःकण्ठशिरस्सु श्लेष्मणा अव्याकुलेषु विशुद्धेषु प्रशस्तेषु यद्गीयते तदुरःकण्ठशिरोविशुद्धत्वात् त्रिस्थानकरणविशुद्धम् । जं० प्र० ४० ।

तिट्ठाणकरणसुद्धा–त्रिस्थानकरणशुद्धाः-आदिमध्यावसानरूपेषु त्रिषु स्थानेषु करणेन क्रियया यथोक्तवाहनक्रियया शुद्धा अवदाता न पुनरवस्थानव्यापारणरुपदोषलेशेनापि कलङ्किताः । जीवा० २६६ ।

तिणय–त्रिनतं मध्यपार्श्वद्वयलक्षणे स्थानत्रयेऽवनतम् । भग० १६४ ।

तिणहत्थय–तृणपूलकः । भग० ६८४ ।

तिणिस–तिनिशाभिधानतरुसम्बन्धि । भग० ४८१ । तिनिशः वृक्षविशेषः । ठाणा० २१६ । तैनिशं तिनिशदारुसम्बन्धि । जीवा० १६२ । तिनिशद्रुमसम्बन्धि । जं० प्र० ३७ । वृक्षविशेषः । नि० चू० प्र० १४४ आ । तिनिशः वृक्षविशेषः । दश० २३६ । उत्त० १७ ।

तिण्ण–तीर्णः भवार्णवं स्वयमवतरितः । जीवा० २५६ । तीर्णः शक्तः । आव० ६१७ । तीर्णं इव तीर्णः । सम० ४ ।

तितिक्खइ–तितिक्षते दैन्याभावात क्रमेण वा मनःप्रभृतिभिः । भग० ४६८ ।

तितिक्खया–तितिक्षार्थं सहनार्थम् । ओघ० १६० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तितिक्खसि-तितक्षसे दैन्यावलम्बनेन । ज्ञाता० ७१ ।

तितिक्खा-तितिक्षा परीषहजयः । प्रश्न० १४६ । तितिक्षा परीषहजयः, योगसंग्रहे नवमो योगः । आव० ६६४ ।

तितिक्खेमि-तितिक्षामि । ठाणा० २४७ ।

तित्त-तिक्तः कोसातक्यादिवत् । उत्त० ६७६ । श्लेष्मनाशकृत् तिक्तः । ठाणा० २६ । तिक्तः-यदुदयात् जन्तुशरीरेषु तिक्तो रसो भवति यथा मरिचादीनां तिक्तरसनाम । प्रज्ञा० ४७३ ।

तित्तगं- । नि० चू० प्र० १६५ अ । तिक्तकं एलुकवालुङ्कादि । दश० १८० ।

तित्तालाउयं-कटुकतुम्बकम् । ज्ञाता० १६६ ।

तित्तिय-तित्तिकः चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेषः । प्रश्न० १४ ।

तित्तिर-तित्तिरः पक्षिविशेषः । प्रश्न० ८ ।

तित्तिरा-लोमपक्षिविशेषः । जीवा० ४१ । प्रज्ञा० ४६ ।

तित्ती-तृप्तिः तृप्तहेतुत्वात्तृप्तिः अहिंसाया दशमं नाम । प्रश्न० ६६ । तृप्तिः घ्राणिः । ठाणा० १३ । घ्राणिः बुभुक्षाद्युपरमलक्षणा । विशे० १३६ ।

तित्थंकरो-तीर्थंकरः जिनः प्रशस्तभावकरविशेषः । आव० ४६६ ।

तित्थं-यद् यस्मात् तारयति पारं प्रापयति तेन तत् संघलक्षणं भावतस्तीर्थम् । विशे० ४७६ । जन्मजरामरणसलिलसम्भृतं मिथ्यादर्शनाविरतिगम्भीरं महाभीमकषायपातालं दुरवगाहमहामोहावर्त्तभीषणं रागद्वेषपवनविक्षोभितं विविधानिष्टेष्टसंयोगवियोगवीचीनिचयसङ्कुलं उच्चैस्तरमनोरथसहस्रवेलाकलितं संसारसागरं तरन्ति येन तत्तीर्थं । सकलजीवाजीवादिपदार्थसार्थप्ररूपकं अत्यन्तानवद्यं शेषतीर्थान्तरीयाविज्ञातचरणकरणक्रियाधारं सकलत्रैलोक्यान्तर्गतविशुद्धधर्मसंपत्समन्वितमहापुरुषाश्रयमविसंवादि प्रवचनम् । नंदी० २१ । तीर्यतेऽनेनेति तीर्थम् । ठाणा० ३२ । तीर्थ-षष्ठः न । जं० प्र० २०० । तीर्थं तीर्यतेऽनेनेति तीर्थं सङ्घः । विशे० ५६१ । तीर्थं तीर्यतेऽनेनेति प्रवचनं सङ्घो वा । आव० ८६ । तीर्यते संसारसागरोऽनेनेति तीर्थं यथावस्थितसकलजीवाजीवादिपदार्थसार्थप्ररूपकं परमगुरुप्रणीतं प्रवचनम्, तच्च निराधारं न भवति इति सङ्घः प्रथमगणधरो वा । प्रज्ञा० १६ । त्रिषु वा क्रोधाग्निदाहोपशमलोभतृष्णानिरासकर्ममलापनयनलक्षणेषु ज्ञानादिलक्षणेषु वा अर्थेषु तिष्ठतीति त्रिस्थम् । ठाणा० ३३ । तीर्थं पवित्रताहेतुः, तरणोपायश्च । प्रश्न० १३६ । प्रश्न० १३६ । तीर्थभूतदेवद्रोण्यादि । ज्ञाता० ८१ । तीर्थम् चातुर्वर्णः श्रमणसङ्घः । आव० १३४ । तीर्थं गणधरः । आव० २३३ । तीर्थं वा गणधरः । आव० २८७ । तरन्ति तेन संसारसागरमिति तीर्थं प्रवचनम् सङ्घः । भग० ७ । चाउवण्णो समणसंघो दुवालसंघं वा गणिपिडगं । नि० चू० प्र० ७७ अ । तीर्थम्, त्रिस्थम् त्र्यर्थं वा, जनं तीर्थमभिप्रेतार्थसाधकम् । विशे० ४८१ । यद् यस्माद् यथोक्तदाहोपशमतृष्णाच्छेदमलक्षालनरूपेषु यदि वा सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रलक्षणेषु त्रिष्वर्षेषु स्थितं ततस्त्रिस्थं संघ एव । विशे० ४८० । तीर्थं-क्रोधाग्निदाहोपशमलोभतृष्णाव्यवच्छेद-कर्ममलक्षालनलक्षणास्त एवानन्तरोक्तास्त्रयोऽर्थाः फलरूपा यस्य तत् त्र्यर्थं तच्च संघः तदव्यतिरिक्तं ज्ञानादि त्रयं वा त्र्यर्थं प्राकृते 'तित्थं' उच्यते । विशे० ४८० । तरन्ति येन संसारसागरमिति तीर्थं प्रवचनं सङ्घः । सम० ३ । पुण्यक्षेत्रम् । उत्त० ३७३ । गणधरः प्रवचणं श्रुतमित्यर्थः । उत्त० ५८४ । तीर्यते संसारसागरोऽनेनेति तीर्थं-यथावस्थितसकलजीवाजीवादिपदार्थसार्थप्ररूपकं परमगुरुप्रणीतं प्रवचनं सङ्घः प्रथमगणधरो वा । नंदी० १३० । त्रयो वा क्रोधाग्निदाहोपशमादयार्थाः कलानि यस्य तत् त्र्यर्थम्, त्रयो ज्ञानदयोऽर्थाः वस्तूनि यस्य तत् त्र्यर्थम् । ठाणा ३३ । जीवाजीवादिपदार्थसार्थं-अत्यन्तानवद्यशेषतीर्थान्तरीया-विज्ञातचरणकरणक्रियाधारं त्रैलोक्यान्तर्गतविशुद्धधर्मसम्पत्समन्वितमहापुरुषाश्रययं अविसंवादि प्रवचनं च । तीर्थं श्रुतज्ञानम् । आव० २३५ । तीर्यते संसारसमुद्रोऽनेनेति तीर्थं प्रवचनम् । राज० १०६ ।

तित्थगर-तीर्थं-प्रवचनं तदव्यतिरेकाच्चेह सङ्घस्तीर्थं तत्करणशीलत्वात् तीर्थकरः । भग० ७ । तीर्थकरः तीर्यते संसारसारसमुद्रोऽनेनेति तीर्थं तत्करणशीलः । जीवा० २५५ । तरन्ति येन संसारसागरमिति तीर्थं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवचनं तदव्यतिरेकादिह सङ्घस्तीर्थं तस्य करणशीलत्वात्तीर्थंकरः । सम० ३ । तीर्थकरः द्वादशाङ्गप्रणायकः । प्रश्न० १०४ ।

तित्थगरनाम–यदुदयवशात् अष्टमहाप्रातिहार्यप्रमुखाश्चतुस्त्रिंशदतिशयाः प्रादुष्यन्ति तत् तीर्थकरनाम । प्रज्ञा० ४७५ ।

तीर्थकरनामगोत्रं–तीर्थकरत्वनिबन्धनं नाम तीर्थकरनाम तच्च गोत्रं च–कर्म्मविशेष एवेत्येकवद्भावात्, तीर्थकरनामेति गोत्रं–अभिधानं यस्य तत् । ठाणा० ४५५ ।

तित्थगरपडिरूवं–तीर्थकरप्रतिरूपम् । आव० १२४ ।

तित्थण्हायतो– । नि० चू० द्वि० १०१ अ ।

तित्थधम्म–तीर्थमिह गणधरस्तस्य धर्मः–आचारः श्रुतधर्मप्रदानलक्षणस्तीर्थधर्मः, यदि वा तीर्थं प्रवचनं श्रुतमित्यर्थस्तद्धर्मः स्वाध्यायः । उत्त० ५९४ ।

तित्थभेय–तीर्थभेदः तीर्थमोचकः । प्रश्न० ४६ ।

तित्थभेयए–णाणाइमग्गविराहणाहत्थंति भणियं होइ । आव० ६६२ ।

तित्था–तीर्थानि चक्रवर्त्तिनः समुद्रशीतादिमहानद्यवतारलक्षणानि तन्नामक देवनिवासभूतानि । ठाणा० १२३ ।

तिदंड–त्रिदण्डः । भग० ११३ ।

तिदंडी–त्रिदण्डी सुवर्णपुरुषकारीपरिव्राजकः । आव० ४५२ ।

तिदिसं पगासगा–त्रिदिशं प्रकाशकानि । आचा० ४३० ।

तिदिसि–त्रिदिशि तिसृषु दिक्षु । जीवा० २३६ ।

तिदुला–तीदिका–त्रीन्–प्रस्तावात् मनोवाक्कायान् दोलतीव स्वरूपचलनेन त्रिदुला । उत्त० १२१ ।

तिनयं–त्रिनतं आदिमध्यावसानेषु नमनभावात् । जीवा० २५९ ।

तिनिशलता–सञ्ज्वलनमानभेदः । दश० १०१ ।

तिनिशवृक्षगुहा– । व्य० द्वि० १८९ आ ।

तिन्नं–तिस्रो वाराः । ओघ० २१७ । स्तिमित आर्द्रतां गतः । ज्ञाता० ११४ ।

तिपट्ट–एकः संस्तारकपट्टकः द्वितीय उत्तरपट्टकः तृतीयश्चोलपट्टकः । ओघ० १३२ ।

तिपडोलतित्तिएणं– । आचा० ४२३ ।

तिपरियल्लं–त्रिःपरिवर्त्तं त्रयः परावर्त्तकाः वेष्टनानि । ओघ० २१४ ।

तिपासियं–त्रिपासितं त्रीणि वेष्टनानि दवरकेन दत्त्वापासितं पाशबन्धेन । ओघ० २१४ ।

तिपुड–धान्यविशेषः । दश० चू० ९२ ।

तिप्पंति–प्रतिजागरति । ग० ।

तिप्पइ–तेपते क्षरति ददाति । पिण्ड० ९३ ।

तिप्पइय–त्रिपदिका । जीवा० २४७ ।

तिप्पणया–परिदेवनता । सूत्र० ३६८ । दश० चू० १५ ।

तिप्पति–तिप्यति सुखाच्च्यावयति । सूत्र० ३२५ ।

तिप्पमाण–भयात् प्रस्वेदेलालादि तर्पनं । ज्ञाता० १५९ ।

तिप्पयंतो–नेन्दयन् । सम० ५४ ।

तिप्पावणया–तेपापना 'तिपृष्टे पृङ्करणार्थो' इति वचनात् श्लोकातिरेकादेवाश्रुलालादिक्षरणप्रापणा । भग० १८४ ।

तिभाग–त्रिसंख्या भागास्त्रिभागाः । जं प्र० ६८ ।

तिमासिआ–द्वादशे तृतीयभिक्षुप्रतिमा । सम० २१ ।

तिमिंगल–तिमिङ्गलः महामत्स्यतमः । प्रश्न० ७ ।

तिमि–तिमिः महामत्स्यः । प्रश्न० ७ ।

तिमितिमिंगिला–मत्स्यविशेषः । प्रज्ञा० ४४ ।

तिमिरं–तिमिरसम्पाद्यो भ्रमः । प्रज्ञा० ३५६ । पित्तुदयविकारेण दव्वचरिवंदियस्य सवलीकरणं । नि० चू० प्र० ३०२ आ । वनस्पतिविशेषः । भग० ८०२ । तिमिरं निकाचितं ज्ञानावरणीयम् । आव० ७८८ । पर्वगविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

तिमिरविद्धंसे–तिमिरं अन्धकारं विध्वंसयति अपनयति तिमिरविध्वंसः । उत्त० ३५१ ।

तिमिश्रगुहा–गुहाविशेषः । नंदी० २२८ ।

तिमिसंधयारं–तमिस्रान्धकारं अत्यन्ततमः । प्रश्न० ९० ।

तिमिसगुह–तमिश्रगुहा । आव० ११०, ६८७ ।

तिमिसगुहा–वैताढ्यनवकूटे सप्तमः । जं० प्र० ३४१ ।

तिमिसगुहाकूड–तमिस्रगुहाधिपदेवस्य निवासभूतं कूटं तिमिस्रगुहाकूटम् । जं प्र० ७७ ।

तिमिसा–तमिस्रा रजनी । प्रश्न० ९८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिमिस्स–तमिस्रगुहा । प्रश्न० १६ ।
तिमिस्सयावेएइ–शल्यायते । आव० ४२२ ।
तिमीतिमिंगिलामच्छो–मत्स्यविशेषः । जीवा० ३६ ।
तिम्मणं–व्यञ्जनम् । ओघ० १८३ ।
तिम्मति– । ओघ० २१७ ।
तिम्मिअ–तीमित । आव० १३१ ।
तिय–त्रिपथयुक्तं स्थानं त्रिकम् । ज्ञाता० २८ । त्रिकं रथ्यात्रयमीलनस्थानम् । प्रश्न० ५८ । त्रिकं यत्र रथ्यात्रयं मिलति तत् । जीवा० २५८ ।
तियचउक्कं–त्रिकचतुष्कम् । आव० ६७५ ।
तियभंगो–त्रिकरूपो भङ्गः त्रिकभङ्गः भङ्गत्रयम् । भग० ८६ ।
तिरंजली–तिरोहिताञ्जलिः । व्य० द्वि० २३७ आ ।
तिरवंडिय–त्रिखण्डकः स्तेनः । दश० ५२ ।
तिरासिय–त्रैराशिकः गोशालकमतानुसारी निह्नवविशेषः । सूत्र० ४५ ।
तिरिअवेइया–तिर्यग्वेदिका यत्र संडासमध्ये हस्तौ नीत्वा प्रतिलिख्यते सा । ओघ० ११० ।
तिरिक्खजोणिया–तिर्यग्गतिप्रायतिर्यग्लोके योनयस्तत्र जाताः तिर्यग्लोके योनयः–उत्पत्तिस्थानानि ये ते तिर्यग्योनिजाः तिर्यग्योनिकाः । जीवा० ३३ ।
तिरिघट्टना–तिर्यग्घट्टना–प्रत्युपेक्षणां कुर्वन् वस्त्रेण तिर्यक् कुड्यादि घट्टयति । ओघ० १०६ ।
तिरिच्छसंपाइ–तिर्यक् संपततीति तिर्यक्संपातः पतङ्गादिः । दश० १६४ ।
तिरिच्छा–तिरश्चीना अननुकूला सदनुष्ठानप्रतिघातिका । सूत्र० ३१६ ।
तिरियंकट्टु–तिर्यक्कृत्वा अपहस्त्य, हस्तयित्वा वा । सूत्र० ६० ।
तिरियंकरेइ–तिर्यक्करोति । सूर्य० ४६ ।
तिरियंभित्ति–तिर्यग्भित्तिः शकटोद्विवदादौ सङ्कटामग्रतो विस्तीर्णा । आचा० ३०२ ।
तिरिय–नो प्रतिकुलं नो अनुकुलं वितिरिच्छं तिरियं । नि० चू० तृ० ६३ आ । तिर्यक् । सूर्य० ४५ । तिर्यक्भित्तिप्रदेशः । जीवा० २०६ । तिर्यक् दिशः अनुदिशश्च । आचा० ६३ । तीरितं तीरं पारं प्रापितम् । प्रश्न० ११३ ।
तिरियलोए–रुचकस्याधस्तान्नवयोजनशतानि रुचकस्योपरिष्टान्नवयोजनशतानि तिर्यग्लोकः । प्रज्ञा० १४४ ।
तिरियलोयतट्ट–तटं–स्थालं तिर्यग्लोके तट्टमिव तिर्यग्लोकतट्टं तस्मिंश्च स्वयम्भूरमणसमुद्रवेदिकापर्यन्ते अष्टादशयोजनशतबाहल्ये समस्ततिर्यग्लोके च । प्र ा० ७६ ।
तिरियलोयपयरं–रुचकसमाद्भूतलभागान्नवयोजनशतानि गत्वा यज्ज्योतिश्चक्रस्योपरितनं तिर्यग्लोकसम्बन्धि एकप्रादेशिकमाकाशप्रतरं तत् तिर्यग्लोकप्रतरम् । प्रज्ञा० १४४ ।
तिरियवाए–तिर्यगुद्गच्छन् यो वाति वातः स तिर्यग्वातः । प्रज्ञा० ३० । यस्तिर्यग्वाति वातः स तिर्यग्वातः । जीवा० २६ ।
तिरीडंति–किरिटं च मुकुटं धारयन्ति ये ते । सम० १५८ ।
तिरीड–तिरीटं मुकुटम् । प्रश्न० ७७ । तिरीटं शिखरत्रयोपेतं मुकुटमेव । प्रश्न० ४८ । किरीटानि मुकुटानि शिखरत्रयोपेतानि । जं० प्र० २०५ ।
तिरीडपट्टए–वृक्षविशेषस्य वल्कभवं वस्त्रम् । बृ० द्वि० २०१ अ ।
तिरीडपट्टते–वृक्षत्वङ्मयम् । ठाणा० ३३८ ।
तिरीडपट्टो– । नि० चू० प्र० १२१ आ ।
तिरीडो–वृक्षविशेषः । बृ० द्वि० २०१ अ ।
तिरीलोपट्टो–तिरीडरुक्खस्स वागो तस्स तंतू पट्टसरिसो सो तिरीलोपट्टो । नि० चू० प्र० २५४ आ ।
तिरो–तिरोहितम् । बृ० तृ० १५६ अ ।
तिरोभाव–प्रकाशः प्रकटत्वम्, आविर्भावः । विशे० १०६२ ।
तिर्यक्–पार्श्वतः । ओघ० १६८ ।
तिर्यक्शल्या– । नंदी० १५५ ।
तिर्यगानुपूर्वी–द्वितीयानुपूर्वी नाम । प्रज्ञा० ४७३ ।
तिर्यग्गामिनी–नदीति तिर्यक् छिनत्ति सा । व्य० प्र० २५ आ ।
तिर्यग्मनुजान्–जातमात्रबालकान् तिरश्च अश्ववत्सकादीन् । ओघ० १६६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिर्यग्वेदिका–जानुनोः पार्श्वतो हस्तौ नीत्वा वेदिकायास्तृतीयः प्रकारः । ठाणा० ३६२ ।

तिलंतिलं–तिलशः । विपा० ४७ ।

तिलंबणा–त्रिलम्बनः त्रिकवलः कवलत्रयप्रमाणः । ओघ० १९० ।

तिल–तिलाः धान्यविशेषः । दश० १९३ । औषधिविशेषः । प्रज्ञा० ३३ । तिलः अष्टाशितौ महाग्रहे एकत्रिंशत्तमः । जं० प्र० ५३५ । ठाणा० ७९ । वनस्पतिविशेषः । भग० ८०२ ।

तिलए–तिलकः वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३२ । तिलकः सप्तदशतीर्थंकरस्य चैत्यवृक्षनाम । सम० १५२ । भविष्यकालिनः प्रथमवासुदेवस्य प्रतिशत्रुः । सम० १५४ । तिलकः भित्त्यादिषु पुण्ड्रम् । सूर्य० २६४ । प्रज्ञा० ९९ । तिलकः । अनु० २१२ ।

तिलओ–तिलकः भित्त्यादिषु पुण्ड्रम् । जीवा० १७५, ३७९ ।

तिलकंटओ–तैलकण्टकः कोकिलच्छदः । प्रज्ञा० ३६२ ।

तिलक–धान्यवान् श्रेष्ठी । सूत्र० १९४ । आधायाः परावर्तितद्वारे श्रेष्ठी, वसन्तपुरे श्रेष्ठिविशेषः । पिण्ड० १०० । वृक्षविशेषः । कमनीयकामिनीकमलदलदीर्घशरदिन्दुधवललोचनकटाक्षविक्षेपात् कुसुमाद्याविर्भावश्चक्षुरिन्द्रियज्ञानस्य व्यक्तं लिङ्गं तरुः । विशे० ६९ ।

तिलकीडय–तिलकीटकः तिलकृमिः । आव० ६२४ ।

तिलक्खागिया–तिलखादिका । आव० ३९७ ।

तिलग–तिलकं वृक्षविशेषः । आव० ५१३ । वनस्पतिविशेषः । भग० ८०३ । नि० चू० तृ० ६१ अ । तिलकः विशेषको ललाटाभारणाम् । औप० ५५ ।

तिलगचोद्दसं–तिलकं ललाटाभरणं रत्नमयं चतुर्दशं यत्र तत्तिलकचतुर्दशम् । जं० प्र० २१७ ।

तिलगचोद्दसगं–तिलकचतुर्दशकं अलङ्कारविशेषः । आव० ६५ । तिलकचतुर्दशकं आभरणविशेषः । आव० ९८ ।

तिलगरयण–तिलकरत्नं पुण्ड्रविशेषाः । जीवा० २०५ । भित्त्यादिषु पुण्ड्रविशेषाः । जं० प्र० ५४ । पुण्ड्रविशेषाः । जं० प्र० ४९ ।

तिलगवणे–तिलकवनम् । भग० ३६ ।

तिलत्थंबओ–तिलस्तम्बः । आव० २१२ ।

तिलपप्पडओ–जो आगमेहि तिलेहि कीरइ । दश० चू० ८६ आ ।

तिलपप्पडग–तिलपर्पटः पिष्टतिलमयः । दश० १८५ ।

तिलपर्पटिका–शष्कुलिः । दश० १७६ ।

तिलपिट्ठ–तिलपिष्टः । तिललोट्टः । दश० १८५ ।

तिलपोलगचक्क–तिला कीडगा वा छुट्टेज्जा । नि० चू० द्वि० ६१ आ ।

तिलपुप्फवण्णे–अष्टाशितौ महाग्रहे द्वात्रिंशत्तमः । जं० प्र ५३५ । ठाणा० ७९ ।

तिलमक्खियं–तैलम्रक्षितम् । ओघ० १४० ।

तिलय–तिलकं एकोरुकद्वीपे वृक्षविशेषः । जीवा० १४५ । तिलको विशेषको भूषकत्वात् । भग० ५४१ । तिलकाः भित्त्यादिषु पुण्ड्राणि । सम० १३९ । तिलकः वृक्षविशेषः । जीवा० २२९ ।

तिलयवणं–तिलकवनम् । आव० १८६ ।

तिललोम–तिलखलः । व्य० द्वि० ४०५ अ ।

तिलसंगुलिया–तिलफलिका । भग० ६६४ ।

तिलसक्कुलिया–तिलशष्कुलिका तिलप्रधाना पिष्टमयपोलिका । आचा० ५८ ।

तिलसिंगा–तिलफलिका उत्कटिकाभेदे तिस्रः । प्रज्ञा० २६६ ।

तिलसेंगलिया–तिलशिम्बा । आव० २१२ ।

तिलहारगकपट्ठगो–तिलहारकशिशुः । आव० ७८६ ।

तिलुक्क–त्रैलोक्यं भवनपतिव्यन्तरनरविद्याधरवैमानिकादिसमुदायलक्षणः । अनु० ३७ ।

तिलोदक–तत्प्रक्षालनजलम् । ठाणा० । १४७ ।

तिलोदगं–तिलोदकं तिलैः केनचित्प्रकारेण प्रासुकीकृतमुदकम् । आचा० ३४६ ।

तिल्लपूयं–तैलप्रधानं पूपम् । आचा० ३५२ ।

तिवइ–त्रिपदी । । आव० १६८ । त्रिपदी भूमौ पदत्रयः न्यायः पदत्रयस्योल्लमनं वा । जं० प्र० २६५ । त्रयाणां पदानां समाहारस्त्रिपदी–मल्लस्येव रङ्गभूमौ पदत्रयविन्यासविशेषः । अन्त० १६ ।

तिवई–त्रिपदी मल्लस्येव रङ्गभूम्यां गतिविशेषः । ज्ञाता०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३२ ।

तिवग्गो–त्रिवर्गः त्रैलोक्यं धर्मार्थकामा वा । आव० ४२३ । वत्थव्वगसंजूया संजेतोओ आगंतुगसंजता यतिवग्गा । नि० चू० द्वि० १५५ आ ।

तिवदि–त्रयाणां पदानां समाहारस्त्रिपदी–मल्लस्येव रङ्गभूमौ पदत्रयविन्यासविशेषस्ताम् । अन्त० १६ ।

तिवलिय–त्रिवलिका । भग० १६७ ।

तिवायणं–त्रिपातनं–त्रीणि कायवाङ्मनांसि यद्वा त्रीणि देहायुरिन्द्रियलक्षणानि पातनं चातिपातो–विनाशः त्रयाणां कायवाङ्मनसां पातनं–विनशनं त्रयाणां देहायुरिन्द्रियरूपाणां पातनं वा विनाशनम् । पिण्ड० ३७ ।

तिवायणा–त्रयाणां मनोवाक्कायानां त्रिभ्यो वा देहायुष्केन्द्रियलक्षणेभ्यः प्राणेभ्यः पातना–जीवस्य भ्रंसना त्रिपातना अतिशयवती यातना प्राणेभ्यो जीवस्य वेति, प्राणवधस्य दशमः पर्यायः । प्रश्न० ५ ।

तिविट्ठ–त्रिपृष्ठः सिंहमारकः । व्य० द्वि० १६६ आ । त्रिपृष्ठः श्रेयांसजिनकालभावि प्रथमवासुदेवः । सम० ८८ । त्रिपृष्ठः जनपदोद्रवकारी विषमगिरिगुहावासी महाकेसरीमारकः । प्रश्न० ७५ ।

तिविट्ठू–भविष्यकालभावी नवमो वासुदेवः । सम० १५४ । त्रिपृष्ठः प्रथमवासुदेवः । आव० १५६ ।

तिव्व–तीव्रा झगिति शरीरव्यापिका । भग० २३१ । तीव्रो विशुद्धो । विशे० ३०६ । तीव्रः दुःसहः । आचा० १५० । बृहद्द्वारोपेतम् । आचा० ३३३ । तीव्रः विशुद्धः । आव० २८ । तीव्रं तिक्तं निम्बादिद्रव्यं तदिव तीव्रः । भग० ४८४ ।

तिव्वदेसिय–तीव्रं बृहद्द्वारोपेतं देशिकं बृहत्क्षेत्रव्यापि तीव्रं च तद्देशिकं तीव्रदेशिकम्, तीव्रदेशिका महतिदेशेऽन्धकारोपेता । आचा० ३३३ ।

तिव्वपरिणामा–तीव्रपरिणामाः प्रबलाविर्भूतस्वरूपाः । आचा० १५० ।

तिव्वलज्ज–तीव्रलज्जः उत्कृष्टसंयमः । दश० १६० ।

तिव्ववेर–तीव्रवैरः अनुबद्धविरोधः । ज्ञाता० ८१ ।

तिव्वा–तीव्रा रौद्राः । आव० १६१ । तीव्राः । जीवा० १८७ । तीव्रा–तीव्रानुभागबन्धजनिता । प्रश्न० १६ ।

तिव्वाभिलासे–तीव्राभिलाषः अध्यवसायित्वम् । आव० ८२५ ।

तिव्विट्ठं–अप्फलं । दश० चू० ८३ आ ।

तिष्यगुप्तः–आत्मप्रवादपूर्वाधीयानकः । विशे० ६४६ ।

तिष्यगुप्तं–अन्त्यावयववाचीनिह्नवः । विशे० ६५० ।

तिसंधि–त्रिसन्धि आदिमध्यावसानेषु सन्धिभावात् । जीवा० २५६ ।

तिसंधिय–त्रिसन्धितं त्रिषु स्थानकेषु कृतसन्धिकं नैकाङ्गिकमित्यर्थः । भग० १६४ ।

तिसज्झणं– । नि० चू० द्वि० १६६ अ ।

तिसरय–त्रिसरिकम् । ज्ञाता० २२ ।

तिसला–चतुर्विंशतितमतीर्थंकरस्य माता । सम० १५१ । विदेहदिन्ना पियकारिणी महावीरस्वामिनः माता । आचा० ४२२ । त्रिशला सिद्धार्थक्षत्रियपत्नी । आचा० ४२१ । आव० १७६ । त्रिशला वर्द्धमानमाता । आव० १६० । त्रिशला महावीरजननी । भग० २६८ ।

तिसाइओ–तृषितः । आव० ४२६ ।

तिसाकालो–ग्रिम्हो । नि० चू० द्वि० ७५ आ ।

तिसामासो–ज्येष्ठ आषाढो वा । बृ० द्वि० २४३ आ ।

तिसालयं–त्रिशालकं । जीवा० २६६ ।

तिसिरा–त्रिशालकम् मत्स्यबन्धविशेषः । विपा० ८१ ।

तिसूलं–त्रिशूलं प्रसिद्धं शस्त्रविशेषः । आव० ६५१ ।

तिसोवाण–त्रयाणां सोपानानां समाहारः त्रिसोपानम् । जं० प्र० ४२ ।

तिसोवाणपडिरूवगं–त्रिसोपानप्रतिरूपकं त्रिसोपानं च तत् प्रतिरूपकं–प्रतिविशिष्टरूपं यस्य तत् च । जीवा० १६८ । त्रिसोपानप्रतिरूपकं प्रतिविशिष्टरूपकं त्रिसोपानम् । जीवा० २८६ ।

तिसोवाणपडिरूवग–एकद्वारं प्रति निर्गमप्रवेशार्थं त्रिदिगभिमुखास्तिस्रः सोपानपङ्क्तयः । ठाणा० २३२ ।

तिहि–तिथिः–रिक्तार्केन्दुदग्धादिदुष्टतिथिभ्यो भिन्ना तिथिः । जं० प्र० २७३ ।

तिहिपव्वणी–तिथिपर्व । आव० ४२२ ।

तिही–तिथिः मदनत्रयोदश्यादिः । प्रश्न० १५५ । मदनत्रयोदश्यादितिथिषु । भग० ४७३ । ज्ञाता० ८१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मदनत्रयोदशीप्रभृतिः । ज्ञाता० ५६ ।

तीतं–अतीतम् । भग० ६६ ।

तीतद्धा–अनादावतीतः कालः । भग० ४७ ।

तीताए–अतीता । ठाणा० ७६ ।

तीमनं–शाकः । पिण्ड० १३५ ।

तीयं–त्रैतं त्रिकम् । सूत्र० ६७ ।

तीरं–तीरावत्तिजलापूरितं स्थानम् । जीवा० १९७ । तटम् । जीवा० १२३ ।

तीरइ–शक्यते । आव० ३२४ ।

तीरइत्ता–तीरयित्वा पारं नीत्वा । उत्त० ५७२ । तीरयित्वा अध्ययनादिना परिसमाप्य । उत्त० ५७२ ।

तीरट्ठी–संसारतीरभूतो मोक्षस्तदर्थी तीरार्थी । सूत्र० २९८ । तीरं पारं भवार्णवस्यार्थं यत इत्येवं शीलस्तीरार्थी तीरस्थायी वा तीरस्थितिः । ठाणा० १८१ ।

तीरा– । ठाणा० ४७७ ।

तीरावेति–तीरयति समर्थं करोति । व्य० प्र० १४७ अ ।

तीरित्तं– । आव० ३२२ ।

तीरियं–पूर्णेऽपि कलावधौ किञ्चित्कालावस्थानेन तीरितं । आव० ८५१ ।

तीरियकज्ज–तिरितकार्यः समाप्तकार्यः । व्य० प्र० १४५ अ ।

तीरिया–तीरं पारं नीता । ठाणा० ३८८ ।

तीरेइ–तीरयति पूर्णेऽपि तदवधौ स्तोककालावस्थानात् । भग० १२४ । पूर्णेऽपि काले स्तोककालमवस्थानात् । ज्ञाता० ७३ । पूर्णेऽपि कालावधावनुबन्धात्यागात् । उपा० १५ ।

तीर्थं–श्रुतम् । भग० ६ ।

तीसइ–त्रिंशत् । आव० ६३४ ।

तीसए–तिष्यकः शक्रसामानिकविकुर्वणाविवरणे अनागारः तिष्यकाभिधानोऽनगारः । भग० १५८ ।

तीसगुत्त–तिष्यगुप्तः जीवप्रदेशिका सम्बन्धी निह्नवः । ठाणा० ४१० । तिष्यगुप्तः श्रीमहावीरशासने चतुर्थो निह्नवः । उत्त० १५३ । तिष्यगुप्तः वस्वाचार्यशिष्यः । उत्त० १५८ । तिष्यगुप्तः यस्माज्जीवप्रदेशा उत्पन्नाः स आचार्यविशेषः । आव० ३११ । तिष्यगुप्तः चतुर्दशपूर्वित्रसुनामाचार्यशिष्यः । आव० ३१४ । तिष्यगुप्तः वसुनामाचार्यशिष्यः । आव० ३१५ ।

तुंगारो–तुङ्गारः दक्षिणपूर्वो वातविशेषः । आव० ३८६ ।

तुंगिउद्देसए– । भग० ५५० ।

तुंगिक–तुङ्गिकगणो व्याघ्रापत्यगोत्रम् । नंदी० ४९ ।

तुंगीय–तुङ्गिकः सन्निवेशविशेषः । आव० २५५ ।

तुंगीया–नगरीविशेषः । भग० १३४, १३६ ।

तुंगीसिहरं–तुङ्गिशिखरम् । उत्त० ११७ ।

तुंडं–मुखम् । आव० ९३ ।

तुंडिय–तुण्डिकः यात्रासिद्धो वणिग्विशेषः । आव० ४१४ ।

तुंब्रिलः–जातबृहज्जठरः । उत्त० २७५ ।

तुंब–ज्ञातायां षष्ठाध्ययनम् । आव० ६५३ । तुम्बं अरकनिवेशस्थानम् । जं० प्र० २०४ । तुम्बं–षष्ठाङ्गे षष्ठं ज्ञातम् । सम० ३६ । उत्त० ६१४ । तुम्बं–अलाबुः । ज्ञाता० १० । तुम्बं फलविशेषः । प्रज्ञा० ३७ ।

तुंबक–तुम्बकः–अलाबुतुम्बयोर्लम्बत्ववृत्तत्वकृतभेदः । जं० प्र० २४४ ।

तुंबभूओ–तुम्बभूतः । आव० २६३ ।

तुंबभूयं–तुम्बभूतं आधारसामर्थ्यान्नाभिकल्पम् । प्रश्न० १३४ ।

तुंबरवः–गन्धर्वभेदविशेषः । प्रज्ञा० ७० ।

तुंबवण–तुम्बवनं । उत्त० ३२१ । तुम्बवनं सन्निवेशविशेषः । आव० २८६ ।

तुंबवीणा–तुम्बा युक्ता वीणा येषां ते तुम्बवीणः तुम्बवीणावादकः । जीवा० २८१ ।

तुंबवीणिय–तुम्बवीणिकः । औप० ३ । प्रश्न० १४१ । अनु० ४६ ।

तुंबा–तुम्बा ज्योतिष्केन्द्रसूर्यस्याभ्यन्तरिका पर्षत् । जीवा० १७६ ।

तुंबाग–तुम्बाकं त्वग्मिज्जान्तर्वर्त्ति आर्द्रं वा तुलसीवेत्यन्ये । दश० १७६ ।

तुंबी–वल्लीविशेषः । प्रज्ञा० ३२ । वनस्पतिविशेषः । भग० ८०३ ।

तुंबुरु– । ठाणा० ४०६ ।

तुंबेणउरेपडिअं–तुम्बेनोरसि पतितम् । आव० १७६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुंबेति–मच्छियजालसरिसं जालं काऊण अलाबुगाण भरिज्जति । नि० चू० प्र० ४५ अ ।

तु–भव्यकर्मविशेषणार्थः । आव० ४३८ । पुनः । आव० २८५ । पुनः । आचा० २२६ । तु शब्दो भाषामात्रार्थः । सम० १२७ । हेतौ । व्य० प्र० ४७ आ । तुः भाषामात्रः । प्रश्न० १५६ । अधिकारार्थसंसूचनार्थे । प्रज्ञा० ५५४ ।

तुअट्टंति–त्वग्दर्शनं कुर्वन्ति वामपार्श्वतः परावृत्य दक्षिणपार्श्वेनावतिष्ठन्ते दक्षिणपार्श्वतो वा परावृत्य वामपार्श्वनावतिष्ठन्ते इति । जं० प्र० ४६ ।

तुअट्टणं–त्वग्वर्तनं निमज्जनम् । ओघ० ५८ ।

तुच्छं–अल्पम् । प्रश्न० ६३, १०६ । ज्ञाता० ११३ । अल्पं रिक्तम् । आव० ६४३ । द्रमकस्य काष्ठहारकादेः कथ्यते, अथवा पूर्णो जातिकुलरूपाद्युपेतस्तद्विपरितस्तुच्छो, विज्ञानवान् वा पूर्णस्ततो अन्यस्तुच्छः । आचा० १४५ । तुच्छः उन्मादः । सूत्र० २५० । तुच्छः यदृच्छाभिधायितया निःसारः । उत्त० २२७ ।

तुच्छकुलं–असारकुलम् । आव० १७८ ।

तुच्छकुलानि–अल्पमानुषाणि अगम्भीराशयानि वा । ठाणा० ४२० ।

तुच्छत्तं–तुच्छत्वं निःसारता । प्रज्ञा० ३०३ ।

तुच्छत्ता–निस्सारता । भग० ७४२ ।

तुच्छोसहिभक्खणया–तुच्छौषधिभक्षणता असारौषधिभक्षणता । आव० ८२८ ।

तुज्झंतो–त्वदीयः । आव० ७०८ ।

तुज्झ–भवन्तः । ओघ० ८० ।

तुज्झच्चयं–तावकीनम् । आव० ६६ ।

तुट्ठ–तुष्टाः आन्तरप्रीतिभाजः । उत्त० ४४१ । तुष्टः–तोषं कृतवान् । जीवा० २४३ । तुष्टः हृष्टः सन्तोषवत् । भग० ११६ ।

तुट्ठा–तुष्टा हृष्टा । दश० २५० ।

तुट्ठि–तुष्टि इच्छानिवृत्तिः । जं० प्र० १५१ । आचा० ४२४ ।

तुडिअंग–त्रुटिताङ्ग द्रुमगणविशेषः । जं० प्र० १०२ । चतुरशीत्या लक्षैः पूर्वैः गुणितं । त्रुटिताङ्गम् अनु० १०० ।

तुडिए–चतुरशीत्या गुणितं लक्षैस्त्रुटिताङ्गैः त्रुटितम् । अनु० १०० । सूर्य० ६१ । भग० २१०, २७५ ८८८ । तुटिकम् अन्तःपुरम् । सूर्य० २६७ । जीवा० ३८४ । तुडिकं नाम वर्गः । भग० ५०५ ।

तुडिओ–तुटिकः अभ्यन्तरपर्षत्सत्कस्त्रीजनः । जं० प्र० ५५२ ।

तुडितंगा–त्रुटितानि तूर्याणि तत्कारणत्वात् त्रुटिताङ्गाः तूर्यदायिनः । ठाणा० ५१७ ।

तुडियंग–चतुरशीत्या लक्षैः पूर्वैः गुणितं त्रुटिताङ्गम् । सूर्य० ६१ । भग० २१०, ८८८ । चतुरशीतिः पूर्ववर्षशतसहस्राणि एकं त्रुटिताङ्गम् । जीवा० ३४५ ।

तुडियंगा–तूर्याङ्गसम्पादकाः । सम० १८ ।

तुडियंगति–पूर्वाणि चतुरशीतिलक्षणगुणितानि त्रुटिताङ्गानि । ठाणा० ८६ ।

तुडिय–त्रुटिकः बाहुरक्षिकः । भग० १३२, ४४७ : त्रुटिका शेषतूर्यम् । सूर्य० २६७ । भग० १५४, ५०६ । वादित्रसमुदयो त्रुटिः । नि० चू० द्वि० ७१ आ । सूर्यमणीमादयं तुडियं । नि० चू० प्र० २५४ अ । थिग्गलं देसी भासाए सामयिगी वा एस पडिभासा । नि० चू० प्र० १२४ अ । तुटितं बाहुरक्षिकः । प्रज्ञा० ६१ । तुटितं बाहुरक्षकः । जीवा० १६२, १६४, २५३ । प्रज्ञा० ८८ । वादित्रम् । जीवा० । २१७ । आतोद्यम् । जीवा० २२७ । तुडितं भूषणविधिविशेषः । जीवा० २६६ । चतुरशीतिस्त्रुटिताङ्गशतसहस्राणि एकं त्रुटितम् । जीवा० ३४५ । त्रुटिताङ्गः । आव० ११० । तुटितानि बाहुरक्षकाः । उपा० २६ ।

तुडिया–असुरकुमारस्य लोकपालानां द्वितीयाऽग्रमहिषी, धरणस्य लोकपालानां द्वितीया अग्रमहिषी । ठाणा० १२७ । तुटिकाः बाहुरक्षिकाः । औप० ४६ । प्रश्न० ७१ । त्रुटिता–पिशाचकुमारेन्द्रस्य मध्यमिकापर्षत् । जीवा० १७१ । त्रुटिता–ज्योतिष्केन्द्रसूर्यस्य मध्यमिका पर्षत् । जीवा० १७६ ।

तुडियाणि–त्रुटितानि मृणालिकाः । आचा० ३६३ ।

तुडियाति– । ठाणा० ८६ ।

तुणगं–वत्थच्छिद्दे पुणण्णवकरणं तुडियं । नि० चू० प्र० १०४ अ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुण्णए–तूणकः तान्त्रिकः तन्त्रीवादकः । अनु० १४६ ।
तुण्णाओ–तन्तुवायः । आव० ४२७ ।
तुण्णाग–सीवनकर्म्मकर्त्ता । नंदी०, १६५ । तुन्नवायः । आव० १८७ ।
तुण्णागदारए–तूर्णकदारकः सूचिकः । अनु० १७६ ।
तुण्णागा–तुन्नाकाः सूच्याजीविनः । प्रज्ञा० ५६ ।
तुण्हिक्को–तूष्णीकः । आव० १८८, २६२ ।
तुत्त–तोत्रं प्राजनकः । उत्त० ५४८ ।
तुत्तगो–पाइणगो । आव० ७६७ ।
तुत्ततो–भग्गो । नि० चू० प्र० ३५१ अ ।
तुन्दपरिमृजः–द्रमकः । आचा० ३१४ ।
तुन्नणं–तोदणम् । आव० ६५१ ।
तुन्निए–कलाकौशलत–पूरितच्छिद्रम् । बृ० द्वि० ६२ अ ।
तुप्पट्टणं–संस्तारकेशयनम् । बृ० द्वि० २०७ आ ।
तुप्प–पुणमययकलेवरवसा । नि० चू० प्र० ४७ आ ।
तुप्पतरयं–स्निग्धतरम् । ओघ० १६६ ।
तुप्पियं–स्नेहितम् । विपा० ४७ ।
तुप्पोट्ठ–मृष्टः । ओघ० ५५ ।
तुप्पोट्ठा–तुप्रा म्रक्षिता मदनेन वा वेष्टिताः शीतरक्षादिनिमित्तमोष्ठा येषां ते तुप्रोष्ठाः । अनु० २७ ।
तुबरं–कषायद्रव्यं आमलकादि । जं० प्र० ४११ ।
तुब्भच्चया–त्वदीया । आव० ६३२ ।
तुमंतुम–तुमन्तुमः हृदटस्थः कोषविशेष एव । भग० ६२४ । तिरस्कारप्रधानमेकवचनान्तं बहुवचनोच्चारणयोग्ये । सूत्र० १८३ ।
तुयट्टंतं–त्वग्वर्त्तनं स्वपनम् । दश० १५५ ।
तुयट्टंति–निषण्णा आसते । भग० ६१८ ।
तुयट्टणं–त्वग्वर्त्तनम् । आव० ६५४ । निमज्जनं क्रियते । ओघ० १३० । आव० ६५४ । शयनम् । ओघ० २१४ ।
तुयट्टति–त्वग्वर्त्तनं करोति । जीवा० २०१ ।
तुयट्टियव्वं–त्वग्वर्त्तितव्यं शयनीयं, सामायिकाद्युच्चारणपूर्वकं शरीरप्रमार्जनां विधाय संस्तारकोत्तरपट्टयोर्बाहूपधानेन वामपार्श्वत इत्यादिना न्यायेनेत्यर्थः । ज्ञाता० ६१ ।
तुयट्टेज्ज–शयीत । भग० ६० ।
तुयर–कुसुमोदकादि । बृ० द्वि० २४६ आ ।
तुयावइत्त–तोदं कृत्वा तोदयित्वा व्यथामुत्पाद्य या प्रव्रज्या दीयते । ठाणा० २७६, १२६ ।
तुरंति–त्वरन्ते । विशे० ५३८ ।
तुरंतो–त्वरयन् । आव० ६१७ । त्वरितम् । नि० चू० प्र० ३१६ आ ।
तुरमाणभोज्जं–त्वराभोज्यम् । तं० ।
तुरमिणी–नगरीविशेषः । बृ० तृ० ११३ अ ।
तुरली–णालिया अपव्वा । नि० चू० प्र० ६० आ ।
तुरिओ–त्वरितः । ओघ० १५५ ।
तुरितं–त्वरितं शीघ्रम् । आव० ६६ । त्वरितः शीघ्रम् । ज्ञाता० ३५ ।
तुरिमिणि–णगरीविसेसो । नि० चू० प्र० २५८ अ ।
तुरियं चवलं–त्वरितचपलं अतिचटुलतया । ज्ञाता० १६२ ।
तुरियं–त्वरिता–आकुला न स्वाभाविक्या आन्तराकूततः । ज्ञाता० ३६ । त्वरितं–वचनचापल्यतः । प्रश्न० १२० । त्वरितत्वं मनस औत्सुक्यात् । ज्ञाता० ६६ । त्वरितत्वं मनसमुखक्षेपे । प्रश्न० १२६ ।
तुरियकरणं–त्वरितकार्यं जातम् । ओघ० १७७ ।
तुरियगई–त्वरितगतिः मानसौत्सुक्यप्रवर्त्तित वेगवद्गतिः । भग० १७८ ।
तुरियगति– । ठाणा० १६८ ।
तुरियणिद्दा–त्वरितनिद्रा मरणनिद्रा । आव० ३४६ ।
तुरिया–त्वरिता–आकुला । भग० ५२७ । त्वरिता–आकुलता न स्वभावजेत्यर्थः । भग० १६७ । त्वरितः त्वरावान् । भग० १७८ ।
तुरो–वस्त्रवननोपकरणः । आचा० २२८ ।
तुरुक्कं–तुरुष्कं सिल्हकम् । प्रश्न० ७७ । जीवा० १६०, २०६ । जं० प्र० ५१, १४४ । प्रज्ञा० ८७ । औप० ५ । ज्ञाता० ४० । शिल्हकाभिधानं गन्धद्रव्यम् । सम० ६१ ।
तुरुक्कधूव–सेल्हकलक्षणो धूपः । उपा० ५ ।
तुरुक्का–तुरुष्कः सुगन्धिद्रव्यविशेषः । आव० १०१ ।
तुरुक्ख––गंधदव्वम् । नि० चू० प्र० २७६ आ ।
तुरुतुंबगा–त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः । प्रज्ञा० ४२ ।
तुरुमिणिदत्त–दारुणमिथ्यात्वः । भक्त० ।
तुरुमिणिणगरी–नगरीविशेषः । नि० चू० प्र० २५८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुरुविणी-तुरुमिणी नगरी, यत्र जितशत्रुराजा । आव० ३६६।
तुलना-भावना । विशे० ११ ।
तुलयति-अभिभवति । प्रश्न० १७ । जयतीति । ठाणा० ४६६ ।
तुलसी-भूतानां चैत्यवृक्षः । ठाणा० ४४२ । भग० ८०२ । गुच्छविशेषः । प्रज्ञा० ३२ । आचा० ५७ ।
तुलसे-हरितविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।
तुला-इयत्तापरिच्छेदहेतुः । उत्त० ६८७ । अनु० १५४ ।
तुलाकोटिकानि-नूपुराणि । औप० ५५ ।
तुलासंठिए-तुलासंस्थितं पुनर्वसुनक्षत्रसंस्थानम् । सूर्य० १३० ।
तुलिया-तोलयित्वा गुणदोषवत्तया परिभाव्य । उत्त० २८६ । परीक्षात्मानं धृतिदाढ्यादिगुणान्वितमिति । उत्त० २५३ ।
तुल्यं-समचतुरस्रम् । जीवा० ४२ ।
तुल्लविसेसाहियं-परस्परापेक्षया तुल्यत्वेन विशेषेण असङ्ख्येयभागादिनाऽधिकं पूर्वकालबद्धकर्मापेक्षयाऽधिकतरं तुल्यविशेषाधिकम् । भग० ६६१ ।
तुवरं-सकषायम् । उत्त० ६५३ ।
तुवट्टणं- । नि० चू० प्र० ६० ।
तुवर-धान्यविशेषः । नि० चू० तृ० ५२ आ ।
तुवरपत्ते-पलाशपत्रादीनि । बृ० द्वि० १०६ अ ।
तुवरफल-हरीतक्यादयः । नि० चू० प्र० ४७ आ ।
तुवरफला-हरीतकीप्रभृतीनि । बृ० द्वि० १०६ अ ।
तुवरिका-सौराष्ट्रिका । दश० १७० ।
तुवरिमट्टिया-ते पुढविपरिणामा वण्णिया जेण सुवण्णं वणिज्जाति, सोरट्ठिया तुवरिमट्टिया भण्णंति । नि० चू० प्र० २१८ ।
तुवरी-तुवरी-धान्यविशेषः । दश० १६३ । भग० ८०२ ।
तुषमुखं-बीजसूक्ष्मम् । ठाणा० ४३० ।
तुषराशिः- । ओघ० ४१ ।
तुषाग्निः-तुषसत्कोऽग्निः । जीवा० १२३ ।
तुष्टः-महितः । आव० ७५६ ।
तुसण्णो- । नि० चू० प्र० २६० आ ।
तुससाला-सालिमादितुसट्ठाणं तुससाला । नि० चू० प्र० २६५ अ ।
तुसा-क्षोद्रवादीनि । ठाणा० ४१६ ।
तुसारं-तुषारं हिमम् । ज्ञाता० ६६ । जीवा० ११६ ।
तुसार-तुषारः हिमम् । आव० २०४ ।
तुसारपुंजं-तुषारपुञ्जम् । जीवा० ११६ ।
तुसिओ-तुषितः । आव० १३५ ।
तुसिणिया-तूष्णीका मूका । दश० १०८ ।
तुसिणी-तूष्णी मूकता । आव० ५४८ ।
तुसिता-सुप्रतिष्ठाभविमानवासी षष्ठो लोकान्तिकदेवः । ठाणा० ४३२ ।
तुसिय-तुष्टः सुप्रतिष्ठाभविमानवासी षष्ठो लोकान्तिकदेवः । भग० २७१ । ज्ञाता० १५३ ।
तुसोदए-तुषोदकं व्रीह्युदकम् । ठाणा० १४७ ।
तुसोदगं-तुषोदकं पानकभेदः । आचा० ३४६ ।
तुहगा-कन्दविशेषः । उत्त० ६६१ ।
तुह-तावकीनम् । आव० ५६५ ।
तुहिनं-हिमम् । ठाणा० २८७ ।
तूडिअ-त्रुटिकं बाह्याभरणम् । जं० प्र० १०६ ।
तूणइल्ल-तूणाभिधानवाद्यविशेषवान् । औप० ३,४ । प्रश्न० १४१ । अनु० ४६ । जीवा० २८१ ।
तूणइल्ला-तूणाभिधानवाद्यविशेषवन्तः । राज० २ । ज्ञाता० ४० ।
तूणक-वाद्यविशेषः । प्रश्न० १५६ ।
तूणोराः-तूणाः । जं० प्र० २०६ ।
तूमणया-देशी० स्थगनम् । व्य० प्र० १२१ आ ।
तूयरी-तुवरी आढकी । पिण्ड० १६८ ।
तूरंतो-त्वरयन् मर० । त्वरमाणः । ओघ० ६५ ।
तूर-वाद्य । आव० १४५ ।
तूरपत्ति- । नि० चू० द्वि० १६७ आ ।
तूरपइ-तूर्यपतिः नटमहत्तरः । बृ० प्र० १०३ आ ।
तूणनं- । ओघ० १६६ ।
तूल-तूलः अर्कतूलः । सूर्य० २६३ । अर्कतूलम् । ज्ञाता० ६ । अर्कतूलम् । जं० प्र० ५५ । जीवा० २१० ।
तूलकं-तूलम् । उत्त० ६५३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तूलकडं–अक्कादितूलनिष्पन्नम् । आचा० ३९३ ।
तूलि–तूलिका । ठाणा० २३४ ।
तूलिअं–तूलिका । ग० ।
तूलिया–तूली संस्कृतरुतादिभृताऽर्कतूलादिभृता वा । बृ० द्वि० २२० आ ।
तूलियाओ–तूलिका बालमध्यश्चित्रलेखनकूर्चिकाः । ज्ञाता० १४४ ।
तूली–तूली अप्रतिलेखितदूष्यपञ्चके प्रथमः । आव० ६५२ । एगबहुकमेरगा तूल्ली, अक्कडोडुगाइतूलभरिया वा तूली । नि० चू० द्वि० ६१ अ ।
तूवरो–तुवरः कषायः । जीवा० २४४ ।
तूष्णीकाः–पिशाचभेदविशेषः । प्रज्ञा० ७० ।
तूसीणिए–तूष्णीको वचनरहितः । ज्ञाता० ८५ ।
तूहं–तीर्थम् । बृ० द्वि० ३० आ । तीर्थं गवां जलपानस्थानं निपानमित्यर्थः । बृ० तृ० ६२ आ ।
तृणशूकं– । व्य० प्र० ११६ अ ।
तृणकचवरः– । जीवा० २८२ ।
तेंदु–तिन्दुकः बहुबीजकवृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।
तेंदुओ–गन्धर्वाणां चैत्यवृक्षनाम । ठाणा० ४४२ ।
तेंदुगं–तिन्दुकं वाणारस्यां तिन्दुकवनोद्याने यक्षायतननाम । उत्त० ३५६ । तिन्दुकं श्रावस्त्यामुद्यानः । आव० ३१२ ।
तेंदुयं–टेम्बरूयम् । आचा० ३४९ ।
तेंदुयवणं–तिन्दुकवनं वाणारस्यामुद्यानविशेषः । उत्त० ३५६ ।
तेंदूसं–तिन्दुसं–फलविशेषः । प्रज्ञा० ३७ । तेंदूसए–कन्दुकः । ज्ञाता० १५८ ।
तेंबुरुमिंजिया–त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः । जीवा० ३२ ।
तेअ–तेजः–परासहनीयः पुण्यः, प्रतापः । जं० प्र० १८२ । तेजसः–शारीरम् । जं० प्र० २१९ ।
तेअतली–तेजस्तलीनः जातिवाचकः शब्दः । जं० प्र० १२८ ।
तेआ–तेजाः त्रयोदशीरात्रिनाम । जं० प्र० ४९१ ।
तेउ–तेजः उष्णः । आचा० २४५ । बृ० प्र० ३०९ आ ।
तेउकंते– । ठाणा० १९७ ।
तेउप्पगे– । ठाणा० १९७ ।
तेउफासे–तेजःस्पर्शाः–उष्णस्पर्शाः । आचा० ३१० ।
तेउलेसा–तेजोरूपालेश्या येषां ते तेजोलेश्याः । ठाणा० १०० ।
तेउलेसे–तेजोलेश्या–विशिष्टतपोजन्यलब्धिविशेषप्रभवा तेजोज्वाला यस्य सः । सूर्य० ५ । तेजोलेश्या विशिष्टतपोजन्यलब्धिविशेषप्रभवा तेजोज्वाला । जं० प्र० १६ ।
तेउलेस्से–तेजोलेश्या तपोविभूतिजं तेजस्वित्वं तैजसशरीरपरिणतिरूपं महाज्वालाकल्पम् । ठाणा० १४९ ।
तेउसिहे–अग्निशिखस्य द्वितीयो लोगपालः । ठाणा० १९७ ।
तेऊ–अग्निशिखस्य प्रथमो लोगपालः । ठाणा० १९७ । तेजोयोगात्तेजांसि–अग्नयस्तद्वर्तिनो जीवा अपि । उत्त० ६९३ ।
तेऊलेसा–तेजो–वह्निस्तद्वर्णलेश्या लोहितवर्णीत्यर्थः तेजोलेश्या । ठाणा० १७५ ।
तेए–तेजः तेजोलेश्या । भग० ६७३ । तेजः–शरीरस्थकान्तिः । ठाणा० ४२१ । तेजः तपोमाहात्म्यम् । उत्त० ३६५ । तेजः शरीरार्चिः । भग० १३२ । तेजः–शरीरप्रभवम् । प्रज्ञा० ८८ । तेजः–तैजसं–उष्मलिङ्गं भक्ताहारपरिणमनकारणम् । प्रज्ञा० ४०९ । तेजः–ज्ञानं, भावतमो विनाशकत्वात् । प्रश्न० १५८ । तेजः शरीरसम्बन्धिरोचिः प्रभावो वा । औप० ५० ।
तेएण–तेजसा कान्त्या । उपा० २६ ।
तेओगकडजुम्मे–त्र्योजःकृतयुग्मे द्वादशादयः । भग० ९६४ ।
तेओगकलिओए–त्र्योजकल्योजे त्रयोदशादयः । भग० ९६४ ।
तेओगतेओगे–त्र्योजत्र्योजराशौ तु पञ्चदशादयः । भग० ९६४ ।
तेओगदावरजुम्मे–त्र्योजद्वापरे तु चतुर्दशादयः । भग० ९६४ ।
तेओय–त्रैतोजः । सूर्य० १६७ ।
तेगिच्छ–चिकित्सकः वैद्यः । ओघ० ५३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेगिच्छिपुत्तो–चिकित्सकपुत्रः चिकित्सामात्रकुशलस्य पुत्रः। विपा० ४०।

तेगिच्छियसाला–चिकित्साशालं आरोगशाला। ज्ञाता० १८०।

तेगिच्छी–चिकित्सकः चिकित्सामात्रकुशलः। विपा० ४०।

तेजः–विशिष्टसंवेदनप्रभवा धर्म्मदेशना। नं० अनु० वा।

तेजचन्द्रबुधः– । जं० प्र० ५४५।

तेजितं–उपचितम्। प्रज्ञा० ६१।

तेजोनिसर्जनं– । ठाणा० ३३२।

तेण–स्तेनाः उपकरणापहारिणः। व्य० द्वि० १४ अ। यः। ठाणा० ७। स्तेनः–चौरः। ओघ० २३। स्तेनाः चौराः। जं० प्र० ६६। स्तेनः–भगवद्दत्तग्रहणात् अन्यापदेशयाचनाद्वा न मां कश्चिज्जानातीति भावयन् चौरोऽसौ। दश० १८८।

तेणतेणो–अपडुप्पन्नबालं हरंतो तेणो स तेणो तं सेहं बाहिं गामादियाण ठवेत्ता अप्पणा भिक्खस्स पविट्ठो एत्थंतरे जो तं सेहं अण्णो उप्पोसेत्ता हरति सो तेणतेणो। नि० चू० द्वि० ४५ अ।

तेणयबंधो–यत्रमध्येनैव पात्रककाष्ठस्य दवरके याति तावद् यावत्सा राजिः सीविता भवति सः स्तेनकबन्धः। ओघ० १४६।

तेणाहडे–स्तेनाहृतं चौरानीतम्। उपा० ७।

तेणिक्कं–स्तैन्यं स्तेयं, तृतीयाधर्मद्वारस्य त्रयोदशं नाम। प्रश्न० ४३।

तेणियं–स्तैन्यं यत्परेभ्यः खल्वात्मनं गूहयन् स्तेनक इव वन्दते, कृतिकर्मणि षोडशो दोषः। आव० ५४४।

तेणेव–तेन तस्मिन्। सूर्य० ६।

तेतलि–वनस्पतिविशेषः। भग० ८०३।

तेतलिपुरं–यत्र कनकरथो राजा। आव० ३७३।

तेतलिसुओ–तेतलिसुतः कनकरथराज्ञोऽमात्यः। आव० ३७३।

तेतलिसुतः–अमात्यविशेषः। विपा० ८८।

तेतली– । जं० प्र० ३१३। ठाणा० ४०६।

तेतलीतिय–तेतलिसुतः। ठाणा० ५१०।

तेत्तली–षष्ठाङ्गे चतुर्दशं ज्ञातम्। सम० ३६।

तेनाहडे–स्तेनाहृतं-चौरानीतम्। आव० ८२२।

तेनिस–तैनिशं-तिनिशानिघानवृक्षसम्बन्धि। भग० ३२२।

तेपते–क्षरति सञ्चलति मर्यादातो भ्रश्यति निर्मर्यादो भवतीति यावत्। आचा० १३६।

तेपन्नता–तेपनता तिपेः–क्षरणार्थत्वादश्रुविमोचनम्। ठाणा० १८६।

तेप्पिऊण–कल्पयित्वा। ओघ० १२२।

तेवुरणमिंजिया–त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः। प्रज्ञा० ४२।

तेमासिए–त्रैमासिकः। आचा० ३२७।

तेयंसी–दीप्तशरीरत्वात्। सम० १५६। तेजस्वी–तेजः शरीरप्रभा तद्वांस्तेजस्वी। ज्ञाता० ६। तेजस्विनः शरीरप्रभायुक्ताः। भग० १३६।

तेय–तेजः शरीरप्रभवम्। जीवा० १६२। माहात्म्यम्। बृ० द्वि० २१२ आ।

तेयए–तेजसोविकारः तैजसम्। प्रज्ञा० २६८। तैजसं–तेजःपुद्गलानां विकारः। जीवा० १४। तेजसोभावस्तैजसं उष्मादिलिङ्गसिद्धम्। ठाणा० २९५। रसाद्याहारपाकजननं तेजोनिसर्गलब्धिनिबन्धनं च तेजसो विकारस्तैजसम्। अनु० १९६।

तेयतली–तेजश्च तलं च रूपं येषां ते तेजस्तलिनः, भारतवर्षे मनुष्यभेदः। भग० २७६।

तेयते–तेजते–दीप्यते। उत्त० १८६।

तेयनिसग्ग–तेजोनिसर्गः। आव० २१४। भगवत्यां पञ्चदशशते प्रकरणम्। भग० ६९५।

तेयफासं – तेजःस्पर्शः–उष्णरूपतापरिणतनरककुड्यादिस्पर्शः। जीवा० १२८।

तेयलिणाए– । ज्ञाता० २०४।

तेयलिपुत्त–कनकरथभूपस्यामात्यः। ज्ञाता० १८४।

तेयलिपुर–कनकरथनृपस्य नगरी। ज्ञाता० १८४।

तेयली–तेतलिसुताभिधानोऽमात्यः। ज्ञाता० १०। ज्ञातायां चतुर्दशाध्ययनम्। आव० ६५३। तेतलिः–षष्ठाङ्गे चतुर्दशं ज्ञातम्। उत्त० ६१४।

तेयलेसे–तेजोलेश्या विशिष्टतपोजन्यलब्धिविशेषप्रभवा तेजो-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्वाला । भग० १२ ।

तेयलेस्स–तेजोलेश्या सुखासिका । भग० ६५७ । शरीरदीप्तं सुखासिकां वा । ठाणा० १४५ ।

तेयलेस्सा–तेजोलेश्या विशिष्टतपोजन्यलब्धिविशेषप्रभावा तेजोज्वाला । औप० ८४ ।

ते यल्लेसे–विशिष्टतपोजन्यलब्धिविषयप्रभवा तेजोज्वाला । ज्ञाता० ७ ।

तेयसं–तैजसं यदुदयात्तैजसशरीरप्रायोग्यान् पुद्गलानादाय तैजसशरीररूपतया परिणमयति परिणम्य च जीवप्रदेशैः सह परस्परानुगमरूपतया सम्बधयति तत् । प्रज्ञा० ४६६। तेजसं–तेजःपुद्गलानां विकारः तैजसम् । प्रज्ञा० ४०६ ।

तेयस्सि–तेजस्वी दीप्तिमान् । आचा० ३६४ ।

तेया–तेजोमयं तेजसम् । आव० ३६ । तेजा त्रयोदशीरात्रिनाम् । सूर्य० १४७ ।

तेयालगपट्टण–पट्टणविसेसो । नि० चू० प्र० ४४ आ ।

तेयाहिय–ज्वरविशेषः । भग० १६८ ।

तेयोए–यस्तु त्रिपर्यवसितः स त्र्योजः । ठाणा० २३७ ।

तेयोगे–त्रिभिरादितः एव कृतयुग्माद्वोपरिवर्त्तिभिरोजो विषमराशि विशेषस्त्र्योजः । भग० ७४४ ।

तेरासि–त्रैराशिकः नपुंसकः । पिण्ड० १५७ ।

तेरासिओ–त्रैराशिकः नपुंसकम् । बृ० तृ० २५२ अ ।

तेरासिय–त्रिनीराशिभिर्दिव्यन्ति जिगीषन्तीति त्रैराशिकाः । उत्त० १५३ ।

तेरासिया–त्रीन् राशीन् जीवाजीवनोजीवरूपान् वदन्ति ये ते त्रैराशिकाः । औप० १०६ ।

तेलसमुग्गए–तैलसमुद्गकः सुगन्धितैलाधारविशेषः । जीवा० २१४ ।

तेला– । ठाणा० ३६० ।

तेल्लं–तैलम् । आव० ८३१ ।

तेल्लकुडो–तैलकुटः तैलकुम्भः । आव० ३१० ।

तेल्लकेला–तैलकेला तैलाश्रयो भाजनविशेषः । भग०६६४ । तैलकेला सौराष्ट्रप्रसिद्धो मृन्मयस्तैलस्य भाजनविशेषः । निरय० ४, ३४ । ज्ञाता० १४ ।

तेल्लचम्मं–तैलाभ्यक्तस्य यत्र स्थितस्य सम्बाधना क्रियते तत् तैलचर्म । औप० ६५ ।

तेल्लदोणी–तैलद्रोणी । आव० २२७ ।

तेल्लभायणं–तैलभाजनम् । आव० ६४१ ।

तेल्लसमुग्गया–तैलसमुद्गको सुगन्धितैलाधारविशेषौ । जं० प्र० ५६ ।

तेल्लियं–तैलिकं तिलपीडनकर्म । आव० ८२६ ।

तेल्लिया–तेल्ले । नि० चू० प्र० २४४ अ ।

तेलुक्क–त्रयोलोकास्त्रिलोकाः भवनपतिव्यन्तरविद्याधरज्योतिष्कवैमानिकाः त्रिलोका एव त्रैलोक्यम् । नंदी० १६२ ।

तेवच्छिवाडिया–कृष्णलेश्यायां वर्णदृष्टान्तः । प्रज्ञा० ३६० ।

तैजसं–तेजः-स्वतत्त्वं शीयानुग्रहप्रयोजनम् । तत्त्वा०२-४६ ।

तैजसबन्धनं–यदुदयात् तैजसपुद्गलानां गृहीतानां गृह्यमाणानां च परस्परं कार्मणपुद्गलैः सह सम्बन्धस्तत्तैजसबन्धननाम । प्रज्ञा० ४७० ।

तैजससङ्घातनाम–यदुदयवशात् तैजसशरीररचनाऽनुकारिसङ्घातरूपा जायते तत्तैजससङ्घातनाम । प्रज्ञा० ४७० ।

तैजससमुद्घातः–तैजसेन हेतुभूतेन समुद्घातः तैजसशरीरनामकर्माश्रयः । जीवा० १७ ।

तैतिलं–स्त्रीविलोचना परनाम, चतुर्थं करणम् । जं० प्र० ४६४ ।

तैलाग्निः–तैलसत्कोऽग्निः । जीवा० १२३ ।

तोंडं–तुण्डं मुखविभागो भल्लीरूपः । जं० प्र० २०१ ।

तो–तथा । विशे० ७५५ ।

तोए–तोयं सम्बन्धहेतुः स्नेहः । प्रश्न० १५७ ।

तोट्टा–चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः । प्रज्ञा० ४२ ।

तोडे–पल्लवौ । नि० चू० प्र० १७६ आ ।

तोडुकरूपे–यत्रागतावचलतया तिष्ठत इति । जं० प्र० २२४ ।

तोण–इषुधिः । निरय० १८ । इषुधिः–भस्त्रकम् । औप० ७१ । बाणाश्रयः । जीवा० १६३ । तोणः–शरधिः । भग० ३२२ । तूणः–तूणीराः । जं० प्र० २०६ । भस्त्रकाः । जं० प्र० २१२ । तूणः–शर–भस्त्रादिः । ज्ञाता० २३६ । बाणाश्रयाः । जं० प्र० ३७ । तोणशरधिः । प्रश्न० ४८ । तोणीरः–शरधिः । प्रश्न० ४७ ।

तोत्त–तुद्यते–व्यथ्यतेऽनेनेति तोत्रं प्राजनको व्यथोपजनकं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वचनं वा । उत्त० ६२ । जं० प्र० २२५ ।

तोत्तए–तोत्रकम् । दश० ८६ ।

तोत्तगवेसए–तोत्रं प्राजनको व्यथोपजनकं वचनं वा गवेषयति:–अन्वेषयतीति तोत्रगवेषकः । उत्त० ६२ ।

तोत्र–निहन्यमानानामश्वानां शब्दः । जं० प्र० २०६ ।

तोमर–तोमरः–बाणविशेषः । प्रश्न० २१ । तोमरम् । जीवा० ११७ । तोमरः–गदाकारशस्त्रविशेषः । आव० ६५१ । तोमरं–आयुधविशेषः । भग० १८२ । तोमराः बाणविशेषाः । जं० प्र० २१२ ।

तोमरग्गं–तोमराग्रम् । जीवा० १०६ ।

तोयं–पूर्वाषाढा । जं० प्र० ४६६ । स्नेहः । औप० ३५, १६ । तोयमिव बन्धहेतुत्वात्तोयं स्नेहः । ठाणा० ४६४ ।

तोयधारा–पञ्चमा दिक्कुमारी । जं० प्र० ३८३ । ऊर्ध्वलोकवास्तव्या दिक्कुमारी । आव० १२२ ।

तोयपट्ठं–तोयपृष्ठं जलोपरितनभागः । औप० ४६ । प्रश्न० ६१ ।

तोयलो–वलयविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

तोरणं– । प्रश्न० ८ । द्वारादिसम्बन्धि । जीवा० २५८ । तोरणानि प्रतोलीद्वारेषु । प्रज्ञा० ८६ । तोरणम् । अनु० १७ । तोरणः द्वारादिसम्बन्धिः । प्रज्ञा० ७१ ।

तोरणसंठिओ–तोरणसंस्थितः । जीवा० २७६ ।

तोवुणति– । नि० चू० प्र० १२१ आ ।

तोसणमादिनइ– । नि० चू० द्वि० ११ ।

तोसलि–आचार्यविशेषः । आचा० २६२ । देशविशेषः । नि० चू० तृ० २१ आ । बृ० द्वि० १७५ अ । नगरविशेषः । बृ० द्वि० २६७ अ । तोसलिग्राम । आव० २१६ ।

तोसलिओ–तौसलिकः मणिप्रतिमारक्षको राजा । व्य० द्वि० १५४ अ ।

तोसलिपुत्तो–तोसलिपुत्रः आचार्यः । आव० ३०१ ।

तोसलिपुत्ता–तोसलिपुत्राः आर्यरक्षितधर्माचार्याः । आव० २६६ । आर्यरक्षितस्याचार्याः । उत्त० ६६ ।

तोसलिविषय– । बृ० द्वि० १७३ आ ।

तोसलिविषयं–देशविशेषः । बृ० प्र० १७५ आ ।

तोसलिविसए–देशविशेषः । नि० चू० प्र० ३१५ आ, २५४ आ ।

तोसलिविसयं–देशविषयः । नि० चू० द्वि० १५२ अ ।

तोसलीए–नगरविशेषः । नि० चू० तृ० १५ अ ।

तोहाडिका–खरमुही । आचा० ४१२ ।

त्तिकट्ठु–इतिकृत्वा–इतिनिश्चयं विधाय सम्प्रलग्नाः योद्धुमिति । ज्ञाता० २२१ । इतिकृत्वा–उच्चार्य । जं० प्र० १४३ ।

त्थ– आव० ५६१ । अनया । विशे० ४०२ । अत्र । विशे० ६३६ ।

त्थक्को–विश्रान्तः । आव० ४०८ ।

त्थग्गलयं–पडिया । नि० चू० प्र० १२५ आ ।

त्थमिए–स्तिमितं–निर्भयम् । विपा० ३६ ।

त्थमिय–स्तिमितं–स्थिरं स्वचक्रपरचक्रादिभयवर्जितत्वात् । भग० ७ । स्तिमिता भयवर्जितत्वेन स्थिरा । ज्ञाता० १ । स्तिमिता–स्वचक्रपरचक्रतस्करडमरोदिसमुत्थभयकल्लोलमालाविवर्जिता । सूर्य० १ ।

त्थोभं–स्तोभकः निपातः । आव० ३७६ ।

त्यक्तं–उज्झितं छर्दितम् । पिण्ड० १६६ ।

त्यक्तद्रव्यसम्यक्–जढं परित्यक्तं यद्द्वारादितत्यक्तद्रव्यसम्यक् । आचा० १७६ ।

त्यक्तारम्भाः– । आचा० २७१ ।

त्यागः–तपः । सम० १२१ ।

त्रपुषफलं–खादिमे फलविशेषः । आव० ८११ ।

त्रपुषी–वल्लीविशेषः । प्रज्ञा० ३० । जीवा० २६, १३६ । उत्त० ६६२ । आचा० ३० ।

त्रप्वाकरः–यस्मिन्निरन्तरं महामूषास्वयोदलं प्रक्षिप्य त्रपु उत्पाट्यते सः । जीवा० १२३ ।

त्रसनाम–त्रसन्ति उष्णाद्यभितप्ताः सन्तो विवक्षितस्थानादुद्विजन्ते–गच्छन्ति च छायाद्यासेवनार्थं स्थानान्तरमिति त्रसाः–द्वीन्द्रियादयस्तत्पर्यायपरिणतिवेद्यं नामकर्मापि त्रसनाम । प्रज्ञा० ४७४ ।

त्रसरितन्तुः–कौसेयम् । जीवा० २६६ ।

त्रायस्त्रिंशग–मंत्रिपुरोहितस्थानीयाः । तत्त्वा० ४–४ ।

त्रिकल्पपर्युषितः–स्थविरकल्पिको जिनकल्पिको वा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचा० २८०।

त्रिपिटकादिसमयवृत्तयः–सामायिकाः। दश० १२७।

त्रिपुडा– । नि० चू० प्र० १४४ आ।

त्रियाम–पूर्वरात्रमध्यरात्रापररात्रलक्षणो यमाश्रित्य रात्रिस्त्रियामेत्युच्यते। ठाणा० १२८।

त्रिलोकरेखा–आज्ञाराधनखण्डनादोषदोषदृष्टान्ते चन्दावतंसान्तःपुरिका। पिण्ड० ७६।

त्रिवासरवटकं–कुथितस्वस्वभावचलिते दृष्टान्तः। जीवा० २८२।

त्रिशला–वर्द्धमानस्वामिनः मातृनाम। सम० ८६।

त्रिशूल–शक्तिः। सम० १५७।

त्रिशूलानि–वरशक्तयः। जं० प्र० २१२।

त्रुटितं–वादित्रम्। जीवा० १६२।

त्रेहः–अवश्यायः। प्रज्ञा० २८। दश० १५३। जीवा० २५। उसा। नि० चू० द्वि० ८३ अ।

त्रैराशिकः–राशित्रयम्। सूर्य० १४।

त्रैराशिककरणं– । प्रज्ञा० ४८०।

त्रैराशिकाः–जीवाऽजीवनोजीवराशित्रयख्यापकाः। विशे० ६३३।

त्रैविद्यब्राह्मणः–सामज्ञो ब्राह्मणः। ओघ० २०४।

त्रैविद्यवृद्धः–वैदिकः। दश० १२७।

त्वंगनिका–बाधाविशेषः । उत्त० ७८।

त्वक्–छविः। जीवा० ११४। छल्ली। जीवा० १८७।

त्वग्विष–चर्मविषः। नंदी० १६३।

त्वचा–त्वग्विशेषः। जीवा० १३६।

त्वरितग्राहिणी– । बृ० प्र० ५८ आ।

थ

थंडिल–छारचितीवर्जितं केवलं मडयदट्ठट्ठाणं। नि० चू० प्र० १६२ आ। स्थण्डिलं उच्चारभूमिः। आव० ५७८। अचितभूमी। नि० चू० प्र० ३८ आ। यदुदयेन ह्यात्मा सदसद्विवेकविकलत्वात्स्थण्डिलवद्भवति स स्थण्डिलः–क्रोधः। सूत्र० १८०।

थंडिल्लं–स्थाण्डिल्यं–भूभागः। आव० ६४२। स्थण्डिलम्। आव० ३४८। स्थण्डिलः। आव० १६५।

थंभ–स्तम्भं जात्याद्यभिमानम्। आव० ३४६। स्तम्भः मानः। दश० २४२। स्तम्भः। आव० १६६। स्तम्भः मानः। आव० ८४८। जात्यादिसमुत्थोऽहङ्कारः। उत्त० १५१।

थंभण–ग्रीवायां धमण्यादीनां तिष्ठतो वाऽऽत्मनोऽङ्गप्रदेशानां स्तम्भनम्। प्रज्ञा० ३२६।

थंभणता–स्तम्भनता स्तम्भनया वा यथा तावदुपविष्टः स्थितो यावत् सुप्तः पादादिः स्तब्धो जातः। ठाणा० २८०।

थंभणया–स्तम्भनं ऊर्ध्वीकरणम्। ओप० ६३। स्तम्भनता–वङ्कगतेर्द्वितीयो भेदः। प्रज्ञा० ३२८। स्तम्भनता–तावदुपविष्टः स्थितो यावत्सुप्तः स्तब्धो जातः, हनुयन्त्रादि। आव० ४०५।

थंभय–स्तम्भकः–आदर्शकगण्डप्रतिबन्धप्रदेशः, आदर्शकगण्डानां मुष्टिग्रहणयोग्यः प्रदेशः। जीवा० २१३।

थंभिज्जा–स्तम्नीयात्–स्तब्धो भवेत् माद्येदित्यर्थः। ठाणा० ४७३।

थंभुग्गया–स्तम्भोद्गता–स्तम्भोपरिवर्त्तिनी। जीवा० २२७, ३५६।

थ–निपातः। आव० १३७। वाक्यालङ्कारे। ज्ञाता० १४६। निपातः पादपूरणे। बृ० तृ० १७१ आ।

थक्क–स्थितम्। ओघ० १३२। अवसरः। आव० ४००। उत्त० २१४। थक्कः–देशः। विशे० ८५२। काले। नि० चू० प्र० १७८ अ। नि० चू० प्र० ६ आ। प्रस्तावः। व्य० द्वि० १३६ आ।

थक्कारेति–थक्क इत्येवं महता शब्देन करोति। जीवा० २४८।

थक्केथक्कावडियं–अवसरे अवसरानुरूपमापतति तत्। पिण्ड० ६३।

थण–स्तनम्। आव० ७६८। स्तनम्। आव० ५७८।

थणदुद्धगंधियमुहो–बालः। नि० चू० तृ० ८० आ।

थणियकुमारा–स्तनितकुमाराः–भवनपतिभेदविशेषः। प्रज्ञा० ६६। स्तनितकुमाराः–वरुणस्याज्ञोपपातवचननिर्देशवर्त्तिनो देवाः। भग० १६६।

थणियकुमारीओ–स्तनितकुमार्यः वरुणस्याज्ञोपपातवचन–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निर्देशवर्त्तिन्यो देव्यः । भग० १६६ ।

थणियाए- । निरय० ३४ ।

थद्धं-स्तब्धं जात्यादिमदस्तब्ध-कृतिकर्मणि द्वितीयोः दोषः । आव० ५४३ । स्तब्धं-सुदृढम् । जं० प्र० २३५ । स्तब्धाय स्वभावत एव मानप्रकृत्या विनयभ्रंशकारिणे । सूर्य० २६६ ।

थपनिका- । दश० २१० ।

थप्पगा-स्थाप्या अवन्दनीयाः । बृ० प्र० ३०५ अ ।

थरथरंत-कम्पमानः । पिण्ड० १६३ । भृशं कम्पमानः । बृ० तृ० ७१ अ ।

थल-स्थलं आकाशः । ओघ० ३२ । आकाशः । वृ० तृ० १६१ आ । इह कवलप्रक्षेपणाय मुखे विडंविते यदाकाशं भवति तत् स्थलम् । व्य० द्वि० ३३३ आ । आगासं । नि० चू० प्र० ४६ आ । जलपरिहारेण स्थितो नदी-कूर्परपथः । बृ० तृ० १६२ अ । स्थलं-धुल्युच्चयरूपम् । भग० ३०७ ।

थलचर-स्थलचरः मनुष्यादिकः । दश० ५५ ।

थलपट्टणं-थलेण जस्स भंडं आगच्छति । नि० चू० द्वि० ७० आ । आनंदपुराति । नि० चू० प्र० २२६ अ । स्थलपत्तनं-यत्र स्थलपथेन भाण्डानामागमस्तद्, द्वितीयं पत्तनम् । प्रश्न० ३८ ।

थलयं-स्थलजं कोरण्टकादि । जीवा० १३६ । विचकिलादि । जं० प्र० ३६० ।

थलयरं-स्थलचरजं पुद्गलविशेषः । आव० ८५४ ।

थलयर-स्थले चरन्तीति स्थलचराः । प्रज्ञा० ४३ ।

थलाइं-स्थलानि तटभूमयः । जं० प्र० १७१ ।

थली-देवद्रोणी । नि० प्र० ७५ आ । नि० चू० द्वि० १४३ आ । वृ० प्र० १६५ अ । स्थलिका-देवद्रोणी । वृ० तृ० ६१ अ, १३० आ ।

थवइय-स्तबकवान् । ज्ञाता० ५ । औप० ७ । स्तबकितं सञ्जातपुष्पस्तबकम् । भग० ३७ ।

थवइयाओ-स्तबकिताः सञ्जातपुष्पस्तवकाः । जं० प्र० २५ ।

थवईरयणे-स्थपतिरत्नं वर्धकिरत्नम् । जं० प्र० २१० ।

थाइणी-स्थायिणी प्रतिवर्षप्रसविनी वडवा । बृ० द्वि० २३६ अ ।

थाणइल्लग-प्राहरिकः । आव० ६६० ।

थाणइल्ला-आरक्षकाः । नि० चू० द्वि० ११४ आ ।

थाणयं-स्थानम् । आव० ६० ।

थाणु-स्थाणुः । जीवा० २८२ ।

थामवं-स्थामवान् बलवान् शीतातपादिसहनं प्रति सामर्थ्यवान् । उत्त० ६५, ११० ।

थामो-प्राणः । ओघ० १८६ ।

थारुकिणिया-थारुकिनिकाः । जं० प्र० १०१ ।

थाल-स्थालः । जीवा० २३४, २७६ । जं० प्र० ४१० । थालः । जं० प्र० १०१ । स्थालं-अन्तःपरिधिरूपम् । जं० प्र० २०४ ।

थालइ-गृहीतभाण्डाः । औप० ६० । भग० ५१६ ।

थालगं-स्थालकं कोशकादि । सूत्र० ३२४ ।

थालपाणए-स्थालं भ्रष्टं तप्तानकमिव दाहोपशमहेतुत्वात् स्थालपानकम् । भग० ६८० ।

थालिपागाइ-स्थालीपाकः । जं० प्र० १२३ ।

थाली-स्थाली । आव० २०० । उषा । जीवा० १०५ । उखा । भग० ३२६ । स्याली पिठरी । सूर्य० २६३ । स्थाली-वृहद्भाजनविशेषः । ओघ० १६६ ।

थालीपागो-स्थालीपाकः । जीवा० २८१ ।

थालीपागसुद्धं-स्थालीपाकशुद्धं स्थाल्यां उखायां पाको यस्य तत्स्थालीपाकं, अन्यत्र हि पक्वमपक्वं वा न तथाविधं स्यादितीदं विशेषणं, शुद्धं-भक्तदोषवर्जितं, ततः कर्मधारयः स्थालीपाकेन वा शुद्धम् । भग० ३२६ । ठाणा० ११७ ।

थालीसंठितो-स्थालीसंस्थितः-आवलिकावाह्यस्य षष्ठं संस्थानं, उषा संस्थितः । जीवा० १०४ ।

थावग-स्थापकः विकल्पभेदः । दश० ५७ ।

थावच्चसुता-द्वारवइवणिया । नि० चू० द्वि० १०४ आ ।

थावच्चा-द्वारवत्यां गाथापत्नी । ज्ञाता० १०० ।

थावच्चापुत्ते-थावच्चापुत्रः । अनुत्त० ३ । द्वारवत्यां सार्थवाहपुत्रः । ज्ञाता० १०० । अनुत्त० ३ ।

थावते-स्थापयति पक्षमक्षेपेण प्रसिद्धव्याप्तिकत्वात् सम-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

र्थयति, यथा परिव्राजकधूर्त्ते लोकमध्यभागे दत्तं बहुफलं भवति तच्चाहमेव जानामीति मायया प्रतिग्राममन्यान्यं लोकमध्यं प्ररूपयति सति तन्निग्रहाय कश्चित् श्रावको लोकमध्यस्यैकत्वात् कथं बहुषु ग्रामादिषु तत्सम्भव इत्येवंविधोपपत्त्या स्वदर्शितो भो लोकमध्यभागो न भवतीति पक्षं स्थापितवानिति स्थापकः । ठाणा० २५४ ।

थावरं–स्थावरं अप्रतिहारिकम् । बृ० द्वि० २४४ आ । स्थावरं च यद्भवति न परकीयोपस्करवद् याचितं कतिपयदिनस्थायि । ओघ० २११ ।

थावरा–उष्णाद्यभितापेऽपि तत्स्थानपरिहारासमर्थाः सन्तस्तिष्ठन्तीत्येवं शीलाः स्थावराः पृथिव्यादयः । जीवा० ९ ।

थासग–स्थासकाः–दर्पणाकारा अश्वालङ्काराः । जं० प्र० २६५ । स्थासकाः–दर्पणकारा अश्वालङ्कारविशेषाः । जं० प्र० २३५ । स्थासकः–आदर्शकाकारः । ओप० ७० । स्थासकः–दर्पणः । विपा० ४७ । स्थासकः–दर्पणाकार आभरणविशेषः । जं० प्र० ५३० ।

थासय–स्थासकः दर्पणाकृतिः स्फुरकादिषु भवति । अनुत्त० ५ ।

थाह–जत्थ णासिया ण बुड्डुति तं थाहं । नि० चू० द्वि० ७८ आ । स्ताघं–अर्वाक् नासिकाया यत् जलं । यत्र नासिका न बुड्डुति तत् स्थाघम् । बृ० तृ० १६१ अ । स्तोघे–अगाधे । विशे० ५७५ । स्ताधः । आव० ३७४ ।

थिइ–स्त्री पुरुषादिर्वा । भग० २५३ ।

थिग्गल–आकाशथिग्गलविषयम् । प्रज्ञा २९३ । प्रदेशपतितसंस्कृतम् । आचा० ३४१ । जं घरस्स दारं पुव्वमासातपडिपूरियं दारं । दारमेव संधारवत्तं पडिढक्किययं । दश० चू० ७६ आ । थिग्गलं चित्तं द्वारादि । दश० १६६ । शकलम् । मर० । गिम्हे वातागमट्ठा गवक्खादिछिड्डु करेंति । नि० चू० प्र० २३२ आ ।

थिबुकं–बिंदुं । नि० चू० प्र० ६७ आ ।

थिबुगो–स्तिबुकः उस्सांबिंदू । आव० ८४५ ।

थिबुय–स्तिबुकम् । प्रज्ञा० ४११ ।

थिमिओदयं–स्तिमितोदकं यस्याधः कर्दमो नास्ति । औप० ९४ ।

थिमित–स्तिमितं–स्थिरं कायचापल्यादिरहितं च । प्रश्न० १३३ । स्तिमितः–अन्तकृद्दशानां प्रथमवर्गस्य पञ्चममध्ययनम् । अन्त० १ ।

थिमिया–स्तिमिता-स्वचक्रपरचक्रादिसमुत्थभयकल्लोलमालावर्जिता । जं० प्र० १४ ।

थिमियमेयणिया–स्तिमितभेदनीका निर्भयत्वेन स्थिरविश्वम्भराश्रितजना । प्रश्न० ६९ ।

थिमियमेइणीय–स्तिमितमेदनीकं – निर्भयमेदिनीनिवासिजनम् । प्रश्न० ९२ ।

थिमिया–स्तिमिता भयवर्जितत्वेन स्थिरा । ओप० १ ।

थिर–सुप्रतिष्ठानं दृढं वा । बृ० द्वि० २४४ आ । दढसंघयणो । नि० चू० प्र० ५६ अ । स्थिरः–दृढसंहननः । ओघ० ३४ । स्थिरः–असङ्ख्येयकालावस्थायी । सूत्र० ६ । स्थिरः–संहननधृतिभ्यां बलवान् । पौनःपुन्यकरणेन परिचितो वा कृतयोगः । आव० ५९३ । धितिसंघयणेहिं बलवं अहवा दरिसणे पव्वज्जाए वा थिरो अचलेत्यर्थः । नि० चू० तृ० १३१ आ । यथास्थितम् । ओघ० १०८ । अप्रकम्पः । ज्ञाता० १६ । स्थिरं च यद्भवति सुप्रतिष्ठानं तत् । ओघ० २११ । स्थैर्यं-अभ्युपगतापरित्यागः । दश० ३९ । स्थिरः निष्पन्नः । दश० २१९ । स्थिरः–धृतिसंहननाभ्यां बलवान् । व्य० प्र० ११३ अ ।

थिरइ–स्थिरति स्थिरीभवति । व्य० द्वि० १९ आ ।

थिरग्गहत्थे–स्थिरौ अग्रहस्तौ यस्य सः स्थिराग्रहस्तः । जीवा० १२१ । स्थिरः प्रकृतपटं पाटयतोऽकम्पोऽग्रहस्तो–हस्ताग्रं यस्य सः । अनु० १७५ ।

थिरपइन्नो–स्थिरप्रतिज्ञः–यो न भवितमन्यथा करोति । आव० ८६० ।

थिरपरिवाडी–स्थिरपरिपाटी स्थिरपरिचितग्रन्थस्य सूत्रं न गलति । दश० ५ । स्थिरपरिपाटिः, परिचितग्रन्थस्य सूत्रार्थगलनासम्भवात् । आचा० २ ।

थिरीकरण–स्थिरीकरणं–धर्माद् विषीदतां तत्रैव स्थापनम् । प्रज्ञा० ५६ । स्थिरीकरणं-धर्माद्विषीदतां सतां तत्रैव स्थापनम् । दश० १०२ ।

थिरुगा–अनन्तकायभेदः । भग० ३०० ।

थिल्लि-थिल्ली–वाहनविशेषः । उत्त० ४३८ । लाटानां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यदड्डुपल्लाणं रूढं तदन्यविषयेषु थिल्लीत्युच्यते । अनु० १५६ । वेसरादिद्वयविनिर्मितो यानविशेषः । जं० प्र० १२३ । थिल्ली-वेगसराद्वयविनिर्मितो यानविशेषः । सूत्र० ३३० । थिल्ली-लाटानां यदश्वपल्यानं तदन्यविषयेषु थिल्लीत्युच्यते । भग० १८७, २३७ । लाटानां यद् अड्डुपल्लाणं रूढं तदन्यविषये थिल्लिरित्युच्यते । जीवा० २८२ ।

थिल्लीओ-लाटानां यानि अड्डुपल्यानानि तान्यन्यविषयेषु थिल्लीओ । भग० ५४७ ।

थिवगा- । भग० ८०४ ।

थिविथिवंत-गुंजन् । तं० । अतिशयेन । तं० ।

थिवथिवित-अनुकरणशब्दोऽयम् । विपा० ७४ ।

थिचोरो-स्त्रियाः सकाशात् स्त्रियमेव वा चोरयति स्त्रीरूपो वा यश्चौरः स स्त्रीचौरः । प्रश्न० ४६ ।

थीणं-स्त्यानर्द्धिः स्त्याना-चैतन्यऋद्धिर्यस्यां सा स्त्याना । आव० ८४ । इद्धं चित्तं तं थीणं । नि० चू० प्र० ३६ अ ।

थी णद्धी-स्त्याना-पिण्डीभूता ऋद्धिः-आत्मशक्तिरूपा यस्यां स्वापावस्थायां सा स्त्यानर्द्धिः । प्रज्ञा० ४६७ । इत्थं चित्तं तं थीणं जस्स अच्चंत दरिसावरणकम्मोदया सा थीणद्धी । नि० चू० प्र० ३६ अ ।

थीणा-स्त्याना-पिण्डीभूता । प्रज्ञा० ४६७ ।

थीणागेद्धी- । ठाणा० ४४७ ।

थीपरिण्णा-स्त्रीपरिज्ञा-सूत्रकृताङ्गाद्यश्रुतस्कन्धे चतुर्थमध्ययनम् । आव० ६५१ । उत्त० ६१४ ।

थीपुरिससंजोए-अशुचिस्थानभेदः । प्रज्ञा० ५० ।

थीविलोअणं-स्त्रीविलोचनं तैतिलमिति वा, चतुर्थं करणम् । जं० प्र० ४६३ ।

थीहू-अनन्तकायभेदः । भग० ३०० । कन्दविशेषः । उत्त० ६६१ । भग० ८०४ ।

थुंडइ-गुच्छाविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

थुई-स्तुतिः । आव० ७६६ ।

थुडं-स्कन्धः । राज० ६ ।

थुरम- । भग० ८०२ ।

थुल्ल-स्थूलः । ओघ० २१६ ।

थुल्लतो-स्थूरः । उत्त० ३२५ ।

थुल्लसमणओ-स्थूलश्रमणकः गौतमः । आव० २८७ ।

थुवंति-स्तुयन्ते-अभिष्टूयन्ते अभिनन्द्यते । भग० ६७० ।

थूणं-लेपं । नि० चू० प्र० ३३६ अ ।

थूणा-वेली । नि० चू० द्वि० ८३ आ । स्थूणा । प्रज्ञा० २६३ । स्थूणा नगरी । आव० १७१ । स्थूणा-ऊर्ध्व-तिर्यक्करणयोगात्सङ्घातशाटविरहादुभयशून्या । आव० ४६२ ।

थूणाति- । व्य० प्र० १७ आ ।

थूणादि- । नि० चू० द्वि० ११६ आ ।

थूण ामंडव-स्थूणाप्रधानो वस्त्राच्छादितो मण्डपः स्थूणा-मण्डपः । ज्ञाता० ६३ ।

थूभं-स्तूपम् । ओघ० १३ । स्तूपः-पीठविशेषः । जं० प्र० १२३ । इट्टगादिचिया विच्चा थूभो । नि० चू० प्र० १६२ अ । स्तूपः-चितिविशेषः । प्रश्न० ८ । स्तूपः-चैत्यस्तूपः । राज० १२१ ।

थूभकरंडं-स्तूपकरण्डं ऋषभपुरे उद्यानम् । विपा० ६४ ।

थूभमहो-स्तूपमहः स्तूपसत्क उत्सवः । जीवा० २८१ । आव० ३२८ ।

थूभसंठिओ-स्तूपसंस्थितः । जीवा० २७६ ।

थूभा- । भग० २३७ ।

थूभिदे-स्तूपः-परिणामिकबुद्धा एकविंशतितमो दृष्टान्तः । नंदी० १६५ ।

थूभिया-स्तूपिका शिखरम् । राज० ३६ ।

थूभियाए-स्तूपिका-शिखरम् । जं० प्र० ४७ । जीवा० ३७६ । प्रज्ञा० ६६ । सूर्य० २६४ । स्तूपिका-लघु-शिखररूपा । जीवा० २०५, ३६० ।

थूभियागे-स्तूपिका लघुशिखररूपा । जं० प्र० ४६ ।

थूलंते-उच्चारपरिणामि । तं० ।

थूल-स्थूलः अत्यन्तमांसलोऽयं मनुष्यादिः । दश० २१७ । स्थूलं-एरण्डकाष्ठादि । दश० १४७ ।

थूलगं-परिस्थूलवस्तुविषयोऽतिदुष्टविवक्षासमुद्भवः स्थूलः । आव० ८२० ।

थूलभद्द-अन्तिमचतुर्दशपूर्वधरः । नि० चू० तृ० १४६ आ । स्थूलभद्रः-स्त्रीपरीषहे दृष्टान्तः । उत्त० १०४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

योगसंग्रहे–शिक्षाद्दष्टान्ते कल्पकवंशप्रसूतस्य नवमनन्दराजमन्त्रिशकटालस्य ज्येष्ठः पुत्रः यः शिक्षायोगवान् आचार्यो जातः । आव० ६७० । संभूअस्स सीसो । नि० चू०प्र०२४३ अ। स्थूलभद्रः–बहुश्रुतआचार्यविशेषः । उत्त० १३० । स्थूलभद्रः–कल्पकवंशप्रसूतशकटालज्येष्ठपुत्रः । आव० ६९३ । स्त्रिया अजेता मुनिः । मर० ।

थूलभद्दसामी–स्थूलभद्रस्वामी । आव० ४२५ ।

थूलवया–स्थूलं–अनिपुणं यतस्ततो भाषितया वचो यस्य सः स्थूलवचाः । उत्त० ४९ ।

थूला–स्थूला । आव० ८५५ ।

थूलेसरो–स्थूलेश्वरः–इहलोकगुणविषये व्यन्तरविशेषः । आव० ८२४ ।

थूलं–स्थूलम् । आव० ९० ।

थूहं–स्तूपम् । आव० ५०५ ।

थेज्जे–स्थैर्यधर्मयोगात् स्थैर्यः । भग० १२२ ।

थेर–पट्ठिवरिसे विसेसेणं जुन्नसरीरे । नि० चू० द्वि० ६५ अ । स्थविरः–यो गच्छस्य संस्थितिं करोति । जाति-(जन्म)श्रुतपर्यायैर्वा स्थविरः । दश० ३१ । स्थविरः–सीदतां स्थिरीकरणहेतुः । दश० २४२ । स्थविरः–श्रुतपर्यायवृद्धः । प्रवचनगुरुः । दश० २८४ । स्थविरः–जातिश्रुतपर्यायभेदभिन्नः । आव० ११९ । चरणादिएहिं दंसणातो परीसहोवसग्गेहिं वा चरणातो अतिकक्खडपच्छित्तछणेण वा भावतो ण चालिज्जति सो थिरो । नि० चू०तृ०१४३ आ । स्थेरः आचार्यो गुरुर्वा । आव०६५४ । स्थविरः–स्थविरकल्पिकः । ओघ० १६५ । धर्मंपरिणत्या निवृत्तासमञ्जसक्रियामतिः । स्थविर इव स्थविरः, परिणतसाधुभाव आचार्यः । जीवा० ४ । स्थविरः । प्रज्ञा० ३२७ । श्रुतादिभिर्वृद्धत्वात् स्थविरः । ज्ञाता० ७ । स्थविरः–श्रुतवृद्धः । भग० १३६ । जातिश्रुतपर्यायभेदभिन्नाः स्थविरः । ज्ञाता० १२३ । स्थविरः–गणधरः । दश० २५५ । स्थविरः–महावीरजिनशिष्यः श्रुतवृद्धः । भग० १०० । सीदमानान् साधून् ऐहिकामुष्मिकापायप्रदर्शनतो मोक्षमार्गे स्थिरी करोतीति स्थविरः । व्य० प्र० १७२ अ । प्रवर्त्तिव्यापारितेष्वर्थेषु यो यत्र यतिः सीदति सत् विद्यमानं बलं यस्य स सदबलः तथाभूतः सन् प्रचोदयति प्रकर्षेण शिक्षयति स स्थिरकरणात् स्थविरः । व्य० प्र० १७२ अ । स्थविरः–गच्छवासि साधुः । विशे० ८ । स्थविरः–एकसप्तत्यादिवर्षः । व्य० प्र० २४५ ।

थेरकंचुइज्ज–स्थविरकञ्चुकी–अन्तःपुरप्रयोजननिवेदकः प्रतीहारो वा । भग० ४६९ ।

थेरकप्पट्ठित–स्थविरकल्पस्थितः । आव० २९२ ।

थेरा–स्थविरा–गच्छवासिनः । बृ० प्र० २३० अ । आयरिया । नि० चू० प्र० ३०८ अ । आचार्यः । बृ० द्वि० ११२ आ । स्थविराः–आचार्याः । बृ० द्वि० २६० आ । स्थविराः–श्रुतवृद्धा गीतार्थाः । विशे० ९३८ । आचार्याः–वयःश्रुतपर्यायस्थविराः । भग० ६७५ ।

थेरी–संजतीविसेसा । नि० चू० प्र० १३२ आ । स्थविरा । आव० २२० ।

थेरोवघाई–स्थविराः–आचार्यादिगुरवः तानाचारदोषेणशीलदोषेण च ज्ञानादिभिर्वोपहन्तीत्येवंशीलः स एव चेति स्थविरोपघातिकः । सम० ३७ । स्थेरोपघाती–आचार्योपघाती, षष्ठमसमाधिस्थानम् । आव० ६५३ ।

थेव्वणं–उपमर्दनम् । बृ० प्र० २४१ आ ।

थेहा–दट्ठूणं । नि० चू० द्वि० ६३ आ ।

थोर–स्थूलः । ज्ञाता० ६८ ।

थोवंदे–स्तोकं ददस्व–स्वल्पं प्रयच्छ । ओघ० ६७ ।

थोव–स्तोकम् । भग० २८ । स्तोकः–स्वल्पः । आव० ५६८ । स्तोकः गणना प्रमाणतो हीनः तुच्छो वा । विशे० १०३७ । स्तोकः–सप्तप्राणप्रमाणः । भग० २११ । स्तोकः–सप्तप्राणा उच्छ्वासा य इति गम्यते स स्तोकः । भग० २७६ । सप्तप्राणाः उच्छ्वासनिःश्वास य इति गम्यते स स्तोकः । जं० प्र० ९० । सप्तोच्छ्वासरूपः । ज्ञाता० १०४ । सप्तानप्राणप्रमाणः स्तोकः । सूर्य० २९२ । स्तोकः–सप्तप्राणा एकः स्तोकः । जीवा० ३४४ ।

थोवय–स्तोकका:–चातकाः । ज्ञाता० २७ ।

थोवावसेस–स्तोकावशेषा–कालवेला उद्घाटावशेषा । आव० ७३२ ।

थोवेति– । ठाणा० ८५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द

दंड–प्राणिनो दण्डयतीति दण्डः परितापकारी । आचा० २७४ । दण्डनं दण्डः–अपराधिनामनुशासनम् । ठाणा० ३९९ । सूत्रार्थकरणम् । ओघ० २०२ । दण्डनं दण्डः–अतिपातात्मकः । उत्त० २९३ । आज्ञा अपराधे दण्डनं वा सैन्यं वा । ठाणा० ३४३ । विनाशनम् । सम० २५ । बाहुप्पमाणो । नि० चू० प्र० १२३ आ । अपराधानुसारेण राजग्राह्यं द्रव्यम् । भग० ५४४ । दण्डः–ऊर्ध्वाधिआयतः शरीरबाहल्यो जीवप्रदेशः । जं० प्र० २७१ । दण्डः–दण्ड इव दण्डः ऊर्ध्वाधिआयतः शरीरबाहल्यो जीवप्रदेशकर्मपुद्गलसमूहः । भग० १५४ । ज्ञाता० ३४ । तथाविधपरिक्लेशे धनहरणादिको दण्डः । ज्ञाता० ११ । दण्डः–वंशयष्ट्यादिः । कूर्परादिभिघातः । उत्त०३६४ । दण्डिकः । आव० ३६९ । दण्ड इव दण्डः–ऊर्द्धवाधिआयतः शरीरबाहल्यो जीवप्रदेशसमूहः । जीवा० २४४ । दण्डः । सामान्यग्रामाधिपः । आव० ८१९ । दण्डयति पीडामुत्पादयतीति दण्डः–दुःखविशेषः । सूत्र० १३२ । शरीरधनयोरपहारः । विपा० ६५ । दण्डयतीति दण्डः–पापोपादानसंकल्पः । सूत्र० ३०६ । दण्डनायकः । विपा० ६१ । बृ० तृ० २३६ आ । दण्डः–योगसंग्रहे आपत्सु दृढधर्मत्वदृष्टान्ते अनगारविशेषः । आव०६६७ । यमुनावक्त्रे ऋषिः । सं० । बाणघातसहो मुनिः । मर० । प्रायश्चित्तम् । व्य० द्वि० १७२ अ । दण्डः । प्रश्न० ५८ । दण्डिकः–राजदण्डधारी द्वारपालकः । उत्त० १७९ । दण्डकः । ओघ० २१८ । आव० २७३ । चतुर्हस्तमानः । अनु० १५४ । दण्डः–सङ्क्षुट्टनपरितापनादिलक्षणः । दश० १४३ । यथापराधं राजग्राह्यं द्रव्यम् । जं० प्र० १९४ । दण्डः–उत्कालः । पिण्ड० १० । दण्डः–षण्णवत्यङ्गुलप्रमाणः । भग० २७५ । दण्डो हि चतुःकर उक्तः, करश्चतुर्विंशत्यङ्गुलः एवं चतुर्विंशतौ चतुर्गुणितायां षण्णवतिः स्यादेवेति । सम० ९८ ।

दंडई–कुम्भकारकडे नगरे राया । बृ० द्वि० १५३ अ ।

दंडईरण्णो–दण्डकीराजा–जिनशत्रुराजजामाता । उत्त० ११४ ।

दंडए–दण्डकः । ओघ० २१७ ।

दंडिओ–नृपः । बृ० प्र० ३१३ आ ।

दंडकारण्यं–अरण्यविशेषः । प्रश्न० ८७ ।

दंडग–चित्रलतादण्डकैः । ओघ० ५५ ।

दंडगपमज्जणी–दण्डकप्रमार्जणी–वसतिप्रमार्जनाय रजोहरणविशेषः । बृ० द्वि० २५३ अ ।

दंडणायग–दण्डनायकः–तन्त्रपालः । राज० १४० । दण्डनायकाः–तन्त्रपालाः । जं० प्र० १९० ।

दंडणीई–दण्डनीतिः सामादिश्चतुर्विधा । जं० प्र० २५९ ।

दंडनायए–दण्डनायकः–तन्त्रपालः । औप० १४ ।

दंडनायक–प्रतिनियतकटकनायकः । प्रश्न० ७९ ।

दंडनायग–दण्डनायकः–तन्त्रपालकः । भग० ४६३ । तन्त्रपालः । भग० ३१८ । आरक्षकः । दश० १६६ ।

दंडनिक्खेवो– । आचा० ३२० ।

दंडनीई–दण्डनीतिः हक्कारमक्कारधिक्कारभेदभिन्ना । आव० ११३ ।

दंडनीति–दण्डनं दण्डः–अपराधिनामनुशासनं तत्र तस्य वा स एव वा नीतिः–नयो दण्डनीतिः । ठाणा० ३९८ ।

दंडपयारो–दण्डप्रचारः सैन्यविचरणं । दण्डप्रकारो वा आज्ञाविशेषः । प्रश्न० ७४ ।

दंडपरिहार–महती जीर्णकम्बलिका । बृ० द्वि० ११३ अ ।

दंडपहो–दण्डपथः गोदण्डमार्गः, लघुमार्गः, प्रमुखोज्ज्वलो वा । सूत्र० २३४ ।

दंडपासगो–दंडपाशकः–खरकार्मिकः । ओघ० ८९ ।

दंडप्पयारा–दण्डप्रकारः आज्ञाविशेषो नीतिभेदविशेषो वा । दण्डप्रचाराः–सैन्यविचरणम् । सम० १५३ ।

दंडफरुस–दंडपारुष्य व्यसनं अनपराधे स्वल्पे वापराधे अत्युग्रदण्डं निर्वर्त्तयति तत् । बृ० प्र० १५७ अ ।

दंडभडभोइओ–दण्डभटभोजिकः । आव० ३४४, ३७८ ।

दंडमाईया–दण्डादिका–धरणिपातच्छुत्साङ्कयुद्धप्रभृतयः । पिण्ड० १३० ।

दंडय–दण्डकिः–कुम्भकारकृतनगरे राजा । व्य० द्वि० ४३२ अ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दंडयगहियग्गहत्थो–गृहीतदंडाग्रहस्तः । उत्त० १३५ ।
दंडयत्ता–दंडयात्रा । आव० ३७८ ।
दंडरक्खो–दण्डरक्षः । आव० ४०१ ।
दंडरयणे–चक्रवर्त्तिनश्चतुर्थं रत्नम् । ठाणा० ३९८ ।
दंडवई–कटुककृतगोष्ठीदण्डोद्ग्राहकः । बृ० द्वि० १९१ अ ।
दंडवासत्थाणं–दण्डावासस्थानम् । आव० ६७१ ।
दंडवासिया–गामिया । नि० चू० प्र० १९४ अ ।
दंडविरिए–दण्डवीर्यः–पुरुषयुगे दृष्टान्तः । ठाणा० ४३० ।
दंडसंपुच्छणि–दण्डसंपुञ्छनी–दण्डयुक्ता सम्मार्जनी । जं० प्र० ३८८ ।
दंडसमादाणे–समादीयते कर्म्म एभिरिति समादानानि कर्मोपादानहेतवः, दण्डा एव मनोदण्डादयः प्राणव्यपरोपणाध्यवसायरूपाः समादानानि दण्डसमादानानि । जीवा० १२१ ।
दंडायतिते–दण्डायतिकः–प्रसारितदेहः । ठाणा० ३९७ ।
दंडादिपणगं–दंडविदंडयष्टिवियष्टिनालिकारूपं दंडादिपञ्चकम् । बृ० द्वि० २५३ अ ।
दंडायतिते–दण्डस्येवायतिः–दीर्घत्वं पादप्रसारणेन यस्य स दण्डायतिकः । ठाणा० २९९ ।
दंडिअ–दण्डिकः । आव० ९१, ६३६ ।
दंडिका–राजकुलानुगता । बृ० प्र० ६५ अ ।
दंडिखंडवसणं–दण्डिखण्डवसनम् । विपा० ७४ ।
दंडिय–दण्डिकः । ओघ० ११८ । आव० ७३८ । उत्त० १३९ । दंडिकः–करणपतिः । व्य० प्र० ६३ आ ।
दंडिया–दण्डिका–मुद्रा । बृ० प्र० ३३ आ । दण्डिकाः–अन्यराजानः । ओघ० ११९ ।
दंडो–दण्डी–कृतसन्धानं जीर्णवस्त्रम् । ज्ञाता० २०० ।
दंडीयपद– । व्य० द्वि० १५२ अ ।
दंडेइ–शकटावयवविशेषः दण्डः । षण्णवतिरङ्गुलानि । जं० प्र० ९४ ।
दंत–दान्तः–य इन्द्रियनोइन्द्रियाणि दमयति । दश० १५७ । दान्तः–उपशमं नीतः । ज्ञाता० ७० । दश० ११९ । दन्तः । आव० १९२ । गजादीनां दन्ताः । दश० १९३ । दान्तः–क्रोधादिदमनाद्दृढघन्तो वा रागद्वेषयोरन्तार्थं प्रवृत्तत्वात् । भग० १२३ । दान्तः–दमं ग्राहितः, असमञ्जसचेष्टया व्यावर्णितः । उत्त० ५३ । गुरुभिर्दमंग्राहितः विनयितः । औप० ३३ । दान्तः–इन्द्रियनोइन्द्रियदमनेन दान्तः । सूत्र० २९८ ।
दंतकम्मे–दन्तकर्म–गजविषाणविषया रूपनिर्माणक्रिया । प्रश्न० १६० ।
दंतकम्माणि–दन्तकर्माणि–दन्तपुत्तलिकादीनि । आचा० ४१४ ।
दंतकारे–शिल्पभेदः । अनु० १४९ ।
दंतखज्जुयं–मोदगासोगवट्टिमादी । नि० चू० तृ० ३७ आ ।
दंतचक्को–दंतपुरणगरे राया । नि० चू० तृ० १२८ अ । दन्तपुरे नृपः । व्य० प्र० १०७ अ । दन्तचक्रः, द्रव्यव्युत्सर्गे दन्तपुरनरेशः । आव० ७१७ । दन्तचक्रः, योगसंग्रहे निरपलापदृष्टान्ते दन्तपुरनगराधिपतिः । आव० ६६६ । दन्तचक्रो दन्तपुरनृपतिः । उत्त० ३०१ ।
दंतनिवाय–दन्तनिपातः–दशनच्छेदविधिः, संप्राप्तकामस्य षष्ठो भेदः । दश० १९४ ।
दंतपहोयणा–दन्तप्रधावनं अङ्गुल्यादिना क्षालनम् । दश० ११७ ।
दंतपुरं–दन्तपुरं द्रव्यव्युत्सर्गे नगरम् । आव० ७१७ । दन्तपुरं–योगसंग्रहे निरपलापदृष्टान्ते दन्तचक्रराज्ञो नगरम् । आव० ६६६ । णगरविसेसो । नि० चू० तृ० १२८ अ । दंतचक्करायाए नगरं । व्य० प्र० १०७ अ । दन्तपुरं–दन्तचक्रराजधानी । उत्त० ३०१ ।
दंतमणि–दन्तमणिः–प्रधानदन्तः, हस्तिप्रभृतीनां दन्तजो वा मणिः । प्रश्न० १५३ ।
दंतमाला–दन्तमालाः भरते द्रुमगणविशेषः । जं० प्र० ९८ । एकोरुकद्वीपे वृक्षविशेषः । जीवा० १४५ ।
दंतवक्के–दान्ता–उपशान्ता यस्य वाक्येनैव शत्रवः स दान्तवाक्यः चक्रवर्त्ती । सूत्र० १५० ।
दंतवणं–दन्तवनम् । ओघ० १७२ ।
दंतवाणिज्जं–दन्तवाणिज्यं–हस्तिदन्तादिक्रयविक्रयक्रिया । आव० ८२९ ।
दंतवेयणा–दन्तवेदना–दशनपीडा । भग० १९७ ।
दंतारा–शिल्पार्यभेदः । प्रज्ञा० ५६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दंताला- । नि० चू० प्र० २२ अ ।

दंतिक्कं-पुण्णो तंदुलोट्ठो । नि० चू० तृ० ३६ आ । तंदुला, सव्वं वा दंतखज्जयं । नि० चू० तृ० ३७ अ । मोदकादिकं दन्तखाद्यं तन्दुलचूर्णो वा । मोदकमण्डकादिकं यद्बहुविधं दन्तखाद्यकं तद्दन्तिकम् । बृ० द्वि० १२६ अ । तन्दुलचूर्णः । बृ० द्वि० १२६ अ ।

दंतिक्कचूण्णं-तन्दुललोट्टः । बृ० द्वि० १२६ अ ।

दंतिचंडोणं- । भग० ८०४ ।

दंतिलगं-दन्तुरः । आव० २११ ।

दंतलिया-दन्तिलिका-स्कन्ददासी । आव० २०१ ।

दंतो-साधारणवादरवनस्पतिकायविशेषः । प्रज्ञा० ३४ ।

दंतुक्खलिय-फलभोजी । औप० ६० । भग० ५१६ । फलभोजिनः । निरय० २५ ।

दंते-ददति । पिण्ड० १६२ ।

दंदिखंडो-दण्डीखण्डः । आव० ४२६ ।

दंशः-चतुरिन्द्रियजीवविशेषः । प्रज्ञा० २३ ।

दंष्ट्रा-आशी । प्रज्ञा० ४७ । क्षुल्लहिमवद्दंष्ट्रा । जीवा० १४५ ।

दंस-दर्शनं दर्शः । विशे० ५६१ । आव० ८२ । पञ्चमः परीषहः । आव० ६५६ ।

दंसणं-दर्शनं-स्वस्वविषये सामान्यग्रहणं रूपसामान्यग्रहणलक्षणम् । प्रज्ञा० ५२७ । दर्शनं-रूपम् । ज्ञाता० ११ । सामान्यविशेषात्मके वस्तुनि सामान्यग्रहणात्मको बोधः । प्रज्ञा० ४५३ । दर्शनं-आकारः । जीवा० २०७ । दर्शनं सम्यग्दर्शनम् । आव० ५८० । दश० १०१ । ओघ० ६ । दर्शनम् । आव० ७६३ । दर्शनं-सामान्यविशेषात्मके वस्तुनि सामान्यावबोधः रूपसामान्यपरिच्छेदः । जीवा० १८ । दर्शनं-सम्यक्त्वम् । ठाणा० ६५ । भग० ५१ । दर्शनं-वर्णादिपरिणतसूत्रानुसारः । दश० १७७ । दर्शनं-प्रस्थातुर्दृष्टिपथः । जं० प्र० २६२ । दर्शनं-सामान्योपलब्धिरूपं चक्षुरचक्षुरवधिकेवलाख्यम् । आचा० ६८ । दर्शनप्रतिमा श्रावकस्य प्रथमा प्रतिज्ञा । आव० ६४६ । दर्शनं-रुचिरूप आत्मनः परिणामः । भग० ३५० । अनुभवनम् । भग० ७१० । ईहावग्रहौ हि दर्शनं-सामान्यग्राहकत्वात् श्रद्धानम् । ठाणा० २३ । दृश्यन्ते श्रद्धीयन्ते पदार्था अनेनास्मादस्मिन् वेति दर्शनं-दर्शनमोहनीयस्य क्षयः क्षयोपशमो वा दृष्टिर्वा दर्शनं-दर्शनमोहनीयक्षयाद्याविर्भूतस्तत्त्वश्रद्धानरूप आत्मपरिणामः । ठाणा० २४ । दृष्टिः-रुचिस्तत्त्वानि प्रति । ठाणा० ३० । शुद्धाशुद्धमिश्रपुञ्जत्रयरूपं-मिथ्यात्वमोहनीयम् । ठाणा० १५१ । अभिप्रायो यदि वा दृश्यते यथावस्थितं वस्तुतत्त्वमनेनेति दर्शनं उपदेशः । आचा० १७१ । अभिप्रायः । आचा० २२७ । दर्शनं-रूपम् । निरय० ४ । राज० ११ । दर्शनम् । ठाणा० ३३७ । प्रमेयस्य परिच्छेदनम् । भग० ६५६ । दर्शनं-क्षायिकभावापन्नं सम्यक्त्वम् । जं० प्र० १५१ । सेवनम् । बृ० प्र० २०३ अ । दृश्यते तत्त्वमस्मिन्निति दर्शनम् । उत्त० ५५६ । दृष्टिर्दर्शनं-तत्त्वेषु रुचिः । ठाणा० ४८ । दर्शनं-प्रकाशनं उपनिबन्धनम् । सम० ११६ । आकारः । जं० प्र० ५२ ।

दंसणकसायकुसील-दर्शनमाश्रित्य कषायकुशीलो दर्शनकषायकुशीलः । भग० ८६० ।

दंसणपक्खो-दर्शनपक्षः-योऽप्रत्याख्यानकषायोदयवति श्रावके भवति । आव० ५३३ ।

दंसणपरीसह-दर्शनं-सम्यग्दर्शनं, सहनं चास्य क्रियादिवादिनां विचित्रमतश्रवणेऽपि निश्चलचित्ततया धारणम् । सम० ४८ । दर्शनपरीषहः-दर्शनं-सम्यग्दर्शनं तदेव क्रियावादिवादिना विचित्रमतश्रवणेऽपि सम्यक् परिषह्यमाणं निश्चलचित्ततया धार्यमाणं परीषहः, दर्शनं दर्शनव्यामोहहेतुरैहिकामुष्मिकफलानुपलम्भादिः स एव परीषहः । उत्त० ८३ ।

दंसणपुलाए-दर्शनमाश्रित्य पुलाकस्तस्यासारताकारी विराधको दर्शनपुलाकः । भग० ८६० ।

दंसणपुलाते-कुदृष्टिसंस्तवादिभिर्दर्शनपुलाकः । ठाणा० ३३७ ।

दंसणबलिया-परैरक्षोभ्यदर्शनाः । औप० २८ ।

दंसणमोहनिज्ज-दर्शनं मोहयतीति दर्शनमोहनीयं मिथ्यात्वमिश्रसम्यक्त्वभेदम् । ठाणा० ६७ ।

दंसणवापन्नग-दर्शनं-सम्यक्त्वं व्यापन्नं-भ्रष्टं यस्य स दर्शनव्यापन्नकः-निह्नवः । भग० ५१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दंसणविणए-दर्शनविणयः-सम्यग्दर्शनगुणाधिकेषु शुश्रूषादिरूपः । भग० ६२४ ।

दंसणविणय-दर्शनविनयः विनयस्य प्रथमो भेदः । दश० ३१ । श्रद्धानः कर्म विनयति यस्माद् दर्शनविनयः, दर्शनाद्विनयः दर्शनविनयः । दश० २४१ ।

दंसणसंकिलेसे-दर्शनस्य सङ्क्लेशः-अविशुद्धयमानता स दर्शनसङ्क्लेशः । ठाणा० ४८६ ।

दंसणसावए-दर्शनं-सम्यक्त्वं तत्प्रतिपन्नः श्रावको दर्शनश्रावकः, श्राद्धानां प्रथमा प्रतिमा । सम० १६ ।

दंसणा-दर्शना-उपदर्शका । सम० ११६ ।

दंसणायारे-दर्शनं-सम्यक्त्वं तदाचारो-निःशङ्कितादिरष्टधैव दर्शनाचारः । ठाणा० ३२५ ।

दंसणिंदे-दर्शनेन्द्रः-क्षायिकसम्यग्दर्शनी । ठाणा० १०४ ।

दंसणिज्ज-दर्शनीयं-द्रष्टुं योग्यं, दर्शनेन नृपिरसम्भवात् । सूर्य० २६४ । दर्शनीयं दर्शनयोग्यम् । प्रज्ञा० ८७ । आदेयदर्शनः । ज्ञाता ३५ ।

दंसणिड्ढी-दर्शनर्द्धिः प्रशमादिरूपा । दश० ११३ । दर्शनर्द्धिः-प्रवचने निःशङ्कितादित्वं प्रवचनप्रभावकशास्त्रसम्पद्वा । ठाणा० १७३ ।

दंसणेण अइभद्दए-भद्रदर्शनः । ज्ञाता० २२० ।

दंसमसग-दंशाश्च मशकाश्च दंशमशका, उभयेऽप्येते चतुरिन्द्रिया महत्त्वामहत्त्वकृतश्चैषां विशेषोऽथवा दंशो दंशनंभक्षणमित्यर्थः, तत्प्रधाना मशका दंशमशकाः । पञ्चमः परीषहः । सम० ४१ ।

दंसिज्जंति-उपमामात्रतः दर्श्यन्ते । सम० १०६ ।

दंसिय-दर्शिता-श्रवणगोचरं नीता उपदिष्टा । प्रज्ञा० ४ ।

दंसेइ-तदभिधेयप्रत्युपेक्षणादिक्रियादर्शनेन दर्शयति । भग० ७११ ।

दंसेति-तदभिधेयप्रत्युपेक्षणादिक्रियादर्शनेन दर्शयति । ठाणा० ५०२ ।

दइअ-दयितः । अनु० १५२ ।

दइउ-दयित-चक्खल्लाउडुओ जेण तरिज्जइ । ओघ० ३३ ।

दइए-दयितः । ठाणा० ३३६ । दयितः-वल्लभः । उत्त० ४५१ ।

दइओ-ऊर्ध्वमपाटितेनापनीतमस्तकेन निकर्षितचर्मान्तर्वर्त्तिसर्वास्थ्यादिकचवरेणापरचर्ममयस्थिग्गलकस्थगितापानच्छिद्रेण सङ्कीर्णमुखीकृतग्रीवान्तर्विवरेणाजापश्चोरन्यतस्य शरीरेण निष्पन्नश्चर्ममयः प्रसेवकः कोत्थलकापरपर्यायो दृतिः । पिण्ड १८ ।

दइत-दयितः-वल्लभः । ज्ञाता० १६७ ।

दउदरे-दकोदरं-जलोदरम् । ज्ञाता० १८३ ।

दओधसि-उदकौघे वा गङ्गादिनामुन्मार्गगामित्वेनागच्छति सति तेन प्लाव्यमानानामित्यर्थः । ठाणा० ३०६ ।

दओदराइ-दकोदरं-जलोदरम् । जं० प्र० १२५ ।

दकभवणं-उदकभवनं-उदकगृहम् । आचा० ३४१ ।

दकरय-दकरजः-उदककणः । जीवा० २७२ ।

दकवारकः-भाजनविधिविशेषः । जीवा० २६६ ।

दक्खं-दक्षस्य भावो दाक्ष्यं-अविलम्बितकारित्वम् । उत्त० ४६ । सिघ्रं करेति । नि० चू० प्र० ३३२ आ । ठाणा० ३०२ । दक्षः-कार्याणामविलम्बितकारी । औप० ६५ । जीवा० १२२ । जं० प्र० ३८८ । शीघ्रकारी । अनु० १७७ । भग० ६३१ । दक्षः-उत्तरस्यानां धरणेन्द्रस्य पादत्राणीकाधिपतिः औत्तराहाणं बलिवर्ज्जितानां दक्षो नाम्ना पदातिपतिः । जं० प्र० ४०८ ।

दक्खत्तं-दक्षत्वं-आशुकारित्वम् । आव० ३४६ । उत्त० १४४ ।

दक्खिण-दक्षिणा । आव० २०० ।

दक्खिणकूलग-यैर्गङ्गाया दक्षिणकूल एव । भग० ५१६ । दक्षिणकूलकः यैर्गङ्गया दक्षिणकूल एव वस्तव्यम् । औप० ६० ।

दक्खिणकूला-यैर्गङ्गादक्षिणकूल एव वस्तव्यम् । निरय० २५ ।

दक्खिणा-दक्षिणा । आव० ६३० । दक्षिणा-दक्षिणमथुरा । आव० ६८८ ।

दक्खिणावहो-दक्षिणापथः । आव० १७४ । बृ० द्वि० २२७ अ । दक्षिणपथः-दक्षिणादिग्विभागः । आव० ६६ ।

दक्खिण्णे-दक्षिणा । उत्त० २८६ ।

दक्खु-पश्यतीति पश्यः-सर्वज्ञः । दक्षो वा निपुणः । सूत्र०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७३ । द्रष्टा-अतीतानागतव्यवहितसूक्ष्मपदार्थदर्शी । सूत्र० ७४ ।

दक्षिण-दक्षिणपार्श्वनियुक्तत्वादनुकूलगुणत्वाद्वेति । ठाणा० २१६ । दक्षिणत्वं-सरलत्वम्, पञ्चत्रिंशद्वचनातिशये षष्ठः । सम० ६३ ।

दक्षिणपूर्व-आग्नेयकोणः । सूर्य० २२ ।

दक्षिणा-दानम् । विशे० १२५० ।

दगंगुलिगा-वक्को । नि० चू० प्र० ४५ आ ।

दग-आष्टाशीतो महाग्रहे त्रयस्त्रिंशत्तमः । जं० प्र० ५३५ । ठाणा० ७९ । दकं-अप्कायः । आव० ५७३ । उदकम् । प्रज्ञा० ३६१ । उदकं-जङ्घार्द्धप्रमाणम् । ओघ० ३२ । पाणियघरं प्रवादि । नि० चू० तृ० १० आ । उदकं-जङ्घार्द्धप्रमाणम् । ओघ० ३२ ।

दगकलसं-दककलशम् । जं० प्र० ३८९ ।

दगकुम्भयं-दककुम्भकम् । जं० प्र० ३८९ ।

दगगब्भा-दकस्य-उदकस्य गर्भा इव गर्भा दकगर्भाः-कालान्तरे जलवर्षणस्य हेतवस्तत्संसूचका इति तत्त्वमिति । ठाणा० २८७ ।

दगघट्टो-जत्थ अद्धजघा जाव उदगं । नि० चू० प्र० ३४१ आ ।

दगच्छड्डणमत्तए-उदकप्रतिष्ठापनमात्रकं-उपकरणधावनोदकप्रक्षेपस्थानम् । आचा० ३४० ।

दगतीरं-दगब्भासं । नि० चू० प्र० २६५ अ । सिंचनवीचिस्पृष्टानि न नयनहृष्टपूराणि मनुष्यादिस्थानं त्ववश्यं सिंचनवीचिस्पृष्टलक्षणानि दगतीरम् । मनुष्यास्त्रियो वा जलार्थिन आगच्छन्तः साधुं यत्र स्थितं दृष्ट्वा तिष्ठन्ति निवर्त्तं ते वा तद्दकतीरम् । बृ० द्वि० ३० अ ।

दगतुंडो-दकतुण्डः पक्षिविशेषः । प्रश्न० ८ ।

दगतूर-उदके मुरवादितूर्याणां शब्दकरणम् । बृ० द्वि० ३२ अ ।

दगथालगं-दकस्थालकं-कांस्यादिमयं जलपात्रम् । जं० प्र० ३८९ ।

दगपंचवण्णे-अष्टाशीतौ महाग्रहे चतुस्त्रिंशत्तमः । ठाणा० ७९ ।

दगपहो-जेण जणो दगस्स वच्चति सो दगपहो । नि० चू० प्र० २६५ अ ।

दगपिप्पली-हरितविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

दगभवण-उदकभवनं-पानीयगृहम् । दश० १६६ ।

दगभवनं-उदकभवनं-उदकगृहम् । आचा० ३४० ।

दगमंडवगा-दकमण्डपकाः-स्फटिकमण्डपकाः । जं० प्र० ४४ । जीवा० २०० ।

दगमंडवा-स्फाटिका मण्डपाः । राज० ७९ ।

दगमंडवो-उदकमण्डपः-उदकक्षरणयुक्तः । प्रश्न० १६३ ।

दगमग्गो-दगवाहो । नि० चू० प्र० २६५ अ ।

दगमट्टि-दकमृत्तिका-चिक्खलम् । आव० ५७३ ।

दगमट्टिआ-दकसंयुक्तमृत्तिका-विवेचकद्रव्यप्रयोगपूर्विका तद्विवेचनकलाप्युपचाराद्दकमृत्तिका । जं० प्र० १३७ । उदकमृत्तिका अचिराप्कायार्द्रीकृता मृत्तिका । आचा० २८५ । उदकप्रधाना मृत्तिका । आचा० ३२२ । चिक्खल्ला । नि० चू० द्वि० ८३ अ ।

दगमास-वासा । नि० चू० द्वि० १०९ अ ।

दगरए-उदकरजः-उदकगणाः । प्रज्ञा० ३६१ । जीवा० २१० । पानीयकणाः । जीवा० १६४ । दकरजः-उदकविन्दुः । बृ० तृ० १९२ आ ।

दगरक्खसो-उदकराक्षसः-जलमानुषाकृतिर्जलचरविशेषः । सूत्र० १६० ।

दगरय-दकरजः-श्लक्ष्णोदककणिका । आव० ४४३ ।

दगलेव-उदकलेपो-नाभिप्रमाणजलावगाहनम् । सम० ३९ ।

दगवण्णो-दकवर्णः अष्टाशीतौ महाग्रहे चतुस्त्रिंशत्तमः । जं० प्र० ५३५ ।

दगवार-उदककुम्भः-पानीयघटः । दश० १७२ ।

दगवारओ-पाणयगडुयओ । दश० चू० ७९ ।

दगवारग-दगवारकः-जलघटः । जं० प्र० १०१ ।

दगवाहो-दगमग्गो । नि० चू० प्र० २६५ अ ।

दगसंसट्ठहडा-दगसंसृष्टाहृता-उदकसम्बद्धानीता हस्तमात्रोदकसंसृष्टा वा भावना । आव० ५७६ ।

दगसीम-वेलंधरनागराजस्य चतुर्थ आवासपर्वतः । ठाणा० २२६ । दकसीमः-मनःशीलाकभुजगेन्द्रस्यावासपर्वतः जीवा० ३११ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दगसूगरिया–परिव्वायगा । नि० चू० द्वि० १७२ अ ।
दगसोआरा– । नि० चू० प्र० ३५६ आ ।
दगसोकरो–परिव्राजकः । आव० ४०० ।
दच्छतरो–सांयात्रिकयानपात्रेभ्यः सकाशात् दक्षतरो वेगवानित्यर्थः । प्रश्न० ५१ ।
दच्छिसि–द्रक्ष्यसि । आव० ५०९ । भग० ११३ ।
दट्ठा–दृष्ट्वा । व्य० प्र० २८ अ ।
दड्ढ–दाहः–कर्मदलिकदारूणां ध्यानाग्निना तद्रूपापनयनमकर्मत्वजननम् । भग० १६ । दग्धं–स्वस्वभावापनयनेन भस्मीकृतम् । आव० ५८२ । दाहः–अग्निना दार्वा(द्यर्था)दिविषयो दाहः । भग० १९ ।
दड्ढच्छवी–दग्धच्छविः–शीतादिभिरुपहतत्वक् । प्रश्न०५२ ।
दड्ढप्पइण्णो–दृढप्रतिज्ञः । भग० ६५३ ।
दड्ढिल्लयं–दग्धम् । आव० ८३९ ।
दढ–दृढः–विश्रोतसिकारहितः परीषहोपसर्गैः निष्प्रकम्पो वा । आचा० १२२ । गाढः । उत्त० ३४९ । निष्प्रकम्पम् । नंदी०४६ । षण्मासीं यावद् शक्यभोगम् । षण्मासान् यावत् ध्रियते तद् ईदृशं दृढम् । बृ० द्वि० २३८ अ । दृढं–अतिनिबिडचयापन्नम् । जीवा० १२१ ।
दढक्खमाइया–महाश्वपत्यादयः । व्य० द्वि० १७६ आ ।
दढघणू–आगामियन्यामुत्सर्पिण्यां भरतक्षेत्रे अष्टमः कुलकरः । ठाणा० ५१८ । आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां ऐरावतक्षेत्रे षष्ठः कुलकरः । सम० १५३ ।
दढधम्म–दृढो धर्म्मो यस्य, आपद्यति तत्परिणामाविचलनात् अक्षोभत्वादित्यर्थः स दृढधर्म्मेति । ठाणा० २४२ । दृढधर्म्मा य आपद्यपि धर्म्मान्न चलतीति । ठाणा० ४८४ । दृढः–स्थिरो निश्चलो धर्म्मो यस्य स । ओघ० २०२ ।
दढनेमी–दृढनेमिः–अन्तकृद्दशानां चतुर्थवर्गस्य दशममध्ययनम् । अन्त० १४ । दृढनेमिः–समुद्रविजयस्य चतुर्थः सुतः । उत्त० ४९६ ।
दढपइन्न–दृढप्रतिज्ञः । भग० ५४४, ६९५ । अन्त० ४ । विपा० ५१ । दृढप्रतिज्ञः–भव्यविशेषः । विपा० ४४ ।
दढप्पहारी–दृढप्रहारी–कौशाम्ब्यां रथिकः । उत्त० २१४ । गाढप्रहारः । ज्ञाता० २३९ ।
दढभूमि–दृढभूमिः । आव० २१६ ।
दढमित्तो–दृढमित्रः–योगसंग्रहे निरुपलापदृष्टान्ते दन्तपुरनगरे धनमित्रवणिजमित्रम् । आव० ६६६ । धणमित्तस्स आलावंतस्स वयंसो । नि० चू० तृ० १२८ अ । धणदत्तसार्थवाहस्य मित्रम् । व्य० प्र० १०७ अ ।
दढरह–निरयावलया पञ्चमवर्गेऽष्टममध्ययनम् । निरय० ३९ । भरतक्षेत्रे अतीतायामुत्सर्पिण्यां अष्टमः कुलकरः । ठाणा०५१८ । भरतक्षेत्रे अतीतायामवसर्पिण्यां अष्टमः कुलकरः । सम० १५० । शीतलजिनपिता । आव० १६१ । सम० १५१ । लोकपालाग्रमहिषीणां तृतीया पर्षत् । ठाणा० १२७ । दृढरथा–पिशाचकुमारेन्द्रस्य बाह्या पर्षत् । जीवा० १७१ ।
दढाउ–दाढादालः । जीवा० १२१ ।
दढाउणा–दृढायुरप्रतीतः । ठाणा० ४५६ ।
दढाऊ–आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां चतुर्विंशतिकायां पञ्चमतीर्थंकरस्य पूर्वभवनाम । सम० १५४ ।
दण्ड:–दुष्प्रयुक्तमनोवाक्कायलक्षणो हिंसामात्रं वा एकत्वं चास्य सामान्यनयोदेशाद् एवं सर्वत्रैकत्वमवसेयम् । सम० ५ ।
दण्डपादिका– । उत्त० ५५ ।
दण्डपालः–नगररक्षकः । उत्त० ४९५ ।
दण्डपाशिकः–राजप्रेष्यः । आचा० ३३४ ।
दण्डाः–दुष्प्रणिहितमनोवाक्कायलक्षणाः । प्रश्न० ९७ ।
दण्डिकः–राजा । ओघ० १२० ।
दण्डिवत्थं– । नंदी० १६३ ।
दतिए–वायफुण्णो दतितो । नि० चू० प्र० ४५ अ ।
दत्त–क्रीडनधात्रीदोषविवरणे सिद्धाचार्यशिष्यः । पिण्ड० १२५ । भरतक्षेत्रे आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां पञ्चमः कुलकरः । सम० १५३ । ठाणा० ३९८ । दत्तः–संगमस्थविराचार्यस्य शिष्यः । उत्त० १०८ । दत्तः–तगरानगर्यां वास्तव्यो वणिक् । उत्त० ९० । दत्तः–भद्राभिधधिग्जातीयपुत्रः धिग्जातिनृपतिः । आव० ३६९ । दत्तः–नित्यवासदृष्टान्ते सङ्गमस्थविरशिष्यः । आव० ५३६ । संगमथेराणामायरियाणं सीसो । नि० चू० द्वि० ९५ आ । कुलइरपुरे दुश्शिष्यः । मर० । निरयावलयां तृतीयवर्गे सप्तममध्ययनम् । निरय० २१. ३९ । दत्तः–समो वासुदेवः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आव० १५६। मेतार्यपिता । आव० २५५। दत्तः—रोहीटकनगरे गाथापतिः। विपा०८२। दत्तः—चम्पानगर्यां नृपतिः। विपा० ६५ ।

दत्ताणुन्नायसंवरो—दत्तं च—वितीर्णमन्नादिकमनुज्ञातं च—प्रतिहारिकपीठफलकादि ग्राह्यं, इत्येवरूपः संवरो दत्तानुज्ञातसंवरः। प्रश्न० १२३ ।

दत्ति—दत्तिः सकृद्भुक्तादिपात्रपातलक्षणा। प्रश्न० १०६ ।

दत्तिआ—दत्ता च कन्या पित्रादिना परिणीयत इति। आव० १२६ ।

दत्तिते—दत्तयः—सकृद्भुक्तादिक्षेपलक्षणा । ठाणा० २६८ ।

दत्तिय—दात्रिका। आचा० ६१ ।

दत्तिलायरिअ—आचार्यविशेषः। दशै० ७ ।

दत्ती—यत्सिक्थकमप्येकशः क्षिपति एका दत्तिः । आव० ८४४। दत्तिः—एकक्षेपभिक्षालक्षणा। औप० ३६ ।

दत्तीओ—दत्तयः—एकप्रक्षेपप्रदानरूपाः। ठाणा० १३६ । दत्तिः—सकृत्प्रक्षेपलक्षणा । ठाणा० १५० ।

दत्तेसणा—दत्तं दानं तस्मिन् एषणा—तद्गतदोषान्वेषणात्मिका दत्तैषणा। उत्त० ५६ ।

दद्दर—चीवरावनद्धं कुण्डिकादिभाजनमुखम् । जं० प्र० ५६ । दर्दरः—बहलः, दर्दराभिधानाद्रिजातश्रीखण्डो वा चपेटारूपः। ज्ञाता० ४० । घनं—चपेटाभिघातः, सोपानवीथीः। सम० १३८ । गलदर्दरः वचनाटोप इत्यर्थः । प्रश्न० ४६। दर्दरः—आच्छादनम् । आव० ६२५। बहलं चपेटाकारः । राज० ३६ । मुखे घनेन चीवरेण बन्धनम्। बृ० प्र० २६६ अ । दर्दरः—वाद्यविशेषः । जीवा० १०५। बहलः चपेटाप्रकारो वा । जीवा १६०,२२७। औप० ५ । प्रज्ञा० ८६। दर्दरः—चीवरावनद्धं कुण्किादिभाजनमुखम्। जीवा० २१४, २४४। लघुपटहः। जीवा० २६६, २६६। पर्वतविशेषः । ज्ञाता० २२२ । चन्दनोत्पत्तिस्थानिभूतः पर्वतः। जं० प्र० ४१२ । दर्दरः—निरन्तरकाष्ठफलकमयो निःश्रेणिविशेषः। पिण्ड० ११० ।

दद्दरए—दर्दरकः—मुखबन्धनं वस्त्रखण्डम्। पिण्ड० १०५।

दद्दरओवीलको—दर्दरेणोपपीडयति—जातमनो बाधं करोतीति दर्दरोपपीडकः। प्रश्न० ४६ ।

दद्दरओवीलग—दर्दरेण गलदर्दरेण—वचनाटोपेन अपव्रीडयति—गोपायन्तमात्मस्वरूपपरं विलज्जीकरोतीति स दर्दरापव्रीडकः। प्रश्न० ४६ ।

दद्दरग—दर्दरिको—यस्य चतुर्भिश्चरणैरवस्थानं भुवि स गोधाचर्मावनद्धो वाद्यविशेषः। जं० प्र० १०१ ।

दद्दरपिहण—दर्दरपिधानं—वस्त्रबन्धनम्। बृ० द्वि० २७ अ।

दद्दरमलयसुगंधे—दर्दरमलयसुगन्धः। जं० प्र० ४१० ।

दद्दरयसंठिय—दर्दरसंस्थितः—आवलिका बाह्यस्य षोडशं संस्थानम्। जीवा० १०४ ।

दद्दरियं—लिप्तम्। नि० चू० तृ० ५६ आ।

दद्दरेति—बध्नाति। नि० चू० द्वि० २२ अ।

दद्दु—दद्रुः—क्षुकुष्ठविशेषः । भग० ३०८ । जं० प्र० १७० ।

दद्दुर—मणिकारश्रेष्ठिजीवः। भक्त०। राहोः पञ्चमनाम। भग० ५७५ । देवविशेषः। ज्ञाता० १७८ । दर्दुरटः—चर्मावनद्धमुखः कलशः। प्रश्न० १५६।

दद्दुरवडिंसए—सौधर्मकल्पे विमानविशेषः । ज्ञाता० १७८ ।

दद्धू—पसिद्धं। नि० चू० प्र० १२७ आ। तब्भवो दोसो । नि० चू० प्र० १८८ आ ।

दद्रू—सप्तमं महाकुष्ठम्। प्रश्न० ३६१ । महाकुष्ठविशेषः । आचा० २३५। त्वग्रोगविशेषः। पिण्ड० ६ ।

दधिफोल्लइ— । भग० ८०३ ।

दधिघटिका— । आचा० १३८ ।

दधिघणो—दधिघनः—घनीभूतं दधि। जं०प्र० ४६। जीवा० २०५ ।

दधिमुहगपव्वया— । ठाणा० २३० ।

दधिमुहा—पर्वतविशेषः । सम० ७७ ।

दधिवासुया—दधिवासुका—वनस्पतिविशेषः। जं० प्र० ४५। जीवा० २०० ।

दधिवाहणो—दधिवाहनः—चम्पानगर्यधिपतिः । आव० २२३।

दधिहण्डिका—जाम्बुवतीरूपम्। विशे० ६११ ।

दधी—दधि । प्रज्ञा० ३६१ ।

दन्तकाष्ठ— । आचा० ३१३ ।

दन्तपुत्तलिका—दन्तकर्मणि दृष्टान्तः। आचा० ४१४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दन्तवण–दन्तपावनं–दन्तमलापकर्षणकाष्ठम् । उपा० ४ ।
दन्ता:–दशनाः । आचा० ३८ ।
दप्प–व्यायामवल्गनादिषु व्यापृततया यो निष्कारणेऽनादरेणोपस्थापनायाः स दर्पः । व्य० द्वि० ६५ अ । दर्प्पिका–या कारणमंतरेण प्रतिसेवा क्रियते सा । व्य० प्र० ४७ आ । दर्पः । मनस्विनीमानदलनोत्थो गर्वः । उत्त० ४२८ । अकत्तव्वं । नि० चू० प्र० २५ आ । दर्प्पः–देहदृप्तता । सोभाग्याद्यभिमानः । अब्रह्मणोऽष्टमं नाम । प्रश्न० ६६ । दर्प्पः–वल्गनादिः । भग० ६१६ । ठाणा० ४६४ । दर्पः–दृप्तता । भग० ५७२ ।
दप्पणं–दर्पणं अष्टममङ्गले प्रथमम् । जं० प्र० ४१६ । दर्पणकः–आदर्शकदण्डः । औप० २० । दर्पणः–दर्पणगण्डः । जीवा० १७० । प्रश्न० ८० ।
दप्पणिज्जं–दर्पणीयं–बलकरः । औप० ६५ । उत्साहवृद्धिहेतुत्वाद् दर्पणीयम् । जीवा० २७८ ।
दप्पणिज्जे–दर्प्पणीयमुत्साहवृद्धिहेतुत्वात् । जं० प्र० ११६ । दर्प्पणीयं–बलकरमुत्साहवृद्धिकरमित्यन्य इति । ठाणा० ३७५ ।
दप्पायमाणो–दर्पायमाणः । उत्त० २११ ।
दप्पिया–दप्परागदोसाणुगया दप्पिया । नि० चू० प्र० ७६ अ ।
दब्भ–समूलम् । निरय० २६ । दर्भः–मूलसहितः दर्भः । भग० २६०, ८०२ । कुशः । प्रश्न० १२८ । समूलः । विपा० ७२ । दर्भमयी । प्रश्न० १३ । अग्रभूतः । ज्ञाता० ११४ ।
दब्भकम्मताणि–दर्भकर्मान्तानि । आचा० ३६६ ।
दब्भकुरा–तृणविशेषः । प्रज्ञा० ३३ । भग० ८०२ ।
दब्भगयोइदल– । भग० ८०२ ।
दब्भपुप्फय–दर्भपुष्पः–दर्वीकरसर्पविशेषः । प्रश्न० ८ ।
दब्भा–दार्भायनं–चित्रानक्षत्रस्य गोत्रम् । जं० प्र० ५०० ।
दब्भेया–विद्याविशेषः । अन्या दर्भे–दर्भविषया भवति विद्या यथा दर्भैरपमृज्यमान आतुरः प्रगुणो भवति । व्य० द्वि० १३३ आ ।
दभियायणस्सगोत्ते– । सूर्य० १५० ।
दमओ–द्रमकः । आव० ४२१ ।
दमगभत्तं–दगभारंका तेसिं भत्तं दमगभत्तं । नि० चू० प्र० २७२ अ ।
दमगा–जे पढमं विणयं गाहेंति ते दमगा । नि० चू० प्र० २७७ अ ।
दमगो–दरिद्दो । नि० चू० प्र० ३५० अ । दरिद्रः । नि० चू० द्वि० १६७ अ ।
दमघोससुयं– । ज्ञाता० २०८ ।
दमणं–दमनं–शिक्षाग्राहणम् । प्रश्न० २२ ।
दमणको–दमनकः पुष्पजातिविशेषः । प्रश्न० १६२ ।
दमणग–हरितविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।
दमणगपुड–पुष्पजातिविशेषः । ज्ञाता० २३२ ।
दमणा– । भग० ८०२ ।
दमदंत–पांडवकौरवसाम्यवान् । मर० । दमदन्तः–हस्तिशीर्षनगरे राजा । ज्ञाता० २०८ । आव० ३६५ ।
दमसेणे–दमसेनः–कृष्णवासुदेवधर्माचार्यः । आव० १६३ ।
दमिलि–द्राविडी । भग० ४६० । ज्ञाता० ४१ ।
दमीसरे–दमिनः–उद्धतदमनशीलास्ते च राजानस्तेषामीश्वरः–प्रभुः । यद्वा दमिनः–उपशमिनस्तेषां सहजोपशमभावत ईश्वरो दमीश्वरः । उत्त० ४५१ ।
दम्मंतो–दमितः । उत्त० ५३ ।
दम्म–दम्यः–दमनयोग्यः । आचा० ३६१ ।
दम्मा–दम्यः–दमनीयः (गोरथकः) । दश० २१७ ।
दयइ–दयते–पालयति । आचा० २७५ ।
दया–देहिरक्षा, अहिंसाया एकादशं नाम । प्रश्न० ६६ ।
दयाधम्म–दयाप्रधानो धर्म्मो दयाधर्मः, दशविधयतिधर्मरूपः यतिधर्मः । उत्त० २५३ ।
दयामनका–वराकका । ओघ० १५७ ।
दर–द्रुतम् । वृ० द्वि० १०५ आ । अर्धम् । बृ० तृ० १२१ आ । अर्द्धं । नि० चू० तृ० ७७ अ । ईषद् । व्य० प्र० ४६ अ । इषत् । विशे० ५४१ । अर्धविकसितम् । विशे० ६१७ ।
दरगय–दरगत–ईषत्प्राप्तः । विशे० ३३२ ।
दरदर–शीघ्रम् । नि० चू० तृ० १६ अ ।
दरहिंडिए–अर्द्धहिण्डिते । ओघ० १०४ ।
दरि–दरी–पर्वतकन्दरा गुहा । भग० १७४ । शृगाला-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिकृतभूविवरविशेषः । भग० ६८३ । दर्य्यो-गुहाः । जं० प्र० ६६ ।

दरिअ-निम्नतरप्रदेशः. अधोग्रामादिः । भग० ४३६ ।

दरिद्दथेरा-दरिद्रस्थविराः नाम पाषण्डस्थाः । आव० २०४ ।

दरिद्दो-फल्लो । नि० चू० द्वि० ४५ अ ।

दरिमहेसु- । आचा० ३२८ ।

दरिय-दृप्तः-बलोन्मत्तः । आव० ७१६ । गर्विष्ठः । आचा० ७५ ।

दरिसण-दर्शनं सामान्यविशेषात्मके वस्तुनि सामान्यग्रहणात्मको बोधः । ठाणा० ४४७ । मतं । नि० चू० प्र० ११ आ । दर्शनं-आगमः । सूत्र० ३७ । दर्शनं-प्रकटनं, शब्दस्योच्चारणं-व्यापारणं प्रयोग इति । विशे० १११७ ।

दरिसणपुलाओ-दर्शनपुलाकः, पुलाकस्य द्वितीयो भेदः । उत्त० २५६ ।

दरिसणावरणिज्ज-दर्शनावरणीयं-दर्शनमोहनीयमभिगृह्यते । भग० ४३२ ।

दरिसणिज्जं-दर्शनीयं-दर्शनयोग्यम् । जीवा० १६१ । दर्शनीयः-नयनमनोहारी । जीवा० ३४३ ।

दरिसणिज्जा-दर्शनयोग्या, यां पश्यतश्चक्षुषी श्रमं न गच्छतः । ज० प्र० २१ । यां पश्यच्चक्षुर्न श्राम्यति । ज्ञाता० १३ ।

दरिसाओ- । नि० चू० प्र० ७ आ ।

दरिसावं-दर्शनम् । दश० १०३ । नि० चू० प्र० १५ अ । व्य० प्र० १७ अ ।

दरिसावेउ-दर्शयतु । दश० ४१ ।

दरी-कुसारातो । नि० चू० द्वि० १२६ अ । मूषिकादिकृता लध्वी खड्डा । जीवा० २८२ । जं० प्र० १२४ । शृगालादिदुष्कीर्णभूमिविशेषः । ज्ञाता० ३६ । कन्दरविशेषः । ज्ञाता० ६७ । दरी-सुरङ्गा गुफा च । आव० ६७७ । आचा० ४११ ।

दर्दरिका-गोधिका-वाद्यविशेषः । अनु० १२६ ।

दद्दर-पर्वतविशेषः । भग० ४७७ ।

दद्दरकः- : राज० ५० ।

दद्दरिका-वाद्यविशेषः । ठाणा० ३६५ ।

दर्प्पण-कार्याभावे । बृ० प्र० २२२ अ ।

दर्भ-तृणविशेषः । आचा० २८५ ।

दर्वी-वर्द्धकिः । नंदी० १६५ ।

दर्वीकरः-सर्पविशेषः । सम० १३५ । प्रश्न० १० ।

दर्शन-आर्यभेदः । सम० १३५ । दृष्टिः-चक्षुर्ज्ञानं नयमतं वा । ठाणा० १८३ ।

दर्शनतः-दर्शनग्रन्थं प्रयुञ्जानो दर्शनतः । ठाणा० ३३७ ।

दर्शनलालसं-अवलोकचलम् । आव० ७८४ ।

दर्शनविशुद्धिः- । आचा० ४१६ ।

दर्शनानि-नयाः । ठाणा० १६६ ।

दर्शनोपसम्पत्-दर्शनप्रभावनीयशास्त्रपरिज्ञानार्थमेव दर्शनोपसम्पदिति । आव० २७० । दर्शनप्रभावकसम्मत्यादिशास्त्रविषया । ठाणा० ५०१ ।

दलं-चूर्णम् । जं० प्र० ४२२ ।

दलंति-प्रयच्छति । बृ० द्वि० २८१ अ ।

दलए-दलिकं-कारणम् । भग० ६६५ ।

दलएज्ज-दद्यात् । आचा० २८० ।

दलनिकर-दलवृन्दम् । ज्ञात० १६८ ।

दलयमाणे-ददत् न कृतप्रत्युपकारो भवेदिति । ठाणा० ११६ ।

दलामि-दलयामि-तुभ्यं ददामि । ज्ञाता० ३६ ।

दलाह-ददध्वम् । उत्त० ३६१ । दत्त-प्रयच्छत । ज्ञाता० ११६ ।

दलिअं-द्रव्यं वस्तु वा । ओघ० ३७ ।

दलियं-दलिकं-परममेधावी आचार्यपदयोग्यः । बृ० तृ० १३४ आ ।

दव-द्रवः-जलम् । पिण्ड० १२ । द्रवः-परिहासः । ओप० ५१ । जीवा० १७२ । प्रज्ञा० ६६ । द्रवः-विकृतिविशेषः । आव० ८५४ । द्रवः-कर्मग्रन्थिद्रावणाद् द्रवः-संयमः । सूत्र० ३१६ । द्रव-द्रुतार्थवाचकः । बृ० प्र० १२४ अ । द्रवं-पानकम् । ओघ० ११ । पानीयः । पिण्ड० १७५ । सौवीरद्रवादिकं अलेपकृतं, दुग्धतैलवसाद्रवघृतादि च । बृ० तृ० २०६ आ । द्रवः-संयमः । आचा० ७७, १६३ । द्रव-तण्डुलधावनादि । पिण्ड ६२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दवउदगं–द्रवोदकम् । नि० चू० प्र० ४५ अ ।

दवए–द्रवति 'दुद्रुगतौ' इति धातुः, ततश्च द्रवति तांस्तान् स्वपर्यायान् प्राप्नोति-मुञ्चति वा । विशे० २४ ।

दवकारगा–द्रवकारकाः–वेलिकराः । जं० प्र० २६४ ।

दवकारिओ–परिहासकारिणीः । भग० ५४८ ।

दवगुडो–द्रवगुडः–गुडभेदः, द्रवीभूतो गुडविशेषः । आव० ८५४ ।

दवग्गिदावणया–दवाग्निदापनता–त्रयोदशं कर्मादानम् । आव० ८२९ ।

दवदव–द्रुतं द्रुतं तथाविधालम्बनं विना त्वरितम् । उत्त० ४३४ । द्रुतं द्रुतं । बृ० प्र० २८८ आ । अन्त० २० ।

दवदवचार–द्रुतद्रुतचारः विंशत्यसमाधौ प्रथमं स्थानम् । आव० ६५३ ।

दवदवचारि–द्रुतंद्रुतं चरति–गच्छति, सोऽनुकरणशब्दतो दवदवचारि, असमाधौ प्रथमं स्थानम् । सम० ३७ ।

दवदवस्सं–अब्भुयं । दुयं । दश० चू० ७६ ।

दवदव्व–द्रुतंद्रुतं त्वरितम् । दश० १६६ ।

दवरकः–सूत्रम् । जीवा० २३७ ।

दवरिका–जीवा–प्रत्यञ्चा । सूर्य० २३३ ।

दवविरोह–द्रवेण काञ्जिकेन सह विरोधः । द्रवविरोधः द्रवं–उदकं तेन निर्लेपनं करोति सागारिकपुरत इति । विनाशः । ओघ० ४८ ।

दवसील–द्रवशीलं–भासइ दुयं दुयं गच्छए य दरिउव्व गोविसासरए सव्व दुयदुयकारी फुट्टइ व ठिओवि दप्पेण । बृ० प्र० २१३ अ । द्रवशीलः–दर्पाद् द्रुतगमनभाषणादि । ठाणा० २७५ ।

दविए–रागादिभावरहितत्वाद् द्रव्यं, द्रवति–गच्छति तांस्तान् ज्ञानादिप्रकारानिति द्रव्यं । साधोरूपमानम् । दश० ८४ । द्रव्यकायः–त्र्यादिघटादिद्रव्यसमुदायः । दश० १३४ । द्रव्यकायः–रागद्वेषरहितः भिक्षुपर्यायः । दश० २६२ । द्रव्यः–द्रव्यानुयोगः । दश० ४ ।

दविए जीविय–द्रव्यमेव सचेतनादिभेदं जीवितव्यहेतुत्वाज्जीवितं द्रव्यजीवितम् । ठाणा० ७ । रागदोसविमुक्को । दश० चू० १४५ ।

दविओ– । दश० चू० ३३ ।

दवियंसि– । सूत्र० ३०७ ।

दविय–वीयं, णूमं । नि० चू० द्वि० ७० आ । द्रविकं–समुदायः । भग० ९२ । विशिनष्टि–रागद्वेषविरहाद् द्रव्यभूतः कर्मग्रन्थिद्रावणाद्वा द्रवः–संयमः स विद्यते यस्यासौ द्रविकः । आचा० ३०९ । द्रव्यं–संयमः स विद्यते यस्यासौ द्रविकः । आचा० २९२ । द्रव्यः–भव्यः–मुक्तिगमनयोग्यः । आचा० २४६ ।

दवियणुजोगे–द्रवतीति द्रव्यं तस्यानुयोगः द्रव्यानुयोगः–सदसत्पर्यालोचनारूपः । ओघ० ८ ।

दविया–द्रविका नाम रागद्वेषनिर्मुक्ताः, द्रवः–संयमः सप्तदशविधानः कर्मकाठिन्यद्रवणकारित्वाद्–विलयहेतुत्वात् स येषां विद्यते ते द्रविकाः । आचा० ७७ ।

दवियाणि–अटव्यां घासार्थं राजकुलावरुद्धभूमयः । आचा० ३८२ ।

दवियाणुओगे–अनुयोजनं–सूत्रस्यार्थेन सम्बन्धनं अनुरूपोऽनुकूलो वा योगः–सूत्रस्याभिधेयार्थं प्रति व्यापारोऽनुयोगः, व्याख्यानमिति भावः, द्रव्यस्य–जीवादेरनुयोगो–विचारो द्रव्यानुयोगः, यज्जीवादेर्द्रव्यत्वं विचार्यते स द्रव्यानुयोगः, द्रवति–गच्छति तांस्तान् पर्यायान् द्रूयते वा तैस्तैः पर्यायैरिति द्रव्यं–गुणपर्यायवानर्थः, तत्र सन्ति जीवे ज्ञानादयः सहभावित्वलक्षणा गुणाः न हि तद्वियुक्तो जीवः कदाचनापि सम्भवति, जीवत्वहानेः, तथा पर्याया अपि मानुषत्वबाल्यादयः कालकृतावस्थालक्षणास्तत्र सन्त्येवेति, अतो भवत्यसौ गुणपर्यायवत्त्वात् द्रव्यमित्यादि द्रव्यानुयोगः । ठाणा० ४८१ ।

दविल–द्रविडः–चिलातदेशनिवासीम्लेच्छविशेषः । प्रश्न० १४ ।

दव्वंतो–द्रव्यायमाणः । उत्त० २७९ ।

दव्व–द्रव्यं–वस्तु । आव० ७६८ । द्रव्यं–ओदनादि । आव० ८४४ । द्रव्यं–त्रिकालानुगतिलक्षणं पुद्गलादिवस्तु । प्रश्न० ११७ । द्रव्यं–रिक्थम् । प्रश्न० ५२ । द्रव्यं सामान्यम् । जीवा० ९८ । इह द्रव्यतस्तुल्यत्वं वदता संमूर्च्छिमसर्वप्रभेदनिर्भेदबीजं मयूराण्डकरसवदनभिव्यक्तदे-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शकालक्रमं प्रत्यवबद्धविशेषभेदपरिणतेर्योग्यं द्रव्यम्। प्रज्ञा० १८४। वर्त्तनादिलक्षणो द्रव्यकालः। आव० २५७। द्रव्यजीवितं–सच्चित्तादि। आव० ४७६। द्रव्यः–भव्यो मुक्तिगमनयोग्यः, रागद्वेषविरहाद्वा द्रव्यभूतोऽकषायी। सूत्र० १७०। सर्वात्रान्वयि सामान्यमुच्यते द्रवति–गच्छति तान् तान् पर्यायान् विशेषानिति वा द्रव्यम्। जं० प्र० २६। द्रुः सत्ता तस्या एवाऽवयवो–विकारो वेति द्रव्यम्। विशे० २५। द्रव्यं–पूर्वोपात्तं कर्म। दश० ६८। द्रव्यं–जीवाजीवभेदः। अनु० १०५। यत् सामान्य तद् द्रव्यम्। विशे० ८६६। यत्रस्थास्त उत्पद्यन्ते उत्पद्य चावतिष्ठन्ते प्रलीयन्ते च तद् द्रव्यम्। उत्त० ५५७। द्रव्यं–हिरण्यम्। नि० चू० प्र० ३५६ अ। द्रवति–गच्छति तांस्तान्पर्यायानिति द्रव्यं–अतीतभविष्यद्भावकारणं अनुभूतविवक्षितभावमनुभविष्यद्विवक्षितभावं वा वस्त्वित्यर्थः। अनु० १४।

दव्वकाल–वर्तनादिरूपो द्रव्यकालः। विशे० ८३७। ह्रस्वपार्द्धं सार्द्धम्। ठाणा० ३६८। द्रव्यकालः–वर्त्तनादिलक्षणः। दश० ६।

दव्वगुणो–द्रव्यगुणः–द्रव्यम्। आचा० ८५।

दव्वचरणं–द्रव्यचरणं भक्खणाचरणं आचरणाचरणं च। नि० चू० प्र० १ अ।

दव्वट्ट–शकटादिचक्राणामुद्धिमूले वा यो लोहमयः पट्टो दीयते स द्रव्यार्त्तः। आचा० ३५।

दव्वट्ठया–द्रव्यमेवार्थस्तस्य भावः द्रव्यत्वं वा द्रव्यार्थता। अनु०६७। द्रव्यं च तदर्थश्चेति द्रव्यार्थस्तस्य भावो द्रव्यार्थता–प्रदेशगुणपर्यायाधारता अवयविद्रव्यतेति यावत्। ठाणा० १०। द्रव्यार्थता-द्रव्यास्तिकनयमतम्। जीवा०१८३। द्रव्यमेवार्थः तात्त्विकः पदार्थः प्रतिज्ञायां यस्य न तु पर्यायाः स द्रव्यार्थः–द्रव्यमात्रास्तित्वप्रतिपादको नयविशेषः तद्भावो द्रव्यार्थता, द्रव्यमात्रास्तित्वप्रतिपादकनयाभिप्राय इति यावत्। जं० प्र० २६।

दव्वट्ठाणाउय–द्रव्यं–पुद्गलद्रव्यं तस्य स्थानं–भेदः परमाणुद्विप्रदेशिकादि तस्यायुः–स्थितिः, अथवा द्रव्यस्याणुत्वादिभावेन यत्स्थानं तद्रूपमायुः द्रव्यस्थानायुः। भग० २३६।

दव्वट्ठो–द्रवति गच्छति तान् तान् पर्यायान् विशेषानिति वा द्रव्यमिति व्युत्पत्तेर्द्रव्यमेवार्थः तात्त्विकः पदार्थो यस्य न तु पर्यायः स द्रव्यार्थः–द्रव्यमात्रास्तित्वप्रतिपादको नयविशेषः। जीवा० ६८।

दव्वणुमणं–द्रव्यगोपनम्। उत्त० २२१।

दव्वतिंतिण–द्रव्यंतितिणिकः। बृ० प्र० १२६ आ। जं अग्गीए दढं तिडितिडेति तं दव्वंतितिणं। नि० चू० तृ० ८० अ।

दव्वतित्थ–द्रव्यतीर्थं–मागधवरदामादि। आव० ४६८।

दव्वथओ–द्रव्यस्तवः–पुष्पगन्धधूपादिः। आव० ४६२।

दव्वदेवो–यो हि पुरुषादिर्मृत्वा देवत्वं प्राप्स्यति बद्धायुष्कः अभिमुखनामगोत्रो वा स योग्यत्वाद् द्रव्यदेवः। आव० ७६८।

दव्वधम्म–द्रव्यधर्मः। दश० २१। द्रव्यधर्मः–धर्मास्तिकायः तिक्तादिर्वा द्रव्यस्वभावः गम्यादिर्वा धर्मः कुतीर्थिको वा धर्मः। आव० ४६७।

दव्वपडिबद्धा–द्रव्यप्रतिबद्धा। नि० चू० प्र० १०६ आ।

दव्वपरंपरा–द्रव्यपरम्परा। दश० ४६।

दव्वपाणा–द्रव्यप्राणाः–आयुःप्रभृतयः। जीवा० १४०।

दव्वब्भूय–द्रव्यभूत भावरहितः। विशे० १३१६।

दव्वभावभासा–तत्र द्रव्यं प्रतीत्योपयुक्तौर्या भाष्यते सा द्रव्यभावभाषा। भावभाषाभेदः। दश० २०८।

दव्वभावसंकोयणपयत्थो–द्रव्यसङ्कोचनं करशिरःपादादिसङ्कोचः, भावसङ्कोचनं विशुद्धस्य मनसो नियोगः, द्रव्यभावसङ्कोचनप्रधानः पदार्थः द्रव्यभावसङ्कोचनपदार्थः। आव० ३७६।

दव्वभिक्खु–क्रियाविशिष्टविदारणादिदारुसमन्विद्धो, द्रव्यं भिनत्तीति कृत्वा। द्रव्यभिक्षुः–अपारमार्थिकः। दश० २६०।

दव्वभूतो–अणुवओत्तो, भावशून्येत्यर्थः। नि० चू० प्र० ६४ अ।

दव्वमंद–द्रव्यमन्दः–अतिस्थूलोऽतिकृशो वा। आचा०७०।

दव्वमूढो–बाहिरितो धूमेणाकुलितो मुज्झति, अंतो धत्तूरगेण मदणकोद्दवोदमेण वा भुत्तेण मुज्झति। जो वा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुव्वदिट्ठं दव्वं कालंतरेण दिट्ठम्मि ण याणति सो दव्व-मूढो । नि० चू० द्वि० ४१ आ ।

दव्वरूवं–यत् मनःपर्याप्तिनामकर्मोदयतो मनःप्रायोग्य-वर्गणादलिकमादाय मनस्त्वेन परिणमनं तत् द्रव्यरूपं मनः । प्रज्ञा० ३११ ।

दव्वलेसं–द्रव्यलेश्यावर्णः । भग० ५७४ ।

दव्ववग्गण–समानजातीयद्रव्याणां राशिर्द्रव्यवर्गणा । भग० २४ ।

दव्वविसेसो–द्रव्यविशेषः–द्रव्यपरिणामः । भग० २३७ ।

दव्वविहंगम–धारयत्येवं तद्द्रव्यं यस्तं द्रव्यविहङ्गमं इति, द्रव्यं च तद् विहङ्गमश्चेति द्रव्यविहङ्गमः । दश० ६६ ।

दव्वसंकोयणं–द्रव्यसङ्कोचनं करशिरःपादादिसंकोचः । जं० प्र० १० । आव० ३७६ ।

दव्वसम्म–यथा अवयवलक्षणनिष्पत्तेः कर्तुः तन्निमित्तचि-त्तस्वास्थ्योत्पत्तेः यदर्थं वा कृतं तस्य शोभनानुकरणतया समाधानहेतुत्वाद्वा द्रव्यसम्यग् । आचा० १७५ ।

दव्वसाम–द्रव्यसाम । उत्त० ५३३ ।

दव्वसारो–द्रव्यसारः–द्रव्यलक्षणसारः, परिग्रहस्य दशमं नाम । प्रश्न० ६२ ।

दव्वसीले–तच्छीलः–यो हि फलनिरपेक्षस्तत्स्वभावादेव क्रियासु प्रवर्त्तते सः तच्छीलः–द्रव्यशीलः, प्रावरणाभरण-भोजनादिषु । सूत्र० १५३ ।

दव्वसुद्धं–द्रव्यशुद्धं दव्यतः शुद्धेन प्राशुकादिनेति । विपा० ६२ । द्रव्यं–ओदनादिकं शुद्धं उद्गमादिदोषरहितं यत्र दाने तत् । भग० ६६१ ।

दव्वहलिया–कुहणविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

दव्वापाय–अपायस्य प्रथमः प्रकारः । द्रव्यादपायो द्रव्या-पायः, अपायः–अनिष्टप्राप्तिः द्रव्यमेव वा अपायो द्रव्य-पायः अपायहेतुत्वादित्यर्थः । दश० ३५ ।

दव्वाभिओगो–द्रव्याभियोगः–द्रव्यसंयोगजश्चूर्णः । ओघ० १६३ ।

दव्वाभिग्गहचरए–भिक्षाचर्यायास्तद्वनश्चाभेदविवक्षणाद् द्र-व्याभिग्रहचरको भिक्षचर्या । भग० ६२१ ।

दव्वायंके–द्रव्यातङ्कः–आतङ्कभेदः । आचा० ७५ ।

दव्वायार–आचरणं आचारः, द्रव्यस्याचारो द्रव्याचारः, द्रव्यस्य यदाचरणं तेन तेन प्रकारेण परिणमनमित्यर्थः । दश० १०१ ।

दव्वासण्णं–द्रव्यासन्नं–जं धवलघरआरामाईणं आसण्णे वोसिरइ । ओघ० १२३ ।

दविंदियाइं–द्रव्येन्द्रियाणि – निर्वृत्त्युपकरणलक्षणानि । भग० ८७ ।

दविसोत्थिक– । भग० ८०२ ।

दव्वी–दर्वी–फणा । जीवा० ३६ । प्रज्ञा० ४७ । दर्वी–लघीयान्–दारुहस्तकः । पिण्ड० ८४ । दर्वी–डोवसदृशा । दश० १७० । हस्तिविशेषः । प्रज्ञा० ३३ । दर्वी । आचा० ३४२ ।

दव्वीकरा–दर्वीकराः–फणभृतः । प्रश्न० ३७ । दर्वीव दर्वी–फणा तत् कारणशीला दर्वीकराः, अहिभेदविशेषः । प्रज्ञा० ४६ ।

दव्वुवहाण–उप–सामीप्येन धीयते–व्यवस्थाप्यत इत्युप-धानं द्रव्यभूतमुपधानं द्रव्योपधानम् । आचा० २६७ ।

दव्वोवरम–द्रव्योपरमः–द्रव्यान्यथात्वम् । भग० २३६ ।

दव्वोवाय–द्रव्योपायः, उपायभेदः । दश० ४० ।

दव्वोसह–द्रव्यौषधं पिप्पल्यादि । दश० १६३ ।

दशकन्धरः–रावणः । प्रश्न० ८७ ।

दशदशकिकायाः–शतम् । व्य० द्वि० ३४७ आ ।

दशधासामाचारी–इच्छामिच्छेत्यादिका । ओघ० १ ।

दशरथः–अयोध्याधिपतिः, रामपिता । प्रश्न० ८७ ।

दशविध–चक्रवालसमाचारो, सामाचारीविशेषः । व्य०प्र० १६ आ ।

दशा–दशाध्ययनप्रतिबद्धा ग्रन्थपद्धतयः । प्रश्न० १ ।

दशारादयः–कुरूपागतश्रीपार्श्वनाप्रणयभङ्गकारिणः । दश० २४७ ।

दशार्णकूटवत्तिनि– । आचा० ४१८ ।

दशार्णभद्रः–दशार्णपुरे राजा । ठाणा० ५१० ।

दसंग–दशानामङ्गानां समाहारो दशाङ्गी । उत्त० १८७ । दशाङ्गानि–भोगोपकरणानि वक्ष्यमाणान्यस्येति दशाङ्गः । उत्त० १८७ ।

दस–दशा–भागः । उत्त० १४४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दसउरं-दशपुरं, प्रद्योतनमोचने नगरम् । उत्त० ९६ । दशपुरं सप्तमनिह्नवोत्पत्तिस्थानम् । विशे० ९३४ ।

दसउरनगर-दशपुरनगरं-आर्यरक्षितदीक्षानगरम् । विशे० १००२ ।

दसकालिअं-दशवैकालिकम् । आव० ६१ ।

दसगुण-दशगुणः-एकगुणकालापेक्षया दशाभ्यस्तः । ठाणा० ५२७ ।

दसण्णकूड-दशार्णकूटं-गजाग्रपदोत्पत्तौ यत्र महावीरस्स समवसरणं जातम् । आव० ६६९ । दशार्णकूटः-पर्वतविशेषः । आव० ३५९ ।

दसण्णपुरं-दशार्णपुरं दशार्णभद्रराजधानी । आव०३५९ । दशार्णपुरं यत् परावर्त्य एडकाक्षनाम नगरं जातम् । आव० ६६९ ।

दसण्णभद्दो-दशार्णभद्रः दशार्णपुरनगरे राजा । आव० ३५९ । दशार्णभद्रः-गजाग्रपदोत्पत्तिविषये दशार्णपुरनगराधिपतिः । आव० ६६९ ।

दसण्ण-दशार्णः, देशविशेषः । उत्त० ४४८ ।

दसण्णा-दशार्णाः जनपदविशेषः । प्रज्ञा० ५५ ।

दसतोण-औषधिविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

दसदसमिया-दशदशमिका-भिक्षुप्रतिमाविशेषः । अन्त० २९ । दश दशमानि दिनानि यस्यां सा दशदशमिका । सम० १०० ।

दसद्धवण्णं-दशार्द्धवर्णं-पञ्चवर्णम् । जं० प्र० ९८ । दशार्द्धवर्णं-कुसुमविशेषः । आव० २३१ ।

दसधणू-निरयावल्यां पञ्चमवर्गे एकादशममध्ययनम् । निरय० ३९ । ठाणा० ५१८ । ऐरवतक्षेत्रे आगामिन्या मुत्सर्पिण्यां षष्ठः कुलकरः । सम० १५३ ।

दसपलयं-दशपलमानम् । आव० १९४ ।

दसपुर-दशपुरम् । ठय० द्वि० ३१९ आ । णगरविसेसो । नि० चू० द्वि० १०९ अ । दशपुरं-आर्यरक्षितविहारस्थानम् । उत्त० १७३ । दशपुरं-पुरविशेषः । आव० २९२ । सोमदेवब्राह्मणवासतव्यं नगरम् । आव० २९६ । दशपुरं-अबद्धिकनिह्नवोत्पत्तिस्थानम् । आव० ३१२ ।

दसपुरोहेसे- । नि० चू० प्र० ३४९ आ ।

दसमुद्दिताणंतकं-दशमुद्रिकानन्तकं - हस्ताङ्गुलिसम्बन्धिमुद्रिकादशकम् । जीवा० २५३ ।

दसमुद्दियाणंतयं-दशमुद्रिकानन्तकं - हस्ताङ्गुलिमुद्रिकादशकम् । भग० ४७७ ।

दसरह-निरयावल्यां पञ्चमवर्गे सप्तममध्ययनम् । निरय० ३९ । भरतक्षेत्रेऽतीतायामवसर्पिण्यां नवमः कुलकरः । सम० १५० । दशरथः-नारायणबासुदेवपिता । सम० १५२ । आव० १६३ । भरतक्षेत्रेऽतीतायामुत्सर्पिण्यां नवमः कुलकरः । ठाणा० ५१८ ।

दसहा-दशधा, समाचारीभेदाः । विशे० ८४१ । दशविधा-इच्छाकारादिलक्षणा सामाचारी । आव० २५८ ।

दसहासामायारी -इच्छाकारमिथ्यादुष्कृतादिदशविधसाधुसमाचाररूपा दशधा सामाचारी । विशे० ८४२ ।

दसा-दशा । आव० ६१ । अनुभागेन युक्तो विभागो दशा । नि० चू० द्वि० २८ आ । दशा-वर्त्तिः । जं० प्र० १०२ । दशा-अवस्थाश्चरितगतिसिद्धिगमनलक्षणा । नंदी० २०८ ।

दसाउ-वर्षदशकप्रमाणः कालकृता अवस्थाः । ठाणा० ५१९ । दशाधिकाराभिधायकत्वादियं दशा इति । ठाणा० ५०६ ।

दसार-दशार्हाः-समुद्रविजयादयो दशबसुदेवान्ताः । सम० १३२ । दशाराः-वासुदेवाः । सम० १५६ । दशारः-त्रिपृष्ठवंशः । आव० १६७ । दशार्हाः-बलदेववासुदेवाः । वासुदेवाः । जं० प्र० १६६ । वासुदेवः । ज्ञाता० २२० ।

दसारकुलनंदणो-दशारकुलनन्दनः । ओघ० १७९ ।

दसारचक्क-दशार्हचक्रं-यदुसमूहः । उत्त० ४९० ।

दसारवग्ग-दशारवर्गः-दशारसमुदायः हरिवंशराजानः । दश० ३६ ।

दसारसीह-दशारसिंहः-अरिष्टनेमिपितृव्यपुत्रः । प्रधानदर्शनवतोऽपि चारित्रेण विनाऽवरगतिप्राप्तिः । आव० ५३२ । दशार्हसिंहः-कृष्णः । उत्त० ६९ ।

दसारा-दसाराः-समयभाषया वासुदेवाः । ठाणा० ७६ । दशाराः-हरिवंशकुलोद्भवाः । सूत्र० २६९ । दशार्हाः-समुद्रविजयादिकाः । अन्त० २ । ज्ञाता० १००,२२० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दशार्हाः-उत्त० ४९२ ।

दसुगाययणाणि-दस्यूनां-चौराणामायतनानि-स्थानानि । आचा० ३७७ ।

दसुय-दस्युः-देशप्रत्यन्तवासी चौरः । उत्त० ३६६ ।

दसेज्ज-दशेत् । आव० ४०५ ।

दस्युः-अदत्तहारः । आचा० १२३ ।

दह-ह्रदः-नद्यादीनां निम्नतरः प्रदेशः । उपा० १० । ह्रदः-पद्मह्रदादि । प्रज्ञा० ७२ । ह्रदा । प्रज्ञा० २६७ । भग० ९२, २३७ । सूत्र० ३०७ । ज्ञाता० ३६ ।

दहगालणं-ह्रदगलनं-ह्रदस्य मध्ये मत्स्यादिग्रहणार्थं भ्रमणं, जलनिःसारणं वा । विपा० ८० ।

दहण-शरीराद्यवयवस्य वाताद्यपनयनार्थं दहनम् । आचा० ५० ।

दहनं-केवलिसमुद्घातध्यानाग्निना वेदनीयस्य भस्मसात्करणं, शेषस्य च दग्धरज्जुतुल्यत्वापादनम् । आचा० २९८ ।

दहपती-ह्रदपतिः-नदप्रधानो महाह्रदः । प्रश्न० ९६ ।

दहपवहणं-ह्रदपवहणं-ह्रदजलस्य प्रकृष्टं वहनम् । विपा० ८० ।

दहमलणं-ह्रदमलनं ह्रदस्य मध्ये पौनःपुन्येन परिभ्रमणं, जले वा निःसारिते पङ्कमर्दनं थोहरादिप्रक्षेपेण ह्रदजलस्य विक्रियाकरणम् । विपा० ८० ।

दहमह-ह्रदमहः-ह्रदसत्क उत्सवः । जीवा० २८१ । आचा० ३२८ ।

दहमहणं-ह्रदमथनं-ह्रदजलस्य तरुशाखादिभिर्विलोडनम् । विपा० ८० ।

दहवतीओ- । ठाणा० ८० ।

दहवहणं-ह्रदवहनं-स्वत एव ह्रदाजलनिर्गमः । विपा० ८० ।

दहाति-द्रहाः-ह्रदः । ठाणा० ८६ ।

दहावई-द्रहावती, कुण्डनाम । जं० प्र० ३४६ ।

दहावती-द्रहा-अगाधजलाश्रयाः सन्त्यस्यामिति द्रहावती महानदीनाम । जं० प्र० ३४६ ।

दहिकूरं-दधिकूरम् । आव० ४३४ ।

दहिघणे-दधिघनः-दधिपिण्डः । प्रज्ञा० ३९१ ।

दहिफोल्लइ-वल्लीविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

दहिमुहे-दधिमुखाः-प्रत्येकमञ्जनकानां दिक्चतुष्टयव्यवस्थितपुष्करिणीमध्यवर्त्तिनः षोडशेति । ठाणा० ४८० । दधिमुखः-वरुणस्य पुत्रस्थानीयो देवः । भग० १९९ । दधिमुखाः-दधिवदुज्वलवर्णं मुखं-शिखरं रजतमयत्वाद् येषां ते । जं० प्र० १६३ । पर्वतविशेषः । ज्ञाता० १५५ । दधिमुखाः-अञ्जनकचतुष्टयपार्श्ववर्त्तिपुष्करिणीषोडशमध्यभागवर्त्तिनः पर्वताः । प्रश्न० ९६ ।

दहियं-दधि । आव० १९८ ।

दहिवण्णे-धर्मनाथजिनस्य चैत्यवृक्षः । सम० १५२ ।

दहिवन्न-दीपकुमारस्य चैत्यवृक्षः । ठाणा० ४८७ । भग० ८०३ । दधिपर्ण-वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

दहिवासुया-दधिवासुका-वनस्पतिविशेषः । राज० ८० ।

दहिवाहणो-दधिवाहनः-चम्पानगर्यां नृपतिः । उत्त० ३०० । दधिवाहनः-द्रव्यव्युत्सर्गे चम्पानरेशः करकण्डुपिता च । आव० ७१६ ।

दाइंति-दर्शयन्ति । बृ० प्र० १०४ आ ।

दाइंतुच्चाराई-उच्चारप्रश्रवणस्थानानि । ओघ० ७७ ।

दाइ-विकल्पार्थो निपातः । बृ० द्वि० २४१ आ । अभिप्रायदर्शनम् । नि० चू० प्र० १३८ अ ।

दाइआ-दर्शिता । आव० १५१ । दायिका-गोत्रिकाः । जं० प्र० १४२ ।

दाइओ-दर्शितः । आव० ३९८ ।

दाइगो-दायादः । आव० ४८७ ।

दाइतो-दर्शितः । उत्त० ३०३ ।

दाइय-दर्शितम् । आव० ६४, ७०० । दायदाः-पुत्रादयः । ज्ञाता० ५१ ।

दाइयविप्परद्धो-दायादघाटितः । आव० ५५७ ।

दाउं-स्वहस्तेन दातुम् । व्य० प्र० २२७ आ ।

दाए-दानम् । ज्ञाता० ३९ ।

दाएइ-दर्शयति । आव० १६७ ।

दाएज्जसु-दर्शयेः । उत्त० २१६ ।

दाएति-दर्शयति । आव० ३४८ ।

दाएह-दर्शयत । उत्त० १०० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दाकलसं–कलशस्तु लघुतरः । भग० ६८४ ।
दाकुंभग–इह कुम्भो महान् । भग० ६८४ ।
दाक्षपानक–पानकभेदः । आचा० ३४६ ।
दाडिमं–फलविशेषः । प्रज्ञा० ३६५ । भग० ८०३ ।
दाढा–दंष्ट्रा–आसीः । आव० ५६६ । दंष्ट्राः–आस्यः । आव० ५६६ । सक्थि । जं० प्र० १६२ ।
दाढि–दंष्ट्रा–दशनविशेषः । प्रश्न० ८ ।
दाढिआलि–दाढिकालि–सदशवस्त्रपरिधानरूपा दृश्यमाना धौतपोतं वा । बृ० द्वि० २२० अ ।
दाढिगालो–दंष्ट्रागाली, दुष्प्रतिलेखितदूष्यपञ्चके पञ्चमो भेदः । आव० ६५२ । ठाणा० २३४ ।
दाढिग्गाए–उत्तरौष्ठस्य । भग० ६८४ ।
दाढीयालो–घोयपुत्ती । नि० चू० द्वि० ६१ अ ।
दाढुड्डिअ–उद्धृतदंष्ट्र–उत्खातदंष्ट्रम् । दश० २७६ ।
दाणंतराइए–यदुदयवशात् सति विभवे समागते च गुणवति पात्रे दत्तमस्मै महाफलमिति जानन्नपि दातुः नोत्सहते तद्दानान्तरायम् । प्रज्ञा० ४७५ ।
दाणं–दानं–अशनादिप्रदानम् । आव० ६०४ । दानं–लब्धस्यान्नादेर्ग्लानादिभ्यो वितरणम् । प्रश्न० १२६ । दानं–स्वपरानुग्रहार्थमर्थिने दीयत इति दानम् । सूत्र० १५० दानं–दानं श्राद्धकः । ओघ० ४७ ।
दाणकम्मे–दानकर्म–अङ्कनार्थं गिरिकरक्तसूत्रेण रेखादानम् । जं० प्र० २०६ ।
दाणट्ठा–दानार्थं–साधुवादनिमित्तं यो ददाति । दश० १७३ ।
दाणमाणसंगहिया–दानमानसंगृहीता । आव० ६७७ ।
दाणमाणसंगहीता–दानमानसंगृहीता । आव० ३४६ ।
दाणरुई–दानरुची । आव० ११० ।
दाणव–दानवाः–भुवनपतयः । उत्त० ४३० ।
दाणवयं–दानव्रतं–वितरणनियमः । प्रश्न० ३२ ।
दाणविप्पणासो–दानविप्रणाशः – दत्तापलापः । प्रश्न० १२५ ।
दाणसट्ठ–दाणरूयी । नि० चू० प्र० १६६ आ, २८२ अ ।
दाणा–दाणसट्ठा । नि० चू० प्र० ८६ आ ।
दाणामा–दानमयी । भग० १७४ ।
दाणि–इदानीं–सम्प्रति । भग० १७६ । इदानीम् । मर० । इदानीम् । उत्त० ३८७ ।
दाणिसि–देशीयभाषयेदानीम् । उत्त० ३८७ ।
दाण्डपाशिकः– । नंदी० १६३ ।
दातारी– । नि० चू० द्वि० १७० अ ।
दाथालगं–उदकार्द्रं–स्थालकम् । भग० ६८० ।
दाथालय–उदकार्द्रं स्थालकम् । भग० ६८४ ।
दानं–शुद्धिः । भग० ७६६ । शिष्येभ्यो निसर्गः । आव० ६८ । अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गः । तत्त्वा० ७–३३ ।
दानव–भवनपतिदेवविशेषः । ठाणा० ३५६ ।
दानश्राद्ध–श्रावकविशेषः । उत्त० ६६७ । आव० ८४६ ।
दाम–पुष्पदामं रत्नविचित्रम्, चतुर्दशस्वप्ने पञ्चमः स्वप्नः । आव० १७८ । ज्ञाता० २० ।
दामओ–रज्जुः । आव० १८८ ।
दामकं–दामकं–रज्जुमयपादसंयमनम् । प्रश्न० ५६ ।
दामगंठी–दामग्रन्थिः–रज्जुग्रन्थिः । आव० ८२० ।
दामड्ढो–कुञ्जरानीकाधिपतिविशेषः । ठाणा० २०३ ।
दामणि–दामनी–पशुबन्धनम् । सूर्य० १३० ।
दामणिसंठिते–दामनिसंस्थितम् । सूर्य० १३० ।
दामणी–दामनिः–पशुरज्जुसंस्थानम् । जं० प्र० ५०१ । प्रश्न० ८४ ।
दामण्णगो–दामन्नकः–परलोकफलविषये मणिकारश्रेष्ठिपुत्रस्य उदाहरणम् । आव० ८३३ ।
दामनो–द्वात्रिंशतलक्षणेषु लक्षणम् । जीवा० २७६ ।
दामा–दामा–पाशकविशेषः । विपा० ५६ ।
दामिओ–दामितः । आव० ३६६ ।
दामिणि–दामिनी । प्रश्न० ७० । गवादीनां बन्धविशेषभूता रज्जुः । भग० ७१२ ।
दाय–दायः–सामान्यदानम् । औप० ६ । दानम् । विपा० ७७ । पर्वदिवसादौ दानम् । ज्ञाता० ८३ । दायं–धनविभागम् । जं० प्र० १४२ ।
दायग–दायकं–दायकदोषदुष्टं, षष्ठ एषणादोषः । पिण्ड० १४७ । दाता–बालवृद्धाद्ययोग्यः । एषणादोषायाः षष्ठो भेदः । आचा० ३४५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दायगसुद्ध–दायकशुद्धं–यत्र दाता औदार्यादिगुणान्वितः । विपा० ९२ । यत्राशंसादिदोषरहितत्वात् दायकः शुद्धः । भग० ६६१ ।

दायणा–निर्वचनरूपा दापना । विशे० ११५३ । दापना दर्शना दापना वा, प्ररूपणाविशेषः । आव० ३८२ ।

दायणे–दर्शयति । ओघ० ५३ ।

दारं–अपत्यादिसमुदाओ । नि० चू० प्र० १४७ आ । द्वारम् । जीवा० २६९ । द्वारं–प्रासादादीनाम् । जीवा० २५८ । प्रश्न० ८ । द्वारं–प्रतोलिः । आव० १३६ । ज्ञाता० ८१ । द्वारं–उपायः । प्रश्न० ११२ । द्वारं–प्रवेशमुखम् । प्रश्न० १३६, दश० १४ । द्वारं–व्याख्यान-मुखम् । उत्त० ७३ । द्वारं–प्राकारद्वारिकाः । औप० ३ । द्वारम् । ओघ० २३ । द्वारं–खडक्किका । भग० २३८ । द्वारं–ग्रामस्य मुखं, ग्रामप्रवेशः । बृ० द्वि० १ अ । द्वारं–विजयादि । प्रज्ञा० ७१ । द्वारं–प्रवेशमुखम् । दश० ४ । द्वारं–शाखामयम् । दश० १८४ ।

दारए–दारयति–स्फोटयति । ज्ञाता० ८१ ।

दारगरूवं–दारकरूपम् । आव० ३५३ ।

दारगसाला–लेखशाला । बृ० द्वि० १०७ अ ।

दारगोउर–गोपुरद्वाराणि । सम० १३८ ।

दारचेडाओ–द्वारपिण्ड्यौ–द्वारशाखे । जं० प्र० ४८ ।

दारपाए–द्वारपातः–रन्ध्रकरणम् । पिण्ड० ९४ ।

दारपिंडी–द्वारपिण्डी–द्वारशाखा । जीवा० ३५९ ।

दारवालो–द्वारपालः । आव० १७३ ।

दारसाहा–द्वारशाखा–द्वारपिण्डी । जीवा० ३५९ ।

दारा–अणुओगा । नि० चू० तृ० ७९ आ । द्वाराणीव द्वाराणि–प्रवेशमुखानि, एकस्थानकाध्ययनपुरस्यार्थाधिग-मोपाया इत्यर्थः । ठाणा० ४ । द्वाराणि-उपायाः । ठाणा० ३१६ । अर्थागमस्योपायः । सम० ११ । द्वाराणि । अनु० १७१ ।

दाराइं–प्रवेशमुखानि । जं० प्र० ५ ।

दारिद्दं–दरिद्रता । नंदी० १५५ ।

दारिय–दारिका–डिक्करिका । आचा० ४१३ । दारिका । आव० ३७१ ।

दारुआ–दारुकं–काष्ठकम् । जं० प्र० ३६ ।

दारुए–दारुकः । उत्त० ३७९ । दारुकः–अन्तकृद्दशानां तृतीयवर्गस्य द्वादशममध्ययनम् । अन्त० ३ ।

दारुकम्मगारो–दारुकर्मकरः–वर्धक्यादिः । दश० २६० ।

दारुग–दारुकं–काष्ठम् । उत्त० ४१३ । दारुकः । उत्त० ११८ ।

दारुगदंडे–दारुदण्डकम् । बृ० प्र० १७३ आ ।

दारुण–दारुणं–अनिष्टम् । दश० २३२ । रौद्रः । ज्ञाता० ८० । असह्यम् । आचा० १९४ । दारुणसीलं–दारुणं कक्कसं वा । दश० चू० १२३ ।

दारुणपरिणामो–दारुणपरिणामः–पापानां कर्मणां चौर्यादि कृतानामशुभविपाकः । दश० ११३ ।

दारुणा–दारयन्ति जनमनांसीति दारुणाः–विलपिताऽऽक्र-न्दितादयः । उत्त० ३०८ । दारयन्ति मन्दसत्वानां संयमविषयां धृतिमितिदारुणाः । उत्त० ११२ ।

दारुते–दारुकः–वासुदेवस्य पुत्रः, अरिष्टनेमिनाथस्य शिष्यः । ठाणा० ४५७ ।

दारुदंडयं–अग्रभागे ऊर्णिकादशायुतो दण्डः, दण्डस्याग्रभागे ऊर्णिकादशिका बध्यन्ते तत् दारुदण्डकम् । बृ० तृ० १०३ अ ।

दारुपव्वय–दारुनिर्मापित इव पर्वतकः दारुपर्वतकः । जीवा० २०० ।

दारुपव्वयगा–दारुनिर्मापिता इव पर्वतकः । जं० प्र० ४४ ।

दारुमडे–भरतक्षेत्रे आगामिनयां चतुर्विंशतिकायां द्वावि-शतितमतीर्थंकरस्य पूर्वभवनाम । सम० १५४ ।

दारुय– । ज्ञाता० २१७ ।

दारुसंकम–दारुसङ्क्रमः । आचा० २०२ ।

दालः–सूपः । प्रश्न० १४१ ।

दालाणि–अवट्टट्टिगाणि । दश० चू० १११ ।

दालित्ता–विदार्य । प्रज्ञा० ४८ । दलयित्वा–विदार्य । जीवा० ४० ।

दालिम–दाडिमं–फलविशेषः । प्रज्ञा० ३२८ । दाडिमं–वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

दालिमपाणगं–पानकभेदः । आचा० ३४७ ।

दालियंबं–दालिकाम्लं इडुरिकादि । प्रश्न० १६३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दालिय-विदार्य । आचा० ३२६ ।
दाली-राजिः । ओघ० १२६ ।
दावए-दद्यात् दापयेद्वा । भग० ३७५ ।
दावणं-दापयति । ओघ० ४३ ।
दावदए-षष्ठाङ्गे एकादशं ज्ञातम् । ज्ञातम् । उत्त० ६१४ ।
दावद्दविओ-द्रावद्रविकः-द्रुतद्रुतगामी । बृ० प्र० १२४ अ ।
दावद्दवे-षष्ठाङ्गे एकादशं ज्ञातम् । सम० ३६ । आव० ६५३ । ज्ञाता० १० । समुद्रतटे वृक्षविशेषः । ज्ञाता० १० ।
दावर-द्वापरः-समयपरिभाषया द्वितीयकलिः । बृ० प्र० १८० आ । द्वापरं-द्विकम् । सूत्र० ६७ ।
दावारगं-उदकवारकम् । भग० ६८० ।
दावरजुम्म-द्वाभ्यामादित एव कृतयुग्माद्वोपरिवर्त्तिभ्यां यदपरं युग्मं कृतयुग्मादन्यत्तन्निपातनविधे द्वापरयुग्मम् । भग० ७४४ । द्विपर्यवसितो द्वापरयुग्मः । ठाणा० २३७ । द्वापरयुग्मे द्वाषष्टिः । सूर्य० १६७ ।
दावरजुम्मकडजुम्मे-द्वापरकृतयुग्मेऽष्टादयः । भग० ६६४ ।
दावरजुम्मकलियोगे-द्वापरकल्योजे नवादयः । भग० ६६४ ।
दावरजुम्मतेओए-द्वापरत्र्योजराशावेकादशादयः । भग० ६६४ ।
दावरजुम्मदावरजुम्मे-द्वापरद्वापरे दशादयः । भग० ६६४ ।
दास-दासः-आजन्मावधिकिङ्करः । व्य० द्वि० ३३७ अ । अङ्कितः । व्य० द्वि० २७८ । दासः । उत्त० २२५ । दास्यते-दीयतेऽस्मै इति दासः-पोष्यवर्गरूपः । उत्त० १८८ । दासः-आमरणं क्रयक्रीतः । जीवा० २८० । दासाः-गृहजातादयः । उत्त० २६५ । चेटकः । प्रश्न० ३८ ।
दासचेड-दासचेटः । उत्त० १४८ । आव० ३४३ ।
दासचेडए-दासस्य भृतकविशेषस्य चेटः-कुमारकः दासचेटः । ज्ञाता० ८० ।
दासचेडो- । नंदी १६० ।
दासा-दासीपुत्रादयः । ठाणा० ११४ । गृहदासीपुत्रः । ज्ञाता० ८६ । गृहजातकाः । बृ० द्वि० ६० आ ।
दासि-गुच्छाविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।
दासी-चेटिका । प्रश्न० ३८ । घटयोषित् । सूत्र० १०६ । दास्यः-अङ्कपतिताः । उत्त० २६२ ।
दासेइ-दासः-आमरणं क्रयक्रीतः, गृहदासी पुत्रो वा । जं० प्र० १२२ ।
दाह-कषायाः । आव० ५६ । दाहः । भग० १६७ ।
दाहज्जरो-दाहज्वरः । आव० ६८ ।
दाहवक्कंतो-दाहव्युत्क्रान्तिः-दाहोत्पत्तिः । ज्ञाता० २०० ।
दाहा-प्रहरणविशेषः, दीर्घवंशाग्रन्यस्तदात्ररूपः । विपा० ५६ ।
दाहिण-दक्षिणादिग्भावी दक्षिणः । सूर्य० १६ ।
दाहिणड्ढं-दक्षिणार्द्धं-दक्षिणभागः । जं० प्र० ४८२ ।
दाहिणड्ढभरहकूडे-दक्षिणार्धभरतनाम्ना देवस्य निवासभूतं कूटं, दक्षिणार्धभरतकूटम् । जं० प्र० ७७ ।
दाहिणतुंगारो-दक्षिणतुङ्गारः-दक्षिणपूर्ववातभेदः । आव० ३८७ ।
दाहिणदारिता- । ठाणा० ४१४ ।
दाहिणपच्चत्थिमेल्लं-दक्षिणपश्चिमे । सूर्य० २१ ।
दाहिणपुरत्थि-दक्षिणपौरस्त्यः-दक्षिणपूर्वः, आग्नेयकोण इत्यर्थः । सूर्य० २२ ।
दाहिणभुयंते-दक्षिणभुजान्तः-दक्षिणपार्श्वः । सूर्य० २८७ ।
दाहिणमाहणकुंडपुरसंनिवेसाओ । आचा० ४२१ ।
दाहिणवाए-यो दक्षिणदिशः समागच्छति वातः स दक्षिणवातः । प्रज्ञा० ३० । दक्षिणवातः-यो दक्षिणाया दिशः समागच्छति वातः सः । जीवा० २६ ।
दाहिणविजयाओ-दक्षिणदिग्जायः । आव० ३८७ ।
दाहिणवेयालो-दक्षिणवैतालो-दक्षिणसमुद्रतीरम् । प्रज्ञा० ३२७ ।
दाहिणहुत्तो-दक्षिणमुखः । आव० २१५ ।
दाहिणा-दक्षिणा वाचाला सन्निवेशः । आव० १६५ । मथुरापुरीद्वयमध्ये एका । आव० ३५६ ।
दिइय-दृतिः । आव० ६२१ ।
दिक्करिगा-दुहिता । आव० ४०० ।
दिक्खंति-पश्यन्ति । नि० चू० प्र० २०५ अ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिक्खिओत्ति वुत्तं भवति । नि० चू० प्र० ६७ आ ।
दिक्प्रोक्षक- । ठाणा० ५१२ ।
दिक्प्रोक्षिततापस- । ठाणा० ४३१ ।
दिगम्बर–मतविशेषः । प्रज्ञा० ६० ।
दिगाई–दिशामादिः प्रभवो दिगादिः । सूर्य० ७८ ।
दिगाचार्यः–आचार्यस्य द्वितीयो भेदः । ठाणा० २९९ ।
दिगिच्छा–बुभुक्षा(देशी०) । उत्त० ८२ ।
दिगिछा–बुभुक्षा । भग० ३८९ । बृ० तृ० ७३ आ । बृ० प्र० २०१ आ । आचा० ३१४ । क्षुधा । बृ० द्वि० १३१ आ । क्षुद्(देशी०) । विशे० १०३५ ।
दिगिछापरीसहे–दिगिछा–बुभुक्षा सैव मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषह्यते इति परिषहो दिगिञ्छापरीषहः । सम० ४० ।
दिच्छसि–द्रक्ष्यसि । उत्त० ४९५ ।
दिज्जह–दद्यात् । दश० १०३ । दद्याः । दश० ५७ ।
दिट्ठंत–दृष्टमर्थमन्तं नयतीति दृष्टान्तः, अतीन्द्रियप्रमाणादृष्टं संवेदननिष्ठां नयतीत्यर्थः । दश० ३४ । दृष्टः–अन्तः परिच्छेदो विवक्षितसाध्यसाधनयोः सम्बन्धस्याविनाभावरूपस्य प्रमाणेन यत्र सः दृष्टान्तः । प्रज्ञा० ५३२ । दृष्टान्तः–उदाहरणम् । दश० ३३ ।
दिट्ठंतपरिणामगो–दृष्टान्तेन विवक्षितमर्थं परिणामयत्यात्मबुद्धावारोपयतीति दृष्टान्तपरिणामकः । व्य० द्वि० ४५० अ ।
दिट्ठंतिओ–दार्ष्टान्तिकः–दृष्टान्तपरिच्छेद्यः । आव० ८६२ ।
दिट्ठंतिय–दार्ष्टान्तिकः– प्रथमोऽभिनयविधिः । जीवा० २४७ । दृष्टान्तिकं–अभिनयविशेषः । जं० प्र० ४१२ ।
दिट्ठ–दृष्टः–प्रतिपादितः । बृ० द्वि० १५९ आ । दर्शितः । उत्त० ३५६ । दृष्टः–उपलब्धः । ओघ० ५४ । दृष्टं–साक्षात् स्वयमुपलब्धः । औत्पात्तिक्यादिबुद्धिः । भग० १०० । दृष्टः–वैद्यवद्दृष्टक्रियः क्रियाकुशलः । ओघ० ४२ । उपलभ्यस्वरूपः । ज्ञाता० २०५ ।
दिट्ठपाढी–दृष्टः–उपलब्धश्चरकसुश्रुतादि येन स दृष्टपाठी । ओघ० ४२ । आधीतवेज्जक इति । नि० चू० प्र० २११ अ ।
दिट्ठमदिट्ठं–दृष्टादृष्टं, यत् तमसि व्यवहितो वा न वन्दते, कृतिकर्मणि त्रयोविंशतितमो दोषः । आव० ५४४ ।
दिट्ठलाभिते–दृष्टस्यैव भक्तादेर्लाभस्तेन चरतीति तथैव दृष्टलाभिकः । ठाणा० २८९ ।
दिट्ठलाभिय–यो दृश्यमानस्थानादानीतं गृण्हाति सः दृष्टिलाभिकः । प्रश्न० १०६ ।
दिट्ठसारा–सारः–विवक्षितः परमार्थः, उपयोगेन दृष्टः सारा यथा सः दृष्टसारः । नंदी० १६४ ।
दिट्ठसाहम्मवं–दृष्टेन पूर्वोपलब्धेनार्थेन सह साधर्म्यं दृष्टसाधर्म्यं तद्भमकत्वेन विद्यते यत्र तद् दृष्टसाधर्म्यवत् । अनु० २१६ ।
दिट्ठा–दृष्टा–साक्षाद्धर्मसाधकत्वेनोपलब्धा । दश० १९६ । दृष्टा–विहितत्वेनोपलब्धा । उत्त० ५३२ ।
दिट्ठाभट्ठ–दृष्टाभाषितः । भग० १६७ ।
दिट्ठि–दर्शनवान् दर्शनी दर्शनमस्यातीति । आव० ५३० । दृष्टिः–स्वविषये लोचनप्रसारणलक्षणा । आव० ५३० । विलोकितम् । ज्ञाता० १६८ । मतम् । ज्ञाता० ११० ।
दिट्ठिपडिघाय–दृष्टिप्रतिघातः–दर्शनाभावः । भग० १७५ ।
दिट्ठिपण्हव–दृष्टिप्रश्नवं ईषदश्रुविमोचनम् । पिण्ड० १४० ।
दिट्ठिपरिचितो–जो एसणा विधि जाणति सो दिट्ठो परिचितो भणति, अहवा सावगो गहियाणुव्वओ, अवती वा सम्मदिट्ठी दिट्ठो परिचितो भण्णति । नि० चू० द्वि० ११५ आ ।
दिट्ठिप्पहाणे–दृष्टिप्रधानः–युगप्रधानः । व्य० द्वि० ३३७ आ ।
दिट्ठिया–दृष्टिः–दर्शनं श्रद्धानं येषां ते दृष्टिकाः, रुचितजिनवचनाः । ठाणा० ३० । दृष्टिजा–विंशतिक्रियामध्ये षष्ठी । आव० ६१२ । अश्वादिचित्रकर्मादिदर्शनार्थं गमनरूपा । ठाणा० ३१७ । दृष्टेर्जाता दृष्टिजा दृष्टं–दर्शनं वस्तु वा निमित्तया यस्यामस्ति सा दृष्टिका–दर्शनार्थं वा गतिक्रिया, दर्शनाद् वा यत्कर्मोदेति सा दृष्टिजा दृष्टिका वा । ठाणा० ४२ ।
दिट्ठिवाइयं–दृष्टिवादिकं–पूर्वविशेषः । आव० ६१८ ।
दिट्ठिवाए–दृष्टयो–दर्शनानि –नयाः पतन्ति–अवतरन्ति यस्मिन्नसौ दृष्टिपातः–द्वादशमङ्गम् । ठाणा० १९९ । दृष्टयो–दर्शनानि वदनं वादो दृष्टीनां वादोदृष्टिवादः, दृष्टीनां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा पातो यत्रासौ दृष्टिपातः सर्वनयदृष्टय एवेहाख्यायन्तः। सम० १२९ । श्रोत्रपेक्षया सूक्ष्मजीवादिभावकथनं-अन्ये त्वभिदधति । आचारादयो ग्रन्था एव परिगृह्यन्ते आचाराद्यभिधानम् । दश० ११० ।

दिट्ठिवातअक्खेवणी-दृष्टिवादः-श्रोत्रपेक्षया नयानुसारेण सूक्ष्मजीवादिभावकथम्, आचारोदयो ग्रन्था एव परिगृह्यन्ते आचाराद्यभिधानादिति । ठाणा० २१० ।

दिट्ठिवातेति-दृष्टयो-दर्शनानि वदनं-वादो दृष्टीनां वादो दृष्टिवादः, दृष्टीनां वा पातो यस्मिन्नसौ दृष्टिपातः । ठाणा० ४९१ ।

दिट्ठिवादीयं-दृष्टिवादिकं-ग्रन्थविशेषः । आव० ६१७ ।

दिट्ठिविपरिआसिआदंडे-दृष्टेः-बुद्धेर्विपर्यासिका विपर्यसिता वा दृष्टिविपर्यासिका दृष्टिविपर्यासिता वा मतिभ्रम इत्यर्थः तया दण्डो प्राणिवधो दृष्टिविपर्यासिकादण्डो दृष्टिविपर्यासितादण्डो वा । सम० २५ ।

दिट्ठिविसो-दृष्टिविषः । आव० १९५ ।

दिट्ठिसंपन्नया-दृष्टिसम्पन्नता-सम्यग्दृष्टिता । ठाणा० १२०, ५२४ ।

दिट्ठी-दृष्टिः चक्षुर्द्वारोत्पन्नदर्शनरूपा । अनु० १८२ । दृष्टिः दर्शनं, रुचिः तत्त्वानि प्रति । ठाणा० ३० । दृष्टिः-दर्शनं स्वतत्त्वमिति । राज० १३३ । दृष्टिः-सम्यग्दर्शनात्मका हेतुभूताबुद्धिः । उत्त० ४४७ । दृष्टिः-सम्यग्दर्शनरूपा । दश० १०२ । दृष्टिः-बुद्धिः । सम० २५ । भग० ४७१ । उत्त० १५१ । दृष्टिः-अन्तःकरणप्रवृत्तिः । सूत्र० ३१८ । दृष्टिः-जिनप्रणीतवस्तुतत्त्वप्रतिपत्तिः । जीवा० १८ । प्रज्ञा० ३८७ । दृष्टिविपर्यासक्रिया । क्रियायाः पञ्चमो भेदः । आव० ६४८ ।

दिट्ठीएसंपाओ-दृष्टेः पुनः संपातः-स्त्रीणां कुचाद्यवलोकनम्, संप्राप्तकामस्य प्रथमो भेदः । दश० १९४ ।

दिट्ठीवाय-दृष्टिवादः । आव० ३०१ ।

दिट्ठीविप्परिआसि-दृष्टिविपर्यासदण्डः-यो मित्रस्याप्यमित्रोऽयमितिबुद्धया वधः सः । ठाणा० ३१६ ।

दिट्ठीविप्परियासो-स्त्रीदर्शनानुरागतस्तदावलोकनं दृष्टिविपर्यासः । आव० ५७५ ।

दिट्ठीविस-दृष्टिविषः-नेत्रविषः, उरःपरिसर्पविशेषः । जीवा० ३९ ।

दिट्ठीविसलद्धिओ-दृष्टिविषलब्धिमान् । आव० ३८९ ।

दिट्ठीविसा-दृष्टौ विषं येषां ते दृष्टिविषाः । जीवा० ३९ । प्रज्ञा० ४६ ।

दिट्ठीसूल-दृष्टिशूलः-नेत्रशूलम् । ज्ञाता० १८३ ।

दिट्ठीसेवा-दृष्टिसेवा-भावसारं तद्दृष्टेर्दृष्टिमेलनम्, संप्राप्तकामस्य द्वितीयो भेदः । दश० १९४ ।

दिणयर-चतुर्दशस्वप्ने सप्तमम् । ज्ञाता० २० ।

दिणारो-दीनारः-सुवर्णनिष्कविशेषः । आव० ६७१ ।

दिण्ण-दत्तः-तापसविशेषः । आव० २८७ । पार्श्वजिनस्य प्रथमः शिष्यः । सम० १५२ । दत्तं-वितीर्णं भृतिभक्तलक्षणं द्रव्यभोजनस्वरूपम् । ज्ञाता० १५३ । श्रेयांसतीर्थंकरस्य पूर्वभवनाम । सम० १५१ । दत्तः-नमिजिनप्रथमभिक्षादाता । सम० १५१ । आव० १४७ ।

दिण्णवियारे-दत्तविचारं-यत्र कार्पटिकादिर्न कोऽपि वार्यते तत् । व्य० द्वि० ३०१ अ ।

दिण्णेय-चन्द्रप्रभजिनस्य प्रथमः शिष्यः । सम० १५२ ।

दित्तं-दीप्तम् । जीवा० ३८६ । दीप्तः-तेजस्वी दृप्तो वा दर्प्पवान् । भग० ४५९ । रक्तम् । ज्ञाता० ८० । दृप्तः-उन्मत्तः । पिण्ड० १६३ । दीप्तः, दृप्तः-मारकः । ओघ० १२० । दीप्तः-तेजस्वी । सूत्र० ४०७ । दृप्ताः-मदोन्मत्ततया दर्पाध्माताः । जीवा० १८८ । दीप्तः-दीप्यते स्म भास्करः । जीवा० ३४१ । दीप्तः-प्रसिद्धः दृप्तो वा दर्पितो वा । भग० १३४ ।

दित्तचित्ते-दृप्तचित्तः-पुत्रजन्मादिना दर्प्पवच्चित्तः उन्मत्त एवेति । ठाणा० ३०५ । दृप्तचित्तो हर्षातिरेकात् । ठाणा० ३१५ ।

दित्तचित्ता-लाभादिमदेन परवशीभूतहृदया । हर्षातिरेकेणापहृतचित्ता सा दीप्तचित्ता । बृ० द्वि० २१० अ । बृ० तृ० २३६ अ ।

दित्ततवो-दीप्तं जाज्वल्यमानदहन इव कर्मवनमहनदहनसमर्थतया ज्वलितं तपो-धर्म्मध्यानादि यस्य सो दीप्ततपः । सूर्य० ४ ।

दित्तरूवे-दीप्तं रूपमस्येति दीप्तरूपः । उत्त० ३५८ ।

दित्तवयणं-दीप्तवचनं-कुपितवचनम् । प्रश्न० १६० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दित्ता–दीप्ता–रोषणा । आव० ७१६ । दीप्ता–उज्वला ज्वालाकराला वा । उत्त० ४५७ ।

दित्ताइं–दीप्तानि–प्रसिद्धानि दृप्तानि वा-दर्प्पवन्ति । ठाणा० ४२१ ।

दित्ती–दीप्तिः–दीपनम् । ज्ञाता० १७० ।

दिन–अहोरात्रवाची । जं० प्र० १५० ।

दिनारो–दीनारः–सुवर्णमुद्रा । आव० ४२२ ।

दिन्न–दत्तः–न्यस्तः । ज्ञाता० ४० । उत्त० ३२१ ।

दिप्पणिज्जे–दीपनीयं–अग्निवृद्धिकरं, दीपयति जठराग्निमिति दीपनीयम् । जं० प्र० ११६ ।

दियग्गं–दिवाग्रं दिवपरिमाणम् । सूर्य० ११ ।

दियड्ढ–दिवसः । आव० २६२ ।

दिया–द्विजः–पक्षी । आचा० २४८ । द्विजाः–संस्कारापेक्षया द्वितीयजन्मानः । उत्त० ५२३ ।

दियापोए–द्विजः–पक्षी तस्य पोतः–शिशुः द्विजपोतः । आचा० २४८ ।

दिरिकयपयारो–जं दिक्खियेण आयरियव्वंति । दश० चू० ३२ ।

दिलि–ग्राहभेदः । सम० १३५ ।

दिलिवेढय–दिलिवेष्टः–ग्राहभेदः । प्रश्न० ७ ।

दिलो–ग्राहविशेषः । प्रज्ञा० ४४ । जीवा० ३६ ।

दिवड्ढं–द्वे च अधिकमर्धं यस्मिन् तद् अध्यर्धं द्वयर्द्धम् । आव० ३६ ।

दिवड्ढखेत्तं–सार्द्धक्षेत्रम् । आव० ६३४ । पुत्तलकद्वयं उत्तरात्रयं पुनर्वसुरोहिणीविशाखा इति षट्पञ्चचत्वारिंशत्मुहूर्तानि नक्षत्राणि । पञ्चचत्वारिंशन्मुहूर्तभोग्यम् । बृ० तृ० १४८ अ ।

दिवड्ढखेत्ता–द्वितीयमपार्द्धं यत्र तत् द्वयपार्द्धं सार्द्धमित्यर्थः क्षेत्रं येषां तानि । ठाणा० ३६७ ।

दिवस–दिवसः–चतुष्प्रहरात्मकः यद्वा आकाशखण्डमादित्येन स्वभाभिर्व्याप्तं तत् दिवसः । आव० २५७ । अहोरात्रं सूर्यप्रकाशवतः कालविशेषः । जं० प्र० ४६१ ।

दिवसखेत्तं–दिवसक्षेत्रम् । सूर्य० १२ ।

दिवसखेत्तस्स–दिवसलक्षणस्य क्षेत्रस्य दिवसस्यैवेत्यर्थः । सम० ८६ ।

दिवसचरिमं–दिवसचरमम् । आव० ८५३ ।

दिवसतिहो–तिथेर्यः पूर्वार्द्धभागः स दिवसतिथिः । सूर्य० १४६ ।

दिवसदेवसिअं–दिवसदैवसिकम् । आव० ५२ ।

दिवसदेवसिया–दिवसदैवसिकी । आव० ४१६ ।

दिवसभयगो– । नि० चू० द्वि० ४४ अ ।

दिवसभयत–प्रतिदिवसं नियतमूल्येन कर्म्मकरणार्थं यो गृह्यते स दिवसभृतकः । ठाणा० २०३ ।

दिवा–दिवसः । भग० २४७ ।

दिवागरे–दिवाकरः । सूर्यः । उत्त० ३५१ ।

दिविच्चिगा–द्वैप्या–द्वीपसम्बन्धिनः । भग० २१२ ।

दिविट्ठ–द्विपृष्ठः–द्वितीयो वासुदेवः । आव० १५६ ।

दिविय–द्वीपिनं–चित्रकम् । आचा० ३३८ ।

दिव्व–द्यौः स्वर्गः तद्वासी देवोऽप्युपचाराद् द्यौस्तत्र भवो दिव्यो वैमानिकसम्बन्धी । ठाणा० २७४ । दिव्यः–देवभवः । भग० ६७३ । दिवि भवः दिव्यः अतिप्रधानः इत्यर्थः । सूर्य० २६७ । दिव्यः–स्वर्गसम्बन्धी प्रधान इत्यर्थः । ठाणा० ४२१ । दिव्यम् । आव० १८८ । दिवि भवं दिव्यम्, प्रधानं च । जीवा० १६२ । ज्ञाता० १३१ । दिव्यं–व्यन्तराद्यट्टट्टहासादिविषयम् । आव० ६६० । देवीनामिदं दैवं, अप्सरोऽमरसम्बन्धि । दश० १४८ ।

दिव्वचूण्णं–दिव्यचूर्णम् । आव० २७७ ।

दिव्वतुडियं–दिव्यत्रुटितं–दिव्यतूर्यम् । जीवा० २४५ ।

दिव्वरयणपज्जत्तो–दिव्यरत्नपर्याप्तः । आव० ४१३ ।

दिव्वा–दिव्या स्वर्गसम्भवा प्रधाना वा । ठाणा० १४४ । दिव्या–प्रधाना । भग० १६७ । देवगतिः । ज्ञाता० ३६ ।

दिव्वाइं–दिव्यानि । भग० ६६२ । अतिप्रधानाः । जं० प्र० ६३ ।

दिव्वागा–मुकुलीअहिभेदविशेषः । प्रज्ञा० ४६ ।

दिव्वाणुभाव–देवानुभावः–भाग्यमहिमाऽथवा दिव्येन–देवसम्बन्धिनाऽनुभावः– अचिन्त्यवैक्रियादिकरणमहिमा । जं० प्र० २०२ ।

दिसं–आचार्यलक्षणाम् । व्य० द्वि० २०४ आ ।

दिसंतु–प्रयच्छन्तु । आव० ५१० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिस–दिशेति व्यपदेशः प्रव्रजनकाले उपस्थानाकाले वा य आचार्य उपाध्यायो वा व्यपदिश्यते सा तस्य दिशा इत्यर्थः । नि० चू० प्र० २९० अ । भगवत्या दशमशतके प्रथम उद्देशकः । भग० ४९२ ।

दिसमूढो–विवरीतदिसा गेण्हति । नि० चू० द्वि० ४१ आ ।

दिसा–दिसादाहकरणं–दिग्दाहकरणम् । आव० ७३५ । दिशतीति दिक्, अतिसृजति व्यपदिशति द्रव्यं द्रव्यभागं वा । आचा० १३ ।

दिसाकुमारा–दिक्कुमाराः–वैश्रमणस्याज्ञोपपातवचननिर्देशवर्तिनो देवाः । भग० १९९ । भवनपतिभेदविशेषः । प्रज्ञा० ६९ ।

दिसाकुमारीओ– दिक्कुमार्यः–वैश्रमणस्याज्ञोपपातवचननिर्देशवर्तिन्यो देव्यः । भग० १९९ ।

दिसाचक्कवाल–एकत्र पारणके पूर्वस्यां दिशि यानि फलादीनि तान्याहृत्य भुङ्क्ते, द्वितीये तु दक्षिणस्यामीत्येवं दिक्चक्रवालेन तत्र तपःकर्मणि पारणककरणं तत्तपःकर्म दिक्चक्रवालम् । निरय० २६ । एकत्रपारणके पूर्वस्यां दिशि यानि फलादीनि तान्याहृत्य भुङ्क्ते द्वितीये तु दक्षिणस्यामित्येवं दिक्चक्रवालेन यत्र तपःकर्मणि पारणककरणं तत्तपःकर्म्म दिक्चक्रवालम् । भग० ५२० ।

दिसाचरा–दिशं–मेरां चरन्ति–यान्ति मन्यन्ते भगवतो वयं शिष्या इति दिक्चराः देशाटा वा । भग० ६५९ ।

दिसाजत्ता–दिग्यात्रा । आव० ५५५ । दिग्यात्रा–व्यवहारः । आव० ६८८, ७०५ ।

दिसाणुवाए–दिशामनुपातो–दिगनुपातः दिगनुसरणं दिशोऽधिकृत्य वा । प्रज्ञा० ११४ ।

दिसादाहा–दिग्दाहाः–अन्यतरस्यां दिशि छिन्नमूलज्वलनज्वालाकरालिताम्बरप्रतिभासरूपः । अनु० १२१ । जीवा० २८३ । दिशो दिशि वा दाहो दिग्दाहः ।

दिसादीअ–दिशामादिः–प्रभवो दिगादिः, तथाहि रुचकादिशां विदिशां च प्रभवो रुचकश्चाष्टप्रदेशात्मको मेरुमध्यवर्त्ती ततो मेरुरपि दिगादिरित्युच्यते, मेरोः पश्चदशनाम । जं० प्र० ३७५ ।

दिसापालो–दिक्पालः । आव० ४०० ।

दिसापेक्खिणो–उदकेन दिशः प्रोक्ष्य ये फलपुष्पादि समुच्चिन्वन्ति । औप० ९० ।

दिसापोक्खिणो–उदकेन दिशः प्रोक्ष्य ये फलपुष्पादि समुपचिन्वन्ति । भग० ५१९ । उदकेन दिशः प्रोक्ष्य ये फलपुष्पादि समुच्चिन्वन्ति । निरय० २५ ।

दिसापोक्खियतावसो–दिक्प्रोक्षिततापसः । आव० ३५६ ।

दिसाबंध–दिग्बन्धः–पदे स्थाप्यमानः । व्य० प्र० २११ आ । नि० चू० प्र० २६५ अ ।

दिसायत्तिए–दिग्यात्रा–देशान्तरगमनं प्रयोजनं येषां तानि दिग्यात्रिकानि । उपा० ३ ।

दिसायरिओ–दिशाचार्यः–आचार्यविशेषः । दश० ३१ ।

दिसावाणिज्जं–दिशावाणिज्यम् । उत्त० २१० ।

दिसाविचारिणो–दिशासु विशेषेण–मेरुप्रादक्षिण्यनित्यचारितालक्षणेन चरन्ति–परिभ्रमन्तीत्येवंशीलाः दिशाविचारिणः । उत्त० ७०२ ।

दिसासोत्थिअ– दिक्स्वस्तिकः– दक्षिणावर्त्तस्वस्तिकः । ओप० १९ ।

दिसासोवत्थिअ–दिक्सौवस्तिको-दिक्प्रोक्षकः–दिक्प्रधानः स्वस्तिको, दक्षिणावर्तः स्वस्तिक इत्यन्ये । जं० प्र० ११२ । दिक्प्रधानः स्वस्तिको दिक्स्वस्तिको दक्षिणावर्त्तः प्रश्न० ८१ । दिक्सौवस्तिकः–दिक्प्रोक्षको दक्षिणावर्त्तः स्वस्तिकः । जीवा० २७२ ।

दिसासोवत्थियं–आरणकल्पे देवविमानविशेषः । सम० ३८ ।

दिसासोवत्थिया–दिक्प्रधानाः स्वस्तिकाः । जं०प्र० ४५ ।

दिसासोवत्थियासणं–यस्याधोभागे दिक्सौवस्तिका आलिखिताः सन्ति तद् दिक्सौवस्तिकासनम् । जीवा० २०० ।

दिसासोवत्थियासणाइं–येषामधोभागे दिक्सौवस्तिकादिकप्रधानाः स्वस्तिकाः आलिखिताः सन्ति । जं० प्र० ४५ ।

दिसाहत्थिकूडा–दिक्षु ऐशान्यादिविदिक्प्रभृतिषु हस्त्याकाराणि कूटानि दिग्हस्तिकूटानि । जं० प्र० ३६० । शीताशातोदयोरुभयकूलवर्त्तीनि पूर्वादिषु दिक्षु हस्त्याकाराणि कूटानि दिशाहस्तिकूटानि । ठाणा० ४३९ ।

दिसिदाघे–एकतरदिग्विभागे महानगरप्रदीपनकमिव य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उद्योतो भूमावप्रतिष्ठितो गगनतलवर्त्ती स दिग्दाहः । ठाणा० ४७६ ।

दिसिदाह–अन्यतमदिगन्तरविभागे उपरि प्रकाशोऽधस्तादन्धकार ईदृक् छिन्नमूलो दिग्दाहः । आव० ७३५ । दिग्दाहः–अन्यतमस्यां दिशि अधोऽन्धकाराः उपरि च प्रकाशात्मका दह्यमानमहानगरप्रकाशकल्पाः । भग० १६६ । दिशि पूर्वादिकायां च्छिन्नमूलो दाहः प्रज्वलन-दिग्दाहः । व्य० द्वि० २४१ आ ।

दिसिपडिवज्जावणं–दिक्प्रतिपादनं अचित्तसंयतपारिष्ठापनिकीविधिं प्रतिदिक्प्रदर्शनम् । आव० ६३६ ।

दिसिविभागो–दिग्विभागः–अचित्तसंयतपारिष्ठापनिकीं प्रति दिक्प्रदर्शनं दिक्प्रतिपादनम् । आव० ६३६ ।

दिसिभाए–दिशां भागः दिग्रूपो वा भागो गगनमण्डलस्य दिग्भागः । भग० ६ ।

दिसोदिसं–दिसाश्च विदिसाश्च दिसोदिसं । नि० चू० प्र० २०४ आ । एकस्या दिशः सकाशादन्यां दिशं दिशोदिशम् । प्रश्न० १६ । दिशोदिशं–सर्वास्वप्येकेन्द्रियादिषु भावदिक्षु । आचा० ४३० ।

दिसोदिसि–दिशः सकाशादन्यस्यां दिशि अभिमतदिक्त्यागाद्दिगन्तराभिमुखेनेत्यर्थः दिशोदिशः, अथवा दिगेवोपदिग् नाशनाभिप्रायेण यत्र प्रतिषेधने तद्दिगपदिक् । भग० ३१६ ।

दिस्स–दृष्ट्वा–अवलोक्य । उत्त० ४६० ।

दीइं–असूया । उप० मा० गा० २६२ ।

दीण–दीनः–द्रव्यदैन्यमङ्गीकृत्य म्लानवदनः । दश० १८६ । दीन–दीनः–शृगालत्वविहारी । आचा० २५३ ।

दीणाजाती–दीनं–दैन्यवन्तं पुरुषं दैन्यवद्वा यथा भवति तथा याचन इत्येवंशीलो दीनयाची दीनं वा, यातीति दीनयायी दीना वा–हीना जातिरस्येति दीनजातिः । ठाणा० २०६ ।

दीणपन्ने–दीनप्रज्ञः–हीनसूक्ष्मार्थालोचनः । ठाणा० २०७ ।

दीणमणे–दीनमनाः–स्वभावत एवानुन्नतचेताः । ठाणा० २०७ ।

दीणरूवे–दीनरूपः–मलीनजीर्णवस्त्रादिनेपथ्यापेक्षया । ठाणा० २०७ ।

दीणववहारे–दीनव्यवहारः–दीनान्योऽन्यदानप्रतिदानादिक्रियः हीनविवादो वा । ठाणा० २०७ ।

दीणसंकप्पे–दीनसङ्कल्पः–उन्नतचित्तस्वाभाव्येऽपि कथञ्चिद्धीनविमर्शः । ठाणा० २०७ ।

दीणसीलाचारे–दीनशीलसमाचारः–हीनधर्म्मानुष्ठानः । ठाणा० २०७ ।

दीणा–दीना–दैन्यवती । विपा० ४६ ।

दीणार–दीनारं–सुवर्णमुद्रा । दश० ३७ ।

दीणारमालिया–दीनारमालिका–भूषणविधिविशेषः । जीवा० २६६ ।

दीणारो–दीनारः । आव० ३४१ । नि० चू० प्र० ३३० अ ।

दीणोभासो–दीनवदवभासते प्रतिभाति–अवभाषते वा याचत इत्येवंशीलो दीनावभासी दीनावभाषी वा । ठाणा० २०७ ।

दीनदिट्ठी–दीनदृष्टिः–विच्छायचक्षुः । ठाणा० २०७ ।

दीपका–रथवीरपुर उद्यानम् । विशे० १०२० ।

दीपिया–द्वीपिकाः–चित्रकाः । ज्ञाता० ७० ।

दीप्तजिव्हा– । आचा० २४३ ।

दीप्तिमान्–पराधृष्यः । आचा० ३ ।

दीर्घकालद्रव्यप्रसूतिप्ररूपी–बहुरतः । आव० ३११ ।

दीर्घकालिक–सञ्ज्ञायास्तृतीयो भेदः । सम० १८ ।

दीर्घपृष्ठः– । नंदी० १६७ ।

दीर्घबाहुः–नामविशेषः । सम० १५६ ।

दीर्घसेनः–नामविशेषः । सम० १५६ ।

दीर्घा–स्थूला । जं० प्र० १७४ ।

दीव–द्वीपः । प्रज्ञा० ७१ । प्रदीपः–ज्योतिः । नि० चू० प्र० ४८ अ । द्वीपः दीपो वा । प्रश्न० १०३ । जीवा० २२१ । द्वाभ्यां मुखेन करेण च पिबतीति द्वीपः–हस्त्येव । जीवा० १२२ । द्वीपः–जलेनावृतं क्षेत्रम् । जं० प्र० २६३ । दीप्यत इति दीपः । उत्त० २१२ । द्वीपम् । जं० प्र० ५३८ । मोहनीयस्य स्थाने पञ्चमम् । आव० ६६१ । सुराष्ट्राद्दक्षिणसमुद्रे स्थलम् । बृ० द्वि० २२७ अ । दीपः–प्रकाशकं वस्तु । ठाणा० ५१७ । दीपशाखाः–प्रदीपकार्यकारिणः । सम० १८ । द्विर्गता आपोऽस्मि-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न्निति द्वीपः । आचा० २४७ । द्वाभ्यां प्रकाराभ्यां स्थानदातृत्वाहारादद्युपष्टम्भहेतुत्वलक्षणाभ्यां प्राणिनः पान्तीति द्वीपाः—जन्त्वाधासभूतक्षेत्रविशेषाः । अनु० ९० ।

दीवकुमारा—द्वीपकुमाराः—भवनपतिभेदविशेषः । प्रज्ञा० ६९ । द्वीपकुमाराः—वैश्रमणस्याज्ञोपपातवचननिर्देशवर्त्तिनो देवाः । भग० १९९ ।

दीवकुमारीओ—वैश्रमणस्याज्ञोपपातवचननिर्देशवर्त्तिन्यो देव्यः । भग० १९९ ।

दीवगं—दीपकं—रथवीरपुर उद्यानम् । उत्त० १७८ । दीपकं—रथवीरपुरे उद्यानविशेषः । आव० ३२३ । अधिकार्थोद्दीपकम् । व्य० २५१ ।

दीवगचंपए—दीपकचम्पकः—दीपाच्छादनं कोशिकः । भग० ३१३ । दीपस्थगनकम् । भग० ३७७ ।

दीवचंपए—दीपचम्पकः—दीपस्थगनकम् । राज० १४१ ।

दीवणं—आगमनकार्याविर्भावनम् । ओघ० ४० ।

दीवणिज्ज—दीपनीयं—अग्निवृद्धिकरं, दीपयति हि जाठराग्निमिति वा । जीव० २७८ । दीपनीयं—अग्निबलजनकम् । ठाणा० ३७५ ।

दीवत्तं—द्विधागतालवणोदस्य आपोऽस्मादिति अन्वर्थवशाद् दीपत्वम् । जं० प्र० ९ ।

दीवप्पणट्ठे—प्रकर्षेण नष्टो दृष्टचक्षुगोचरतां गतः प्रणष्टो दीपोऽस्येति प्रनष्टदीपः । उत्त० २१२ ।

दीवर— । भग० ८०२ ।

दीवसिहा—दीपशिखा इव दीपशिखाः । जं० प्र० १०२ । दीपशिखाः—द्रुमगणविशेषः । जीवा० २६६ । जं० प्र० १०२ । दीपशिखाः—ब्रह्मदत्तराज्ञी सागरदत्तसुता । उत्त० ३७९ ।

दीवा—द्वीपाः । अनु० १७१ ।

दीवाति—द्वीपाः । ठाणा० ८६ ।

दीवायण—द्वैपायनः—महर्षिर्यः शीतोदकबीजहरितादिपरिभोगात्सिद्धः । सूत्र० ९५ । आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां चतुर्विंशतिकायां विंशतितमतीर्थंकरस्य पूर्वभवनाम । सम० १५४ । द्वैपायनः—परिव्राजकविशेषः । औप० ९१ ।

दीवि—द्वीपि—चित्रकः । प्रश्न० १६२ ।

दीविए—चित्रकविशेषः । प्रज्ञा० २५३ ।

दीविग—द्वीपिनः—चित्रकः । जं० प्र० १२४ ।

दीविच्चगा—द्वैप्या—द्वीपसम्भवाः । ज्ञाता० १७२ ।

दीवित—द्वीपिकः—चित्रको मृगमारणाय । प्रश्न० १३ ।

दीवियंमि—दीपिते—कथिते । ओघ० ९३ ।

दीविय—द्वीपः—चित्रकः श्वापदविशेषः । जीवा० १०७ । द्वीपीचित्रकः । जं० प्र० ३१ । शाकुनिकपुरुषसम्बन्धीपञ्जरस्थतित्तिरो द्वीपिका उच्यते । ज्ञाता० २३३ । द्वीपिकः—चित्रकः । जीवा० २८२ । द्वीपिकेन चित्रकेण चरतीति द्वीपिकः । प्रश्न० १५ । द्वीपिकः—चित्रकाभिधानो नाखरविशेषः । प्रश्न० ७ । पीपीलियः—पिपीलिकः पीपीतिकारिकः पक्षिविशेषः । प्रश्न० ८ । चतुष्पदविशेषः । भग० १९१ ।

दीवियमडे—द्वीपिमृतः—मृतचित्रकदेहः । जीवा० १०६ ।

दीविया—सनखपदश्चतुष्पदविशेषः । प्रज्ञा० ४५ । जीवा० ३८ । नि० चू० प्र० ८८ अ ।

दीवियाचक्कवालवंदं—ह्रस्वो दीपो दीपिका तासां चक्रवालं—सर्वं परिमण्डलरूपं वृन्दं दीपिकाचक्रवालवृन्दम् । जीवा० २६६ ।

दीवेइ—दीपयति । आव० २६० ।

दीवेत्ता—दीपयित्वा—निवेद्य । ओघ० १५६ ।

दीवेह—दीपयत—कथयत प्रकाशयत । व्य० प्र० १३४ आ ।

दीहंवेगे—दीर्घह्रस्वयोः । ठाणा० ४३ ।

दीह—दीर्घो दीर्घवर्णाश्रितो दूरश्रव्यो वा मेघादिशब्दवत् । ठाणा० ४७१ । दीर्घः—दीर्घपृष्ठः । उत्त० ३७७ । दीर्घं—अनादौ केषाञ्चिदपर्यवसिते चेति । उत्त० २३३ । दूरम् । व्य० द्वि० ३१२ अ । दीर्घं—अल्पपृथुलं बहूच्छ्रयम् । बृ० द्वि० २४९ अ । उलंबगं । नि० चू० तृ० ५४ आ ।

दीहकालिगो—दीर्घकालिकी इव दीर्घशब्दस्य लुप्तदर्शनाद् "कालिकी" इत्युच्यते । विशे० २७७ ।

दीहगइपरिणाम—दीर्घगतिपरिणामः । विप्रकृष्टदेशान्तरप्राप्तिपरिणामः । प्रज्ञा० २८९ ।

दीहजाइओ—दीर्घजातीयः । दश० ५० ।

दीहडक्को—सर्पदष्टः । आव० ७८३ ।

दीहदंते—भरतक्षेत्रे आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां द्वितीयश्चक्रवर्त्ती । सम० १५४ । दीर्घदन्तः—अनुत्तरोपपातिकदशानां प्रथम-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वर्गस्य षष्ठममध्ययनम् । अनुत्त० १ ।

दीहपिट्ठ–यवोनामराजानस्य सचिवः । बृ० प्र० १९१ अ ।

दीहबाहु–चन्द्रप्रभजिनस्य पूर्वभवनाम । सम० १५१ । सम० १५४ ।

दीहमद्धं–दीर्घार्द्धं–दीर्घकालं दीर्घाध्वं वा दीर्घमार्गम् । प्रश्न० ९१ । ज्ञाता० ८९ । दीर्घार्द्धं–दीर्घकालं दीर्घो वाऽध्वा तत्परिभ्रमणहेतुः कर्मरूपो मार्गो यस्मिंस्तत् । उत्त० ५८५ । भग० ६७२ । दीर्घार्द्धं दीर्घा अर्द्धा कालो यस्य तद् दीर्घार्द्धं, मकारआगमिकः, दीर्घो वाऽध्वा मार्गो यस्मिंस्तद्दीर्घाध्वम् । ठाणा० ४४ । दीर्घार्द्धं दीर्घकालं दीर्घाध्वं वा दीर्घमार्गम् । भग० ३५ ।

दीहरत्तं–दीर्घरात्रं–यावज्जीवम् । सूत्र० १५२ ।

दीहराय–दीर्घरात्रः–मोक्षः । आव० ६५८ । दीर्घरात्रं यावज्जीवम् । आचा० २०८ ।

दीहलोग–दीर्घलोकः–वनस्पतिः । आचा० ५२ । दीर्घलोकः–पृथिव्यादिः । आचा० ५३ ।

दीहसुत्तं–नामकर्तति । नि० चू० प्र० २२६ अ ।

दीहसेणे–दीर्घसेनः–अनुत्तरोपपातिकदशानां द्वितीयवर्गस्य प्रथममध्ययनम् । अनुत्त० २ ।

दीहामयविप्पमुक्को–दीर्घाणि यानि–स्थितितः प्रक्रमात्कर्माणि तान्यामया इव–रोगा इव विविधबाधाविधायितया दीर्घामयास्तेभ्यो विप्रमुक्तो दीर्घामयविप्रमुक्तः । उत्त० ६३९ ।

दीहासणं–दीर्घासनं–शय्यारूपमासनम् । जीवा० २०० ।

दीहासणाइं–शय्यारूपाणि । जं० प्र० ४५ ।

दीहिया–दीर्घिका–ऋजुलघुनदी । प्रज्ञा० ७२ । दीर्घिका सारणी । भग० २३८ । औप० ३, ९३ । अनु० १५९ । जीवा० १९७ । जं० प्र० ४१ । ऋजुसारिणी । औप० ८ । प्रश्न० १६० । जीवा० १८८ । जं० प्र० ३० । ज्ञाता० ५ । दीर्घिका–ऋज्वीनदी । प्रज्ञा० २६७ ।

दुंदुभए–दुन्दुभकः–अष्टाशितो महाग्रहे अष्टादशः । जं० प्र० ५३४ । ठाणा० ७८ ।

दुंदुभि–दुन्दुभिः–भेर्याकारा सङ्कटमुखी । राज० २५ । भेर्याकारा सङ्कटमुखी देवातोद्यविशेषः । राज० ४९ ।

दुंदुभिसर–दुन्दुभिस्वरः–वर्चस्वरो नादः । सम० १५८ ।

दुंदुभीः–भेरी । प्रश्न० ४८ ।

दुंदुहि–दुन्दुभी–ढक्काविशेषः । भग० ४७६ । दुन्दुभिः–देववाद्यम् । जं० प्र० १९२ । दुन्दुभिः देववाद्यविशेषः । भग० २१६ ।

दुदुहिस्सरो–दुन्दुभिवत्स्वरो यस्य स दुन्दुभिस्वरः । जीवा० २०७ ।

दुंदुही–दुन्दुभिः भेर्याकारा सङ्कटमुखो । जीवा० २४५ ।

दुंदुहीओ–दुन्दुभयो देवानकाः । उत्त० ३६९ ।

दुंदुहे–दुन्दुभः, सर्पविशेषः । उत्त० ३५४ ।

दुः–अभावार्थे । आचा० १३६ ।

दुःख–उष्णम् । आचा० १५१ ।

दुःखासिका–वेदना । ठाणा० १८१ । परितापना । ओघ० ६५ । आचा० १३९ ।

दुःप्रसभः–तीर्थव्यवच्छेदकाले सूरिः । व्य० द्वि० ४०२ अ ।

दुःसंहृतं–दुःखेन संह्रियते–मील्यते स्मेति । उत्त० २७५ ।

दुअं–द्रुतं–यत् त्वरितं गीयते त्वरितगाने हि रागतानादिपुष्टिरक्षरव्यक्तिश्च न भवति । जं० प्र० ४० । द्रुतनाम नाट्यं, द्रुतमिति शीघ्रं गीतवाद्यशब्दयोर्यमकसमकप्रपातेन पादतलशब्दस्यापि समकालमेव निपातो यत्र तत् द्रुतं नाट्यम् । जं० प्र० ४१७ ।

दुअक्खरिआ–द्व्यक्षरिका । उत्त० १०७ ।

दुअद्धखित्त–द्व्यर्धक्षेत्रम् । जं० प्र० ४७८ । द्वितीयमर्द्धं यस्य तत् द्व्यर्द्धं–सार्धमित्यर्थः, द्व्यर्द्धमर्द्धाधिकं क्षेत्रमहोरात्रप्रमितं चन्द्रयोगयोग्यं येषां तानि द्व्यर्द्धक्षेत्राणि । सूर्य० १७७ ।

दुआइक्ख–दुराख्येयं–कृच्छ्राख्येयं वस्तुतत्त्वम् । ठाणा० २९६ ।

दुआवत्तं– । सम० १२८ ।

दुइओ–द्वितीयः । उत्त० २२३ ।

दुइज्जंतो–द्वितीयान्तः–पाषण्डी गृहस्थः । आव० १८९ ।

दुइज्जमाणा–द्रवन्ति इतस्ततो दोलायमानानि । जं० प्र० २३५ ।

दुइज्जमाणो– । आव० ७९३ ।

दुकूलं–वस्त्रविशेषः । भग० ४६० । कार्पासिकं–अतसीमयम् । भग० ५४० । वृक्षविशेषः । भग० ४६० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुकोडी–विसोहिकोडी अविसोहिकोडी । नि०चू० प्र० ९१ अ ।

दुक्कडगरिहा–ऐहिकान्यभविकपापनिंदनम् । चउ० ।

दुक्करं–दुःखेन क्रियत इति दुष्करं–दुरनुष्ठानम् । उत्त० ११६ । दुष्करं–अपूर्वकरणतो ग्रन्थिभेदः । भग० २८९ ।

दुक्कराइं–दुःखेन क्रियन्ते करोतेः सर्वधात्वर्थत्वाच्छक्यन्ते दुष्कराणि दुःशकानि । उत्त० ६६५ ।

दुक्काल–दुष्कालः धनधान्यादिसमृद्धिहीनःकालः । भ०१९९। दुष्कालो–धान्यमहार्घतादिना दुष्टः कालः । जं०प्र० ६६ ।

दुक्कुट्टिओ–दुष्कृष्टः । आव० ६२२ ।

दुक्खं–दुःखं–दुःखकारणं वा कर्म्म लोकसंयोगात्मकं वा । आचा० १४५ । अज्ञानं मोहनीयं वा । आचा० १५३ । दुःखयतीति दुःखं–संसारः । उत्त० ६२१ । दुःखहेतुम् । उत्त० ६२४ । दुःखयतीति दुःखं–अष्टप्रकारं कर्म तत्फलं वाऽसातोदयादिरूपम् । सूत्र० १३ । दुःखयतीति दुःखं–पापं कर्म्म । उत्त० २६२ । संसारिकं सुखमपि वस्तुतो दुःखमिति दुःखहेतुत्वाद् दुःखं कर्म । भग० ३८ । दुःखं–दुःखहेतु कर्म । भग० २९० । दुःखहेतुः । भग० ४८४ । दुःखं–दुःखविषयको भगवत्याः प्रथमशतके द्वितीय उद्देशकः । भग० ६ । दुःखयतीति दुःखः । उत्त० ११९ । दुःखानि कर्माणि । उत्त० २९३ ।

दुक्खसंभवा–दुःखं पापकर्म ततः संभवः उत्पत्तिर्येषां ते दुःखसम्भवाः । उत्त० २६२ । इहान्यजन्मनि च दुःखभाजनम् । उत्त० २६८ ।

दुक्खसावयाइण्ण–दुःखश्वापदाकीर्णः । ज्ञाता० १६९ ।

दुक्खाययणं–दुःखायतनम् । उत्त० ३२९ ।

दुक्खावणा–दुःखापना–मरणलक्षणदुःखप्रापणा, अथवा इष्टवियोगादिदुःखहेतुप्रापणा । भग० १८४ ।

दुक्खाविज्जइ–दुःख्यते । आव० ४०५ ।

दुक्खीला– । नि० चू० प्र० १२७ अ ।

दुक्खुव्वेअ–दुःखाद् उद्वेगो यस्य स दुःखोद्वेगः । आचा० ११९ ।

दुखुरा–द्विखुराः–गवादयः । उत्त० ६९९ । द्विखुराः–उष्ट्रादिचतुष्पदाः । जीवा० ३८ ।

दुगंछे–जुगुप्साकर्म्म–यदुदयेन च विष्ठादिबीभत्सपदार्थेभ्यो जुगुप्सते तत् । ठाणा० ४६९ ।

दुगंधी–दुर्गन्धी–सुनन्दश्रावकस्य द्वितीयो भवः । उत्त० १२३ ।

दुग–क्रियाविषयमेकसमयमनुभूयमानं उपचारात्तत्प्रतिज्ञाताऽपि द्विकः । उत्त० १५२ । एकसमये द्वे क्रिये समुदिते द्विक्रियं तदधीयते तद्वेदी वा द्वैक्रियः, कालभेदेन क्रियाद्वयानुभवप्ररूपी । आव० ३११ ।

दुगाउयं–द्विगव्यूतं–क्रोशद्वयम् । ओघ० ७८ ।

दुगुंछणा–जुगुप्सा । आचा० ७५ ।

दुगुंछमाण–जुगुप्समानः–निन्दन्परिहरन् । आचा० ११४ । जुगुप्समानः । उत्त० २२८ ।

दुगुंछा–जुगुप्सा प्रवचनखिंसा । ठाणा० १३८ । विचिकित्सा अनेषणीयशङ्का । आचा० ३३२ । जुगुप्सा–अस्नानादिमलिनतनुसाधुहीलना । उत्त० २६१ ।

दुगुंछामि–जुगुप्सामि–निन्दामि । आव० २६४ ।

दुगुंछामोहिणिज्जं–यदुदयवशात् पुनः शुभमशुभं वा वस्तु जुगुप्सते तत्, जुगुप्साजनकं मोहनीयं जुगुप्सामोहनीयम् । प्रज्ञा० ४६९ ।

दुगुंछिय–जुगुप्सितं–छिम्पकादि । ओघ० १५६ ।

दुगुंछिया–जुगुप्सिकताः–निन्दिताः । ओघ० १२० ।

दुगुल्ल–दुकुलं–कार्पासिकं वस्त्रम् । राज० ३७ । दुकूलं गौडविषयविशिष्टकार्पासिकम् । आचा० ३९४ । कार्पासिकं वस्त्रम् । जीवा० २१० । कार्प्पासिकमतसीमयं वा वस्त्रम् । सूर्य० २९३ । वस्त्रम् । जं० प्र० २८५ । ज्ञाता० २७ । जीवा० २३२ । वृक्षविशेषः तद्वल्कलाज्जातं दुकुलं–वस्त्रविशेषः । ज्ञाता० २७ । दुकूलानीति दुकूलो वृक्षविशेषः, तस्य वल्कं गृहीत्वा उदूखले जलेन सह कुट्टयित्वा बुसीकृत्य सूत्रीकृत्य च वूयन्ते यानि तानि । प्रश्न० ७० । दुकूलः–वृक्षविशेषः । प्रश्न० ७० । ज्ञाता० २७ । रुक्खो । नि० चू० प्र० २५४ आ । दुकूलं–वस्त्रजातिविशेषः । जीवा० २६९ ।

दुगूल–गौडविषयविशिष्टं कार्पासिकं दुकूलम् । वृक्षविशेषस्तस्य वल्कं गृहीत्वा उदूखले जलेन सह कुट्टयित्वा बुसीकृत्य च व्यूयते यत्तद् दुकूलम् । जं० प्र० १०७ ।

दुगोत्तफुसिया–वल्लीविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुग्ग-दुर्गाणि-जलदुर्गाणि, पर्वता एव दुर्गाणि । बृ० प्र० १८६ अ । कष्टसाध्यः । भग० ४८४ । दुर्गाणि-खातवलयप्राकारादिदुर्गमाणि । जं० प्र० १६८ । दुरधिगमाः । सम० १११ । जं अटविमज्झे भिल्लपुलिंदचाउव्वन्नजणवयमिस्सं दुग्गं । नि० चू० द्वि० २१ अ । दुर्गमं-स्थानम् । बृ० तृ० २२९ अ । दुर्ग-दुष्प्रवेशम् । विपा० ६२ । दुर्गं-जलस्थलदुर्गरूपम् । प्रश्न० ५० । दुर्गं-व्यसनम् । प्रश्न० ६३ । दुर्गं-प्राकारः । आव० ७३२ । दुर्ग-दुखाश्रयणीयम् । भग० २३१ । दुर्गः-जलदुर्गादिकः । भग० १७४ । दुर्गं-खातवलयप्राकारादिदुर्गमम् । भग० ३०७ ।

दुग्गइवड्ढणं-दुर्गतिवर्धनं-संसारवर्धनम् । दश० २०० ।

दुग्गए-दुर्गतः-दरिद्रः । ठाणा० २४९ ।

दुग्गओ-दुगोः-गलिबलिवर्दः । दश० २५० ।

दुग्गता-दुर्गताः-दुःस्थाः । ठाणा० १४७ ।

दुग्गतिप्पवाओ-दुर्गतौ नरकादिकायां कर्त्तारं-प्रपातयतीति दुर्गतिप्रपातः, दुर्गतौ वा प्रपातो यस्मात् सः, प्राणवधस्याष्टादशमः पर्यायः । प्रश्न० ५ ।

दुग्गम-दुःखेन गम्यत इति दुर्गमं भावसाधनोऽयं, कृच्छ्रवृत्तिरित्यर्थः । ठाणा० २९६ । दुर्गमः-कृच्छ्रगतिकः । प्रश्न० २० ।

दुग्गय-दुर्गतः-दरिद्रः । उत्त० २२६ ।

दुग्गा-दुर्गा-कोट्टक्रिया सैव महिषारूढरूपा । ज्ञाता० १३९ । दुर्गा-महिषारूढाऽऽर्या । अनु० २६ ।

दुग्गासे-दुःखेन ग्रासो यत्र तद् दुर्ग्रासः-दुर्भिक्षम् । पिण्ड० ८८ ।

दुग्गुच्चपव्वओ-दुर्गोच्चपर्वतः । आव० ३८४ ।

दुग्गूढं-दुर्गूढं-दुष्प्रावृतम् । बृ० द्वि० ५५ आ ।

दुग्घट्टा-दुर्घटा-दुराच्छादा । प्रश्न० ६० ।

दुग्घासं-दुर्ग्रासं-दुर्भिक्षम् । बृ० द्वि० २३ अ ।

दुघण-द्रुघणम् । राज० २२ । जीवा० १२१ । द्रुघणः-मुद्गरविशेषः । प्रश्न० ४८ ।

दुचक्कगं-द्विचक्रकं-शकटम् । बृ० प्र० ७७ आ । द्विचक्रं-गन्त्रिका । ओघ० १४० ।

दुचक्कलेवो-द्विचक्रलेपः-शकटलेपः । बृ० प्र० ८२ अ ।

दुचक्का-द्विचक्रा-गडिआ । ओघ० १३५ ।

दुचरिम-चरमाद् द्वितीयो द्विचरमः चरमो वा द्वितीयो यस्मादसौ द्विचरमः । विशे० ५७६ ।

दुच्चय-दुष्टः-कर्मद्रव्यसञ्चयः । भग० २८९ ।

दुच्चिण्ण-दुश्चीर्णः-परस्त्रीगमनादिदुराचारः । बृ० तृ० ९८ अ । दुश्चीर्णं-दुश्चरितं मृषावादनपारदार्यादि । ज्ञाता० २०५ ।

दुच्चिन्न-प्रमादकषायजदुश्चरितजनितं दुश्चरितं, दुश्चरितहेतु वा, मद्यपानाश्लीलानृतभाषणादि वा । दश० २७४ ।

दुजडी-अष्टाशीतौ महाग्रहे चतुरशीतितमः । ठाणा० ७९ ।

दुज्जंतु-दूयन्तां-लूयन्ताम् । प्रश्न० ३९ ।

दुज्जम्मजात-दुर्जन्मजातः । आव० ५७८ ।

दुज्जोहण-दुर्योधनः । ज्ञाता० २०८ ।

दुज्झाओ-दुष्टो ध्यातो दुर्ध्यातः-आर्त्तरौद्रलक्षणः एकाग्रचित्ततया । आव० ५७१, ७७८ ।

दुट्ठगंडो-दुष्टव्रणः-कुष्ठी । उत्त० २१८ ।

दुट्ठस्सो-दुष्टाश्वो गर्दभः । बृ० प्र० २४० अ ।

दुट्ठऽस्स-दुष्टाश्वः गर्दभः । ओघ० ७१ ।

दुट्ठाण-द्विः । ठाणा० ३३० ।

दुट्ठे-दुष्टः-द्विष्टः तत्त्वं प्रज्ञापकं वा प्रति, स चाप्रज्ञापनीयो, द्वेषेणोपदेशाप्रतिपत्तेः । ठाणा० १६५ ।

दुणापाणियं-दुर्गन्धपानीयम् । आव० ५५६ ।

दुणिसीहिया-दुर्निषीधिका-कष्टस्वाध्यायभूमिः । प्रश्न० १६४ ।

दुतं-द्रुतं त्वरितम् । ठाणा० ३९६ । जं० प्र० ४१७ ।

दुत्ति- । आव० ७८२ ।

दुद्दंतदोस-दुष्टं दमनं दुर्दान्तं तच्च प्रक्रमाच्चक्षुषस्तदेव दोषो दुर्दान्तदोषः । उत्त० ६३१ ।

दुद्दाइ-उवसंपण्णाणवि न देइ । नि० चू० तृ० ८३ अ ।

दुद्धं-दुग्धम् । आव० १९८ ।

दुद्धकाओ-दुग्धकायो नाम दुग्धघटकस्य कापोती । आव० ५५५ ।

दुद्धजाई-दुग्धजातिः-आस्वादतः क्षीरसदृशी । जीवा० २६५ ।

दुद्धर-दुर्द्धराणि-प्राणातिपातादिनिर्वृतिलक्षानि पञ्च महा-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व्रतानि । प्रज्ञा० ५ । दुर्द्धरं-गहनम् । ठाणा० ३६४ । दुद्धरः-प्रतिस्पर्द्धिनामनिवार्यः । प्रश्न० ७३ ।

दुद्धरिसं-दुर्द्धर्षं-अनभिभवनीयम् । प्रश्न० १३६ ।

दुद्धरिसतरा-दुष्प्रधृष्यतरो-भवतः-दुःखेन परिभूयेते दुर्जयतरो । ओघ० १४६ ।

दुधोयतराए-दुष्करतरधावनप्रक्रियम् । भग० २५१ ।

दुनाम-द्विरूपं सत् सर्वस्य नाम द्विनाम । अनु० १०६ । द्वयोर्वा नाम्नोः समाहार द्विनामं वा । अनु० १०६ ।

दुन्नरा-दुर्नयः-स्त्र्यादिसंसक्तस्थानवासः । बृ० द्वि०५ आ ।

दुन्निक्कमा-दुःखेन नितरां क्रमः,क्रमणं यस्यां सा दुर्निष्क्रमा दुरतिक्रमणिया । जं० प्र० १६६ ।

दुन्नियत्थं-दुष्परिहतम् । उप० गा० २२५ ।

दुन्नामधिज्ज-दुर्नामधेयं-पुराणः प्रतित इति कुत्सितनामधेयं च । दश० २७६ ।

दुपओआरं-द्वयोः पदयोः-स्थानयोः पक्षयोर्विवक्षितवस्तुतद्विपर्ययलक्षणयोरवतारो यस्य तद् द्विपदावतारम् । ठाणा० ३६ ।

दुपक्ख-द्वौ पक्षावस्येति द्विपक्षं-कर्मबन्धनिर्जरणं प्रतिपक्षद्वयसमाश्रयणात् । सप्रतिपक्षमनैकान्तिकं, पूर्वापरविरुद्धार्थाभिधायीतया विरोधिवचनमिति । सूत्र० २१६ । दुष्टः पक्षो दुष्पक्षः असत्प्रतिज्ञाम्युपगमः । सूत्र० ६१ ।

दुपडिग्गह- । सम० १२८ ।

दुपडोयार-द्वयोः प्रत्यवतारो यस्य तत् द्विप्रत्यवतारमिति, स्वरूपवत् प्रतिपक्षवच्चेत्यर्थः । ठाणा० ३६ । द्विप्रकाराः जीवाश्चाजीवाश्च । आव० ४७७ ।

दुपमज्झिय-दुष्प्रमार्जितं-तृतीयमसमाधिस्थानम् । आव० ६५३ ।

दुपयं-द्विपदं-शकटम् । ओघ० १४१ । दासीमयूरहंसादि आव० ८२६ ।

दुपयचउप्पयपमाणाइक्कमे-द्विपदचतुष्पदप्रमाणातिक्रमः। आव० ८२५ ।

दुप्पउत्त-अकुसलमणो । दश० चू० ६० । दुष्प्रयुक्तः-दुःसाधितः । ओघ० २२७ ।

दुप्पउत्तकाइया-दुष्टं प्रयुक्तं-प्रयोगः कायादीनां यस्य स दुष्प्रयुक्तस्तस्य कायिकी दुष्प्रयुक्तकायिकी । प्रज्ञा० ४३६ ।

दुप्पउत्तकायकिरिया-दुष्टं प्रयुक्तो दुष्प्रयुक्तः स चासौ कायश्च दुष्प्रयुक्तकायस्तस्य क्रिया दुष्प्रयुक्तकायक्रिया, दुष्टं प्रयुक्तं-प्रयोगो यस्य स दुष्प्रयुक्तस्तस्य कायक्रिया दुष्प्रयुक्तकायक्रिया । भग० १८२ । दुष्प्रयुक्तस्य-दुष्टप्रयोगवतो दुष्प्रणिहितस्येन्द्रियाण्याश्रित्येष्टानिष्टविषयप्राप्तौ मनाक् संवेगनिर्वेदगमनेन, तथा अनिन्द्रियमाश्रित्याशुभमनःसङ्कल्पद्वारेणापवर्गमार्गं प्रतिदुर्व्यवस्थितस्य प्रमत्तसंयतस्येत्यर्थः कायक्रिया दुष्प्रयुक्तकायक्रिया । ठाणा० ४१ ।

दुप्पउलि-दुष्पक्वः-अस्विन्नः । आव० ८२८ ।

दुप्पउलिओसहिभक्खणया-दुष्पक्वौषधिभक्षणता-अस्विन्नौषधिभक्षणता । आव० ८२८ ।

दुप्पए-अधोभागाप्रतिष्ठिते-प्रतिष्ठानरहिते । ओघ० २११ ।

दुप्पट्ठियसुप्पट्ठिओ-दुष्टं प्रस्थितः-प्रवृत्तो दुष्प्रस्थितः दुराचारविधातेतियावत् सुष्ठु प्रस्थितः सुप्रस्थितः सदनुष्ठानकर्तेति । उत्त० ४७७ ।

दुप्पडिकंत-मिथ्यादर्शनाविरतिजदुष्पराक्रान्तजनितं दुष्पराक्रान्तं, दुष्पराक्रान्त हेतु वा, वधबन्धनादि वा । दश० २७४ ।

दुप्पडिक्कंतो-दुष्प्रतिक्रान्तः-दुःशब्दोऽभावार्थस्तेन प्रायश्चित्तप्रतिपत्त्यादिना-अप्रतिक्रान्तः-अनिवर्त्तितविपाक इति विपा० ३८ ।

दुप्पडिताणंदे-दुष्प्रत्यानन्दः-उपकृतेन कृतमुपकारं यो नाभिमन्यते । ठाणा० २४६ ।

दुप्पडिबोहिणि-सद्धम्मे दुक्खं बुज्झंति । नि० चू० तृ० ४३ अ ।

दुप्पडियाणंदे-दुष्प्रत्यानन्दः-साधुदर्शनादिना नानान्यत इति । विपा० ३६ ।

दुप्पडियारं-दुःखेन-कृच्छ्रेण प्रतिक्रियते कृतोपकारेण पुंसा-प्रत्युपक्रियत इति खलप्रत्यये सति दुष्प्रतिकरं-प्रत्युपकर्तुमशक्यमिति यावत् । ठाणा० ११७ ।

दुप्पडिलेहं-दुष्प्रतिलेखितदूष्यपञ्चकम्, दूष्यपञ्चकस्य द्वितीयो भेदः । पल्हवी१कौतपी२प्रावार३नवत्वक्४दंष्ट्रागाली५भेदभिन्नम् । आव० ६५२ ।

दुप्पडिलेहणा-दुष्प्रत्युपेक्षणा-दुर्निरीक्षणा । आव० ५७६ ।

दुप्पडिलेहियदूस-दुष्प्रतिलेखितदुष्यम् । ठाणा० २३४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुप्पणिहिआ–दुष्प्रणिहिताः–अनिरुद्धाः । दश० २२६ ।

दुप्पडिहियजोगी–दुष्प्रणिहितयोगी–सुप्रणिधिरहितः प्रव्रजितः । दश० २२६ ।

दुप्पण्णवणिज्जा–दुक्खचरणकरणजातामाताओत्तिए धम्मं पण्णविज्जति । नि० चू० तृ० ४३ अ ।

दुप्पन्नवणिज्जाणि–दुष्प्रज्ञाप्यानि–दुःखेन धर्मसञ्ज्ञोपदेशेनार्यसङ्कल्पान्निवर्त्यन्ते । आचा० ३७७ ।

दुप्पमज्जणा–दुष्प्रमार्जना–अविधिना प्रमार्जना । आव० ५७६ ।

दुप्पमज्जियचारि–दुष्प्रमार्जितचारी, तृतीयमसमाधिस्थानम् । सम० ३७ ।

दुप्पयं–न पुष्पकमूले स्थितम् । बृ० द्वि० २४१ अ ।

दुप्परक्कंत–दुष्पराक्रान्तं प्राणिघातादत्तापहारादिकृतानां प्रकृत्यादिभेदेन । ज्ञाता० २०५ ।

दुप्परिकम्मतराए–दुष्परिकर्मतरं–कष्टकर्तव्यतेजोजननभङ्गकरणादिप्रक्रियम् । भग० २५१ ।

दुप्पस्स–दुःखेन दर्श्यते इति दुर्दर्शं, उपपत्तिभिर्दःशकं शिष्याणां प्रतीता वारोपयितुं तत्त्वमिति । ठाणा० २६७ ।

दुप्पहंस–दुःखेन प्रधर्ष्यन्ते–पराभूयन्ते केनापीति दुष्प्रधर्षाः । उत्त० ३५३ । दुष्प्रधर्षकः–अन्यैर्दुरभिभवः । उत्त० ३४६ ।

दुप्पुत्तं–पुप्फगमूलेसु न पइट्ठितं । नि० चू० तृ० ४१ आ । जं ठविज्जंतं उद्धं ठायति चालियं पुण पलोट्टति तं दुप्पुत्तं । नि० चू० प्र० १२५ आ ।

दुब्बल–दुर्बलः–वाध्यादिरोगाक्रान्तः । ओघ० ५० ।

दुब्बलदेहो–दुर्बलदेहः–कृशशरीरः । ओघ० ७१ ।

दुब्बलपच्चामित्ते–अबलप्रातिवेशिकराजः । ठाणा० ४६३ ।

दुब्बलयरो–दुर्बलतरः । आव० ४१६ ।

दुब्बलसरीरो–रोगपीडिओ दुब्बलसरीरो तवसोसियसरीरो वा । नि० चू० द्वि० ६५ अ ।

दुब्बलि–दुर्बलिका । आव० २३८ ।

दुब्बलिय–दौर्बल्यं–श्रमम् । आचा० ३८० । विद्यायां योग्यः । नि० चू० तृ० ७६ अ ।

दुब्बलियपूसमित्तो–दुर्बलिकापुष्पमित्रः । आव० ३०८ ।

दुब्बलियापूसमित्त–दुर्बलिकापुष्पमित्रः । उत्त० १७३ ।

दुब्भगाकरा–सुभगमपि दुर्भगमाकरोतीति दुर्भगाकरा, विद्याविशेषः । सूत्र० ३१६ ।

दुब्भपुप्फो–उरःपरिसर्पविशेषः । जीवा० ३६ ।

दुब्भि–अशुभः–मनोज्ञो यो न भवति । ठाणा० २५ ।

दुब्भिक्ख–दुर्भिक्षं–भिक्षाचराणां भिक्षादुर्लभत्वम् । जं० प्र० ६६ ।

दुब्भिक्खभत्तं–दुर्भिक्षकाले भिक्षुकाणां निर्वाहार्थं दुर्भिक्षभक्तम् यद् विहितं भक्तं तद् । भग० २३१ । यद् भिक्षुकार्थं दुर्भिक्षे संस्क्रियते तत् । औप० १०१ । दुर्भिक्षभक्तम् । ठाणा० ४६० ।

दुब्भिक्खभत्तेइ– । भग० ४६७ ।

दुब्भिक्खया–दुर्भिक्षता दुर्भिक्षभावः । आव० ८४४ ।

दुब्भिगंध–दुरभिगन्धः–तीव्रतरदुष्टगन्धः । ज्ञाता० १७७ ।

दुब्भिसद्द–अशुभशब्दः । प्रज्ञा० २८६ ।

दुब्भिसद्दत्ता–दुष्टशब्दता । ज्ञाता० १७७ ।

दुब्भिसद्दपरिणामे–अशुभः शब्दपरिणामः । जीवा० ३७३ ।

दुब्भी–असुभं रसेण उववेयं पि भोयणं दुब्भिगंधं ण पूजितं दुब्भि । नि० चू० ।

दुब्भुतिया–कृष्णवासुदेवस्य तृतीया भेरी । बृ० प्र० ५६ अ ।

दुब्भूइ–दुर्भूतिः–अशिवम् । बृ० द्वि० २६३ अ ।

दुब्भूए–दुः इति निन्दितं भूतं–भवनमस्येति दुर्भूतः दुराचारतया निन्द्यो भूतः । उत्त० ४३६ ।

दुब्भूय–दुर्भूतं–अशिवम् । जीवा० २८४ । दुष्टाः–जनधान्यादीनामुपद्रवहेतुत्वाद् भूताः–सत्त्वाः यूकामत्कुणोन्दुरतिड्डप्रभृतयो दुर्भूता इतय इत्यर्थः । भग० १६८ ।

दुभगणामे–दुर्भगनाम यदुदयादुपकारकृदपि जनस्य द्वेष्यः तत् । प्रज्ञा० ४७४ ।

दुभाग–ऊनोदरतायास्तृतीयो भेदः, त्रयोदशभ्य आरभ्य यावत् षोडश तावद् द्विभागोनोदरता । दश० २७ । द्विभागा । ठाणा० १४६ ।

दुभागपत्तोमोअरिया–द्विभागप्राप्तावमोदरिका । ओप० ३८ ।

दुभागप्पत्ते–द्विभागः अर्द्धं तत्प्राप्तो द्विभागप्राप्तः आहारः द्विभागो वा प्राप्तोऽनेनेति द्विभागप्राप्तः साधुः । भग०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२९३ ।

दुभिक्ख–दुर्भिक्षं–दुष्कालः भिक्षुकाणां भिक्षाचर्याऽक्षमः-कालः । भग० २०० ।

दुभिक्खभत्तं–अडविणिग्गयाणं भुक्खत्ताणं जं दुब्भिक्खे राया देति तं । नि० चू० प्र० २७२ अ ।

दुम–असुरकुमारेन्द्रस्य सप्तमः सैन्याधिपतिः । ठाणा० ४०६ । द्रुमः–अनुत्तरोपपातिकदशानां द्वितीयवर्गस्य सप्तममध्ययनम् । अनुत्त० २ । पदात्वनीकाधिपतिः । जं० प्र० ४०७ । दोसु माओ दुमो । नि० चू० प्र० १० आ । आनतकल्पे देवविमानविशेषः । सम० ३५ ।

दुमणं–द्रवनमुपतापनम् । प्रश्न० ३८ ।

दुमपत्तयं–द्रुमपत्रकं–उत्तराध्ययनेषु दशममध्ययनम् । उत्त० ९, ३३३ । सम० ६४ ।

दुमपुप्फिया–द्रुमपुष्पिका–दशवैकालिके प्रथममध्ययनम् । दश० १५ । द्रुमपुष्पिका–धम्मो मंगलं । ओघ० २०३ । दोसु माओ दुमो पुप्फ विकसणे दुमस्स पुप्फं दुमपुप्फं तेण–दुमपुप्फेण जत्थ उवमा कीरइ तमज्झयणं दुमपुप्फिया । नि० चू० प्र० १० आ ।

दुमसेणे–नवमबलदेववासुदेवयोः पूर्वभवीयधर्माचार्यः । सम० १५३ । द्रुमसेनः–अनुत्तरोपपातिकदशानां द्वितीयवर्गस्य अष्टममध्ययनम् । अनुत्त० २ ।

दुमा–भूमीयआगास य दोसु माया । दश० चू० ५ ।

दुम्मण–दुर्म्मना–दैन्यादिमान् द्विष्ट इत्यर्थः । ठाणा० १३१ ।

दुम्मणिअ–दौर्मनस्यं–दुष्टमनोभावः । दश० २५४ ।

दुम्मेह–घोसंतस्स वि जस्स गंथो न ठायति स दुम्मेहो । नि० चू० प्र० ३६ आ । अन्तकृद्दशानां तृतीयवर्गस्य दशममध्ययनम् । अन्त० ३ । द्रव्यव्युत्सर्गे पाञ्चालजनपदे काम्पील्यनगराधिपतिः य इन्द्रकेतुं दृष्ट्वा संबुद्धः । आव० ७१६ । उत्त० २९९, ३०३ । ज्ञाता० २१३ । प्रश्न० ७३ ।

दुम्मेहजडुो– । नि० चू० द्वि० ३६ आ ।

दुम्मेहा–दुर्मेधसः–दुर्बुद्धयः । उत्त० ५३० ।

दुय–द्रुतं–यत्त्वरितं गीयते, गीतस्य द्वितीयो दोषः । जीवा० १९४ ।

दुयओ–द्विका–द्विपरिणामो द्विपदो वा । भग० ३३१ ।

दुयक्खर–दासः । आव० ६९० ।

दुयगाणि–द्वे । आव० ३५० ।

दुयगावि–(देशीपदं) प्रक्रमाच्च द्वावपि दम्पती । उत्त० ३९४ ।

दुयङ्गपोरिसी–द्व्यर्द्धपौरुषी–सार्द्धपुरुषप्रमाणा छाया । सूर्य० ९१ ।

दुयादुयं–अतिशयद्रुतम् । तं० ।

दुरंत–दुरन्तं–दुष्टफलम् । प्रश्न० ६६ । दुःखेनान्तः–पर्यन्तो यस्य तद् दुरन्तम् । उत्त० २३३ । दुरन्तानि–दुष्टावसानानि । भग० १७४ ।

दुरंतपंतलक्खणे–दुरन्तप्रान्तलक्षणः–दुरन्तानि–दुष्टावसानानि अत एव प्रान्तानि अमनोज्ञानि लक्षणानि यस्य सः । भग० १७४ । दुरन्तानि–दुष्टपर्यन्तानि प्रान्तानि–अपसदानि लक्षणानि यस्य सः । ज्ञाता० १३९ ।

दुरणुपालओ–दुःखेनानुपाल्यत इति दुरनुपालः, स एव दुरनुपालकः । उत्त० ५०२ ।

दुरत्थाया–(देशी) बहिरर्थाभिधायकम् । बृ० द्वि० १७० अ ।

दुरप्पा–दुरात्मता–दुष्टाचारप्रवृत्तिरूपः । उत्त० ४७९ ।

दुरभिगंधं–मृतकलेवरादिवत् । जीवा० २८२ । दुष्टगन्धः ज्ञाता० १६१ । तीव्रतरदुष्टगन्धः । आव० ७७१ । ज्ञाता० १७७ ।

दुरभिगंधनामे–दुरभिगन्धः–यदुदयाद् दुरभिगन्धः शरीरेषूपजायते यथा लशूनादिनां तत् । प्रज्ञा० ४७३ ।

दुरहिट्ठिअ–दुरधिष्ठि–दुराश्रयम् । दश० १९२ ।

दुरहियास–दुरधिसह्या । भग० २३१ । दुरधिसह्यः । भग० ४८४ ।

दुरारद्धं–दुरारब्धम् । आव० ६८७ ।

दुरासय–दुःखेनासाद्यतेऽभिभूयत इति दुरासदः दुरभिभवः । दश० ९५ ।

दुरासया–दुःखेनाश्रीयन्ते अभिभवबुद्धयाऽऽसाद्यन्ते वा जेतुं सम्भावयन्ते केनापीति दुराश्रया दुरासदा वा । उत्त० ३५३ ।

दुरिट्ठं–दुरिष्टं दुर्नक्षत्रं दुर्यजनं वा । दश० ६५ ।

दुरुक्कं–ईषत्पिष्टम् । आचा० ३४८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुरुत्तर–दुरुत्तारः–अकुशलानुबन्धतोऽत्यन्तदीर्घः । दश० २०६ ।
दुरुवणियं–दुरुपनीतं–दुष्टमुपनीतं निगमितमस्मिन्निति । दश० ५२ ।
दुरुवणीए–दुष्टमुपनीतं–निगमितं-योजितमस्मिन्निति दुरुपनीतं परिव्राजकवाक्यवत् । ठाणा० २५६ ।
दुरुहइ–आरोहति । राज० ४१ ।
दुरुहिउं–आरोढुम् । आव० २६२ ।
दुरूतगं– । नि० चू० प्र० ३४४ आ ।
दुरूय–दुरूपाणि–विरूपाणि । ज्ञाता० ५१ ।
दुरूवा–दुःस्वभावाः । भग० ३०८ ।
दुरूहिज्जा–आरुहेत् । आचा० ३७६ ।
दुरोदरं–द्यूतम् । उत्त० ४२६ ।
दुर्गन्धा– । नि० चू० प्र० २४ ।
दुर्ध्यातः–दुष्टचिन्ताविषयीकृतः । ज्ञाता० १६२ ।
दुर्भग– । जं० प्र० २०६ ।
दुर्भिक्षं–दुरितविशेषः । भग० ८ ।
दुर्बलिकापुष्पमित्रं–आर्यरक्षितप्रज्ञावान् शिष्यः । विशे० ६२६ । प्रधानशिष्ये प्रथमः । विशे० १००२ ।
दुर्लक्षः–दुर्विभावः । विशे० १७६ ।
दुर्वर्ण– । जीवा० २७६ ।
दुर्विनोतम्– । आव० २६१ ।
दुलुडुलेमो–भ्राम्यामः । नि० चू० प्र० २६२ आ ।
दुल्लंभ–दुर्लभं–अनिवृत्तिकरणम् । भग० २८६ । दुर्लभे दुर्भिक्षे । ओघ० १५० ।
दुल्लभदव्वं–सतपागसहस्सपागादि वा त्रिकदुकादि वा । नि० चू० प्र० ६६ अ ।
दुल्लभदव्वागाढं– । नि० चू० द्वि० २१ आ ।
दुल्ललियगोट्ठी–दुर्ललितगोष्ठी । आव० ३५३ ।
दुल्लहलंभ–दुर्लभलाभः । आव० ३४५ ।
दुल्लु लेमि–गवेषयामि । नि० चू० प्र० १७७ अ ।
दुवए–कांपिल्यपुरे राजा । ज्ञाता० २०७ ।
दुवक्खरग–दासः । नि० चू० द्वि० ६५ अ ।
दुवक्खरियाओ–वेसस्त्रिया । नि० चू० प्र० ११८ आ ।
दुवक्खरिया–द्व्यक्षरिका वेश्या । आव० ४२६ ।
दुवग्गोवि–(देशीवचनत्वात्) द्वावपि । बृ० प्र० २६० अ ।
दुवामतराए–दुर्वाम्यतरकं–दुस्त्याज्यतरकलङ्कम् । भग० २५१ ।
दुवार–द्वारम् । नि० चू० द्वि० ६५ आ । सीसदुवारिया । नि० चू० प्र० १६१ अ ।
दुवारपिंडो–द्वारपिण्डः–द्वारशाखा । जीवा० २०४ ।
दुवारबाह–द्वारभागः । आचा० ३३८ ।
दुवारवयण–द्वारमेव वदनं–मुखं द्वारवदनम् । भग० ३१३ ।
दुवारा–गोपुच्छिकम् । व्य० प्र० १६५ अ ।
दुवालसंगे–द्वादशाङ्गानि-आचारादीनि यस्मिंस्तद्द्वादशाङ्गम् । सम० १०७ ।
दुवासपरियाए–द्विवर्षपर्यायः । ज्ञाता० १५५ ।
दुविट्ठ–आगमिन्यामुत्सर्पिण्यां अष्टमो वासुदेवः । सम० १५४ ।
दुविसए–द्रोतुं विहर्त्तुम् । बृ० तृ० १५२ आ ।
दुविहनियत्ती–श्रावकत्वप्रव्रजितत्वाभ्यां निवृत्तिरिति । ठाणा० ३३० ।
दुव्वए–दुर्व्रतः–व्रतवर्जितः । विपा० ३६ । असम्यग्व्रतोऽथवा दुर्व्ययः आयनिरपेक्षव्ययः कुस्थानव्ययो वा । ठाणा० २४८ ।
दुव्वण्ण–दुर्वर्णः–दुष्टशरीरच्छविः । जं० प्र० ११६ । एकस्मिन्नपि न पतति इत्यर्थः । नि० चू० प्र० १२५ आ ।
दुव्वलचरित्ती–विणा कारणेण मुलुत्तरगुणपडिसेवणं करोति । नि० चू० प्र० १०२ आ ।
दुव्वलिय– । नि० चू० तृ० ७६ अ ।
दुव्वा–बीया । नि० चू० प्र० २५५ आ । दूर्वा–हरितविशेषः । भग० ३०६ ।
दुव्विअड्ढा–दुर्विदग्धा–मिथ्याऽहङ्कारविडम्बिता । नंदी० ६४ ।
दुव्विचिंतिओ–दुर्विचिन्तितः । आव० ७७८ । दुट्ठो विचिन्तितो दुर्विचिन्तितः चलचित्ततयाऽशुभ एव । आव० ५७१ ।
दुव्विभाव–दुःखेन विभाव्यते दुर्विभावो–दुर्लभस्तद्भावस्तत्त्वं तेन दुर्विभावः । विशे० १७६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुव्विवयडा–दुर्विवृता–परिधानवर्जिता । बृ० द्वि० २५८ अ । विवृता–अनावृता सा चोत्तरीयापेक्षयाऽपि स्यादतो दुःशब्देन विशेष्यते दुष्ठुविवृता-दुर्विवृता–परिधानवर्जिता, विवृतोरुका दुर्विवृता । ठाणा० ३१३ ।

दुव्विवट्टिया–दुर्विदग्धा । बृ० प्र० ५८ अ ।

दुव्विसुज्झो–दुःखेन विशोध्यो–विशोधयितुं निर्मलतां नेतुं शक्यो दुर्विशोध्यः । उत्त० ५०२ ।

दुव्वुट्ठी–दुर्वृष्टिः–धान्याद्यनिष्पत्तिहेतुः । भग० १९९ ।

दुष्पणिहितकायिकी–प्रमत्तसंयतस्य क्रिया । कायिकी-क्रियाया द्वितीयो भेदः । आव० ६११ ।

दुष्पत्युपेक्षणं–दुष्टं–उद्भ्रान्तचेतसा प्रत्युपेक्षणम् । आव० ८३६ ।

दुष्प्रभः–कार्पटिकः । पिण्ड० ७१ ।

दुष्प्रमार्जितचारित्वं–तृतीयमसमाधिस्थानम् । प्रश्न० १४४ ।

दुष्टव्रणादिः–लोकमद्रव्यदोषो–दुष्टव्रणादिः । आव० ३८९ ।

दुसन्नप्पाणि–दुःसञ्ज्ञाप्यानि–दुःखेनार्यसञ्ज्ञां ज्ञाप्यन्ते । आचा० ३७७ ।

दुसमयट्ठिईयं–द्वौ समयौ यस्याः सा द्विसमया तथाविधा स्थितिरस्येति, द्विसमयस्थितिकम् । उत्त० ५९५ ।

दुसालयं–द्विशालकं–द्रुमगणविशेषः । जीवा० २६९ ।

दुस्संबोध–दुःखेन सम्बोध्यते–धर्मचरणप्रतिपत्तिं कार्यत इति दुस्सम्बोधः । आचा० ३५ ।

दुस्सण्णप्पा–जदा सट्ठा तदा दुक्खं सण्णविज्जंति दुस्स-ण्णप्पा । नि० चू० तृ० ४३ आ ।

दुस्समसुसम–दुष्षमसुषमा–दुष्षमानुभावबहुलाऽल्पसुषमा-नुभावेति । जं० प्र० ८९ ।

दुस्समा–दुष्षमा अधमकालः । दश० २७२ ।

दुस्साहडं–दुःखेनात्मनः परेषां च दुःखकरणेन सुष्ठु आद-रातिशयेनाहृतं उपार्जितं दुःस्वाहृतम् । उत्त० २७५ ।

दुस्सील–दुःशीलः–शुभस्वभावहीनः । विपा० ३९ । दुष्ट-मिति रागद्वेषादिदोषविकृतं शीलं-स्वभावः समाधिराचारो वा यस्या सौ दुःशीलः । उत्त० ४५ ।

दुस्सीलंपरियागयं–दुःशीलमेव दुष्टशीलात्मकः पर्यायस्त-मागतं दुःशीलपर्यायागतम् । उत्त० २५० ।

दुस्सीला–दुःशीला–पारदारिकाः । बृ० प्र० ३११ अ ।

दुह–दुःखं–तापानुभवरूपं दुःखम् । दश० ३९ । दोह । बृ० द्वि० ६२ आ । दुखं–प्रकृत्यैवासुन्दरा दुःखजननी । दश० २७७ ।

दुहओ–द्वौ । ठाणा० ५२२ । उभयतः । ज्ञाता० १९२ । रागद्वेषाभ्यां हतः–द्विहतः । आचा० १६९ । दुष्टं हतो दुर्हतः । आचा० १६९ ।

दुहओखहा–नाड्या वामपार्श्वादेर्नाडीं प्रविश्य तदेव गत्वा-ऽस्या एव दक्षिणपार्श्वादौ यत्रोत्पद्यते सा द्विधाखा । भग० ८६६ । उभयतोऽङ्कुशाकारा । ठाणा० ४०७ ।

दुहओजण्णोवइयं– । भग० १९० ।

दुहओवंका–यस्यां वारद्वयं कुर्वन्ति सा द्विधावक्रा । भग० ८६६ । उभयतो वक्रा । ठाणा० ४०७ ।

दुहओवत्ता–द्वीन्द्रियविशेषः । प्रज्ञा० ४१ ।

दुहओवि–द्वाभ्यां प्रकाराभ्यां द्विधा,न शुद्धतादिना स्वसम्ब-न्धिगुणलक्षणेनैकेनैव प्रकारेण, किन्तु स्वसम्बन्ध्याश्रय-सम्बन्धिगुणद्वयलक्षणेन । प्रकारद्वयेनापीत्यपिशब्दार्थः । उत्त० ३४८ ।

दुहओवेइया–यत्र बाह्योरन्तरा द्वे जानुनी कृत्वा प्रतिलिख्यते सा द्विधातो वेदिका । ओघ० ११० ।

दुहट्ट–दुर्घटो दुःस्थगो दुर्निरोधः । उपा० २३ । ज्ञाता० १३९ । दुःखितः-दुःखार्त्तो देहेन । विपा० ४१ । दुःखार्त्तः-देहेन दुःखितः । विपा० ४१ ।

दुहण–द्रुघणम् । अनु० १७७ । द्रुघणो-मुद्गरः । प्रश्न० २१ । उपा० ४७ । द्रुहणः-टक्करः । प्रश्न ४८ ।

दुहत्ता–दुःखिता–दुःखितत्वं दुःखकारित्वं वा द्रोहकत्वं वा । ठाणा० ३९९ ।

दुहतोणंतए–द्विधा–आयामविस्ताराभ्यामनन्तकं । द्विधा-नन्तकं प्रतरक्षेत्रम् । ठाणा० ३४७ ।

दुहतोनिसहसंठिया–उभयतो । निषधसंस्थिता । उभयतो-रथस्योभयोः पार्श्वयोर्यौ निषधौ । बलीवर्दौ तयोरिव संस्थितं संस्थानं यस्याः सा । सूर्य० ७१ ।

दुहतोवत्तो–द्वीन्द्रियजन्तुविशेषः । जीवा० ३१ ।

दुहतोऽवि–द्वावपि । उत्त० ५१७ ।

दुहतोवेतिता– । नि० चू० प्र० १८२ अ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुहसिज्ज–दुःखशय्यातः–नरकादिभवात् । आचा० ४३१ ।
दुहसेज्जा–दुःखदाः शय्या दुःखशय्याः ताश्च द्रव्यतोऽतथाविधखट्वादिरूपाः भावतस्तु दुःस्थचित्ततया दुःभ्रमणतास्वभावाः–प्रवचनाश्रद्धान १ परलाभप्रार्थन२कामाशंसन३स्नानादिप्रार्थन ४ विशेषिताः । ठाणा० २४७ ।
दुहिलं–द्रोहस्वभावं-द्रुहिलम् । विशे० ४६४ । द्रुहिलं–द्रोहस्वभावम् । सूत्रदोष विशेषः । कलुषं वा येन पुण्यपापयोः समताऽऽपाद्यते । आव० ३७५ । द्रोहवत् । प्रश्न० ११७ । द्रोहणशीलो–द्रोग्धा । उत्त० ३४६ ।
दूआ–दूताः–अन्येषां राज्यं गत्वा राजादेशनिवेदकाः । जं० प्र० १६० ।
दूइ–दूती–परसन्दिष्टार्थकथिका, उद्गादनादोषे द्वितीय । पिण्ड० १२१ ।
दूइजित्तए–द्रोतुं विहर्तुमित्युत्सर्गः । ठाणा० ३१० ।
दूइजित्ता–विहृत्य । सूत्र० ४१८ ।
दूइज्जंत–परिभ्रमन् । उत्त० ५३१ । द्रवन्-वसन् । औप० ४८ ।
दूइज्जंतयगामं–द्वितीयान्तकग्रामं–पाखण्डिगृहस्थग्रामम् । आव० १८६ ।
दूइज्जइ–विहरति । ओघ० ६० ।
दूइज्जति–रीइजति । नि० चू० प्र० १४६ अ ।
दूइज्जमाण–द्रवन्–गच्छन् । भग० १० । आचा० ३२४, ३२६ । विहरन् । सूत्र० ८७ । गच्छन् । ज्ञाता० ८ । द्रूयमानः–अनेकार्थत्वाद्धातूनां विहरन्, एकाकीनः साधुः । । आचा० २१४ । गच्छन् । व्य० द्वि० २२ अ ।
दूइपलासए–वाणिग्रामे चैत्यविशेषः । उपा० १ ।
दूइपलासे–वणिग्ग्रामे उद्यानविशेषः । विपा० ४५ ।
दूएक्काए–दूतकार्यम् । आव० २१४ ।
दूओ–दूतः । उत्त० ३०२ ।
दूढा–दुग्धा । व्य० द्वि० ३४५ आ ।
दूता–द्रवन्तः–ग्रामानुग्रामं गच्छन्तः । बृ० तृ० १८४ अ ।
दूतिज्जंता– । नि० चू० प्र० ३१४ अ ।
दूतिपलासए–वणिग्ग्रामे चैत्यविशेषः । भग० ५०१,७५८ ।
दूतिपलासते–वणिग्ग्रामे चैत्यविशेषः । अन्त० २३ ।
दूतिपलासे–वणिग्ग्रामे चैत्यविशेषः । भग० ४३६, ५३२ ।
दूतिपिंडो–गिहिसंदेसगं णेति आणेति वा जं तं णिमित्तं पिंडं लभति सो दूतिपिंडो । नि० चू० द्वि० ६६ अ ।
दूबलियापूसमित्तो–दुर्बलिकापुष्पमित्रः । आव० ३०७ ।
दूभग–अणवकारी वि दूभगणामकम्मोदयातो परस्स अणुइकरो दूभगो । नि० चू० द्वि० ११७ अ ।
दूभगसत्ताए–दुर्भगः सत्त्वः-प्राणी यस्याः सा ।ज्ञाता० १६६।
दूभगनिंबोलियाए–निम्बगुलिकेव-निम्बफलमिव अत्यनादेयत्वसाधर्म्यात् दुर्भगाणां मध्ये निम्बगुलिका दुर्भगनिम्बगुलिगा । दुर्भगानां मध्ये निर्बोलिता-निमज्जिता दुर्भगनिर्बोलिता । ज्ञाता० १६६ ।
दूमगं–दावकं-उषतापकम् । प्रश्न० ४१ ।
दूमण–दवनं–उपतापः । प्रश्न० २२ । दुर्मनसः-दुष्टमनःकारिण उपतापकारिणो वा शब्दादयो विषयाः । सूत्र ६८ । धवलनम् । व्य० द्वि० ७ अ ।
दूमिय–दूमितं-धवलितम् । भग० ५४० । सुधापङ्कधवलितम् । सूर्य० २६३ ।
दूमिया–सुकुमारलेपेन सुकुमारीकृतकुड्या सेटिकया धवलीकृतकुड्या च । बृ० प्र० ६२ अ ।
दूय–दूतः–अन्येषां राजादेशनिवेदकः । भग० ३१६ ।
दूयत्ता–दूतता । उत्त० ११५ ।
दूयमान– । ठाणा० ५०१ ।
दूयेत्–गच्छेद् । आचा० ३८२ ।
दूर–अत्यर्थम् । प्रश्न० ६३ । दूरं–विप्रकृष्टम् । भग० १३ । विप्रकर्षः । ज्ञाता० ६ ।
दूरगतो–दूरगतिः । भग० १३२ ।
दूरमूलं–अनादिकम् । भग० २१७ ।
दूरमोगाढे–दूरमधोऽवगाह्य । ओघ० १२३ ।
दूरल्लकूविए–दूरीयकूपिका–भृगुकच्छहरण्यां ग्रामविशेषः । आव० ६६४ ।
दूरालय–दूरे–सर्वहेयधर्म्मेभ्य इत्यालयो दूरालयःमोक्षः । आचा० १६६ ।
दूरुल्लकूविया–दूरीयकूपिका–भृगुकच्छहरण्यां ग्रामविशेषः । आव० ६६५ ।
दूरूव–दूरूपं–विरूपम् । भग० ४७० ।
दूर्वा–हरितविशेषः । आचा० २८५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूषणं- । बृ० प्र० १३६ अ ।

दूसं-वस्त्रम् । आचा० ३४७ । भग० ७९ । दूष्यं-वस्त्रजातिः । जीवा० २८० । वत्थं । नि० चू० प्र० ११८ आ ।

दूसणा-दूषणा-आम्लरसता । बृ० तृ० १९४ आ ।

दूसएणयं-दूष्यपञ्चकम् । आव० ६५२ ।

दूसमदूसमा-दुःषमदुःषमः-एकविंशतिवर्षसहस्रप्रमाणः कालः । भग० २७६ ।

दूसमसूसमं-दुष्षमसुषमा-चतुर्थारकप्रतिभागः ।ठाणा० ७७।

दूसमसूसमा-दुःषमसुषमः । भग० २७५ ।

दूसमा-दुष्ठु समा दुष्षमा-दुःखरूपा । ठाणा० २७ । दुःषमः-एकविंशतिवर्षसहस्रप्रमाणः कालः । भग० २७६ ।

दूसरनाम-दुःस्वरनाम यदुदयवशात् स्वर श्रोतृणामप्रीतये तत् । प्रज्ञा० ४७४ ।

दूसरयण-दूयरत्नं-प्रधानवस्त्रम् । जं० प्र० १८९ ।

दूसहनिसङ्ग-दुस्सहदत्त । मर० ।

दूसि-देशी० दूष्यं-मथितं तक्रम् । प्रज्ञा० ३५९ ।

दूसिकादि-अच्छिमलो । नि० चू० प्र० १९० आ ।

दूसियं-दूषितं-कलुषितम् । आव० ८४८ ।

दूसी-दूषितः-नपुंसकपुरुषयोः नपुंसकस्त्रीवेदयोर्निन्दकः । बृ० तृ० ७ आ । दूसितो वेदो जस्स स दूसी भण्णति, दोसु वा थीपुरिसवेदेसु रज्जति जो सो वा दूसी, दो वा थीपुरिसवेदे सेवति जो सो दूसी, जो थीपुरिसवेदो दूसति सो वा दूसी । नि० चू० द्वि० ३१ अ ।

दूसेइ-दूष्यं-वस्त्रजातिः । जं० प्र० १२२ ।

दृतिः-बस्तिः । भग० ८२ ।

दृतिकाराः-देयडाः । प्रज्ञा० ५८ ।

दृप्तः-मत्तः । उत्त० २४६ ।

दृढप्रहारिः-कर्मवशकारके दृष्टान्तः । बृ० द्वि० ७० अ ।

दृढमित्रः-धनमित्रसार्थवाहस्य मित्रम् । बृ० प्र० ३०८ आ ।

दृषत्-शिला । उत्त० ६८९ ।

दृष्टपरमार्थसारः-दृष्टः-उपलब्धः परमार्थाय-मोक्षाय सारः प्रस्तावात्क्षान्त्यादिरूपः प्रधानोपायः परमार्थानां वा-ज्ञानादीनां सारः-प्रधानं येनासौ दृष्टपरमार्थसारः । उत्त० ५३२ ।

दृष्टपाठी-दृष्टः-उपलब्धश्चरकसुश्रुषादिर्येन स । ओघ० ४२, ७४ ।

दृष्टसाधर्म्यवत्-त्रिविधानुमाने तृतीयमनुमानम् । भग० २२२ ।

दृष्टिपथप्राप्तता-चक्षुर्विषयः, चक्षुःस्पर्शः पुरुषच्छाया इत्येकार्थाः । जं० प्र० ४४२ ।

दृष्टिपात-नानाविद्यास्थानं शास्त्रम् । आच० ४१९ ।

दृष्टिरागः-अप्रशस्तपरिणामविशेषः, प्रावादुकशतानामात्मीयात्मीयदर्शनानुरागो दृष्टिरागः । आव० ३८७ ।

दृष्टिवाद-सञ्ज्ञाया द्वितीयो भेदः । सम० १८ ।

दृष्टिवपर्यासिका-दृष्टेः-बुद्धेर्विपर्यासिका दृष्टिविपर्यासिका मतिभ्रम इत्यर्थः । सम० २५ ।

दृष्टिविपर्यासिता-दृष्टेः-बुद्धेर्विपर्यासिता दृष्टिविपर्यासिता मतिभ्रम इत्यर्थः । सम० २५ ।

दृष्टिविपर्यासितादण्डः-मित्रादेरमित्रादिबुद्धया विनाशनम् । प्रश्न० १४३ ।

देउल-देवकुलम् । व्य० प्र० २०५ अ ।

देउलदरिसणं-देवकुलदर्शनं युद्धप्रवेशे चामुण्डाप्रतिमाप्रणमनम् । पिण्ड० १२९ ।

देउलिअ-देवकुलपरिपालिका वेषमात्रधारिणः ।ओघ० ४५।

देउलिया-देवकुलिकाः-यक्षादीनामायतनं तत् पार्श्ववर्त्तिनो वा मठाः । बृ० प्र० २३५ आ । देवकुलिका । आव० ३५४ ।

देज्जं-देयं-अनाभवद्वातव्यम् । विपा० ३९ ।

देज्जा-दद्यात्-तदग्रतो ढौकयेत् । उत्त० २७२ ।

देमो-दद्मोभवदभिमतेभ्यः । भग० ४७६ ।

देयडा-देयडाः-दृतिकाराः । प्रज्ञा० ५६ ।

देवंधकार-तमस्कायस्य सप्तमं नाम । देवानामपि तत्रोद्योताभावेनान्धकारात्मकत्वाद् देवान्धकारम् । भग० २७० ।

देवंधगार-देवानामप्यन्धकारोऽसौ तच्छरीरप्रभाया अपि तत्राप्रभवतादिति देवान्धकारः । ठाणा० २१७ ।

देव-भगवत्याः त्रयोदशशते देवप्ररूपणार्थो द्वितीय उद्देशकः । भग० ५९६ । दीव्यन्ति-स्वेच्छया क्रीडन्तीति देवाः । प्रज्ञा० ४३ । देवाः-वैमानिकाः । भग० १३५ । दैवः-वैमानिकः ज्योतिष्कः । दश० २४९ । असंयतभाषायां दृष्टान्तः । आचा० ३८९ । देवशब्देन देवा देव्यश्च गृहीता । सम० ६ । भगवत्याः द्वादशशते देवभेदविषयो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवम उद्देशकः। भग० ५५२। वैमानिको ज्योतिष्को वा। बृ० द्वि० २६४ अ। सामान्यः। अनु० २५। राजा। नंदी० १५१। देवो गन्धिलविजये वक्षस्कारः। जं० प्र० ३५७। देवः अकम्पितपिता। आव० २५५।

देवई–देवकी-कृष्णवासुदेवमाता। सम० १५२। आव० १६२। देवकी-वासुदेवमाता। आव० २७२। आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां एकादशस्य तीर्थकरस्य पूर्वभवनाम। सम० १५४। देवकी–वसुदेवस्य द्वितीया राज्ञी। उत्त० ४८६।

देवउत्ते–जम्बूद्वीपद्वीपे ऐरावते आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां तीर्थङ्करः। सम० १५४।

देवउल–देवकुलम्। आव० १६०। देवकुलं–देवस्थानम्। भग० २३७।

देवकम्मं–देवकर्म–पूर्वसाङ्गतिकदेवप्रयुक्ता क्रिया। जीवा० १३०।

देवकम्मणा–देवकर्म्मणा–देवक्रियया देवतानुभावेन शक्त्युपघातः स्यादिति शेषः देवश्च कार्मणं च तथाविधद्रव्यसंयोगो देवकार्मणम्। ठाणा० ३६४।

देवकम्मविहि–देवकर्मविधिः–देवकृत्यप्रकारः चिन्तितमात्रकार्यकरणरूपः। जं० प्र० २१०।

देवकहकह–प्रभूतानां देवानां प्रमोदभरवशतः स्वेच्छावचनैर्बोलः–कोलाहलो देवकहकहः। जीवा २४८।

देवकहकहते–देवप्रमोदकलकलः। ठाणा० २४५।

देवकामा–काम्यन्ते-अभिलष्यन्त इति कामा देवानां कामाः देवकामाः–दिव्याङ्गनाङ्गस्पर्शादयः। उत्त० १८७।

देवकिब्बिस–देवानां मध्ये किल्बिषाः–पापा अत एवास्पृश्याश्चण्डालप्रायास्तेषामियं दैवकिल्बिषी। बृ० प्र० २१२ आ। देवकिल्बिषभावनाजनितो दैवकिल्बिषः।ठाणा०२७४।

देवकी–वसुदेवपत्नी। सूत्र० ३०८। कृष्णमाता। प्रश्न० ७३। परग्रामदूतीत्वदोषविवरणे धनदत्तदुहिता। पिण्ड० १२७।

देवकुंडि–देवकुलिका। आव० ४३२।

देवकुरा–दक्षिणेन देवकुरवः। ठाणा० ६६। देवकुरवो नाम कुरवः। जं० प्र० ३५४। उत्तरपूर्वरतिकरपर्वतस्योत्तरस्यामीशानदेवेन्द्रस्य रामरक्षितायाः अग्रमहिष्या राजधानी। जीवा० ३६५। ठाणा० २३१। मेरोर्जम्बूद्वीपगतः दक्षिणतः देवकुरुनामा विदेहः। जं० प्र० ३१०।

देवकुरु–वापीनाम। जं० प्र० ३७०। देवकुरं–देवकुरून्। जं० प्र० ३०८। देवकुरुः द्रहनाम। जं० प्र० ३५५। देवकुरुकूटं सौमनसवक्षस्कारपर्वते चतुर्थं कूटनाम। जं० प्र० ३५३। देवकुरु विद्युत्प्रभवक्षस्कारपर्वते तृतीयः कूटः। जं० प्र० ३५५। देवकुरुः द्रहनाम। जं० प्र० ३०८। नमिजिनस्य दीक्षाशिबिका। सम० १५१। देवकुरुः–अकर्मभूमिविशेषः। प्रज्ञा० ५०।

देवकुरुकूडे–देवकुरुनाम्ना कूटं विद्युत्प्रभवक्षस्कारपर्वते तृतीयं कूटनाम। जं० प्र० ३५५।

देवकुरुदहे–देवकुरौ द्वितीयो महद्द्रहः। ठाणा० ३२६।

देवकुरोत्तरा– । नि० चू० द्वि० २८ आ।

देवकुलं–देवकुलं–देवालयः। आव० ५८१। देवकुलं–वनगह्वारम्। ओघ० ५३। देवकुलं–सशिखरदेवप्रासादः। प्रश्न० ८। प्रज्ञा० २७।

देवकुलानि– । आचा० ३६६।

देवकुलिकं– । ओघ० १६।

देवकुलिया–देवानां वातस्येवोत्कलिका देवोत्कलिका। जीवा० २४८।

देवकूपः–अमरकूपसदृशमतीवोंडं कूपम्।व्य० प्र० २२४ अ।

देवगुत्ते–देवगुप्तः–परिव्राजकविशेषः। औप० ६१।

देवच्छंदए–देवच्छन्दको देवोपवेशस्थानम्। जं० प्र० ७६। देवच्छन्दकः। जीवा० २३४।

देवजण्णगो–देवयज्ञः। आव० ६७५।

देवजसे–अन्तकृद्दशानां तृतीयवर्गस्य पञ्चममध्ययनम्। अन्त० ३।

देवजाणरहो–देवयानरथः। आव० ७४०।

देवजुती–देवानां–सुराणां द्युतिः–दीप्तिः शरीराभरणादिसम्भवा। युतिर्वा–युक्तिरिष्टपरिवारादिसंयोगलक्षणा। ठाणा० १४२।

देवज्जगो–देवार्यकः। आव० २००।

देवज्जय–देवार्यः। आव० १६१।

देवड–जुगुप्सणीयः। व्य० द्वि० ४१६ आ। देवडिङ्गरः। व्य० द्वि० २३४ अ।

देवतमसेति– । ठाणा० २१७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवतमिस्से-देवतमिश्रं-अन्धकारम्, तमस्कायस्याष्टमं नाम । भग० २७० ।

देवताट्ठाणं- । नि० चू० प्र० ४७ अ ।

देवती-देवकी-वसुदेवराज्ञी । अन्त० ५ ।

देवदत्तः-घायाः-परावर्तितद्वारे निलयश्रेष्ठिपुत्रः । पिण्ड० १०० । अपध्यानाचरिते श्रावकोदाहरणम् । आव० ८३० ।

देवदत्ता-रोहितकनगरे दत्तसार्थवाहस्य दुहिता । ठाणा० ५०८ । रोहीतकनगरे दत्तगाथापतिसुता । विपा० ८२ । चम्पानगर्यां गणिका । ज्ञाता० ९२ । गृहपतिसुता, अन्तकृद्दशासु दुःखविपाकानां नवममध्ययनम् । विपा० ३५ । उदायनदेवीप्रभावतीसत्का दासी सुवर्णगुलिकाऽपरनामा । प्रश्न० ८९ । उज्जयिन्यां गणिका । उत्त० २१८ । वीतभये प्रभावत्या दासी । उत्त० ९६ । **देवदत्ता**-पुरुषद्वेषिणी गणिकाविशेषः । दश० १०८ । देवदत्ता-रुपादिगुणवती वेश्या । विशे० ४३७ ।

देवदारे-सिद्धायतनस्य प्रथमं द्वारनाम । ठाणा० २३० ।

देवदालि-फलविशेषः । भग० ८०३ ।

देवदाली-वल्लीविशेषः । प्रज्ञा० ३२ । वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३२ । रोहिणी । प्रज्ञा० ३६४ ।

देवदालीपुप्फं-देवदालीपुष्पं-रोहिणीपुष्पम् । प्रज्ञा० ३६४ ।

देवदिन्न-धनसार्थवाहपुत्रः । ज्ञाता० ८३ ।

देवदिन्ना-देवेन दत्ताः-सुलसापुत्राः-देवदत्ताः । आव० ६७६ ।

देवदीवो-देवद्वीपः-द्वीपविशेषः । जीवा० ३२१ ।

देवदुंदुहिसणाहो-देवदुन्दुभिसनाथः-दिव्यः शब्दविशेषः । आव० ४८८ ।

देवदुहुदुहुकं-देवानुकरणवचनम् । जीवा० २४८ ।

देवदूसजुयलं-देवदूष्ययुगलं-देववस्त्रयुग्मम् । जीवा० २५३ । जं० प्र० ४२० ।

देवदेव-देवदेवः । आव० २२१ । शक्रादिः । आव० ७९०, २२१ ।

देवद्दोणी- । नि० चू० तृ० ६ अ ।

देवपडिक्खोभे-देवप्रतिक्षोभः, परिक्षोभहेतुत्वात् तमुकायस्य द्वादशमं नाम । भग० २७१ ।

देवपलिक्खोभेति-कृष्णराजेरष्टमं नाम । ठाणा० ४३२ ।

देवपलिहे-कृष्णराजेः सप्तमं नाम । ठाणा० ४३२ ।

देवपव्वते-चतुर्थो वक्षस्कारपर्वतः । ठाणा० ३२६ ।

देवपव्वया-पर्वतविशेषः । ठाणा० ८० ।

देवफलिहे-देवपरिघः देवानां भयोत्पादकत्वात् तमुकायस्य एकदशमं नाम । भग० २७१ ।

देवभद्दो-देवभद्रः-देवे द्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३७० ।

देवभूयं-मरणम् । ठाणा० ५२३ ।

देवमणि-देवमणिनामा हयानां महालक्षणतया प्रसिद्धः । जं० प्र० २३७ ।

देवमल्ले-देवानां सम्बन्धि माल्यं देवमाल्यं बल्यादि । आव० २३० ।

देवमहाभद्दो-देवमहाभद्रः देवे द्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३७० ।

देवमहावरो-देवमहावरः देवे समुद्रेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा ३७० ।

देवयं-देवभावो देवता सैव दैवतम् । उत्त० २८२ । दैवतं-परमदेवता । सूर्य० २६७ ।

देवयपूआ-देवतापूजा यथाभक्तिबल्याद्युपचाररूपा । दश० २४० ।

देवयाभिओगो-देवताभियोगः । आव० ८११ ।

देवर-देवा । आव० ३५४ । देवा-पतिलघुभ्राता । आव० ८२४ ।

देवरई-साकेतपुरेशः, नदीक्षिप्तः । भक्त० ।

देवरन्नेति-देवानामरण्यमिव बलवद्भूयेन नाशनस्थानत्वाद् यः स देवारण्यमिति । ठाणा० २१७ ।

देवरमणं-साहंजनीनगर्यामुद्यानम् । विपा० ६५ । सुघोषनगरे उद्यानम् । विपा० ९५ ।

देवराजः-आधायाः प्रामित्यद्वारविवरणे कोशलाविषये कुटुम्बी, सम्मतसाधुजननः । पिण्ड ९८ ।

देवराय-देवराजः-इन्द्रः । आव० ५६६ ।

देवड्ढिः-देवानामिव ऋद्धिर्देवस्य वा राज्ञ ऋद्धिः देवर्द्धिः । जं० प्र० २४६ ।

देवलासुओ-देवलासुतः-सर्वकामविरक्ततायां विषये उज्जयिनीपतिः । आव० ७१४ ।

देवलोए-देवलोकः-भवनपत्याद्याश्रयरूपः । जं० प्र० १२७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवलोग–देवलोकः–देवाश्रयः । भग० ३७ ।

देवलोगपरिग्गहिय–देवलोकः–भवनपत्याद्याश्रयरूपस्तथा-क्षेत्रस्वाभाव्यतस्तद्योग्यायुर्बन्धनेन परिगृहीतो येन स देवलोकपरिगृहितः । जीवा० २८४ ।

देववरो–देववरः–देवसमुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३७० ।

देववूढा–देवानां व्यूहः सागरादिसाङ्ग्रामिकव्यूह इव यो दुरधिगम्यत्वात् स देवव्यूहः । ठाणा० २१७ ।

देववूहे–देवानां दुर्भेदत्वाद् व्यूह इव चक्रादिव्यूह इव देव-व्यूहः । भग० २७० ।

देवशर्मा–द्रव्यपूतिनिरूपणे समिल्लपुरे यक्षपूजकः । पिण्ड० ८३ । योगद्वारविवरणे कुलपतिः । पिण्ड० १४४ ।

देवशर्म्मा–आधाया–अभ्याहृतविवरणे शालिग्रामे मङ्क्षुः । पिण्ड० ९७ ।

देवसंनिवायं–देवानां संनिपातः–समागमो रमणीयत्वाद् यत्र स तथा तं देवसन्निपातः–देवसमागमः । भग० १२७ ।

देवसंमो–देवशर्मा ब्राह्मणविशेषः । आव० ४२८ ।

देवसन्नत्ती–देवसंज्ञप्तेः–देवप्रतिबोधनाद्या सा ।ठाणा० ४७४।

देवसन्निपाते–देवसन्निपातो–देवसमवायः । ठाणा० २४५ ।

देवसमुद्दो–देवसमुद्रः । जीवा० ३२१ ।

देवसम्मं–जंबूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे अस्यामवसर्पिण्यां द्वादशः तीर्थङ्करः । सम० १५३ ।

देवसिओ–दैवसिकः । आव० ७७८ ।

देवसिणाए–देवस्नातकः–देवश्रेष्ठो बहूनामुपजीव्यः । सूत्र० ३२६ ।

देवसेण–नृपतिविशेषः । भग० ६८८ । ठाणा० ४५९ ।

देवस्सुए–जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां षष्ठः तीर्थङ्करः । सम० १५३ ।

देवा–दिवं–आगासं तंमि जे वसंति ते । दश० चू० ८ । वैमानिकज्योतिष्कलक्षणाः । ठाणा० ४६५ । ज्योतिष्क-वैमानिकाः । उत्त० ४३० । दीव्यन्ति इति देवाः वैमानिकज्योतिष्काः । ठाणा० २२,१४२ । दीव्यन्ति क्रीडन्तीति देवा भवनपत्यादयः । यदि वा दीव्यन्ते स्तूयन्ते जगत्त्रयेणापीति अर्हन्तः । उत्त० ६१६ । दीव्यन्ति क्रीडां कुर्वन्ति दीव्यन्ते वा स्तूयन्ते वाऽऽराध्यतयेति देवाः । भग० ५८५ । वैमानिका ज्योतिष्कवैमानिका वा । ठाणा० १०४ । देवाः–देवासुराः । दश० २२२ । आराध्याः क्रीडाकान्त्यादियुक्ता वा । भग० ५८५ ।

देवाइदेवा–देवान् शेषानतिक्रान्ताः पारमार्थिकदेवत्वयोगा-द्देवाः देवातिदेवाः । भग० ५८५ ।

देवाणंदे–जम्बूद्वीपे ऐरवतक्षेत्रे आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां चतुर्विंशः तीर्थंकरः । सम० १५४ ।

देवाणंदा–देवानन्दा श्रीमहावीर–प्रथममाता । अन्त ६ । भग० २१८,५५७ । चतुर्दशरात्रीनाम् । जं० प्र० ४९१ । देवानन्दा पञ्चदशी रात्रिनाम । सूर्य० १४७ । निरय० ३५।

देवाणुप्पिआ–देवानुप्रिया-ऋजुस्वभावाः । जं० प्र० २३२। देवान्-स्वामिनोऽनुकूलाचरणेन अनुप्रीणन्ति इति देवानु-प्रियाः । जं० प्र० १६१ ।

देवाणुप्पिए–देवानुप्रियाः वन्द्यपादाः । जं० प्र० २०३ ।

देवाणुप्पिया–प्रियामन्त्रणम् । भग० १०१ । देवानुप्रियः सरलस्वभावः । औप० २४ ।

देवातिदेवा–देवानां मध्ये अतिशयवन्तो देवाः देवाधिदेवाः-अर्हन्तः । ठाणा० ३०३ ।

देवानंदा–ऋषभदत्तब्राह्मणस्य भार्या । आचा० ४२१ । निरत्यपरनाम पञ्चदशी रात्रिनाम । जं० प्र० ४९२ । ऋषभदत्तब्राह्मणपत्नी । सम० ८९ । आव० १७७ ।

देवानुपूर्वी–आनुपूर्वीविशेषः । प्रज्ञा० ४७३ ।

देवानुभावं–उत्तमवैक्रियकरणादिप्रभावम् । सम० १८ ।

देवामेव–देवानेव भवनवास्यादीनेव । ठाणा० ३८४ ।

देवायणो– । नि० चू० प्र० १२८ अ ।

देवारन्ने–देवारण्यं अन्धकारम् । तमःकायस्य नवमं नाम । भग० २७० ।

देवावासंतरा–देवावासविशेषाः । भग० ४९९ ।

देवाहिदेवा–देवानां इन्द्रादीनामधिका देवाः पूज्यत्वाद्देवा-धिदेवाः । सम० ४३ । देवानामधिकाः पारमार्थिकदेवत्व-योगाद् देवा देवाधिदेवाः । भग० ५८३ ।

देवाहिवई–देवाधिपतिः देवानां स्वामी । उत्त० ३५० ।

देविंदामरभवणं–देवेन्द्रस्येव अमरभवनं देवेन्द्रामरभव-नम् । आव० ३७२ ।

देवि–भगवत्याः दशमे शते चमरोद्यग्रमहिषीप्ररूपणार्थः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पञ्चम उद्देशकः । भग० ४९२ ।

देविले–देविलः ऋषिर्यः शीतोदकबीजहरितादिपरिभोगादेव सिद्धः । सूत्र० ९५ ।

देवी–देविलः अरजिनमाता । आव० १६० । अरचक्रिमाता । आव० १६१ । समस्तान्तःपुरप्रधाना भार्या सकलगुणधारणात् । सूर्य० २ । अग्रमहिषी । उत्त० ४५० । कृताभिषेका पट्टराज्ञी । जं० प्र० १४ । गृहिणी । उत्त० ४८४ ।

देवुक्कलितीते–देवोत्कलिका देवलहरिः । ठाणा० २४५ ।

देवुद्देसए– । भग० ६०१ ।

देवेन्द्रावग्रहः–अवग्रहस्य प्रथमो भेदः । आव० १५६ । आचा० १६४ ।

देवोववाए–जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां त्रयोविंशः तीर्थंकरः । सम० १५४ ।

देशकाङ्क्षा–एकं दिगम्बरादिदर्शनाभिकाङ्क्षते । प्रज्ञा० ६० ।

देशकालप्रलापी– । बृ० प्र० १२४ आ ।

देशकालाव्यतीतं–देशकालव्यतीतत्वं । प्रस्तावोचितता, चतुर्दशो वचनातिशयः । सम० ६३ ।

देशदर्शनावरणीयं–चक्षुरचक्षुरवधिदर्शनावरणीयम् । ठाणा० ९७ ।

देशमूलगुणप्रत्याख्यानम्–पञ्चाणुव्रतानि । आव० ८०४ ।

देशशङ्का–देशविषया शङ्का । आव० ८१४ । समाने जीवत्वे कथमेको भव्योऽपरस्त्वभव्य इति शङ्का । दश० १०१ । प्रज्ञा० ६० ।

देशाः– । भग० ४१२ ।

देशावधिः–सम्बद्धावधिः । विशे० ३६९ ।

देशिककुटी–यत्र बहुनामागंतुकानां जनानां स्थानम् । बृ० प्र० ९३ अ ।

देशीभाषा–देशभेदेन वर्णविलीरूपा । ज्ञाता० ४२ ।

देशोत्तरगुणप्रत्याख्यानं–गुणव्रतत्रयशिक्षाव्रतचतुष्टयभेदभिन्नम् । आव० ८०४ ।

देस–षड् भागः । बृ० तृ० ८५ आ । देशः–खण्डांशः । भग० २७८ । देशे-स्थाने । जं० प्र० ३३९ । देशः-मण्डलम् । पिण्ड० १६२ । हत्थसयं । नि० चू० प्र० १८७ आ । द्वेष्यः–अप्रीतिकरः । विशे० ६२५ । देशोऽवसरः । विशे० ८५२ । एक्का पसती दो वा तिण्णि वा पसतीतो देसो भण्णति । नि० चू० द्वि० ११२ अ । देशः–नानाव्रीहिकोद्रवकङ्गुगोधूमादिनिष्पत्तिभाक् । आव० ८३७ । देशः–प्रदेशः । सूर्य० ९८ । देशः–लघु । आव० ६३६ । हस्तशतप्रमितं क्षेत्रम् । पिण्ड० १०५ । देशः–भूभागः । आव० ७७४ । दिश्यते–प्रदेशापेक्षया समानपरिणतरूपत्वेऽपि देशापेक्षायां असमानपरिणतिमाश्रित्य विशिष्टरूपतया विवक्ष्यते–उपदिश्यत इति देशः–त्रिभागचतुर्भागादिः । उत्त० ६७२ । देशः-प्रस्तावः अवसरः विभागः पर्यायः । विशे० ८३७ । देशः-द्रव्यदेशः । भग० ८५ । भूमेर्महत्खण्डम् । भग० ३८१ । देशास्तु लघवः भागाः । जं० प्र० १४४ ।

देसकंखा–देशकाङ्क्षा एकं दर्शनं काङ्क्षति दिगम्बरदर्शनादि । दश० १०२ ।

देसकहा–लाटादिदेशसम्बन्धेन स्त्रीणां वर्णनं देशकथा । प्रश्न० १३९ । देशस्य जनपदस्य कथा देशकथा । ठाणा० २०९ । आव० ५८१ ।

देसकालंमि–देशकाले भिक्षावेलायां प्राप्तायां । ओघ० १५५ ।

देसकाल–देशकालः देशः प्रस्तावोऽवसरो विभागः पर्यायः इत्यनर्थान्तरं अभिष्टवस्त्ववाप्त्यवसरः कालः । दश० ९ । प्रस्तावः । ज्ञाता० १३६ । देशकालः । आव २०३ । देशकालः देशरूपः कालः देशकालः अभिष्टवस्त्ववाप्त्यवसरकालः । विशे० ८३७ ।

देसग्गं–देशान्तम् । ज्ञाता० १९५ ।

देसच्चागी–अवराहेण पडिसेवित्तेण णाणदंसणचरित्ताण किंचि धरति सा वि देसच्चागी । नि० चू० प्र० १०० अ ।

देसच्छंदकहा–देशे छन्दो-गम्यागम्यविभागः तस्य कथा देशच्छन्दकथा । ठाणा० २१० ।

देसजई–देशयतिः श्रावकः । आउ० ।

देसण्णाणे–देशाज्ञानं-विवक्षितद्रव्यं देशतो यदा न जानाति देशाज्ञानमकारप्रश्लेषात् । ठाणा० १५४ ।

देसतेणो–सदेसपरदेसे वहरंतो । नि० चू० द्वि० ३८ आ ।

देसदेस–हत्थसता आरतो देसदेसो । नि० चू० प्र० १८७ आ । जीवा० १४० । दशभागः । बृ० तृ० ८५ आ । देशदेशः-हस्तशतादाराद्धस्तशतमध्यदेशः । पिण्ड० १०५ ।

देसधम्मो–देशधर्मः देशाचारः । स च प्रतिनियत एव नेपथ्यादिलिङ्गभेदः । दश० २२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देसनाणावरणिज्जे–देशज्ञानावरणीयं देशं ज्ञानस्याऽऽभिनिबोधिकादिमावृणोतीति मत्याद्यावरणं तु घनातिच्छादितादित्येषत्प्रभाकल्पस्य केवलज्ञानदेशस्य कटकूट्यादिरूपावरणतुल्यमिति देशावरणम् । ठाणा० ६७ ।

देसनेवत्थकहा–देशे नेपथ्यं स्त्रीपुरुषाणां वेषः स्वाभाविको विभूषाप्रत्ययश्च तस्य कथा देशनेपथ्यकथा । ठाणा० २१० ।

देशबंध–द्वितीयादिषु समयेषु तान् गृह्णाति विसृजति चेत्येवं देशबन्धः । भग० ४०० ।

देसभाए–देशभागः–विभागः । अनुत्त० ६ ।

देसभाग–देशभागः–देशविशेषः । जीवा० १५६ । देशभागाः देशविशेषाः । प्रज्ञा० ८६ । देशभागाः देशा एव । औप० ५ ।

देसयं–देशकं प्रवर्त्तकम् । प्रश्न० ११५ ।

देसरागाणि– । आचा० ३६३ ।

देसविकप्पकहा–देशे विकल्पः-सस्यनिष्पत्तिः वप्रकूपादिदेवकुलभवनादिविशेषश्च तस्य कथा देशविकल्पकथा । ठाणा० २०६ ।

देसवित्थारणंतए–क्षेत्रस्य यो रुचकापेक्षया पूर्वाद्यन्यतरदिग्लक्षणो देशस्तस्य विस्तारो विष्कम्भस्तस्य प्रदेशापेक्षया अनन्तकं देशविस्तारानन्तकम् । ठाणा० ३४७ ।

देसविरए–देशविरतः–संयतासंयतः । प्रज्ञा० ३६२ ।

देसविहिकहा–देशे मगधादौ विधिः–विरचना भोजनमणिभूमिकादीनां भुज्यते वा यद्यत्र प्रथमतयेति देशविधिस्तत्कथा देशविधिकथा । ठाणा० २०६ ।

देससंका–देशशङ्का तु किं विद्यन्ते अप्कायादयो जीवाः ?। आचा० ४३ ।

देससामंतोवणिवाइया–देशसामन्तोपनिपातिकी प्रेक्षकान् प्रति यत्रैकदेशेनागमो भवत्यसंयतानां सा क्रिया । आव० ६१३ ।

देससिणाण–देशस्नानं अधिष्ठानशौचातिरेकेणाक्षिपक्ष्मप्रक्षालनम् । दश० ११६ ।

देसा–आदेशाः । सूत्र० २६७ ।

देसारक्खिओ–चोरोद्धरणिकः । नि० चू० प्र० १६५ आ । विषयारक्षिकः । नि० चू० प्र० १७६ आ ।

देसारक्खी–देशारक्षकः-महाबलाधिकृतः । बृ० तृ० ३३ अ ।

देसावगासियं–देशे-दिग्व्रतगृहीतस्य दिक्परिमाणस्य विभागे अवकाशः–अवस्थानमवतारो विषयो यस्य तद्देशावकाशं तदेव देशावकाशिकं-दिग्व्रतगृहीतस्य दिक्परिमाणस्य प्रतिदिनं सङ्क्षेपकरणलक्षणं सर्वव्रतसङ्क्षेपकरणलक्षणं वा । ठाणा० २३७ । दिग्व्रतगृहीतदिक्परिमाणस्यैकदेशः–अंशस्तस्मिन्नवकाशः–गमनादिचेष्टास्थानं देशावकाशस्तेन निर्वृत्तम् देशावकाशिकम् । आव० ८३५ ।

देसि–देशविशेषः । बृ० द्वि० २०३ अ ।

देसिअत्तं–देशिकत्वं–निपुणमार्गज्ञत्वम् । आव० ३८३ ।

देसिआ–दर्शिता देशिता वा । दश० १८० ।

देसिए–देशिता देशनं देशः कथनमित्यर्थः तदस्यास्तीति देशिकः । आव० ६६ । देशनं देशः कथनं सोऽस्याऽस्तीतिदेशिकः । विशे० ६१५ ।

देसिओ–देशिकः–निपुणमार्गज्ञः । आव० ३८४ । देशिकः अग्रयायी । आव० ७७५ ।

देसिक्कदेसविरइ–देशैकदेशविरतिः-देशः-स्थूरप्राणातिपातः एकदेशः तस्यैव यथाहृश्यवनस्पतिकायाद्यतिपातयोर्विरतिः–निवृतिः । आव० ७८ ।

देसितो–परदेशवासी । नि० चू० प्र० ३४८ अ ।

देसिनेवत्थं–देशीनेपथ्यम् । प्रज्ञा० ६६ ।

देसिय-दैवसिकं–दिवसनिर्वृत्तं प्रतिक्रमणम् । आव० ५६३ । दैवसिकम् । उत्त० ५४५ । देशिकं–बृहत्क्षेत्रव्यापि । आचा० ३३३ ।

देसिल्लगं–देशविशेषोद्भवम् । बृ० द्वि० २४१ आ ।

देसी–देशीत्यङ्कदृष्टः । व्य० द्वि० २८६ अ । देशविशेषः । बृ० द्वि० २२८ अ ।

देसीओ–देशीतो देशीभाषया । विशे० २४ ।

देसेइ–दर्शयति । ज्ञाता० १६६ ।

देसेण–विवक्षितशब्दसमूहापेक्षया देशेन–देशतः कांश्चिदित्यर्थः : ठाणा० ४७२ ।

देसेण सव्वं–देशेन च सर्वेण च यत् प्रवृत्तं देशेन सर्वम्, देशेन–स्वावयवेन सर्वतः–सर्वात्मना । भग० ८४ ।

देसोवघायसमुग्घाणकिरिया–देशोपघातसमुदानक्रिया यत्र देशोपघातेन समुदानक्रिया क्रियते, यथा कश्चित्कस्यचिद्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इन्द्रियदेशोपघातं करोतीति । आव० ६१५ ।

देसोहि–अवधिप्रकाश्यवस्तुनो देशप्रकाशी अवधिर्देशावधिः । सम० १४५ ।

देसोही–देशावधिः सर्वजघन्यो मध्यमः । प्रज्ञा० ५३८ ।

देहंतर–देहान्तरः देहस्यावस्थाविशेषः । आचा० १३७ ।

देहंबलिया–देहबलिमित्येतस्याख्यानं देहबलिका । ज्ञाता० २०० ।

देह–आहारपरिणतिजनित उपचयः । अनु० २० । देहः–अभेदविवक्षया देही । भग० २९३ ।

देहए–देहति पश्यति । सूत्र० ३३ ।

देहजडुसुद्धी–देहजाड्यशुद्धिः श्लेष्मादिप्रहाणतः । आव० ७७३ ।

देहपलोयणा–देहप्रलोकनं आदर्शादानाचरितम् । दश० ११७ ।

देहप्परिणाम–देहपरिणामः–प्रतिविशिष्टा शरीरशक्तिः । आचा० ५० ।

देहबलिया–देहबलिका वृत्तिविशेषः । विपा० ७४ । आव० ३०४ ।

देहमाणी–प्रेक्षमाणा । भग० ४६० ।

देहलाघवं–शरीरलाघवं यन्नातिकृशो जातिस्थूलः शरीरेण । व्य० द्वि० १०२ आ ।

देहली– । उत्त० ६०७ । व्य० प्र० ११३ आ ।

देहव्वावी–देहव्यापी शरीरमात्रं व्याप्तुं शीलमस्येति आत्मा । दश० १३३ ।

देहाः–पिशाचभेदविशेषः । प्रज्ञा० ७० ।

देहाणिं–देहोदानीम् । उत्त० ३८१ ।

देही–जीवः । अनु० २४४ ।

देवविनियोगः–कर्म्मव्यापारः । नंदी० ७२ ।

दोउयरियं–जलोदरिकम् । विपा० ७४ ।

दोकिरिता–द्वे क्रिये समुदिते द्विक्रियं तदधीयते तद्वेदिनो वा द्वैक्रियाः कालाभेदेन क्रियाद्वयानुभवप्ररूपिणः । ठाणा० ४१० ।

दोकिरिया–द्वे क्रिये शीतवेदनोष्णवेदनादिस्वरूपे एकत्र समये जीवोऽनुभवतीत्येवं वदन्ति ये ते द्वैक्रियाः । ओप० १०६ ।

दोक्खरो–द्व्यक्षरः–दासः । व्य० द्वि० ८७ आ ।

दोगच्चं–दारिद्र्यं । नि० चू० प्र० ८१ आ । दौर्गत्यम् । आव० ३८५ ।

दोगुंछी–जुगुप्सी । उत्त० ८६ । जुगुप्सते आत्मानमाहारं विना धर्मधुराधरणाक्षममित्येवंशीलो जुगुप्सी । उत्त० २६६ ।

दोगुंदगो–त्रायस्त्रिंशाः । उत्त० ४५१ ।

दोच्चं–चोरातिभयं । नि० चू० प्र० १३७ आ । चौरादिभयं । बृ० द्वि० २२४ आ ।

दोच्चंग–द्वितीयाङ्गं मात्रकः । व्य० द्वि० १७४ आ । तीमनं–द्रवितरसम् । ओघ० १९२ ।

दोच्चंपि–द्विरपि । आव० २६२ ।

दोच्चंपिउग्गहं–केचिदाचार्या गृहस्थविषयं द्वितीयमविग्रहमिच्छन्ति । बृ० द्वि० ८९ अ ।

दोच्चा–भयम् । बृ० द्वि० १०९ अ । भयेन । ओघ० ५२ ।

दोच्चासतराइंदिया–नवमी भिक्षुप्रतिमा । सम० २१ ।

दोच्चोग्गहो–ततो अम्हे पुणो आगंतुं तुब्भे दोच्चंपि उग्गहं अणुण्णवेस्सामो, एसो दोच्चोग्गहो । नि० चू० द्वि० १७० आ । पुव्वं ओहारितो दत्तो इदाणिं णिदेज्जं देहित्ति, एस दोच्चोग्गहो । नि० चू० १७७ आ ।

दोज्झिइ–धोक्ष्यति । विशे० ६३५ ।

दोण– ज्ञाता० । २०८ ।

दोणमुह–दोणमुखं प्रायेण जलनिर्गमप्रवेशम् । जीवा० ४० । द्रोणमुखं–बाहुल्येन जलनिर्गमप्रवेशम् । प्रज्ञा० ४८ । जीवा० २७९ । जलस्थलनिर्गमप्रवेशम् । आचा० २८५ । जलपथस्थलपथोपेतम् । अनु० १४२ । द्रोण्यो–नावो मुखमस्येति द्रोणमुखं-जलस्थलनिर्गमप्रवेशम् । उत्त० ६०५ । द्रोणमुखं जलस्थलपथयुक्तम् । प्रश्न० ६४ । जलेण थलेण दोसुवि मुहं दोणमुहं । नि० चू० प्र० २२९ अ । जलपथेन स्थलपथेन द्वाभ्यामपि प्रकाराभ्यां भाण्डमागच्छति तद्द्वयोः पथोर्मुखमिति निरुक्त्यत्वात् द्रोणमुखम् । बृ० प्र० १८१ आ । द्रोणमुखः । सूत्र० ३०९ । जलपथस्थलपथोपेतम् । औप० ७४ । भग० ३६ । ज्ञाता० १४० ।

दोणमुहमारो–मारीविशेषः । भग० १९७ ।

दोणमुहरूवं– । भग० १९३ ।

दोणमुहाति–द्रोणमुखानि येषां जलस्थलपथावुभावपि स्तः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठाणा० ८६ ।

दोणमेह–द्रोणमेघः । ठाणा० ८ । प्रमाणजलवर्षीमेघो द्रोणमेघः । विशे० ६२६ ।

दोणाचार्यः–आचार्यविशेषः । ज्ञाता० २५४ ।

दोणा–द्रोणः–चतुःसेतिकाप्रमाणः । जं० प्र० २४४ । द्रोणः–आढकचतुष्टयनिष्पन्नः । अनु० १५१ ।

दोणि–द्रोणी नौः । प्रश्न० ८ ।

दोद्धियं–तुम्बं । नि० चू० प्र० २६६ आ ।

दोद्धियकं–तुंबघटितं । नि० चू० प्र० १२३ अ ।

दोब–म्लेच्छविशेषः । प्रज्ञा० ५५ ।

दोभासिअ–द्वैभाषिकः । आव० ६१४ ।

दोभासिआ– । सम० २, २१ ।

दोमणंसिया–दौर्मनस्यं-शोकाद्यस्ति यस्याः सा दौर्मनस्यिका तद्वा सञ्जातमस्या इति दौर्मनस्यिता । ठाणा० ३१३ ।

दोमासिएसु– । आचा० ३२७ ।

दोमिलिवी–लिपिविशेषः । प्रज्ञा० ५६ ।

दोर–सूत्रदवरकम् । आव० ४७४ । दवरकः । ओघ० ६२ ।

दोरज्जाणि– । आचा० ३७७ ।

दोला–चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः । प्रज्ञा० ४२ ।

दोवई–द्रौपदी–द्रुपदनृपस्य पुत्री । ज्ञाता० २०७ । प्रज्ञा० ४०६ ।

दोवारिए–दौवारिकः-प्रतीहारः राजदौवारिको वा । औप० १४ ।

दोवारिय–दौवारिकः, प्रतीहारः । भग० ३१८ ।

दोवारिया–बारवाला । नि० चू० प्र० २७२ अ । दारे चेव णिविट्ठा रक्खंति । नि० चू० प्र० २७१ अ ।

दोषपदः–अपराधस्थानः । उत्त० २६० ।

दोस–द्वेषः–अप्रीतिलक्षणः । आव० ८४८ । दोषः-मालिन्यकरणम् । औप० १६ । दोषः रोगादिकः । सूर्य० २६७ । दोषः–मालिन्यकारिणी चेष्टा । जीवा० २७७ । द्वेषः–अप्रीतिः । आव० ५६७ । अनभिव्यक्तक्रोधमानस्वरूपमप्रीतिमात्रं द्वेषः । भग० ८० । दोषः गुणेतरः स चातितादिदोषसामान्यापेक्षया विशेषः । ठाणा० ४६२ । द्वेषः । औप० ७६ । अन्यथास्थिते हि वस्तुन्यन्यथा भाषणं दोषः । प्रज्ञा० २५५ । द्वेषे निश्रितं मत्सरिणां गुणवत्यपि निर्गुणोऽयमित्यादि । ठाणा० ४८६ । द्वेषणं द्वेषः दूषणं वा दोषः, स चानभिव्यक्तक्रोधमानलक्षणभेदस्वभावोऽप्रीतिमात्रम् । ठाणा० २६ । दोषः–रागादिकः पूर्वकृतं पापं वा द्वेषो वा । भग० १०० । अप्रीतिमात्रम् । ज्ञाता० ७७ । दूषयति विशुद्धमप्यात्मनं विकृतिं नयतीति दोषः कर्म । उत्त० ३७३ । आत्मनः परस्य वा दूषणम् । भग० ५७२ । दोषः–दोषवान् । उत्त० ३०५ । दोषः–दूषणः । ज्ञाता० २०५ ।

दोसकलिया–द्वेषयुक्ता । ज्ञाता० १६७ ।

दोसट्ठियरुवज्झाया–दोषार्त्तरोपाध्यायौ । आव० ४६५ ।

दोसनिस्सिआ–द्वेषनिसृता,मृषाभाषाभेदः । आव० २०६ । द्वेषनिसृता यत्प्रतिनिविष्टस्तीर्थकरादीनामप्यवर्णं भाषते । प्रज्ञा० २५६ ।

दोसपउस–दोषप्रदोषाः दोषाः इहैव मनस्तापादयः प्रदोषाश्च परत्र नरकगत्यादयः । उत्त० २६० ।

दोसमइलो–द्वेषमलिनः द्वेषाक्रान्तमूर्त्तिः । आव० ५८५ ।

दोसमासकयं–द्वाभ्यां द्विसङ्ख्याभ्यां माषाभ्यां पञ्चरक्तिकामानाभ्यां क्रियते–निष्पाद्यत इति द्विमाषकृतम् । उत्त० २६७ ।

दोसवत्तिया–द्वेषप्रत्ययिकी, विंशतिक्रियामध्ये एकोनविंशतितमा । आव० ६१२ ।

दोसा–पारलौकिका अपायाः बृ० द्वि० २०४ आ ।

दोसापुरिया–लिपिविशेषः । प्रज्ञा० ५६ ।

दोसिए–दूष्यं पण्यमस्येति दौषिकः दूष्यव्यवहारी । अनु० १४६ ।

दोसिणं–पर्युषितम् । ओघ० १०४, २५३ ।

दोसिणा–चन्द्रिका । प्रश्न० १६३ ।

दोसिणाति–ज्योत्सना । ठाणा० ८६ ।

दोसिणापक्खो–ज्योत्सनापक्षः शुक्लपक्षः । सूर्य० २३४ ।

दोसिणाभा–अष्टमोत्क्षेपस्य द्वितीयमध्ययनम् । ज्ञाता० २५२ । सूर्यस्य द्वितीयाग्रमहिषी । ठाणा० २०४ । ज्योत्सना भा चंद्रस्य ज्योतिषेन्द्रस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी । जीवा० ३८४ । भग० ५०५ । चन्द्रस्य द्वितीयाग्रमहिषी । ठाणा० २०४ । ज्योत्सना भा चन्द्रस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी । जं० प्र० ५३२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोसिया–कर्मार्यभेदविशेषः । प्रज्ञा० ५६ । वस्त्रवणिजः । नि० चू० प्र० २४४ अ । वस्त्राणिविक्रयेण दोसिया । नि० चू० तृ० ४५ अ । दौषिकाः । व्य० द्वि० ३४० आ ।

दोसिल्ल–दोषयुक्तः । भक्त० ।

दोसीण–पर्युषिते । ओघ० ६७ । नि० चू० द्वि० ७६ अ । दोषीनं–मध्याह्नम् । ओघ० १४८ । दोषान्नं रात्रि-पर्युषितम् । प्रश्न० १६३ । पर्युषितम् । आव० २२०, ४३२ । पर्युषितान्नम् । आव० २०१ ।

दोसीणवेला–प्रभातवेला उषःकालः । दश० ३८ ।

दोसीणा– । नि० चू० प्र० १४० आ ।

दोहणं–दोहनम् । आव० २२६ ।

दोहणवाडगो–गोवीओ जत्थ दुज्झंति सा । नि० चू० प्र० १५६ अ ।

दोहल–दोहदो–मनोरथः । ज्ञाता० २५ ।

दोहारच्छेयणेणं–द्वौ हारौ–भागौ यत्र छेदने द्विधा वा कारः–करणं यत्र तद् द्विहारं द्विधाकारं वा । भग० ५३५ ।

दौर्भाग्यम्– । जीवा० २७६ ।

दौवारिकः–प्रतिहारः । उत्त० ३५४ । नंदी० ७३ ।

द्यूतकारः– । नंदी० १५७ ।

द्यूतव्यसनं–यत्तु द्यूतविनोदेऽनवरतं दीव्यते तत् । बृ० प्र० १५७ अ ।

द्रमकः–नैष्ठुर्यवाचकः शब्दः । दश० २१५ । रङ्कः । नंदी० १५६ । ग्राममाश्रितस्तुन्दपरिभूजः । आचा० ३१४ ।

द्रमिला–देशविशेषः । व्य० द्वि० २८ अ ।

द्रवं–पानकम् । ओघ० १०१ ।

द्रवकारिकाः–परिहासकारिकाः । ज्ञाता० ४४ ।

द्रविडदेशजाः–द्रविड्यः । जं० प्र० १४१ ।

द्रव्यं–ओदनादिकम् । भग० ६६३ ।

द्रव्यकायः–द्रव्यमाश्रित्य कायः । आव० ७६७ ।

द्रव्यकात्स्न्यम्–अशेषपर्याययुक्तम् । उत्त० ५५७ ।

द्रव्यकेतनं–चालिनी परिपूर्णकः समुद्रो वेति । आचा० १६३ ।

द्रव्यक्षणः–द्रव्यात्मकोऽवसरो । आचा० १०६ ।

द्रव्यक्षुल्लकः–परमाणुः । दश० १०० ।

द्रव्यगर्हा–मिथ्यादृष्टेरनुपयुक्तस्य सम्यग्दृष्टेश्च द्रव्यगर्हा, अप्रधानगर्हेत्यर्थः । ठाणा० ४३ ।

द्रव्यचूडा–व्यतिरिक्ता सचित्ता कुर्कुटस्य अचित्ता मुकुटस्य चूडामणिः मिश्रा मयूरस्य । आचा० ३२० ।

द्रव्यतीर्थता–द्रव्यतो नद्यादीनां समोऽनपायश्च भूभागो भौतादिप्रवचनं वा । ठाणा० ३३ ।

द्रव्यनिवृत्तिः–हलकृष्टादिनिवृत्तिः । आव० ५५३ ।

द्रव्यप्रत्ययः–द्रव्यं च तत्प्रत्याय्यप्रतीतिहेतुत्वात् प्रत्ययश्च द्रव्यप्रत्ययः–तप्तमाषकादिः । आव० २८० ।

द्रव्यप्रत्युपेक्षणा–वस्त्रपात्राद्युपकरणानामनशनपानाद्याहाराणां च चक्षुर्निरीक्षणरूपा । ठाणा० ३६१ ।

द्रव्यप्राणा–इन्द्रियादयः । प्रज्ञा० ७ ।

द्रव्यमहद्–अचित्तमहास्कन्धो दण्डादिकरणेन यश्चतुर्भिः समयैः सकललोकमापूरयति । उत्त० २५५ ।

द्रव्यमूलम्– । आचा० ८८ ।

द्रव्यलेश्या–कृष्णादिद्रव्याण्येव । ठाणा० ३२ । जीवस्य शुभाशुभपरिणामरूपा । बृ० प्र० २५६ आ ।

द्रव्यश्रुतम्–अक्षरश्रुतम् । नंदी० १८८ ।

द्रव्यसुप्ताः–निद्राप्रमादवन्तो द्रव्यसुप्ताः । आचा० १५२ ।

द्रव्यस्थानम्–आकाशम् । उत्त० ४२२ ।

द्रव्यानुयोगः–अर्हद्वचनानुयोग तृतीयो भेदः–पूर्वाणि सम्मत्यादिकश्च । आचा० १ ।

द्रव्यावधिमरणं–यानि नारकादिभवनिबन्धनतयाऽऽयुःकर्मदलिकान्यनुभूय म्रियते, यदि पुनस्तान्येवानुभूय मरिष्यति तदा तद् द्रव्यावधिमरणम् । उत्त० २३२ ।

द्रव्यावीचिमरणं–यन्नारकतिर्यग्नरामराणामुत्पत्तिसमयात् प्रभृतिनिजनिजायुःकर्मदलिकानामनुसमयमनुभवनाद्विचटनं तत् । उत्त० २३१ ।

द्रव्यास्तिकः–नयविशेषः । सम० ४२ ।

द्रव्येन्द्रियाणि–निर्वृत्त्युपकरणरूपाणि । प्रज्ञा० २३ ।

द्रव्योपक्रमः–द्रव्यस्य नटादेः कालान्तरभाविनाऽपि पर्यायेण सहेदानीमेवोपायविशेषतः संयोजनं, द्रव्येण घृतादिना द्रव्ये भूम्यादौ द्रव्यतः घृतादेर्वा उपक्रमः । अनु० ४५ । सचेतनाचेतनमिश्रद्विपदचतुष्पदापदरूपस्य द्रव्यस्य परिकर्म्म विनाशश्चेति । ठाणा० ४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्रव्यौघः–नदीपूरादिकः । आचा० १२४ । सलिलप्रवेशः । आचा० ४३१ ।

द्राक्षापानकं–पानकविशेषः । सूर्य० २९३ ।

द्वारिद्वयम्– । नंदी० १५५ ।

द्रुतद्रुतगन्तृत्वं–असमाधिस्थानं दवदवः । आव० ६५४ ।

द्रुतचारित्वं–प्रथममसमाधिस्थानम् । प्रश्न० १४४ । द्रुः द्रवति तांस्तान् पर्यायान् गच्छति इति द्रुः । विशे० २५ ।

द्रुतनामा–द्वात्रिंशतितमो नाट्यविधिः । जीवा० २४७ ।

द्रुतविलम्बितं–ऋषभसिंहललितहयगजविलसितमत्तहयगजविलसिताभिनयरूपं एकादशं नाट्यम् । जं० प्र० ४१६ । द्वात्रिंशतितमं नाट्यम् । ४१७ ।

द्रुतविलम्बितनामा–चतुर्विंशतितमो नाट्यविधिः । जीवा० २४७ ।

द्रुपदः–काम्पिल्यपुरपतिः द्रौपदीपिता । प्रश्न० ८७ ।

द्रुमपत्रकं–उत्तराध्ययनानां दशममध्ययनम् । उत्त० ३२० ।

द्रोणं–त्रिटङ्कसौवर्णिकगणनापेक्षया द्वात्रिंशत्तोरप्रमाणम् । जं० प्र० २५२ ।

द्रोणमुखं–जलस्थलपथावुभावपि तद् । ठाणा० २९४ । जलनिर्गमप्रवेशम् । राज० ११४ ।

द्रोणमुखानि–सिन्धुवेलावलयितानि । जं० प्र० १२१ ।

द्रोणाचार्यः– । जं० प्र० १३ ।

द्रोणिका–नौका । भग० २१९ ।

द्रोणी–जलपरिपूर्णा महती कुण्डिका । अनु०.१५७ । नौः । दश० २२० । उत्त० ५०९ ।

द्रौपदी–द्रुपदचुलनीसुता धृष्टार्जुनकनिष्ठा । प्रश्न० ८७ ।

द्वन्द्वः–कलहः । सूत्र० २३४ ।

द्वादशावर्त्ताः–बारसावयं सूत्राभिधानगर्भाः कायव्यापारविशेषाः यतिजनप्रसिद्धा यस्मिंस्तद् द्वादशावर्त्तम् । सम० २४ ।

द्वादशाङ्गं–द्वादशाङ्गानि यस्मिंस्तद् । सम० ५ ।

द्वात्रिंशद्बद्धिका–लौकिकं त्वबद्धं श्रुतम् । उत्त० २०४ ।

द्वारं–अर्थागमस्सोपायम् । सम० ५३ ।

द्वारघटना–वदनोपपत्तिः । जं० प्र० २५९ ।

द्वारमुण्डकं–द्वारशिरः । जीवा० २२६ ।

द्वारवती–द्वारिका । नंदी० १६१ । वासुदेवराजधानी । विशे० ६१९ ।

द्वारविधिः–द्वाराणां विधानम् । आव० ८६ ।

द्वारस्थगनं कपाटमाश्रित्य । आचा० ३६९ ।

द्वारिका–कृष्णवासुदेवराजधानी । प्रश्न० ८८ ।

द्विकर्त्तिकं– । उत्त० ३१२ ।

द्विखुरः–चतुष्पदभेदः । सम० १३५ ।

द्वितीयपदे– । प्रज्ञा० २५ ।

द्वितीयावग्रहः–गृहस्थहस्ताद् वस्त्रं गृहीत्वा गुरुमूलमागम्य तेषां समर्प्य यदि ते तस्यैव प्रयच्छन्ति तदायत्ते भूयोऽप्यवग्रहमनुज्ञाप्यन्त एष द्वितीयावग्रहः । बृ० द्वि० ८९ अ ।

द्विदैवतं–विशाखायाः नाम । जं० प्र० ४९९ ।

द्विधा–रागद्वेषप्रकारद्वयेनात्मपरनिमित्तमैहिकामुष्मिकार्थं वा । आचा० १६९ ।

द्विधातश्चक्रवालं–द्वयो परस्परभिमुखदिशोर्ज्ञेयम् । नाट्ये प्रकारः । जं० प्र० ४१५ ।

द्विधातोवक्रं–द्वयोः परस्परभिमुखदिशोः धनुराकारश्रेण्या नर्तनम् । जं० प्र० ४१५ ।

द्विधावेदिका–बह्वोरन्तरे द्वे अपि जानुनी कृत्वा । ठाणा० ३६२ ।

द्विप्रभृतिरानवभ्यः–पृथुकत्वम् । आव० ३१ ।

द्वीपं–जलपथेन नावादि वाहनारूढं भाण्डमुपैति तत् जलपत्तनम् । बृ० प्र० १८१ आ ।

द्वीपाशरज्जुकल्प– । ठाणा० २६० ।

द्वीपी–चित्रकः । जीवा० १८९ ।

द्वेषभन्झा–अनिष्टप्राप्तौ द्वेषझञ्झा । आचा० १७० ।

द्वेषाक्रान्तमूर्त्तिः–द्वेषमलिनः । आव० ५८५ ।

द्वैक्रियाः–एकसमये द्वे क्रिये समुदिते द्विक्रियम्, तदधीयते तद्वेदिनो वा । द्वैक्रियाः । विशे० ९३३ ।

द्वैधाभावमापन्नः–एवमिदं न चैवमितिमतिकः । ठाणा० १७६ ।

द्वैपायनः–द्वैपायनऋषिः, व्यासः । दश० ३६ । द्वेषे दृष्टान्तः । व्य० प्र० १२ अ ।

द्वौ–मूलधारणौ । बृ० प्र० ९२ अ ।

द्व्यक्षरकः–अक्षरकः, दासः । पिण्ड० ११० ।

द्व्यक्षरिका– । नंदी० १६६ ।

द्व्यर्द्ध–द्वितीयं अर्द्धमस्येति । सम० ६९ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ध

धंत–बाढम्। महाप०। अचित्तस्य द्वितीयो भेदः। धंतो दतियाइसु। ओघ० १३३। ध्मातः–अग्निसम्पर्केण निर्मलीकृतः, अग्निसंयोगो वा। जीवा० १९१। यस्तु ध्माते इत्यादौ स ध्मातः। ठाणा० ३३६। णिरायं। नि० चू० प्र० ३२७ अ। अतिशयेन (देशी०)। बृ० प्र० २९७ अ। बृ० द्वि० १३ अ। धनितम्। विशे० ११७८। बाढम्। आव० ४०७। ध्मातः–अग्निसम्पर्कतो निर्मलीकृतः। प्रज्ञा० ३६३।

धंतधोयरुप्पपट्टे–ध्मातः-अग्निसम्पर्कतो निर्मलीकृतः, धौतो भूतिखरण्टितहस्तसम्मार्जनेनातिनिशितीकृतो यो रूप्यमयः पट्टः स ध्मातधौतरूप्यपट्टः। प्रज्ञा० ३६१।

धट्ट– । नि० चू० प्र० ६९ अ।

धट्ठज्जुण–युवराजविशेषः। द्रुपदचुलण्योः पुत्रः। ज्ञाता० २०७।

धणंजए–धनञ्जयः–सत्योदाहरणे शौर्यपुरे श्रेष्ठी। आव० ७०५। धनञ्जयः–नवम दिवसनाम। सूर्य० १४७। जं० प्र० ४९०। धनञ्जयः–उत्तराभाद्रपदगोत्रम्। जं० प्र० ५००।

धणंजयसगोत्ते–धनञ्जयसगोत्रम्। सूर्य० १५०।

धणंतरो–धन्वन्तरिः–अप्रतिपतितविभङ्गः सप्तमपृथिवीनरकगमनविषये व्यक्तिविशेषः। जीवा० ४६७।

धण–द्वात्रिंशतीर्थंकरस्य प्रथममिक्षादाता। सम० १५१। धनः–राजगृहनगरे सार्थवाहः। आव० ३७०। धनः-चक्षुरिन्द्रियान्तर्दृष्टान्ते चम्पायां माहेश्वरः सार्थवाहविशेषः। आव० ३९९। धनः–वसन्तपुरे सार्थवाहः। आव० ३८४। धनः–पाटलिपुत्रे श्रेष्ठी। आव० ९३। धनं–सुवर्णादि। आव० २०८, ६६२। धनं–गुडशर्करादि, गोमहिष्यजाविकाकरभतुरगादि वा। आव० ८२६। धनं–गवादि, गणिमादि वा। औप० २७। सेट्ठिविसेसो। नि० चू० प्र० ३५१ आ। तंतूहिं समं। नि० चू० प्र० १३८ आ। धनं–गणिमादिकम्। भग० १३५। धनः नरके दशमः परमाधार्मिकः। आव० ६५०।

धणगिरी–धनगिरिः-इभ्यपुत्रः। आव०। धनगिरिः–तुम्बवनसन्निवेसे गाथापतिः। उत्त० ३३३, ३२१।

धणगुत्त–धनगुप्तः–महागिरिशिष्यः। आव० ३१७। धनगुप्तः–महागिर्याचार्याणां शिष्यः। उत्त० १६५।

धणगुत्ता–धनगुप्ताः-प्रायश्चित्तकरणविषये आचार्याः। आव० ७२४।

धणगोत्त–राजगृहे धनसार्थवाहपुत्रः। ज्ञाता० ११५।

धणदत्त–दन्तपुरे सार्थवाहः। व्य० प्र० १०७ अ। धनदत्तः–परग्रामदूतीत्वदोषविवरणे कुटुम्बी। पिण्ड० १२७। आधायाः परावर्तितद्वारे तिलकश्रेष्ठिपुत्रः। पिण्ड० १००। मूलद्वारविवरणे चन्द्राननापुर्यां सार्थवाहः। पिण्ड० १४४। सुंसुमायाः पिता। नंदी० १६६। धनदत्तः स्वयम्भूवासुदेवपूर्वभवः। आव० १६३। सम० १५३। धनदत्तः–पारिणामिक्यां बुद्धौ सुसुमायाः पिता। आव० ४३०।

धणदेव– । बृ० प्र० ३० अ। धनदेवः मण्डिकपुत्र पिता। आव० २५५। राजगृहे धन्यसार्थवाहपुत्रः। ज्ञाता० ११५। धनदेवः-वर्द्धमानपुरे सार्थवाहः। विपा० ८८। वणिक्विशेषः। आव० १८९। उत्त० ३७९।

धणधन्नपमाणाइक्कमे–धनधान्यप्रमाणातिक्रमः। आव० ८२४, ८२८, ८२५।

धणपती–धनपतिः विपाकदशानां द्वितीयश्रुतस्कन्धे षष्ठममध्ययनम्। विपा० ८९।

धणपाल–धनपालः इभ्यविशेषः। आव० २८९। राजगृहे धन्यसार्थवाहपुत्रः। ज्ञाता० ११५। धनपालः कौशाम्बीनगर्यां अधिपतिः। विपा० ९५।

धणमित्त–धनमित्रः-योगसंग्रहे निरपलापदृष्टान्ते दन्तपुरनगरे वणिग्विशेषः। आव० ६६६। धनमित्रः–संदेगोदाहरणे चम्पायां सार्थवाहः। आव० ७०९। धनमित्रः-व्यक्तपिता। आव० २५५। धनमित्रः–उज्जयिन्यां वणिक्। उत्त० ८७। दंतपुरे सत्थवाहो। नि० चू० तृ० १२८ अ।

धणरक्खिए–राजगृहे धन्यसार्थवाहपुत्रः। ज्ञाता० ११५।

धणवंता–कोटिसङ्ख्यया हिरण्यं मणिमुक्ताशिलाप्रवालरत्नानि च मणयश्चन्द्रकान्ताद्याः मुक्तामुक्तफलानि विद्रुमाणि रत्नानि कर्केतनाद्रीनि ते ईदृशाः भवन्ति धनवन्तः। व्य० प्र० १७१ अ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धणवइ–धनपतिः–वैश्रमणः । ज्ञाता० १०० ।

धणवई–धनपतिः–वसन्तपुरे श्रेष्ठिविशेषः । आव० ३९३ । धनपतिः–शतद्वारनगरेऽधिपतिः । विपा० ३९ ।

धणसंताणगो–अपेहिए लूतापुडगं संबज्झति । नि० चू०प्र० १८२ आ ।

धणसत्थवाहो–धनसार्थवाहः । आव० ११४ ।

धणसम्मो–धनशर्मा-उज्जयिन्यां धनमित्रवणिक्पुत्रः । उत्त० ८७ ।

धणसिट्ठी–धनश्रेष्ठि, श्रेष्ठिविशेषः । उत्त० २८६ ।

धणसिरी–धनश्रीः, संवेगोदाहरणे धनमित्रसार्थवाहभार्या । आव० ७०९ । धनश्रीः-वसन्तपुरे धनपतिधनवाहभगिनी । आव० ३९३ । धनःत्तभार्या । व्य० प्र० १०७ अ । योगसंग्रहे निरपलापदृष्टान्ते दन्तपुरनगरे धनमित्रवणिजो धनश्रीर्भार्या । आव० ६६६ । धणमित्तसत्थवाहस्स पढमा भज्जा । नि० चू० तृ० १२८ अ ।

धणस्सेणे–धनसेन–नन्दनबलदेवपूर्वभवनाम । आव० १६३ ।

धणहत्थो– । नि० चू० प्र० ३४९ अ ।

धणा– । ज्ञाता० २५१ ।

धणावह–धनावहः–ऋषभपुरनृपतिः । विपा० ९४ । धनावहः–कौशाम्ब्यां श्रेष्ठी । आव० २२२ । धनावहः–राजगृहनगरे प्रधानः । आव० ३५३ । धनावहः–वसन्तपुरे श्रेष्ठिविशेषः । आव० ३९३ ।

धणिउज्जालियं–धणिओज्ज्वालितं– अत्यर्थमुज्ज्वालितम् । जीवा० २६७ ।

धणिओ–धनिकः–व्यवहारकः । बृ० द्वि० ७० अ ।

धणिट्ठा–द्वाविंशतितमो नक्षत्रः । ठाणा० ७७ । धनिष्ठा–श्रविष्ठा । सूर्य० १११ । जं० प्र० ५०६ । तृतीयं नक्षत्रम् । सूर्य० २३० ।

धणितं–बाढम् । आव० ८२० ।

धणिय–अत्यर्थम् । ओघ० २२७ । जीवा० २६७ । सम० १२६ । प्रश्न० ५१ । आव० ५८४ । धनिकाः–स्वामिनः । सम० ११६ । ज्ञाता० ५९ । अतिशयेन । उत्त० ३८८ । बाढम् । उत्त० ५८५ । गाढम् । प्रश्न० ५९ । अत्यर्थम् । बृ० प्र० २१९ आ । गाढतरम् । बृ० द्वि० २२१ अ । बाढम् । अउ० ।

धणियतरागं–बाढम् । आव० ३९१ । बाढतरम् । आव० ७०९ ।

धणियबंधण–गाढतरबन्धना,बद्धावस्था,निधत्तावस्था निकाचिता वा । भग० ३४ ।

धणु–धनुश्चतुर्हस्तम् । प्रज्ञा० ४८ । धनुः–दशमः परमाधार्मिकः । सूत्र० १२४ । सम० २९ । धनुः-कोदण्डम् । उत्त० ३११ । धनुः-शस्त्रविशेषः । आव० ६१३ । धनुः–कुक्षिद्वयनिष्पन्नम् । अनु० १५६ । धनुः–दण्डगुणादिसमुदायः । भग० २३० । हस्तचतुष्टयप्रमाणम् । जीवा० ४० । पञ्चदशसु परमाधार्मिकेषु दशमः । उत्त० ६१४ ।

धणुओ–धनुष्कः–ब्रह्मदत्तस्य सेनापतिः उत्त० ३७७ ।

धणुक्क–धनुष्कं चतुर्हस्तः । अनु० १५४ ।

धणुग्गह–धनुर्ग्रहः । जीवा० २८४ । जं० प्र० १२५ । धनुर्ग्रहः–वातविशेषः । बृ० द्वि० २१९ अ । व्य० प्र० १३८ अ ।

धणुपिट्ठ–मण्डलखण्डाकारं क्षेत्रम् । सम० ७४ ।

धणुपुट्ठे–धनुःस्पृष्टम् । भग० २२९ ।

धणुव्वेओ–धनुर्वेदः । आव० ४२२ ।

धणू–षण्णवतिरङ्गुलानि धनुः । सम० ९८ । जं० प्र० ९४ । भग० २७५ । धनुः । निरय० १८ ।

धण्णंतरी– । नि० चू० द्वि० १३९ अ ।

धण्ण–राजगृहीनगरे धनश्रेष्ठी । व्य० द्वि० २६ आ । धन्यः–पार्श्वजिनप्रथमभिक्षादाता । आव० १४७ । धन्यः–अनुत्तरोपपातिकदशानां तृतीयवर्गस्य प्रथमाध्ययनम् । अनुत्त० २ । धन्यं, धर्मधनलब्धु । भग० ११९ । राजगृहे सार्थवाहः । ज्ञाता० ७९ । चंपानगर्यां सार्थवाहः । ज्ञाता० १९३ ।

धण्णकड–विमलजिनस्य प्रथमपारणकस्थानम् । आव० १४६ ।

धण्णकारिक– । नि० चू० प्र० ५३ आ ।

धण्णा–धान्या–धान्यापत्राणि । जं० प्र० २४४ ।

धण्णारिया– । नि० चू० प्र० १८२ आ ।

धत्त–डित्थवदव्युत्पन्न एव यदृच्छाशब्दः । आव० ४७७ ।

धत्तरिट्ठग–धार्त्तराष्ट्रकः–कृष्णचरणाननो हंस एव । प्रश्न० ८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धन–धनः–मूलद्वारविवरणे श्रेष्ठः । पिण्ड० १४४ । चतुष्पदादि । उत्त० ३३६, ३६० । हिरण्यादि । उत्त० २६१ ।

धनकं–यद्गृहस्थस्य बहिरवस्थितगृहकुट्यादि । ओघ० ५७ ।

धनचन्द्रः– । जं० प्र० ५४६ ।

धनक्षयः–अपरविदेहे मूकाराजधान्यां नृपतिः । आ०

धनद–उत्तरद्वारपालनाम । जं० प्र० २०६ ।

धनदेवः–विद्यामन्त्रद्वारविवरणे गन्धसमृद्धे नगरे भिक्षूपासकः । पिण्ड० १४१ ।

धनप्रिया–मूलद्वारविवरणे धनश्रेष्ठिपत्नी । पिण्ड० १४४ ।

धनमित्त–धनमित्रः–सार्थवाहः (दन्तानायी) । बृ० प्र० ३०८ आ ।

धनवती–आधायाः निशीथसम्भवे धनावहश्रावकपत्नी । पिण्ड० १०३ । विपा० ६५ ।

धनशर्म–तृषापरिषहजेता । मर० । धनश्रेष्ठी–स्नुषापरीक्षकः । व्य० द्वि० ३६ आ ।

धनसार्थवाहः–नामविशेषः । प्रज्ञा० ३२६ ।

धनावहः–आधाया निशीथसम्भवे श्रावकः । पिण्ड० १०३।

धनुः–वरधनुपिता । व्य० प्र० १६८ आ ।

धनोत्सर्गः–धनसम्पत् । ठाणा० १५२ ।

धनोहसंचय–धनं–कनकादिद्रव्यं, तस्यौघः–समूहस्तस्य सञ्चयो–राशीकरणं धनौघसञ्चयः । उत्त० ३३६ ।

धन्नंतरी–धन्वन्तरी, कृष्णवासुदेववैद्योऽभव्यः । आव०३४७। धन्वन्तरिः–कनकरथराज्ञो राजवैद्यः । विपा० ७५ । धन्वन्तरी–तापसभक्तः । आव० ३६१ ।

धन्न–धन्यः । भग० ६६२ । धन्यः–धर्मधनलब्धा । भग० १२२ । धन्यः–धनं लब्धा । प्रश्न० ११६ । धन्यः–ऋषभपुरस्य स्तूपकरण्डोद्याने यक्षः । विपा० ६४ । धन्यः–ज्ञानदर्शनचारित्रधनः साध्वादिः । आव० ४०७ । धान्यं–व्रीहिकोद्रवमुद्गमाषतिलगोधूमयवादि । आव० ८२६ । धन्यः । आव० ६६७ । धन्यः–भद्रासार्थवाह्याः पुत्रः । अनुत्त० ३ । धान्यं–चतुर्विंशतिभेदम् । दश० १६३ । धन्यः धनावहत्वात् । ज्ञाता० ७६ ।

धन्नकुलत्था– । ज्ञाता० १०७।

धन्नग–धान्यकं–कस्तुम्भरी । दश० १६३ ।

धन्नदरा–धण्णवासणा । नि० चू० द्वि० १४७ आ ।

धन्नपुलागं–निष्पावावल्लादीनि धान्यानि । बृ० तृ० २११ अ ।

धन्नमासा– । ज्ञाता० १०७ ।

धन्नसालिभद्दा–उपनालंदं वैभारेऽनशनिनौ । मर० । धन्ना–सुरादेवगाथापतेर्भार्या । उपा० ३४ ।

धन्यक–शालिभद्रभगिनीपतिः । ठाणा० ४७४ ।

धन्वन्तरि– । बृ० प्र० १६० अ ।

धमण–धमनं–महिष्यादीनां वायुपूरणादि । प्रश्न० २२ । धमानं महिष्यादीनां वायुपूरणम् । प्रश्न० ३८ । भस्त्रा धमातः । आचा० ७४ ।

धमणि–धमनिः–नाडी । प्रश्न० ८ ।

धमणिसंताए–धमनीसन्ततः–नाडीव्याप्तः । भग० १२६ । ज्ञाता० ७६ । धमनयः–शिरास्ताभिः सन्ततो व्याप्तो धमनिसन्ततः । उत्त० ८४ ।

धमणी–धमनिः कोष्ठकहड्डान्तरम् । विपा० ४२ ।

धमधमंतो–धमधमायमानः । आव० १६६ ।

धमनं–फूत्कारणम् । दश० १५४ ।

धमाससारे–धमासासारः । प्रज्ञा० ३६० ।

धम्मंतेवासी–धर्म्मान्तेवासी–धर्म्मप्रतिबोधनतः शिष्यः, धर्मार्थितयोपसम्पन्नो वा । ठाणा० २४२ । अन्ते–समीपे वस्तुं शीलमस्येत्यन्तेवासी, धर्मार्थमन्तेवासी धर्म्मान्तेवासी शिष्यः–इत्यर्थः । ठाणा० ५१६ ।

धम्म–धर्मः–दुर्गतौ प्रपतन्तं सत्त्वसङ्घातं धारयतीति, धर्मः पञ्चदशो जिनः, यस्मिन् गर्भगते सति जननी दानदयादिकेष्वधिकारेषु जाती सुधर्म्मेति तेन धर्मजिनः । आव० ५०४ । धर्मः–लोलुपतया तद्विषयग्रहणस्वभावः । प्रश्न० १३८ । धर्मादनपेतः धर्म्यः–न धर्मातिक्रान्तः । उत्त० ६४ । दुर्गतौ प्रपतन्तमात्मानं धारयतीति धर्मः । आव० १३४, २३६ । जीवस्य स्वभावः धर्म्मः । दश० १२६ । धर्मः–लोकश्रुतिः । पिण्ड० १४५ । धर्मः–श्रुतचारित्रलक्षणः । भग० ६० । धर्मः–श्रुतचारित्रात्मकः । उत्त० १७ । धर्मः–चारित्ररूपः । जीवा० २५६ । धर्मः पर्यायो गुणो विशेषश्च । प्रज्ञा० १७६ । धार्म्यं–न्यायः । व्य० प्र० २०१ अ । धर्मास्तिकायः । सम० ६ । धर्मः–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धर्मास्तिकायो गत्युपष्टम्भगुणः । ठाणा० ४० । धर्मं लोकधर्मम् । ओघ० ७२ । धर्मः-श्रुतचारित्रात्मकः दुर्गतिप्रपतज्जन्तुधारणस्वभावः । सम० ४ । श्रुतचरणधर्म्मादनपेतं धर्म्यम् । ठाणा० १८८ । धर्मः-प्रक्रमाद् गृहस्थधर्मः सम्यग्दृष्टयादिशिष्टाचारिताचारलक्षणः । उत्त० ३६१ । धर्मादनपेतं धर्म्यं एषणीयम् । उत्त० ४२८ । धर्मः-विशेषः पादपोपगमनरूपो मरणविशेषः । आचा० २६४ । धर्मः-धारयतीति दुर्गतौ प्रपततो जीवान् धारयतिसुगतौ वा तान् स्थापयति इति धर्म्मः, श्रुतचारित्रलक्षणः । ठाणा० २१ । धर्मः विषयाभिलाषः । ठाणा० ५१६ । धर्मः-समाचारो व्यवस्था । ठाणा० ५१५ । धर्मः-जिनाज्ञारूपः, चारित्रलक्षणः । ठाणा० २४१ । धर्मः-चेतनाचेतन द्रव्यस्वभावं श्रुतचारित्ररूपं वा । आचा० १५४ । धर्मः अविपरीतार्थम् । आचा० २५८ । धर्मः चारित्ररूपः । दश० २७१ । दुर्गतौ प्रपतन्तमात्मानं धारयतीति धर्मः । दश० १३ । धर्मार्जनव्यापारपरः साधुर्धर्मपुरुषः । आव० २७७ । धर्मः-प्रवृत्त्यादिरूपः । दश० ११४ । धर्मः-श्रुतधर्मादिः । दश० २४२ । श्रुतचारित्रात्मकम् । ज्ञाता० ४६ । जीवपर्यायः । ज्ञाता० ६६ । धर्मः-वस्तुस्वभावः आचारो वा । उत्त० १२८ । धर्म्यं-धर्मध्यानम् । आव० ५६० । जिनप्रणीतभावश्रद्धानादिलक्षणं धर्म्यम् । आव० ५८२ । धर्मं-सूत्रकृताङ्गाद्यश्रुतस्कंधे नवममध्ययनम् । आव० ६५१ । दसविहसमणधम्मसमणुगतं । दश० चू० १४ । धर्मः-पर्यायः । विशे० १००५ । धर्मः-पुण्यम् । बृ० प्र० १६८ अ । धर्म्मकारणं यत्तद्धर्म्मदानं धर्म्मे एव वा । ठाणा० ४६६ । सूत्रकृताङ्गप्रथमश्रुतस्कन्धे नवममध्ययम् सम० ३१ । धर्मे-अस्तिकायधर्मे श्रुतधर्मादौ वा । प्रज्ञा० ५६ । धर्मः-व्यवहारः । जं० प्र० १६७ । धर्मः-धर्मकथानुयोगः । दश० ४ । झाणे । भग० ६२३ । धर्मः-श्रुतधर्मश्चारित्रधर्मश्च । प्रज्ञा० ३६६ ।

धम्मकरगो- । नि० चू० तृ० ३६ आ ।

धम्मकरते- । नि० चू० द्वि० १८ आ ।

धम्मकहा-धर्मकथा व्याख्यानरूपा । उत्त० ५८५ । धर्मस्य-श्रुतस्वरूपस्य कथा-व्याख्या धर्मकथा । ठाणा० ३४६ । धर्मस्य-अहिंसादिलक्षणधर्मस्य कथा धर्मकथा-आख्यानकानि । सम० ११६ । धर्मकथा-अहिंसादिधर्म्मप्ररूपणस्वरूपा । अनु० १६ । पारत्रिककर्मविपाकदर्शनम् । बृ० द्वि० १०३ अ । योऽहिंसादिलक्षणं सर्वज्ञप्रणीतं धर्ममनुयोगं वा कथयति एषा धर्मकथा । दश० ३२ । धर्मप्रधाना कथा धर्मकथा । ज्ञाता० १० । इह परत्र च सप्रपञ्चं कर्म्मविपाकोपदर्शनं सा धर्मकथा । बृ० द्वि० १०३ अ । धर्मप्रधाना आख्यायिकाः उत्तराध्ययनाद्यन्तर्गता आक्षेपण्यादयो वा । बृ० तृ० १०२ आ ।

धम्मकहाहरणं- १-१-१२

धम्मकही-क्षीराश्रवादियुतो वैराग्यकथो । बृ० तृ० ३५ आ । धर्मकथकः । ज्ञाता० १६६ । चतुर्विधां धर्मकथां कथयन् । क्षीराश्रवादिलब्धिसम्पन्नतया वैराग्यजननीं धर्मकथां विदधाति धर्मकथी । बृ० तृ० ३५ आ ।

धम्मकाम-धर्मकामो-निर्जरार्थम् । दश० २४६ । सूत्रकृताङ्गस्य नवममध्ययनम् । उत्त० ६१४ । सम० १५३ ।

धम्मकाय-धर्मकायः । दश० १६१ ।

धम्मघोसे-धर्मघोषः महाघोषनगरे गाथापतिः । विपा० ६५ । धर्मघोषः-आचार्यविशेषः । आचा० ७६ । धर्मघोषः-संवेगोदाहरणेऽमात्यः । आव० ७०६ । धर्मघोषः-सत्वोदाहरणे सर्वशुचिविषये स्वामिज्येष्ठशिष्यः । आव० ७०५ । विमलार्हतः प्रशिष्यः । अनगारविशेषः । भग० ५४८ । आचार्यविशेषः । आव० ३६३ । स्थविरविशेषः । विपा० ६१ । ज्ञाता ८६, १६६ । धर्मघोषः-योगसंग्रहे आपत्सु दृढधर्मत्वदृष्टान्ते आपत्सु दृढधर्मवान् अनगारविशेषः । आ० ६६७ । धर्मघोषः-उत्तरगुणप्रत्याख्याने वाराणस्यां मासक्षपकोऽनगारः । आव० ७१६ । धर्मघोषः-अज्ञातोदाहरणे कोशाम्ब्यामाचार्यधर्मवसुज्येष्ठशिष्यः । आव० ६६६ ।

धम्मघोससीसो-धर्मघोषशिष्यः । उत्त० ६२ ।

धम्मचक्के-तक्षशिलायां धर्मचक्रः, दर्शनशुद्धौ दृष्टान्तः । आचा० ४१८ ।

धम्मचरणं-धर्मचरण-बाह्यवेषपरिकरितप्रव्रज्याप्रतिपत्तिः । जीवा० ७७ । धर्मचरणं-चरणधर्मसेवनम् । जीवा० ५५ ।

धम्मचिंतका-धर्मचिन्तकाः धर्मशास्त्रपाठकाः सभासदः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओप० १० ।

धम्मचिंतग–याज्ञवल्क्यप्रभृतिऋषिप्रणीतधर्मसंहिताचिन्तयन्ति ताभिश्च व्यवहरन्ति ये ते धर्मचिन्तकाः। अनु० २५।

धम्मचिंता–धर्मा-जीवादिद्रव्याणामुपयोगोत्पादादयः स्वभावास्तेषां चिन्ता–अनुप्रेक्षा धर्मस्य वा–श्रुतचारित्रात्मकस्य, सर्वज्ञभाषितस्य हरिहरादिनिगदितधर्मेभ्यः प्रधानोऽयमित्येवं चिन्ता धर्मचिन्ता । सम० १७ । धर्मध्यानचिन्ता श्रुतधर्मचिन्ता वा । उत्त० ५४३ ।

धम्मजस–वत्सगाचलेऽनशनी । मर० । धर्म्मयशाः–उत्तरगुणप्रत्याख्याने वाराणस्यां मासक्षपकोऽनगारः । आव० ७१६ । धर्मयशाः–सत्योदाहरणे सर्वशुचिविषये स्वामिलघुशिष्यः । आव० ७०५ । धर्मयशाः–अज्ञातोदाहरणे कोशाम्ब्यामाचार्यधर्मवसोर्लघुशिष्यः । आव० ६६६ ।

धम्मजागरिय–धर्मजागरिका । भग० १२६ ।

धम्मजीवी–धर्मजीवी संयमैकजीवी । दश० २०३ ।

धम्मज्जियं–धर्मेण क्षान्त्यादिरूपेणार्जितं–उपार्जितं धर्मार्जितम् । उत्त० ६४ ।

धम्मज्झए–ऐरवतक्षेत्रे आगमिष्यन्त्यां उत्सर्पिण्यां पञ्चमस्तीर्थंकरः । सम० १५४ ।

धम्मज्झयं–धर्मध्वजम् । आव० २६० ।

धम्मट्ठ–धर्मार्थं कुशलानुबन्धिपुण्योपार्जनार्थम् । बृ० द्वि० ८८ आ ।

धम्मट्ठय–धर्मार्थं–तत्त्वार्थबोधतस्तेषां धर्मः स्यादित्येवमर्थम् । उत्त० २८७ ।

धम्मण्णग–धर्मान्वगः तगरायामाचार्यशिष्यः । व्य० प्र० २५६ अ ।

धम्मणग–धर्मान्वगं सद्व्यवहारकाचार्यः। व्य० १-२५६।

धम्मतित्थ–धर्म एव तीर्यते भवाम्भोधिरनेनेति तीर्थं धर्मतीर्थम् । उत्त० ४६८ ।

धम्मत्थकामा–धर्मार्थकामः मुमुक्षवः । दश० ४६२ । आयारकहा । नि० चू० द्वि० ६५ अ ।

धम्मत्थिकाए–तत्र जीवपुद्गलानां स्वत एव गतिक्रियापरिणतानां तत्स्वभावधारणाद् धर्मः, अस्तयः–प्रदेशास्तेषां कायः–सङ्घातोऽस्तिकायः, धर्म्मश्चासावस्तिकायश्च धर्मास्तिकायः । सकललोकव्याप्यसङ्ख्येयप्रदेशात्मकोऽमूर्तद्रव्यविशेषः । अनु० ७४ ।

धम्मद–धर्म–चारित्ररूपं ददातीति धर्मदेशकः । जीवा० २५६ ।

धम्मदए–धर्म–श्रुतचारित्रात्मकं दुर्गतिप्रपतज्जन्तुधारणस्वभावं दयते–ददातीति धर्मदयः । सम० ४ ।

धम्मदेवा–धर्मदेवाः–धर्मप्रधाना देवाः चारित्रवन्तः । ठाणा० ३०३ । धर्मेण–श्रुतादिना देवा धर्म्मप्रधाना वा देवा धर्मदेवाः । भग० ५८३ ।

धम्मदेसए–धर्मदेशकः धर्मं उक्तलक्षणं देशयति–कथयतीति धर्मदेशकः । सम० ४ । धर्मं–श्रुतचारित्रात्मकं देशयतीति धर्मदेशकः । भग० ७ ।

धम्मदेसगो–धर्म–चारित्ररूपं दिशतीति धर्मदेशकः। जीवा० २५६ ।

धम्मनायग–धर्मस्य–क्षायिकज्ञानदर्शनचारित्रात्मकस्य नायकः–स्वामी यथावत्पालनाद्धर्मनायकः । सम० ४ । धर्मस्य नायकाः–स्वामिनस्तद्वशीकरणात्तत्फलपरिभोगाच्च धर्मनायकाः । जीवा० २५६ ।

धम्मनियत्तमईया–धर्मः–चारित्रधर्मः परिगृह्यते तस्मात् निवृत्ता मतिर्येषां ते धर्मनिवृत्तमतयः । आव० ५३१ ।

धम्मपण्णत्ती–श्रुतधर्मप्ररूपणा । उपा० ३८ ।

धम्मपन्नत्ति–धर्मप्रज्ञप्तिः षड्जीवनिका । दश० १२ ।

धम्मपय–धर्मपदं–धर्मफलं सिद्धान्तपदम् । दश० २४५ । धर्मपदं–क्षान्त्यादिकम् । आचा० ४३० ।

धम्मपुरिसा–धर्म्मः–क्षायिकचारित्रादिस्तद्दर्शनपराः पुरुषाः धर्म्मपुरुषाः । ठाणा० १६३ ।

धम्मफल–धर्मफलं अनुत्तरज्ञानादि । दश० १२० ।

धम्मबारं–धर्मद्वारम् । आव० ४३५ ।

धम्ममाण–ध्मायमानः भस्त्रावातेनोद्दीप्यमानः । उपा० २५ ।

धम्ममित्त–षष्ठतीर्थंकरस्य पूर्वभवनाम । सम० १५१ ।

धम्मयाते–धर्मतया । आव० ७५८ ।

धम्मरुइ–हट्ठकज्जे उदाहरणं । नि० चू० द्वि० १०० अ ।

धम्मरुई–धर्मः–श्रुतधर्मादिस्तेषु रुचिर्यस्य स धर्मरुचिः । उत्त० ५६३ । धर्मरुचिः–मालापहृतद्वारविवरणे संयतः । पिण्ड० १०८ । धर्मरुचिः आषाढभूतेर्गुरुः । पिण्ड०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३७ । धर्मरुचिः-सहसम्मत्यादिदृष्टान्ते जितशत्रुकुमारः । आचा० २१ । धर्मरुचिः-अनगारविशेषः । ज्ञाता० १६७ । आव० ३८६ । धर्मरुचिः-जितशत्रुधारिण्योः पुत्रः । आव० ३७२ । धर्मरुचिः-उदयो मारणान्तिक इति विषयेऽनगारः यस्य कटुकं दौग्धिके मरणम् । आव० ७२३ । धर्मरुचिः उत्कृष्टसमितिदृष्टान्ते पारिष्ठापनिकीसमित्युपयुक्तः साधुविशेषः । आव० ६१८ । धर्मः-अस्तिकायधर्म श्रुतधर्मादौ वा रुचिर्यस्य स धर्मरुचिः । प्रज्ञा० ५६ । धर्मघोषसूरिशिष्यः । ज्ञाता० १६७ ।

धम्मरुक्खे-वलयविशेषः । प्रज्ञा० ३३१ ।

धम्मरुची-धर्मरुचिः अनगारविशेषः । विपा० ६५ ।

धम्मरुती-धर्म-श्रुतादौ रुचिर्यस्य स, यो हि धर्मास्तिकायं श्रुतधर्मं चारित्रधर्मं च जिनोक्तं श्रद्धत्ते स धर्मरुचिः । ठाणा० ५०३ ।

धम्मलातो-भिल्लमाले णाणकं । नि० चू० प्र० ३३० अ ।

धम्मलेसा-धर्मलेश्याः-प्रधानलेश्याः । उत्त० ६६१ ।

धम्मवं-दुर्गतिप्रसृतजन्तुधरणस्वभावं स्वर्गापवर्गमार्गं धर्म्मं वेत्तीति धर्म्मवित् । आचा० १५४ ।

धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी-धर्म एव वरं-प्रधानं चतुरन्तहेतुत्वाच्चतुरन्तं चक्रमिव चतुरन्तचक्रं तेन वर्त्तितुं शीलं यस्य सः धर्म्मवरचातुरन्तचक्रवर्त्ती । जीवा० २५६ । त्रयः समुद्राश्चतुर्थो हिमवान् एते चत्वारः अन्ताः-पर्यन्तास्तेषु स्वामितया भवतीति चातुरन्तः स चासौ चक्रवर्त्ती च चातुरन्तचक्रवर्त्ती वरश्चासौ पृथिव्याः चातुरन्तचक्रवर्त्ती चेति वरचातुरन्तचक्रवर्त्ती-राजातिशयः धर्मविषये वरचातुरन्तचक्रवर्त्ती धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्त्ती । सम० ४ । त्रयः समुद्राश्चतुर्थश्चहिमवान् एते चत्वारोऽन्ताः पृथिव्यन्ताः एतेषु स्वामितया भवतीति चातुरन्तः स चासौ चक्रवर्त्ती च चातुरन्तचक्रवर्त्ती वरश्चासौ चातुरन्तचक्रवर्त्ती च वरचातुरन्तचक्रवर्त्ती-राजातिशयः, धर्मविषये वरचातुरन्तचक्रवर्त्ती धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्त्ती, धर्म एव वरमितरचक्रापेक्षया वा चतुरन्तं-दानादिभेदेन चतुर्विभागं चतसृणां वा नरनारकादिगतीनामन्तकारित्वाच्चतुरन्तं तदेव चातुरन्तं यच्चक्रं भावारातिच्छेदात् तेन वर्त्तितुं शीलं यस्य स धर्मवरचातुरन्तचक्रवर्त्ती । भग० ७ ।

धम्मवसू-धर्मवसुः-अज्ञातोदाहरणे कोशाम्ब्यामाचार्यः । आव० ६६६ ।

धम्मवीरिये-धर्मवीर्यः-अनगारविशेषः । विपा० ६५ ।

धम्मसण्ण-धर्मश्रद्धा । जं० प्र० १७० । भग० ३०८ ।

धम्मसन्ना-धर्मसंज्ञा आगमबुद्धिर्मिथ्यात्वम् । ठाणा० ४८७ ।

धम्मसद्धिओ-धर्मश्रद्धिकः(तः) । आव० ५२ ।

धम्मसारहि-धर्मस्य सारथिर्धर्मसारथि, यथा रथस्य सारथी रथं रथिकमश्वांश्च रक्षति एवं भगवांश्चारित्रधर्माज्ञानां संयमात्मप्रवचनाख्यानां रक्षणोपदेशाद्धर्मसारथिर्भवति इति धर्मसारथिः । सम० ४ ।

धम्मसारही-धर्मरथस्य प्रवर्त्तकत्वेन सारथिरिव धर्मसारथिः । भग० ७ ।

धम्मसाहण-धर्मसाधनं धर्मोपकरणं वर्षाकल्पादिकम् । उत्त० ५०३ ।

धम्मसीहे-चतुर्थतीर्थंकरस्य पूर्वभवनाम । सम० १५१ । धर्मसिंहः-अनगारविशेषः । विपा० ६५ । धर्मसिंहः-धर्मजिनप्रथमभिक्षादाता । सम० १५१ । आव० १४७ ।

धम्मा-धर्म्माः-समाचाराः । बृ० प्र० १६६ अ । धर्म्माः-निर्जराहेतवः । ठाणा० ३८१ । ज्ञाता० २५३ ।

धम्माओ भंसेज्जा-धर्माद् भ्रश्येत् मिथ्यादृष्टिर्वा भवेत् । आव० ७५६ ।

धम्माणुजोगचिंता-धर्मार्थमनुयोगस्य-व्याख्यानस्य चिन्ता धर्मानुयोगस्य वा धर्मव्याख्यानस्य चिन्ता धर्मानुयोगचिन्ता । ज्ञाता० ६२ ।

धम्माणुराग-धर्मानुरागः-धर्मबहुमानः । भग० ६० ।

धम्मायरिए-धर्माचार्यः-प्रतिबोधकः । ठाणा० २४२ ।

धम्मायरिय-धर्म्मः-उक्तप्ररूपणादिलक्षणः श्रुतधर्म्मस्तत्प्रधानाः प्रणायकत्वेनाचार्या धर्म्माचार्यास्तन्मतोपदेष्टारः । ठाणा० ४१० ।

धम्मारामे-धर्मं श्रुतधर्मादौ आदित्यभिव्याप्त्या रमते-रतिमान् भवतीति धर्मारामः, धर्म एव सततमानन्दहेतुतया प्रतिपाल्यतया वा आरामो धर्मारामः । उत्त० ६६ ।

धम्मावतेति-धर्म्मिणां वस्तुपर्यायाणां धर्मस्य वा चारित्रस्य वादो धर्मवादः । ठाणा० ४६१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्मिट्ठे–इष्टधर्मा अतिशयेन धर्मवान् । उत्त० २८५ ।
धम्मियं–धार्मिकं धर्मानुगतम् । जीवा० २५४ ।
धम्मिल–धम्मिलः सुधर्मपिता । आव० २५५ ।
धम्मिल्ल–विशिष्टतपश्चरणफलवान् । सूत्र० २९९ । इहलोकफले दृष्टान्तः । जं० प्र० १९७ । केशहस्तः । भग० ४६८ । धम्मिल्लः इहलोकफले उदाहरणम् । आव० ८६३ ।
धम्मुत्तरं–धर्मोत्तरं–चारित्रधर्मोत्तरं । आव० ७८९ ।
धम्मोवाओ-दुर्गतौ प्रपतन्तमात्मानं धारयतीति धर्मः, तस्य उपायो–द्वादशाङ्गं प्रवचनं अथवा पूर्वाणि धर्मोपायः । आव० १३५ । प्रवचनं पूर्वाणि वा । आव० १४० । सामायिका च जीवनिकायभावना वा । आव० १४० ।
धम्मोवाय– । आव० १३५ ।
धयप्पडागा–ध्वज एव पताका ध्वजपताका । ओघ० ७४ ।
धरंति–ध्रियन्ते तिष्ठन्ति । आव० ६९२ ।
धर–धरः पद्मप्रभप्रभुपिता । सम० १५० । आव० १६१ । ज्ञाता० २०८ ।
धरइ–धरति–वारयति । जीवा० ३०९ । ध्रियते–तिष्ठति । दश० १२२ ।
धरच्छ–धराक्षम् । औप० ५५ ।
धरण–नृपविशेषः । ज्ञाता० १२१ । अन्तकृद्दशायां प्रथमवर्गे षष्ठममध्ययनम् । अन्त० ३ । धरणः–अन्तकृद्दशानां द्वितीयवर्गस्य षष्ठममध्ययनम् । अन्त० ३ । धरणः रोहीटकनगरस्य पृष्ठ्यवतंसकोद्याने यक्षः । विपा० ८२ । धरणः–नागकुमारेन्द्रः । ठाणा० ८४ । जीवा० १७० । द्वितीयो दक्षिणनिकायेन्द्रः । भग० १५७ । ब्रह्मव्रते उपमा । प्रश्न० १३५ । आव० २२१ । नागकुमाराणामधिपतिः । प्रज्ञा० ९४ । अनिक्षिप्तम् । ओघ० ११८ । अपायानन्तरमवगतस्यार्थस्याविच्युत्याऽन्तर्मुहूर्त्तं कालं यावद्धरणम् । नंदी० १७७ । अर्थानां धृतिः, परिच्छिन्नस्य वस्तुनोऽविच्युतिस्मृतिवासनारूपम् । आव० १० । धरणः दक्षिणनागकुमारनिकायेन्द्रः । ठाणा० २०५ ।
धरणपरिहरणं–यत्किमप्युपकरणं संगोपयति प्रतिलेखति च न परिभुंक्ते । व्य० प्र० ४५ अ ।
धरणप्पभे– । ठाणा० ४८२ ।
धरणा–अविच्युतिस्मृतिवासनारूपा । दश० १२५ ।
धरणिकिलए–धरण्याः पृथिव्याः कीलक इव धरणिकीलकः । सूर्य० ७८ ।
धरणिगोयरो–धरणीगोचरः । आव० २८७ ।
धरणिधरा–त्रयोदशतीर्थंकरस्य प्रथमा शिष्या । सम० १५२ ।
धरणिपुत्र– । नि० चू० प्र० १२० अ ।
धरणिसिंगे-धरण्याः शृङ्गमिव धरणिशृङ्गः । सूर्य० ७८ ।
धरणी–पृथवी । ओघ० १०० । ज्ञाता० २५१ । द्वादशतीर्थंकरस्य प्रथमा शिष्या । सम० १५२ ।
धरितो–धृतः । आव० ३१० ।
धरिमं–ऋणद्रव्यम् । विपा० ६३ । जं० प्र० १९४ । ज्ञाता० ४० । सुवर्णकादि । उत्त० ४८४ । आव० १८९ ।
धरिसिया–धर्षिता । आव० ६४ ।
धरिसियामो–धर्षिताः । आव० ३१४ । अपभ्राजिताः । आव० ७०१ ।
धरिसेइ–धर्षयति–पराभवति । उत्त० ६२६ ।
धरिसेहि–धर्षयति । दश० ४१ ।
धरेइ–धारयति, संघट्टयति । ओघ० ७९ ।
धरेतुं–खमिउं । नि० चू० प्र० ३२ अ ।
धर्म–स्वभावः बोधश्च । आव० ८७ । सदाचारो दशविधो वा यतिधर्मः । उत्त० ३६८ । सम्यग्दर्शनद्वारः पंचमहाव्रतसाधनः द्वादशांगोपदिष्टतत्त्वा गुप्त्यादिविशुद्धव्यवस्थानः संसारनिर्वाहको निःश्रेयससाधकः । त० ९-७ ।
धर्मकथानुयोगः–अर्हद्वचनानुयोगभेदः उत्तराध्ययनादिकः । आचा० १ ।
धर्मकायः–भगवद्देहः । दश० १९९ ।
धर्मघोषः–आचार्यविशेषः । सूत्र० ३८७ । छर्द्दितदोषदृष्टान्ते साधुः । पिण्ड० १९६ ।
धर्मध्वजः–रजोहरणम् । पिण्ड० ४ ।
धर्मवान्–धर्मिष्ठः । उत्त० २८५ ।
धर्मसिंह–कोल्लपुरे गृध्रपृष्ठकारी । सं० ।
धर्माः–पर्याया पर्यवा वा भेदाः बाह्यवस्त्वालोचनादिप्रकाराः । ठाणा० ३४८ । पर्यवाः गुणाः विशेषाः । भग० ८८९ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धर्मार्थकामाः–धर्मार्थं ये कामयन्ति मोक्षमिति । दश० चू० ६१ ।
धर्मे–कर्म्मणि । बृ० प्र० २४३ अ ।
धर्मोपकरणं–वर्षाकल्पादिकम् । उत्त० ५०३ ।
धर्मोपग्रहः–दानविशेषः । प्रश्न० १३५ ।
धर्म्मः–परिणामः पर्यायः स्वभावः । ठाणा० ३७५ ।
धर्म्मकथानुयोगः–अनुयोगस्य द्वितीयो भेदः । ठाणा० ४८१ ।
धर्म्मरुचिः–वाणारसीवास्तव्यनृपः । नंदी० १६६ ।
धर्म्माणां–श्रुतभेदानां । ठाणा० ४४१ ।
धर्म्मात्–श्रुतचारित्रलक्षणात् । ठाणा० १५० ।
धर्म्मिलः–तपः समाधौ लब्ध्यादिवाञ्छया अनशनादिरूपतपःकर्त्ता । दश० २५७ ।
धर्म्मोपदेशः–अर्थोपदेशो व्याख्यानमनुयोगवर्णनम्।त०६-२५
धवः–मनुष्यः । ओघ० १५० । धवः बहुबीजकवृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३२ । भग० ८०३ । धारयति तां स्त्रियं धीयते वा तेन पुंसा वा स्त्री दधाति सर्वात्मना पुष्णाति वा तेन कारणेन निरुक्तिवशात् धव इति । व्य० द्वि० २७७ आ ।
धवल– । आचा० ६७ ।
धवलगिहं–धवलगृहं । जीवा० २६६ ।
धवलगृहादि–वास्तु । आचा० १२१ ।
धवलधरं–धवलगृहम् । आव० ४४७ । प्रज्ञा० १११ ।
धवलपुप्फं–धवलपुष्पं कुन्दकलिका । प्रज्ञा० ६१ ।
धवलय–पाण्डुरं श्वेतम् । ज्ञाता० १५ ।
धवलवलयानि–तथाविधकटकानि । भग० ४६८ ।
धवलहर–धवलगृहं सौधम् । जं० प्र० १०७ ।
धवला–सिता । ज्ञाता० १६२ ।
धाईपिंडो–धात्रीपिण्डः–धात्रीवद्बालालालनात् लब्धपिण्डः । आव० ५३६ ।
धाई–धात्री–बालकपरिपालिका । पिण्ड० १२१ ।
धाउ–धातुः गैरिकं लोहादिर्वा । प्रश्न० ३८ । यस्मिन् धम्यमाने सुवर्णपतते स धातुः । नि० चू० द्वि० ८६ आ । धातुः–पाषाणधात्वादिः । उत्त० ६५३ । गैरिका । दश० १७० ।
धाउबिलं–धातुवादः स्वर्णरसादिकः–धातुसिद्धः।आव० ४३४।
धाउरत्ता–साटिका । भग० ११६ ।
धाऊ–धारकत्वात्पोषकत्वाच्च धातुत्वम् । सूत्र० २६ ।
धाए– । ठाणा० ८५ ।
धाडणी–धाडनी नाशनी । प्रश्न० ७६ ।
धाडिउ–वयंसो । नि० चू० प्र० ३०० आ ।
धाडिए–धाटिकः–मित्रम् । बृ० तृ० १७६ अ ।
धाडिओ–धाटिकः–मित्रम्। बृ० द्वि० ६ आ । निर्घाटितः । आव० ६६ । निष्काशितः । आव० ३६६ । धाटितः । आव० ६८ ।
धाडिभएण–धाटीभयेन । आव० ७१ ।
धाडियंत–धाड्यमानः–प्रेर्यमाणः । प्रश्न० ५६ ।
धाडी–धाटी । आव० २१६, ६६० ।
धाडेंति–धाटयन्ति । आव० ६५० । प्रेरयन्ति स्थानात्स्थानान्तरं प्रापयन्ति । सूत्र० १२५ ।
धाडेइ–धाटयति । आव० १६६ ।
धाणं–धाणं–सुभिक्षं विभवो वा । उत्त० १४५ ।
धाणगा–पंडरचवलगा । नि० चू० प्र० १४४ आ ।
धाणि–घ्राणिः । दश० ८६ ।
धातकीखण्डः–लवणसमुद्रानन्तरं द्वीपः । प्रज्ञा० ३०७ ।
धातगं–धातं सुभिक्षम् । बृ० तृ० १५१ अ ।
धाताय–हननाय । भग० ६८४ ।
धाती–बालं धारयतीति धाती तेण बालेण धोयते धाती पीयतेत्यर्थः सो वा बालो तं धवतीति धाती, तं पिबतीत्यर्थः । नि० चू० द्वि० ६३ आ ।
धातुखोभे–धातुवैषम्यम् । ओघ० ५३ ।
धातुमट्टिया–मट्टिया जोगजुत्ता अजुत्ता वा धम्ममाणा सवण्णादि भवति सा धातुमट्टिया । नि० चू० प्र० द्वि० ८७ अ ।
धातुव्वाओ–धातुर्वादः सुवर्णपातनोत्कर्षलक्षणो द्रव्योपायः । दश० ४० ।
धातुव्वात– । नि० चू० प्र० १६५ आ ।
धात्री–स्वापविबोधवत्यौषधिः । आचा० ६६ ।
धाधाकया–शबाः कृताः, हाहारवः कृतः । उत्त० २०७ ।
धानं–परिच्छेदः । उत्त० ५५७ । पोषणम् । जीवा० १६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धान्यमानं-सेतिकाकुड्वादि । जं० प्र० २२७ । सेतकादि । ठाणा० १६८ ।

धाम-धर्मः । उत्त० ५२५ ।

धाय-धातं-सुभिक्षम् । दश० २२२ । आव० ३४१। धातः-नित्यतृप्तः । बृ० प्र० २३५ आ । धाता-दाक्षिणात्यपण-पन्निकव्यन्तराणामिन्द्रः । प्रज्ञा० ६८ ।

धायइ-धातकी-वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३१ । लवणसमुद्रं परिक्षिप्य स्थितो धातकीवृक्षखण्डोपलक्षितो द्वीपः । अनु० ६० ।

धायइपत्तरससारो-धातकीपत्ररससारः-धातकीपत्रासवः । । जीवा० ३५१ ।

धायइरुक्ख-पूर्वार्द्धे उत्तरकुरुषु नीलवद्गिरिसमीपे धात-कीनाम वृक्षः । जीवा० ३२८ । भग० ८०३ । त्रयविंशति तीर्थंकरस्य चैत्यवृक्षः । सम० १५२ ।

धायइसंडे-धातकीनां खण्डानि यस्मिन् स धातकीखण्डः, एतादृशो द्वीपविशेषः । आव० ७८८ । ज्ञाता० २१३ ।

धायगत्ता-मारकता । भग० ५८१ ।

धारए-धारकोऽधोतानामेषां धारणात् । भग० ११२ ।

धारण-धारणा-विषयेषु निवर्त्तनलक्षणा । ठाणा० ३३१ । धारणाअनुभूतार्थवासनाया अविच्युतिः । जं० प्र० १८२ ।

धारणगं-धर्मर्णम् । आव० ८३२ ।

धारणा-यथास्वमत्यवस्थानम् । तत्त्वा० १-२५ । भग० ३८४ । अवगतार्थविशेषधरणं धारणा । भग० ३४४ । बलहरणा-धारभूते स्थूणे । भग० २७६ । अप्रच्युतिः, अविस्मृतिः । । आव० ६८ । अर्हद्गुणाविष्करणरूपा । आव० ७८६ । उपभोगः । आव० ३२५ । गीतार्थसंविग्नेन द्रव्याद्यपेक्षया यत्रापराधे यथा या विशुद्धिः कृता तामवधार्य यदन्यस्तत्रैव तथैव तामेव प्रयुङ्क्ते सा, वैयावृत्यकरादेर्वा गच्छोपग्रहकारि-णो अशेषानुचितस्योचितप्रायश्चित्तपदानां प्रदर्शितानां धरणं धारणा । ठाणा० ३१८ । अवगतार्थविशेषधरणं धारणा । आव० १० । निर्णीतार्थधरणम् । अविच्युतिः १ वासना २ स्मृतिश्च ३। नंदी० १६८ । असकृदालोचनादानेन यत्प्रा-यश्चित्तविशेषावधारणं सा । ठाणा० ३०१ । गृहीतस्यावि-स्मरणे निर्वृतिः । नि० चू० प्र० २५४ आ । अवगतार्थ-विशेषधारणं धारणा । राज० १३१ । दृढस्मृतिः । नि० चू० प्र० २७८ अ । धारणा-अवधारणाशक्तिः ।विशे०९३०

धारणापरिहारो-जं संगोविज्जति पडिलेहिज्जति य ण य परिभुज्जति । नि० चू० तृ० ८९ आ ।

धारणामेधावी-पूर्वाधीतयोः प्रभूतयोरपि सूत्रार्थयोश्चिर-मवधारणाबुद्धिमान् । बृ० प्र० १२५ आ ।

धारणाया-कुकुभरीव । दश० चू० ९२ ।

धारणाववहार-धारणाव्यवहारो नाम गीतार्थेन संविग्ने-नाचार्येण द्रव्यक्षेत्रकालभावपुरुषान् प्रतिसेवनाश्चावलोक्य यस्मिन्नपराधे यत् प्रायश्चित्तपदायि तत्सर्वमन्यो दृष्ट्वा तेष्वेव द्रव्यादिषु तादृश एवापराधे तदेव प्रायश्चित्तं ददाति एष धारणाव्यवहारः, वैयावृत्यकरस्य गच्छोपग्राहिणः स्पर्द्धकस्वामिनो वा देशदर्शनसहायस्य वा संविग्नस्योचित-प्रायश्चित्तदानं धारणमेष धारणाव्यवहारः । व्य० प्र० ५ आ ।

धारणि-धारिणी जितशत्रुराज्ञो । उत्त० ११४ । श्रेयांस-नाथस्य प्रथमा शिष्या । सम० १५२ ।

धारणिओ-धारणिकः-ऋणधारकः । बृ० द्वि० ७० अ ।

धारणिज्जं-लक्खणजुत्तं खंडाखंडिकरणं । नि० चू० प्र० २४४ आ ।

धारणी-श्वेतनृपस्य राज्ञो । राज० ६ । जितशत्रुराज्ञी । आचा० २१ । धारिणी-महासेनराज्ञी । विपा० ८२ । श्रेणिकस्य राज्ञो । ज्ञाता० १२ । अदीनशत्रुराजस्य पट्ट-राज्ञी । विपा० ६० । बलनृपस्य राज्ञो । ज्ञाता० १२१।

धारा-देवछत्रधारकाः । बृ० द्वि० २७३ आ । सत-तपातजनिता सन्ततिः । उत्त० ३६६ । धारेव धारा-क्रिया । भग० ४७१ ।

धाराहतकदम्ब- । नंदी० १५० ।

धारिज्जंति-धार्यन्ते आसेव्यन्ते । उत्त० ६०७ ।

धारिणि-धारिणी-अज्ञातोदाहरणे युवराजराष्ट्रवर्धनपत्नी । आव० ६६६ ।

धारिणी-धनञ्जयनृपपत्नी । आव० १७७ । श्रेणिकराज्ञो। अनुत्त० १ । वसन्तपुरे जितशत्रुराज्ञी । आव० ३७८ । वज्रसेनराज्ञो । आव० ११७ । अन्धकवृष्णिराज्ञी । अन्त० २ । चन्द्रावतंसकराज्ञी । उत्त० ३७५ । सकल-गुणधारणात् धारिणी-जितशत्रुनृपपत्नी । सूर्य० २ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विशालसभूतिमुवराजपत्नी । आव० १७२ । बलदेवराज्ञी । अन्त० १४ । जितशत्रो राज्ञी । जं० प्र० ६ । एषणासमितिदृष्टान्ते धिग्जातीयचक्रकरगौतमपत्नी । आव० ६१६ । संवेगोदाहरणे चम्पायां मित्रप्रभराज्ञी । आव० ७०६ । अज्ञातोदाहरणे कोशाम्ब्यामजितसेनराज्ञो । आव० ६६६ । दधिवाहनराज्ञी । आव० १२३ । जितशत्रुराज्ञो । ओघ० १५८ । शिवराज्ञो राज्ञी । भग० ५१४ वृष्णिराजपत्नी । अन्त० ३ । चम्पायां कोणिकराज्ञी । प्रश्न० १ । जितशत्रुराजपत्नी । आव० ३७२ । चक्षुरिन्द्रियोदाहरणे मथुराधिपतिजितशत्रुराज्ञी । आव० ३६८ । श्रावस्तिनगर्यां रुक्मिनृपस्य राज्ञो । ज्ञाता० १४० । काम्पिल्यपुरस्य जितशत्रो राज्ञो । ज्ञाता० १४४ । अन्धकवृष्णेर्देवी । अन्त० २ । अन्धकवृष्णेर्देवी । अन्त० ३ । बलदेवस्य देवी । अन्त० १४ । जियसत्तुदेवी । नि० चू० प्र० ३५१ आ ।

धारित्तए–धारयितुं परिग्रहे धर्तुम् । बृ० द्वि० २०१ अ । उवभोगो । ठाणा० १३८ । धर्त्तुं परिग्रहे । ठाणा० १३८ ।

धारिया–धारकाः । आव० ३५७ ।

धारिवारिय–धाराप्रधानं वारि जलं येषु तानि धारावारिकाणि । भग० ६१७ ।

धारेइ–धारयति आत्मनि लीनं धत्ते । दश० ६८ ।

धारेज्ज–धारयेत् व्यापारयेत् । भगे० २२३ ।

धारेमाणीओ–धारयन्त्यः–वीजयन्त्यः । जं० प्र० ८२ ।

धारेमाणे–धारयतु स्थिरीकुर्वतु । भग० ५४ ।

धारोदयं–गिरिनिर्झरजलं आन्तरिक्षं वा । बृ० द्वि० १७१ अ ।

धालिया–धारिता । उत्त० १३७ ।

धावं–धावनम् । आव० १६८ ।

धावणं–धावनं शीघ्रमृजुगमनम् । जं० प्र० ५३० । वेगवद् गमनम् । ज्ञाता० २३२ । दश० १०० । शीघ्रगमनम् । जं० प्र० २६५ ।

धावणओ–लेखहारकः । बृ० तृ० २४८ अ ।

धावनं–कल्पत्रयप्रदानम् । बृ० प्र० २६८ अ । प्रक्षालनम् । आचा० २७७ ।

धावलेय– । आचा० ६७ ।

धाविय–धावनं–अध्वकलाविशेषः । उत्त० २२३ ।

धाहुं–धावनम् । उत्त० १०२ ।

धिइ–धृतिः–मानसाऽवष्टम्भलक्षणा, निश्चला । बृ० प्र० २१६ आ । मूलोत्तरगुणविषयः प्रतिदिवसमुत्सहमान आत्मपरिणामविशेषः । नंदी० ४५ । चित्तस्वास्थ्यम् । सम० ११७ । संयमं प्रति चित्तस्वास्थ्यम् । उत्त० २३५ । धृतिः–चित्तस्वास्थ्यम् । जीवा० १२३ ।

धिइदुब्बल–दुर्बलधृतयो धर्मानुष्ठानं प्रतीति । उत्त० ५५२ ।

धिइमई–धृतिमतिः धृतिप्रधाना मतिर्धृतिमतिः–अदैन्यम् । सम० ५८ ।

धिइलिलिया–शालभञ्जिका । आव० ३४४ ।

धिई–मानसोऽवष्टम्भरूपा । बृ० तृ० १४ अ । धृतिः–चित्तस्वास्थ्यमनुद्विग्नत्वम् । उत्त० ६२२ । समाधानं संयमे । आचा० ४३१ । धृतिः–पल्योपमस्थितिका देवी । जं० प्र० ३०६ ।

धिईकूडे–धृतिः-तिर्गिछिद्रहसुरी तस्याः कूटम् । जं० प्र० ३०८

धिईमई–धृतिमतिः–अदैन्यम् । प्रश्न० १४६ । धृतिर्मतिः-धृतिप्रधाना मतिः । योगसंग्रहे षोडशो योगः । आव० ६६४ ।

धिक्कार–धिगधिक्षेपार्थं एव तस्य करणं–उच्चारणं धिक्कारः । ठाणा० ३६६ ।

धिक्कारिज्जमाणी–धिक्क्रियमाणा धिक्शब्दविषयीक्रियमाणा । ज्ञाता० २०० ।

धिग्जातीयः–नीचपुरुषः । नंदी० १५२ । आचा० १३२ ।

धिरवर्ण–मरुकः । दश० २५६ । उत्त० ६१ । धिग्-जातीयः–ब्राह्मणः । दश० १८४ ।

धिज्जाइ–धिग्जातीयः–ब्राह्मणः । आव० ६१६ ।

धिज्जाइओ–धिग्जातीयः । आव० २७३, ३५६ । धिग्जातिकः । आव० १८७ ।

धिज्जाय–धिग्जातः–ब्राह्मणः । ओघ० २०४ ।

धिति–धृतिः–विवक्षितं जिनवचनं सत्यमेव नान्यथेति मनसोऽवष्टम्भः । सूर्य० २६६ । चतुर्थवर्गे तृतीयमध्ययनम् । निरय० ३७ ।

धितिधरे–धृतिधरः अन्तकृद्दशानां षष्ठमवर्गस्य षष्ठमध्ययनम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

। अन्त १८ ।

धितिबलिया–धृतिः वज्रकुड्यवदभेद्यं चित्तप्रणिधानं तया बलिकाः–बलवन्तः । बृ० तृ० ।

धितिम–धृतिमान् स्वस्थचित्तः । प्रश्न० ११३ ।

धितिहरे–धृतिधरः–काकन्द्यां गाथापतिः । अन्त २३ ।

धती–धरणं–धृतिः सम्यग्दर्शने सति चारित्रावस्थानम् । सूत्र० १६७ । धृतिः–चित्तदार्ढ्यं तत्परिपालनीयत्वाद-हिंसाया धृतिरेव अहिंसाया अष्टादशमं नाम । प्रश्न० ६६ । चित्तस्वास्थ्यम् । ज्ञाता० ५६ ।

धिम्मरगो–धीवरः । आव० ८२६ ।

धियारो–अधिकारः । आव० ४२७ ।

धिसरा–मत्स्यबन्धविशेषः । विपा० ८१ ।

धी–धीः बुद्धिः । उत्त० २१६ ।

धीईधणियनिप्पकंपो–धृतिरज्जुबन्धनेन घनिकं–अत्यर्थं निष्प्रकम्पः–अविचलो यः स धृतिधनिकनिष्प्रकम्पः। औप० ४८ ।

धीउच्छिका–पुस्तकर्मविशेषः । ओघ० १२६ । अनु० १३ ।

धीउल्लिया–शालभञ्जिका । उत्त० १४६ ।

धीयते–परिच्छिद्यते । प्रज्ञा० ५२७ ।

धीया–दुहिता । आव० ४२४ ।

धीयार–धिक्कारः । आव० २०० । नि० चू० प्र० १३४ अ। नि० चू० प्र० १८६ आ । नि० चू० प्र० १३ आ ।

धीर–असहाओ लुद्धगो । नि० चू० प्र० २०० अ । पंडिओ तवकरणसूरो वा । दश० चू० १६५ । धिया राजत इति धीरः, अक्षोम्यो वा । उत्त० ५५ धीरः–अनन्तज्ञानी । आव० ८४५ । अक्षोभ्यः सम्यक्सोढेति । उत्त० ४१५ । धीः बुद्धिस्तया राजते स च तीर्थकृद्गणधरो वा । आचा० २०५ । अक्षोभ्यो धीविराजितो वा विवेकेन दुःखसुख-कारणतयाऽवधारय । आचा० १६० । व्रतपरिपालने स्थिरः । नन्दी० २५० । व्रतानुपालने स्थिर; । आव० २६ । धीमान् परीषहाद्यक्षोभ्यो वा । उत्त० २८५ । धीः–बुद्धिस्तया राजते इतिधीरः । प्रज्ञा० ५ । आव० ६१६ । धीरः–बुद्धिमान् स्थिरो वा । दश० ११६ । धीरः–संयतः । दश० २२२ । धीरः–तीर्थकरगणधरः । दश० ८६ ।

धीरपुरिस–एकान्ततो वीर्यान्तरायापगमाद् धीरपुरुषः तीर्थकरो गणधरश्च । आव० ६१६ ।

धीरपुरिसपन्नत्तं–धीरपुरुषप्रज्ञप्तं-तीर्थंकरगणधरप्ररूपितम् । आव० ८४३ ।

धीरपुरिसा–धीरेष्वे वैतेषु च ते पुरुषाः–पुरुषकारवन्तो न कातरेष्विति धीरपुरुषाः । सम० १५७ ।

धीरा–सत्त्ववन्तः । उत्त० ४०७ । स्थिरा अक्षोभा वा । प्रश्न० १०७ ।

धीवर–अष्टादशश्रेणिनाम । जं० प्र० १६४ ।

धुंधुमारे–धुन्धुमारः संवेगोदाहरणे शिशुमारपुराधिपतिः । आव० ७०६ ।

धुअं–ध्रुवाः तथाविधपुस्तकवैशिष्ट्यरूपस्वरूपस्यापरिहाणेः । जं० प्र० २५७ ।

धुआवणं–दव्वावणं । नि० चू० प्र० १७६ अ ।

धुण–धुनीहि–विवेचय पृथक्कुरु तदुपरि ममत्वं मा विधत्स्वेति, भावार्थः । आचा० १४४ ।

धुणइ–धुनोति पातयति । दश० १५६ । धुनाति–प्रस्फोटयति । ओघ० १११ ।

धुणण–धूननं–भिन्नग्रन्थेरनिवर्त्तिकरणेन सम्यक्त्वावस्थानम् । आचा० २६८ ।

धुणति–धूनाति । आव० २०६ ।

धुतकम्मंसे–धुतं–अपनीतं 'कम्मंसि' त्ति–कार्मग्रन्थिकपरिभाषया सत्कर्मानेनेति धुतकर्माशः । धुताः कर्मणोऽशा-भागा येन सः । उत्त० १८८ ।

धुता–धूताः संस्कारापेक्षया त्यक्ताः । प्रश्न० १०७ ।

धुत्त–धूर्तः द्यूतकारः । उत्त० २४८ ।

धुत्तिमा–धूर्त्तिमा । ओघ० १५८ ।

धुन्नं–धूयते रेणुवद्वायुना संसारचक्रवाले भ्राम्यते येन तद्धूतं कर्म । सूत्र० ३२६ । धून्नं–पापम् । दश० २२४ ।

धुय–ध्रुवं संयमः । सूत्र० १४१ । धूतं–धूयतेऽष्टप्रकारं कर्मेति तद्धूतं–संयमानुष्ठानम्, कर्म वा । सूत्र० ६६ ।

धुयरए–धुयरजस्कः । ओघ० २२६ । सम० ४४ ।

धुयसोलया–अट्ठारससीलंगसहस्सेसु सययं उज्जुत्ता । दश० चू० १२४ ।

धुरए–धुरकः । जं० प्र० ५३५ ।

धुरतुण्डे–धुरि । दश० १०५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धुवं–ध्रुवमव्यन्तं सर्वदेत्यर्थः । ठाणा० ३६३ । ध्रुवं कर्म्म संसारो वा । अनु० ३१ । अप्रच्युतानुत्पन्नस्थिरस्वभावः । सूत्र० ३७० । ध्रुवं–आचारप्रकल्पे प्रथमश्रुतस्कंधस्य षष्ठमध्ययनम् । प्रश्न० १४५ । ध्रुवं–आचाराङ्गस्य षष्ठमध्ययनम् । उत्त० ६१६ । नित्यं–संपूर्णं सर्वत्रप्रधानोपसर्जनभावेन वा । दश० २३५ । निश्चितः अचलत्वाद् ध्रुवः अनित्यतरूपः । भग० ११६ । ध्रुवत्वं सर्वदैवं भावान्नियतो त्रिकालभावित्वाद् ध्रुवः । ठाणा० ३३३ । दढं थिरं । नि० चू० प्र० २४४ आ । षष्ठमआचारप्रकल्पः । आव० ६६० । ध्रुवं आवश्यकस्य तृतीयः पर्यायः । विशे० ४१५ । ध्रुवं–पर्वतिथिभाविभोज्यम् । बृ० द्वि० १६२ आ ।

धुवकडुच्छुयं–धूपकडुच्छुकम् । जीवा० २३५ ।

धुवकम्मिओ–ध्रुवकर्मिको लोहकारादिः । ओघ० ७७ ।

धुवकम्मी–लोहकारो रहकारो कुंभकारो तंतुकारो । नि० चू० प्र० ३६० आ । काष्ठसूत्रधारादयः । बृ० द्वि० १० अ ।

धुवगंडिया–ध्रुवगण्डिका । दश० १४० ।

धुवघडो–धूपघटी धूपघटिका । जीवा० २०६ ।

धुवचारिणो–ध्रुवो मोक्षस्तत्कारणं च ज्ञानादि ध्रुवं तदा चरितुं शीलं येषां ते ध्रुवचारिणः । आचा० १२२ ।

धुवणंतराइं–आया ध्रुवान्तरवर्गणा अनन्ता भवन्ति । विशे० ३३१ ।

धुवण–ग्लानस्य धावनं प्रक्षालनम् । ओघ० ४१ । धावनम् । ठाणा० ३३६ । धुवनं धावनं शुभाध्यवसायान्मिथ्यात्वपुद्गलानां सम्यक्त्वभावसंजनमिति । आचा० २६८ ।

धुवनिग्गहो–अत्रानाचित्वात् क्वचिदपर्यवसितत्वाच्च ध्रुवं कर्म तत्फलभूतः संसारो वा तस्य निग्रहहेतुत्वान्निग्रहो ध्रुवनिग्रहः । अनु० ३१ ।

धुवरासी–ध्रुवराशिः । सूर्य० ५६ ।

धुवराहू–यः सदैव चन्द्रविमानस्याधस्तात् सञ्चरति स ध्रुवराहुः । सूर्य० २६० । भग० ५७६ ।

धुवलोअ–ध्रुवलोचः ध्रुवः प्रतिदिनभावी लोचः । बृ० प्र० २२३ अ । दिने दिने कुर्वन्तीत्यर्थः । नि० चू० प्र० ३४३ अ ।

धुववन्नं–ध्रुवः अव्यभिचारी स चासौ वर्णश्च ध्रुववर्णस्तं ध्रुवा । आचा० २६५ ।

धुवसीलया–ध्रुवशीलता अष्टादशशीलाङ्गसहस्रपालनरूपा । दश० २३५ ।

धुवा–ध्रुवा ध्रुवत्वात् त्रिकालभाविनी । जीवा० ६६ । त्रिकालावस्थायित्वात् ध्रुवा । जं० प्र० २७ ।

धुसुलिती–दध्यादिमश्नती । पिण्ड० १५७ ।

धूः–चिन्ता । पिण्ड० ३६ ।

धूआ–पुत्री । जं० प्र० १४६ । धूता सुता । आव० १५४ ।

धूतं–धुनातीति धूतं चारित्रम् । आचा० १२२ ।

धूमो–दोसो । नि० चू० तृ० ४६ अ । धूमः भोजने दोषविशेषः । भग० १२२ । हिंग्वादिसत्को वघारः । पिण्ड० ८४ । आन्तप्रान्तादाताहारद्वेषाच्चारित्रस्याभिधूमनाद् धूमदोषः । आचा० ३५१ । अभिभवे । बृ० प्र० ४६ अ । मनःशिलादिसम्बन्धि । उत्त० ४१७ । चारित्रेन्धनधूमहेतुत्वात् धूमः द्वेषः । भग० २६२ ।

धूमइंगाल–धूमाङ्गारकं द्वेषरागौ । ओघ० १८७ ।

धूमकेउ–धूमकेतुः धूमचिह्नो धूमध्वजः नोल्कादिरूपः । दश० ६५ ।

धूमकेऊ–धूमकेतुः अष्टत्रिंशत्तमो महाग्रहः । ठाणा० ७६ । जं० प्र० ५३५ ।

धूमपलिआमं–णाम जहा खड्डं खणित्ता तत्थकारी सो छुब्भति तीसे खड्डाए परिपरंतेहिं अण्णाओ खुड्डाओ खणित्ताओ सुतेंदुआदीणि फलाणि छुभित्ता जा सा करीसग खड्डगा तत्थ अग्गी छुब्भति तासिं च तेंदुगखड्डाणं सो आतंकारी स खड्डं निलिया ताहे धूमो तेहिं सो तेहिं पिविसिन्ता ताणि फलाणि पाथेंति तेणं ते पच्चंति तत्थ जे अपक्का ते धूमपलियाम भण्णंति । नि० चू० द्वि० १२५ आ ।

धूमप्पभा–धूमप्रभा । प्रज्ञा० ४३ ।

धूमप्रभा–धूमाभद्रव्योपलक्षिता पृथ्वी । अनु० ८६ ।

धूमवट्टि–धूमवर्ति धूमश्रेणिम् । जं० प्र० १६३ ।

धूमवण्णा–धूम्रवर्णाः पाण्डुराः । ज्ञाता० २३१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धूमायमानः- । नंदी० १५२, १६० ।
धूमार्हिति-धूमायिष्यन्ते धूममुद्गमिष्यन्ति । जं० प्र० १६७। भग० ३०६ ।
धूमिआ-धूमिका रूक्षा प्रविरला धूमाभा । अनु० १२१ ।
धूमिकाव्यामोहं- । ठाणा० ४५७ ।
धूमिता-धूमिका महिकाभेदो वर्णतो धूमिका धूमाकारा धूमेत्यर्थः । ठाणा० ४७६ ।
धूमिया-धूमिका रूक्षा प्रविरला धूमाभा । जीवा० २८३ । धूमिका धूम्रवर्णा धूसरः । भग० १९६ ।
धूयं-धूतं-सङ्गानां त्यजनं तत्प्रतिपादकं धूतम् । ठाणा० ४४४ । धूयत इति धूतं प्राग्बद्धं कर्म । सूत्र० ३३१ ।
धूयवाद-धूतं अष्टप्रकारकर्म्म धूननं ज्ञातिपरित्यागो वा तस्य वादः धूतवादः । आचा० २३९ ।
धूया-दोग्धि च केवलं जननीं स्तन्यार्थमिति दुहिता । उत्त० ३ । दुहिता पुत्री । पिण्ड १४० ।
धूलि-धूलिः पांशुः । जं० प्र० १६९ ।
धूलिणायं-धूलाज्ञातम् । उत्त० १२८ ।
धूली-धूलिः । ओघ० २१५ । धूली पांशुः । भग० ३०७ ।
धूलीजंघो-धूलिधूसरजंघः । व्य० प्र० २५३ अ ।
धूलीवासं-धूलिवर्षः । आव० ७३४ ।
धूव-धूपः दशाङ्गादिः गन्धद्रव्यसंयोगजः । जं० प्र०५१, १४४ ।
धूवग्गहणं-धूपग्रहणं धूपभाजनम् । आव० ६८६ ।
धूवणे-आत्मवस्त्रादेर्धूपनम्, अनागतव्याधिनिवृत्तये धूमपानमित्यन्ये व्याचक्षते । दश० ११८ ।
धूवपडिग्गहं-धूपप्रतिग्रहं धूपभाजनम् । आव० ७१० ।
धूवियं- । नि० चू० प्र० २३२ अ ।
धूसरं-ईषद्धवलम् । आचा० २९ ।
धृतपुष्पमित्र-आर्यरक्षितप्रथमो पुष्पमित्रशिष्यः । विशे० १००२ ।
धृतपूर्ण-योग्यं पानम् । बृ० प्र० ५५ अ ।
धृतवान्- । नंदी० १५४ ।
धृतिः-निषधवर्षधरपर्वते षष्ठं कूटम् । ठाणा०७२। तिगिञ्छहृदे देवताविशेषः । ठाणा० ७३ ।
धृष्टार्जुनः-द्रुपदकुलनीसुतः द्रौपदीज्येष्ठभ्राता । प्रश्न० ८७ ।
धेज्जं-धैर्यं धृष्टता । प्रश्न० ११६ । सत्त्वम् । प्रश्न० १२१ ।
धेज्जा-ध्येया । विपा० ४२ ।
धेवए-धैवतः रैवतः अभिसन्धयतेऽनुसन्धयति शेषस्वरानिति धैवतः षष्ठः स्वरः । अनु० १२७ ।
धेवते-अभिसन्धयते अनुसन्धयति शेषस्वरानिति निरुक्तिवशाद् धौवतः । ठाणा० ३९३ ।
धोअ-धौतो भूतिखरण्टितहस्तसम्मार्जनेनातितेजितः शोधितः । जं० प्र० ३५ । धौतानि शाणोत्तारेण दीप्तिमन्ति कृतानि । जं० प्र० २४२ ।
धोअणे-धावनं प्रक्षालनम् । आचा० ४१ ।
धोडग-घोटकः अजात्योऽश्वः । दश० १९४ ।
धोयं-धौतं निर्मलम् । जीवा० १६४ । धौतं प्रक्षालितमलम् । प्रश्न० ८२ । धौतम् । आव० ६२० । धौतं प्रक्षालितम् । भग० २५४ । धौतं शोधितं तप्तं च । जीवा० २६७ । धौतः-भूतिखरंटितहस्तसम्मार्जनेनातिनिशितीकृतः । प्रज्ञा० ३६३ । जीवा० १९१ । धौतः शोधितः । जीवा० १९१ । धौतः शोधितः । राज० ३३ ।
धोयपुत्ती-भूरिभेदा दाढीयाली । नि० चू० द्वि० ६१ अ ।
धोया-धौतानां शुद्धस्वरूपाः । ठाणा० ४४९ ।
धोरण-गतिचातुर्यम् । जं० प्र० २६५, ५३० । चतुरत्वं गतिविषयम् । ज्ञाता० २३२ ।
धोरिगिणो-नटीमुख्याः । आ० ७० ।
धोरुगिणि-धोरुकिनिकाः । ज्ञाता० ४१ ।
धोरेयसीला-धुरि वहन्ति धोरेयास्तेषामिव शीलं उत्क्षिप्तभारवाहिता लक्षणं स्वभावो येषां ते धौरेयशीलाः । उत्त० ४०७ ।
धोवंति-उद्वर्त्तयन्ती । आव० ३४९ ।
धोवण- । नि० चू० द्वि० १६६ अ । धावनं वस्त्राद्युपकरणचर्मकोशकटाद्यादिभण्डकविषयम् । आचा० ४२ ।
धाविलं-फोडितं । नि० चू० प्र० १२८ आ ।
धोव्वाण-सर्वेषां प्रक्षालनविधीनाम् । जं० प्र० २५८ ।
धमातं-भस्मीकृतम् । प्रज्ञा० ११२ । दग्धम् । प्रज्ञा० २ ।
ध्यानशतकं-ध्यानव्यासार्थप्ररूपकं शास्त्रम् । आव० ५८२ ।
ध्यानान्तरिकं- । बृ० प्र० २५६ अ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ध्यामकं–गन्धद्रव्यविशेषः । उत्त० १४२ ।
ध्यामतेजाः–भ्रष्टतेजाः । भग० ६८४ ।
ध्यामलं–अस्पष्टम् । आव० ७२५ ।
ध्यै–करणनिरोधार्थः । विशे० ११९३ ।
ध्रुवः–य एकास्पदप्रतिबद्धः । उत्त० २८९ ।
ध्रुवं–नित्यम् । व्य० द्वि० ३९१ अ ।
ध्रुवगण्डिका– । ठाणा० ४१५ ।
ध्रुवयं–ध्रुवकं सङ्गीते रागविशेषः । उत्त० २८९ ।
ध्रुववर्गणा–ध्रुवा–नित्याः सर्वकालावस्थायिन्यः । आव० ३५ ।
ध्रुवा–ध्रुववर्गणा । आव० ३५ ।
ध्रुवानन्तरा–प्रदेशोत्तरा । आव० ३५ ।
ध्वजा–केतुः । जीवा० १८९ ।

न

नंगल–लाङ्गलम्, हलम् । दश० २१८ । लाङ्गलं शीरम् । प्रश्न० ८ । लाङ्गलं हलम्, क्षेत्रोपक्रमणविशेषः । दश० ४० ।
नंगलिय–नाङ्गलिकः गलावलम्बितसुवर्णादिमयलाङ्गलाकारधारीभट्टविशेषः कर्षको वा । ओप० ७३ ।
नंगलिया–गलावलम्बितसुवर्णादिमयलाङ्गलप्रतिकृतिधारिणो भट्टविशेषाः कर्षका वा । भग० ४८१ ।
नंतिक्क–नंतित्ताः छिपाः । व्य० द्वि० ४१९ आ ।
नंद–नन्दः योगसंग्रहे शिक्षाद्दष्टान्ते पाटलिपुत्रस्य राजा । आव० ६७० । नन्दो मौर्याणां वंशजातः । व्य० द्वि० २८० । नन्दः नृपतिविशेषः । व्य० प्र० १४० आ । नन्दः पाटलिपुत्रे राजा । उत्त० १०४ । नन्दः-उदायिराज्ञो मन्त्री । वृत्तं लोहासनम् । ज्ञाता० ४३ । नन्दं–मङ्गलवस्तु, वृत्तं लोहासनम् । भग० ५४७ । स्थूलभद्रस्वामिनः पितामारितो नृपः । नंदी० १६७ । नन्दं वृत्तलोहासनम् । जं० प्र० ४२३ । नन्दिनामकं सन्निवेशम् । उत्त० ३७९ । नन्दः ब्राह्मणग्रामे उपनन्दस्य भ्राता । आव० २०१ । भरतक्षेत्रे भावितीर्थकरस्य पूर्वभवनाम । सम० १५४ । नन्दः–पारिणामिकीबुद्धिदृष्टान्ते पाटलिपुत्रे शङ्खीपतिः । आव० ४३३ ।
नंदगोवं–नंदगोपः । व्य० प्र० २४० ।
नंदण–नन्दनं चमरस्य विकुर्वणा विषयकोद्देशके मोचानगर्यां चैत्यम् । भग० १५३ । मल्लिनाथजिनस्य पूर्वभवनाम-महावीरस्वामिनः पूर्वभवनाम । सम० १५१ । रथाणितायधिपती । ठाणा० ४०६ । भरतक्षेत्रे भावि सप्तमो वासुदेवः । सम० १५४ ।
नंदणं–नन्दयति आनन्दयति देवादीनिति नन्दनं देववनम् । जं० प्र० ३६३ । नन्दनः लक्षणोपेततया समृद्धिजनकः । उत्त० ४५१ । द्वितीयवर्गे दशममध्ययनम् । निरय० १९ ।
नंदणवणं–नदनवनं द्वारवत्यां वनविशेषः । अन्त० १८ । नंदनवनं मेरुसम्बन्धी उत्तमवनविशेषः । प्रश्न० १३५ । नंदनवनं रैवतपर्वते वनविशेषः । अन्त० १ । नंदनवनं मेरोर्द्वितीयवनम् । प्रश्न० ८५ । रैवतकपर्वतस्य उद्यानविशेषः । निरय० ३९ । नन्दन्ति सुरासुरविद्याधरादयो यत्र तन्नन्दनं वनं–अशोकसहकारादिपादपवृन्दं नन्दनं च तद्वनं च नन्दनवनम् । नंदी० ४६ ।
नंदमाणग–नन्दमानकः पक्षिविशेषः । प्रश्न० ८ ।
नंदमित्ते–द्वितीयः विष्णुः । सम० १५४ ।
नंदसिरी–नन्दश्रीः संवरोदाहरणे भद्रसेनदुहिता । आव० ७१३ ।
नंदसेणिया–नन्दसेनिका अन्तकृद्दशानां सप्तमवर्गस्य चतुर्थमध्ययनम् । अन्त० २५ ।
नंदा–नन्दति समृद्धो भवतीति नन्दः तस्यामन्त्रणमिदं इह च दीर्घत्वं प्राकृतत्वात् । जं० प्र० १४३ । नन्दति शीतलजिनमाता । आव० १६० । नन्दा एतदभिधाना शाश्वतीपुष्करिणी । जं० प्र० ४१७ । नन्दा अन्तकृद्दशानां सप्तमवर्गस्य प्रथममध्ययनम् । अन्त० २५ । नन्दा नन्दयति समृद्धिं नयतीति नन्दा, अहिंसायाश्चतुर्विंशतितमं नाम । प्रश्न० ९९ । नन्दा संवरोदाहरणे वाराणस्यां जीर्णश्रेष्ठिनो भद्रसेनस्य भार्या । आव० ७१३ । नन्दा पुष्करिणीविशेषः । जीवा० २२९ । सम० १५० । श्रेणिकस्य राज्ञी । निरय० ९ । ज्ञाता० ११ । अभयकुमारस्य माता । ज्ञाता० ११ ।
नंदावत्त–चतुरिन्द्रियजीवविशेषः । जीवा० ३२ । प्रज्ञा० १,४ । नन्दावर्तः चतुरिन्द्रियजीवभेदः । उत्त० ६९६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नंदि–नन्दी अतिशयेन महान् । व्य० द्वि० ३२४ । नंदिः तुष्टिः प्रमोदः । आचा० १४३ । नन्दन्ति प्राणिनोऽनेनास्मिन् वेति वा नन्दिः–इदमेव प्रस्तुतमध्ययनं नन्दनं नन्दि प्रमोदो हर्षः इत्यर्थः । ज्ञानपञ्चकाभिधायकाध्ययनमपि नन्दिः । नंदी० १ । नन्दिः आविष्टुलिंगः । नंदी० १ । द्वादशतूर्यसङ्घाते नन्दिः । जीवा० २०७ । नन्दीः द्वादशतूर्यनिर्घोषः । प्रश्न० १५६ । क्रीडा । आचा० १५६ ।

नंदिआवत्तं–देवविमानविशेषः । सम० ३२ । नन्द्यावर्त्तः । ब्रह्मलोके देवविमानविशेषः । औप० ५२ । आव० २१७ ।

नंदिए–नन्दितः समृद्धतरतामुपागतः । भग० ११६ ।

नंदिगाम–नन्दीग्रामः भगवतो वर्धमानस्वामिनः पितुर्मित्रस्य ग्रामः । आव० २२२ ।

नंदिघोस–देवविमानविशेषः । सम० १७ । तूर्यनादः । ज्ञाता० ५८ । द्वादशतूर्यसङ्घातो नन्दी तस्य घोषः । उत्त० ३०५ । नन्दीघोषः–द्वादशतूर्यनिनादः । जीवा० १६२ ।

नंदिघोसेण–नन्दीघोषेण द्वादशतूर्यनिनादात्मकेन यद्वा आशीर्वचनानि नान्दी जीयास्त्वमित्यादीनि तद्घोषेण बन्दिकोलाहलात्मकेन । उत्त० ३४६ ।

नंदिणीपिय–उपासकदशांगे नवममध्ययनम्, नन्दिनीपितृनामकस्य श्रावस्तीवास्तव्यस्य भगवता बोधितस्य संलेखनादिगतस्य वक्तव्यतानिबन्धनान्नंदिनीपितृनामकमिति । ठाणा० ५०६ ।

नंदिपडिग्गहि–रोधगट्ठाणगादिसु उववज्जति । नि० चू० द्वि० १११ आ ।

नंदिपुर–नन्दिपुरं शाण्डिल्यजनपदे आर्यक्षेत्रम् । प्रज्ञा० ५५ । नन्दिपुरं मित्रराजधानी । विपा० ७६ ।

नंदिफले–नन्दिवृक्षाभिधानतरुफलानि । ज्ञाता० १० । ज्ञातायां पञ्चदशमध्ययनम् । सम० ३६ । ज्ञाता० १० । आव० ६५३ ।

नंदिमुयंगसंठिय–नन्दीमृदङ्गसंस्थितः, आवलिका बाह्यस्य त्रयोदशं संस्थानम् । जीवा० १०४ ।

नंदिमुयंगो–नन्दीमृदङ्गः द्वादशविधतूर्यान्तर्गतो मृदङ्गः । जीवा० १०५ ।

नंदिय–नन्दितः समृद्धितरतामुपगतः । भग० ११७ ।

नंदियावत्त–द्वीन्द्रियजीवविशेषः । जीवा० ३१ । प्रज्ञा० ४१ । नन्द्यावर्त्तः–नवकोणः स्वस्तिकविशेषः । प्रश्न० ७० । नन्द्यावर्त्तः । राज० ८ । नन्द्यावर्त्तः प्रतिदिग्नवकोणः स्वस्तिकविशेषो रूढिगम्यः । औप० १० ।

नंदिरागे–समृद्धौ सत्यां रागो-हर्षो नन्दिरागः । भग० ५७३ ।

नंदिराय–नृपविशेषः । ज्ञाता० २०८ ।

नंदिरुक्ख–वृक्षविशेषः । भग० ८०३ ।

नंदिवद्धण–नन्दिवर्द्धनः एषणासमितिदृष्टान्ते आचार्यः । आव० ६१६ । वर्धमानस्वामिनो ज्येष्ठभ्राता । आचा० ४२२ ।

नंदिवद्धणा–अञ्जनकपर्वते पुष्करिणीविशेषः । ठाणा० २३० ।

नंदिसेण–मथुरायां श्रीदामराजसुतः । ठाणा० ५०८ । नन्दिषेणः ग्लानवैय्यावृत्त्ये श्रद्धावान् साधुविशेषः । आव० ६१७ । पार्श्वापत्यः स्थविरः । आव० २०७ । नन्दिषेणः पारिणामिकी बुद्धेर्दृष्टान्तः । आव० ४३० । नन्दिषेणः श्रेणिकपुत्रसाधुः । आव० ४३० । श्रेणिकपुत्रः । आव० ६८२ । जम्बूद्वीपे ऐरवते अवसर्पिण्यां चतुर्थो जिनः । सम० १५३ ।

नंदिसेणा–नन्दिषेणा पूर्वस्यां दिशि पूर्वदिग्भाव्यञ्जनपर्वतस्य पुष्करिणी विशेषः । जीवा० ३६४ ।

नंदिसेन–शिष्यविशेषः । नि० चू० प्र० २०६ आ ।

नंदिस्सरो–नन्दिस्वरः द्वादशतूर्यसङ्घातवत्स्वरो यस्य सः । जीवा० २०७ ।

नंदी–प्रमोदः । आचा० १६३ । नन्दी–गान्धारस्वरस्य प्रथमा मूर्छना । जीवा० १६३ । द्वादशतूर्यसङ्घातः । उत्त० ३०५ । नन्दी–द्वादशतूर्यसमुदायः । भग० ४८१ । नन्दीवर्द्धनः राजकुमारविशेषः, अन्तकृद्दशासु दुःखविपाकानां षष्ठममध्ययनम् । विपा० ३५ । नन्दी–महेश्वरलघुशिष्यः । आव० ६८६ । नन्दीः समृद्धिः । आव० ७८६ । समृद्धिः-हेतुः अकृशताहेतुः अदीनताहेतुः समृद्धताहेतुर्वा । बृ० द्वि० १०५ आ । येनाभ्यवहृतेन तेवे संजमे वा नंदति स एव नंदी येनाभ्यवहृतेन न द्रुतं दुर्यंति स नंदी अथवा येनाभ्यवहृतेन न दीना भवन्ति स नंदी, समयसण्णाए वा संथरणं णंदी । नि० चू० द्वि० २१ अ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नंदीभाणं–नन्दीभाजनं नन्दीपात्रम् । ओघ० २१० ।
नंदीभायणं–नन्दीभाजनम् । बृ० द्वि० २४४ आ । महत्पात्रम् । नि० चू० द्वि० १८ आ ।
नंदीभासणं–नंदीभाषणं ज्ञानपंचकोच्चारणम् । व्य० द्वि० २३ ।
नंदीमुह–नन्दीमुखः पक्षिविशेषः । प्रश्न० ८ ।
नंदीसर–द्वीपविशेषः नन्दी समृद्धिस्तया ईश्वरो द्वीपो नन्दीश्वरः । अनु० ९० । अष्टमो द्वीपः । सम० ९० । ज्ञाता० १२७ । प्रश्न० ९६ । इक्षुवरसमुद्रानन्तरं द्वीपस्तदनन्तरं समुद्रोऽपि । प्रज्ञा० ३०७ । नन्दीश्वरः महेश्वरज्येष्ठशिष्यः। आव० ६८६ । नन्द्या–पर्वतपुष्करिणीप्रमुखपदार्थसार्थसमुद्भूतास्यद्भूतसमृद्धया ईश्वरः–स्फातिमान्नन्दीश्वरः । जं० प्र० १६३ ।
नंदीसरवरो–नन्दीश्वरवरः द्वीपविशेषः । जीवा० ३५८ । ज्ञाता० १२७ । आव० ८१५ ।
नंदीस्सरवरदीव–नन्दीश्वरवरदीपः । आव० २१६ ।
नंदुत्तरे–भूतानंदनागकुमारेन्द्रस्य रथानिकाधिपतिदेवः । ठाणा० ३०२ ।
नंदोत्तरा–अन्तकृद्दशानां सप्तमवर्गस्य तृतीयमध्ययनम् । अन्त० २५ ।
नइ–नदी सरित् । आव० ५८१ ।
नइमह–लौकीकपूजास्थाने दृष्टान्तः । आचा० ३२८ ।
नइयायतणे–नद्यायतनानि यत्र तीर्थस्थानेषु लोका पुण्यार्थं स्नानादि कुर्वन्ति । आचा० ४११ ।
नई–नदी गिरिनद्यादिका । प्रज्ञा० २६७ ।
नउअंगे–चतुरशीत्या लक्षैरयुतेः नयुताङ्गं, कालमानविशेषः। अनु० १०० । सूर्य० ९१ ।
नउए–चतुरशीत्या लक्षैर्नयुताङ्गैः नयुतम् कालमानविशेषः। अनु० १०० । सूर्य० ९१ । भग० २७५, ८८८ ।
नउय–चतुरशीतिवर्षलक्षाः पूर्वाङ्गं तच्च पूर्वाङ्गेन गुणितं पूर्वं, पूर्वक्रमेणैकोनविंशतिवारान् चतुरशीतिलक्षाहतं नयुताङ्गं तदपि चतुरशीतिलक्षाभिर्ताडितं नयुतम् । उत्त० २७७ ।
नउयंगे– । भग० ८८८ ।
नउल–नकुलः पाण्डुनृपस्य चतुर्थः पुत्रः । ज्ञाता० २०८ । नकुलः । आव० २१७ । नकुलः भुजपरिसर्पतिर्यग्योनिकः । जीवा० ४० ।
नउलगो–नकुलकः । आव० ४२१ ।
नउला–भुजपरिसर्पविशेषः । प्रज्ञा० ४६ ।
नउलि–नकुलीविद्याविशेषः । आव० ३१९ ।
नए–नयनं नयः नीयते परिच्छिद्यतेऽनेनास्मिन्नस्मादिति वा नयः, सर्वत्रानन्तधर्माध्यासिते वस्तुन्येकांशग्राहको बोधः इत्यर्थः । अनु० ४५ । नयः न्यायः । औप० ९३ । नदः–ह्रदः । ज्ञाता० २६ । नयति अनेकांशात्मकं वस्त्वेकांशावलम्बनेन प्रतीतिपथमारोपयति नीयते वा तेन तस्मिंस्ततो वा नयनं वा नयः प्रमाणप्रवृत्युत्तरकालभाविपरामर्शः । उत्त० ६७ । नयः–प्रतिनियतैकवस्त्वंशविषयोऽभिप्रायविशेषः । सूर्य० ३६ ।
नओ–नयः नयनं अनन्तधर्मात्मकस्य वस्तुनो नियतैकधर्मावलम्बनेन प्रतीतौ प्रापणं नयः । उत्त० ११ । नयः गमयतीति नयः नीयते परिच्छिद्यतेऽनेन अस्मिन् अस्माद् वेति नयः । विशे० ४३१ । नयः नीतिपक्षः स्थितिपक्षः । विशे० १३५२ ।
नकराणि–नैतेषु करोऽस्तीति नकराणि । आचा० २५४ ।
नकुल–च प्रलापः । उत्त० ६९९ । परिसर्पविशेषः । प्रज्ञा० ४५ ।
नकुला–औषधविशेषः । नि० चू० प्र ७६ अ ।
नकुलोपगूहं–स्त्रियाः गुह्यरक्षकं वस्त्रम् । प्रज्ञा० ४३० ।
नक्क–नासिका । प्रश्न० ८ । मत्स्यविशेषः । प्रश्न० ९ ।
नक्कय–पायकाः । सं० ।
नक्का–नासिका । आव० ८२० ।
नक्कुडिअ–नर्कुटिकः नागदन्तकः अङ्कुटिकः । जं० प्र० ५० ।
नक्खच्चणी–नखार्चणी नखहरणिका । बृ० द्वि० १०१ अ ।
नक्खत्तमासे–एकोनितनक्षत्रपर्याययोग एको नक्षत्रमासः । सूर्य० १५३ ।
नक्खत्तसंवच्छरे–नक्षत्रसंवत्सरः । सूर्य० १६८ । पञ्चविधलक्षणः संवत्सरः । सूर्य० १७१ ।
नक्खत्तसेसे–नक्षत्रशेषः, नक्षत्रार्धमासः । सूर्य० २३२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नक्खत्ता–नक्षत्राः ज्योतिष्कभेदविशेषः । प्रज्ञा० ६६ ।

नक्षत्रमासः–नक्षत्रेषु भावो नाक्षत्रः स खलु मासः सप्तविंशतिरहोरात्राणि सप्तषष्टीकृतेन छेदेन छिन्नस्याहोरात्रस्य एकविंशतिः सप्तषष्टाः भागः । बृ० प्र० १८६ आ । चन्द्रस्य नक्षत्रमण्डलभोगकालो नक्षत्रमासः । ठाणा० ३४४ । अष्टौ मुहूर्त्तशतानि एकोनविंशत्यधिकानि। सूर्य०६।

नख–नखरः । आचा० ३८ ।

नग–पर्वतः । उत्त० ३५२ । जीवा० २७० ।

नगर–नकरं अकरदायी लोकम् । प्रश्न० ५ । कररहितम् । अनु० १४२ । भग० ३६ । नात्र करोऽस्तीति नकरम् । उत्त० ६०५ । नगरमिह सैन्यनिवासिप्रकृतयः । भग० ३१८ । महामणुस्स संपरिग्गहो पंडियसमवाओ । दश० चू० १६३ । नकरं–नास्मिन् करो विद्यत इति नकरम् । दश० १४७ । भग० ६७४ ।

नगरगोत्तिय–नगरगुप्तिकः । आव० ६६७ । नगरगुप्तिकः । कोट्टपालः । प्रश्न० ३० ।

नगरजणवय–नगरजनपदाः नगरादिलोकाः स्वयमेव पचनपाचनस्वभावा वर्त्तन्ते यथा भ्रमराः । दश० ७३ ।

नगरथेरा–नगरे स्थापयन्ति दुर्व्यवस्थितं जनं सन्मार्गे स्थिरीकुर्वन्तीति स्थविराः, ये नगरे व्यवस्थाकारिणो बुद्धिमन्त आदेयाः प्रभविष्णवस्ते नगरस्थविराः । ठाणा० ५१६ ।

नगरधम्मे–नगरधर्मः नगराचारः । ठाणा० ५१५ ।

नगरनिद्धमणं–नगरनिर्द्धमनं नगरजलनिर्गमनम् । भग० २०० । नगरजलनिर्गं क्षालः । ज्ञाता० ८१ ।

नगरभोगिकः– । आव० २३८ ।

नगरमारी–नगरमारी मारीविशेषः । भग० १६७ ।

नगररोग–नगररोगः । भग० १६७ ।

नगरस्य–

नगराणि–चतुर्गोपुरोद्भासीनि न विद्यते करो येषु तानि नकराणि वा कररहितानि । जं० प्र० १२१ ।

नगिण–नग्नः कुचेलवान् । दश० २०६ ।

नग्गई–नग्गतिः गन्धारजनपदेषु पुरुषपुरनृपतिः, यश्चूतवृक्षं दृष्ट्वा प्रतिबुद्धः । उत्त० २६६ ।

नग्गओ–नग्नः । आव० ३०५ ।

नग्गयमग्गो–नग्नमार्गः । तं० ।

नग्गरुई–नाग्न्ये श्रामण्ये रुचिः–इच्छा नाग्न्यरुचिः । उत्त० ४७६ ।

नग्गेति–नग्नयति । आव० ३०५ ।

नग्गोधो–न्यग्रोधः एकोरुकद्वीपे वृक्षविशेषः । जीवा० १४५ ।

नग्गोहमंथुं– । आचा० ३४८ ।

नच्च–नृत्यः नृत्यविधायी । जीवा० २८१ ।

नच्चियव्वं–नर्त्तितव्यम् । ओघ० १५७ ।

नच्चेज्ज–पादजंघाऊरुकडिउदरबाहुअंगुलिवदणणयणपमुहादिविकारकरणं नृत्यम् । नि० चू० तृ० ६१ आ ।

नजाणति–न जानाति–न सम्यग् विशेषतो गृह्णाति । ठाणा० ३०६ ।

नजुतं–चतुरशीतिर्नयुताङ्गशतसहस्राणि एकं नयुतम्। जीवा० ३४५ ।

नजुतंगं–चतुरशीतिः नयुतशतसहस्राणि एकं नयुताङ्गम् । जीवा० ३४५ ।

नज्जइ–ज्ञायते । ज्ञाता० १६२ ।

नञ्–इह दुःशब्दार्थः । ठाणा० १५३ । सर्वनिषेधवचनोऽयं शब्दः । प्रज्ञा० ४६८ ।

नट्टं–गीतविरहितं नृत्यम् । बृ० द्वि० ३६ आ । नृत्यविधायी नर्त्तकः । अनु० ४६ । नाट्यं नृत्यम् । ठाणा० ४५० । नाट्यं साभिनयनिरभिनयभेदभिन्नं ताण्डवम् । जं० प्र० १३७ । नाट्यं नृत्यम् । विपा० ४५ । नृत्तंकरचरणनयनादिपरिस्पन्दविशेषलक्षणम् । आव० ५२८ ।

नट्टक–नर्त्तकः यो नृत्यति स । प्रश्न० १३७ ।

नट्टकहा–नर्त्तककथा रमणीयोऽयं नर्तको नवेति । दश० ११४ ।

नट्टग–नर्त्तकः यो नृत्यति सः अङ्किल्लो वा । औप० २ ।

नट्टमालए–नृत्तमालकः खण्डप्रपातगुहायामधिष्ठायकदेवविशेषः । ठाणा० ७१ ।

नट्टमालयं–नृत्यमाल्यम् । आव० १५१ ।

नट्टि–नर्त्तकी नाट्यम् नर्त्तनकारिणी च । दश० ४० ।

नट्टिअं–करस्य तथा पादस्य भ्रुवः शिरसः अक्ष्णः ओष्ठस्य च एवमादीनामङ्गानां सविकारं चलनं नर्त्तनम् । ओघ० १७७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नट्टुल्लगं–नाट्यम् । ज्ञाता० ६६ ।
नट्ठं–नष्टं सर्वथाऽदृश्यो भूतम् । जीवा० २४५ । जं० प्र० ३८६ ।
नट्ठखिड्डा–नष्टक्रीडा । आव० ३६४ ।
नट्ठतेये–नष्टतेजाः । भग० ६८४ ।
नट्ठिल्लओ–नष्टः । आव० १६४ ।
नड–नटः नाटकानां नाटयिता । अनु० ४६ । नटः नाटयिता । प्रश्न० १३७ । नटः नाटकानां नाटयिता । औप० २ । जीवा० २८१ । तृणविशेषः । जीवा० १२३ ।
नडकहा–नटकथा रम्योऽयं नटः । दश० ११४ ।
नडखइया–नटखादिता नटस्येव संवेगविकलधर्म्मकथाकरणोपार्जितभोजनादीनां खादितं भक्षणं यस्यां सा नटस्येव वा खइवसंवेगशून्यधर्म्मकथनलक्षणो हेवाकः-स्वभावो यस्यां सा । ठाणा० २७६ ।
नडपिडयं-नटपेटकं लवालवोदाहरणे ग्रामविशेषः । आव० ७२१ ।
नडाग्निः–नडः तृणविशेषस्तत्सत्कोऽग्निः । जीवा० १२३ ।
नडिओ–नटितः । ज्ञाता० १६६ ।
नडिज्जए–नट्यन्ते विनटयन्ते । प्रज्ञा० ६५ ।
नणु–ननु अक्षमायां प्रयुज्यमानः शब्दः । दश० ६३ ।
नण्णत्थ–ननु निश्चितं अत्र इहलोके नन्वत्र नान्यत्र वा । भग० १७४ ।
नत्तं–नक्तं रात्रौ । सूर्य० १०४ ।
नत्तु–नप्ता पौत्रः दौहित्रश्च । भग० ३०६ ।
नत्तूण–नप्तृणां पौत्राणाम् । निरय० २० ।
नत्था–नस्ते नासारज्जू । उपा० ४४ ।
नत्थिकवादी–नास्तिकवादी–लोकायतिकः । प्रश्न० ३१ ।
नदइ–नदति । जीवा० २४७ ।
नदिकोप्पर–नद्यास्तीरे आकुंटितकूर्परकारं गमनं नद्या आकुण्टितकूर्पराकारं चलनं नदीकूर्परम् । बृ० तृ० १६२ अ ।
नदितानि–शब्दवन्ति । जीवा० १६० ।
नदी–गङ्गासिन्ध्वादिका । नंदी० २२८ । नदी–सरित् । भग० २३७ । ज्ञाता० ३६ । बादरअप्कायस्थानेषु स्थानम् । प्रज्ञा० ७२ ।
नदीकच्छ–नदीगहनम् । ज्ञाता० ६७ ।
ननिव्वडइ–न जायते । पउ० २८ ।
नन्दः–क्रोधहृतः । भक्त० ।
नन्दक–खड्गविशेषः । सम० १५७ ।
नन्दन–छत्राग्रनगर्यां राजसुनुः । सम० १०६ ।
नन्दनवनं–मेरुपर्वते वनम् । आव० ४७ । ज्ञाता० ६१ । कूटविशेषः । प्रश्न० ६६ ।
नन्दा–श्रेणिकस्य राज्ञो वेन्नातटनगरेश्रेष्ठिनः पुत्री अभयकुमारस्य माता । नंदी० १५० ।
नन्दाप्रविभक्ति–त्रयोदशनाट्यभेदः । जं० प्र० ४१७ ।
नन्दाप्रविभक्तिचम्पाप्रविभक्त्यभिनयात्मको–नन्दाचम्पाप्रविभक्त्यात्मकः त्रयोदशो नाट्यविधिः । जीवा० २४६ ।
नन्दि–संनिवेशविशेषः । उत्त० ३८० ।
नन्दिघोषा–घण्टाविशेषः । भग० ७०० ।
नन्दिणीपिया–उपासकदशानां नवममध्ययनम् । उपा० १ ।
नन्दितः–महितो हृष्टः तुष्टो वा । आव० ७५६ ।
नन्दिवर्धनः–भगवतः वर्द्धमानस्वामिनो भ्राता । आव० १८३ ।
नन्दिवर्द्धनः–राजकुमारविशेषः । ठाणा० ५०८ ।
नन्दिषेणः–श्रेणिकपुत्रः । नंदी० १६६ ।
नन्दीमृदङ्गः–एकतः सङ्कीर्णोऽन्यत्रविस्तृतो मुरजविशेषः । राज० ४६ ।
नन्नत्थ–नवरं केवलमिति । औप० ८५ ।
नपुंसकः–षण्डकः । दश० ११५, २१५ ।
नपुंसगवेए-नपुंसकस्य वेदो नपुंसकवेदः, नपुंसकस्य स्त्रियं पुरुषं च प्रत्यभिलाष इत्यर्थः, तद्विपाकवेद्यं कर्मापि नपुंसकवेदः । प्रज्ञा० ४६६ ।
नपुंसगवेय–नपुंसकवेदको वर्द्धितकत्वादिभावेन भवति । भग० ८६३ ।
नपू–नपुंसकत्वम् । उत्त० ३१४ ।
नभ–नभाति दीप्यतेति नभः । भग० ७७६ ।
नभःसेनः–उग्रसेनतनयः । विशे० ६१० ।
नभोदेव– । आचा० ३८६ ।
नभोवाहन–भृगुकच्छे नृपः । विशे० ६०४ ।
नमंसइ–नमस्यति कायेन प्रणमति । जं० प्र० १७ । सूर्य०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६ । ज्ञाता० १० । कायेन प्रणमति नात्यासन्ने नातिदूरे उचिते देशे इत्यर्थः । ज्ञाता० १० । नमस्यति तत्प्रह्वैः शब्दैः स्तौति । सूत्र० २७४ । नमस्करोति पश्चात्प्रणिधानादियोगेन सामान्येन वा । जीवा० २५६ ।

नमंसण–नमस्करणं वाचा । आव० ४०६ । नमस्यनं प्रणमनम् । भग० ११५ ।

नमंसणिज्जं–नमस्यनं प्रणामतः । औप० ५ ।

नमंसति–नमस्यति कायेन प्रणमति । निरय० ३ । कायेन वन्दित्वा नमस्यित्वा च । राज० ४८ ।

नमंसित्ता–नमस्यित्वा प्रणम्य । ठाणा० १०८ ।

नमंसे–नमस्यति नमस्करोति । दश० २४५ ।

नमः–पूजार्थमव्ययम् । आव० ३७६ ।

नममाणे–नममानः संयमानुष्ठानेन विनयवान् । आचा० २५४ ।

नमयति–प्रवणयति । उत्त० ६४१ ।

नमस्करणं–प्रणामपूर्वकं प्रशस्तध्वनिभिर्गुणोत्कीर्त्तनम् । आव० ८११ । आन्तरा प्रीतिः । उप० मा० १५ ।

नमस्कारः–पञ्चमङ्गलकः । ओघ० २०३ ।

नमिः–कच्छपुत्रः । आव० १४३ ।

नमिपव्वज्जा–उत्तराध्ययनानां नवममध्ययनम् । सम० ६४ ।

नमिय–नमितः नामं ग्राहितः । जीवा० २२६, २६४ ।

नमिया–ज्ञातायाः द्वितीयश्रुतस्कंधे पञ्चमवर्गे द्वाविंशतितममध्ययनम् । ज्ञाता० २५२ ।

नमी–नमिः द्रव्यव्युत्सर्गे विदेहजनपदे मिथिलाधिपतिः, यो वलयानि दृष्ट्वा संबुद्धः । आव० ७१६, ७१६ । नमिः राजा योऽशनादिकमभुक्त्वैव सिद्धिमुपगतः । सूत्र० ६५ । नमिः, विदेहजनपदेषु मिथिलानृपतिः, यो निजदेवीवलयं दृष्ट्वा प्रतिबुद्धः ।

नमुचिः–वाराणस्यां ब्राह्मणविशेषः । उत्त० ३७६ ।

नमुचिना–सेवाद्युपायलब्धे दृष्टान्तः । जं० प्र० २६७ ।

नमुक्कार–नमस्कारः नमस्कारसहितं प्रत्याख्यानम् । आव० ८५२ । नमस्कारः । आव० ५२४, ८०० ।

नय–नयः अनन्तधर्मात्मकस्य वस्तुन एकांशपरिच्छेदः, एकेनैव धर्मेण पुरस्कृतेन वस्त्वङ्गीकारः । जं० प्र० ५ । अनन्तधर्मात्मकस्य वस्तुन एकांशपरिच्छेदः, नयनं नयः नीयतेऽनेनास्मिन्नस्मादिति नयः । ठाणा० ४ । नयनं नीयतेऽनेनास्मादस्मिन्निति वा नयः । आव० ५४ । नैगमादिः । ज्ञाता० ७ । 'नडु' प्रापणे अनेकविधमर्थं प्रापयन्तीति नयाः । अहव णिच्छियमत्थं णयतीति णया । नि० चू० तृ० १४६ आ । नीतिदर्शनम् । भग० ११४ । नयः–अनन्तधर्मात्मकस्य वस्तुन एकांशपरिच्छित्तिः । अनु० २१० । अनन्तधर्माध्यासितं वस्त्वेकेन धर्मेण नयन्ति परिच्छिन्दन्ती तिज्ञानविशेषाः नयाः । आचा० ३ । द्रव्यास्तिकायाः । भग० ६२ ।

नयओ–नयतः नीतितो विधिना । विशे० १२६३ ।

नयगई–यन्नयानां नैगमादीनां स्वस्वमतपोषणं यन्नयानां सर्वेषां परस्परसापेक्षाणां प्रमाणाबाधितवस्तुव्यवस्थापनं सा नयगतिः, विहायोगतेरष्टमो भेदः । प्रज्ञा० ३२७ ।

नयगतो–नयगतिः नैगमादिनयानां या गतिः सा सर्वनया अपि वा यामिच्छन्ति सा । प्रज्ञा० ३२७ ।

नयचक्कं–द्वादशविध्यादिप्रतिपादकं शास्त्रम् । उत्त० ६८ ।

नयणं–नयनं लोचनम् । प्रश्न० ८ । दृष्टिः । ज्ञाता० १६२ ।

नयणकी–नयनकीको नेत्रमध्यतारा । राज० ६ । नयनकीका नेत्रमध्यतारा । ज्ञाता० ६ ।

नयरं–नगरं अविद्यमानकरदानम् । प्रश्न० ३६ । नगरं अविद्यमान करम् । औप० ७४ । नगरं करविरहितसन्निवेशः । उत्त० १०७ । न विद्यते करो यस्मिन् तत् नकरं नखादिकः । जीवा० २७६ ।

नयरबाहिरिया–नगरबाहिरिका । उत्त० २२१ ।

नयरमंडल–नगरमंडलपुरपरिक्षेपपरिसरः । उत्त० ४६८ ।

नयरमज्झं–नगरमध्यं सन्निवेशमध्यभागः । प्रश्न० ५६ ।

नयविही–नयविधिः नैगमादिभेदः । उत्त० ५६५ । नयविधिः नैगमादिनयप्रकारः । प्रज्ञा० ५६ ।

नयविहूणो–नयविहीनः ज्ञानगमनक्रियालक्षणनयशून्यः । आव० ५३१ ।

नयाः–नयन्ति परिच्छिन्दन्ति अनेकधर्मात्मकं सद्वस्तु सा अनवधारणतयैकेन धर्म्मेणेति नयाः । ठाणा० १५३ । नता ईषन्नता । जीवा० १८२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नयुता–सङ्ख्याविशेषः । उत्त० २७७ ।
नर–पादपूरणार्थे निपातः । बृ० तृ० १६६ आ । नरः नरव्यञ्जनः, न भावनरः । दश० २५१ ।
नरए–नरान् कायन्ति–योग्यतयाऽऽह्वयन्तीति नरकाः । उत्त० १८२ ।
नरकः–नराह्वानकः स्थानविशेषः । ७७ ।
नरकण्ठः–नरकण्ठप्रमाणो रत्नविशेषः । जीवा० २३४ ।
नरकवीथीनां– । आचा० २१६ ।
नरकान्ता–रुक्मिवर्षधरपर्वते चतुर्थं कूटम् । ठाणा० ७२, ७४ । रुक्मिपर्वतनिर्गता नदी । ह्रदविशेषः । ठाणा० ७५ ।
नरछाया–छायागतिभेदः । प्रज्ञा० ३२७ ।
नरदेवा–नराणां मध्ये देवाः-आराध्याः । क्रीडाक्रान्त्यादियुक्ता वा नराश्च ते देवाश्चेति नरदेवाः । भग० ५८३ ।
नरय–निरयाः सीमन्तकाद्या अप्रतिष्ठानावसानाः । आव० ६०० ।
नरयावास–आवसन्ति येषु ते आवासाः नरकाश्च ते आवासश्चेति नरकावासाः । भग० ६८ ।
नरवाम– । औप० ७ ।
नरवाहण–भरुयच्छे राया । बृ०प्र० २२७ आ । नरवाहनः । आव० ८६ ।
नरवाहणिया–कार्मार्यभेदविशेषः । प्रज्ञा० ५६ ।
नरसिंह–पुण्यपापसंकीर्णमेकवस्तुदृष्टान्तः । विशे० ७६३ ।
नरिंदं–लान्तके देवविमानविशेषः । सम० २२ ।
नरिंदकंतं–लान्तके देवविमानविशेषः । सम० २२ ।
नरिंदुत्तरवडिंसगं–लान्तके देवविमानविशेषः । सम०२२ ।
नर्कुटकः–नागदन्तकः, अङ्कुटकः । जीवा० २०५ ।
नर्त्तकी–यंत्रकाष्ठमयी । व्य० प्र० १६२ अ ।
नर्म–रागोद्रेकात्प्रहासमिश्रो मोहोद्दीपकः कन्दर्पः । आव० ८३० ।
नलः–शुषिरसराकारः । ठाणा० ४१६ । प्रतरभेदविशेषः । प्रज्ञा० २६६ । तृणविशेषः । प्रज्ञा० ३७ । नलः–वैश्रमणज्येष्ठपुत्रः । अन्त० ५ । वनस्पतिविशेषः । भग० ८०२ ।
नलकूबरः–देवविशेषः । उत्त० ४६५ ।
नलणी– । भग० ८०३ ।
नलथंबा–नलस्तम्बः–अभावुकद्रव्यम् । ओघ० २२३ । नलस्तम्बः–वृक्षविशेषः । आव० ५२१ ।
नलदाम–नलदामः–पारिणामिकीबुद्धिदृष्टान्ते शाखापुरे मरकोटमारकः । आव० ४३५ । नलदामः–कुविन्दविशेषः । व्य० प्र० १४० आ ।
नलवणं–वनविशेषः । ओघ० १५८ ।
नलाइयः–सूर्यपाकरसवतीकारकाः । जं० प्र० २४४ ।
नलिए–नलिकः–शूलिका । व्य० द्वि० ४१७ अ ।
नलिणंगे–नलिनाङ्गः, कालविशेषः । सूर्य० ६१ । भग० ८८८ ।
नलिण–भगवत्या एकादशशतके अष्टम उद्देशकः । भग० ५११ । नलिनः । सूर्य० ६१ । नलिनम् । भग० २१०, २७५, ८८८ । देवविमानविशेषः । सम० ३३ । नलिनं-ईषद्रक्तं पद्मम् । जीवा० १७७ । ज्ञाता० ६६ । प्रत्येकशरीरजीवात्मकवनस्पतिभेदः । प्रज्ञा० ३७ । देवविमानविशेषः । सम० ३५ ।
नलिणकूडा–वक्षस्कारपर्वतविशेषः । ठाणा० ८० ।
नलिणगुम्मं–देवविमानविशेषः । सम० ३५ । उत्त० ३७६ ।
नलिणतन्तु–नलिनतन्तवः–सूक्ष्मतन्तवः । जं० प्र० १०७ ।
नलिणिगुम्म–नलिनीगुल्मः विमानविशेषश्च । आव० ६७० । द्वितीयवर्गेऽष्टममध्ययनम् । निरय० १६ ।
नलिनं–ईषद्रक्तं पद्मम् । राज० ८ ।
नलिनगुल्मविमानं–पद्मगुल्मविमानम् । उत्त० ३७६ ।
नलिनानि–ईषद्रक्तानि । जं० प्र० २६ ।
नलिनावती– । ज्ञाता० १२३ ।
नवंग–नवाङ्गानि द्वे द्वे श्रोत्रे नयने नासिके जिह्वैका त्वगेका मनश्चैकम् । ज्ञाता० ४२ ।
नव–वरिसो होइ नवो व्रतपर्यायेण । व्य० द्वि० ११२ आ । प्रत्यग्रम् । ज्ञाता० १६८ । जीवा० १८८ । त्रिवर्षावस्थां यावत् । व्य० प्र० २४५ ।
नवकमलं–आदित्यबोधं पद्मम् । प्रश्न० ८४ ।
नवणीयं–नवनीतं । प्रज्ञा० ३६७ । अक्षणम् । आव० ६२४, ८५४ । जीवा० २६० । उत्त० ६५४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवतं–नवत्यधिकम् । सूर्य २६१ ।
नवतय–नवतानि–जीवानि । ज्ञाता० २३२ ।
नवतयकुसंतो–नवत्ववकुशान्तः–प्रत्यग्रस्वग्दर्भपर्यन्तरूपः । जीवा० २१० ।
नवधम्म–नवधर्मः–अभिनवश्रावकः । बृ० प्र० २७६ अ ।
नवनवकिकाया–एकशीतिः । व्य० द्वि० ३४७ आ ।
नवनवमिया–नवनवमिका–भिक्षुप्रतिमाविशेषः । अन्त० २६ । नव नवमानि दिनानि यस्यां सा नवनवमिका । सम० ८८ ।
नवमालिका–गन्धद्रव्यविशेषः । जीवा० १६१ । गुल्मविशेषः । प्रज्ञा० ३० । उत्त० ६६२ । आचा० ३० । भग० ३०६ ।
नवमिका–शक्रेन्द्रस्य सप्तमी अग्रमहिषी । जं० प्र० १५६ ।
नवमिया–शक्रेन्द्रस्य सप्तमी अग्रमहिषी । भग० ५०५ । सत्पुरुषस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी । भग० ५०४ ।
नवयए–नवत्वक् । ठाणा० २३४ ।
नवरं–केवलम् । ओघ० ३४, १६७ । ठाणा० ५६ ।
नवरि–केवलम् । प्रश्न० १३३ ।
नवलकं–नोलीति लोके । नंदी० १५६ ।
नवा–जत्थ गावो ऊसत्थाणा लिहंति सा भुजमाणी णिरुद्धा नवा भण्णंति । नि० चू० प्र० १६२ आ ।
नवा– । ठाणा० ४६७ ।
न विग्रहः–लोकयात्रा । नि० चू० प्र० ३२४ आ ।
नवीनः–सम्प्रत्येवापाकतः समानीतः ।
नष्टक्षीरा–विनीता गौः । आव० ५४६ ।
नष्टनाशकः–नित्यवासी । आव० ५३५ ।
नष्टसंसारः–विनीतसंसारः । आव० ५४६ ।
नस्ते–नासिकारज्जू । भग० ४५६ ।
नह–नखः नखिका: । जं० प्र० ५७ । नखः । आव० १६२ । करजः । प्रश्न० ८ ।
नहनिवाय–नखनिपातः–नखरदनजातिः, संप्राप्तकामस्याष्टमो भेदः । दश० १६४ ।
नहरणं–न घेत्तव्यं । नि० चू० द्वि० २४ आ ।
नहवाहणो–नभोवाहनः–द्रव्यप्रणिधिविषये कृशसमृद्धो भृगुकच्छनगराधिपतिः । आव० ७१२ ।
नहवेयण–नखवेदना । आव० १६२ ।
नहवेयणा–नखवेदना नखरपीडा । भग० १६७ ।
नहसंठाणा–नखसंस्थाना–नखवत्तीक्ष्णा । ओघ ३० ।
नहसंदट्ठो–नखसंदष्टः–नखाः संदष्टा मुसलादिभिश्चुम्बिता यस्य सः । जीवा० २१३ ।
नहसिर–नखशिरः–नखाग्रम् । भग० २१८ ।
नहो–साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः । प्रज्ञा० ३४ ।
नाइ–ज्ञातिः–स्वजनः । उत्त० ३६१ । ज्ञातिः–स्वजनो मातापितृपुत्रकलत्रादिः । सूत्र० ७५ । ज्ञातिः–स्वजनः । उत्त० १८८ ।
नाइत–नादितं वादनोत्तरकालभावी सततध्वनिः । राज० २५ ।
नाइय–नादितं–शब्दानुसारी नादः । ओप० ७३ । लपितम् । ज्ञाता० ५ । नादितं–घण्टायामिव वादनोत्तरकालभावी-सततध्वनिः । जीवा० २४५ । नादितं–ध्वनिमात्रम् । भग० ४७६ ।
नाइवेलं–नातिवेलं न मर्यादोल्लङ्घनम् । आचा० २६१ ।
नाई–ज्ञातयः–पूर्वापरसंबद्धाः स्वजनाः । आचा० १३० ।
नाईवग्गो–ज्ञातिवर्गः–स्वजनयोषिद्वर्गः । ओघ० ६१६ ।
नाए–न्यायः सन्मार्गः । आचा० १४४ । न्यायनिर्णयकत्वात् न्यायः ज्ञातं वा–ज्ञातसामर्थ्यमनुभूततत्प्रसादेन लोकेनेति । ज्ञाता० ३ । आचा० ४२२ ।
नाओ–अभिष्टार्थसिद्धेः सम्यगुपायत्वात् न्यायः, जीवकर्म्मसम्बन्धापनयनान्न्यायः, आवश्यकस्य षष्ठः पर्यायः । अनु० ३१ । नादः–महान् घोषः । जीवा० २४५ । नीयते संविर्त्ति प्राप्यते वस्त्वनेन इति न्यायः । विशे० ६६४ आ । न्यायः आवश्यकस्याष्टमपर्यायः । विशे० ४१५ ।
नाखरा–सिंहादयः । ठाणा० २७३ ।
नागः–भवनपतिविशेषः । जीवा० २८१ । अनु० २५ । द्रुमविशेषः । जीवा० १८२ । सीसकम् । प्रश्न० १५२ । दशमं करणम् । जं० प्र० ४६३ । नागः–वनगजः । दश० २७५ । नागः–वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३१ । नागः–शिक्षायोगदृष्टान्ते राजगृहे प्रसेनजित्सत्को रथिकः–सुलसापतिः । आव० ६७६ । नागः–भद्दिलपुरे गाथापतिः । अन्त० ४ । भगवत्या द्वादशशतकस्य अष्टम उद्देशकः । भग०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५५२ । नागः–द्वीपसमुद्रविशेषः । जीवा० ३२१ । नागः–यमुनाह्रदवासी घोरविषो महानागः । प्रश्न० ७५ ।

नागकुमारा–नागकुमाराः भुवनपतिः । प्रज्ञा० ६९ । नागकुमाराः–वरुणस्याज्ञोपपातवचननिर्देशवर्त्तिनो देवाः । भग० १९९ ।

नागकुमारीओ–नागकुमार्यः-वरुणस्याज्ञोपपातवचननिर्देशवर्त्तिन्यो देव्यः । भग० १९९ ।

नागकेसरं–नागकेशरं–चूर्णविशेषः । आव० ६३६ ।

नागग्गहो–नागग्रहः । जीवा० २८४ ।

नागघरए–उरगप्रतिमायुक्तं चैत्यम् । ज्ञाता० १३१ ।

नागजण्णए–नागपूजा, नागोत्सवः । ज्ञाता० १३२ ।

नागजसा–नागयशाः–पन्थकसुता । ब्रह्मदत्तराज्ञो । उत्त० ३७९ ।

नागदंतए–नागदन्तकः-नर्कुटकः अङ्कुटक इति । जीवा० २०५ । नागदन्तकः–अङ्कुटकः । जीवा० २१४ ।

नागदत्तः–नागदत्तः-वैधर्म्योदाहरणे प्रतिष्ठाने निर्विण्णकामभोगो नागवसुश्रेष्ठिपुत्रः । आव० ६९८ । नागदत्तः–कषायप्रतिक्रमणोदाहरणे श्रेष्ठिपुत्रः । आव० ५६५ । नागदत्तः–निष्प्रतिकर्मशरीरतायां विपरिते दृष्टान्तः । आव० ६६४ ।

नागदत्ता–यक्षहरितस्य प्रथमा सुता–ब्रह्मदत्तराज्ञो । उत्त० ३७९ ।

नागदमनी–औषधीविशेषः । उत्त० ६३४ ।

नागपरियावणिया–नागाः नागकुमारास्तेषां परिज्ञा यस्यां ग्रन्थपद्धतौ भवति सा नागपरिज्ञा । नंदी० २०७ ।

नागपुर–नगरविशेषः । ज्ञाता० २५२ ।

नागबाणः–महाशस्त्रम् । जीवा० २८३ ।

नागबाणाः–धनुष्यारोपिता बाणाकारा मुक्ताश्च सन्तो जाज्वल्यमानासह्योल्का दण्डरूपास्ततः परशरीरे सङ्क्रान्ता नागमूर्तीभूय पाशत्वमश्नुवते । जं० प्र० १२५ ।

नागमह–नागस्य भवनपतिविशेषस्य प्रतिनियतदिवसभावी उत्सवः । जीवा० २८१ । आचा० ३२८ ।

नागमाला-नागमालाः द्रुमगणविशेषः । जं० प्र० ९८ ।

नागयज्ञ–पद्मावत्या देव्या कारितो यज्ञः । ठाणा० ४०१ ।

नागरकादि–मैथुने प्रारम्भयन्त्रम्, सम्प्राप्तकामस्य द्वादशो भेदः । दश० १९४ ।

नागरपुष्पं–पुष्पविशेषः । जीवा० १३६ ।

नागरप्रविभक्ति–द्वादशनाट्यभेदः । जं० प्र० ४१६ ।

नागराय–नागराजाः–नागकुमारवराः । ठाणा० २२८ ।

नागरिकः–नगरनिवासी । नंदी० १४९ ।

नागरी–लिपिविशेषः । नंदी० १८८ ।

नागरुक्ख–वृक्षविशेषः । भग० ८०३ । भुजङ्गानां चैत्यवृक्षः । ठाणा० ४४२ ।

नागलया–नागः द्रुमविशेषः स एव लता तिर्यक् शाखाप्रसराभावात् नागलता । जीवा० १८२ ।

नागवसू–नागवसुः–प्रतिष्ठानगरे श्रेष्ठि । आव० ६९८ ।

नागविज्ज–भूतानन्द देवः । भग० ५०४ ।

नागसिरि– चम्पानगर्यां सोमस्य भार्या । ज्ञाता० १९६ । नागश्रीः–प्रतिष्ठानपुरे नागवसुश्रेष्ठिभार्या । आव० ६९८ ।

नागसेण–नागसेनः–उत्तरवाचालायां भोजनदाता । आव० १९७ ।

नागार्जुनवाचकाः–श्रोघश्रुतसमाचारकाः । नंदी० ५२ ।

नागिंदो–नागेन्द्रः । आव० १४३ ।

नागोल–कुलवंशविशेषः । व्य० प्र० ६ अ ।

नागेन्द्रकुलं–कुलविशेषः । दश० २४२ ।

नाट्यकला–भरतमार्गच्छलिकं लास्यविधानम्, द्वासप्ततिकलायां चतुर्थी । सम० ८४ ।

नाट्यानीकं–सप्तमानीकविशेषः । जीवा० २१७ ।

नाडइज्जो–नाटकीयः नाटकपात्रम् । विपा० ६३ ।

नाडग–नाटकं–चरितानुसारिनाटकलक्षणोपेतम् । ठाणा० ४५० ।

नाडयं–नाटकं गीतयुक्तं नाट्यम् । बृ० द्वि० ३९ आ ।

नाडिक–कालपरिज्ञाते दृष्टान्तः । ठाणा० ४० ।

नाण–ज्ञातिर्ज्ञानमितिभावसाधनः संविदित्यर्थः । ज्ञायते वाऽनेनास्माद्वेतिज्ञानं तदावरणस्य क्षयः क्षयोपशमो वा, ज्ञायतेऽस्मिन्निति ज्ञानं आत्मा तदावरणक्षयक्षयोपशमपरिणामयुक्तः जानातीति वा ज्ञानं तदेव स्वविषयग्रहणरुपत्वादिति । ठाणा० ३४७ । ज्ञातिर्ज्ञानं ज्ञायते-परिच्छिद्यते वस्त्वनेनास्मादस्मिन्वेति वा ज्ञानं, जानाति स्वविषयं परिच्छिनत्तीति वा ज्ञानं–ज्ञानावरणकर्म्मक्षयोपशमक्षयजन्यो जीवस्य तत्त्वभूतो बोध इत्यर्थः । अनु० २ । ज्ञानं–अभिप्रायः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचा० ६६५ । ज्ञानं–उपयोगः संवेदनम् प्रत्ययः । विशे० ३६ । ज्ञानं–द्रव्यपर्यायविषयो बोधः । ठाणा० १५४ । ज्ञानं विशेषावबोधः । ठाणा० ४६ । अपायधारणे ज्ञायन्ते परिच्छिद्यतेऽर्था अनेनास्मिन्नस्माद्वेति ज्ञानं ज्ञानदर्शनावरणयोः क्षयः क्षयोपशमो वा ज्ञातिर्वा ज्ञानम् । ठाणा० २३ । दानविशेषः । प्रश्न० १३५ । ज्ञानं–आचारादिश्रुतं । बृ० द्वि० १०० आ । ज्ञानं विमर्शपूर्वको बोधः । उत्त० १२७ । ज्ञायते–परिच्छिद्यते वस्त्वनेनेति ज्ञानं–सामान्यविशेषात्मके वस्तुनि विशेषग्रहणात्मको बोधः । प्रज्ञा० ४५३ । ग्रन्थानुप्रेक्षणरूपम् । प्रश्न० १११। तत्त्वावबोधरूपः । जं० प्र० १५१ । विशेषबोधः । प्रश्न० १३२ । ज्ञानं–मत्यादीनि ज्ञानानि स्वपरपरिच्छेदिनो जीवस्य परिणामाः ज्ञानावरणविगमव्यक्तास्तत्त्वार्थपरिच्छेदाः । आचा० ६८ । अपायधारणे ज्ञानम् । ठाणा० २३ ।

नाणगुणं–ज्ञानगुणम्–ज्ञानमाहात्म्यम् । आव० ५६१ ।

नाणगुणमुणियसारो–ज्ञानेन गुणानां–जीवाजीवाश्रितानां पर्यायाणां च तदविनाभाविनां मुणितः–ज्ञातः सारः, परमार्थो येन सः, ज्ञानगुणेन ज्ञानमाहात्म्येन वा ज्ञातः सारो येन सः ज्ञानगुणमुणितसारः । आव० ५६१ ।

नाणट्ठा–नानार्था–भिन्नाऽभिधेयानि । भग० १७ ।

नाणण्णवाय–ज्ञानप्रवादः ज्ञानं–मतिज्ञानादिभेदभिन्नं पञ्चप्रकारं तत्प्रपञ्चं वदतीति । नंदी० २४१ ।

नाणत्तं–नानात्वं–विशेषः । बृ० प्र० २२६ आ । नानात्वं भेदः । भग० २६ । नानात्वं–परनिरपेक्षमेकस्यैव वर्णादिकृतं वैचित्र्यम् । प्रज्ञा० ३०३ । नानात्वं–योऽतिरिक्तो विधिर्भवति । ओघ० १६६ । अतिरिक्तः । ओघ० १८३ ।

नाणत्ति–नाना इत्येतस्य भावो नानाता–वस्तूनां परस्परं भिन्नता–विशेषः । विशे० ८८७ ।

नाणत्ती–नानाभावः नानाता–भिन्नता । आव० २८६ ।

नाणदंसणसंपन्न–ज्ञानदर्शनसम्पन्नः । दश० २२२ ।

नाणपज्जवा–ज्ञानपर्यवान्–विशिष्टतरवस्तुतत्त्वावबोधरूपाः । उत्त० ५६२ । ज्ञानपर्यवाः ज्ञानपर्यायाः ज्ञानविशेषा बुद्धिकृता वाऽविभागपरिच्छेदाः । भग० ११६ ।

नाणपडिसेवणाकुसीले–ज्ञानस्य प्रतिसेवणया कुशीलो ज्ञानप्रतिषेवणाकुशीलः । भग० ८६० ।

नाणपुलाए–ज्ञानमाश्रित्य पुलाकस्तस्यासारताकारी विराधको ज्ञानपुलाकः । भग० ८६० ।

नाणप्पवायं–ज्ञानं मत्यादिकं स्वरूपभेदादिभिः प्रोच्यते तत् ज्ञानप्रवादम् । सम० २६ ।

नाणबलिओ–ज्ञानबलिकः अव्यभिचारिज्ञानः । ओप० २८ ।

नाणमायारो–ज्ञानासेवनाप्रकारः । दश० १०६ ।

नाणवं–ज्ञानं-यथावस्थितपदार्थपरिच्छेदकं वेत्तीति ज्ञानवित् । आचा० १५४ ।

नाणवसिए–ज्ञानव्यवसितः । भक्त० ।

नाणविणह–ज्ञानविनयो मत्यादिनां मत्यादिज्ञानानां श्रद्धानमस्ति बहुमानतदृष्टार्थभावनाविधिग्रहणाभ्यासरूपः । भग० ६२४ ।

नाणवुट्ठि–ज्ञानवृष्टिः शब्दवृष्टिः । आचा० ६८ ।

नाणसिद्धा–ज्ञानसिद्धाः–भवस्थकेवलिनः । दश० १२८ । नानाता–भिन्नता । आव० २८१ ।

नाणामणिपंचवण्णघंटापडायपडिमंडियग्गसिहरं– । आचा० ४२३ ।

नाणावंजण–नानाव्यञ्जनः अनेकप्रकारः दध्यादिभिः । उत्त० ३६१ ।

नाणावरणिज्जं–ज्ञायते–परिच्छिद्यते वस्त्वनेनेति ज्ञानं–सामान्यविशेषात्मके वस्तुनि विशेषग्रहणात्मको बोधः, आव्रियते–आच्छाद्यते अनेनेति आवरणीयं कृद्बहुलमिति वचनात् करणेऽनीयप्रत्ययः, ज्ञानस्यावरणीयं ज्ञानावरणीयम् । प्रज्ञा० ४५३ ।

नाणाविरागो–नानाविधो–विशिष्टो रागो यस्य स नानाविरागः । जीवा० २४६ ।

नाणाविहदोसो–त्वक्त्वक्षणनयनोत्खननादिषु हिंसाद्युपायेष्वसकृदप्येवं प्रवर्त्तत इति नानाविधदोषः । आव० ५६० ।

नाणी–ज्ञानी–परमार्थवित् । आचा० १६६ । ज्ञानी–केवलज्ञानवानित्यर्थः । आचा० ३३१ । ज्ञानी–ज्ञानं सकलपदार्थाविभावकं विद्यते यस्यासौ । आचा० १८२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाणुद्देसए–अष्टमशतद्वितीयोद्देशकस्य ज्ञानवक्तव्यतार्थमवान्तरप्रकरणम् । भग० ६१० ।

नात्रक–सम्बन्धः । ठय० द्वि० १२६ आ ।

नादियं–नादितं लपितम् । जीवा० १८८ ।

नादिया–नादिता–शब्दवती । जीवा० २२७ ।

नानादेसी–बहुविधा अनार्यप्रायदेशोत्पन्नाः । ज्ञाता० ४१ ।

नानापिण्ड–नाना–अनेकप्रकारोऽभिग्रहविशेषात्प्रतिगृहमल्पाल्पग्रहणाच्च पिण्ड–आहारपिण्डः, नाना चासौ पिण्डश्च नानापिण्डः अन्तप्रान्तादिर्वा । दश० ७३ ।

नानाविधदोषः–हिंसाद्युपायेषु दोषो सकृत्प्रवृत्तिरिति । ठाणा० १६० ।

नान्दीपात्रं–भिक्षापात्रम् । पिण्ड० १३४ ।

नापितक्षुरग्रहम्– । १–१–१६ ।

नाभी–नाभिः–प्रथमजिनपिता । आव० १६१ । भरतक्षेत्रे अवसर्पिण्यां सप्तमः कुलकरः । ठाणा० ३६८ । आव० १११ । सम० १५० । नाभिः–शकटरथाङ्गम् । दश० २१८ । आचा० ३८ ।

नाभेय–ऋषभदेवो भगवान् । आचा० ८ ।

नाम–नाम परिणामोऽवगाहनानाम कर्मविशेषः। भग०२८०। नामसंभावनायां प्रयुज्यमानोऽयं शब्दः । भग० ८२ । अभिधानम् । अनु० १०५ । अलङ्कारार्थः । आव० ८३१ । वाक्यस्यालङ्कृतौ । प्रश्न० ५ । सम्भावनायाम्। ठाणा० ४१६ । भग० ८२ । अनु० १७६ । नामशब्दः सम्भावनायां । आचा० ३५५ । शास्त्रीयोपक्रमे द्वितीयो भेदः । आव० ५६ । चतुर्था, तद्यथा–गौणं समयजं तदुभयजमनुभयजञ्च । पिण्ड० ३ । क्षपकोऽभिधीयते उपशमको वा । आचा० १७२ । नाम परिणामो धर्मः । भग० २८० । नामकर्मण उत्तरप्रकृतिविशेषो जीवपरिणामो वा । भग० २७ । नाम अभिधानम् । ठाणा० ४८६ । शास्त्रीये द्वितीयो भेदः । ठाणा० ४ । नाम्नः–कर्मणः उत्तरप्रकृतिविशेषो जीवपरिणामो वा । ठाणा० ३७६ । नाम सम्भावने, अलङ्कारे वा । भग० ३७ । नाम यादृच्छिकमभिधानम् निश्चयार्थमव्ययमपि । भग० ११५ । संभावने । भग० ७०५ । यादृच्छिकमभिधानम् । भग० ५६१ । यज्जीवादिवस्तुनोऽभिधानं तद् नाम । विशे० ४४५ । अभ्युपगमः मन्यामहे तदित्यर्थः । विशे० १०५८ । यत् कस्मिंचिद् भूतकदारकादौ इन्द्रायभिधानं क्रियते तद् नाम भण्यते । विशे० २२ । नाम निक्षेपस्य द्वितीयो भेदः । विशे० ४५० । नाम आख्या आभधान नामधेयम् । भग० ११ । नाम नमनं नामकर्मनिर्जरणम् । सूत्र० २५६ । नामयति गत्यादिपर्यायानुभवनं प्रति प्रवणयति जीवमिति नाम । प्रज्ञा० ४५४। परिणामो धर्मः । सम० १४८ । ठाणा० ३७७ । नमनं नामः–परिणामो भावः । भग० ८६० । विभक्तिपरिणामाख्यान्नेत्यर्थः । भग० ११ । पारिभाषिकी सञ्ज्ञा । विपा० ४२ ।

नामए–सम्भावनायामलङ्कारे । ठाणा० ४१६ । वाक्यालङ्कारे । ठाणा० ४६६ ।

नामकम्म–नमयति गत्यादिविविधभावानुभवनं प्रत्यात्मानं प्रवणयति चित्रकर इव करितुरगादिभावं प्रति रेखाकृतिमिति नामकर्म । उत्त० ६४१ ।

नामकाय–नामाश्रित्य कायः । आव० ७६७ ।

नामगोत्त–इहान्वर्थयुक्तं नाम सिद्धान्तपरिभाषया नामगोत्रम् । सूर्य० २७४ ।

नामगोयं–नामगोत्रं यादृच्छिकान्वर्थाभिधानम् । ओप० ५० ।

नामण–नामनमवनतिकरणम् । दश० १०० । रागादीनां प्रह्वीकरणं वश्यभावापादनं नमनं मूलतो नाशनम् । विशे० ११७६ ।

नामधिज्जं–नामधेयं नाम । दश० २०७ ।

नामधेज्ज–नामधेयं नाम । ओप० १ २ ।

नामधेज्जा–नामधेयवती प्रशस्तनामधेयवती । नाम धार्यं–हृदि धरणीयं यस्याः सा । ज्ञाता० १४ ।

नामधेयं–प्रशस्तं नाम । भग० ७ ।

नामनमस्कारः–नम इत्यभिधानम् । जं० प्र० १० ।

नामनिग्गया–निर्गतनामा गणिकाविशेषः । आव० २१३ ।

नामनिप्फण्ण–नामनिष्पन्नः निक्षेपभेदः । दश० १५ । नामनिष्पन्न आचारशास्त्रपरिज्ञादिविशेषाभिधाननामादिन्यासः । आचा० ३ । नामनिष्पन्नः–सामायिकादिविशेषाभिधाननिष्पन्नः । अनु० २५१ । निक्षेपस्य द्वितीयः प्रकारः । आव० ५८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नामनिष्पन्नः-निक्षेपभेदः । ठाणा० ६ ।
नाममुद्रा-मुद्रिका-अभिज्ञानम् । नंदी० १५६ ।
नामसच्च-नामसत्यं नाम कुलमवर्द्धयन्नपि कुलवर्द्धन इत्युच्यते, धनमवर्द्धयन्नपि धनवर्धनः इत्युच्यते, अयक्षश्च यक्ष इति । दश० २०८ ।
नामसच्चा-नामसत्या पर्यातिकसत्यभाषायाश्चतुर्थो भेदः । नामतः सत्या नामसत्या यथा कुलमवर्द्धयन्नपि कुलवर्धनमिति । प्रज्ञा० २५६ ।
नामसमं-स्वकीयेन नाम्ना समं नामसमम् । विशे० ४०५ । अभिधानं तेन समं नामसमम् । अनु० १५ ।
नामाउडिओ-आकुट्टितनामा । अनु० २२३ ।
नामागोयं-इहान्वर्थयुक्तं नाम सिद्धान्तपरिभाषया नामगोत्रमित्युच्यते । नामगोत्राणि-अन्यर्थयुक्तानि नामानि । जीवा० ३३६ ।
नामानि-गोत्राणि । ठाणा० ३८६ ।
नामिकं-वस्तुवाचकत्वात् अश्व इति । अनु० ११३ । पदस्य प्रथमो भेदः । आव० ३७६ ।
नामुदए-अन्ययूथिकः । भग० ३२३ । सप्तम आजीविकोपासकस्य नाम । भग० ३६६ ।
नामे-नामयति क्षपयति । आचा० १७२ ।
नामेइ-नामयति-अननुगुप्तं करोति । दश० २१३ ।
नाय-ज्ञातः-कुलविशेषः । आव० १७६ । ज्ञातः-क्षत्रियविशेषः । प्रश्न० २६ । ज्ञातः-नागवंश्यः ज्ञातवंशो वा । औप० ५८ । नायः-नयतीति छान्दसत्वात्कर्त्तरि घञ् नायः । आचा० १४५ । ज्ञातानि उदाहरणानि । उत्त० ६१४ । ज्ञाताः क्षत्रियाः । आचा० ३०३ ।
नायए-ज्ञातकः-जगत्प्रतीतः क्षत्रियो वा । उत्त० ४४४ । ज्ञातकः-स्वजनः । आव० १८७ । स्वजनपुत्रकः । ज्ञाता० ८६ । आव० १८७ । ज्ञातीन् । उत्त० १३४ । नायकः प्रभुर्न्यायदो-न्यायदर्शी । ज्ञाता० ८६ ।
नायओ-नायकः-सकलजगत्स्वामी ज्ञातकः ज्ञात एव वा ज्ञातकः-उदारक्षत्रियः, न्यायतः । उत्त० ३२१ । ज्ञातयः-पूर्वापरसम्बन्धिनः स्वजनाः । आचा० २५० । ज्ञातयः स्वजनाः । बृ० द्वि० ७ अ । ज्ञातयः-दूरवर्त्तिनः स्वजनाः । उत्त० १३ ।
नायकुले-स्वजनगृहम् । उपा० १४ ।
नायकुलनिव्वते- । आचा० ४२२ ।
नायकुलवासिणी-ज्ञातिकुलवासिनी नाम यो गृहजामातुर्दत्ता । व्य० द्वि० २७७ आ ।
नायगो-ज्ञातकः-परिचितः । सूत्र० ३२० । नगरकटकादिप्रधानः । औप० ७२ । नायकः-प्रधानः । आव० ७७२ । पुरसंथुतो पच्छासंथुतो वा । नि० चू० द्वि १२१ आ ।
नायतो-ज्ञातकः पूर्वसंस्तुतः । व्य० द्वि० ३३६ अ ।
नायाधम्मकहाओ-ज्ञातानि-उदाहरणानि तत्प्रधानाधर्मकथा ज्ञाताधर्मकथा । नंदी २३०, २३१ ।
नायपुत्ते-ज्ञाताः-क्षत्रियास्तेषां पुत्रः-अपत्यं ज्ञातपुत्रः वीरवर्धमानस्वामी । आचा० ३०३ । ज्ञातपुत्रः-ज्ञातः-उदारक्षत्रियः सिद्धार्थः तत्पुत्रो वर्धमानः । दश० १६६ । ज्ञातपुत्रः-भगवान् वर्द्धमानः । दश० १६० । आचा० ४२२ ।
नायमुणी-ज्ञातमुनिः-क्षत्रियविशेषरूपो यतिः श्रीमन्महावीर इत्यर्थः । प्रश्न० ११३ ।
नायसंड-ज्ञातखण्डः-वीरजिनस्य निष्क्रमणोद्यानः । आव० १३७ ।
नायसंडवणं-ज्ञातखण्डवनम् । आव० १८६ ।
नायसुतो-ज्ञातसुतः-ज्ञाताः-क्षत्रियास्तेषां पुत्रः, वीरवर्द्धमानस्वामी । सूत्र० १४३ । ज्ञातसुतः । व्य० द्वि० ४०२ आ ।
नाया-ज्ञाताः-इक्ष्वाकुवंशविशेषभूताः । भग० ४८१ ।
नायागयं-नायागतं स्वस्ववृत्त्यनुष्ठानप्राप्तम् । आव० ८३७ ।
नारए-जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे उत्सर्पिण्यां विंशतितमजिनस्य पूर्वभवनाम । सम० १५४ ।
नारओ- । बृ० प्र० ३० अ ।
नारकद्वितीयोद्देशः-जीवाभिगमस्य द्वितीय उद्देशः । भग० १३० ।
नारद-दृष्टमधिकृत्य वासुदेवे कामकथाकारकः । दश० ११० । श्रुतमधिकृत्य पद्मनाभे कामकथाकारकः । दश० ११० । उत्त० ६८१ । नारदः सत्यो शौचोदाहरणे तापसपुत्रयज्ञदत्तसुतः । आव० ७०५ ।
नारदमुनि-द्रौपद्युपरि द्वेषवाहको असंयतः । प्रश्न० ८७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नारदा:–गन्धर्वभेदविशेषः । प्रज्ञा० ७० ।

नारयपुत्त–नारकपुत्रः पुद्गलप्रदेशनिरूपणे महावीरशिष्यः । भग० २४० ।

नाराचः–उभयतो मर्कटबन्धः । जीवा० १५ ।

नाराय–नाराचः-अयोमयो बाणः । उत्त० ३११ । नाराचं–मर्कटस्थानीयमुभयोः पार्श्वयोऽस्थि नाराचम् । सम० १४६ । नाराचं यत्रास्थ्नोर्मर्कटबन्ध एव केवलस्तत् । जीवा० १५ । नाराचः–बाणः । भग० ३१८ । नाराचं–उभयतः मर्क्कटबन्धनिबद्धकाष्ठसम्पुटोपमसामर्थ्योपेतत्वात् । भग० १२ । उभयतो मर्कटबंन्धः । सूर्य० ४ । प्रज्ञा० ४७२ । जं० प्र० १५ । नाराचमुभयेतामर्कटबन्धः । राज० ५७ ।

नारायग्गं–नाराचाग्रं बाणाग्रम् । जीवा० १०६ ।

नारायण–नारायणः-अष्टम बासुदेवः । आव० ५६, १६६ । नारायणः–ऋषिर्यः परिणतोदकादिपरिभोगात्सिद्धः । सूत्र० ६५ । कृष्णः । बृ० प्र० ३० आ ।

नारीकंता–नारीकन्ता–नदीविशेषः । ठाणा० ७४ । जं० प्र० ३७७ ।

नारीकान्ता–ह्रदविशेषः । ठाणा० ७५ । नीलवर्षधरपर्वते षष्ठं कूटम् । ठाणा० ७२ ।

नारुआ–नवमी श्रेणिः । जं० प्र० १६३ ।

नालंद–सूत्रकृताङ्गे सप्तममध्ययनम् । आव० ६५८ ।

नालंदा–राजगृहनगरस्य बाहिरिका । सूत्र० ४०७ ।

नालएरी–वृक्षविशेषः । भग० ८०३ ।

नालन्दा–नालं ददातीति अर्थिभ्यो यथाऽभिलषितं ददातीति-राजगृहनगरबाहिरिका । सूत्र० ४०६ ।

नालंदीयं–नालं ददातीति, सदाऽर्थिभ्यो यथाऽभिलषितं ददातीति नालंदा–राजगृहनगरबाहिरिका तस्यां भवं, सूत्रकृताङ्गस्य द्वितीयश्रुतस्कन्धे सप्तममध्ययनम् । सूत्र० ४०६ । ठाणा० ३८७ ।

नालबद्धा–मातापिताभ्रातृभगिनीपुत्रीदुहिता इत्येते षडप्यनन्तरवल्लीमधिकृत्य नालबद्धा । बृ० तृ० ४२ आ ।

नालिंदा–राजगृहनगरे पाटकविशेषः । भग० ६६१ ।

नालि–नाडी–घटिका । जीवा० १०५ ।

नालिआ–नालिका–चतुर्हस्तप्रमाणम् । अनु० १५४ ।

नालिका–सार्धाष्टात्रिंशल्लवाः । तत्त्वा० ४-१५ । नाडिका-घडिकारूपा । विशे० ४३६ । देहादधिको दण्डकः । बृ० द्वि० २० आ । ताम्रादिमयघटिका । अनु० ४८ ।

नालिकेरी–वृक्षविशेषः । उत्त० ६७२ ।

नालिया–नालिका–द्यूतक्रीडाविशेषः । सूत्र० १८१ । नालिका–घटिका । दश० ४० । सम० ६८ । नालिका–आत्मप्रमाणचतुरङ्गुलाधिका यष्टिका । ओघ० ३३ । नालिका सुषिरवंशादिरूपा । भग० १३४ । यष्टिविशेषः । भग० २७५, २७७ । स्वमानात् चतुरङ्गुलाधिका यष्टिः । बृ० तृ० १६४ आ । नालिका, घटिका । बृ० प्र० ४२ अ ।

नालियापुप्फं–नालिकापुष्पं–कलम्बुकापुष्पम् । जं० प्र० ४५३ ।

नालियेरपाणगं–पानकभेदः । आचा० ३४७ ।

नालिसंठिय–नाडीसंस्थितः–आवलिकाबाह्यस्य द्वात्रिंशतितमं संस्थानम् । जीवा० १०४ ।

नाली–नाडी–त्रसनाडी । भग० ६६० । नाडीकः वनस्पतिविशेषः । भगवत्याः एकादशशतके पञ्चम उद्देशकः । भग० ५११ ।

नालीए–नालिका–द्यूतविशेषलक्षणा । दश० ११७ ।

नाव–नौः–द्रोणी । दश० २२० । नौः–तरिका । पिण्ड० १०२ ।

नावणं–दानम् । प्रश्न० ५७ ।

नावाबंध–नौबन्धः । बृ० प्र० ८२ अ ।

नावापूरकः–चुलुकः । बृ० प्र० ७१ आ ।

नावासंठिओ–नावासंस्थितः बुध्नादूर्द्धवं नाव इव उभयोरपि पार्श्वयोः समतलं भूभागमपेक्ष्य क्रमेण जलवृद्धिसम्भवेन उन्नताकारत्वात् । जीवा० ३३५ ।

नाविओ–स ह्युक्तरूपया नावा भवोदधिं तरतीति नाविकः । उत्त० ५०६ ।

नावियदुयक्खरओ–नापितदासः । आव० ६६० ।

नासः–न्यासः–द्रव्यस्य निक्षेपः-परैः समर्पितं द्रव्यम् । उपा० ७ । न्यासः–रूप्यकाद्यर्पणम् । आव० ८२१ ।

नासण–नाशनं–कर्म्मप्रकृतेः स्तिबुकसङ्क्रमेण प्रकृत्यन्तरगमनम् । आचा० २६८ ।

नासा–नाशा । आव० १६२ । घोणः । प्रश्न० ८२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नासाभेय–नासाभेदः-नासिकाविवरकरणम् । प्रश्न० २२ ।
नासावहारे–नासापहारः-रूप्यकाद्यर्पणस्यापहारः । आव० ८२० ।
नासावेदणा–नाशावेदना । आव० १६२ ।
नासिक–नासिक्यपुरं-नगरविशेषः । नंदी० १६७ ।
नासिका– । आचा० ३८ ।
नासीर–मृगया । उत्त० ४३८ ।
नासेइ–नाशयति मत्सरादपनुते । प्रश्न० १२५ ।
नास्तिकः–लोकायतः । दश० १२५ । मतविशेषः । उत्त० २७५ ।
नास्तिकाभिप्रायः–लोकायतमतः । दश० १२५ ।
नाह–नाथत्वं चास्य योगक्षेमकृन्नाथ इति वचनादप्राप्तस्य सम्यग्दर्शनादियोगकरणेन लब्धस्य तस्यैव पालनेन चेति । सम० ३ । योगक्षेमविधाता । उत्त० ४७३ । नाथत्वं योगक्षेमकरित्वम्, नाथ.-प्रभुः । भग० ८ । योगक्षेमकृत् । नंदी० १३ । नाथः योगक्षेमकृत् । जीवा० २५५ ।
नाहवयं–नाथवचनम् । आव० ३१३ ।
नाहि–नैव । भग० १७५ । जानीहि । उत्त० ४७३ ।
नाहियवायं–नास्तिकवादः । ग० ।
नाही–नाभि कुलकर ऋषभपिता । प्रज्ञा० १०६ ।
नि–निर् अपकर्षे अपचये यथा निर्ग्रन्थः । बृ० प्र० १३८ आ ।
निंती–निर्गच्छन्ती । आव० ७०१ ।
निंतो–निर्यान् निष्क्रामन् । पिण्ड० ७६ ।
निंदं–निन्दा गुरुसमक्षमेव हीलना । आव० ५२८ ।
निंदइ–निन्दति कुत्सति । आव० ५८७ ।
निंदण–निन्दनं-मनसा कुत्सा । भग० २२७ ।
निंदणया–निन्दनं-आत्मनैवात्मदोषपरिकुत्सनम् । भग० ७२७ ।
निंदणा–निन्दना-देवदायकदोषोद्घट्टनम् । प्रश्न० १०६ । निन्दना-स्वमनसि कुत्सा । अन्त० १८ । निन्दना मनसा कुत्सनम् । औप० १०३ । निन्दना-आलोचना विकटना शुद्धिः शल्योद्धरणम् । ओघ० २२५ ।
निंदणिज्ज–हीलनीयो गुरुकुलाद्युद्घटनतः निन्दनीयः । ज्ञाता० ६६ ।
निंदति–निन्दति चेतसा कुत्सति । भग० १६६ । मनसा-कुत्सति । ज्ञाता० १४६ ।
निंदह–निन्दत मनसा निन्दां कुरुत । भग० २१६ ।
निंदा–आत्माध्यक्षमात्मकुत्सा प्रतिक्रमणस्य पर्यायः, निन्दनं निन्दा । आव० ५५२ ।
निंदु–मृतप्रसवनी । अन्त० ७ ।
निंब–वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३१, ३६४ । भग० ८०३१ ।
निंबए–निम्बकः-आचारविषये अम्बर्षिब्राह्मणश्राद्धपुत्रः । आव० ७०८ ।
निंबछल्ली–निम्बत्वक् । प्रज्ञा० ३६४ ।
निंबफाणियं–निम्बफाणितं निम्बक्वाथः । प्रज्ञा० ३६४ ।
निंबसारे–निम्बसारः निम्बमध्यवर्त्यवयवविशेषः । प्रज्ञा० ३६४ ।
निःकृपं–चंकमणाई सत्तो सुनिक्किवो थावराइ सत्तेसु काउं। च नाणुतप्पइ एरिसओ निक्किवो होइ । बृ० प्र० २१५ आ ।
निःशूकः–निद्धन्धसः । ओघ० १५८ ।
निश्रेयसं–निश्चितं श्रेयः-प्रशस्यम् । ठाणा० १७७ ।
निःश्वसितोच्छ्वसितसमं–निःश्वसितोच्छ्वसितमानमनतिक्रमतो यद् गेयं तत् । अनु० १३२ । ठाणा० ३६६ ।
निःसम्पन्नम्–असाधारणम् । आचा० ४८ ।
निःसारं–परिफल्गु, सूत्रस्य द्वात्रिंशद्दोषे सप्तमो दोषः । आव० ३७५ ।
निअडिल्ले–निकृतिमान्-मायापरः । उत्त० ३७६ ।
निअंबो–नितम्बः-पर्वतैकदेशः । ओघ० ३४ ।
निअट्टिअव्वं–निवर्त्तितव्यम् । ओघ० ७८ ।
निअडि–निकृतिः-मायारूपा । दश० १८८ ।
निअवय–निरन्वयः-एकान्तोच्छेदः नाशः । दश० ४० ।
निआग–नियागः-नित्यमामन्त्रितः पिण्डः । दश० २०३ ।
निआण–निदानं भाविफलाशंसा । दश० २६७ ।
निइउमाणाइ–नित्यं उमाणं-प्रवेशः । आचा० ३२६ ।
निइए–नित्यः अप्रच्युतिरूपः । आचा० १७६ ।
निइगं–नैत्यिकं-प्रतिदिनम् । प्रश्न० १४१ ।
निइल्लिओ–निजकः । आव० १५१ ।
निउणं–निपुणं-सूक्ष्मम् । आव० २६५ । निपुणं-सूक्ष्मं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहुत्वं च । आव० ६६ । नियतगुणं निगुणं वा सन्निहिताशेषसूत्रगुणमिति यावत् । आव० ६६ । निपुणः-सूक्ष्मः । आचा० ३२ । दश० १६६ । उपायारम्भकः । भग० ६३१ । निपुणः-सूक्ष्मबुद्धिगम्योऽत्यन्तकामविषयपरमनैपुण्योपेत इत्यर्थः । सूय० २६४ । निपुणं सूक्ष्मम् । विशे० ५०६ । निपुणः-उपायारम्भकः । अनु० १७७ ।

निउणसिप्पोगए-निपुणशिल्पोपगतः-सूक्ष्मशिल्पसमन्वितः । अनु० १७७ ।

निउणा-निपुणाः-दर्शिनः कुशलाः । उपा० ४६ । निपुणा-आधाकर्मादिपरिभोगतः कृतकारितादिपरिहारेण सूक्ष्मा । दश० १६६ ।

निउत्त-नियुक्तं-नियोजितम् । आव० ४६८ । व्यापारितः । उत्त० ५३६ । नितरां युक्तं-सम्बद्धं निकाचितं वेदने वा नियुक्तम् । भग० २८१ । नियुक्तं-नितरां सङ्गतं यत् तत् । ज्ञाता० २३८ ।

निउत्तमणिओइओ-नियुक्तानियोजितः । आव० २३८ ।

निऊडिऊण- । ओघ० १६७ ।

निएल्लओ-निजकः । आव० ३०८ ।

निओइए-नियोजितः व्यापारितः । उत्त० ३६५ ।

निओओ-नियोगः ग्रामः । बृ० द्वि० ३ अ ।

निओग-नियोगः व्यापारणम् । उत्त० १५२ । नियतो निश्चितो हितो वाऽनुकूलः सूत्रस्याभिधेयेन सह यः खलु योगः सम्बन्धः स नियोगः । विशे० ६१२ । नियोगः-नियमः । विशे० ७८३ । निजेऽभिधेये व्यापारो नियोगः । विशे० ५६३ ।

निओया-निगोदाः अनन्तजीवसङ्घाताः । आचा० ६० । निगोदाः-सूक्ष्मबादरानन्तकायिकवनस्पतिजीवशरीराणि । अनु० २४० । कुटुम्बानि । भग० ३०६ ।

निकर-पुञ्जः । ज्ञाता० २२६ ।

निकरण-निकरणं-क्रियाया-इष्टार्थप्राप्तिलक्षणाया अभावः । भग० ३१२ ।

निकरणाए-निश्चयं कर्तुं समर्थो भवति । आचा० ४८ ।

निकस-निकषः-कषपट्टगता कषितसुवर्णरेखा । अनु० २१४ ।

निकाइतं-निकाचितं नियमितम् । सूत्र० १७७ ।

निकाचितं-निकाचितं दृढतरं बद्धम् । उपशमनादिकरणानामविषयीकृतम् । प्रश्न० ६८ ।

निकाए-निकाया, स्कन्धस्य द्वितीयपर्यायः । विशे० ४२६ ।

निकाचन- । आचा० २०६ ।

निकाचनाकरणं-निदानकरणं एतस्मात्तपः प्रभृतेश्चक्रवर्त्यादित्वं मे भूयादिति । ठाणा० २७५ ।

निकाचयित्वा- । आव० १७७ ।

निकाचितं-निश्चितं प्रमाणम् । ठाणा० ४३५ । निश्चयपूर्वकं भणितम् । व्य० द्वि० २०६ आ । निबद्धीकृतं गृह्यते तत् । व्य० प्र० १६० अ ।

निकामं-द्वात्रिंशत्कवलाः प्रमाणं भवति त एव यस्मित्यशः सर्वकलं भुज्यते तन्निकामम् । व्य० द्वि० ३३४ आ । निकामं-प्रमाणातीतमाहार प्रतिदिवसमश्नतो निकामभोजनम् । पिण्ड० १७४ ।

निकाममीणे-निकामं-अत्यर्थं यः प्रार्थयते स निकाममीणा । सूत्र० १६० ।

निकाय-निकाचितं, बद्धम् । आव० ७६६ । स्कन्धपर्यायः । विशे० ४१६ । निकाच्य-व्यवस्थाप्य । आचा० १८६ । निकायः कायः । उत्त० ६६० । निकायः-मोक्षः । आचा० ४२ । निकायः-नित्यः कायः, अधिको वा कायः । आव० ७६८ ।

निकायकाय-नित्यः कायो निकायस्तत्सम्बन्धी कायः, अधिको वा कायो निकायस्तत्सम्बन्धो कायः, जीवनिकायसामान्येन वा, पृथिव्यादिभेदभिन्नः षड्विधोऽपि जीवनिकायो निकायस्तत्समुदायो वा । आव० ७६७ ।

निकायण-निकाचनम् । ओघ० ४५ । निकाचनं पुद्गलानां परस्परविश्लिष्टानामेकीकरणमन्योन्यावगाहिता अग्निप्रतप्तप्रतिहन्यमानशूचीकलापस्येव सकलकरणानामविषयतया कर्मणो व्यवस्थापनम् । भग० २५ ।

निकारः-निश्चयेन नितरां वा नियतं वा क्रियन्ते नानादुःखावस्था जन्तवो येन तन्निकरणं निकारः शारीरमानसदुःखोत्पादनम् । आचा० १४२ ।

निकासो-निकाशः सदृशः । जीवा० २१३ ।

निकिंतइ-निकृन्तति छिनत्ति विदारयति । आव० ८०१ ।

निकुरंब-निकुरम्बः समूहः । भग० १० ।

निकृतिः-आदरकरणेन परवञ्चनम् । भग०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निकेयण–निकेतन निश्वासनः । बृ० प्र० ८५ आ ।
निक्कंकड–निष्कङ्कटा निष्कवचा निरावणा निरुपघातेति । राज० ८ ।
निक्कंकडच्छाय–निष्कङ्कटा-निष्कवचा निरावरणा निरुपघाता छाया-दीप्तिर्यस्य तत् निष्कङ्कटच्छायम् । जीवा० १६१ ।
निक्कंकडच्छाया–निष्कङ्कटच्छायः निष्कङ्कटा–निष्कवचा निरावरणा निरुपघाता वा छाया दीप्तिर्यस्य सः । प्रज्ञा० ८७ ।
निक्कंकटा–निष्कवचा निवारणा इत्यर्थः, छाया–शोभा येषां ते । ठाणा० २३२ ।
निक्कंकडा–निष्कङ्कटा निष्कवचा निरावरणा निरुपघातेति । जीवा० १६१ । प्रज्ञा० ८७ ।
निक्कंखिय–काङ्क्षणं काङ्क्षितं निर्गतं काङ्क्षित यस्मादसौ निष्काङ्क्षितः, देशसर्वकाङ्क्षारहितः । प्रज्ञा० ५६ । निष्काङ्क्षितः–देशसर्वकांक्षारहितः । दश० १०२ । मुक्तदर्शनान्तरपक्षपातः । ज्ञाता० १०६ ।
निक्कंप-निष्कम्पः निःसहः । बृ० प्र० १५२ आ ।
निक्कट्ठा–कोशकादाकृष्टा । विपा० ५६ । निरय० १८ ।
निक्कलं–निष्कलं–त्रासादिरत्नदोषरहितम् । भग० ६७२ ।
निक्कसाओ–निष्कषायः–कषायरहितः । आव० ७६३ ।
निक्कस्सई–निष्कास्यते । बृ० प्र० ५५ आ ।
निक्कारणवच्छल्लो–निष्कारणवत्सलः । आव० ४०१ ।
निक्कारणो–निष्कारणः–निरुपद्रवः । पिण्ड० १४६ ।
निक्कुडं–निष्कूटं अशठम् । आव० ७६७ ।
निक्कोरणं–अभ्यन्तरवर्त्तिनो गिरस्योत्किरणम् । बृ० प्र० १०७ आ ।
निक्खंत–निष्क्रान्तः प्रव्रज्यां गृहीतवान् । आचा० ४३ ।
निक्खमण–निष्क्रमणं सर्वाभ्यन्तरान्मण्डलाद्बहिर्गमनम् । सूर्य० २४३ । निष्क्रमणं–उद्वर्त्तनम् । आचा० ६६ ।
निक्खममाणे–निष्क्रामन् । सूर्य० १२ ।
निक्खमे–निष्क्रामेत् । दश० १८३ ।
निक्खम्म–निष्क्रम्य–द्रव्यभावगृहात्प्रव्रज्यां गृहीत्वा । दश० २६५ ।
निक्खित्त–निक्षिप्तं पाकस्थालीस्थम् । प्रश्न० १०६ । निक्षिप्तं-सचित्तस्योपरिस्थापितं,तृतीय एषणादोषः । पिण्ड० १४७ । संयमिताः । आचा० २३३ । व्यवस्थापितम् । आचा० ३४६ । विमुक्तम् । ज्ञाता० ३४ । यस्तु परतरोऽन्यतरको वा यावत् वैयावृत्त्यं करोति, तावत्तयोः प्रायश्चित्तं निक्षिप्तं क्रियते इति तत् । व्य० प्र० ६६ अ । निक्षिप्तं–अनुद्वृत्तम् । ठाणा० २६८ ।
निक्खित्तदंडा–निक्षिप्तदण्डाः–निश्चयेन क्षिप्ताः निक्षिप्तः–परित्यक्तः कायमनोवाङ्मयः प्राण्युपघातकारि दण्डो यैस्ते । आचा० १८६ । निक्षिप्ताः–संयमिताः मनोवाक्कायरूपाः प्राण्युपमर्दकारित्वाद्दण्डा इव दण्डा यैस्ते निक्षिप्तदण्डाः । आचा० २३३ ।
निक्खित्तपुव्वा–निक्षिप्तपूर्वा पूर्वमेव अस्माभिरात्मकृते निष्पादिता । आचा० ३६६ ।
निक्खित्तसत्थ–ऐरवते त्रयोदशमतीर्थकृत् । सम० १५३ ।
निक्खिवणं–निक्षेपणं–स्थापनम् । आव० ६१४ ।
निक्खिवित्ता–निक्षिप्य प्रत्युपेक्षणापूर्वकं बद्धा । उत्त० ५४४ ।
निक्खुड–निष्कुटः गम्भीरप्रदेशाः । जं० प्र० ३६६ ।
निक्खेव–निक्षेपः । आव० २८ । निक्षेपण–शास्त्रादेर्नामस्थापनादिभेदैर्व्यसनं–व्यवस्थापनं निक्षेपः । निक्षिप्यते नामादिभेदैर्व्यवस्थाप्यतेऽनेनास्मिन्नस्माद्वेति वा निक्षेपः । अनु० ४५ । निक्षेपः–न्यासः । ओघ० २६४ । निक्षेपणं निक्षेप्यते अनेनास्मिन्नस्मादिति वा निक्षेपः–उपक्रमानीतव्याचिख्यासितशास्त्रस्य नामादिभिर्न्यसनं न्यासः स्थापना । जं० प्र० ५ । निगमनम् । भग० ८१२ । नामादिन्यासः । आव० २४ । निक्षेपः–आवश्यकादेर्नामादिभेदनिरूपणम्, न्यासः, यत्तदोर्नित्याभिसम्बन्धात्तत्र वस्तुनि स निक्षेपः । अनु० १० । निक्षेपः न्यासः । नंदो० १५६ । निक्षेपणं शास्त्रादेर्नामस्थापनादिभेदैर्न्यसनं व्यवस्थापनं निक्षेपः । विशे० ४३० । निक्षेपः मोक्षणः । ओघ० १६६ । निक्षेपः न्यासः । आव० ४२१ । नियतं निश्चितं वा नामादिसंभवत्यक्षरचनात्मकं क्षेपणं न्यसनं निक्षेपः । उत्त० १० । निक्षेपः निगमनम् । विपा० ५५ । निक्षेपः न्यासकः । प्रश्न० ३६ । निक्षेपः–निक्षेपणमनेनास्मादस्मिन्निति वा निक्षेपः । आचा० ३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निक्खेवओ-निगमनम् । निरय० २३ । निक्षेपकः-यत् पुनः प्रथमं स्वार्थं निक्षिप्य पश्चात् साधूनामनुज्ञायते स । बृ० प्र० १०२ ।

निक्खेवणिज्जुत्ताणुगम-निक्षेपनिर्युक्त्यनुगमः निर्युक्त्यनुगमभेदः, निक्षेप एव सामान्यविशेषाभिधानयोरोघनिष्पन्ननामनिष्पन्नाभ्यां निक्षेपाभ्यामनुगतः सूत्रापेक्षया वक्ष्यमाणलक्षणाश्च । आचा० ३ ।

निक्खेवनिज्जुत्ती-निक्षेपनिर्युक्तिः नामस्थापनादिभेदभिन्नः तस्य तद्विषया वा निर्युक्तिः निक्षेपनिर्युक्तिः । अनु० २५८ । निक्षेपनिर्युक्तिः । ठाणा० ६ ।

निक्खेप्तव्यः-कर्तव्यः । आचा० ११५ ।

निग(य)च्छइ-विशिष्टोदयावस्थं जीवस्तदासादयति, विपाकावस्थं करोति । भग० ६३ ।

निगडं-लोहमयम् । प्रश्न० ५६ । आचा० १६५ ।

निगम-निगमः प्रभूततरवणिग्वर्गावासः । जीवा० ४० । निगमः वणिग्निवासः । उत्त० १०७ । वणिग्जनाधिष्ठितः । ज्ञाता० १४० । निगमः-प्रभूतवणिग्वर्गावासः । जीवा० २७६ । प्रभूततरवणिग्वर्गावासः । राज० ११४ । वाणिजकप्रायः सन्निवेशः । ओघ० ६६ । निगमः-पांशुप्राकारनिबद्धं क्षुल्लकप्राकारवेष्टितम् । व्य० प्र० १६८ अ । निगमयन्ति तस्मिन्ननेकविधभाण्डानीति निगमः प्रभूततरबणिजां निवासः । उत्त० ६०५ । वणिसंघाओ-वणिक्सङ्घातः । आव० ६६३ । निगमः स्थानविशेषः । दश० ६७ । निगमः कारणिकः वणिग् वा । भग० ३१६ । निगमः-वणिग्जनप्रधानं स्थानम् । भग० ३६ ।

निगमरूव-निगमरूपम् । भग० १६३ ।

निगमा-निर्गमाः-पूर्वेभ्यः उत्तरेषामाधिक्यानि । सम० ११४ । पौरवणिजः । बृ० तृ० ६ आ । निगमाः-लोकार्थनिबोधाः । विशे० ८६६ । निगमाः । भग० ४६४ । निगमाः-प्रभूतवणिग्वर्गावासाः । जं० प्र० १२१ ।

निगमाति-वणिग्निवासाः । ठाणा० ८६ ।

निगरणं-निकरणं-नियतो देशकालादिः । भग० ६५ ।

निगरिय-निगरितं सारीकृतम् । जीवा० २७० । औप० २० । सर्वथा शोधितम् । प्रश्न० ८० ।

निगामसाइ-निकामशायी-सूत्रार्थवेलामप्युल्लङ्घ्य शयानः । दश० १६० ।

निगामसिज्जा-निकामशय्या-प्रतिदिवसं प्रकामशय्यैव । आव० ५७४ ।

निगिज्ज-निगृह्य यतनया । व्य० द्वि० १४७ अ

निगिण्हाति-निराश्रवो भवति । उत्त० ५६६ ।

निगिण्हामि-निगृह्णामि निरुणद्मि । उत्त० ५०७ । आव० ३२० ।

निगुंडिउं-जानुभ्यामुपविश्य । आव० ४३४ ।

निगुरुंबो-निकुरुम्बः समूहरूपः । प्रश्न० ८२ ।

निगृहीतः-दण्डितः । नंदी० १५२ ।

निगृह्य-निग्रहं वचनेन कारयित्वा । ठाणा० ३२६ ।

निगोदा-अनन्तकायिकजीवशरीराणि । भग० ८६० ।

निगोयजीवा-साधारणनामकर्मोदयवर्त्तिनो जीवाः । भग० ८६० ।

निग्गंथ-नैर्ग्रन्थ्य-सामान्यतः 'यथा यूयं वदथे'ति प्रवचनम् । भग० १२१ । नैर्ग्रन्थ्यं-आर्हतम् । आव० ३२६ ।

निग्गंथा-निर्ग्रन्थाः साधवः । ज्ञाता० ५१ । निर्ग्रन्थः पुलाकादिपञ्चप्रकाराः । व्य० द्वि० ४०२ आ ।

निग्गओ-निर्गतः-निष्क्रान्तः । आव० १३७ ।

निग्गच्छइ-निर्गच्छति निश्चयेन गच्छति विशिष्टोदयापन्नमासादयति । प्रज्ञा० ४५५ । विपाकावस्थं करोति । भग० ६३ ।

निग्गच्छे-निर्गच्छति शुष्यति । व्य० प्र० १०३ आ ।

निग्गम-निर्गमः । सूत्र० ३०६ । निर्गमनं निर्गमः-सामायिकं निर्गतमित्येवंरूपः । अनु० २५८ । निर्गमः-निर्गमकथा राज्ञो निर्गमनसम्बन्धी विचारः राजकथायाः प्रथमो भेदः । आव० ५८१ ।

निग्गमगो-निर्गमकः प्रस्थानः । बृ० द्वि० १६० अ ।

निग्गमणं-निर्गमनं सर्वाभ्यन्तराम्मण्डलाद्बहिर्गमनम् । जीवा० ३४५ । निर्ग्रमनं दक्षिणायनम् । भग० १४७ । निस्सरणमार्गः । ज्ञाता० ८१ ।

निग्गया-निर्गताः ये तपोऽर्हं प्रायश्चित्तमतिक्रान्ताच्छेदादिप्राप्ताः । व्य० प्र० ६७ आ ।

निग्गह-निग्रहः । आव० ४१६ । निग्रहः-आवश्यकस्य चतुर्थो पर्यायः । विशे० ४१५ । निश्चयः । नि० चू०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्र० ७० आ । निग्रहः-अनाचारप्रवृत्तेर्निषेधनम् । निरय० २ । । राज० ११६ । ज्ञाता० ७ । इष्टेतरेषु शब्दादिषु रागद्वेषाकरणं निग्रहः । आव० ६६० । निग्रहः-छलादिना पराजयस्थानम् , दोषविशेषः । ठाणा० ४६२ ।

निग्गहण-निगृह्णातीति निग्रहणः । दश० ११६ ।

निग्गहिओ-निगृहीतः निर्जितः । विशे० १००१ । निगृहीतः । आव० ३२१ ।

निग्गहियं-निगृहीतं नियमितम् । प्रश्न० १२४ ।

निग्गीलं-क्षरितं (तं०)

निग्गुण-निर्गुणः गुणव्रतरहितः । ज्ञाता० २३८ ।

निग्गुणा-गुणव्रतैः क्षमादिभिर्वा रहिताः । भग० ५८२ । निर्गुणाः-उत्तरगुणविकलाः । भग० ३०६ ।

निग्गोहपरिमंडलसंठाणनाम-यदुदयात्तु न्यग्रोधपरिमण्डलं संस्थानं तन्न्यग्रोधपरिमण्डलसंस्थाननाम । प्रज्ञा० ४७२ ।

निग्गोहमंडल-नाभेरुपरि न्यग्रोधवत् मण्डलं-आद्यसंस्थानलक्षणयुक्तत्वेन विशिष्टाकारं न्यग्रोधमण्डलं, न्यग्रोधो-वटवृक्षः, यथा चायमुपरि वृत्ताकारतादिगुणोपेतत्वेन विशिष्टाकारो भवत्यधस्तु न तथा । अनु० १०१ ।

निग्गोहवणे-न्यग्रोधवनं-वटवनम् । भग० ३६ ।

निग्घंटु-निर्घण्टुः नामकोशः । औप० ६३ । भग० ११२ ।

निग्घसो-निकषः कषपट्टे रेखालक्षणः । औप० ८३ ।

निग्घाए-निर्घातः वैक्रियाशनिप्रपातः । जीवा० २६ । निर्घातः-साभ्रे निरभ्रे वा गगने व्यन्तरकृतो महागर्जितसमो ध्वनिः । आव० ७३६ । साभ्रे निरभ्रे वा नभसि व्यंतरकृतो महागर्जितसमो ध्वनिर्निघातः । व्य०द्वि० २४१ आ । साभ्रे निरभ्रे वा व्यन्तरकृतो महागर्जितसमो ध्वनिर्निघातः । नि० चू० तृ० ७० आ ।

निग्घाओ-निर्घातः विद्युत्प्रपातः । जीवा० २८३ ।

निग्घात-निर्घातः साभ्रे निरभ्रे वा गगने व्यन्तरकृतो महागर्जितध्वनिः । ठाणा० ४७६ ।

निग्घाय-निर्घातः । दश० ६६ ।

निग्घिणं-निर्घृणं निर्गतदयम् । आव० ५८८ ।

निग्घिणमणा-निर्घृणं निर्गतदयं मनः चित्तमन्तःकरणं यस्य स निर्घृणमनाः निर्दयान्तःकरणः । आव० ५८८ ।

निग्घुट्ठं-निर्घुष्टं निर्घोषरूपम् । प्रश्न० १६० ।

निग्घूहे-निर्गूहन्ति निष्काशयन्ति । व्य० द्वि० ५४ आ ।

निग्घोलियं-निर्घोलितं रिक्तीकृतम् । बृ० द्वि० १६६ अ ।

निग्घोस-निर्घोषः ध्वनिः । आचा० ३५० । निर्घोषः महाध्वनिः । जं० प्र० १६२ । निर्घोषः महान् ध्वानः । जीवा० २४५ । निर्घोषः नादः । प्रश्न० १५६ ।

निघस-कणपट्टके रेखारूपः । जं०प्र० १५ । रेखा । ज्ञाता० ६ । निघर्षः निकषो वा कषपट्टके रेखारूपः । जं० प्र० ३४ । निकषः कषपट्टके रेखारूपः, वर्णः । सूर्य० ४ । निघर्षः घर्षणम् । जीवा० १६१ ।

निचये-निविष्टा निचये कर्म्मनिचये तदुपादाने वा सावद्यारम्भनिचये निविष्टाः-अध्युपपन्नाः । आचा० १८४ ।

निचिओ-निचितः निबिडः । जीवा० २२७ । प्रश्न० १५२ ।

निचित-निबिडीकृतम् । अनु० १७७ ।

निचिय-निचितः निबिडतरचयमापन्नः । जीवा० १२१ । निचितः-अविकीर्णः । प्रश्न० ८२ ।

निच्च-नित्यः परिणामानित्यतायामपि सत्यां स्वरूपाच्यवनात् । सूत्र० ३७० । नित्यं-सर्वकालं, सामायिकप्रतिपत्तेरारभ्यामरणान्तम् । दश० २८३ । नित्यं-अपायाभावेन तदन्यगुणवृद्धिसंभवादप्रतिपाति । दश० १६६ । अप्रच्युतानुत्पन्नस्थिरैकस्वभावं नित्यम् । आचा० २२ । नेत्रं भगम् । बृ० प्र० ३१२ अ ।

निच्चनियं-नित्यं निवसनं नित्योपभोग्यम् । बृ० प्र० १०४ अ ।

निच्चमंडिया-नित्यमण्डिता सदाभूषणभूषितत्वात्, जम्बूसुदर्शनाया द्वादशं नाम । जीवा० ३०० ।

निच्चराहू-यस्तु नित्यराहुः-तथाजगत्स्वभाव्याच्चन्द्रेण सह सर्वकालमविरहितं चतुरङ्गुलैरप्राप्तं सत् चन्द्रविमानस्याधस्ताच्चरति सः । जीवा० ३३६ ।

निच्चसहाये-नित्यसहाये अवस्थितसहाये यः सकलदिवसमाचार्येण सह हिंडते । व्य० द्वि० १८३ अ ।

निच्चसिद्धजत्तो-नित्यसिद्धयात्रः-स्थलजलचारिपथेषु सदैवाविसंवादितयात्रः । आव० ४१४ ।

निच्चाउत्त-नित्यायुक्तः सततोपयुक्तः । उत्त० ४५६ ।

निच्चालोए-नित्यालोकः, अष्टाशीतौ महाग्रहे द्वाषष्टितमः ज० प्र० ५३५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निच्चियपरिवेसिया–नैत्यिकपरिवेषिका प्रतिदिननियुक्त-भक्तदात्री । उत्त० २८६ ।

निच्चुज्जोए–नित्योद्योतः अष्टाशीतौ महाग्रहे पञ्चषष्टितमः। ठाणा० ७६ । अष्टाशीतौ महाग्रहे त्रयषष्टितमः । जं०प्र० ५३५ ।

निच्चुव्विग्गो–नित्योद्विग्नः सदा अप्रशान्तः । दश० १८८ ।

निच्चेट्ठ–निश्चेष्टं–व्यापाररहितम् । ज्ञाता० ८५, १६८ ।

निच्चोइयं– । ओघ० ६६ ।

निच्छओ–निश्चयः तत्त्वनिर्णयः, विहितानुष्ठानेषु वा अवश्यं-करणाभ्युपगमः । औप० ३३ ।

निच्छय–निश्चयः अवश्यंकरणाभ्युपगमः, तत्त्वनिर्णयो वा । भग० १३६ । निश्चयः वस्तुनिर्णयः । विपा० ४० । निश्चयः एकान्तम् । बृ० प्र० २२० अ । निश्चयः तत्त्वानां निर्णयः विहितानुष्ठानेष्ववश्यमभ्युपगमो वा । राज० ११६ । ज्ञाता० ७ ।

निच्छयओ–निश्चयतः परमार्थतः । ओघ० २२२ ।

निच्छयकहा–अववादो रिजुसुत्तादिएहिं सुद्धणएहिं जं कहिज्जति सा । नि० चू० प्र० २४० अ ।

निच्छिअ–निराधिक्ये चयनं चयः-पिण्डीभवनं अधिकश्चयो निश्चयः सामान्यम् । अनु० २६५ । सर्वाधिक्यम् । आव० ६७ ।

निच्छिड्डपोतो–निश्छिद्रपोतः । आव० ३८७ ।

निच्छिण्णं–निच्छिन्नं पृथक्कृतम् । विशे० १६१ ।

निच्छिण्णकारण–निस्तीर्णकारणम् । आव० ६२८ ।

निच्छिण्णा–निस्तीर्णा पारगता । प्रज्ञा० ६११ ।

निच्छिन्नं–निस्तीर्णं लङ्घितम् । प्रज्ञा० ११३ ।

निच्छिय–निः आधिक्येन चयनं चयः अधिकश्चयः निश्चयः सामान्यम् । आव० २८३ ।

निच्छुड्डा–निष्काशिता । दश० ६७ ।

निच्छुब्भए–निष्कास्यते परिह्रियते । विशे० ६३४ ।

निच्छुभइ–निःक्षिपति बहिःक्षिपति । भग० ८६ ।

निच्छुभउ–निष्कास्यताम् । आव० ३५४ ।

निच्छुभण–गुम्मादेर्निर्वासनं निष्कायेत् । बृ० द्वि० ४४ अ । निष्काशनम् । पिण्ड० १४० ।

निच्छुभति–विक्षिपति आत्मविश्लिष्टान् करोति । प्रज्ञा० ५६१ ।

निच्छुभवो–निच्छोभः सार्थान्निष्काशनम् । पिण्ड० ११२ ।

निच्छुहणा–निःसरास्माद् गेहादित्यादि । ज्ञाता० २०० ।

निच्छूढं–निष्ठीवनं निष्ठूतम् । विशे० २७४ । निष्ठ्यूतम् । आव० ३६१ । निर्यूढं हृब्धम् । व्य० द्वि० ४०० आ ।

निच्छोडणा–त्यजास्मदीयांस्तीर्थकरालङ्कारानित्यादि । भग० ६८३ । त्यजास्मदीयं वस्त्रादीत्यादि । ज्ञाता० २००।

निच्छोडियं–निच्छोटितं अङ्गुल्यादिना निरवयवीकृतम् । पिण्ड० ८६ ।

निच्छोडेइ–प्राप्तमर्थं त्याजयति । भग० ६८३ ।

निज–नैयकः । आव० १६७ ।

निजका–मातुलादयः । भग० ४८३ ।

निजराजदौवारिका– । नंदी० ७३ ।

निजुज्झं–अंगमोटनादियुद्धम् ।

निजोग–नियोगः व्यापारः । व्य० प्र० १५३ आ ।

निजोगो–अहिगो जोगो । बृ० प्र० ३३ आ। निर्योगः । आव० ६६२ ।

निज्जंत–निर्यन् अधिकं गच्छन् । उत्त० ४६० ।

निज्जंती–नीयमाना । आव० ३६२ ।

निज्जप्पि–निर्याप्यं यापनाऽकारकं निर्बलमिति । प्रश्न० १६३ ।

निज्जरणं–निर्जरणं तपः । औप० ४८ । निर्जरणं–जीव-प्रदेशेभ्यः कर्मप्रदेशानां शातनम् । भग० ५३ ।

निज्जरा–निर्जराः निर्जीर्णाः । प्रज्ञा० ५६६ । निर्जरा-विपाकात् तपसा वा कर्म्मणां देशतः क्षपणा । ठाणा० ४४६ । कर्मपुद्गलानामनुभूय २ अकर्मत्वापादनम्, आत्म-प्रदेशैः संश्लिष्टानां ज्ञानावरणीयादिकर्मपुद्गलानामनुभूय २ शातनमितिभावः । प्रज्ञा० २६२ । निर्ज्जराविपाकात् कर्मपुद्गलशाटनलक्षणा । सूत्र० २७६ । अतिपुराणो-भवनम् । भग० १६ । निर्जराफलविशेषः । ओघ० ३७ । निर्जरा पुद्गलानां निरनुभावीकृतानामात्मप्रदेशेभ्यः शाट-नम् । भग० २८ ।

निज्जरे–निर्जरा-कर्मणोऽकर्मत्वभवनमिति देशनिर्जरा, सर्व-निर्जरायाश्चतुर्विंशतिदण्डकेऽसम्भवात् । ठाणा० १६५ ।

निज्जरेति–निर्ज्जरयति-त्यजत्याहारितान् वेदितान् आहार-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुद्गलान् देशेनापानादिना सर्वेण सर्वशरीरेणैव प्रस्वेदवदिति । ठाणा० १२ ।

निज्जवए–यस्तथा प्रायश्चित्तं दत्ते यथा परो निर्वोढुमलं भवतीति । ठाणा० ४८६ । निर्यापयति–तथा करोति यथा गुर्वपि प्रायश्चित्तं शिष्यो निर्वाहयतीति निर्यापक इति । ठाणा० ४२४ । निर्यापकः–असमर्थस्य प्रायश्चित्तिनः प्रायश्चित्तस्य खण्डशः करणेन निर्वाहकः । भग० ६२० ।

निज्जवणा–निर्यापना प्ररूपणाविशेषः । आव० ३८२ ।

निज्जविए–निर्यापित–अवश्यं गंतव्यम् । व्य० द्वि० ३६५ अ ।

निज्जाए–निर्याति यति समापयति । ज्ञाता० ६८ ।

निज्जाण–निर्याणः निर्गमनम् । जं० प्र० ४०३ । निरुपमं यानं निर्यानं–ईषत्प्राग्भाराख्यं मोक्षपदम् । आव० ७६६ । निरुपमं यानं निर्याणं–सिद्धक्षेत्रम् । ज्ञाता० ५१ । निर्यानं पुरस्य निर्गमनमार्गः । सूर्य० ७१ । निर्यानम् । आव० ३६६ । निर्यानं अन्तक्रिया । आचा० १० । निर्यानं–नगरान्निर्गमः । ठाणा० १७३ । निर्याणं निर्गमः । ठाणा० २११ ।

निज्जाणकहा–निर्याणं निर्गमः तत्कथा निर्याणकथा । ठाणा० २१० ।

निज्जाणमग्गे–सिद्धक्षेत्रगमनोपायः । भग० ४७१ ।

निज्जाणसंठिया–निर्याणसंस्थिता-निर्याणं-पुरस्य निर्गमनमार्गः तस्येव संस्थितं-संस्थानं यस्याः सा । सूर्य० ७१ ।

निज्जामओ–निर्यापकः । आव० ३०२ ।

निज्जामगट्ठाणं– । नि० चू० प्र० ४७ अ ।

निज्जामय–निर्यामकः । आव० ३८३ ।

निज्जायकारणो–निश्चयेन यातं अपगतं कारणं–प्रयोजनं यस्मिन्नसौ । आव० ८४४ ।

निज्जावग–निर्यापयति–आराधयतीति निर्यामकः आराधकः । ओघ० २० ।

निज्जास–निःशेषेण रस्यत इति निर्यासः, मकरन्दः । दश० ६४ ।

निज्जाससारो–निर्याससारः–पत्रादिभेदभिन्ननिर्याससारः । जीवा० २६५ ।

निज्जिण्णाइं–क्षीणरसीकृतानि । भग० ५६६ ।

निज्जिन्न–निर्जीर्णाः कात्स्न्र्येनानुसमयमशेषतद्विपाकहानियुक्ताः । भग० २४ ।

निज्जिय–निर्जितः स्वसौन्दर्यातिशयेन परिभूतः । ओप० १२ ।

निज्जिरिया–निर्जीर्णा अनुभूतस्वरूपत्वेन जीवप्रदेशेभ्यः परिशाटिता । भग० १८४ ।

निज्जीण्णे–निर्जीर्णं क्षीणम् । भग० १६ ।

निज्जोवं–निर्जीवकरणं हेमादिधातुमारणं, रसेन्द्रस्य मूर्च्छाप्रापणं वा । जं० प्र० १३६ ।

निज्जुत्ता–नितरां युक्ताः–सूत्रेण सह लोलीभावेन सम्बन्धा निर्युक्ताः अर्थाः । अनु० २५८ ।

निज्जुत्ताणुगमो–निर्युक्त्यनुगमः अनुगमभेदः । आचा० ३ ।

निज्जुत्ति–निश्चयेनार्थप्रतिपादका युक्तिः निर्युक्तिः । आचा० ४ । नितरां युक्ताः–सूत्रेण सह लोलीभावेन सम्बद्धा निर्युक्ता–अर्थास्तेषां युक्तिः–स्फुटरूपतापादनं एकस्य युक्तशब्दस्य लोपात् निर्युक्तिः–नामस्थापनादिप्रकारैः सूत्रविभजनेत्यर्थः । अनु० २५८ । निर्युक्तिः निर्युक्तानामेव सूत्रार्थानां युक्तिः परिपाट्या योजनं निर्युक्तयुक्तिरिति वाच्ये युक्तशब्दलोपान्निर्युक्तिः विप्रकीर्णार्थयोजना । दश० २ ।

निज्जुत्तिअणुगम–निर्युक्त्यनुगमः निर्युक्तिव्याख्यानम् । अनु० २५८ ।

निज्जुत्तिसंखा–निर्युक्तिसङ्ख्या । अनु० २३३ ।

निज्जुत्ती–निर्युक्तिः निः–आधिक्ये योजनं युक्तिः, अधिका योजना नियता निश्चिता वा योजना । सूत्र० ४ । निर्युक्तिः निश्चयेनाधिक्येन वा युक्तिः निर्युक्तिः–सम्यगर्थप्रकटनम् । सूत्र० २ । निर्युक्तिः–नियुक्तानां वा सूत्रेष्वेव परस्परसम्बद्धानामर्थानामाविर्भावनं युक्तशब्दलोपान्निर्युक्तिः । सूत्र० २ । निर्युक्तिः निश्चयेनार्थघटना । आचा० ४२ । निः–आधिक्ये योजनं युक्तिः, सूत्रार्थयोर्योगो नित्यव्यवस्थित एवास्ते वाच्यवाचकतयेत्यर्थः अधिका योजना निर्युक्तिः, नियता निश्चिता वा योजना । ओघ० ४ । सूत्रोपात्ता अर्थाः स्वरूपेण सम्बद्धा अपि शिष्यान्प्रति निर्युज्यन्ते निश्चितं सम्बद्धा उपदिश्य व्याख्यायन्ते यकया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सा । पिण्ड० १ । निश्चितं निरति-निश्चिताऽधिका वा युक्तिरस्यामिति निर्युक्तिः नामनिष्पन्ननिक्षेपनिर्युक्तिः । उत्त० २६२ । निर्युक्तिः पञ्चकल्पः । बृ० तृ० २६४ आ । निश्चयेन युक्ताः-सम्बद्धा निर्युक्ताः तेनेयं निर्युक्तिः । विशे० ४९८ ।

निज्जुत्तीओ-निर्युक्तयः निर्युक्तानां सूत्रेऽभिधेयतया व्यवस्थापितानामर्थानां युक्तिः-घटना विशिष्टा योजना निर्युक्तयुक्तः । सम० १ ८ ।

निज्जुहणा-निर्द्धारणम् । ओघ १९२ ।

निज्जुहियं-निर्यूह्यन्ते-आलापनादिभिर्बहिष्क्रियन्ते । बृ० तृ० ९५ अ ।

निज्जूगं-निर्यूहकं-द्वारोपरितनपार्श्वविनिर्गतदारु । प्रश्न० ८।

निज्जूढ-निर्व्यूढम् महतः संक्षेपादुद्धृतम् । भग० १०० । निर्घाटितः । ज्ञाता० ६८ । अमनोज्ञाः । ओघ० १८१ । निर्यूढं-पूर्वगतादुद्धृत्य विरचितम् । दश० ९ । महतो ग्रन्थात्सुखावबोधाय सङ्क्षेपनिमित्तमनुग्रहपरगुरुभिरुद्धृतम् । भग० १०० । निर्व्यूढः उज्झितप्रायः । बृ० प्र० २०६ आ ।

निज्जूहंति-निर्यूथयन्ति-पूर्वलक्षणश्रुतपर्याययूथान्निर्धारयन्ति उद्धरन्ति । भग० ६५९ ।

निज्जूह-निर्यूहः गृहैकदेशविशेषः । जीवा० २६९ । निर्यूहः गवाक्षः । व्य० प्र० १३३ अ ।

निज्जूहणं-निर्व्यूहनं निष्काशनम् । बृ० तृ० १२ अ ।

निज्जूहणा-बहिष्करणम् । बृ० तृ० ९५ अ । अन्यत्र शोधिं कुर्वित्युक्तिः । बृ० तृ० १५६ आ ।

निज्जूहिऊण-निर्यूह्य-अतिवाह्य । व्य० द्वि० ३५९ आ ।

निज्जोग-निर्योगः-उपकरणम् । पिण्ड० १२ । परिकरः । ज्ञाता० ५७ । निर्योगः-परिकरः । भग० ४७९ । निर्योग उपकरणम् । ओघ० १३१ । निर्योगः-उपकरणमर्थान्नाट्योपकरणम् । राज० ४९ ।

निज्झर-निझरः-उदकस्य श्रवणम् । भग० २३८ । स्यन्दनम् । ज्ञाता० ६७ ।

निज्झरणं-निझरणं दानम् । व्य० द्वि० २०० आ ।

निज्झरा-उज्झरा एव सदावस्थायिनो निझराः । प्रज्ञा० ७२ ।

निज्झाइंत-निर्ध्यातः । आव० ४८७ ।

निज्झाइज्जा-निध्यापयेत् प्रलोकयेत् प्रदर्शयेत् । आचा० ३४१ ।

निज्झाइत्ता-निश्चयेन ध्यात्वा चिन्तयित्वा निर्द्धार्य। आचा० ७१ । निर्ध्याता-तदेकाग्रचित्ततया द्रष्टा । सम० १६ । निर्ध्याता प्रबन्धेन निरीक्षिताः । उत्त० ४२५ । निर्ध्याता-दर्शनानन्तरमतिशयेन चिन्तयिता । उत्त० ४२५ ।

निज्झोसइत्ता-निर्जोषयिता-क्षपकः क्षपयिष्यति वा तृजन्तमेतल्लुडन्तं वा । आचा० १६८ ।

निट्ठवणओ-निष्ठापकः समाप्तिदिवसः । आव० ८४२ ।

निट्ठवेइ-मारयति । बृ० द्वि० ४४ अ ।

निट्ठाइ-निष्ठां याति प्रच्यवतीत्यर्थः । आव० ३३ ।

निट्ठाणकहा-एतावत् द्रव्यं तत्रोपयुज्यत इति निष्ठानकथा । ठाणा० २०९ ।

निट्ठाणगं-निष्ठानकं-प्रकृष्टमूल्यनिष्पादितम् । प्रश्न० १६३ ।

निट्ठाभासो-निष्ठाभाषी-सावधारणवासी । आचा० ३८६ ।

निट्ठाविअं-निष्ठापितम् । आव० १५१ ।

निट्ठिए-निष्ठां गतः, कृतस्वकार्यो जातः । ज्ञाता० ७० । निष्ठितः-निरवयवीकृतः । भग० ६७६ ।

निट्ठिय-निष्ठितः-निष्पन्नः । उत्त० २९७ । निस्थितं-कृतनिष्ठां प्राप्तं निस्थितम् । बृ० द्वि० २०० आ । अपनेयद्रव्यापनयमाश्रित्य निष्ठांगतः । भग० २७७ ।

निट्ठियट्ठकरणिज्जे-निष्ठितार्थानामिव करणीयम् । समाप्तकृत्यः । भग० १११ ।

निट्ठियट्ठ-निष्ठितार्थः विषयसुखनिष्पिपासः । आचा० २५४ । निष्ठितार्थः समाप्तप्रयोजनः । भग० १११ । निष्ठितार्थः कृतकृत्यत्वात् । प्रज्ञा० ६१० ।

निट्ठियट्ठी-निष्ठितार्थः निष्ठितो मोक्षस्तेनार्थो यदि वा निष्ठितः-परिसमाप्तः अर्थः-प्रयोजनं यस्य स निष्ठितार्थः । आचा० २२९ ।

निट्ठियाइं कयाइं-निःस्थितानि कृतानि निस्सत्ताकानि विहितानि । भग० २५१ ।

निट्ठुर-निष्ठुरं निर्दयम् । भग० २३१ । निष्ठुरं-मार्दवाननुगतम् । ओप० ४२ । निष्ठुरं कर्कशशब्दम् । आव० ६१७ । निष्ठुरा-हक्काप्रधाना । आचा० ३८८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निट्ठुहसि-निष्ठीवसि । तं० ।

निडाल-ललाटम् । उपा० २१ । ललाटं-अलकम् । जीवा० २७३ । ललाटं-भालम् । प्रश्न० ८२ । आव० ४२० ।

निणक्खू-निस्सारयति । आचा० ३६१ ।

निण्ण-निम्नं-गम्भीरस्थानम् । जं० प्र० २१६ ।

निण्णग-म्लेच्छविशेषः । प्रज्ञा० ५५ ।

निण्हइया-लिपिविशेषः । प्रज्ञा० ५६ ।

निण्हव-निह्नवः-गोपनम् । दश० १०५ । निह्नवः-एकान्तापलापः । दश० २३३ । निह्नवः निह्नुते आगमाभिहितमर्थमतिक्लिष्टकर्मोदयात् कुयुक्तिभिरपनयतीति निह्नवः जमालिप्रभृतिः । उत्त० १८ ।

निण्हवणं-अदृश्यताकारकम् । विपा० ५४ ।

नितम्ब- । आचा० २२६ ।

नित्त-नयत्यर्थं देशं- अर्थक्रियासमर्थमर्थमाविर्भावयन्तीति नेत्राणि चक्षुरादीनीन्द्रियाणि । आचा० १६३ । नेत्रशब्देन नेत्रसंस्कारकमिह समीराञ्जनादि । उत्त० ४१७ ।

नित्तलं-निस्तलं अतिवृत्तम् । भग० ६७२ ।

नित्तुप्पा-निस्तृप्पा अचोप्पडा अवग्घारिता वा । बृ० प्र० २६७ आ ।

नित्थका- । बृ० प्र० ५ अ ।

नित्थक्का-निर्लज्जाः । बृ० द्वि० १५ अ ।

नित्थरइ-निस्तरति । आव० २०७ ।

नित्थरिस्सामि-निस्तरिष्यामि । आव० ७६३ ।

नित्थिण्णो-निस्तीर्णः । आव० १६२, २२१ ।

नित्थः-नियतः । आव० ७६८ ।

निदंसिज्जंति-निदर्श्यन्ते हेतुदृष्टान्तोपन्यासेन । सम० १०६ । निदर्श्यन्ते हेतुदृष्टान्तोपदर्शनेन । नंदी० २१२ ।

निदंसेइ-कथञ्चिदगृह्णतोऽनुकम्पया निश्चयेन पुनः पुनर्दर्शयति निदर्शयति । ठाणा० ५०२ । कथञ्चिदगृह्णतोऽनुकम्पया निश्चयेन पुनः पुनर्दर्शयति । भग० ७११ ।

निदड्ढे-निर्दग्धः, रत्नप्रभायां चतुर्थो नरकावासः । ठाणा० ३६५ ।

निदरिसण-निश्चयेन दर्श्यतेऽनेन दार्ष्टान्तिक एवार्थ इति निदर्शनम् । दश० ३४ ।

निदा-नितरां निश्चितं वा सम्यग् दीयते चित्तमस्यामिति निदा, चित्तवती सम्यग्विवेकवती वा । प्रज्ञा० ५५७ । नियतं दानं शुद्धिर्जीवस्य 'दैप् शोधने' इतिवचनान्निदा-ज्ञानमाभोगः, आभोगवती । भग० ७६६ ।

निदाणं-निदानम् । आव० ३१० ।

निदानं-देवादिऋद्धीनां दर्शनश्रवणाभ्यामितो ब्रह्मचर्यादेरनुष्ठानान्ममैता भूयासुरित्यध्यवसायः । सम० ६ ।

निदाय-ककारस्य स्वार्थिकप्रत्ययत्वान्निदाम् । भग० ७६६ ।

निदाह-अधिको दाहः । आव० ७६८ । निदाघः एकादशमासः । जं० प्र० ४६० ।

निदेजत्वं-उच्चता । बृ० द्वि० २१६ अ ।

निद्दंसण-निदर्शनं दृष्टान्तः । दश० ४४ ।

निद्द-निद्रा आलस्यम् । जं० प्र० २३७ ।

निद्दओ-निर्दयः-निर्गतदयः, परानुकम्पाशून्यः । आव० ५६० ।

निद्दमुक्ख-निद्राया मोक्षः पूर्वनिरुद्धायामुत्कलना निद्रा मोक्षः-स्वाप इति । उत्त० ५३८ ।

निद्दहितुं-निर्दग्धुम् । आव० ८२६ ।

निद्दही-निर्दहति । पिण्ड १७६ ।

निद्दा-निद्रायणं तु निषण्णस्यैव स्वपनम् । बृ० द्वि० २०७ आ । निद्रासुखप्रबोधा स्वापावस्था नखच्छोटिकामात्रेणापि यत्र प्रबोधो भवति तद्विपाकवेद्या कर्मप्रकृतिरपि निद्रा । ठाणा० ४४७ । सुखप्रबोधा स्वापावस्था निद्रा । जीवा० १२३ । नियतं द्राति-कुत्सितत्वमविस्पष्टत्वं गच्छति चैतन्यं यस्यां स्वापावस्थायां सा निद्रा, निद्राणं निद्रा नखच्छोटिकामात्रेण यस्यां प्रबोध उपजायते सा स्वापवस्था निद्रा । प्रज्ञा० ४६७ । नियतं द्राति कुत्सितत्वमविस्पष्टत्वं गच्छति चैतन्यमनयेति ।

निद्दाइया-निद्राणा । आव० ५५६ ।

निद्दानिद्दा-निद्रातोऽतिशायिनी निद्रानिद्रा । प्रज्ञा०४६७। निद्रातिशायिनी निद्रा निद्रानिद्रा दुःखप्रबोधा स्वापावस्था । ठाणा० ४४७ ।

निद्दामत्तो-निद्रामत्तः-निद्राभिभूतः । आव० ७६१ ।

निद्दारितं-निर्दारितं-विस्फारितम् । प्रश्न० ४६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निद्दिट्ठ–निर्दिष्टः उक्तः । दश० १६१ ।

निद्दिट्ठा–निर्दिष्टा–उच्चारयिता । विशे० ६४७ ।

निद्देस–निर्देशनं निर्देशः–कर्मादिकारकशक्तिभिरनधिकस्य लिङ्गार्थमात्रस्य प्रतिदानं तत्र प्रथमा भवति । ठाणा० ४२८ । निर्देशः–उपन्यासः । बृ० अ० १८१ अ । वस्तुन एव विशेषाभिधानं–निर्देशनम् । विशे० ६३६ । आणा । दश० चू० १३८ । निर्देशः–प्रश्निते कार्ये नियतार्थमुत्तरम् । भग० १६८ । निर्देशः–उत्सर्गापवादाभ्यां प्रतिपादनम् । उत्त० ४४ । निर्देशः विशेषाभिधानम्, विशेषितश्च । आव० १०४ । निर्देशः गुरोर्निर्वचनं निर्देशः । उत्त० ७६ । कार्याणि प्रति प्रश्ने कृते यन्नियतार्थमुत्तरम् । ज्ञाता० १५६ । निर्देशनं निर्देशः विशेषाभिधानम् । दश० ७ । निर्देशः–गुरुणा पृष्टार्थनिशेषभाषणम् । उत्त० ७३ ।

निद्देसवत्ती–निर्देशवर्त्ती आज्ञाकारी । दश० २५० ।

निद्दोच्च–निर्दौत्यं निर्भयम् । व्य० द्वि० ६ अ । निर्दौत्यम् । आव० ७३८ ।

निद्दोस–निर्दोषः द्वात्रिंशत्सूत्रदोषरहितः । ठाणा० ३६७ । निर्दोषः–दोषमुक्तस्य प्रथमो गुणविशेषः । आव० ३७६ । निर्दोषं–हिंसादिदोषरहितम् । अनु० १४० । निर्दोषं द्वात्रिंशत्सूत्रदोषरहितम् । अनु० १३३ ।

निद्धंत–निर्ध्मातः नितरामग्निसंयोगः । जीवा० २६७ । निर्ध्मातं–भस्मीकृतम् । उत्त० ५२७ ।

निद्धंतमलपावगं–निर्ध्मातं भस्मीकृतं ततो निर्ध्मातमिव निर्ध्मातं मल इवात्मनो विशुद्धस्वरूपघातितया पापमेव पापकं येनासौ निर्ध्मातमलपापकः । उत्त० ५२७ ।

निद्धंधस–निःशूकः । ओघ० १५८ । निद्धन्धसः–अपगतसर्वथादयावासनाकः । पिण्ड० ६६ । निद्धन्धसः–प्रवचनोपघातनिरपेक्षः । आव० ५२६ । (देशीवचनं) नाधिकृतारंभविराध्यमानप्राण्यनुकंपापरः । व्य० प्र० ६ अ ।

निद्ध–स्निग्धं बहुस्नेहम् । पिण्ड० ७० । स्निग्धं–स्नेहावगाढम् । आव० ७२६ । स्निग्धं–मनोहरम् । जं० प्र० १०२ ।

निद्धघण–स्निग्धघनः । ज्ञाता० ६ ।

निद्धमणं–निर्धमनं निर्दग्धम् । प्रश्न० ८२ ।

निद्धमणठाण–निर्द्धमनस्थानं उपघसरस्थानम् । ओघ० १६२ ।

निद्धमणाई–निर्द्धमणादि नगरोदकोपघसरादि उपघातस्थानम् । ओघ० १६२ ।

निद्धम्मा–निर्द्धर्मः । ओघ० १५० ।

निद्धया–स्निग्धता अरुक्षता । ज्ञाता० १७० ।

निद्धाइऊण–निर्गत्य । उत्त० २१४ ।

निद्धाहिंति–निर्द्धाविष्यन्ति–निर्गमिष्यन्ति । भग० ३०६ ।

निद्धुणे–निर्धूय–प्रस्फोट्य । दश० २२४ ।

निद्धूयं–निर्धूतं अपनीतम् । जीवा० १८८ ।

निद्दायते–सकलक्षदादिदोषापगमतः सुखासिकाभावेन निद्रायते–पयलायेत । जीवा० १२३ ।

निधत्त–उद्वर्त्तनापवर्त्तनावर्जशेषकरणायोग्यत्वेन व्यवस्थापितम् । प्रज्ञा० ४०२ । आचा० २०६ । निधत्तं–इह च विश्लिष्टानां परस्परतः पुद्गलानां निचयं कृत्वा धारणं रूढिशब्दत्वेन निधत्तमुच्यते, उद्वर्त्तनापवर्त्तनव्यतिरिक्तकरणानामविषयत्वेन कर्मणोऽवस्थानमिति । भग० २५ ।

निधाग–निक्षेपः । अनु० ५२ ।

निधानं–निधिः निक्षेपः न्यासः विरचना प्रस्तारः स्थापना च । अनु० ५२ ।

निधान–चक्रवर्त्तिराज्योपयोगीद्रव्यम् । ठाणा० ४४६ ।

निधिपालः–अर्थार्जनपरो दृष्टान्तः । आव० २७७ ।

निनाए–निनादः शब्दः । भग० ३२३ । महाघोषः । भग० ४७६ ।

निनादः–शब्दितः । ओघ० ४८ ।

निन्दनं–पश्चात्तापः । ज्ञाता० २०६ ।

निन्दा–कुष्ठी त्वमसीत्यादि । ठाणा० २६ । आत्मसाक्षिका । ठाणा० १३७ । स्वप्रत्यक्षं जुगुप्सा । आव० ४८६ ।

निन्दितुं–अतिचारान् स्वसमक्षं जुगुप्सितुम् । ठाणा० ५७ ।

निन्न–निम्नः नीचभूभागः । उत्त० ३६१ । निम्नं–शुष्कसरःप्रभृति । भग० ६८३ ।

निन्नए–पुरिमताले अण्डकवणिक् । विपा० ५८ ।

निन्नगरा–निर्नगराः–नगरनिष्क्रान्ताः । भग० ६६१ ।

निन्नगा–निम्नगा नदी । प्रश्न० १३५ ।

निपच्चक्खाणपोसहोपवासा–निष्प्रत्याख्यानपौषधोपवा-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सा: असत्पौरुष्यादिनियमाः अविद्यमानाष्टम्यादिपर्वोपवासाश्च । भग० ३०६ ।

निपतनानि–प्रवाहरूपतया वहनानि । जं० प्र० १२५ ।

निपातस्थानं–तडागम् । नंदी० ५८ ।

निप्पंक–निष्पङ्कं कलङ्कविकलं कर्दमरहितं वा । जीवा० १६१ । प्रज्ञा०८७ । निष्पङ्कः–आर्द्रमलरहितः । औप०१० ।

निप्पंका–निष्पङ्का आर्द्रमलाभावात् अकलङ्कत्वाद्वा । ठाणा० २३२ ।

निप्पगलो–निष्प्रगलः । ओघ० ३३ ।

निप्पग्गहया–यथा तत्र रश्म्या वल्गापरपर्याययोन्मार्गप्रस्थितस्तुरङ्गमो मार्गेऽवतार्यते तथा गुरूणामप्याज्ञावल्गया साधुः प्रमादत उत्पथप्रतिपन्नोऽपि सन्मार्गेऽवतार्यते इति प्रग्रहशब्देन गुर्वाज्ञाऽभिधीयते, प्रग्रहो नियन्त्रणा गुर्वाज्ञेति यावत्, निर्गतः प्रग्रहादिति निष्प्रग्रहः तस्य भावो निष्प्रग्रहता गुर्वाज्ञाया अभावात् पाणिपादमुखधावनादि निःशङ्कं करोतीत्यर्थः । बृ० प्र० १६३ आ ।

निप्पच्चक्खाणपोसहोववासे–अविद्यमानपौरुष्यादिप्रत्याख्यानोऽसत्पर्वदिनोपवासश्चेत्यर्थः । ज्ञाता० २३८ ।

निप्पट्ठ–निरस्तानि स्पष्टानि व्यक्तानि । उपा० ३६ । निर्गतानि स्पष्टानि । ज्ञाता० ११० । भग० ६८४ ।

निप्पट्ठपसिणवागरणो–निस्पृष्टप्रश्नव्याकरणः । आव० ३१६ ।

निप्पडिकम्मो–निष्प्रतिकर्मा । आव० २२७ ।

निप्पत्ती–निष्पत्तिः सिद्धिः । ठाणा० ४४६ ।

निप्पाण–निष्प्राणं उच्छ्वासादिरहितम् । ज्ञाता० ८५ ।

निप्पावकुडो–निष्पावकुटः वल्लकुम्भः । आव० ३१० ।

निप्पिट्ठ–निष्पिष्टः सुपेषितम्, पेषणपरिसमाप्तिः । पिण्ड० १६४ ।

निप्पिवास–धोरहृदयः । व्य० द्वि० १४० आ ।

निप्पिवासा–निष्पिपासा निराकाङ्क्षा । प्रश्न० ३६ ।

निप्पीलणा–निष्पीडना अत्यन्तमावलनमात्मिका । उत्त० ८ ।

निप्पीलिज्जइ–निष्पीड्यते । आव० ६२१ ।

निप्पुलाए–जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे उत्सर्पिण्यां आगामिचतुर्विंशतिकायां चतुर्दशो जिनः । सम० १५३ ।

निप्फज्जए–निष्पद्यते निष्पादयति । सूर्य १७३ ।

निप्फण्ण–सम्यक्सूत्रार्थकुशलः । बृ० द्वि० २८४ अ ।

निप्फण्णायावणा–निष्पन्नातापना । औप० ४० ।

निप्फाइयनिप्फन्नं–निष्पादितनिष्पन्नं स्वार्थं निष्पाद्यपुनः साध्वर्थं निष्पादनम् निष्पादितेन–गृहिणा स्वार्थं कृतेन निष्पन्नं यत् करम्बादि मोदकादि वा तन्निष्पादितनिष्पन्नम् । पिण्ड० ७६ ।

निप्फाईया–निष्पादिता योग्यतामापादिताः । आचा० २६४ ।

निप्फाव–निष्पावा (नः) वल्लाः । भग० २७४ । निष्पावाः वल्लाः । दश० १६३ । वल्लाः । भग० ८०२ । दश० चू० ६२ आ । ठाणा० ३४४ । सत्रिभागकाकण्या त्रिभागोनगुञ्जाद्वयेन वा निर्वृत्तो निष्पावः । अनु० १५५ ।

निप्फेड–निष्फेटः निष्काशनम् । आव० ७१० ।

निप्फेडिउं–निःस्फिटितुम् । दश० ३७ ।

निप्फेडेह–निष्काशयत । आव० ४२५ ।

निबंध–निबन्धो नियमः । विशे० २०६ ।

निबद्धा–पर्यायार्थतया प्रतिसमयमन्यथात्वावाप्तेर्निबद्धाः–सूत्र एव ग्रथिता । सम० १०६ ।

निबद्धाउए–प्रकृतिस्थित्यनुभागबन्धापेक्षया । ज्ञाता० १८३ ।

निबन्धमार्ग–द्वासप्ततिकलायां गीतकलायाः द्वितीयो भेदः । सम० ८४ ।

निबुड्डा–निमग्नाः । उत्त० २३३ ।

निब्बंध–निर्बन्धः–आग्रहः । ओघ० ८६ ।

निब्बलासए–निर्बलं–निःसारमन्तप्रान्तादिकं यद्द्रव्यं तदाशकः–तद्भोजी स्यात्, यदि वा निर्गतं बलं सामर्थ्यमस्येतिनिर्बलः एवम्भूतः सन्नासीत । आचा० २१८ ।

निब्बाहि–निर्बहिः अत्यन्तबहिर्बहिस्तात्तरा । ठाणा० ३५३ ।

निब्बुक्कच्छिन्नधय–निर्बुक्कच्छिन्नध्वजः–निर्मूलनिकृत्तकेतुः रथः । प्रश्न० ४६ ।

निब्भंच्छेइ–नितरां दुष्टमभिधत्ते । भग० ६८३ ।

निब्भंछणं–निर्भर्त्सनं–अपसर मे दृष्टिमार्गादित्यादिकम् । प्रश्न० १६० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निब्भंछणा–न त्वया मम प्रयोजनमित्यादिपरुषवचनम् । भग० ६८३ ।
निब्भए–निर्भयः शूरत्वात् । ज्ञाता० ६७ ।
निब्भओ–निर्भयः–इह लोकादिसप्तभयविप्रमुक्तः । आव० ५९२ ।
निब्भच्छण–निर्भर्त्सनं–आक्रोशविशेषः । प्रश्न० ५६ ।
निब्भिज्जमाणं–नितरां निर्भिद्यमानं अतिशयेन भिद्यमानम् । जीवा० १९१ ।
निब्भेरिय–प्रसारितानि । उत्त० ३६७ ।
निभ–नितरां भात इति निभम् । ज्ञाता० १६८ ।
निभा–छाया । उत्त० ४४२ ।
निभिय–निभृतः–परधनादानव्यापारादुपरतः । प्रश्न० १२४ । संयतः । सूत्र० ३८४ ।
निभेलणं–गृहम् । मर० ।
निभेल्लितं–निर्भेलितं–कुक्षितो बहिष्कृतम् । प्रश्न० ४९ ।
निमंतणा–दशधा सामाचार्यां नवमी । भग० ९२० । निमन्त्रणा-अगृहीतेनैवाशनादिनाऽहं भवदर्थमशनाद्यानयामि इत्येवम्भूता,दशधा सामाचार्यां नवमो भेदः । आव० २५९ । अद्याप्यगृहीतेनाशनादिना साधूनामामन्त्रणम् । अनु० १०३ । निमन्त्रणा–तेनैवागृहीतेन यथालाभं युष्मद्योग्यममुकमानेष्ये इति प्रार्थना । बृ० प्र० २२२ अ । गृहस्थानामभ्यर्थना । बृ० द्वि० २४ अ ।
निमंतेति–निमन्त्रयति । आव० १९८ ।
निमग्गो–निमग्नः–अन्तःप्रविष्टः । जीवा० २७० ।
निमग्गजल–नदीविशेषः । ठाणा० ७१ ।
निमज्जनं–स्नेहवर्त्तनम् । ओघ० ५८, १३० ।
निमज्जए–निमज्जकः स्नानार्थं निमग्ना एव ये तिष्ठन्ति । ओप० ९० ।
निमज्जगा–स्नानार्थं निमग्ना । भग० ५१९ ।
निमज्जगा–स्नानार्थं ये निमग्ना एव क्षणं तिष्ठन्ति । निरय० २५ ।
निमज्जण–प्रवेशः । उत्त० ७११ ।
निमन्तितं–निमंत्रणा पुरस्सरं प्रतिदिवसं नियतं दीयते तत् । व्य० प्र० १६० अ ।
निमित्तं–"तिविहं होइ निमित्तं तीयप्पडुप्पन्नणागयं चेव । तेण न विणाउनेयं नज्जइ तेणं निमित्तं तु ।" अतीतं प्रत्युत्पन्नमनागतं च कालत्रयवर्त्तिलाभालाभादिपरिज्ञानहेतुः । बृ० प्र० २१५ अ । निमित्तः–अष्टाङ्गस्य निमित्तस्य । आचा० ४१९ । अनागतार्थपरिज्ञानहेतुः । ओघ० १४ । कार्यवाचकः कारणं वा । आव० २८० । निमित्तं लक्षणं निमित्तलक्षणम् । आव० २८२ । दण्डकशाशस्त्रादीनि समाहारद्वन्द्वस्तत्र सति आयुर्भिद्यत इति सम्बन्धः । ठाणा० ४०० । हेतुः । ठाणा० ४२७ । अङ्गुष्ठप्रश्नादि । आचा० ३५१ । चूडामण्याद्युपदेशेनातीतादिभावसंवादनम् । प्रश्न० १०९ । पटस्य तन्तव इव कारणम् । आव० २७८ । मिश्रितं–नियमितम् । आव० ८५६ । निमित्तं–अतीतादि । दश० २३६ । निमित्तं–अतीतार्थपरिज्ञानहेतुः शुभाशुभचेष्टादि । पिण्ड० १२१ । कारणम् । विशे० २७९ । लक्षणम् । विशे० ८८८ ।
निमित्तउल्लोगो–निमित्तावलोकः । आव० २१४ ।
निमित्तकारणं–कुलालादि । ठाणा० ४९४ ।
निमित्ताजीवयाते–निमित्ताजीवनतया–त्रैकालिकलाभादिविषयनिमित्तोपात्ताहाराद्युपजीवनेनेति । ठाणा० २७५ ।
निमिसंतरं–निमेषान्तरम् । आव० २०८ ।
निमुग्गं–निमग्नं अनुन्नतम् । प्रश्न० ८० ।
निम्नं–अङ्गुलिपर्वरेखा । ओघ० १७१ ।
निम्बतिल–निम्बकुसुमम् । व्य० प्र० १५९ अ ।
निम्मं–निर्मापितम् । व्य० द्वि० ४०१ अ ।
निम्ममे–जम्बूद्वीपभरते आगामीन्यामवसर्पिण्यां पञ्चदशतीर्थकृद् । सम० १५४ ।
निम्मयया–निर्मायता विकाररहितत्वम् । दश० १२१ ।
निम्मलं–निर्मलं आगन्तुकमलाभावात् । प्रज्ञा० ८७ । निर्मलं–आगन्तुकमलासम्भवात् । जीवा० १६१ । निर्मलं–छायादिदोषरहितम् । ज० प्र० ५२८ । स्वाभाविकमलरहितम् । भग० ६७२ । निर्मलानि–कक्खड(कर्कश)मलाभावात् । सम० १४० । निर्मलः–विगतमलकल्पसूक्ष्मतरवालाग्रः । भग० २७७ । ब्रह्मलोके चतुर्थो विमानप्रस्तरः । ठाणा० ३६७ । निर्मलः–कठिनमलरहितः । औप० १० । निर्मलः–स्वभावोत्थमलरहितः । जीवा० २७२ ।
निम्मलतरा–निर्मलं जीवं करोति या सा तथा अति-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शयेन वा निर्म्मला निर्मलतरा, अहिंसायाः षष्ठितमं नाम । प्रश्न० ६६ ।

निम्मल्ल–निर्माल्यं–तीर्थादिगत ं प्रभाव प्रतिमा शेषा । पिण्ड० ६६ ।

निम्मवियं–निर्मितं समापितम् । आव० ७०६ ।

निम्मवेइ–निर्मिमीते । आव० ४१० ।

निम्मा–निर्मा मूलपादानां । बृ० प्र० १८४ अ । जीवा० १४४ ।

निम्मिअ–निर्मितः–निवेशितः । जं० प्र० २११ ।

निम्मितवादी–निर्म्मितं–ईश्वरब्रह्मपुरुषादिना कृतं लोकं वदतीति निर्म्मितवादी । ठाणा० ४२५ ।

निम्मिय–निर्मितं निवेशितम् । उपा० ४४ । निर्मितः निवेशितः । भग० ४५६ ।

निम्मुग्गा–निर्मग्ना नदीः । आव० १५० ।

निम्मेरं–निर्मर्यादम् । ग० ।

निम्मेरा–निर्मर्यादाः प्रतिपन्नापरिपालनादिना । ठाणा० १२६ । अविद्यमानकुलादिमर्यादः । भग० ३०६ ।

निम्मोअणी–निर्मोचनी निर्मोकः । उत्त० ४०७ ।

नियंटितं–नितरां यन्त्रितं नियन्त्रितम् । भग० २६६ । नितरां यन्त्रितं–प्रतिज्ञातदिनादौ ग्लानत्वाद्यन्तरायभावेऽपि नियमात् कर्तव्यम् । ठाणा० ४६८ ।

नियंटियं–नितरां यन्त्रितं नियन्त्रितं–प्रतिज्ञातदिनादौ ग्लानाद्यन्तरायभावेऽपि नियमात् कर्त्तव्यमिति हृदयम् । आव० ८४० ।

नियंठ–निर्ग्रन्थः श्रमणः । भग० ११२ ।

नियंठणामिओ–निर्ग्रन्थनामितः । आव० ४१२ ।

नियंठा–निर्गताः स बाह्याभ्यन्तरग्रन्थादिति निर्ग्रन्थाः–साधवः । भग० ८६१ ।

नियंठि–उत्तराध्ययनेषु षष्ठमध्ययनम् । उत्त० ६ ।

नियंठिज्जं–निग्रन्थीयं उत्तराध्ययनेषु विंशतितममध्ययनम् । उत्त० ६ ।

नियंठिपुत्ते–पुद्गलप्रदेशनिरूपणे महावीरशिष्यः । भग० २४० ।

नियंठु–निर्ग्रन्थोद्देशः । भग० ३२३ ।

नियंठुद्देसए–निर्ग्रन्थोद्देशकः । भग० ३२४ । द्वितीयशते पञ्चमोद्देशकः । भग० ५२० ।

नियंत–गच्छत् । आव० ६४६ ।

नियंसणं–परिधानम् । जीवा० १७३ ।

नियंसति–परिधापयति । आव० १२३ ।

नियंसिकं–परिहितम् । मर० ।

नियंसेहामि–परिधास्ये । आव० ३०७ ।

नियइ नियत्या नैयत्येन । जं० प्र० ४४ ।

नियइइया–नियतिर्व्यवस्था तत्र नियुक्तास्तथा वा चरन्तीति नैयतिकाः । व्य० प्र० १७१ अ ।

नियइपव्वय–नियत्या–नैयत्येन पर्वतो नियतिपर्वतः । जीवा० २०० । जं० प्र० ४४ ।

नियइया–नैयतिकी नियता । प्रज्ञा० ३३५ ।

नियई–यत् राद्धावपि नियतरसत्वं न शाल्यादिरसता सा नियतिः । प्रश्न० ३५ ।

नियए–नित्यः-अप्रच्युतानुत्पन्नस्थिरैकस्वभावः । उत्त० ४३० ।

नियओ–नियतः–परिच्छिन्नः । आव० ५६१ ।

नियग–निजकः गोत्रजः । भग० १६३ । निजकः–भ्रातृपुत्रादिः । औप० १०३ । निजकः–भर्त्ता । पिण्ड० १२२ । आव० ६३८ ।

नियगा–णियगा–आत्मीयाः । आचा० १०५ । निजाः–आत्मीया बान्धवाः सुहृदो वा । आचा० १०८ ।

नियच्छंतो–अन्वेषयन् । बृ० प्र० २१३ अ ।

नियच्छइ–नियच्छति बध्नाति । उत्त० ४१६ ।

नियच्छइ–नियच्छतः निश्चयेन गच्छतिः प्राप्नुतः । सूत्र० ३५ । भणइ । पउ० ५६–१६ ।

नियच्छन्ति–अवधारयन्ति । आचा० १६७ ।

नियट्टी–निवृत्तिः द्विसमयस्थितिकस्यापि वेद्यकर्मणो बन्धव्यावृत्तिः मुक्तिः । उत्त० ५८६ ।

नियट्टेमाणे–निवर्द्धयन्–प्रकाशहान्या हानिं नयन् । सम० ४७ ।

नियड–निगडं–दृढबन्धनम् । आचा० ६ ।

नियडि–निकृतिः–आन्तरो विकारः । आव० ५६६ । बकवृत्त्या कुकुंटादिकरणं, अधिकोपचारकरणेन परच्छलनम् । ज्ञाता० २३८ । निकृतिः–वञ्चनक्रिया । प्रश्न० ५८ । वञ्चनप्रच्छादनार्थं कर्म । ज्ञाता० ८० । माया-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रच्छादनार्थं–मायान्तरकरणम् । ज्ञाता० २३८ । निकृतिः–अत्यन्तादरकरणेन परवञ्चनम् । प्रश्न० ६७ । निकृतिः–अत्युपचारकरणेन वञ्चनं,माया कर्मच्छादनार्थं वा मायान्तरम् । प्रश्न० ६२ । निकृतिः–आकारवचनाच्छादनम् । व्य० द्वि० १६ भ ।

नियडिकम्मं–निकृतिकर्म–मायाकर्म, तृतीयाधर्मद्वारस्यैकोनत्रिंशत्तमं नाम । प्रश्न० ४३ ।

नियडिकवडवंचणाकुसला–निकृतिकपटवञ्चनाकुशला–निकृतिः–आन्तरो विकारः कपटं–वेषपरावर्त्तादिर्बाह्यः, आभ्यां या वञ्चना तस्यां कुशला–निपुणा । आव० ५६६ ।

नियडिनिबंधणं–निकृतिनिबन्धनम् । आव० ३६५ ।

नियडिल्ल–निकृतिमान् मनसा । उत्त० ६५६ ।

नियडिल्लयाए–निकृतिः–वचनार्थं चेष्टा मायाप्रच्छादनार्थं मायान्तरमित्येके आत्यादरकरणेन परवञ्चनमित्यन्ये तद्वत्ता । भग० ४१२ ।

नियडि–निकृतिः । आव० २६४, ३६४ । माया० । आव० ७६८ । अण्णहाकरणलक्खणा माया । आव० ६६२ । निकृतिः–कैतवार्थप्रयुक्तवचनाकाराच्छादनम् । बृ० तृ० ४६ आ ।

नियडी–माया । बृ० द्वि० १८६ अ ।

नियणा–निदानं निर्दणणं । बृ० द्वि० ४ आ ।

नियतंति–निबद्धं । नि० चू० द्वि० ३५ अ ।

नियत–नियतार्थविषयेनैककालमनेकविषयम् । बृ० प्र० ६ आ । एकरूपत्वात् नियतः । ठाणा० ३३३ । नित्यम् । ठाणा० ४२६ ।

नियतवादिनः–पाखंडीविशेषः । सम० ११० ।

नियतिः–व्यवस्था । व्य० प्र० १७१ अ ।

नियतिवादिनः–नियतिः–पदार्थानामवश्यन्तया यद्यथाभवने प्रयोजककर्त्रीति । ठाणा० २६८ ।

नियतिवादी– । आव० ८१६ ।

नियत्त–निवर्त्तनम् । ओघ० १७४ । निवृत्तः । आव० ६६३ ।

नियत्तण–निवर्त्तनं–क्षेत्रमानविशेषः निजतनुप्रमाणं वा । भग० १६७ ।

नियत्तणसइए–निवर्त्तनं भूमिपरिमाणविशेषो देशविशेषप्रसिद्धः ततो निवर्त्तनशतं कर्षणीयत्वेन यस्यास्ति तन्निवर्त्तनशतिकम् । उपा० ४ ।

नियत्तणियं–निवर्त्तनिकं निवर्त्तनं–क्षेत्रमानविशेषः तत्परिमाणं निवर्त्तनिकं निजतनुप्रमाणं वा । भग० १६७ ।

नियत्ती–निर्वर्त्तनं निवृत्तिः, प्रतिक्रमणपञ्चमःपर्यायः । आव० ५५२ । नियतिः–स्वभावविशेषः । प्रश्न० ३५ ।

नियत्थं–नियसितं परिहितम् । आव० १८४ ।

नियत्था–निवसिता,वस्त्रं परिधापितेत्यर्थः । विशे० १०३६।

नियम–उत्तरगुणात्मकः । विशे० १०६५ । इन्द्रियनोइन्द्रियसंयमो नियमः । विशे० ५०२ । निरोधः । ओघ० ११४ । निश्चयः । पिण्ड० १६६ । इन्द्रियनोइन्द्रियभेदभिन्नः । आव० ६७ । द्रव्याद्यभिग्रहात्मकः । उत्त० ४५१ । अभिग्रहः । भग० ६२ । उत्तरगुणसमूहात्मकः । अनु० २५६ ।

नियमणिसिद्धो–नियमनिषिद्धः । आव० २६७ ।

नियमनियमः–नियमान्वितो नियमो यत्रासौ । उभयपदाव्याहतश्चतुर्थो भङ्गः । विशे० ८८७ ।

नियमविकल्पः–नियमेनोपलक्षितो विकल्पः,द्वितयो भङ्गः । विशे० ८८६ ।

नियमाः–उत्तरगुणाः । सम० १०७ । इन्द्रियनोइन्द्रियदमरूपाः । नंदी० ४६ । अभिग्रहविशेषाः । भग० ७५६ । सम० १२७ । शौचसंतोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि । ज्ञाता० ११० । विचित्रा अभिग्रहविशेषाः । राज० ११६ । ज्ञाता० ७ ।

नियमिता–जिताः । बृ० प्र० २११ आ ।

नियमे–नियमयेत् कारयेद्वाचा । आचा० ४१६ ।

नियम्यनियामकभाव– । आचा० ६६ ।

नियय–निहतं–सर्वदा । पिण्ड० १६७ । नियतं–प्रतिदिवसं निरन्तरम् । पिण्ड० ७७ । नियतः–सदा भोग्यत्वेनावस्थितः । जीवा० २०० । जं० प्र० ४४ । नियतः नित्यः । आव० ७६८ । सततम् । ओघ० १८० ।

नियपव्वय–नियतः सदा भोग्यत्वेनावस्थितः पर्वतो नियतपर्वतः । जीवा० २०० ।

नियपव्वया–नियताः सदा भोग्यत्वेनावस्थिताः पर्वताः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यत्र व्यन्तरा देवदेव्यो भवधारणीयेन वैक्रियशरीरेण प्रायः सदा रमन्ते । जं० प्र० ४४ ।

नियया-नियता-सर्वकालमवस्थिता शाश्वत्वात्, जम्बवाः सुदर्शनाया एकादशं नाम । जीवा० २६६ ।

नियई-निकृतिः-मायायाः प्रच्छादनार्थं वचनम् । अधर्मद्वारे मृषावादस्य त्रयोविंशतितमं नाम । प्रश्न० २७ ।

नियर-निकरः स्कन्धस्य नवम पर्यायः । विशे० ४२६ ।

नियल-निगडं लोहमयम् । ओप० ८७ । निगडः । आव० २२४, ६८३ । उत्त० ५५५ । निगडं पादविषयलोहमयबन्धनम् । पिण्ड० १५७ । नियलियओ विव चलणे वित्थारिय अहव मेलविउं, कायोत्सर्गेऽष्टमो दोषः । आव० ७६८ ।

नियलबंधणं- । सूत्र० ३२८ ।

नियलबद्धो-निगडबद्धः । आव० २२२ ।

नियलमाई-निगडादिभ्यः आदिशब्दात्कारागृहादिपरिग्रहः । उत्त० ५५५ ।

नियल्ले-अष्टाशीतितममहाग्रहे त्रिपञ्चाशतममहाग्रहः । ठाणा० ७६ ।

नियल्लग-निजकः । आव० ३०७ ।

निया-नीता । ठाणा० २२२ ।

नियाए-निदानं निदा-प्राणिहिंसा नरकादिदुःखहेतुरिति जानताऽपि यद्वा साधूनामाधाकर्म्म न कल्पते इति परिज्ञानवताऽपि यज्जीवानां प्राणव्यपरोपणं सा निदा । पिण्ड० ४२ । कारणेन संकल्पेन । आचा० ३४ । निदानं-व्यापाद्यस्य सत्त्वस्य हा ! धिक् सम्प्रत्येष मां मारयिष्यतीति परिजानतो यत् प्राणव्यपरोपणं सा । पिण्ड० ४२ । निदान स्वार्थं परार्थं चेति विभागेनोद्दिश्य यत् प्राणव्यपरोपणं सा निदा । पिण्ड० ४२ ।

नियागं-नियतं । दश० चू० ५० । नित्यागं-नित्यपिण्डम् । उत्त० ४७६ । संयमो मोक्षो वा । यजनं यागः नियतो निश्चितो वा यागो । आचा० ३६६ । नियागः-मोक्षमार्गः, संगतम्, सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकः मोक्षमार्गः । आचा० ४२ । नियागं-आमन्त्रितस्य पिण्डस्य ग्रहणं नित्यं न त्वनामन्त्रितस्य । दश० ११६ । नितरां यजनं यागः-पूजा यस्मिन् सः नियागः-मोक्षः । उत्त० ४६ ।

नियाण-निदानं उपादानं कर्म्म । आचा० २३४ । विषयाभिष्वङ्गात्मकम् । उत्त० ४१४ । आशयः । आव० ६१० । नितरां दीयन्ते-लूयन्ते दीयन्ते वा खण्ड्यन्ते तथाविधसानुबन्धफलाभावतस्तपःप्रभृतीन्यनेनेति निदानं-साभिष्वङ्गप्रार्थनारूपम् । उत्त० ३८४ । साभिष्वङ्गप्रार्थनारूपः । उत्त० ७०७ । निदानं आकाङ्क्षा । सूत्र० २६४ । कर्ममलशोधनम् । उत्त० ४४६ । निदानं-आरम्भरूपं आश्रवः हेतुर्वा । सूत्र० १८८ । निदानशल्यम् । ओघ० २२७ । निदानं-अभिलाषानुष्ठानम् । आव० ५७६ ।

नियाणचिंतण-निदानचिन्तनं-निदानाध्यवसायः । आव० ५८५ ।

नियाणछिन्ने-निदानं प्राणातिपातादि कर्मबन्धकारणं छिन्नं अपनीतं येन स तथा छिन्ननिदानः, अप्रमत्तसंयत इति । उत्त० ४१४ ।

नियाय-नियागः मोक्षः सद्धर्मो वा । सूत्र० ३६ । ज्ञात्वा । आचा० २१० ।

नियुक्तः-राजपुरुषः । नंदी० १५१ ।

नियुक्तकः-राजपुरुषः । प्रज्ञा० ८६ । यः कार्यार्थं नियोजितः कर्मकर इति । उत्त० २७२ ।

नियोग-नियुज्यते साधुः आचार्यप्रायोग्यानयनार्थम् । ओघ० ८५ । नियतो निश्चितो वा योगो नियोगः, अनुयोगस्य पर्यायः । आव० ८६ ।

नियोगतः-अवश्यम् । आव० २६५ ।

नियोगामच्चो-नियोगामात्यः नियोगनिमित्तेन कलङ्कदाता । आव० ६६३ ।

नियोगिना- । विशे० ४०६ ।

निरंतरगो-निरंतरकः लघुच्छिद्रैरपि रहितः । जीवा० ३५६ ।

निरंतरिए-घनकवाडे निर्गता अन्तरिका-लघ्वन्तररूपायोस्तौ निरन्तरिकौ अत एव घनकपाटौ यस्य तत्तथा । जं० प्र० ४४ ।

निरंभा-वैरोचनेन्द्रस्य चतुर्थी अग्रमहिषी । भग० ५०३ ।

निरए-नरकः-प्रकीर्णकरूपो नरकावासः । प्रज्ञा० ७१ ।

निरणकंप-विगतप्राणिरक्षः, निर्गता वा जनानामनुकम्पा यत्र स । ज्ञाता० ८० । निरनुकम्पः-जो उ परं कंपतं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दट्ठूण न कंपए कठिणभावो। एसो उ निरणुकंपो अणुपच्छा भावजोएणं। यस्तु परं कृपास्पदं कुतश्चित् भयात् कम्पमानमपि दृष्ट्वा कठिनभावः सन्नकम्पते एष निरनुकम्पः। बृ० प्र० २१६ अ।

निरणुक्कोस–निरनुक्रोशः निर्दयः। ज्ञाता० ८०।

निरणुतावो–निरनुतापः–निर्गतानुतापः, पश्चात्तापरहितः। आव० ५९०। ज्ञाता० ८०।

निरती–देवानन्दाऽपरनाम। जं० प्र० ४९२। सूर्य० १४७।

निरत्थय–निरर्थकं–यत्र वर्णानां क्रमनिदर्शनमात्रं विषते न पुनरभिधेयतया कश्चिदर्थः प्रतीयते तत्। द्वात्रिंशततम सूत्रदोषे तृतीयदोषः। आव० ३७४। निष्फलम्। बृह० १२७। निरर्थकं–यत्र वर्णानां क्रमनिर्देशनमात्रमुपलभ्यते न त्वर्थः। अनु० २६१। वर्णानां क्रमनिर्देशमात्रमुपलभ्यते न त्वर्थः निरर्थकम्। विशे० ४६४।

निरत्थयमवत्थयं–निरर्थकापार्थकं निरर्थकं–सत्यार्थान्निष्क्रान्तं अपार्थं–अपगतसत्यार्थम्, प्रथम अधर्मद्वारस्य सप्तमं नाम। प्रश्न० २६।

निरन्तराः–हृदयशून्याः। आचा० १८६, २२८।

निरयं–नरकावासः। अनु० १७१। निर्गतशुभफलम्। प्रश्न० ९२। नीरजाः–रजोरहितः। औप० १०। निरयः निर्गतमयं–इष्टफलं कर्म यस्मात् स नरकः। भग० १९।

निरयगइया–निरयगतिः–गमनं येषां ते निरयगतिकाः, इह सम्यग्दृष्टयो मिथ्यादृष्टयो वा ज्ञानिनोऽज्ञानिनो वा ये पञ्चेन्द्रियतिर्यग्मनुष्येभ्यो नरके उत्पत्तुकामा अन्तरगतौ वर्तन्ते ते निरयगतिकाः विवसिताः। भग० ३४६।

निरयछिद्द–नरकच्छिद्राणि। प्रज्ञा० ७७।

निरयनिक्खुड–नरकनिष्कुटाः–गवाक्षादिकल्पा नरकावासप्रदेशाः। प्रज्ञा० ७७।

निरयपत्थड–नरकप्रस्तरः नरकभूमिरूपः। प्रज्ञा० ७१।

निरयपत्थडा–नरकप्रस्तटाः। अनु० १७१।

निरयवत्तणि–निरयवर्त्तनि नरकमार्गः। प्रश्न० ६१।

निरयवाला–शक्रेन्द्रस्य आज्ञावर्ती देवः। भग० १९७।

निरयविभत्ती–निरयविभक्तिः सूत्रकृताङ्गाद्यश्रुतस्कन्धे पञ्चममध्ययनम्। सम० ३१। आव० ६५१।

निरया–इष्टफलं कर्म निर्गतमयं येभ्यस्ते निरयाः–नरकावासाः। जीवा० ३३। प्रज्ञा० ४३। निर्गतं–अविद्यमानमयं इष्टफलं कर्म येभ्यस्ते निरयाः। ठाणा० २८। नरकहेतुः, विशिष्टवेगो वा। प्रश्न० ९२।

निरयावलिया–नरकावलिकाः आवलिका व्यवस्थिता नरकावासा। प्रज्ञा० ७१।

निरयावलियाओ–यत्रावलिकाप्रविष्टा इतरे च नरकावासाः प्रसङ्गतस्तद्गामिनश्च नरास्तिर्यञ्चो वा वर्ण्यन्ते ता निरयावलिकाः। नंदी १०७। निरय० ३।

निरयावली–नरकावासपङ्क्तिः। अनु० १७१।

निरवकंखा–निष्क्रान्तमाकाङ्क्षातो निराकाङ्क्षम्। उत्त० ६००।

निरवज्जं–निरवद्यं निर्गतपापम्, इहलोकाद्याशंसारहितम्। आव० ५९६।

निरवयक्ख–निरवकाङ्क्षः पश्चाद्भागमनवेक्षमाणस्तन्निस्पृहः अनभिलाषवान्। ज्ञाता० १६९। निर्गताऽपेक्षा–परप्राणविषया परलोकादिविषया वा यस्मिन्नसौ निरपेक्षः निरवकाङ्क्षो वा अवकाङ्क्षारहितो वा। प्रश्न० ५।

निरवयवः–समस्तः। बृ० प्र० ३६ आ।

निरवलावे–निरपलापः–नान्यस्मै कथयेदिति, द्वात्रिंशद् योगे सङ्ग्रहे द्वितीयो योगः। आव० ६६३।

निरवशेषः–प्रसक्तानुप्रसक्तमप्युच्यते यस्मिन् स एवंलक्षणः। आव० २७।

निरवसेस–निरवशेषता–अपरिशेषव्यक्तिसमाश्रयः। ठाणा० २२३। निरवशेषो–निरवशेषस्य प्रसक्तानुप्रसक्तस्यार्थस्य कथनात्। भग० ८६९। निरवशेषं–सामस्त्येन। प्रज्ञा० ५८२। निरवशेषं–समग्राशनादिविषयः। आव० ८४०। निर्गतमवशेषमपि अल्पाल्पमशनाद्याहारजातं यस्मात्तत् निरवशेषं सर्व्वमशनादि तद्विषयत्वान्निरवशेषम्। ठाणा० ४९८। निरवशेषं–समग्राशनादिविषयम्। भग० २९६। निरवशेष–प्रदेशान्तरतोऽपि स्वस्वभावेनान्यूनाः। भग० १४९।

निरवसेससव्वते–अपरिशेषव्यक्तिसमाश्रयेण सर्व्वं निरवशेषसर्व्वम्। ठाणा० २२३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निरवेक्खो–निरपेक्षः–निरभिलाषः, निरभिष्वङ्गः । उत्त० २६९ । निरपेक्षः इहान्यभविकापायभयरहितः । आव० ५९० ।

निरस्साविणो–निष्क्रान्ता आश्राविभ्यः प्राग्वत् सन्धिभो निराश्राविणो । उत्त० ५०९ ।

निराग–निरन्तरायः । उत्त० ८९ ।

निरागारं–अपवादशून्यम् । आउ० ।

निरामया–रोगरहितः । आव० ४१९ ।

निरामयामय–निरामयामयः नीरोगस्याऽऽमयभावः रोगोत्पत्तिः । दश० १३१ ।

निरामिस–निरामिषा परित्यक्ताभिष्वङ्गहेतुः । उत्त० ४१० ।

निरायं–नितराम् । आव० २२२, ७०० ।

निरारम्भे–निर्गतः आरम्भात्–असत्क्रियाप्रवर्त्तनलक्षणादिति निरारम्भः । उत्त० ९९ ।

निरालंबण–निष्कारणं प्रत्यपायसम्भवो वा त्राणायाऽऽलम्बनीयवस्तुवर्जितः । ज्ञाता० १५८ । निरालम्बनः–एहिकामुष्मिकाशंसारहितः । आचा० ४३१ ।

निरालोगा–निरालोकाः–निरस्तप्रकाशा निरस्तदृष्टिप्रसरा वा । भग० ३०६ ।

निरावरण–क्षायिकम् । ज्ञाता० १५३ ।

निरासो–निराशसः–इह परलोकाशंसाविप्रमुक्तः । आव० ५९२ ।

निराससे–निराशंसः–ऐहिकामुष्मिकाशंसारहितः । आचा० ४३१ ।

निरिक्खिअ–निरीक्षिताः मनोरथपरम्परासम्पत्तिसम्भवाविनिश्चयसमुत्थसम्मदविकाशिलोचनैरालोकिताः । नंदी० १९२ ।

निरुंभइ–निरुणद्धि । आव० ७८३ ।

निरुंभति–निरुन्धति । आव० २७७ ।

निरुंभा– । ज्ञाता० २५१ ।

निरुक्तिः–क्रियाकारकभेदपर्यायैः शब्दार्थकथनम् । आव० ३६३ । चतुर्विधस्य सामायिकस्य क्रियाः कारकभेदपर्यायैः शब्दार्थकथनं–निर्वचनम् । विशे० ११०६ ।

निरुक्तिद्वारम्–एकार्थशब्दविधानरूपत्वात्तस्य । प्रश्न० ४ ।

निरुच्छ्वासः–निश्चलः । व्य० प्र० १९८ आ ।

निरुत्त–निरुक्तं निश्चितमुक्तं अक्षरार्थमित्यर्थः । बृ० प्र० ३ अ । निरुक्तं, निश्चितमुक्तमन्वर्थरूपम् । दश० २६१ । निरुक्तं–शब्दव्युत्पत्तिकारकशास्त्रम् । भग० ११४ । निरुक्तः शब्दनिरुक्तिप्रतिपादकः । औप० ९३ । शब्दनिरुक्तप्रतिपादकः । ज्ञाता० ११० ।

निरुत्तो–निश्चिता उक्तिः निरुक्तिः । अनु० २६० । व्युत्पत्तिः । अनु० २६४ ।

निरुत्थाई–न निमित्तं विनोत्थानशीलो निरुत्थायी । उत्त० ५८ ।

निरुद्ध–परिगलितम् । आचा० १९१ । आवृतम् । सूत्र० ७४ । विनाशितः । व्य० प्र० २४१ । निरुद्धः । उत्त० ५८२ । अध्यवसानादिभिरुपक्रमणकरणैरवष्टब्धः । उत्त० २८३ । अल्पः । ठाणा० १८१ । निरुद्धः–अर्थस्तोकः, स्तोककालीनम् । सूत्र० २५० । विनाशितः । व्य० प्र० २४१ अ ।

निरुद्धगतयः–सिद्धाः । उत्त० ६८४ ।

निरुद्धभवे–निरुद्धभवः–निरुद्धाग्रेतनजन्मा चरमभवप्राप्तः । भग० १११ ।

निरुद्धभवपवंचे–अप्राप्तत्रयभवविस्तारः । भग० १११ ।

निरुवकिट्ठ–निरुपक्लिष्टः–व्याधिना प्राक् साम्प्रतं चानभिभूतः । भग० २७६ । निरुपक्लिष्टः व्याधिनी प्राक् साम्प्रतं चानभिभूतः । अनु० १७९ ।

निरुवगारो–निरुपकारी गुरुणामनुपकारकः सर्वथा गुरुकृत्येष्वप्रवर्तकः । विशे० ६२५ ।

निरुवट्ठाणा–निर्गतमुपस्थानं–उद्यमो येषां ते निरुपस्थानाः–सर्वज्ञप्रणीतसदाचारानुष्ठानविकलाः । आचा० २२७ ।

निरुवलेव–निरुपलेपं मूत्रविष्ठाषूपलेपरहितम् । जीवा० २७७ । निरुपलेपः तथाविधबन्धहेत्वभावेन तथाविधकर्मानुपादानात् । ज्ञाता० १०४ ।

निरुवसग्गो–निरुपसर्गः मोक्षः । आव० ७८७ ।

निरुवसग्गवत्तिया–निरुपसर्गप्रत्ययं मोक्षनिमित्तम् । आव० ७८६ ।

निरुवहए–निरुपहतः वातादिभिरनुपहतः । ज्ञाता० ९१ ।

निरुवहयं–निरुपहतं निरोगम् । प्रश्न० ७६ । निरुपहतं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खंजनादिदोषरहितम् । बृ० द्वि० २२६ आ । निरुपहतो निरोगः । बृ० तृ० २५४ अ ।

निरुवहया–निरुपहतः निरुपहतेन्द्रियता । आव० ३४१ ।

निरुवगारी–निरुपकर्तुं शीलमस्येति निरुपकारी । आव० १०० ।

निरुव्विग्ग–निरुद्विग्नः सदैव अनुकूलविषयप्राप्तेः । ज्ञाता० ६७ ।

निरुह–निरुहः–अनुवासः । विपा० ४१ ।

निरुहा–अनुवासना । ज्ञाता० १८३ ।

निरेई–निरेजी–निष्प्रकम्पः । आव० ७७५ ।

निरेयकाओ–निरेजकायः–निष्प्रकम्पदेहः । आव० ७८० ।

निरेयणा–निरेजनाः कम्पक्रियानिमित्तविरहात् । प्रज्ञा० ६१० ।

निरोदरं–निरुदरं–विकृतोदररहितम् । जीवा० २७५ । निरुदरं–विकृतोदररहितं, अल्पत्वेनाभावविवक्षणात् । जं० प्र० ११४ ।

निरोयए–रोगवर्जितः । ज्ञाता० ५ ।

निरोवट्टो–निरपवर्तनः–अपवर्तनारहितः । विशे० ८५१ ।

निरोह–निरोधः–अभावः । उत्त० २८४ । नियन्त्रणा । उत्त० ५८६ । निरोधः । ओघ० १३८ । आव० ३७८ । निरोधः–ग्रहणम् । उत्त० १३५ । निरोधः–स्थापनम् । आव० ६३३ । निरोधनं निरोधः प्रलयकरणम् । आव० ५८३ ।

निर्–आधिक्ये । अनु० २६५ ।

निर्गमः–निहारः–प्रमाणम् । ठाणा० ४३५ ।

निर्गमभूमिः–स्थण्डिलभूमिः । आव० ५२४ ।

निर्घण्टः–नामकोशः । निरय० २३ ।

निर्घाटितः–पङ्क्तेर्बहिष्कृतः । बृ० प्र० १६९ अ ।

निर्जरितवन्तः–प्रदेशपरिशाटनतः । ठाणा० १७९ ।

निर्झरं–श्रोतादिविवरम् । १३८ ।

निर्देशः–आज्ञा । नंदी० १६० । लिङ्गार्थमात्रप्रतिपादनम् । अनु० १३४ ।

निर्देशदोषः–यत्र निर्दिष्टपदानामेकवाक्यता न क्रियते । अनु० २६२ ।

निर्दोषं–सर्वदोषविप्रमुक्तम् । अनु० २६२ ।

निर्बन्धं-हठः– । नंदी० १५३ । आचा० २४८ ।

निर्भजना–निश्चिता भजना निर्भजना–निश्चितो भागः । आचा० ८६ ।

निर्महेलं–नाटकविशेषः । पिण्ड० १३८ ।

निर्माण–निर्मिण जातिलिंगाकृतिव्यवस्थानियामकम् । त० ८१२ ।

निर्म्मलाः–कठिनमलाभावात् धौतवस्त्रवत् । ठाणा० २३२ ।

निर्यन्–निर्गच्छन् ।

निर्याणं–अवसानम् । उत्त० ४८३ ।

निर्यास–कर्पूरादिः गन्धद्रव्यविशेषः । जीवा० १३६ ।

नियुक्तिः– । सम० १११, १०९ ।

नियुक्त्यनुगमः–अनुगमे द्वितीयो भेदः । स्थान० ६ ।

निर्य्यानं–बहिर्निर्गमो । नि० चू० प्र० २७३ अ ।

निर्लेपं–आयामसौवीरादि । आव० ५७२ । पृथुकादिगृह्णतः । ठाणा० ३८६ ।

निर्लोठनीय–निरुत्तरीकरणम् । नंदी० १५२ ।

निर्वर्त्तनाधिकरणक्रिया–अधिकरणक्रियायाः प्रथमो भेदः, खड्गादीनां तन्मुष्ट्यादीनां च निर्वर्त्तनलक्षणा । प्रश्न० ३७ ।

निर्वर्त्तित–कृतं, अभ्यस्तम् । आव० ५९३ ।

निर्वर्तितवन्तः–अनुभूतवन्तः । ठाणा० ४४६ ।

निर्वर्त्यते–आह्रियते । जीवा० १४ ।

निर्वलति–निवर्त्तते । नंदी० १५८ ।

निर्विकृतिः– । आव० ८५३ ।

निर्विग(कृ)तिकादि–पृथ्व्यादिसङ्घट्टनादौ तपः । आव० ७६४ ।

निर्विशमानकं–आसेवकः, परिहारविशुद्धचारित्रे प्रथमः । ठाणा० ३२४ ।

निर्विशमानका–परिहारविशुद्धिचारित्रस्यासेवकाः साधवः विशे० ५५४ ।

निर्विशमाना–ये परिहारविशुद्धितपोऽनुचरन्ति परिहारिका इत्यर्थः । ठाणा० १६८ ।

निर्विषयम्– । ठाणा० ४०२ ।

निर्विट्टं-अलब्धं–अनुपात्तं स्यादित्यर्थः । दत्तार्थत्वात् । ठाणा० ३१४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निर्विष्टकायाः-आसेवितपरिहारविशुद्धचारित्रकायास्तु मुनयः । विशे० ५५४ ।

निर्विष्टकायिकं-यस्तु निर्विष्टकायिकानामासेवितविवक्षित-चारित्रकायानां तत् । ठाणा० ३२४ ।

निर्वृत्तिः-द्रव्येन्द्रियभेदः । प्रज्ञा० २४ । भग० ८७ । निष्पत्तिः । ठाणा० २८५ । प्रतिविशिष्टः संस्थान विशेषः । जीवा० १६ । नंदी० ७५ ।

निर्वेदः-सम्यक्त्वस्य तृतीयं लक्षणम् । आव० ५६१ ।

निर्वेष्टना- । आव० ३३१ ।

निर्व्याघात-यत्सूत्रार्थनिष्ठितः उत्सर्गतो द्वादश समाः कृत-परिकर्मा सन् काल एव करोति । ठाणा० ६५ । पाद-पोपगमनस्य द्वितीयो भेदः । सिंहाद्युपद्रवव्याघाताभावः । दश० २६ ।

निर्व्यूहना-अपाकरणम् । व्य० प्र० १८५ अ ।

निर्हरणं-निस्सारणम् । ठाणा० ६४ ।

निर्हारिलाला-कृमिसूत्रम् । ठाणा० २१६ ।

निलओ-निलयः । आव० ६८० ।

निलयः-आधायाः परावर्त्तितद्वारे श्रेष्ठी, वसन्तपुरे श्रेष्ठी । पिण्ड १०० । उपाश्रयः । प्रश्न० १२८ ।

निलिच्छमाणा-निरीक्षमाणाः । व्य० प्र० १३० अ ।

निलीयंति-निलीयन्ते-विनश्यन्ति । भग० २४६ ।

निलुक्क-(देशी०) विरतः । आव० १८६ । आचा० ४२४ ।

निलुक्किउं-निलातुम् । आव० ३१६ ।

निल्लंछणं-निर्लाञ्छनं वर्द्धितकरणम् । प्रश्न० ३८ ।

निल्लंछणकम्म-निर्लाञ्छनकर्म-पञ्चदशकर्मादाने द्वादशम । आव० ८२६ । निर्लाञ्छनकर्म-वर्धितकरणम् । उपा० ६ ।

निल्लालिय-निर्लालिता निष्काशिता । उपा० २२ । विवृतमुखान्निःसारितम् । ज्ञाता० १३७ ।

निल्लालियग्ग-निर्लालिताग्रा प्रसारिताग्रा । ज्ञाता० १६ ।

निल्लेव-निर्लेपः अत्यन्तसंश्लेषात्तन्मयतां गतः । भग० २७७ अत्यन्तसंश्लेषात् तन्मयतागतवालाग्रलेपापहारान्निर्लेपः । अनु० १८० । निर्लेपः-भूमिभित्त्यादिसंश्लिष्टसिकतालेपाभावात् । भग० ६७६ । निर्लेपः-निष्ठामुपगतः । जीवा० १४१ ।

निल्लेवण-निर्लेपनः-रजकः । व्य० प्र० १०४ अ ।

निवज्जइ-निषद्यते-शेते । ज्ञाता० २०५ ।

निवज्जणा-स्वपन्ति । ओघ० १०७ ।

निवज्जाविओ-निमज्जितः । आव० २२७ ।

निवज्जावेति- । निरय० ११ ।

निवइभत्ति-निर्वाप्यन्ते नितरामभ्युपगतमरणं प्रपद्यन्ते । व्य० द्वि० ४२४ आ ।

निवट्टगं-निर्वर्त्तितम् । आव० ७६२ ।

निवडइ-निपतति । ज्ञाता० १६६ । निपतति-शिथिल-वृन्तबन्धनत्वात् भ्रश्यति । उत्त० ३३३ ।

निवण्ण-शयितः । बृ० तृ० १६८ आ । निर्विण्णः-सन्नि-विष्टो दण्डायतादिना । आव० ५६४ ।

निवण्णा-सुप्ता । नि० चू० प्र० २०४ आ ।

निवण्णुस्सिओ-निवण्णोत्सृतः । आव० ७७२ ।

निवतिते-उपरि पतितं सत् पीडयति तन्निपतितं-त्वग्विषम् दृष्टिविषं च । ठाणा० ३७५ ।

निवन्ना-निपण्णः,त्वग्वर्त्तितः । बृ० द्वि० १३ आ । निषण्णः। आव० ६७५ । शयानः । व्य० द्वि० ३११ आ । निष्पन्नः-उपसम्पन्न आश्रितः । भग० १६४ । निवण्णः । आव० ७७२ ।

निवन्ननिवन्नगो-निवण्णनिवण्णः । आव० ७७२ ।

निवन्ना-निर्वर्णा । ठाणा० २६६ ।

निवयउप्पयं-निपातोत्पातं-दिव्यनाट्यविधिः । जं० प्र० ४१२, ४१८ ।

निवया-निवाताः । आचा० ३२६ ।

निवर्तनं-गन्तव्यं भिक्षाया इत्यर्थः । ओघ० १७४ ।

निवर्तन्ते-न गृह्णन्ति । ओघ० २०१ ।

निर्वर्त्तितं-सर्वथा परिसमाप्य । ठाणा० ३८४ ।

निवर्त्य-असारान् पृथक्कृत्येति । ठाणा० ३८४ ।

निवसणं-निवसनं परिधानम् । प्रज्ञा० ६६ । ज्ञाता० २०० ।

निवसनं-विशिष्टरचनारचितपरिधानलक्षणम् । अनु० १४३ ।

निवसमानः-वसन् । आव० ६४४ ।

निवह-सङ्घातः । आव० ६२ ।

निवाई-निपतितुं शीलमस्येति विगृह्य णिनिः निपतनं वा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निपातः सोऽस्यास्तीति निपाती । आचा० २०६ ।

निवाए–निपातः चन्द्रसूर्यैः सह सम्पातः । सूर्य० १०० ।

निवाओ–निपातः स्पर्शनम् । बृ० तृ० १३ अ ।

निवाडेइ–निपातयति लगयति । जीवा० २५५ ।

निवात–निपातः अवकाशः । व्य० द्वि० २७४ आ । निपातनमवकाशः । व्य० द्वि० २८५ आ ।

निवाता–या तु शीतकाले पूर्वाह्णे उपलेपनकरणेन रात्रौ व्यपगता स्नेहा जायते सा । बृ० प्र० २६३ अ ।

निवाय–तत्तदर्थद्योतनाय तेषु तेषु स्थानेषु निपतन्तीति निपाताः । प्रश्न० ११७ ।

निवायगंभीरा–निर्वातगम्भीरा–निर्वातविशाला । भग० ३१३ ।

निवायणं–निपातनं गर्त्तादौ क्षेपणम् । प्रश्न० २२ ।

निवाया–निर्वाता वायु प्रवेशरहिता । भग० ३१३ ।

निवासो–भत्तारागुप्पयाणं । दश० चू० १४१ ।

निविज्जंतो–निर्विद्यते । आव० २८६ ।

निविट्ठ–निर्विष्टं–परिभुक्तम् । प्रश्न० ७१ । निकाचितः । जं० प्र० २७८ ।

निविट्ठसंचिअ–निविष्टसंचितः निकाचिततया संचितः । जं० प्र० २७८ ।

निविट्ठाइं–स्थापितानि । भग० ५६६ ।

निविण्ण–निर्विण्णाः उद्विग्नाः संसारभयात् । उत्त० ३६७ ।

निवित्ति–निवृत्तिः–अन्यदर्शनाभिहिता । आचा० १७७ ।

निवुट्ठदेवित्तए–निवृष्टो देवः । आचा० ३८६ ।

निवुड्ढो–निवृद्धिः शरीरस्यैव हानिः । ठाणा० ३५६ ।

निवुड्ढित्ता–निवर्ध्य हापयित्वा । सम० ८६ ।

निवुड्ढमाणो–निर्वेष्टयन् हापयन् । सूर्य० २६, ४३ ।

निवृत्तिः–आकारः द्रव्येन्द्रियविशेषः । ठाणा० ३३४ ।

निवृत्तिबादरः–दर्शनसप्तके उपशान्ते प्राप्तव्यं गुणस्थानकम् । आव० ८२ ।

निवेढेमाणो–निर्वेष्टयन् – पूर्वपूर्वमण्डलगतान्तरपरिमाणात् हापयन् ।

निवेयणपिंड–उवाइयं अणोवाइयं वा जं पुण्णभद्द माणिभद्द सव्वाण जक्खमहेडिमादियाणनिवेदिज्जति सो निवेयणापिंडो । नि० चू० द्वि० २३ अ ।

निवेश–स्थापनः । नंदी० १६१ ।

निवेशनं–गुरोर्निवेशनं स्थानं यस्यासौ तन्निवेशनः । आचा० २१६ ।

निवेशना–स्थापना । उत्त० ६३२ ।

निवेस–निवेशः निवेशो नाम यत्र सार्थ आवासितः । बृ० प्र० १८१ आ । निवेशः–स्थापनां अभिनवग्रामादीनाम् । ठाणा० ४४६ । आयः । ओघ० १७६ ।

निवेसण–निवेशनानि गृहाणि । उत्त० ३८७ । निवेशनं गृहम् । व्य० द्वि० ३३७ अ । उपाश्रयप्रतिबद्धपाटकम् । बृ० तृ० १४६ आ । निवेशनं–महागृहपरिवारभूतगृहसमुदायरूपम् । बृ० प्र० १४६ अ । त्रिप्रभृतीनां गृहाणामाभोगः । बृ० तृ० २३ आ । वाटकः । बृ० द्वि० १८१ आ । निवेशनम् । आव० ६३६ । निवेशनं एकनिष्क्रमणप्रवेशानि द्व्यादिगृहाणि । पिण्ड० १०३ ।

निव्व– । ठाणा० ४६२ ।

निव्वए–अणुव्रतरहितः । ज्ञाता० २३८ ।

निव्वओ–अवेदनः । मर० ।

निव्वट्ट–निर्वरीत । पउ० २७–१६ ।

निव्वट्टण–निवर्त्तनानि मार्गनिर्घटनस्थानानि । ज्ञात० ८१ ।

निव्वट्टयित्ताणं–निवर्त्य जीवप्रदेशेभ्यः शरीरकं पृथक्कृत्येत्यर्थः । ठाणा० ६० ।

निव्वडिम–निर्वर्त्तितं–बद्धास्थि । दश० २१६ ।

निव्वण–निरणः नक्षतादिरहितः । ओघ० २११ । निर्व्रणं-निरतिचारम् । प्रश्न० १५६ । निर्व्रणं-व्रणरहितम् । ओघ० ३० । व्रणकै रहितम् । ज्ञाता० ६१ । निरणं विस्फोटकादिक्षतरहितम् । जीवा० २७३ । निर्व्रणः–अक्षतः, अखण्डः । प्रश्न० ११० ।

निव्वण्ण–निर्विण्णः पापकर्म्मभ्यः पापकर्म्मसु वा कर्त्तव्येषु निवृत्तः । आचा० १६४ ।

निव्वण्णंतो–निर्वर्णयन् । आव० २१६ ।

निव्वत्त–निर्वृत्तः कृतः । ज्ञाता० ४१ ।

निव्वतए–निर्वृत्ते । आव० १२४ ।

निव्वतण–निर्वर्त्तनं–असिशक्तितोमरादीनां निष्पादनम् । भग० १८२ । निर्वर्त्तनं–असिशक्तिकुन्ततोमरादीनां मूलतो निष्पादनम् । प्रज्ञा० ४३६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निव्वत्तणया-शरीरनिर्वृत्तिः । सम० १४६ ।

निव्वत्तणा-निर्वर्त्तना इन्द्रियाणाम् । आव० ३४१ । निर्वर्त्तना-प्रथमतो घटना । बृ० द्वि० २३४ अ । निर्वर्त्तना-बाह्याभ्यन्तररूपा या निर्वृत्तिः-आकारमात्रस्य निष्पादनम् । प्रज्ञा० ३०६ ।

निव्वत्तणाधिगरणिया-निर्वर्त्तनं - असिशक्तिकुन्ततोमरादीनां मूलतो निष्पादनं तदेवाधिकरणिकी निर्वर्त्तनाधिकरणिकी, पञ्चविधस्य वा शरीरस्य निष्पादनं निर्वर्त्तनाधिकरणिकी । प्रज्ञा० ४३६ ।

निव्वत्ति-निर्वृत्तिः बन्धनम् । भग० ५३३ ।

निव्वत्तिज्जमाणे-निर्वृत्यमानं नितरां वर्त्तुलीक्रियमाणं प्रत्यञ्चाकर्षणेन । भग० ६३ ।

निव्वत्तिए-निर्वृत्तितं वृत्तीकृतं-मण्डलाकारं कृतम् । भग० ६३ ।

निव्वत्तिय-निर्वर्त्तितं-रौद्रध्यानादिना कृतम् । आव० २५८ ।

निव्वयंते-उत्पततः । आव० २०३ ।

निव्वलिया-निर्बलिताः शुद्धाः । विशे० ५४१ ।

निव्वाघाइम-निर्व्याघातिमं व्याघातिमान्निर्गतं स्वाभाविकमिति । जीवा० ३८४ ।

निव्वाघाए-निर्व्याघातः-कारणाभावः । जं० प्र० १५० ।

निव्वाघाओ-निर्व्याघातः-क्षणिकः । ओघ० २०० ।

निव्वाघात-निर्व्याघातं-न कश्चिद् घङ्कशालायां धर्मकथादिर्वा कालव्याघातः वैदेशिकादिव्याघातो वा । ओघ० २०१ ।

निव्वाघायं-व्याघातस्याभावो निर्व्याघातम् । जीवा० ३६ । अप्रतिहतम् । ज्ञाता० १५३ ।

निव्वाण-मोक्षस्तद्धेतुत्वात् निर्वाणम्। अहिंसायाः प्रथमं नाम। प्रश्न० ६६ । सकलकर्मविरहजं सुखम् । ज्ञाता० ५१ । सर्वद्वन्द्वोपरतिस्वभावम् । सूत्र० ३८ । निर्वृतिः-सकलकर्मक्षयजमात्यन्तिकं सुखम् । आव० ७६१ । निर्वाणं निर्वृत्तिः अशेषकर्मरोगापगमेन जीवस्य स्वरूपेऽवस्थानं-मुक्तिपदमिति । आव० ६६ । कर्मकृतविकाररहितत्वम्। ठाणा० १५७ । अशेष कर्म्मक्षयस्तदवाप्तौ वा विशिष्टाकाशप्रदेशः । आचा० १५१ । निर्वाणं-मोक्षः । आव० ५४३ । निर्वाणं-निर्वृतिः सामान्येन सुखम् । मोक्षः । आ० ५८४ । निर्वान्ति - कर्मानलविध्यापनाच्छीतीभवन्त्यस्मिन् जन्तव इति निर्वाणम् । उत्त० ५११ । शान्ति । महाप० ।

निव्वाणमग्ग-निर्वाणमार्गः-असाधारणरत्नत्रयरूपः । जं० प्र० १५१ । सकलकर्मविरहजसुखोपायः । भग० ४७१ ।

निव्वाय-निर्वातः निर्व्याघातः । ज्ञाता० ४१ ।

निव्वावए-निर्वापयेत् अभावमापादयेत् । दश० २२८ ।

निव्वावण-निर्वापणं-विध्यापनम् । दश० १५४ ।

निव्वाविय-निर्वापितं शीतलीकृतम् । ज्ञाता० २६ ।

निव्वावेति- भग० ३२६ ।

निव्वाहणाय-निर्वाहणाय-वस्त्राभ्यङ्गतैलादिना यापनार्थम्। उत्त० ५२४ ।

निव्वाहि-निर्वाहि-पृथक् फलिहकम् । बृ० द्वि० ६० अ ।

निव्विद-निर्विन्दस्व जुगुप्सव । आचा० १४३ ।

निव्विदए-निर्विन्ते सम्यग् विचारयति । दश० १५६ ।

निव्विदेज्ज-निर्विद्येत-जुगुप्सयेत्, परिहरेत् । सूत्र० ७४ ।

निव्विगइ-निर्विकृतिकः निर्गतविकृतिपरिभोगः । दश० २८१ ।

निव्विगप्पो-निर्विकल्पः निःसंदिग्धः । दश० १२६ ।

निव्विगार-निर्विकारं विभूषाभ्रूक्षेपादिविकाररहितम् । अनु० १४० ।

निव्विगितिए- । भग० ६२१ ।

निव्विज्जे-सम्यक्शास्त्रावगमरूपायाः निर्विद्यः । उत्त० ३४४ ।

निव्विट्ठ-निर्विष्टं-लब्धम् । जं० प्र० २१० ।

निव्विट्ठकाइय-निर्विष्टकायिकं परिहारविशुद्धिचारित्रभेदविशेषः । प्रज्ञा० ६४ । निर्विष्टकायिकाः, आसेवितविवक्षितचारित्रकायाः । प्रज्ञा० ६४ । निर्विष्टकायिका नाम यैः परिहारविशुद्धिकं तपो व्यूढं, निर्विष्टः-आसेवितो विवक्षितचारित्रलक्षणः कायो यैस्ते निर्विष्टकायिकाः । बृ० तृ० २५१ अ ।

निव्विडुंतो-निर्वेष्टयन् । आव० ३३६ ।

निव्विण्णचारो-चारः-अनुष्ठानं निर्विण्णस्य चारो निर्व्विण्णचारी । आचा० २१२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निव्वितिगिच्छं–निर्विचिकित्सं, विचिकित्सा फलं प्रति सन्देहो, यथा–यतः क्लेशस्य फलं स्यादुत नेति तदभावो निर्विजुगुप्सं–जुगुप्सा वा यथा–किममी यतयो मलदिग्धदेहाः ? प्रासुकजलस्थाने हि क इव दोषः स्यादित्यादिका निंदा तदभावो । उत्त० ५६७ । निर्विजुगुप्सः–साधुजुगुप्सारहितः । दश० १०२ । निर्विचिकित्सः साध्वेव जिनदर्शनं किन्तु प्रवृत्तस्यापि सतो ममास्मात् फलं भविष्यति न भवितीति विकल्परहितः, सञ्जातनिश्चयः । दश० १०२ । फलं प्रति निःशङ्कः । ज्ञात० १०६ । निर्गता विचिकित्सा–मतिविभ्रमो यस्य सः निर्विचिकित्सः । दश० १०२ । विचिकित्सा–मतिविभ्रमः–फलं प्रति संशय इति यावत्, निर्गता विचिकित्सा यस्मादसौ निर्विचिकित्सः । प्रज्ञा० ५६ ।

निव्वित्ती–निर्वृत्तिः सकलावरणक्षयादुत्पत्तिः, प्रत्ययः । उत्त० ४१ ।

निव्विदुगुंछो–निर्विद्वज्जुगुप्सः साधुजुगुप्सारहितः । प्रज्ञा० ६१ ।

निव्वियत–निर्विकृतिकः–निर्गतो घृतादिविकृतिभ्यो यः स । ठाणा० २६८ ।

निव्विसओ–निर्विषयः । आव० २२१ ।

निव्विसति–निर्विशति उपभुङ्क्ते । व्य० द्वि० २६४ आ ।

निव्विसमाण–निर्विशमानका विवक्षितचारित्रसेवकाः । प्रज्ञा० ६४ । निर्विशमानकं, परिहारविशुद्धिचारित्रभेदविशेषः । प्रज्ञा०६४ । निर्विशमानकं परिहारविशुद्धिकल्पं वहमानाः । बृ० तृ० २५१ अ । परिहारविशुद्धिकल्पं वहमाना निर्विशमानका यैरसौ व्यूढस्ते । ठाणा० ३७४ ।

निव्विसमाणग–निर्विशमानकः-परिहारकल्पस्थितः । व्य० प्र० १३८ आ ।

निव्विसय–निर्विषयः । आव० १६२ । निर्विषयः–देशान्निष्कासितः । प्रश्न० ६० । निर्विषयः–शब्दादिविषयरहितः, यद्वा विषयो–देशस्तद्विरहितः । उत्त० ४११ । निर्विशकः–उपभोक्ता । पिण्ड० ४७ ।

निव्विसया–निर्विषयता–देशाद्बहिः । आव० ४०१ ।

निव्वुइ–निर्वृतिः मनःस्वास्थ्यम् । प्रश्न० ४२ ।

निव्वुइकर–निर्वृतिकरः स्वास्थ्यनिबन्धनाकरणशीलः प्रशस्तभावकरविशेषः । आव० ४६६ ।

निव्वुइकरा–अष्टादशजिनस्य शिबिकानाम । सम० १५१ ।

निव्वुई–निर्वृत्तिः–स्वास्थ्यम्, अहिंसाया द्वितीयं नाम । प्रश्न० ६६ । निर्वृत्तिः–स्वास्थ्यम् । प्रश्न० ६४ । निर्वृत्तिः–प्रतिविशिष्टः संस्थानविशेषः । प्रज्ञा० २६३ । निर्वृत्तिः–तितिक्षोदाहरणे मथुराधिपतिजितशत्रुकन्या । आव० ७०२ । निर्वृत्तिः–जितशत्रुराजकन्या । उत्त० १४८ ।

निव्वुड–जीवविप्पजढं । दश० चू० ५१ । निर्वृतं–अग्निदग्धोद्वृतम् । दश० ११७ । निर्वृतः–कषायोपशमाच्छीतीभूतः । सूत्र० २०७ । निर्वृतं निष्ठागतम् । निरावरणम् । भग० २१७ ।

निव्वुडा–तीर्थकरोपदेशवासितान्तःकरणा विषयकषायाग्न्युपशमान्निर्वृताः–शीतीभूताः । आचा० १६२ ।

निव्वुडओ–निर्मुडितः । आव० ६४१ ।

निव्वुड्ढी–निवृद्धिः–दिनस्य हानिः । भग० १४७ । निवृद्धिः–यथोक्तस्वरूपवृद्धयभावः । सूर्य० २४३ । निर्वृद्धिः–वृद्धेरभावः, हानिप्रतिभासः । जीवा० ३४५ । निवृद्धिः–शरीरस्य हानिर्वातपित्तादिभिः, निशब्दस्याभावार्थत्वात् । ठाणा० ६६ ।

निव्वुता–सत्थिदिया सुही निव्वुता । नि० चू० प्र० २१२ आ ।

निव्वुती–निवृत्तिः–चित्तस्वास्थ्यम् । प्रश्न० १३३ ।

निव्वुयहियए–निर्वृत्तं-स्वस्थीभूतं हृदयं–अन्तःकरणमस्येति निर्वृत्तहृदयः । उत्त० ५८१ ।

निव्वेअ–निर्वेदः–उद्वेगः । अनु० १३८ ।

निव्वेए–निर्वेदः–संसारविरक्तता । भग० ७२७ । निर्वेदः–धर्मकथायाश्चतुर्थो भेदः । दश० ११० ।

निव्वेगणी–निर्विद्यते–संसारादेर्निर्विण्णः क्रियते अनयेति निर्वेदनी । ठाणा० २१० ।

निव्वेय–निर्वेदः–संसारोद्विग्नता । उत्त० ४४१ । निर्वेदः–निःकुमानुषत्वमित्यादेर्विरक्तता । बृ० प्र० ३८ अ । नरकस्तिर्यग्योनिः कुमानुषत्वं च एतत्प्ररूपणं निर्वेदहेतुत्वान्निर्वेदः । दश० ११३ ।

निव्वेयणी–निर्वेद्यते संसारनिर्विण्णो विधीयते श्रोतायकया सा निर्वेदनी । ओप० ४६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निव्वोदय–नीव्रोदकम् । आव० ४२६ ।

निश्चयः–संकेतस्मरणादि पूर्वको हि निश्चयः । विशे० ६१ । निश्चयः–बहुबहुविधादिग्राहको हि विशेषावगमः । विशे० १६५ । भग० ७३९ ।

निश्चयकथा–सा चापवादकथा, पर्यायास्तिकनयकथा वा । सम० २४ ।

निश्चलमनाः–श्रमणः तपस्युद्युक्तः समना वाऽऽसीत् निश्चलमना इत्यर्थः । आचा० ३०७ ।

निश्चितं–निकाचितं प्रमाणम् । ठाणा० ४३५ ।

निश्चितिः–गाथा, प्रतिष्ठा च । आव० ८०४ ।

निश्यजिह्व–महाकुष्ठविशेषः । आचा० २३५ ।

निषण्णः– । आचा० २९२, २९४ ।

निषदन– । ठाणा० ३ ।

निषद्या–प्रणिपत्य पृच्छा । विशे० ८६० ।

निषद्यागतः–आसनस्थः । आव० ५४१ ।

निषधः–द्वारवत्यां बलदेवपुत्रः । विशे० ६१० । वर्षधरपर्वतविशेषः । प्रश्न० ९६ । ठाणा० ३२६ । निषधः । प्रश्न० ७३ ।

निषीधिका–आसनम् । उत्त० ७२ ।

निषेकः–चितस्याबाधाकालं मुक्त्वा ज्ञानावरणीयादितया निषेकः । ठाणा० १०१ । कर्म्मपुद्गलानां प्रतिसमयानुभवनरचनेति । ठाणा० ३७६ ।

निष्काङ्क्षः–वस्त्राद्यभिलाषरहितः । उत्त० ५८८ ।

निष्कालयते–प्रमुच्यते । प्रश्न० ६० ।

निष्कुटः– । भग० २९ ।

निष्कुटनं–उपयोगनिरीक्षणम् । ओघ० १६७ ।

निष्ठा–पारम् । आव० २६९ ।

निष्ठितार्थः–अणिमाद्यैश्वर्याप्त्या तथाविधमनुष्यकृत्यापेक्षया सिद्धार्थः । जीवा० ४७ ।

निष्ठीवनं–खेलः । भग० ८७ । निष्ठ्यूतम् । आव० २५ ।

निष्ठुरं–कठोरम् । आव० ८३४ ।

निष्ठ्यूतं–निष्ठीवनम् । आव० २५ । नंदी० १६७ ।

निष्पक्वः–क्वथितः । जं० प्र० १०५ ।

निष्पङ्का–निकलङ्कविकलत्वात्–कर्दमविशेषरहितत्वात् वा । सम० १४० ।

निष्पन्नः–परिनिष्ठितः । आव० ४०८ । आचा० २९२ । आव० ६५७ ।

निसंत–निशान्तः श्रुतोऽवगतः । आचा० ३६६ । निशान्तः निःसंचारवेला । बृ० द० २१२ अ । निशान्तः–गृहम् । बृ० द्वि० १५ आ । निशान्तः–परिचितः । आचा० २६६ । निशान्तः–राज्यवसानं, दिवसः । दश० २४६ । गृहम् । ज्ञाता० १४९ । निशमितः, श्रुतः । भग० ४६७ ।

निसंस–नृशंसं शूकावर्जितम् । प्रश्न० ११० । नृन्–नरान् शंसति–हिनस्तीति नृशंसः, निःशंसो–विगतश्लाघः । ज्ञाता० ८० ।

निसंतपडिसंते–निशान्तप्रतिनिशान्त–अत्यन्तभ्रमणादुपरतः । बृ० द्वि० १५ आ ।

निसंसतिए–निःसंशयिकः–शौर्यातिशयादेव तत्साधयिष्याम्येवेत्येवं प्रवृत्तिकः । ज्ञाता० ८० ।

निसग्ग–निसर्गः–स्वभावः । नि० चू० तृ० ९ अ । निसर्गः उत्सर्गः । व्य० द्वि० १० अ । निसर्गः स्वभावः । आव० ५२८, ६०४, ८३८ । प्रज्ञा० ५८ ।

निसग्गरुइ–स्वभावत एव तत्त्वश्रद्धानम् । भग० ९२६ ।

निसग्गरुई–निसर्गः स्वभावः तेन रुचिः जिनप्रणीत तत्त्वाभिलाषरूपा यस्य स निसर्गरुचिः । प्रज्ञा० ५६ । निसर्गः–स्वभावस्तेन रुचिः–तत्त्वाभिलाषरूपाऽस्येति, निसर्गतो वा रुचिरिति निसर्गरुचिः, यो हि जातिस्मरणप्रतिभादिरूपया स्वमत्याऽवगतान् सद्भूतान् जीवादीन् पदार्थान् श्रद्दधाति स निसर्गरुचिः । ठाणा० ५०३ ।

निसज्जा–निषद्या-पुताभ्यां भूम्यामुपवेशनम् । औप० ४० ।

निसज्ज–रजोहरणनिषद्या । ओघ० १३२ ।

निसट्ठ–निसृष्टः निसृष्टाङ्गा मुक्ताङ्गा । सम० ११७ । अत्यन्तम् । आव० २०६ । निसृष्टं–निश्चेष्टम् । दश० ३६ । निसृष्टं–अत्यर्थम् । प्रश्न० ५९ । निसृष्टं–प्रचुरम् । ओघ० ४८ ।

निसढ–निषधः–द्रहनाम । जं० प्र० ३०८ । निषढः बलदेवपुत्रः । आव० ९४ । पञ्चमवर्गे प्रथममध्ययनम् । निरय० ३९ ।

निसढा–निष्पन्ना । मर० ।

निसण्ण–निषण्णः । आव० ७७४ । निषण्णः–उपविष्टो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीरासनादिना। आव० ५६४।

निसनुस्सिओ–निषण्णोत्सृतः। आव० ७७२।

निसन्न–निषण्णः। ठाणा० २६६। निषण्णः। आव० ७७२।

निसम्म–निशम्य–मनसा अवधार्य। भग० ८६। निशम्य मनसाऽवधार्य्य। ठाणा० ११६। निशम्य–निश्रित्य। आचा० ३३१। निशम्य–ज्ञात्वा। आचा० ३५०।

निसम्मभासी–निशम्यभाषी। आचा० ३६२।

निसरइ–निसृजति निष्काशयति। जीवा० २४४।

निसह–निषधः निषधवर्षधरपर्वते द्वितीयं कूटम्। ठाणा० ७२। ह्रदविशेषः। ठाणा० ३२६। निषधः–वर्षधरपर्वतविशेषः। ठाणा० ६८। निषधः–बलीवर्दः। सूर्य० ७१।

निसहदहे–ह्रदविशेषः। ठाणा० ३२६।

निसाकप्पे–कायिकामात्रके मोकं गृहीत्वा तेनाचमनं कर्तव्यम्, अभिगतस्य गीतार्थस्याचीर्णमेतत्, एष च निशाकल्प उच्यते। बृ० नृ० २०३ अ।

निसापाहाणे–मुद्गादिदलनशिला। उपा० २१।

निसामिति–अवधारयन्ति। आचा० ४२४।

निसामेह–निसामयत शृणुत। आव० २२६।

निसाय–निषादः–पारासरः, शूद्राब्राह्मणाभ्यां जातः। आचा० ८।

निसाविहंगा–उलूकाः। बृ० द्वि० १६७ आ।

नसालोढे–शिलापुत्रकः। उपा० २१।

निसिज्ज–स्वाध्यायादिभूमिः। दश० २८१।

निसिज्जहरो–निषद्याधरः। आव० ७४५।

निसिज्जा–स्त्रिया सहासनम्। सम०३६। निषद्या-स्वाध्यायभूम्यादिका यत्र निष्पद्यते। उत्त० ४३४। निषद्या–रजोहरणवेष्टनकं सौत्रिकमौर्णिकं वा। बृ० द्वि० २५३ अ। निषद्या। आव० ३२३।

निसिज्जाओ–निषदनानि निषद्याः–उपवेशनप्रकारास्तत्रासनालग्नप्लुतः पादाभ्यामवस्थितः। ठाणा० ३०२।

निसिट्ठ–निसृष्टः–अनुज्ञातः आक्रान्तिकस्तेनो वा। बृ० द्वि० १६७ अ। निसृष्टः अनुज्ञातः। व्य० प्र० २३४ अ।

निसिट्ठाइं–जीवेन निःसृष्टानि स्वप्रदेशेभ्यस्त्याजितानि। भग० ५६६।

निसिद्धप्पा–निषिद्धो मूलगुणोत्तरगुणातिचारेभ्य आत्मा येनेति निषिद्धात्मा। आव० २६७।

निसियरा–निशाचराः–पिशाचादयः। ओघ० १२५।

निसिया–निशिताः तीक्ष्णाः। उत्त० ३४६।

निसिर–निसृजेद् ब्रूयात्। दश० २३६।

निसिरइ–निःसृजति–क्षिपति। भग० ६३। निसृजति-उत्सृजति। विशे० २०६।

निसिरणे–निसर्गः भाषाद्रव्याणां वाग्योगेनोत्सर्गक्रिया। दश० २०८।

निसिरे–व्युत्सृजति। आव० ६१८।

निसिरेज्जा–व्युत्सृजेत्। ओघ० १६७।

निसियंत–निषीदनं उपवेशनम्। दश० १५५।

निसीयण–निषीदनं–उपवेशनम्। ओघ० २१४। निषीदनम्। आव० ६५४।

निसीलो–निःशीलः गृहस्थः। सूत्र० ६।

निसीह–निशीथवन्निशीथम्। नंदी० २०६। निशीथं–यद् रहसि पठ्यते व्याख्यायते वा। उत्त० २०४। प्रच्छन्नं-निषीथं बद्धश्रुतं, गुप्तार्थं वा, रहस्य पाठात् रहस्योपदेशाच्च निषीथम्। आव० ४६४।

निसीहज्झयणं–आचाराङ्गे पंचविंशतितममध्ययनम्। सम० ४४।

निसीहऽभिहडे–निशीथाभ्याहृतं–अविदितदायकभावं यत्। पिण्ड० १०३।

निसीहिता–निषेधेन निर्वृत्ता नैषधिकी–व्यापारान्तरनिषेधरूपा। ठाणा० ४६६।

निसीहिय–नैषेधिकं–कायोत्सर्गं स्वाध्यायभूमिर्वा। सम० ३६। स्वाध्यायस्थानम्। ठाणा० ३१४। निषिध्यन्ते–निराक्रियन्ते अस्यां कर्माणीति नैषेधिकी–निर्वाणभूमिः। उत्त० ३२१। सकलकर्मनिराकरणलक्षणे भवा, मुक्तिगतिः, प्रतिमा। उत्त० ३२१। निषीधिका–स्वाध्यायभूमिः। आचा० ३६१।

निसीहिया–निषेधः–स्वाध्यायव्यतिरेकेण सकलव्यापारप्रतिषेधः तेन निवृत्ता नैषेधिकी। व्य० प्र० १२७ अ। निषेधेन–स्वाध्यायव्यतिरिक्तशेषव्यापारप्रतिषेधेन निवृत्ता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नैषेधिकी । व्य० प्र० १२७ आ । जत्थ सज्झायं करेति, सेज्जाए वा निसीहिएति । दश० चू० ८५ । नैषेधिकी-वसतिप्रवेशे निषिद्धोऽहं गमनक्रियाया इति भणनम् । बृ० प्र० २२२ अ । नैषेधिकी । आव० ६७२ । निषीदन्त्यस्यामिति निषद्या स्थानम् । आव० ६५७ । बावीसपरीषहे दशमपरीषहः । आव० ६५७ । नैषेधिकी-प्राणातिपातादिनिवृत्ता । आव० ५४७ । नैषेधिकी-निषीदनस्थानं, द्वारकुड्यसमीपे नितम्बः । जीवा० ३६० । स्वाध्यायभूमिः । ज्ञाता० २०६ । निषेधे भवा नैषेधिकी-उपाश्रयाद्बहिः कर्त्तव्यव्यापारेऽवसितेषु पुनस्तत्रैव प्रविशतः साधोः शेषसाधूनामुत्त्रासादिदोषपरिजिहीर्षया बहिर्व्यापारनिषेधेनोपाश्रयप्रवेशसूचनादिति । अनु० १०३ । स्वाध्यायभूमिः शून्यागारादिरूपा । भग० ३६० । ग्रामादिषु प्रतिपन्नमासकल्पादेः स्वाध्यायादिनिमित्तं शय्यातो विविक्ततरोपाश्रये गत्वा निषीदनम् । भग० ३६१ । निषधेन निर्वृत्ता नैषेधिकी दशधा सामाचार्यां पञ्चमी । आव० २५६ । निषीधिका । ओघ० १७४ । नैषेधिकी स्वाध्यायभूमिः । दश० १८२ । नैषेधिकी निषेधनं निषेधः पापकर्मणां गमनादिक्रियायाश्च स प्रयोजनमस्याः नैषेधिकी-स्मशानादिका स्वाध्यायादिभूमिः निषद्या वा । उत्त० ८३ । दशधासामाचार्यां पञ्चमी । भग० ६२० ।

निसीहियाए-नैषेधिकी-निषीदनस्थानम् । राज० ६४ । निशीथिका-द्वितीयमध्ययनम् । आचा० ४०७ ।

निसीहियापरीसहे-सोपद्रवेतरा च स्वाध्यायभूमिः, द्वाविंशतिपरीषहे दशमः । सम० ४० ।

निसीहियारए-निषीधिकारताः स्वाध्यायध्यायिनः । आचा० ३६६ ।

निसुंभंति-भूमौ पातयन्ति । आव० ६५० । कुक्काटिकायां गृहीत्वा भूमौ पातयन्ति । सूत्र० १२५ ।

निसुंभ-निशुम्भः-पुरुषसिंहवासुदेवशत्रुः । आव० १५६ ।

निसुंभा-वैरोचनेन्द्रस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी । भग० ५०३ । ज्ञाता० २५१ ।

निसेए-निषेकः-स्वस्वाबाधाकालस्योपरि ज्ञानावरणीयादिकर्मपुद्गलानां वेदनार्थमुपचयः । प्रज्ञा० २६२ ।

निसेक-निषेकः-कर्मपुद्गलानां प्रतिसमयमनुभवनार्थं रचना । भग० २८० ।

निसेज्जा-रयहरणस्योपरितनाः ओघ० १११ । जंमि निसण्णो अच्छइ । दश० चू० ५१ ।

निसेह-निषेधः । आव० २६६ ।

निःसोत्र- । आचा० ३१३ ।

निस्तृंशः-नृशंसः । उत्त० ६५६ ।

निस्तारः- । नंदी० १६३ ।

निस्संकिय-निःशंकितः देशसर्वशङ्कारहितः । दश० १०१ । निर्गतं शङ्कितं यस्मादसौ निःशङ्कितः देशसर्वशङ्कारहितः । प्रज्ञा० ५६ ।

निस्संगो-निःसङ्गः-विषयजस्नेहसङ्गरहितः । आव० ५६२ ।

निस्संचरो-निस्संचारः-मनुष्यसञ्चारवर्जितः । आव० ६४१ ।

निस्संतिया-तं अद्दहियणयं दव्वं अण्णत्थ निस्संदिऊण तेण ताय णेऊ देइ । दश० चू० ८० ।

निस्संधिणा-निस्संधिः । मर० ।

निस्संधी-निःसन्धिः निर्विवरः । प्रश्न० १६ ।

निस्संस-नृशंसं शूकावर्जितम् । प्रश्न० २७ । निःशंसं वा श्लाघारहितम् ।

निस्स-दरिद्रो । नि० चू० प्र० १४१ अ ।

निस्सकयं-निश्राकृतं गच्छप्रतिबद्धम् । बृ० प्र० २७६ आ ।

निस्सग्गरुई-निसर्गः स्वभावस्तेन रुचिः तत्त्वाभिलाषऽपाऽस्येति निसर्गरुचिः । उत्त० ५६३ ।

निस्सन्नगनिसन्नओ-निषण्णनिषण्णः । आव० ७७२ ।

निस्सयरा-स्वं-कर्मनादिसम्बन्धात्तदपनयनसमर्थानि निःस्वकराणि । आचा० ४३० ।

निस्सल्लो-निःशल्यः शल्यरहितः । आव० ७६३ ।

निस्सहः-स्थैर्यः । नंदी० १६१ ।

निस्सा-निश्रा रागः । व्य० प्र० ७ अ । पक्षपातः । व्य० प्र० २५३ । निश्रा आलम्बनम् । आव० ५३६ । निश्रा-आलम्बनं, उपग्रहहेतुः । ठाणा० ३३६ ।

निस्साए-निश्राय-निश्रां कृत्वा । भग० ३०६, ६६३ ।

निस्साणपदं-निश्रायते-मंदश्रद्धाकैरासेव्यत इति निश्राणं तच्च पदं च निश्राणपदं-अपवादपदम् । बृ० प्र० १२८ अ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अ ।

निस्साधारण–एकाचार्यप्रतिबद्धं क्षेत्रम् । बृ० द्वि० २८० अ ।

निस्सारा–निःसारा–प्रधानगर्भरहिता । ओघ० २१८ ।

निस्सावयण–निश्रया वचनं निश्रावचनम्, कमपि सुशिष्यमालम्ब्य यदन्यप्रबोधार्थं वचनं तन्निश्रावचनं, तद्यत्र विषेयतयोच्यते तदाहरणं निश्रावचनम् । ठाणा० २५३ । एकं कञ्चननिश्राभूतं कृत्वा या विचित्रोक्तिरसौ निश्रावचनम् । दश० ४६ ।

निस्सास–निश्वासः–निर्गमः । भग० ४७० । निःश्वासः–मुखादिना वायुनिर्गमः । भग० ४७० । निःश्वासः–सङ्ख्येयाऽऽवलिका । जीवा० ३४४ ।

निस्सासवायवोऽभं– । आचा० ४२३ ।

निस्सासविसो–निःश्वासविषः–उरःपरिसर्पविशेषः । जीवा० ३६ ।

निस्सिंघियं–निःसिङ्घनं निःसिङ्घितम् । विशे० २७४ ।

निस्सिचमाणे–निःसिञ्चिन्–दत्तोद्वरितं प्रक्षिपन् । आचा० ३४३ ।

निस्सिचिया–निषिच्य तद्भाजनाद्रहितं द्रव्यमन्यत्र भाजने तेन दद्यात्, उद्वर्तनभयेन आद्ररहितमुदकेन निषिच्य । दश० १७५ ।

निस्सिए–निश्रितं – सारङ्गादिधर्म्मविशिष्टमवगृह्णाति । ठाण० ३६४ ।

निस्सित–निश्रितं–रागः आहारादिलिप्सा । ठाणा० ४४१ ।

निस्सिय–निसृतः–निर्गतः । अनु० १२६ ।

निस्सील–निःशीलः–सामान्येन शुभस्वभाववर्जितपौरुष्यादिः । ठाणा० १३२ । अपगतशुभस्वभावः । ज्ञाता० २३८ ।

निस्सीला–निश्शीलाः महाव्रताणुव्रतविकलाः । भग० ३०६ । समाधानरहिताः । भग० ५८२ । निःशीला–निर्गतशुभस्वभावाः, दुःशीला इत्यर्थः । ठाणा० १२६ ।

निस्सेअस–मोक्षः । नंदी० १६५ ।

निस्सेणि–निश्रेणिः । आचा० ३४४ । निःश्रेणिः–अवतरणी । प्रश्न० ८ ।

निस्सेयस–निःश्रेयसः–मोक्षः । भग० ११५ । उत्त० २६१ । निःश्रेयसः–मोक्षः । भग० १६६ । निःश्रेयसः–निश्चितकल्याणम् । जीवा० २४२ ।

निस्सेस–निःशेषः–सर्वः । भग० १६६ ।

निह–स पुनः कषायैः कर्म्मभिः परीषहोपसर्गैर्वा निहन्यत इति निहः । आचा० १२५ । न्यगधस्तात् । सूत्र० १२८ । निहन्यन्ते प्राणिनः कर्मवशगा यस्मिन् तन्निहं–आघातस्थानम् । सूत्र० १३८ ।

निहए–निहतः–कृतसमृद्धयपहारः । औप० १२ ।

निहट्टु–निहत्य–स्थापयित्वा । ज्ञाता० २१० ।

निहणंति–निघ्नन्ति । आव० १२३ ।

निहणिसु–निहतवन्तः–क्षिप्तवन्तः । आचा० ३१२ ।

निहत्त–निधत्तं-उद्वर्त्तनापवर्त्तनकरणवर्जशेषकरणायोग्यत्वेन व्यवस्थापितम् । भग० ६० । निधत्तं–निषिक्तम् । ठाणा० ३७६ । प्रज्ञा० २१७ । भग० २८० । निधत्तं–अपीह निषेक उच्यते । सम० १४७ ।

निहय–निक्षिप्तम् । आव० ७४३ । निहतं निधत्तं निश्चितं प्रमाणम् । ठाणा० ४३५ । निकाचितं भूय उत्थानाभावेन मन्दीकृतम् । जं० प्र० ३८६ । निहतं–क्षणमात्रमुत्थानाभावः । जीवा० २४५ । निहता मारणात् । ठाणा० ४६३ ।

निहयाणि–निर्गतानि आकारमात्रगानि । उप० मा० ३२६ ।

निहरणकारिणः–स्कन्ददायिनः । बृ० प्र० १७१ अ ।

निहरिऊण–विज्ञाय । उप० मा० ४७३ ।

निहस–निकषः–हेमरजतकल्पजीवादिपदार्थस्वरूपपरिज्ञानहेतुत्वात् कषपट्टकः । अनु० १०५ । निकषः–वर्णतः सदृशः । रेखा । भग० १२ । प्रश्न० ७० । निकषः–कषपट्टके रेखालक्षणः । भग० १२ । निघर्षः–कषपट्टके रेखा । प्रश्न० ६५ ।

निहाण–निधानं–परिग्रहस्य पञ्चमं नाम । प्रश्न० ६२ । निधानं–भूमिगतसहस्रादिसङ्ख्यद्रव्यस्य सञ्चयः । भग० २०० ।

निहाय–निधाय–त्यक्त्वा । आच० ३११ । क्षिप्त्वा–त्यक्त्वा आच० २७४ । निधाय–परित्यज्य । सूत्र० ४०० ।

निहार–निर्गतः–प्रमाणम् । ठाणा० ४३५ ।

निहारिम–दूरदेशगामिनी । जं० प्र० ३० । अन्यत्र नयनं तेन निर्हारिमः । बृ० तृ० ३० आ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निहिय-निहितं न्यस्तम् । उत्त० ३४८ । निहितं-स्थापितम् । आव० ६४७ ।

निहिसरिनाम-निधिभिः सदृक्-सदृक्षं नाम येषाम् । ठाणा० ४५० ।

निही-निधि- लक्षादिप्रमाणद्रव्यस्थापनम् । भग० २०० ।

निहु-वनस्पतिजीवविशेषः । आचा० ५७ ।

निहुअ-निभृतं अन्तःकरणाशुभव्यापारचिन्तनपरित्यागात् । आव० १५४ । निभृतः-स्थिरः । उत्त० ४७७, ४९५ ।

निहुअप्पा-निभृतात्मा - असंभ्रान्तः रचिताञ्जलिः । । (?) १९१ ।

निहुआ-निभृता-निर्व्यापाराः । बृ० तृ० ५७ अ ।

निहुय-निभृतं-स्तिमितम् । प्रश्न० १३६ ।

निहुया-स्निहुः स्निहूपुष्पं थोहरपुष्पं अनन्तकायिकम् । प्रज्ञा० २७ । निभृता-निर्व्यापारा । बृ० प्र० ६१ आ ।

निहुवणट्ठिया-निधुवनस्थिता । आव० ४२१ ।

निहूय-णिव्वावारं । उप० मा० ७९ । (देशी) अकिञ्चित्करार्थे । विशे० १०४३ । (देशी) अकिञ्चनकरार्थे । आव० ३२५ ।

निहे-गोपयेत् । आचा० १८० ।

निहेल्लयं-निहितं न्यस्तं च । उत्त० १३० ।

निहोडणं-निहेठितम् । व्य० प्र० २२३ आ ।

निहोडणा-निवारणम् । व्य० प्र० २५३ आ ।

निहोडिहिति-शिक्षयिष्यन्ति । बृ० प्र० ११९ अ ।

निहोडेइ-निहेठयति-वारयति । बृ० प्र० ६१ अ ।

नीअ-नीचं सम्यगवनतोत्तमाङ्गः । लघुतरम् । दश० २५० । नीचं-नम्रकायः । दश० २५० ।

निआं-नीचां गतिम् । दश० २५० ।

नीइ-नीतिः-हक्कारादिलक्षणा सामाद्युपायलक्षणा वा । आव० १२९ । नीतिः-नयनं परिच्छेद इत्यर्थः । दश० १६ ।

नीइकोविए-नीतिकोविदः-न्यायाभिज्ञः । उत्त० ४८३ ।

नीई-नीतिः-अपक्रमादिलक्षणा । उत्त० १४४ ।

नीगालो-क्षरणम् । नि० चू० द्वि० ३१ आ ।

नीणित-निष्काशयन्ति । आव० २१७ ।

नीणियं-आनीतम् । आव० २७२, ७०१ । चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः । जीवा० ३२ ।

नीणिया-चतुरिन्द्रियजीवविशेषः । जीवा० ३२ ।

नीणेइ-निष्काशयति । ओप० ६४ ।

नीतिः-बलं प्रमाणं च । आव० ४६३ ।

नीतिपथ-नीतिमार्गः । नंदी० १६४ ।

नीतिशास्त्र-धर्माधिकरणिकम् । ठय० प्र० २०१ अ ।

नीती-नीतिः सामादिका । प्रश्न० ७९ ।

नीमं-नीमफलम् । दश० १८५ ।

नीय-नीचं-अनुद्धतम् । उत्त० ३४६ । नीचं-अनत्यर्थम् । भग० १६४ । अपूज्यम् । भग० १६४ ।

नीयजुद्धं-नीचयुद्धम् । आव० ९८ ।

नीयपिंड-नियतपिण्डः-मयैतावद्दातव्यं भवता तु नित्यमेव ग्राह्यमित्येवं नियततया यो गृह्यते स । ठाणा० ५१५ ।

नीयल्लगा-निजका-आत्मायाः स्वजनाः । बृ० तृ० २४३ अ ।

नीयागोए-यदुदयवशात् धुनर्ज्ञानादिसम्पन्नोऽपि निन्दां लभते हीनजात्यादिसम्भवं च तत् नीचैर्गोत्रम् । प्रज्ञा० ४७५ ।

नीयावासविहारो-नित्यवासेन विहारः नित्यावासकल्पः । आव० ५३५ ।

नीयावित्ती-नीचं-अनुद्धतं यथा भवत्येवं नीचेषु वा शय्यादिषु वर्त्तत इत्येवं शीलो नीचवर्त्ती, गुरुषु न्यग्वृत्तिमान् । उत्त० ३४६ । नीचैर्वृत्तिः कायमनोवाग्भिरनुत्सिकः । उत्त० ६५६ ।

नीरए-नीरजं निर्गतरजः कल्पसूक्ष्मतरवालाग्रः । भग० २७७ । निर्गतरजः-कल्पसूक्ष्मवालाग्रोऽपकृष्टधान्यरजः कोष्ठागारवत् । अनु० १८० । स च तद्भूमिगतरजसामप्यभावे नीरजाः । भग० ६७६ । निरजाः-बध्यमानकर्माभावात् । प्रज्ञा० ६१० ।

नीरओ-नीरजाः-सकलकर्मरजोविनिर्मुक्तः । दश० १५९ ।

नीरय-नीरजा-निर्मलः । व्य० प्र० २१० अ । नीरजः स्वाभाविकरजोरहितत्वात् । प्रज्ञा० ८७ । नीरजाः-बध्यमान कर्मरहितः नीरयो निर्गतोदस्रक्यः । ओप० ११४ । नीरजांसि आगन्तुकरजोविरहात् । सम० १४० । नीरजस्कः-अष्टविधकर्म विप्रमुक्तः । दश० ११९ ।

नीरया-नीरजसः रजोरहितत्वात् । ठाणा० २३२ ।

नीरसं-विगतरसम् । प्रश्न० १६३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नीराजितो–निर्विटितः लब्धजयः पारप्राप्तो वा । बृ० तृ० ८४ आ । निर्बटितः । व्य० प्र० २०३ अ ।
नीरुह–साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः । प्रज्ञा० ३४ ।
नीरोगा–शक्ताः । ओघ० ७१ ।
नीरोहो–प्रतीक्षा प्रतीक्षाप्यते । बृ० तृ० १४७ आ ।
नीविशेत्–परिहारतपः प्रतिपद्येत । व्य० प्र० १८१ आ ।
नील–मरकतमणिः । जीवा० २७४ । औप० ४१ । हरितत्वमतिक्रान्त कृष्णत्वमसंप्राप्तं पत्रं नीलम् । जीवा० १८६ । वर्षधरपर्वतविशेषः । ठाणा० ६८ । अष्टाशीतौ महाग्रहे पञ्चविंशतितमः । जं० प्र० ५३५ । नीलवर्षधरपर्वते द्वितीयः कूटः । ठाणा० ७२ ।
नीलकंठ–महिषानिकाधिपतिदेवविशेषः । ठाणा० ३०२ ।
नीलकणवीरय–नीलकणवीरः वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३६२ ।
नीलकेसी–नीलकेशी–तरुणी । व्य० द्वि १३ अ ।
नीलगुडिया–नीलगुटिका-नील्या गुटिका । जीवा० १६४ । प्रज्ञा० ६१ ।
नीलगुहा–मुनिसुव्रतस्वामिनो दीक्षास्थानम् । आव० १३७ ।
नीलपटा– । सूत्र० २८० ।
नीलपत्ता–चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः । जीवा० ३२ ।
नीलबंधुजीव–नीलबंधुजीवः वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३६० ।
नीलवंत–नीलवान् पर्वतविशेषः । आव० ६८५ ।
नीलवंतदह–ह्रदविशेषः । ठाणा० ३२६ ।
नीलवन्तः–वर्षधरपर्वतविशेषः । ठाणा० ७० । ज्ञाता० २४२
नीलवान्–वर्षधरपर्वतविशेषः । प्रश्न० ६६ ।
नीला–हरितं सस्यम् । ओघ० १५६ । नदीविशेषः । ठाणा० ४७७ । आचा० ३६१ ।
नीलाभास–नीलावभासः–अष्टाशीतौ षड्विंशतितमोमहाग्रहः । जं० प्र० ५३५ ।
नीलासोए–सौगन्धिकायां नगर्यां उद्यानम् । विपा० ६५ । ज्ञाता० १०४ । नीलाशोकः वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३६० ।
नीली–नीलवर्णपरिणतः । प्रज्ञा० १० । नंदी० १७० । गुलिका । ज्ञाता० २२२ ।
नीलीगुलिया–नीलीगुलिका नीलीगुटिका । जं० प्र० ३३ ।
नीलीया–आर्द्राः वनस्पतयः । आचा० ३६१ ।
नीलुप्पलं–नीलोत्पलं कुवलयम् । प्रज्ञा० ३६० ।
नील्या–नीलमया । प्रज्ञा० ६१ ।
नीवारं–व्रीहि-विशेषकणदानम् । सूत्र० ८७ । आचा० २८५ ।
नीवं–उपरि । ओघ० १६२ ।
नीव्वोदगं–नीव्रोदकं-गृहपटलान्तोत्तीर्णजलम्, वर्षासु गृहाच्छादनप्रान्तगलितं जलं नीव्रोदकम् । पिण्ड० १५ । नंदी० १६३ । निव्रोदकम् । ओघ० १३२ ।
नीसंदु–निस्स्यन्दः । ओघ० १०० ।
नीसंदा–पुनाहाः । चउ० ।
नीसट्ठं–अत्यर्थं । बृ० तृ० १६६ अ । विनष्टं विश्रस्तं । आव० ७०६ ।
नीसरणं–निस्सरणं नाम फेलहसणं । व्य० द्वि० ६ आ ।
नीसवओ–निश्रावकः–निर्जरकः । विशे० १०६३ ।
नीससंति–निःश्वसन्ति–बाह्यक्रियां कुर्वन्ति । प्रज्ञा० २१६ ।
नीससिऊससियसमं–निःश्वसितोच्छ्वसितमानमतिक्रामतो यद्गेयं तन्निःश्वसितोच्छ्वसितसमम् । ठाणा० ३६४ ।
नीससियं–निःश्वसितं–अधःश्वसितम् । आव० ७७६ । निःश्वसनं निःश्वसितम् । विशे० २७४ ।
नीसा–पेषणी । दश० १७२ ।
नीसापट्टए–शिलापेशणी । बृ० द्वि० ६० अ ।
नीसास–सङ्ख्येया आवलिका निश्वासो-बहिर्मुखपवनः । जं० प्र० ६० ।
नीसासविसा–निःश्वासे विषं येषां ते निश्वासविषाः । प्रज्ञा० ४६ ।
नीसेस–निःश्रेयसः कल्याणकरत्वात् । सम० १२७ ।
नीसेसा–निःशेषं समग्रम् । भग० १५१ ।
नीहडं– । आचा० ३२५ ।
नीहडिया–निहतिका–नीयमानं सागारिकद्रव्यं यद् यत्र नीयते सा । बृ० द्वि० १६८ अ ।
नीहम्मिए–निर्गते । बृ० प्र० २२१ आ ।
नीहरइ–निहरति । ओघ० २१७ ।
नीहरणं– । भग० ६८२ ।
नीहरित्तए–निहर्त्तुं निष्काशयितुम् । भग० २१८ । विपा०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८१ ।

नीहरिय–निष्क्राम्य । नि० चू० प्र० २७१ आ ।

नीहार–पुरीषोत्सर्गः । आव० ५४१ ।

नीहारि–गिरिकन्दरादिगमनेन ग्रामाद्बहिर्गमनं तद् विद्यते यत्र तन्निर्हारि । उत्त० ६०३ । निर्हारि–घोषवत् शब्दो घण्टादिशब्दवत् पिण्डेन निर्वृतः । ठाणा ४७१ ।

नीहारिम–निर्हारेण निर्वृत्तं यत्तत् निर्हारिमं निर्धारितं–निश्चितम् । भग० १२० । निर्हारिमा दूरं विनिर्गच्छन्ती । राज० ७ । निर्हारिमः दूरं निर्यायी । प्रश्न० १६२ ।

नीहारिमा–निर्हारिमा दूरे विनिर्गच्छन्ती । जीवा० १८८ ।

नीहारी–निर्हारिमं ग्रामादिनामन्तः । व्य० द्वि० ४३० अ । निर्हरणं निर्हारः गिरिकन्दरादिगमनेन ग्रामादेर्बहिर्गमनम् । उत्त० ६०३ ।

नुः–वितर्के । उत्त० २८२ । आव० ५०८ । उत्त० १९४ । क्षेपे । दश० ८५ ।

नुपूरं–भूषणविशेषः । ठाणा० ६३ ।

नूम–कर्म्म माया वा । आचा० २९५ । प्रच्छादनम् अधर्मद्वारस्य द्वाविंशतितमं नाम । प्रश्न० २६ । नुमं–अवतमसम् । भग० ९२ ।

नूमगिह–नूमगृहं–भूमीगृहम् । आचा० ३८२ ।

नूमानि–निम्नानि–गर्त्तादीनि । आचा० ३८२ ।

नृत्य–विविधाङ्गहारादिस्वरूपः । उत्त० ३८६ ।

नृपतिहठप्रवर्त्तितकृत्य–राजवेष्टिः । उत्त० ५५३ ।

नेउणिय–नैपुणिकं नाम वस्तु । विशे० ९६७ । नैपुणिकम् । आव० ३१६ ।

नेउर–नूपुरं–पादाभरणम् । प्रश्न० १५९ । आव० २२५ । नूपुरं–मञ्जीरम् । पिण्ड० ६८ ।

नेउरहारिगा–नूपुरं–मञ्जीरं तस्य हारो हरणं श्वशुरकृतं तेन या प्रसिद्धा सा नूपुरहारिका आगमे चान्यत्रनूपुर-पण्डितेति प्रसिद्धा । नूपुरहारिका–उत्थितचतुश्चरणहस्ति-वत् अनाचारप्रवृत्तौ साधुत्वानवस्थानम् । पिण्ड० ६८ ।

नेउरा–चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः । जीवा० ३२ । प्रज्ञा० ४२ । द्वीन्द्रियजीवविशेषः । जीवा० ३१ ।

नेगम–प्रभूततरवणिग्वर्गावासः । आचा० २८५ । नैके गमा वस्तुपरिच्छेदा यस्य अपि तु बहवः स निरुक्त-वशात् ककारलोपतो नैगमः । अनु० २२३ । नैकैर्मा-नैर्महासत्तासामान्यविशेषविशेषप्रज्ञानैर्मिमीते मिनोति वा नैकमः निगमेषु वा–अर्थबोधेषु कुशलो भवो वा नैगमः, अथवा नैके गमाः पन्थानो यस्य स नैकगमः । ठाणा० ३९० । निगमः । आव० ८११ । निगमः–पदार्थपरिच्छेदः । आव० २८३ । न एकं नैकं प्रभूता-नीत्यर्थः, नैकैर्मानैर्महासत्तासामान्यविशेषादिज्ञानै-र्मिमीते मिनोति वा वस्तूनि परिच्छिनत्तीति नैगमः । अनु० २६४ । नैगमः–अनेकप्रकारवस्त्वभ्युपगमपरः । विशे० ६४८ । नेलको–रूपकः । नि० चू० प्र० १३९ आ । बहुवस्तुपरिच्छेदः सामान्यविशेषादिप्रकारैर्बहुरूप-वस्त्वभ्युपगमपरः । अनु० १७ । निगमा–वणिजस्तेषां स्थानं नैगमम् । आचा० ३२९ ।

नेच्चइया–निचयेन–संचयेनार्थात् धान्यानां ये व्यवहरन्ति ते नैचयिकाः । व्य० द्वि० १२ अ ।

नेच्चइल्लो–नैत्यिकः । आव० ४२८ ।

नेच्छइओ–नैश्चयिको–निरुपचरितः । विशे० १६६ ।

नेच्छियं–इच्छाया विषयी कृतं नेच्छितम् । जीवा० २७९ ।

नेडुवालगो–गृहपालकः । आव० ४०२ ।

नेति–नयति गमयति । सूर्य० ३३ । प्र० २८ ।

नेत्त–नेत्रं–मथितदण्डाकर्षणरज्जुः तद्वद्दीर्घतया तन्नेत्रं शेफ उच्यते । उपा० २२ ।

नेत्तपड–नेत्रपटः । प्रज्ञा० ३०६ ।

नेपथ्यं–आभरणम् । जं० प्र० ६४ ।

नेपथ्यकथा–नेपथ्यानां प्रशंसनं द्वेषणं वा स्त्रीकथाया-श्चतुर्थो भेदः । आव० ५८१ ।

नेपालवत्तिणी–नेपालदेशः । आव० ६९७ ।

नेपालविसय–नेपालविषयः । आव० ६९६ ।

नेम–नेमः भूमिभागादूर्द्ध्वं निष्क्रामन्, प्रदेशः । जीवा० ३५९ । नेमः–भूमिरूर्द्ध्वं निष्क्रामन्, प्रदेशः । जीवा० १९८ । नि नेमे तं नेमं–प्रदर्शनम् । नि० चू० द्वि० ६३ आ । चिह्नम् । आव० ७६७ । मूलम् । प्रश्न० ६१ ।

नेमा–स्तम्भानां मूलपादाः । भग० १४५ ।

नेमि–नेमिः–तद्योगा चक्रमपि चक्रधारा । भग० ६४५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नेमिः-चक्रमण्डलमाला । भग० ३२२ । चक्रमण्डनधारा । भग० ४८१ । गण्डमाला । ज्ञाता० ५८ ।

नेमित्त-नैमित्तिकः । आव० ३९३ । नैमित्तिकम् । आव० २७८ ।

नेमी-नेमिः-द्वाविंशतितमो जिनः । आव० ५०६ । नेमि-भूमिका । राज० २८ ।

नेम्माणि-मूलपादाः । बृ० तृ० ५३ अ ।

नेय-णाइणा पहेण नयति तम्हा नेयो । दश० चू० १४५ अ ।

नेयइया-नैतिकका नीतिकारिणः । व्य० प्र० १६९ अ ।

नेयव्वो-नेतव्यः-अध्येतव्यः । भग० २८३ ।

नेयाउए-नायकं मोक्षगमकमित्यर्थः । भग० ४७१ ।

नेयाउयं-नयनशीलो, नेता-सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मको मोक्षमार्गः श्रुतचारित्ररूपो वा धर्मः । सूत्र० १७१ । नयनशीलं नैयायिकं-मोक्षगमकम् । ज्ञाता० ५१ । आव० ७६० ।

नेयारं-पहु-सामि । आव० ६६१ ।

नेरइए-नैरयिकः-भगवत्याः प्रथमशतके सप्तम उद्देशकः । भग० ६ ।

नेरइय-निर्गतं अयं-इष्टफलं कर्म यस्मात् स निरयः, तत्र भवः नैरयिकः-नारकः । भग० १९ । निरया-नरकावासास्तेषु भवा नैरयिकाः । प्रज्ञा० ४३ ।

नेरइयउद्देसए-जीवाभिगमस्य द्वितीय उद्देशकः । भग० ६०६, ६३८ ।

नेरइयउद्देसओ-जीवाभिगमस्य द्वितीय उद्देशकः । भग० ६१६ ।

नेरइया-निर्गतं-अविद्यमानमयं-इष्टफलं कर्म्म येभ्यस्ते निरयास्तेषु भवा नैरयिकाः-क्लिष्टसत्त्वविशेषाः । ठाणा० २८ ।

नेरई-नैर्ऋतिः-दक्षिणपश्चिममध्यवर्त्तिदिक् । आव० २१५ । ठाणा० १३३ ।

नेल-नेलं-नीलीविकारः । भग० १० ।

नेल्लुक:-सुराविशेषः । जीवा० २६५ ।

नेवत्थं-नेपथ्यम् । आव० १४५ । आचा० ४२३ । नेपथ्यं-स्त्रीपुरुषाणां वेषः स्वाभाविको विभूषाप्रत्ययश्च । ठाणा० २११ । वेषः । जीवा० २०७ ।

नेवत्थकहा-नेपथ्यकथा-नेपथ्यसंबंधेन स्त्रीणां कथा । प्रश्न० १३९ ।

नेवाइयं-निपतत्यहंदादिपदादिपर्यन्तेष्विति निपातः, निपातादागतं तेन वा निर्वृत्तं स एव वा स्वार्थिकप्रत्ययविधानात् नैपातिकम् पदस्य द्वितीयो भेदः । आव० ३७९ । अन्यपदानामादौ निपातनाद् नैपातिकम् । विशे० ११४८ ।

नेसज्जिए-निषद्या-पुताभ्यां भूमावुपवेशनम् । भग० ९२४ । फलकादि । आव० ८८ ।

नेसत्थिया-निसर्जनं निसृष्टं, क्षेपणमित्यर्थः तत्र भवा तदेववा नैसृष्टिकी निसृजतो यः कर्म्मबन्धः । ठाणा० ४२ । यन्त्रादिना जीवाजीवान् निसृजतः । ठाणा० ३१७ । नैशस्त्रिकी-विंशतिक्रियामध्ये दशम् । आव० ६१२ ।

नेसाए-निषादः निषीदन्ति स्वरा यस्मिन् सः स्वरविशेषः । अनु० १२७ ।

नेह-स्नेहः तैलादिरूपः । जीवा० २६६ ।

नेहलं-स्नेहलं स्निग्धम् । जीवा० २६९ ।

नेहुर-नेहुरः-चिलातदेशवासी म्लेच्छविशेषः । प्रश्न० १४ ।

नैगमः-निगमाभिहिताः शब्दा अर्थास्तत्परिज्ञानं च देशसमग्रग्राही । त० १३५ । प्रज्ञा० ५९ ।

नैगमेषी-इन्द्रस्यैतदभिधानो देवः । जं० प्र० ३९७ ।

नैपातिकं-निपातेषु पठितत्वात् । खल्विति । अनु० ११३ ।

नैपुणिके- । ठाणा० ४१२ ।

नैरयिकानुपूर्वी-अनुपूर्व्याः प्रथमो भेदः । प्रज्ञा० ४७३ ।

नैरुक्तं-निश्चितार्थवचनभवम् । अनु० १५१ ।

नैरुक्तिः-शब्दव्युत्पत्तिः । पिण्ड० १२१ ।

नैषेधिकी-निसीहिया-शवपरिष्ठापनभूमिः । बृ० तृ० १४१ आ ।

नैषेधिकीसप्तैककः-आचाराङ्गस्य द्वितीयश्रुतस्कन्धे द्वितीयचूडायां द्वितीयमध्ययनम् । ठाणा० ३८७ ।

नैष्ठिकमुनिः-परमसाधुः । प्रश्न० ११४ ।

नैसर्गिकं-दर्शनभेदः । आव० ५२७ ।

नैसर्प्पादयः-चक्रवर्त्तिसम्बन्धिनो नवनिधयः । सम० ११२ ।

नो-प्रतिषेधे । उत्त० ४०२ । साहचर्ये । प्रज्ञा० ४६९ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नो शब्दस्य मिश्रवचनत्वात् । ठाणा० १०३ । इति मन्यमानाः नोशब्दो देशप्रतिषेधे । आचा० २५० । नोसद्दो मिस्सभावम्मि–नोशब्दश्चाऽत्र मिश्रवचनः । विशे० ३६ । नो इह सर्वनिषेधवचनः । विशे० ३२ । नोशब्दो देशनिषेधवचनविवक्ष्यते: । विशे० ३३ ।

नोइंदिओवउत्ते–यदा तमेवार्थमिन्द्रियेण दृष्ट्वा विचारयत्योघसञ्ज्ञयापि तदा स नोइन्द्रियोपयुक्तः । प्रज्ञा० १५६ ।

नोइंदिय–नोइंद्रियं–मनः । ठाणा० ३५६ । प्रज्ञा० ३११ । उत्त० ४०२ ।

नोइंदियअत्थावग्गहो–नोइन्द्रियेण भावमनसाऽर्थावग्रहो–द्रव्येन्द्रियव्यापारनिरपेक्षघटाद्यर्थस्वरूपपरिभावनाभिमुखः प्रथममेकसामायिको रूपाद्यूर्ध्वाकारादिविशेषचिन्ताविकलोऽनिर्देश्यसामान्यमात्रचिन्तात्मको बोधो नोइन्द्रियार्थावग्रहः । प्रज्ञा० ३११ ।

नोइंदियग्गिज्झु–नोइन्द्रियग्राह्यः नो–न इन्द्रियैः–श्रोत्रादिभिर्ग्राह्यः–संवेद्यः । नोइन्द्रियेण–मनसा ग्राह्यो वा । उत्त० ४०२ । इन्द्रियग्राह्यः, नो इति प्रतिषेधे, इन्द्रियैः–श्रोत्रादिभिर्ग्राह्यः–संवेद्य । इन्द्रियाग्राह्यः । उत्त० ४०१ ।

नोइंदियत्थ–औदारिकादित्वार्थपरिच्छेदकत्वलक्षणधर्म्मद्वयोपेतमिन्द्रियं तस्यौदारिकादित्वधर्मलक्षणदेशनिषेधात्, मनः, सादृश्यार्थत्वाद्वा नोशब्दस्यार्थं परिच्छेदकत्वेनेन्द्रियाणां सदृशमिति तत्सहचरमिति वा नोइन्द्रियं–मनस्तस्यार्थोविषयो–जीवादिः नोइन्द्रियार्थं इति । ठाणा० ३५६ ।

नोइन्द्रियदुष्प्रणिहितकायिकी–नोइन्द्रियेण- मनसा दुष्प्रणिहितस्याशुभसङ्कल्पद्वारेण दुर्व्यवस्थितस्य क्रिया, दुष्प्रणिहितकायिकीक्रियाया द्वितीयो भेदः । आव० ६११ ।

नोइन्द्रियसंयम–कषायादीनां निग्रहः । विशे० ५०२ ।

नोउवसंतं–नोपशान्तं–अनिष्टादिव्याख्यातमेवैकार्थं वा । भग० ६० ।

नो एवं भवइ–नैतद्भवति–नैतत्कल्पते । आचा० २४४ ।

नो कम्मं–वेदितरसं कर्म नो कर्म । भग० ३०२ ।

नो कर्म द्रव्यकर्म–लेप्यकर्मादिकम् । उत्त० ६४० ।

नोकम्मंद्रव्यकषायः–बिभीतकादयः । आचा० ६१ ।

नोकर्मद्रव्यलोभः–आकारमुक्तिः, चिक्कणिका । आव० ३६७ ।

नोकर्म्मभावक्षणः–आलस्यमोहवर्णवादः । आचा० ११० ।

नोकषायता–कषायसहचारिता । प्रज्ञा० ४६६ ।

नोकसाय–कषायः क्रोधादिभिः सहचरा नोकषायाः । ठाणा० ४६६ ।

नोछक्कसमज्जिया–नोषड्कं–षट्काभावः ते चकादयः पञ्चान्तास्तेन नोषट्केन एकाद्युत्पादेन ये समर्जितास्ते । भग० ७६७ ।

नोजीवा–गृहकोकिलच्छिन्नपुच्छादयः । आव० ३१६ ।

नोजुगं–नोयुगं–नोशब्दो देशनिषेधवचनः किञ्चिदूनं युगम् । सूर्य २०६ ।

नोडुं–गिहं । नि० चू० तृ० ८ (?) ।

नोतह–अन्यस्तु नो तथैवान्यथापीत्यर्थोः नोतथः । ठाणा० २१४ ।

नोदंसणायार–नोदर्शनाचारः–चारित्रादिः । ठाणा० ६५ ।

नोपरोत्त–नोअपरीत्तः–सिद्धः । जीवा० ४४६ ।

नोभव–भवव्यतिरिक्तः कर्मसम्पर्कसम्पाद्यनैरयिकत्वादिपर्यायरहितः । प्रज्ञा० ३२८ ।

नोभवसिद्धिकानोअभवसिद्धिक–सिद्धः । जीवा० ४४ ।

नोमालियापुड–गन्धद्रव्यविशेषः । ज्ञाता० २३२ ।

नोल्लेऊणं–नोदयितुं–उल्लंघयितुम् । बृ०द्वि० २०६, २७६ ।

नोशब्दा–देशवचनः । व्य० प्र० ४ आ । सर्वनिषेध एव । ठाणा० १०३ । साहचर्यार्थः । ठाणा० ४६६ ।

नोसञ्ज्ञोपरुक्तः–आहाराद्युपभोगेऽपि तत्रानभिषक्तः । भग० ६०५ ।

नोसद्दो–नोशब्दो मिश्रभावे मिश्रवचनोऽपि । विशे० ४२१ ।

नोसन्ना–नोसंज्ञा । भग० ६०५ ।

नोसन्नोवउत्ता–नोसञ्ज्ञोपयुक्ता आहारादिषु गृद्धिवर्जिताः । भग० ६३० । पुलाक निर्ग्रन्थस्नातका नोसञ्ज्ञोपयुक्ताः । भग० ६०५ ।

नोसुयंगं–नोश्रुताङ्गं–अश्रुताङ्गम् । उत्त० १४४ ।

नोहव्वाए नोपाराए–यो हि मध्ये महानदीपूरं निमग्नो भवत्यसौ नारातीय तीराय नापि पारे महानदी पूरम् । आचा० ११३ ।

न्यक्कारः–तिरस्कारः । उत्त० ३७६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न्यक्कृत–धिक्कृतः । आचा० १८२ ।

न्यक्षं–विस्तारः प्रत्यक्षं च । उत्त० ६६ । आव० ८४२ । निष्कृष्टम् । आव० २५६ ।

न्यग्रोधः–वटवृक्षः । भग० ६५० ।

न्यग्रोधपरिमण्डलं–न्यग्रोधवत् परिमण्डलं यस्य तत्, यथा न्यग्रोध उपरि सम्पूर्णप्रमाणोऽधस्तु हीनः तथा यत्संस्थानं नाभेरुपरि सम्पूर्णप्रमाणं अधस्तु न तथा तन्न्यग्रोधपरिमण्डलम् । प्रज्ञा० ४१२ ।

न्यग्रोधसंस्थानं–नाभित उपरि सर्वावयवाश्चतुरस्रा–लक्षणाऽविसंवादिनोऽधस्तु तदनुरूपं यन्न भवति तत् । सम० १५० ।

न्यायोद्ग्रहण–शब्दान्तरापेक्षया विशेषः । ठाणा० ४६४ ।

न्यासः–निक्षेपः, स्थापना । ठाणा० ४ ।

प

पंक–महान् कर्दमः पङ्कः । प्रश्न० ६५ । पङ्कः । ओप० ८६ । पङ्कः–स्वेदार्द्रमलरूपः । व्य०व० १२२ (?) । पङ्कः–कलरूपः । पिण्ड० १०२ । पङ्कः–कर्दमः । ठाणा० ३२८ । पङ्कः–पापम् । पङ्कं–पङ्कयतीति पापम् । सूत्र० ३३१ । पङ्कः–मलः एव स्वेदेनार्द्रीभूतमलः । भग० ३७ । पङ्कः–कर्दमः । भग० ३०७ । जं० प्र० १६६ । प्रस्वेद उल्लि । नि० चू० प्र० ११० अ ।

पंकगति–पङ्के–उदके वाऽतिदुस्तरं यदात्मीयं केनापि सहोद्वह्य तद्वलेन गच्छति सा पङ्कगति, विहायोगतेः षोडशभेदः । प्रज्ञा० ३२७ ।

पंकजल–पङ्कजलं–पङ्कप्रधानं जलं यत् कमलमुच्यते । उत्त० ३६१ ।

पंकप्पभा–पङ्कप्रभा–चतुर्थनारकपृथ्वी । प्रज्ञा० ४३ । पङ्कस्य प्रभा यस्यां सा । पङ्काभद्रव्योपलक्षिता वा । अनु० ८६ ।

पंकबहुल–पङ्कबहुलं–कर्दमबहुलो विशेषो भूभागः । रत्नप्रभायाः द्वितीयकाण्डः । जीवा० ८६ ।

पंकभीस– । नि चू० द्वि ७६ अ ।

पंकाययणाभि–पङ्कायतनं–यत्र पङ्कीलदेशे लोका धर्मार्थं लोटनादिक्रियां कुर्वन्ति । आचा० ४११ ।

पंकावई–पङ्कावतीनाम महाविदेहे कुण्डः । जं० प्र० ३४६ । पङ्कोऽतिशयेनास्त्यस्यामिति पङ्कावती । महाविदेहे नदी । जं० प्र० ३४६ ।

पंकावती– । ठाणा० ८० ।

पंकिता–जल्लमल्लेन ग्रस्ता । नि० चू० प्र० १०८ आ ।

पंकिय–आर्द्रमलोपेतम् । भग० २५४ ।

पंखाल–पक्षवतीः । बृ० प्र० १८ आ ।

पंगु–गन्तुमसमर्थः, पदे जङ्घाहीनः पङ्गुः । नि० चू० द्वि० ४३ आ ।

पंगुल–पङ्गुलः–गमनासमर्थजङ्घः । प्रश्न० २५ । पङ्गुलः–चङ्क्रमणासमर्थः । प्रश्न० १६१ ।

पंचंगुलि–पञ्चाङ्गुली । जीवा० २२७ । वल्लीविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

पंच–पण्णगं । नि० चू० प्र० ४४ अ ।

पंचकुल– । सूर्य० २८२ ।

पंचजण्णं–पाञ्चजन्याभिधानं सङ्ख्म् । ज्ञाता० २१८ ।

पंचट्ठी–पञ्चाष्टा–पञ्चमुष्टिः । अन्त० ४६२ ।

पंचतव–पञ्चतवः–पञ्चाग्नितपः, यत्र चतुर्ष्वपि दिक्षु चत्वारोऽग्नयः पञ्चमश्च तपनस्तल्लोके प्रसिद्धम् । उत्त० ५६८ ।

पंचनियम–पञ्चनियमास्तु–शौचसंतोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि । ज्ञाता० १०५ ।

पंचपुल–पञ्चपुलः । विपा० ८१ ।

पंचमंगल–पञ्चमंगलं–नमस्कारम् । आव० ४५४ ।

पंचमंगलयं–पञ्चमङ्गलकं–नमस्कारम् । ओघ० २०३ ।

पंचम–पञ्चानां षड्जादिपञ्चस्वराणां निर्देशक्रममाश्रित्य पूरणः पञ्चमः स्वरविशेषः । पञ्चसु–नाभ्यादिस्थानेषु मातीति वा पञ्चमः स्वरः । अनु० १२७ ।

पंचमासिआ–पञ्चमी भिक्षुप्रतिमा । सम० २१ ।

पंचमासिए– । आचा० ३२७ ।

पंचमी–पञ्चमभिक्षुप्रतिमा । ज्ञाता० ७२ ।

पंचमुट्ठियं– । ज्ञाता ६० ।

पंचरूविता–पञ्चानां रूपाणां गर्जितविद्युज्जलवाताभ्रलक्षणानां समाहारः पञ्चरूपं तदस्ति येषां ते पञ्चरूपिका उदकगर्भाः । ठाणा० २८७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचलइअं–पञ्चलतिकाः कत्तलिकारूपा अवयवाः । जं० प्र० २२३ ।

पंचवण्णा–चतुर्दशतीर्थकृतशिबिका । सम० १५१ ।

पंचसेल–द्विपविशेषः । नि० चू० प्र० ३४५ अ । नि० चू० द्वि० ४२ आ । कुमारनंदीगमनस्थानम् । बृ० तृ० १०८ आ । पञ्चशैलकः द्वीपविशेषः । आव० २९६ ।

पंचसोगंधिय–पञ्चभिः–एलालवङ्गकर्पूरकक्कोलजातीफललक्षैः सुगन्धिभिर्द्रव्यैरभिसंस्कृतं पञ्चसौगन्धिकः । उपा० ५ ।

पंचहत्थुत्तर–श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य जन्मादिकल्याण सूचकं नक्षत्रम् । आचा० ४२० ।

पंचाल–दूर्मेखवास्तव्यो देशः पञ्चालः, द्रव्यव्युत्सर्गे देशः । आव० ७१६ । पञ्चालः–देशविशेषः । आव० २१९ । पञ्चमण्डलः–पञ्चालदेशः । उत्त० ३९० । कम्पिलपुरनगरस्य जनपदः । ज्ञाता० २०७ । जितशत्रुजनपदः । ज्ञाता० १४४ । पञ्चालजनपदनिवासिनः । नंदी० १०४ । आर्यदेशेषु नवमः पाञ्चालः जनपदविशेषः । प्रज्ञा० ५५ । पञ्चालः । आव० २१९ ।

पंचालराया–पाञ्चालराजः । आव० ७१९ ।

पंचासवपरिण्णाया–'पञ्चाश्रवा'–हिंसादयः परिज्ञाता–द्विविधया परिज्ञया–ज्ञपरिज्ञया प्रत्याख्यानपरिज्ञया च परिसमन्तात् ज्ञाता यैस्ते पञ्चाश्रवपरिज्ञाताः, आहिताग्न्यादेराकृतिगणत्वान् निष्ठायाः पूर्वनिपात इति समासो युक्त एव, परिज्ञात पञ्चाश्रवा इति वा । दश० ११८ ।

पंजर–पञ्जरं–वंशादिमयाच्छादनम् । राज० ६९ । पञ्जरं–वंशादिमयप्रच्छादनविशेषः । प्रश्न० ९९ । पञ्जरः–पञ्जराकारः । जं० प्र० २४२ । पञ्जरः–वंशादिमयप्रच्छादनविशेषः । सम० १३९ । पञ्जरः–बन्धनविशेषः । उत्त० ४९० । पञ्जरः–वंशादिमयप्रच्छादनविशेषः । सूर्य० २६४ । आचार्यादिपारतन्त्र्यं परस्परं प्रति नोदना च । बृ० तृ० ८ अ । आयरिओ उवज्झातो पवत्ति थेरो गणावच्छेतितो एतेहिं पंचहिं परिग्गहितो गच्छो पंजरो भण्णति । नि० चू० तृ० ९५ अ ।

पंजरदीव अभ्रपटलादिपिञ्जरयुक्तात् । भग० ५४८ ।

पंजरभग्ग–सुट्ठुजम्मेण पडिचोदेति सुहं अच्छामि सो । नि० चू० तृ० ९४ अ ।

पंजलिउडे–प्रकृष्टः–प्रधानो ललाटतटघटितत्वेन अञ्जलिः–हस्तन्यासविशेषः कृतो येन स प्राञ्जलिकृतः । राज० ४४ । प्रकृष्टं भावान्विततयाऽञ्जलिपुटमस्येति प्राञ्जलिपुटः । उत्त० ५६ । प्रकर्षेण–अन्तः प्रीत्यात्मकेन कृतो विहितोऽञ्जलिः–उभयकरमीलनात्मकोऽनेनेति प्रकृताञ्जलिः । प्रकृष्टं वा–भावान्विततयाऽञ्जलिपुटमस्येति प्राञ्जलिपुटः । उत्त० ६३ । आव० २६९ ।

पंजलीगड–प्रकर्षेण–अन्तप्रीत्यात्मकेन कृतो–विहितोऽञ्जलिः–उभयकरमीलनात्मकोऽनेनेति प्रकृताञ्जलिः । उत्त० ५६ ।

पंजलियड–प्रकृष्टः–प्रधानो ललाटतटघटितत्वेन अञ्जलिः–हस्तन्यासविशेषः कृतो विहितो येन सः प्राञ्जलिकृतः । सूर्य० ६ ।

पंजली–प्रकृताञ्जलिः–प्रकृष्टतोषवती । ज्ञाता० १६६ ।

पंड–जनपदविशेषः । भग० ६८८ ।

पंडए–पण्डकं–नपुंसकम् । ठाणा० १६४ ।

पंडग–पण्डकः–नपुंसकम् । ठाणा० ४४५ । पण्डते–गच्छति जिनजन्माभिषेकस्थानत्वेन सर्ववनेष्वतिशायितामिति पण्डकम् । जं० प्र० ३६३ । पण्डकः–नपुंसकः । दश० २१५ ।

पंडगवण–पाण्डकवनम् । आव० १२४ । वनविशेषः । ठाणा० ८० । पण्डकवनं, पण्डते–गच्छति जिनजन्माभिषेकस्थानत्वेन सर्ववनेष्वतिशायितामिति णक् प्रत्यय–पण्डकं वनम् मेरोर्वनम् । जं० प्र० ३५९ ।

पंडरंग–पाण्डुराङ्गः मतविशेषः । आव० ८५६ । नि० चू० प्र० १४८ अ ।

पंडरकडुं–पाण्डुरकड्यं–धवलगृहम् । आव० ६७१ ।

पंडरकुडुगा–पाण्डुरकुड्यः प्रसिद्धा गोपालाः । आव० ४१८ ।

पंडरगाईण–। आचा० ४२१ (?) ।

पंडरज्जा–पाण्ड्वा मायोदाहरणे दृष्टान्तः । आव० ३९३ । नि० चू० प्र० ३५१ अ ।

पंडरट्ठिअगाम–पाण्डुरास्थिकग्रामः । आव० १९० ।

पंडरा–पाण्डुरा । आव० ४१७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंडरुल्लोयं–पाण्डुरोल्लोचं श्वेतवस्त्रविभूषितम् । उत्त० ६६५।
पंडवा– । ज्ञाता० २१२ ।
पंडा–बुद्धिः । बृ० प्र० ३४ अ ।
पंडिय–पण्डितः–साधु । अनु० १२० । पण्डितः–कटुविपाककामगुणदर्शिता । आचा० ४३० । पापाडीनः । सूत्र० ३३७ । पंडा–बुद्धिः संजाताऽस्येति पण्डितः । बृ० प्र० ३४ अ । पण्डितं–सातिशयबुद्धिमतः । जं० प्र० २०७ । पण्डा–तत्त्वानुगा बुद्धिः, सा संजाताऽस्येति पण्डितः । उत्त० ४७ । पण्डितः विनीतविनेयः । उत्त० ६१ । पण्डितः–पापाडीनः । सूत्र० १५७ । पण्डितः–पण्डिताभिमानी शुष्कतर्कदर्पाध्माता । सूत्र० ३९३ । पण्डितः–बुद्धेः तत्त्वः, संयतः । ठाणा० १७५ । पण्डितः–सर्वविरतः । समः ३४ । पण्डितः–सुनिश्चितशास्त्रार्थः । उत्त० ३२० । पण्डितः–चारित्रवान् । उत्त० २४२ । पण्डितः–व्यवहारेण शास्त्रज्ञो जीवः । भग० १०२ । पण्डितः–पण्डा–बुद्धिः संजाता यस्य स इति पण्डितः । बृ० प्र० ३४ अ । पण्डितः–सम्यग्ज्ञानवान् । दश० ९९ ।
पंडियपंडियमरणं–साराधनं सर्वविरतमरणम् । आउ०
पंडियमरण–सर्वविरतिमरणम् । भग० ६२४ । पण्डितमरणम्, मरणस्य नवमो भेदः । उत्त० २३० ।
पंडिया–पण्डिताः–पापोपादानपरिहारितया सम्यक्पदार्थधर्म्मचरणाय समुत्थिता भवन्तीति । आचा० २४८ । वत्ता भोगाणं पडियाइयणे जे दोसा परिजाणंति । दश० चू० ४१ ।
पंडु–पाण्डु–देशविशेषे धूलीरूपा सती प्रसिद्धा मृत्तिका । जीवा० २३ । पाण्डुः–आपाण्डुः, आ–ईषत् शुभ्रत्वभागितियावत् । उत्त० ६८९ । पाण्डुः । जीवा० १८८ ।
पंडुअ–पाण्डुकः निधिः, नवनिधौ द्वितीया । जं० प्र० २५८ ।
पंडुइयमुही–पाण्डुकितमुखी–दीनास्या । ज्ञाता० ३३ ।
पंडुकंबलसिला–पाण्डुकम्बलशिला । जं० प्र० ३७२ । पाण्डुकम्बलशिला, द्वितीयाऽभिषेकशिलानाम् । जं० प्र० ३७२ ।
पंडुकबलसिलाओ– । ठाणा० ८० ।
पंडुगंग–कुसीलो । दश० चू० १५२ ।
पंडुमत्तिया–पाण्डुमृत्तिका–देशविशेषे या धूलीरूपा सती "पाण्डु" इति प्रसिद्धा । जीवा० २३ ।
पंडुमहुरं–पाण्डवकृतं दक्षिणवेचालके नगरम् । ज्ञाता० २२५ ।
पंडुमहुरा–पाण्डुमथुरा । अन्त० १६ । पाण्डुमथुरा–धृतिमतिविषये पाण्डुपुरी । आव० ७०८ । पाण्डुमथुरा । उत्त० १७९ ।
पंडुयए–पाण्डुकः, नवनिधौ द्वितीया । ठाणा० ४४८ । पाण्डुरकं–कालपरिणामतस्तथाविधरोगादेर्वा प्राप्तवलक्षभावम् । उत्त० ३३३ ।
पंडुरंग–पाण्डुराङ्गः–नैयायिकादिपाषण्डमाश्रितम् । अनु० १४६ । पाण्डुराङ्गः–भस्मोद्धलितगात्रः । अनु० २५ ।
पंडुर–पाण्डुरः–शुक्लः । ज्ञाता० ६३ । पाण्डुरं–सुधाधवलम् । ओप० ४ । पाण्डुरं–अकलङ्कम् । जीवा० २७२ । पाण्डुरः–सुधाधवलः । ज्ञाता० ३ ।
पंडुरओ–श्वेतः । आव० ४१९ ।
पंडुरग–पाण्डुरागः–श्वेवः । ज्ञाता० १९ । पाण्डुरकः । भग० १९७ ।
पंडुरतल–पाण्डुरतलं–सुधामयतलम् । जं० प्र० १०६ ।
पंडुरपडपाउरण–पाण्डरो–धौतः पटः–प्रावरणं येषां ते । अनु० (?) ।
पंडुरवत्तं–पाण्डुरपत्रं–जीर्णपत्रम् । उत्त० ३३४ ।
पंडुरा–पाण्डुरा–श्वेता । उत्त० ६८५ ।
पंडुराय–हस्तिनागपुरे राजा । ज्ञाता० २०८ ।
पंडुरोग–पाण्डुरोगः । जं० प्र० १२५ ।
पंडुलइयमुही–पाण्डुकितमुखी–पाण्डुरीभूतवदना । निरय० ९ ।
पंडुल्लंगितमुही–पाण्डुराङ्कितमुखी । आव० १५१ ।
पंडुल्लइयमुहा–पाण्डुकितमुखी–पाण्डुरीभूतवदना । विपा० ४९ ।
पंडुसिला–पाण्डुशिला । जं० प्र० ३७१ ।
पंडुसेण–पाण्डुपुत्रः । ज्ञाता० २२५ । पाण्डुषेणः–संवेगोदाहरणे पाण्डुवंशेऽन्त्यो राजा । आव० ७०९ ।
पंडे–पण्डवात्–नपुंसकहस्तात् । ओघ० १६२ ।
पंडोलं–पटोलं वनस्पतिविशेषः । प्रज्ञा० ३७ ।
पंत–प्रान्तः–दरिद्रप्रायः । ओघ० १६२ । प्रान्तः–भूता-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वशेषः । ज्ञाता० १११ । प्रान्तं-स्वाभाविकरसरहितं, स्वल्पं वा द्वेषरहितम् विगतघूमम् । आचा० १४४ । प्रान्तं-अवमम् । उत्त० ४१५ । प्रान्तं-तदेव व्यापन्नं-विनष्टम् । बृह० प्र० २२० । प्रान्तं-नीरसम् । उत्त० २९४ । प्रान्तं-पर्युषितं वल्लचनकाद्यल्पं वा । आचा० २१३ । प्रान्तं-प्रकृष्टमान्तं प्रान्तं वल्लादि पर्युषितम् । ठाणा । २९८ । प्रान्तं-नीरसप्रायम् । ओघ० ४४ । प्रान्तम् । ओघ० १४८ । प्रान्तं-अमनोज्ञम् । भग० १७४ । प्रान्तं-असारम् । दश० १८७ । पन्ते-प्रान्तविषये । ओघ० १४८ । आहारे दृष्टान्तम् । भग० ४८४ । प्रान्तः-प्रकृष्टतरः । प्रश्न० १३८ ।

पंतकुल-प्रान्तकुलं चण्डालादि । ठाणा० ४२० ।

पंतकुलाणि-प्रान्तकुलानि-तुच्छाशयगृहाणि-दरिद्रकुलानि वा । उत्त० ४१९ ।

पंतदेवया-प्रान्ता देवता । दश० । १०३ ।

पंता-प्रान्ता-प्रत्यनीका । आव० ६३३ । प्रान्ता-धर्मानभिमुखी । पिण्ड० १२२ ।

पंताव-प्रताडयत् । पिण्ड १०० ।

पंतावणं-ताडनम् । ओघ० १४९ ।

पंतावेत्ता-ताडयित्वा । नि० चू० प्र० ३०० आ ।

पंताहारं-प्रान्ताहारः प्रकर्षेणाऽस्यं वल्लाद्येव भुक्तावशेषं पर्युषितं वा । ओप० ४० ।

पंति-एकस्यां दिशि या श्रेणिः पङ्क्तिः । जीवा० १८१ ।

पंती-पङ्क्तिः-भुक्तुमुपविष्टपुरुषादिसम्बन्धीनि । उत्त० ५९ ।

पंतीसो-एकस्यां दिशि या श्रेणिः सा पङ्क्तिः । जं० प्र० २४ ।

पंथ-पन्था-देशाद्विवक्षित देशान्तरप्राप्तिलक्षणः सम्यक्त्वावाप्तिरूपः । सूत्र० १९७ ।

पंथए-पन्थकः-धन्यसार्थवाहस्य दासचेटः । ज्ञाता० ७९ ।

पंथकोट्ट-सार्थघातः । विपा० ३९ ।

पंथक्करण- । ज्ञाता० २३६ ।

पंथक्कोट्टो- । ज्ञाता० २३६ ।

पंथग-क्षेलगराजमंत्री, पंथकः । ज्ञाता० १०४ । पंथकः-आर्यबोधाहरणे वत्सपालिकापुत्रः । आव० ७०४ । पन्थकः-ब्रह्मदत्तपत्नीनागयशायाः पिता । उत्त० ३७९ ।

पंथघाइया-पथि-मार्गे-अर्धपथे घातिका-गन्तृणां हननं पथिघातिका । प्रश्न० ३८ ।

पंथनिज्झाई-पन्थानं निर्द्धातुं-प्रलोकितं शीलमस्येति पथनिर्द्धायी । आचा० २१५ ।

पंथब्भासे-पन्थाभ्यासः-समीपम् । ओघ० २५ ।

पंथा-यस्मिन् ग्रामनगरपल्लीप्रतीकानां किञ्चिदेकतरमपि नास्ति स । बृ० द्वि० १२२ अ ।

पंथिया-पन्थानं नित्यं गच्छन्तीति पान्थास्त एव पान्थिका । ज्ञाता० १५० । बहुवस्थदेशजे पेच्छिया ते वा मग्गित्वा । नि० चू० प्र० ३५८ अ ।

पंदुइया-भंसिया । नि० चू० प्र० २०५ आ ।

पंसु-रयो अचित्तो पंसु । नि० चू० तृ० ७० अ । प्रायः । नि० चू० प्र० २३ अ ।

पंसुखार-पांशुक्षारः-उषरलवणम् । दश० ११८ ।

पंसुरिया-पांशुरिका-रज उद्घातः । आव० ७३५ ।

पंसुवुट्ठी-पांशुवृष्टिः । भग० १९५ । पांशुवृष्टिः धूलिवर्षणम् । जीवा० २८३ ।

पंसू-धूमाकार आपाण्डुश्च रजः अचितश्च पांशुः । आव० ७३५ ।

पइ-पाति-रक्षति तां-भार्यामिति पतिः । उत्त० ३८ ।

पइगा-प्रतिका-प्रद्युम्नसेनसुता ब्रह्मदत्तराज्ञी । उत्त ३७९ ।

पइट्ठ-प्रविष्टः । दश० ५९ । प्रतिष्ठः-सुपार्श्वर्षिता । आव० १६१ । प्रतिष्ठितः-शास्त्रीयद्वितीयमासनम् । जं० प्र० ४९० ।

पइट्ठा-प्रतिष्ठा-अपायावधारितस्यैवार्थस्य हृदि प्रभेदेन प्रतिष्ठापनम् । नंदी० १७७ ।

पइट्ठाइ-प्रतिष्ठति । आव० ५७८ ।

पइट्ठाण-शालवाहननगरी । बृ० प्र० २७ आ । प्रतिष्ठानं-अवस्थानम् । अनु० १२९ । प्रतिष्ठानं-त्रिसोपानमूलपादः । जं० प्र० ४२ । प्रतिष्ठानः- त्रिसोपानमूलपादः । जीवा० १९८ । प्रतिष्ठानं-त्राणकारणम् । प्रश्न० ६३ । प्रतिष्ठानं-मूलपादः । जीवा० ३६९ । प्रतिष्ठानं-शालिवाहननगरम् । आव ८९ । प्रतिष्ठानं-मूलपादः । जं० प्र० २३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पइट्ठिअ–प्रतिष्ठितः–प्रकर्षेण स्थितवान् । दश० ७० ।
पइट्ठिय–प्रतिष्ठितं–नारकादिभावेनावस्थितम् । भग० ८२ । प्रतिष्ठितः–अपुनरागस्या व्यवस्थितः । प्रज्ञा० १०८ ।
पइट्ठिया–प्रतिष्ठिताः साद्यपर्यवसितं कालं स्थिताः । उत्त० ६८४ ।
पइठाणं–प्रतिष्ठानं–वैधर्म्योदाहरणे नगरम् । आव० ६९८ ।
पइणी–पचनी वरकपालछननस्थानम् । आव० ६५१ ।
पइण्ण–प्रकीर्णं–इतस्ततो विक्षिप्तम्, असम्बद्धम् । उत्त० ३४६ । प्रकीर्णः । बृ० प्र० १२६ आ ।
पइण्णकहा–णेगमसंगहववहारेहिं जं कहिज्जति सा उस्सग्गो पइण्णकहा । नि० चू० प्र० २४० अ ।
पइण्णपण्णो–प्रधणीयसुओ अगीतो अपरिणामगो य,एतेसिं उद्देसुद्देसं कहित्तो पइण्णपण्णो । नि० चू० तृ० ८१ अ । प्रकीर्णप्रश्न–प्रश्नः–छेदसूतान्तः पाती रहस्यार्थः स प्रकीर्णो येन स प्रकीर्णप्रश्नः । बृ० प्र० १३० अ ।
पइण्णवाई–प्रतिज्ञावादी–प्रतिज्ञया वा इदमित्थमेव इत्येकान्ताभ्युपगमरूपया वदनशीलः । उत्त० ३४६ । प्रकीर्णवादी–प्रकीर्ण–इतस्ततो विक्षिप्तम्, असम्बद्धमित्यर्थः, वदति–जल्पतीत्येवंशीलः, वस्तुतत्त्वविचारेऽपि यत्किञ्चनवादी । यः पात्रमिदमपात्रमिदमिति वाऽपरीक्ष्यैव कथञ्चिदधिगतं श्रुतरहस्यं वदतीत्येवंशीलः । उत्त० ३४६ ।
पइण्णविज्जत्त– । नि० चू० प्र० १०२ आ ।
पइण्णविज्झो–प्रकीर्णविज्जः–छेदसूतान्तर्गता रहस्यवचनपद्धति सेव्यते सा । बृ० प्र० १३० अ ।
पइण्णा–प्रतिज्ञा–निश्चयरूपोऽभ्युपगमः । राज० १३३ । प्रकीर्णा–अप्रतिनियता । बृ० प्र० २६४ अ ।
पइन्नं–प्रदत्तम् । प्रश्न० ११५ । प्रतिज्ञा–पक्षः । दश० २६३ ।
पइन्नगा–प्रकीर्णकानि । प्रज्ञा० ५६ ।
पइन्नतव–प्रकीर्णतपः श्रेण्यादिनियतरचनाविरहितं स्वशक्त्यपेक्षं यथाकथञ्चित्क्रियमाणं तपः । उत्त० ६०१ ।
पइन्ना–प्रतिज्ञा–निदानबन्धनरूपा आशंसा । सूत्र० २६० ।
प्रतीर्णा–निस्तीर्णा आजन्मपालिता । प्रश्न० १०५ ।
पइभा–प्रतिभा–प्रद्युम्नसेनसुता ब्रह्मदत्तराज्ञी । उत्त० ३७९ ।
पइभाए–प्रतिभयः–भयजनः । ज्ञाता० ७९ ।
पइमणुरत्ता–भर्तारं प्रति रागवती । ज्ञाता० २०२ ।
पइया–पतिता जात्यादेर्बहिष्कृता । अन्त० १२ ।
पइरिक्क–स्त्र्यादिविरहितेन विविक्त व्याबाधं वा । उत्त० ११० । प्रतिरिक्तं विजनम् । भगस ५४३ । प्रतिरिक्तः–एकान्तः । जं० प्र० १०७ । प्रचुरतरम् । ओघ १०१ । प्रतिरिक्तम् । आव० ६६ । विजनं प्रचुरं वा एकान्तम् । बृ० तृ० ११९ आ । एकान्तः–स्त्र्याद्यसङ्कुलः । उत्त० ६६५ ।
पइरिक्कमञ्जितघयविहीए–प्रतिरिक्तमभ्यङ्गनविधिना । आव० ६५ ।
पइरिक्कय–प्रचुरः । ओघ० १०३ ।
पइल्लं–पदं–श्लोपदं पादादौ काठिन्यम् । प्रश्न० १६१ ।
पइवं–तैलदशाभाजनम् । भग० ३१३ ।
पइविज्जो–जो पुण आदिरंतेण सव्वं कहेति सो । नि० चू० तृ० ८१ आ० ।
पइविसेस–प्रतिविशेषः–प्रतिनियतविशेषः । नंदी० ८५ ।
पईव– । ज्ञाता० २१३ ।
पउंछति–अंजणेणं अंजेति । नि० चू० प्र० १९० अ० ।
पउअंगे–प्रयुताङ्गं–चतुरशीत्या लक्षैर्नयुतैः । अनु० १०० ।
पउए–प्रयुतम् चतुरशीत्या लक्षैः प्रयुताङ्गैः । अनु० १०० । भग० २९० । कालमानविशेषः । भग० २७५ ।
पउच्छा– । ज्ञाता २१६ ।
पउट्ट–परिवर्त्तः परिवर्त्तवाद इत्यर्थः । भग० ६६८ ।
पउट्टपरिहार–परिवृत्यपरिहारः । भग० ६६७ । शरीरान्तरप्रवेशः । भग० ६७३ । परावर्त्य परिहारः । आव० २१४ ।
पउट्ठ–प्रकोष्ठः–कूर्परात्प्रेतनभागः । भग० ५४० ।
पउट्ठा–प्रद्विष्ठा । आव० ८०० ।
पउण–प्रगुणभूतः । आव० ४०० । प्रगुणः । आव० २२७ ।
पउणइ–प्रगुणीभवति । आव० ६७९ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पउतंग–प्रयुताङ्गं चतुरशीतिरयुतशतसहस्राणि प्रयुताङ्गम्। जीवा० ३४५ । ठाणा० ८६ ।

पउत–चतुरशीतिः प्रयुताङ्गशतसहस्राणि प्रयुतम् । जीवा० ३४५ । ठाणा० ८६ । प्रयुक्तः–योत्रितः । जीवा० १६३ । प्रयुक्त–प्रयोगः । भग० १८२ । प्रज्ञा० ४३६ ।

पउत्तदव्वसम्म–यत्प्रयुक्तं द्रव्यं लाभहेतुत्वादात्मनः समाधानाय प्रभवति तत्प्रयुक्तद्रव्यसम्यक् । आचा० १७६ ।

पउत्ति–प्रवृत्तिः–व्यक्ततरवार्ता । ज्ञाता० ८४ ।

पउत्ती–प्रवृतिः । आव० ४१६ ।

पउत्थ–प्रोषितम् । आव० ३४२ । प्रोषितम् । उत्त० १४७ ।

पउत्थभत्तारा– । नि० चू० प्र० १०६ आ ।

पउत्थवइया–प्रोषितपतिका । आव० ६४० । प्रोषितभर्तृका । ओघ० १५० । प्रोषितभर्तृका । आव० ३६८ ।

पउप्पए–प्रपौत्रकः–प्रशिष्यः । भग० ५४६ । शिष्यसन्तानः । भग० ६६१ ।

पउमंगं–पद्माङ्गं - चतुरशीतिरुत्पलाङ्गशतसहस्राणि । जीवा० ३४५ । कालमानविशेषः । ठाणा० ८६ । कालमानविशेषः । भग० ८८८ । कालमानविशेषः । सूर्य० ६१ । चतुरशीत्यालक्षैरुत्पलैः पद्माङ्गम् । अनु० १०० ।

पउम–पद्मः-हिमवति ह्रदः । ठाणा० ७३ । पद्मजिनभिक्षादाता । सम० १५१ । आगामिन्यां अवसरपिण्यां अष्टमचक्री । सम० १५४ । कालमानविशेषः । भग० २१० । भग० २७५ । आगामिन्यां अवसरपिण्यां अष्टमबलदेवः । सम० १५४ । कालमानविशेषः । भग० ८८८ । जलरुहो वनस्पतिविशेषः । प्रज्ञा० ३३ । कालमानविशेषः । सूर्य० ६१ । पद्मः–सुमतिजिनप्रथमभिक्षादाता । आव० १४७ । पद्मः–अष्टमबलदेवः । आव० १५६ । पद्मं–चतुरशीति लक्षैः पद्माङ्गैः । अनु० १०० । ज्ञाता० २५३ । पद्मं–कमलं–पद्मकाभिधानं गन्धद्रव्यं वा । जीवा० २७७ । पद्मं–पुष्करम् । जीवा० ३३३ । चतुरशीतिः पद्माङ्गशतसहस्राणि पद्मम् । जीवा० ३४५ । पद्मम् । प्रज्ञा० ३७ । पद्मं–बिन्दुजालरूपम् । जं० प्र० ५२८ । सहस्रपत्रः–देवपरिकल्पितः पद्मः । आव० २३२ । पद्मं–अरविन्दम् । दश० १८५ । सौधर्मकल्पे पद्मावतंसकविमाने सिंहासनम् । ज्ञाता० २५३ । पद्मं–कमलं गन्धद्रव्यविशेषो वा । सम० ६१ । कल्पावतंसिकस्य प्रथममध्ययनम् । निरय० १६ । पद्मः । ज्ञाता० ६६ । पद्मकम् । आचा० ३६३ । पद्मं–सूर्यविकाशिपङ्कजम् । राज० ८ । पद्मार्थः–भगवत्यामेकादशशते षष्ठोद्देशकः । ५११ । पद्मं–पद्मकाभिधानं गन्धद्रव्यम् । जं० प्र० ११७ । आणतकल्पे विमानम् । सम० ३५ । सहस्रारकल्पे विमानम् । सम० ३३ । पद्मं–कमलं, एतदभिधानगन्धद्रव्यम् । औप० १६ । पद्मं–सूर्यविकासि । जीवा० १७७ । पद्मः–ह्रदविशेषः । ज्ञाता० १२८ ।

पउमगंधा–पद्मगन्धा । जं० प्र० ३१३ ।

पउमग–पद्मकं कुङ्कुमकेसरम् । दश० २०६ ।

पउमगुम्म–कल्पावतंसिकस्य सप्तममध्ययनम् । निरय० १६ । पद्मगुल्मः–नलिनगुल्मविमानः । उत्त० ३७६ । सहस्रारे विमानविशेषः । सम० ३५ । पद्मगुल्मं–विमानविशेषः । उत्त० ३६५ ।

पउमजालं–पद्मजालं सर्वरत्नमयपद्मात्मकं । जीवा० १८१ ।

पउमणाभे–धातकीखण्डापरकङ्कायां नरपतिः । ज्ञाता० २१३ ।

पउमणिकंदो–पद्मिनीकन्दः–उत्पलिनीकन्दः । प्रज्ञा० ३७ ।

पउमद्दह–पद्मद्रहो नाम ह्रदः पद्मद्रहो नाम ह्रदो वा । जं० प्र० २८४ ।

पउमद्दहप्पभाइं–पद्मद्रहप्रभाणि-पद्मद्रहाकाराणि आयतचतुरस्राकाराणि । जं० प्र० २८८ ।

पउमपम्हं–पद्मपक्ष्म–पद्मपत्रम् । जीवा० ३८६ ।

पउमपम्हा–पद्मगर्भाः । प्रश्न० ७० ।

पउमप्पभा–पद्मप्रभा दक्षिणपुष्करिणीनाम । जं० प्र० ३३५ ।

पउमप्पय–परम्परा । बृ० तृ० ११३ अ ।

पउमप्पह–इह निष्पङ्कतामङ्गीकृत्य पद्मस्येव प्रभा यस्याऽसौ पद्मप्रभः, षष्ठजिनः । आव० ५०३ ।

पउमभद्द–कल्पावतंसकस्य पञ्चममध्ययनम् । निरय० १६ ।

पउमरह–पद्मरथः–सर्वकामविरक्ततायां देवलासुतराजकुमारः । आव० ७१४ ।

पउमराग–पद्मरागः–रत्नविशेषः । जं० प्र० ४८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पउमरुक्ख–पद्ममतिविशालतया वृक्ष इव पद्मवृक्षः । जीवा० ३३३ ।

पउमलय–पद्मलता–मृणालिका । भग० ४७८ ।

पउमलयभत्तिचित्तं– । आचा० ४२३ ।

पउमलया–पद्मलताः, पद्मिन्यः । जं० प्र० २९२ । पद्मलता–स्थलकमलिनि पद्मकाभिधानवृक्षलता वा । औप० ९ । पद्मलता–पद्मिनी । जीवा० १८२ । लताविशेषः । प्रज्ञा० ३२ । पद्मलताः–पद्मिन्यः । (?) ।

पउमलेसा–पद्मगर्भवर्णा लेश्या पद्मलेश्या । ठाणा० १७५ ।

पउमवडेंसए–सौधर्मकल्पे विमानः । ज्ञाता० २५३ ।

पउमवरवेइया–पद्मवरवेदिका–पद्मप्रधानावेदिका । जीवा० १८३ । पद्मवरवेदिका, देवभोगभूमिः । (?) । पद्मवरा–पद्मप्रधानावेदिका । (?) ।

पउमवूह–पद्माकरोव्यूहः–पद्मव्यूहः–परेषामनभिभवनीयः, सैन्यविनाशविशेषः । प्रश्न० ४७ ।

पउमसंडं–पद्मसण्डं–चन्द्रप्रभस्य तृतीयपारणकस्थानम् । (?)

पउमसर–पद्मसरः । आव० १७० । पद्मसरः । आव० १८५ । पद्मानि यत्रोत्पद्यन्ते सरसि तत् पद्मसरः । ठाणा० ५०२ । चतुर्दशस्वप्ने दशमम् । ज्ञाता० २० ।

पउमसिरी–नवमचक्रिणः स्त्रीरत्नम् । सम० १५२ अ । पद्मश्री–मेघनादविद्याधरकन्या । आव० ३९३ । धणमित्तसत्थवाहस्स बीया भज्जा । नि० चू० तृ० १२८ अ । पद्मश्रीः–योगसंग्रहे निरपलापदृष्टान्ते दन्तपुरनगरे धनमित्रवणिजस्य लक्ष्मी भार्या । आव० ६६६ ।

पउमसेण–कल्पावतंसिकस्य षष्ठममध्ययनम् । निरय० १९ ।

पउमा–धर्मकथायाः नवमवर्गस्य प्रथममध्ययनम् । ज्ञाता० २५३ । भीमराक्षसेन्द्रस्य प्रथमाऽग्रमहिषी । ठाणा० २०४ । मुनिसुव्रतस्वामिनो जननी । सम० १५१ । भीमराक्षसेन्द्रस्य प्रथमाऽग्रमहिषी । भग० ५०४ । शक्रदेवेन्द्रस्य प्रथमाऽग्रमहिषी । भग० ५०५ । वनस्पतिविशेषः । भग० ८०४ । पद्मा–शक्रदेवेन्द्रस्य प्रथमाऽग्रमहिषी । जीवा० ३६५ । साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः । प्रज्ञा० ३४ । धर्मकथायाः पञ्चमवर्गस्य त्रयोदशममध्ययनम् । ज्ञाता० २५२ । धर्मकथायाः नवमवर्गस्य प्रथममध्ययनम् । ज्ञाता० २५३ । पद्मा–पूर्वस्यां पुष्करणीनाम । जं० प्र० ३३५ । कालमानविशेषः । ठाणा० ८६ ।

पउमाइं–पद्मानि सूर्यविकासीनि ईषत् श्वेतानि वा । जं० प्र० २६ ।

पउमाकारं–पद्माकारम् । आव० ४२७ ।

पउमाते–शक्रेन्द्रस्याग्रमहिष्या राजधानी । ठाणा० २३१ ।

पउमाभ–यस्मिन् गर्भगते देव्याः पद्मशयने दोहदो जातः, तच्च तस्यै देवतया सज्जितं, पद्मवर्णश्च भगवान् तेन पद्मप्रभ इति । आव० ५०३ ।

पउमावई–पद्मावती-चम्पायां कूणिकराज्ञो भार्या । भग० ३१६ । पद्मावती–पाश्चात्यरूचकवास्तव्या चतुर्थी दिक्कुमारीमहत्तरिका । जं० प्र० ३९१ । पद्मावता–मुनिसुव्रतमाता । आव० १६० । पद्मावती–तेतलीपुरनगरे कनकरथराजपत्नी । आव० ३७३ । पद्मावती–द्रव्यव्युत्सर्गे चेटकदुहिता । चम्पानगरेशदधिवाहनपत्नी करकण्डुमाता । आव० ७१६ । कृष्णस्य देवी । निरय० ४ । धर्मकथाया नवमवर्गस्य प्रथममध्ययने देवी । ज्ञाता० २५३ । रोहीतकनगरे महाबलराज्ञो भार्या । निरय० ४० । कोणिकस्य राज्ञो । निरय० १९ । कालककुमारपत्नी । निरय० १९ । पद्मावती–शिक्षायोगदृष्टान्ते हैहयकूलसंभूतवैशालिकचेटकस्य द्वितीया पुत्री । आव० ६७६ ।

पउमावती–करकण्डुमाता । नि० चू० प्र० १९४ अ । नि० चू० द्वि० ४६ अ । नरवाहनराज्ञी । व्य० प्र० २२७ आ । कनकरथस्य राज्ञो । ज्ञाता० १८४ । भीमराक्षसेन्द्रस्य द्वितीयाऽग्रमहिषी । भग० ५०४ शेलकपूरे शेलकराजपत्नी । ज्ञाता० १०४ । साकेतनगरे पटबुद्धिराज्ञा । ज्ञाता० १३० । पद्मावती–शतानीकराज्ञो पुत्रोदायनस्य पत्नी । विपा० ६८ । पद्मावती–अन्तकृद्दशानां पञ्चमवर्गस्य प्रथममध्ययनम् । अन्त० १५ । पद्मावती–पश्चिमरुचकवास्तव्या चतुर्थी दिक्कुमारी । आव० १२२ । पद्मावती–चेटकदुहिता दधिवाहनराज्ञो । उत्त० ३०० । पद्मावती–महापद्मराज्ञो । उत्त० ३२६ । मरुत्पत्ये देवी । व्य० प्र० २८० आ ।

पउमावतीदेवी–शैलकेषग्राहोका देवी । ज्ञाता० १०८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पउमासण-पद्मासनं-पद्माकारमासनम् । जीवा० २०० ।
पउमुत्तर-पद्मोत्तरः-शुक्ललेश्याया आस्वादे दृष्टान्तः । प्रज्ञा० ३६४ । दशमचक्रीपिता । सम० १५२ । पद्मोत्तरः-दिग्हस्तिकूटनाम । सम० १५२ । पद्मोत्तरः नवमचक्री-महापद्मपिता । आव० १६२ ।
पउमुत्तरा-पद्मोत्तरा शर्कराभेदः । जं० प्र० ११८ ।
पउमुप्पल-पद्मोत्पलं-अधस्थासाकाकार पात्रम् । आ० २११ । जस्स अहो णाभी पउमागिती उप्पलागिती वा तं पउमुप्पलं । नि० चू० प्र० १२५ । पद्मोत्पलाकारपुष्पक-युक्तम् । बृ० द्वि० २४५ अ ।
पउमे- । नि० चू० प्र० १६० ।
पउमोत्तरा-पद्मोत्तरा । जीवा० २७८ ।
पउयंगे-कालमानविशेषः । भग० ८८८ ।
पउर-प्रचुरः । ओघ० १२० ।
पउरजंघ-प्रचुरजङ्घः-पुष्टजङ्घः । जं० प्र० १३१ ।
पउरजणवय-पौरजनपदम् । आव० १७४ ।
पउरत्थ-प्रचुरार्थः-प्रभूतार्थः । आव० ४१३ ।
पउरा-पौराः-पुरवासिनः । बृ० प्र० १५५ अ ।
पउराए-प्रचूराणि प्रचुरकाणि-प्रभूतानि । प्रचुरः आयो-लाभो यस्मिन् । उत्त० २८६ ।
पउल-साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः । प्रज्ञा० ३४ ।
पउलण-पचनविशेषः । प्रश्न० १४ ।
पउलियं-पक्वं अग्गिणा पउलियं । नि० चू० द्वि०१५७अ।
पउल्लग-भाजनं स्थाल्यादि । दश० ६७ ।
पउसा-म्लेच्छविशेषः । प्रज्ञा० ५५ ।
पए-प्राग्प्रत्युषसि । ओघ० ८१ । प्रगे । आव० ८६, ३३५, ६४० । प्राग्-पूर्वम् । ओघ० ४७ । पूर्व, प्रगे । बृ० द्वि० १६१ आ ।
पएणियार-प्रकृष्ट एणीचारः श्रेणीचारः । प्रश्न० १४ ।
पएस-प्रदेशः-लघुतरम् । भग० ३८१ । प्रकृष्टो-निरंशो धर्माधर्माकाशजीवानां देशः-अवयवविशेषः प्रदेशः । ठाणा० २४ । प्रदेशः-देशैकदेशः । जं० प्र० ३३६ । प्रदेशः-कर्मपरमाणुः । प्रज्ञा० २१८ । प्रदेशः-त्रसरेण्वा-दिरूपः । जीवा० ३२२ । प्रदेशः-परमाणुः । आचा० १३ । प्रदेशः-अंशः । विशेष० ६४७ । प्रदेशः-जीव-प्रदेशः कर्मपुद्गलसम्बन्धः । आव० ५६८ । संयमस्था-नाविभागपरिच्छेदः । बृ० नृ० १५ आ । प्रकृष्टो-निरंशो देशः प्रदेशः । अनु० ६७ । प्रकृष्टो-निरंशभागः । प्रकृष्टः-सर्वसूक्ष्मः पुद्गलास्तिकायस्य देशो-निरंशो भागः प्रदेशः अनु० ६८ । प्रकर्षेणान्त्यत्वात्प्रदेशान्तराभावतः क्वचि-दप्यनुगतरूपाभावलक्षणेन दिश्यते-प्राग्वदुपदिश्यत इति प्रदेशः-निरंशो भागः । उत्त० ६७२ । प्रदेशः-सूचकत्वा-दस्य अन्त्यप्रदेशजीववादिनः अन्त्य एव प्रदेशो जीव इत्यभ्युपगतः । उत्त० ५२ । लघुतरभागः । जं० प्र० १४४ ।
पएसकम्म-प्रदेशाः-कर्मपुद्गलाः जीवप्रदेशेष्वोतप्रोतानां तद्रूपं कर्म्म प्रदेशकर्म्मः । भग० ६५ ।
पएसग्ग-प्रदेशाग्रः-प्रदेशपरिणामः । ठाणा० २५३ ।
पएसघण-प्रदेशघनः-संस्थानविशेषः । आव० ४४४ ।
पएसणामणिहत्ताउए-प्रदेशाः-कर्मपरमाणवः ते च संक्र-मतोऽप्यनुभूयमानाः परिगृह्यन्ते तत्प्रधानं नाम, तेन सह निधत्तमायुः प्रदेशनामनिधत्तायुः । प्रज्ञा० २१८ ।
पएसनिवत्तसंठाण-प्रदेशैः-आत्मप्रदेशैर्निर्वृत्तं-निष्पन्नं सं-स्थानं यस्य सः प्रदेशनिर्वृत्तसंस्थानः । प्रज्ञा० १०८ ।
पएससंकम-यत्कर्म्मद्रव्यमन्यप्रकृतिस्वभावेन परिणाम्यते सः प्रदेशसंक्रमः । ठाणा० २२२ ।
पएसा-प्रदेशाः-जीवप्रदेशेष्वोतप्रोताः कर्मपुद्गलाः । भग० ६५ । प्रदेशाः-जीवप्रदेशा एसां ते जीवप्रदेशाः, चरम-प्रदेशजीवप्ररूपी निह्नवः । आव० ३११ ।
पएसी-प्रदेशी । आव० १६७ ।
पओअणं-प्रयोजनं-प्रवर्तनम् । उत्त० ५०३ ।
पओए-प्रतोदः-आरादण्डलक्षणः । दश० २५० ।
पओग-कायादिप्रयोगः । ओघ० २२१ । प्रयोगः-चेतना-वतो व्यापारः । विशे० १०६० । प्रयोगः-हरणक्रियायां प्रेरणमभ्यनुज्ञा च । आव० २३ । प्रयोगः-उपायः । राज० १४६ । प्रयोगः-मनःप्रभृतीनां म्रियमाणानां जीवेन हेतुकतूभूतेन यद् व्यापारणं प्रयोजनं सः प्रयोगः । ठाणा० १०७ । सम्यक्त्वादिपूर्वो मनःप्रभृतिव्यापारः, अथवा सम्यगादिप्रयोगः-उचितानुचितोभयात्मक औषधिव्यापारः ठाणा० १५१ । प्रयोगः-प्रज्ञापनायाः षोडशमं पदम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रज्ञा० ६ । प्रयोगः-प्रकर्षेण युज्यते व्यापार्यते-क्रियासु सम्बन्ध्यते वा साम्परायिकेर्यापथकर्मणा सहात्मा अनेनेति प्रयोगः-परिस्पन्दक्रिया आत्मव्यापार इति । प्रज्ञा० ३१७ । प्रयोगः-प्रयुज्यते इति व्यापारो धर्मकथाप्रबन्धो वा । सू० २३६ (?) । प्रयोगः-वीर्यान्तरायक्षयोपशमजीववीर्यजनितो व्यापारः । उत्त० २०१ । प्रयोगः-व्यापारः । ज्ञाता० १७७ । प्रयोगः-व्यापारणं करणं आशंसा व्यापारः । ठाणा० ५१५ । प्रयोजनं, सपरिस्पन्द आत्मनः क्रियापरिणामो व्यापारः इत्यर्थः । सम० ३१ । व्यावृत्तिः । सम० १२७ । व्यापरणं-करणम् । उत्त० ५८८ । प्रयोगः-जीवव्यापारः । भग० ५५ । प्रयोगः-कलान्तरम् । जं० प्र० २३२ । प्रयोगः-स्वकलसाधनव्यापारः । दश० १२३ । कायादिप्रयोगः । व्य० द्वि० ३६१ अ ।

पओगकरण-प्रयोगकरणम् । उत्त० १६७ ।

पओगकिरिया-प्रयोगक्रिया मनोवाक्कायलक्षणा । सूत्र० ३०४ । प्रयोगक्रिया, विंशतिक्रियामध्ये षोडशमी । आव० ६१२ । प्रयोगो-मनोवाक्कायलक्षणस्तस्य क्रिया-करणं व्यापृतिरिति प्रयोगक्रिया, अथवा प्रयोगैः-मनःप्रभृतिभिः क्रियते-बध्यत इति प्रयोगक्रिया कर्म्मेत्यर्थः । ठाणा० १५३ ।

पओगगती-प्रयोगः-प्रागुक्तः पञ्चदशविधः स एव गतिः प्रयोगगतिः । प्रज्ञा० ३२५ ।

पओगपरिणया-जीवव्यापारेण शरीरादितया परिणताः । भग० २२८ ।

पओगबंधे-जीवप्रयोगकृतः । भग० ३६४ ।

पओट्ठ-प्रद्विष्टः । बृ० प्र० २३१ अ ।

पओय-वनस्पतिविशेषः । भग० ८०४ ।

पओयणं-प्रयोजनं-अवश्यकरणीयं प्रयोजनम् । प्रश्न० २४ । प्रयोजनम् । प्रज्ञा० ४४७ । येन प्रयुक्तः प्रवर्तते तत् प्रयोजनम् । आव० ३७७ ।

पओयलट्ठी-प्रतोत्रयष्टिः-प्राजनकदण्डम् । औप० ६४ ।

पओलग्गिओ-प्रावलग्नः । आव० १८७ ।

पओलिता-पक्त्वा । उत्त० १७६ ।

पओस-प्रद्वेषम् । ओघ० १४६ । म्लेच्छविशेषः । प्रज्ञा० ५१ । प्रदोष-द्वेषम् । उत्त० ६३३ । रात्रेश्चतुर्थप्रहरः । ठाणा० २१४ । प्रदोषः । आव० ६४० ।

पओसकाल-प्रदोषकाले-रजनीमुखसमयः । उत्त० ५३६ ।

पओसा-प्रद्वेषः क्रोधादिः, नवमी प्रतिसेवा । भग० ६१६ ।

पओसिया-जनपदविशेषः । भग० ४६० ।

पकंठगा-पीठविशेषः, आदर्शवृत्तौ पर्यन्तावनतप्रदेशौ पीठौ प्रकण्ठौ । जं० प्र० ५३ ।

पक- । व्य० द्वि० १४१ अ ।

पकट्ठय-प्रकर्षयति-आकर्षयतीत्यर्थः । व्य० द्वि० ८६ आ ।

पकप्प-प्रकल्पः-अष्टाविंशतिविधः आचारप्रकल्पः, निशीथान्तमाचाराङ्गमिति । प्रश्न० १४५ । प्रकर्षेण कल्पः प्रकल्पः-प्ररूपणा, प्रकर्षकल्पो वा प्रकल्पः-प्रकल्पप्रधानेत्यर्थः, कल्पनं पकल्पो छेदनेत्यर्थः । प्रकर्षाद्वा कल्पनं प्रकल्पः । नि० चू० प्र० २१ आ । थेरकप्पिया संथारुत्तरपट्टेसु सुवंति एस पकप्पो । नि० चू० प्र० १६१ आ । णिसीहज्झयणं । नि० चू० तृ० ८१ अ । प्रकल्पः-आचारः, आसेवा । ठाणा० १४३ । अध्ययनविशेषः, निशीथः, व्यवस्थापनम् । सम० ४८ । प्रकल्प्यं प्रकल्पनीयं पिण्डादि । ठाणा० ३०० । प्रकल्पः-अष्टाशीतिग्रहेषु द्वापञ्चाशतम । जं० प्र० ५३५ । प्रकल्पः-निशीथाध्ययनम् । व्य० द्वि० ४० आ । णसीहं । नि० चू० तृ० १०० आ ।

पकम्मति-प्रक्रमते प्रकर्षेण प्रभवतीत्यर्थः । ठाणा० ५२२ ।

पकरण-प्रकरण प्रक्रिया । प्रश्न० १४१ ।

पकरणेयसुत्तं-प्रकरणसूत्रम् । बृ० प्र० ५० आ ।

पकरेइ-बध्नाति । भग० ५१ । स्थितिबन्धापेक्षया बद्धावस्थापेक्षया वा पकरेइ । भग० १०२ । बन्धाति । प्रज्ञा० ४०७ । प्रकरोति-प्रकर्षेण बध्नाति । पिण्ड० ४१ ।

पकरेति-प्रकरोति वेदयते बध्नाति च । भग० ६८ ।

पकाम-प्रकामं-अत्यर्थम् । ज्ञाता० ३१ । प्रकामं-अत्यर्थम् । भग० २६३ । अनेकशः । बृ० द्वि० १४ अ ।

पकामनिकरण-प्रकामनिकरणं-प्रकामः-इप्सितार्थाप्राप्तितः प्रवर्द्धमानतया प्रकृष्टोभिलाषः स एव निकरणं-कारणं यत्र प्रवेदने तत्तथा, अन्ये त्वाहुः-प्रकामे-तीव्राभिलाषे सति प्रकामं वा-अत्यर्थं निकरणं इष्टार्थसाधकक्रियमाणभावो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यत्र तत् प्रकामनिकरणम् । (?) ।

पकारफकारबकारभकारमकारप्रविभक्ति-एकोनविंशतितमो नाट्यविधिः । जीवा० २४७ ।

पकामरसभोई-अत्यर्थमन्नभोक्ता । ओप० ३८ ।

पकित्तिया-प्रकीर्तिताः-प्रकर्षेण सन्देहापनेतृत्वलक्षणेन संशब्दिताः । उत्त० ६७६ ।

पकिन्ना-प्रकीर्णानि दत्तानि । उत्त० ३६१ ।

पकीण्णं-प्रकीर्णं विक्षिप्तम् । प्रश्न० १५४ ।

पकुव्व-खण्डशः कृत्वा । सूत्र० १६३ ।

पकुव्वए-आलोचितेष्वपराधेषु प्रायश्चित्तदानतो विशुद्धिं कारयितुं समर्थः । भग० ६२० ।

पकुव्वी-आलोइए जो पच्छित्तं कारवेति सो पकुव्वी : नि० चू० प्र० १२८ आ । आलोचिते शुद्धिकरणसमर्थः । ठाणा० ४८६ ।

पकोट्ठए-प्रकोष्ठकः-कलाचिका । जं० प्र० ५२७ ।

पकोट्ठी-प्रकोष्ठीः-कलाचिका । प्रश्न० ८१ ।

पक्क-पक्वं-पाकप्राप्तम् । दश० २१८ । पक्वः-पाकप्राप्तः । आचा० ३६१ । पक्वः-काठिन्यमुपगतः । ज्ञाता० ११६ । आसङ्घडिकः-कलहनशिलः । बृ० द्वि० २६३ अ । जं अग्गिणा पउलियं पक्कं । नि० चू० द्वि० १५७ अ । पक्वम् । व्य० प्र० २५६ ।

पक्कण-चाण्डालः । आव० २१७ ।

पक्कणकुल-मातङ्गगृहम् । बृ० तृ० १८ आ । गर्हितकुलम् । आव० ५२० ।

पक्कणदेशज-पक्कणि । जं० प्र० १६१ ।

पक्कणिय-पक्कणिकः-चिलातदेशनिवासीम्लेच्छविशेषः । प्रश्न० १४ ।

पक्कणिया-म्लेच्छविशेषः । प्रज्ञा० ५५ ।

पक्कणी-धात्रीविशेषः । ज्ञाता० ४७ ।

पक्कतलमेहवन्ना-पक्वपत्रो यस्तलः-तालवृक्षः स च मेधश्चेति विग्रहस्तस्येव वर्णो येषां ते तथा । ज्ञाता० २३१ ।

पक्कभोम-कवालियादि पक्कभोमं । नि० चू० द्वि० ६४ आ ।

पक्कमहुर-फले द्वितीयो प्रकारः । ठाणा० १६६ ।

पक्कमेत्ति-मन्दपक्का । नि० चू० द्वि० ७५ अ ।

पक्का-पक्वा-पक्वः-पाकप्राप्तः । आचा० ३६१ ।

पक्काम-अर्धपक्वम् । ओघ० १०० ।

पक्किट्ठगसंठाण-पक्वेष्टकासंस्थानं-मानुष्यक्षेत्रबाह्यसूर्यचन्द्रातपक्षेत्रम् । जीवा० ३४७ ।

पक्किलियाणं-प्रक्रीडिताः-क्रीडितुमारब्धवन्तः । जं० प्र० ३६ ।

पक्कीलिय-प्रक्रीडितः-क्रीडितुमारब्धः । ज्ञाता० ४० ।

पक्कुणोहिं- । भग० ४६० ।

पक्खंद-प्रस्कन्दथ-आक्रामथ । उत्त० ३६६ । प्रस्कन्दन्ति-अध्यवस्यन्ति । दश० ६५ । प्रस्कन्दः-गमनम् । प्रश्न० ६८ ।

पक्ख-पक्षः-परिग्रहोऽङ्गीकारः । भग० १७ । पक्षः-वस्तुधर्मः-परिग्रहो वा । भग० १८ । पक्षः-अङ्गैकदेशः । जीवा० १८० । पक्षः-अङ्गमयः । जीवा० ३६० । पक्षः-पार्श्वः-पूर्वापरदक्षिणोत्तररूपः । प्रज्ञा० ३२६ । मध्यरात्रः । ज्ञाता० मल्ली । पक्षकम् । (?)। तिही (दशा चू०) सावनपक्षांशतिथिग्रहार्थं पक्षेति तथा च भोगापेक्षातिथिर्नात्र । (?) । कालविशेषः । भग० ८८८ । पक्षः-ग्रहः । जं० प्र० १४१ । आचार्यपक्षकः-पक्षप्रदेशः । ओघ० १०७ । पक्षः-पार्श्वं सन्निधिः । दश० २३५ । पक्षः । जीवा० १८० । पक्षः-पार्श्वोर्द्धरात्रिः । ज्ञाता० १२४ ।

पक्खच्छाया-पक्षच्छाका । सूर्य० ६५ ।

पक्खणपरपक्खण-व्याक्षसुव्याक्षम् । मर० ।

पक्खपिंडा-पक्षपिण्डः-बाहुद्वयकायपिण्डात्मकः । उत्त० ५४ ।

पक्खबाहा-पक्षबाहा-वेदिकैकदशः । जीवा० १८२ । पक्षबाहुः-पक्षैकदेशभूतः । जीवा० ३६० । पक्षबाहुः-पक्षैकदेशः । जीवा० १८० ।

पक्खर-प्रस्खरः । विशे० १३५५ । पक्खरः-तनुत्राणविशेषः । विपा० ४७ ।

पक्खलणं-प्रस्खलनम् । ठाणा० ३२८ । आवडणं । नि० चू० प्र० ४६ अ ।

पक्खा-पक्षाः-तदेकदेशाः पक्षबाहवोऽपि तदेकदेशभूता एवाङ्गमध्यः । (?) पक्षाः-पञ्चदशाहोरात्रप्रमाणाः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठाणा० ८६ ।

पक्खापक्खिए– । नि० चू० प्र० २६५ आ ।

पक्खाविक्खो–पक्षेक्षणी । गच्छा० ।

पक्खासणं–पक्ष्यासनं–यस्याधोभागे नानास्वरूपाः पक्षिणः । जीवा० २०० । पक्ष्यासनानि येषामधो भागे, नानास्वरूपाः पक्षिणः । जं० प्र० ४५ ।

पक्खिकायणा–कौशिकगोत्रप्रकारः । ठाणा० ३६० ।

पक्खिणि–पक्षिणि–शकुनिकासारिकादि । उत्त० ४०६ ।

पक्खित–प्रक्षिप्तं–आस्यगतं–मुखे प्रक्षिप्तम् । ओघ० ८८ ।

पक्खित्तो– । नि० चू० प्र० ३६ आ ।

पक्खियं–पाक्षिकं–पक्षातिचारनिवृत्तम् । आव० ५६३ । पाक्षिकः–अर्धमासः । व्य० द्वि० ३६६ अ ।

पक्खिविरालिए–पक्षिविशेषः । भग० ६२७ ।

पक्खिविरालिया–चर्मपक्षिविशेषः । प्रज्ञा० ४६ ।

पक्खिविराली–चर्मपक्षिविशेषः । जीवा० ४१ ।

पक्खुलणं–अधस्तात् उपरि वाऽऽस्फालनं प्रस्खलनम् । बृ० द्वि० २०५ आ । भूमावसं प्राप्तं कतिपयैरंगैः प्राप्तं वा प्रस्खलनम् । बृ० प्र० २२६ आ ।

पक्खुलमाणि–प्रकर्षेण स्खलद्गत्या गच्छन्ति । बृ० तृ० २२८ आ ।

पक्खेव–अर्धपथे त्रुटितशम्बलस्य शम्बलपूरणं द्रव्यं प्रक्षेपकः। ज्ञाता० १६३ । प्रक्षेपः–प्रक्षेपणीयः । सूर्य० १६७ । नि० चू० प्र० ४६ अ ।

पक्खेवाहार–कावलिकः । भग० २७ ।

पक्खोडिञ्ज–प्रस्फोटनं–निरन्तरं बहु वा स्फोटनम् । दश० १५३ ।

पक्खोडिया– । व्य०द्वि० ४०५ अ ।

पक्खोलण–प्रस्खलद् । निरय० ३४ ।

पक्षिगृहकोकिला–अण्डजपक्षिविशेषः । आचा० ७० ।

पक्षी–सम्पातिमजीवविशेषः । आचा० ५५ ।

पक्व–आसङ्खडिकः । बृ० द्वि० २६३ अ । भटित्रीकृतः । (?) ४३–७४ । पुनः स्थिरो अवतिष्ठति, उल्लापभयात् कार्यमपि न शेषका उदिरन्ति । व्य० प्र० ३१६ ।

पगंठग–प्रकण्ठकः–पीठविशेषः । जीवा० २०६ । पीठकविशेषः । जीवा० २१३,२१६ ।

पग–प्रभातः । नि० चू० द्वि० १०१ अ ।

पगइ–प्रकृतिः–कुम्भकारादिश्रेणिः । औप० ७२ । प्रकृतिः–स्वभावः । जीवा० २७७ । प्रकृतिः– । आ० ५५ । प्रकृतिः–कर्मप्रकृतिविषयको भगवत्याः प्रथमशतके चतुर्थोद्देशकः । भग० ६ । प्रकृतिः–शुद्धपदरूपः । विशे० ६६६ ।

पगइभद्दया–प्रकृतिभद्रकता–स्वभावत एवापरोपतापिता । उपा० २६ ।

पगओ–प्रगतः–परिचितः । आव० ७१० । प्रकृतः । विशे० ४०१ । प्रकृतोऽधिकृतः । नि० चू० प्र० ६८ अ ।

पगड–प्रकृतं बद्धं प्रकटं वा । आचा० १६१–१६२ । प्रकृतं–निर्वर्तितम् । दश० २७३ । प्रगर्त्तः–महागर्त्तः । आचा० ४११ । प्रकटः–प्रख्यातम् । उत्त० ३८४ ।

पगणिया–गणनया यत्र दीयते सा प्रगणिता । प्रकर्षेण–वक्ष्यमाणलक्षणजातिनामविशेषनिर्द्धारणेन पाषंडिनां गणना यस्यां सा प्रगणिता । बृ० द्वि० १४० अ० । प्रकर्षेण गण्या प्रगण्या पासंडोणं । नि० चू० प्र० १८६ आ ।

पगत–प्रकृतः–संमतः । बृ० तृ० २२ आ । प्रकृतः प्रकरणः । बृ० द्वि० १६७ अ । प्रकृतम् । आव० ३०६ प्रकृतम् । आव० ८२२ । जेमने । नि० चू० द्वि० ७२ आ ।

पगता–प्रख्याता । नि० चू० प्र० ३०१ आ । वृष्णिदशायां पञ्चममध्ययनम् निरय० ३६ ।

पगति–प्रकृतिः–अंशः, भेदः । ठाणा० २२० । प्रकृतिः–अविशेषितः । ठाणा० २२० ।

पगतीउदीरणा–यन्मूलप्रकृतीनामुत्तरप्रकृतीनां वा दलिकं वीर्यविशेषेणाकृष्योदये दीयते सा प्रकृत्युदीरणा । ठाणा० २२१ ।

पगप्प–प्रकल्पः–आचारः । आचा० २८१ ।

पगप्पएत्ता–प्रकल्पयित्वा–विकर्त्य वा । सूत्र० ३६६ ।

पगब्भ–प्रगल्भ–अतीवपरिपुष्टम् । ज० प्र० १०४ । प्रगल्भः–संपूर्णः । बृ० द्वि० ११६ अ । प्रगल्भं–अतीव परिपुष्टम् । जीवा० २६७ । प्रगल्भं–समर्थम् । भग० ४७० ।

पगब्भइ–प्रगल्भते–धार्ष्ट्यमवलम्बते । उत्त० ४४ ।

पगब्भा–प्रगल्भा–पार्श्वान्तेवासिनी प्रव्राजिका । आव०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०८ ।

पगयं-प्राकृतं-भोजनम् । ओघ० ७२ । प्रकृतं-उपयोगः । आव० २७७ । प्रकरणम् । आव० ५६० । प्रकृतं-गौरवार्हस्वजनभोजनादिकम् । पिण्ड० १०३ । प्रकृतं-प्रस्तावः । आचा८ ४०७ । प्रकृतं-प्रकरणं-प्राघूर्णभोजनादिकम् । पिण्ड० १४८ । प्रकृतः-अधिकृतो महामनुष्यः । व्य० द्वि० २४४ अ ।

पगरणं-प्रकरणम् । आव० ८२२ । ओघ० ९७ । प्रकरणं-अनेकार्थाधिकारवत्कायप्रकरणादि । दश० १४१ ।

पगरिए-प्रगलितः-गलत्कुष्ठः । पिण्ड० १५७ ।

पगरिस-प्रकर्षः-विशिष्टार्थावगमरूपः । जीवा० २५४ ।

पगलिय-प्रगलितः-सातत्यव्यूढः । नंदी० ४७ । प्रगलितः-क्षरितः । ज्ञाता० २६ ।

पगह-प्रकर्षेण प्रधानतया चागृह्यते इति प्रग्रहः-प्रभूतजनमान्यः प्रधानपुरुषः । व्य० प्र० ४६ आ ।

पगहिओ-ग्रहितुमारब्धः । (?) २२५ । प्रगृद्धः । आव० २९७ ।

पगहीय-प्रगृहीतः-गुरुसकाशादङ्गीकृतः । ज्ञाता० २१३ ।

पगाढं-प्रगाढं-प्रकर्षवत् । भग० २३१ । प्रगाढं-प्रकर्षवत् । प्रश्न० १५६ । प्रकर्षवृत्तिः । भग० ४८६ ।

पगाम-प्रकामं-चातुर्यामं उत्कटं वा । आव० ५७४ । द्वात्रिंशादिकवलाधिकं आहारं प्रकामम् । पिण्ड० १७४ । प्रकामं-अत्यर्थम् । उत्त० ६२५ । ज्ञाता० ४४ । प्रकामं-द्वात्रिंशत्कवलकाः प्रकामम् । व्य० द्वि० २२ आ ।

पगामस-प्रकामशः-बहुशः । उत्त० ४३३ ।

पगामाए-प्रकामं-अत्यर्थम् । उत्त० ५३२ ।

पगार-प्रचारः-प्रवृत्तिः । ज्ञाता० ४२ ।

पगासंति-प्रकाशयन्ति । सूर्य० ६३ । परपक्षे उन्भावेंति । नि० चू० प्र० १६ अ ।

पगास-प्रकाशः-प्रसिद्धिः । सूत्र० १४७ । प्रकाशः-प्रतिमता । जीवा० २०५ । प्रकाशः-प्रतिमता । जं० प्र० ४९ । प्रकाशः-प्रतिभा । जीवा० १६४ । प्रकाशः-प्रभा, आकारो वा । जीवा० २६७ । प्रकाशः-व्यक्तभावः । जं० प्र० ५२८ । प्रकाशः-प्रकटः । नेत्रवक्त्रादिविकाशः । अनु० १३९ । प्रकाशो-अर्थः । बृ० प्र० ३३ । प्रकाशः-प्रभा । ज्ञाता० २१ । प्रकाशीभवतीति प्रकाशः-क्रोधः । सूत्र० ६९ । प्रकाशः । आव० ६२५ । प्रकाशः-अर्थः । बृ० प्र० २०२ अ । प्रकाशोऽर्थस्य प्रकाशकः । व्य० द्वि० २१ आ ।

पगासई-प्रभासते-दीप्यते । प्रकाशयति प्रभासते वा । आव० ४९७ ।

पगासण-प्रकाशनं-प्रदीपादिनोद्योतकरणम् । आचा० ५० । प्रकाशनं-आलोचनम् । व्य० द्वि० १२३ अ ।

पगासणया-प्रकाशना-विहारविकटना अपराधविकटना चेत्यर्थः । व्य० द्वि० ९१ आ ।

पगासणा-प्रकाशना-प्रभासना, निर्मलीकरणम् । उत्त० ६२२ ।

पगासभोई-प्रकाशभोजी-दिवसभोजी । आव० ६४७ ।

पगासमुह-प्रकाशमुखः-विपुलमुखः । ओघ० १८२ ।

पगासवादी-प्रकाशवादी-सर्वसमक्षं गुरुदोषभाषी । बृ० प्र० २१४ अ ।

पगिज्झिय-प्रगृह्य । औप० ९९ । प्रगृह्य-उत्क्षिप्य । आचा० ३८२ ।

पगिज्झियपगिज्झिय-प्रगृह्य प्रगह्य-पौनःपुन्येन प्रसार्य । आचा० ३४१ ।

पग्गह-प्रग्रहः-रश्मी । भग० ४५९ । प्रग्रहः-उपादेयवाक्यः । उत्त० ६१९ । प्रग्रहः-प्रकर्षेण गृह्यते वचो प्रग्रहः-ग्राह्यवाक्यो-नायकः । आचा० ८९ । प्रगृह्यते-उपादीयते आदेयवचनत्वाद्यः स प्रग्रहः ग्राह्यवाक्यो-नायकः । ठाणा० ३ । प्रकर्षेण गृह्णाती प्रग्रहः । ओघ० २०७ । प्रग्रहः । उपा० ४४ ।

पग्गहठाण-प्रग्रहस्थानं-यद्यस्यायुधस्य ग्रहणस्थानम् । उत्त० ४२२ ।

पग्गहित-प्रगृहीतं आदरप्रतिपन्नत्वात् । ठाणा० २४७ ।

पग्गहिय-प्रगृहीतं-भोजनार्थमुत्पाटितम्, प्रकर्षेण गृहीतत्वादौघिकम् । औप० ३७ । प्रगृहीतः-बहुमानप्रकर्षादाश्रितः । भग० १२५ । प्रगृहीतः-बहुमानप्रकर्षाद् गृहीतः । ज्ञाता० ७६ ।

पग्गहियतर-प्रगृहीततरम् । आचा० ३७४ ।

पग्गहियतरगं-प्रगृहीततरकं-प्रकर्षेण गृहीततरं प्रगृहीत-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तरं तदेव प्रगृहीततरकम् । आच० २९२ ।

पग्गहिया–प्रगृहीता नाम भोजनवेलायां दातुमभ्युद्यतेन करादिना प्रगृहीतं यद्भोजनजातं भोक्तुं वा स्वहस्तादिना तद् गृण्हतः । षष्ठी पिण्डैषणा । ठाणा० ३८७ । जं असणादिगं भोत्तुकामेण कंसादिभायणे गहियं भुंजामित्ति असंसट्ठिए चेव साधू आगतो तं चेव देति एस पग्गहिया । नि० चू० तृ० १२ अ । प्रगृहीता–प्रकर्षेणाभ्युपगता । अनुत्त० ३ ।

पग्गहीय–प्रगृहीतं-भोजनार्थमुत्पाटितमिति । ठाणा० ४६५।

पघंसणं–पुणो पुणो पघंसणं । नि० चू० द्वि० ११९ अ ।

पङ्ककाण्ड–रत्नप्रभायां द्वितीयकाण्डम् । सम० ८८ ।

पचंकम्मणगं–प्रचङ्क्रमणं-भ्रमणम् । ज्ञाता० ४१ ।

पच्चंग–प्रत्यङ्ग–कुचकक्षादि । उत्त० ४२८ ।

पच्चंगिर–परपोषस्यात्मनो लगनम् । बृ० तृ० २२३ अ ।

पच्चंगिरदोसो–अपरितोषः । नि० चू० प्र० १६८ अ ।

पच्चंगिरा–प्रत्यङ्गिरः–अपकारः । बृ० प्र० १६८ आ ।

पच्चंत–प्रत्यन्तं–सीमग्रामः । उत्त० १७९ । प्रत्यन्तं–प्रत्यर्थिन् । आव० ५०६ । प्रत्यन्तः । उत्त० २२५,३९५ । प्रत्यन्तं–सीमा । आव० ६७३ । प्रत्यन्तः । आव० ६९३ प्रत्यन्तकः–नीचकः । आव० ५५७ । प्रत्यन्तः । आव० ८१५ । प्रत्यन्तः–सीमासन्धिवर्त्ती । व्य० प्र० १७० आ ।

पच्चंतगाम–प्रत्यन्तग्रामः । आव० ३५१ ।

पच्चंतणगर–प्रत्यन्तनगरं, शिक्षायोगदृष्टान्ते जितशत्रुराजधानी । आव० ६७८ ।

पच्चंतणयरं–प्रत्यन्तनगरं-नीचनगरम् । आव० ७१९ (?) ।

पच्चंतराया–प्रत्यन्तराजः । आव० १७३ ।

पच्चंता–प्रत्यन्तः, म्लेच्छाद्युपद्रवोपेतः । बृ० प्र० २३१ अ । प्रत्यन्ताः–सीमावर्तिनः । व्य० (?) ।

पच्चंति–प्रत्यन्तदेशः–म्लेच्छाद्युपद्रवोपेतः । ओघ० ६३ । पच्यन्ते । दश० ८७ । नि० चू० प्र० ९ अ ।

पच्चंतिओ–प्रत्यन्तिकः । आ० ३०६ (?) ।

पच्चंतिय–प्रत्यन्तः । आव० ३५८ ।

पच्चंतियविसए–देसविसेसो । नि० चू० प्र० २०८ आ ।

पच्चंतियसुणओ–प्रत्यन्तिकश्वा । आव० ७११ ।

पच्चइग–प्रत्ययितः । आव० ६९४ ।

पच्चइय–प्रत्ययः–कारणम् । आव० २७ । प्रत्ययः–कारणं शपथः ज्ञानं हेतुः विश्वासः निश्चयश्च । नंदी० ७६ ।

पच्चए–पाच्यते–वेद्यते अनुभूय पर्यन्तं नीयते । विशे० ८५१ । प्रत्ययः–प्रतीतिरविसंवादिवचनम् । ज्ञाता० २२ ।

पच्चओ–प्रत्ययः–कारणम् । प्रज्ञा० ५३९ । प्रत्ययः । उत्त० १०३ ।

पच्चक्खं–इन्द्रियार्थसंनिकर्षोत्पन्नं ज्ञानमव्यपदेश्यमव्यभिचारि व्यवसायात्मकं यत्रात्मार्थग्रहणं प्रति साक्षाद् व्याप्रियते तदेव प्रत्यक्षम् । सूत्र० २२५ । प्रत्यक्षं–साक्षात् । आचा० ३० । अश्नाति अश्नते–व्याप्नोति अर्थानिति अक्षः–आत्मा तं प्रति यद्वर्त्तते ज्ञानं तत् प्रत्यक्षं निश्चयतोऽवधिमनःपर्यायकेवलानि, अक्षाणि वेन्द्रियाणि प्रति यत्तत्प्रत्यक्षव्यवहारतः चक्षुरादिप्रभवम् । ठाणा० २६३ । अश्नुते–ज्ञानात्मना अर्थान्–व्याप्नोतीति अक्षो–जीवः, 'अशु भोजने' इत्यस्य वा अश्नाति–भुङ्क्ते पालयति वा सर्वार्थानित्यक्षो–जीव एव प्रतिगतं–आश्रितमक्षं प्रत्यक्षम् । अनु० २११ । अक्षं–जीवं अक्षाणि वेन्द्रियाणि अतिगतं प्रत्यक्षम् । भग० २२२ । तं प्रत्यव्यवधानेन यद्वर्तते ज्ञानं तत्भवति प्रत्यक्षम् । बृ० प्र० ८ अ । प्रत्यक्षः-अवधिमनःपर्यायकेवलाख्यः,-स्वयं दर्शनलक्षणः ।ठाणा० १५१। प्रत्यक्षं-अव्यवहितत्वेनार्थसाक्षात्करणादक्षमिति । ठाणा० ५० । प्रत्यक्षं–इन्द्रियमनोनिरपेक्षमात्मनः साक्षात्प्रवृत्तिमदवध्यादिकम् । नंदी० ७१ ।

पच्चक्खाओ–प्रत्याख्यातीति प्रत्याख्याता–गुरुविनेयः । आव० ८०३ ।

पच्चक्खाण–प्रत्याख्यानं-नमस्कारसहितादि । ठाणा० १२६। प्रत्याख्यानं–निवृत्तिद्वारेण प्रतिज्ञाकरणम् । ठाणा० १५६ । प्रत्याख्यानं–निवृत्तिः । ठाणा० ४९८ । प्रत्याख्यानं–निरोधप्रतिज्ञानम् । जिनकल्पादिप्रतिपत्त्या परिहारः । भग० ७२७ । प्रमादप्रातिकूल्येन मर्यादया ख्यान–कथनं प्रत्याख्यानं–विधिनिषेधविषया प्रतिज्ञा । ठाणा० ४४ । प्रत्याख्यानं–नमस्कारसहितादि । ठाणा० २३६ । सम० १२० । प्रत्याख्यानः–निरोधलक्षणः । उत्त० ५८९ । प्रत्याख्यानं नवमं पूर्वम् । ठाणा० १९९ । प्रत्याख्यानं–पौरुष्यादिनियमः । भग० १०० । प्रत्याख्यानं–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पौरुष्यादिविषयम् । भग० ३२३ । नवमं पूर्वम् । सम० २६ । प्रत्याख्यानं–नमस्कारसहितादि । ज्ञाता० १३४ । प्रत्याख्यानं–निवृत्तिः । भग० २९६ । प्रत्याख्यानम् । उत्त० १७६ । प्रत्याख्यानं सूत्रकृताङ्गस्य विंशतितममध्ययनम् । उत्त० ६१६ । प्रत्याख्यानं–निषेधलक्षणम् । आ० ४७८ । प्रत्याख्यानं–अनागतस्य स्थूलप्राणातिपातदेरेव । प्रज्ञा० ३९९ । प्रत्याख्यानं–पौरुष्यादिः । भग० १३६ ।

पच्चक्खाणकिरिया–प्रत्याख्यानक्रिया,सूत्रकृताङ्गे चतुर्थमध्ययनम् । आव० ६५८ ।

पच्चक्खाणप्पवाय–प्रत्याख्यानप्रवादं–प्रत्यख्यानं सप्रभेदं यद्वदति तत् प्रत्याख्यानप्रवादं नवमं पूर्वम् । नंदी २४१ ।

पच्चक्खाणफल–विनिवृत्तिफलम् । भग० १४१ ।

पच्चक्खाणस्स अट्ठ–प्रत्याख्यानार्थः–आश्रवद्वारनिरोधः । भग० १०० ।

पच्चक्खाणा–प्रत्याख्याना–मूलगुणोत्तरगुणविषयम्, योगसंग्रहे त्रयोविंशतितमचतुर्विंशतितमौ योगौ । आव० ६६४ ।

पच्चक्खाणावरण–प्रायाख्यानं–सर्वविरतिलक्षणः तस्याऽऽवरणम् । विशे० ५४५ । प्रत्याख्यानं–आमर्यादया सर्वविरतिरूपमेवेत्यर्थो वृणोतीति प्रत्याख्यानावरणः । ठाणा० १९४ । चतुर्षु कषायेषु तृतीयः । सम० ३१ । प्रत्याख्यानं–सर्वविरतिरूपमाव्रीयते यैस्ते प्रत्याख्यानावरणः । प्रज्ञा० ४६८ ।

पच्चक्खाणी–याचमानस्य प्रतिषेधवचनं प्रत्याख्यानी । प्रज्ञा० २५९ । प्रत्याख्यानी–असत्यामृषाभाषाभेदः । दश० २१० ।

पच्चक्खातं प्रत्याख्यानं–परिहारः । आव० ८५६ ।

पच्चक्खामि–प्रतीपमभिमुखं ख्यापनं सावद्ययोगस्य करोमि-प्रत्याख्यामि । आव० ४५५ । प्रतिशब्दः–प्रतिषेधे आङ्–अभिमुख्ये ख्या–प्रकथने, पतीपमभिमुखं ख्यापनं प्रत्याख्यामि । दश० १४४ । प्रत्याचक्षे–संवृतात्मा सांप्रतमनागतप्रतिषेधस्य आदरेणाभिधानं करोमि । दश० १४४ ।

पच्चक्खायं–प्रत्याख्यातं–सर्वविरतिप्रतिपत्तितः प्रतिषेधितम् । ओप० ८५ । प्रत्याख्यातं–भूयोऽकरणतया निष्ठितम् । प्रज्ञा० २६८ । प्रत्याख्यातं–अतीतं निन्दया एष्यमकरणतयेति । आव० ७६२ । प्रत्याख्यातं–वर्जितमनागतकालविषयम् । भग० ३६ । प्रत्याख्याता–अनशनस्थः । आव० १३२ । हेत्वभावतः प्रत्याख्यातम् । दश० १५१ ।

पच्चक्खावितओ–प्रत्याख्यापयन्तीति प्रत्याख्यापयिताशिष्यः । आव० ८६० ।

पच्चगिरा–अविश्वस्तः । नि० चू० तृ० १६ अ ।

पच्चगिरादोस–प्रत्यङ्गिरादोषः–परकीयोऽप्यात्मनि लगतीत्यर्थः । बृ० प्र० ३०८ अ ।

पच्चडं–पुघडं–पूर्णम् । नंदी० ।

पच्चडिया–प्रत्यडिका–द्वात्रिंशत् लौकिकमबद्धकरणम् । आव० ४६५ ।

पच्चणीग–मोक्षप्रत्यनीकत्वात् प्रत्यनीकः, सेज्जायरधूअपच्चणीगोवलक्खणाओ वा पच्चणीगो लोभो भण्णति । नि० चू० प्र० ७७ आ ।

पच्चणीय–प्रत्यनीकः–छिद्रान्वेषी । जीवा० २८० । प्रत्यनीकं–दुरभव्यता, अभव्यता । सूर्य० २९६ ।

पच्चणुब्भवमाण–प्रत्येकमनुभवन् । जीवा० २०१ ।

पच्चणुब्भवमाणा–प्रत्येकमनुभवनम् । ज० प्र० ४७ ।

पच्चणुब्भवमाणी–प्रत्यनुभवन्ती-वेदयन्ती । ज्ञाता० २०४ ।

पच्चति–पच्यते । आव० २०६ ।

पच्चतिते–प्रत्ययात्–इन्द्रियानिन्द्रियलक्षणान्निमित्ताज्जातः प्रात्ययिकः आप्तवचनप्रभवः । ठाणा० १५१ ।

पच्चत्थिग–प्रत्यर्थिकः–प्रत्यनीकः । पिण्ड० १३१ । पडिणीओ । नि० चू० तृ० ९३ अ ।

पच्चत्थिम–पश्चिमदिक् । ठाणा० ६८ ।

पच्चत्थिया–प्रत्यनीका । नि० चू० द्वि० ९८ आ ।

पच्चत्थो–प्रत्यर्थी–परस्माद् मयेदं लभ्यमिति याचते । व्य० प्र० ४ अ ।

पच्चत्थुय–प्रत्यवस्तृतं–आच्छादितम् । जीवा० २१० । प्रत्यवस्तृतः–पुनः पुनराच्छादितः । ज्ञाता० १२५ । प्रत्यवस्तृतः–आच्छादितम् । जं० प्र० ५५ ।

पच्चप्पिणमाणे–प्रत्यर्पयितुम् । ठाणा० ३१२ ।

पच्चप्पिणह–प्रत्यर्पयत–कृतां सतीं निवेदयत । ज्ञाता० २१ । प्रत्यर्पयत–निवेदयत । भग० ३१७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पच्चप्पिणेयव्वो–प्रत्यर्पणीयः । आव० ४१६ ।
पच्चब्भासो–प्रत्याभ्यासः–प्रत्युच्चारणम् । विशे० ११५३ ।
पच्चभिजाणेज्जा–प्रत्यभिजानीयात्–अनुमिनुयात् । अनु० २१३ । प्रत्यभिजानीयात् । आव० ८२३ ।
पच्चमित्त–प्रत्यमित्रः–प्रातिवेश्मिकनृपः । औप० १२ । प्रत्यमित्रः–यः पूर्वं मित्रं भूत्वा पश्चादमित्रो जातः । जीवा० २८० ।
पच्चय–प्रत्ययः–निमित्तकारणम् । विशे० ७२४ । प्रत्ययः–अवबोधः । ठाणा० १३ । प्रत्ययः–सर्वातिशयनिधानमतीन्द्रियार्थोपदर्शनाव्यभिचारि । सम० १२५ । प्रत्ययं–बन्धनकारणम् । आचा० ६१ ।
पच्चयकरणं–प्रत्ययकरणं–दूषणापोहेन प्रतीत्युत्पादनम् । ज्ञाता० १६१ ।
पच्चयकसाए–प्रत्ययकषायाः कषायाणां ये प्रत्ययः–यानि बन्धकरणानि ते चेह मनोज्ञेतरभेदाः शब्दादयः।आचा० ६१। प्रत्ययकषायः–खल्वान्तरकरणविशेषः तत्पुद्गललक्षणः । आव० ३६० ।
पच्चयय–प्रत्ययः–ज्ञानकरणं, प्रतीयतेऽनेनार्थं इति । सकलावरणक्षयाय उत्पत्तिरेव वा । जं० प्र० ४१ (?) ।
पच्चला–प्रत्यलो । उत्त० १०५ ।
पच्चलिया–प्रत्याद्रिता–जागरिता । आव० ६६० ।
पच्चवत्थाणं–प्रत्यवस्थानं–शब्दार्थन्यायतः परोपन्यस्तदोषपरिहाररूपम् । उत्त० २० ।
पच्चवयार–प्रत्यवतारः–अवतरणं, आविर्भाव इति । जं० प्र० १८ ।
पच्चवाय–प्रत्यपायः । आव० ६३२ । प्रत्यपायं–व्याघ्रादिप्रत्यपायम् । आव० ३८४ । प्रत्यपायः–दोषः । ओघ० १६ (?) । एकस्मिन् पथि गच्छतां दिवा प्रत्यपायः । ओघ० ६६ । प्रत्यपायः–उपघातहेतुऽव्यवसाननिमित्तादिः । उत्त० ३३५ । ऐहलौकिकः अपायः । बृ० द्वि० (?) ।
पच्चाउट्टणा–आवर्त्तनं प्रति ये गता अर्थविशेषेषूत्तरोत्तरेषु विवक्षिता अपायप्रत्यासन्नतरता बोधविशेषास्ते प्रत्यावर्त्तना । नंदी० १७६ ।
पच्चाओट्टो– । नि० चू० प्र० २४४ अ ।
पच्चाणि–सन्मुखम् । व्य० द्वि० १८३ अ ।
पच्चापिच्चियए–बल्वजः–तृणविशेषः तस्य पिच्चियंति कुट्टितत्वक् तन्मयम् । स्था० ३३८ ।
पच्चामित्त–प्रत्यमित्रः–प्रातिवेश्मिकः । ज्ञाता० ५६ । प्रत्यमित्रः–वस्तु २ प्रति अमित्रः । ज्ञाता० ८७ । प्रत्यय-मित्रं–अकारणवत्सलः । राज० १० ।
पच्चामित्तता–अमित्रसहायता । भग० ५८१ ।
पच्चामित्तेइ–प्रत्यमित्रः–यः पूर्वं मित्रं भूत्वा पश्चादमित्रो जातः अमित्रसहायो वा । (?) ।
पच्चायाइ–प्रत्यायातिः–प्रत्यागमनं,प्रत्याजातिः प्रतिजन्म । स्था० २०२ । प्रत्याजायते उत्पद्यते । भग० १११ । प्रत्यायाति–प्रख्याति याति । सूत्र० ३१० । प्रत्यायाति–आगच्छति । जीवा० २६२ ।
पच्चायति–प्रत्याजायते–उत्पद्यते । उपा० २८ ।
पच्चायाता–प्रत्याजातं–जन्म । ज० प्र० १६६ ।
पच्चायाती–प्रत्यायाति–जन्म । ठाणा० ३५५ ।
पच्चायाय–प्रत्याजातं–जन्म । भग० ३०८,४। प्रत्यायातः–प्रतिनिवृत्य आगतः । नि० (?) १०५ ।
पच्चायाहिइ–प्रत्याजनिष्यते । स्था० ४६१ ।
पच्चालोढं–आलीढविवरीयं । नि० चू० तृ० ६० अ । प्रत्यालोढं–आलीढविपरीतं, लोकप्रवाहे द्वितीयं स्थानम् । आव० ४६५ ।
पच्चावड–प्रत्यावर्त्तः–आवर्तस्य प्रत्यभिमुख आवर्त्तः । जीव० १८६ ।
पच्चावत्त–एकस्यावर्तस्य–प्रत्यभिमुखः आवर्तः प्रत्यावर्त्तः । ज० प्र० ३१ ।
पच्चासन्नत्त–प्रत्यासन्नत्वं प्रत्यासत्तिः–सादृश्यम् । विशे० १७२ ।
पच्चासूरण–प्रत्यासूरणं–संमुखीभूय युद्धकरणम् । व्य० प्र० १४२ आ ।
पच्चाहरय–प्रत्याहरतः–व्याकुर्वतः । सम० ६२ ।
पच्चूढयतो–परिवूढं । नि० चू० द्वि० १६८ आ ।
पच्चुण्ण–प्रत्युतम् । दश० ४४ ।
पच्चुत्थए–प्रत्यवस्तृतं–आच्छादितम् । ज्ञाता० १५ ।
पच्चुपन्नविणासि–प्रत्युत्पन्नविनाशि-प्रत्युत्पन्न-वर्त्तमानलब्धं बस्त्वित्यर्थो विनाशितं–उपहतं येन तत्तथा. प्रत्युत्पन्नं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विनाशयतीत्वं शीलं प्रत्युत्पन्नविनाशि वा । ठाणा० ९८ ।
पच्चुप्पण–प्रत्युत्पन्नः–गुणितः । प्रज्ञा० २८० ।
पच्चुप्पण्ण–प्रत्युत्पन्नं–साम्प्रतमुत्पन्नं-वर्तमानमित्यर्थः-प्रति प्रतिवोत्पन्नं–भिन्नव्यक्तिस्वामिकं वा । आव० २८४ ।
पच्चुप्पण्णपरायण–प्रत्युन्नपरायणः–प्रत्युत्पन्नं–वर्त्तमानं तस्मिन्परायणः तन्निष्ठः । उत्त० २७५ ।
पच्चुप्पण्णा–सहजायगादि मित्ता । नि० चू० तृ० २९ अ ।
पच्चुप्पन्न–साम्प्रतमुत्पन्नं प्रत्युत्पन्नं वर्त्तमानकालभावि । अनु० २६५ । प्रत्युत्पन्नः–अप्राप्तपूर्वो वर्त्तमान इत्यर्थः । भग० ३९९ ।
पच्चुरस–प्रत्युरसं–सम्मुखम् । पिण्ड० ७६ । प्रत्युरसं–गुरोरभिमुखम् । ओघ० १८२ ।
पच्चुवगार–प्रत्युपकारः । उत्त० २२० ।
पच्चुवसमति-प्रत्युपशमयति । आव० १२२ ।
पच्चुवेक्ख–प्रत्युपेक्ष्य-पर्यालोच्य । सूत्र० ४२६ ।
पच्चुवेक्खइ-प्रत्युपेक्षते–निरीक्षते । औप० ६४ ।
पच्चुवेक्खमाणे–समुत्पेक्षमाणो–व्यापारयन् । राज० ११५।
पच्चूस–प्रत्यूषः–कालविशेषः । ओघ० २२ । प्रत्यूषः । आव० ३७०, ५७७ । रात्रेः चरमप्रहरः । स्था० २१४ । प्रत्यूषकाललक्षणः । ज्ञाता० २१ ।
पच्चोअड–प्रत्यवतट–आच्छादनः । ज० प्र० ५८ । प्रत्यवतटानि तटसमीपवर्त्यभ्युन्नतप्रदेशाः । ज० प्र० २९१ ।
पच्चोगलिय–प्रत्यवगलितः । आव० ५५८ ।
पच्चोणियत्तं–प्रत्यवनिवृत्तं–अधःपतितम् । प्रश्न० ५० ।
पच्चोणी–सन्मुखागमनम् । पिण्ड० १२८ ।
पच्चोणीए–संमुखं । नि० चू० द्वि० ९७ अ ।
पच्चोयड–प्रत्यवतटं–तटसमीपवर्ती अत्युन्नतप्रदेशः । जीवा० १९७ । अवच्छादितः । राज० ७१ । प्रत्यवतटः–आच्छादनः । जीवा० २१४ ।
पच्चोयडाओ–प्रत्यवतटानि–तटसमीपवर्त्यभ्युन्नतप्रदेशा यासां ताः । ज० प्र० ४१ ।
पच्चोरुहइ–प्रत्यवरोहति । ज्ञाता० १६ । प्रत्यवरोहति–मध्ये प्रविशति । जीवा० २५४ ।
पच्चोवयमाण–प्रत्यवपतत् । भग० ७२१ ।
पच्चोवयंत–प्रत्यवपतन्–प्रतिनिवर्त्तमानः । प्रश्न० ७६ ।
पच्चोसक्कइ–प्रत्यवसर्पति व्यावर्त्तते । भग० ५७६ ।
पच्चोसक्कति-प्रत्यवष्वष्कते-पश्चादवसर्पति । सूर्य० २८९ ।
पच्छंत–पुरोहडं वा वच्चं । नि० चू० प्र० १९३ अ ।
पच्छंभाग–पश्चार्द्धागः । स्था० ४६९ । पश्चार्द्धागः । सूर्य० १०४ ।
पच्छ–प्रच्छनकम् । विपा० ७१ ।
पच्छकम्म–पश्चात्कर्म–यत्पुनर्भक्तादेदानात्पश्चात्क्रियते तत् पश्चात्कर्मः । पिण्ड० १४९ ।
पच्छणं–ह्रस्वैः क्षुरादिभिस्त्वचो विदारणम् । विपा० ४१ ।
पच्छणणं–प्रक्षणनं–जीरणम् । प्रश्न० १६४ ।
पच्छणा–प्रक्षणाति–ह्रस्वानि त्वचो विदारणानि । ज्ञाता० १८१ ।
पच्छदं–प्रच्छदो–वस्त्रविशेषः । ज्ञाता० २२१ ।
पच्छन्न–प्रच्छन्नं–अगीतार्थासमक्षम् । ठाणा० २०३ ।
पच्छन्नपाव–प्रच्छन्नपापः-कूटप्रयोगकारी । आव० ५८९ ।
पच्छन्नभासी–प्रच्छन्नभाषो-सिद्धान्तार्थमविरुद्धमवदातं सार्वजनीनं तत् प्रच्छन्नभाषणेन गोपकः, प्रच्छन्न वाऽर्थमपरिणताय भाषकः । सूत्र० २५१,१८ ।
पच्छय–प्रच्छदः–वस्त्रविशेषः । भग० ३१८ ।
पच्छवत्थुग–पश्चाद्वास्तुकं–पश्चाद्गृहकम् । प्रश्न० १३८ ।
पच्छा–पश्चाच्छदः–पश्चादनुपूर्व्यभिधायी । व्य० प्र० ११९ अ।
पच्छाइंताण–पश्चादतियतामागच्छताम् । व्य० द्वि० ३६६ आ
पच्छाकड–जेण चारित्तं पच्छाकडं उन्निक्खंतो भिक्खं हिंडइ वा न वा । नि० चू० तृ० ८४ आ । नि० चू० प्र० १२० अ । पश्चात्कृतकः । आव० १९१ । व्य० द्वि० २७५ आ । पश्चात्कृतं–पराजितः । बृ० प्र० १५१ आ ।
पच्छाकम्म–पश्चात्-दानानन्तरं कर्म्म-भाजनधावनादि यत्राशनादौ तत् पश्चात्कर्म । प्रश्न० १५४ । पश्चाद्भोक्ष्याम इति पश्चात्कर्म । दश० २०३ ।
पच्छाकायिय–पश्चात्कायिकम् । आव० २१७ ।
पच्छाग–प्रच्छादकः–कल्पः । ओघ० २०८ ।
पच्छाणुतावय–पश्चादनुतापकः–पश्चात्तापकृत् । उत्त० ३४० ।
पच्छाणुपुव्वी–पाश्चात्यः–चरमसीमादारभ्य व्यत्ययेन वानुपूर्वी–परिपाटिः विरच्यते यस्यां सा निरुक्तविधिना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पश्चानुपूर्वी । अनु० ७३ ।

पच्छाणुसए–पश्चादनुशयः–पश्चात्तापः । प्रश्न० १८ ।

पच्छातुरस्स–पश्चाद् अस्मिन् राजादौ प्रव्रजिते सति आतुरस्य । ज्ञाता० १०२ ।

पच्छापुरा–विवक्षितकालस्य पश्चात् पूर्वं च सर्वदैवेत्यर्थः । भग० १२२ ।

पच्छावाया–पथ्या वाता–वनस्पतीनां सामान्येन हिता वायवः पश्चाद्वाताः । ज्ञाता० १७१ ।

पच्छासंखडि–पश्चात्सङ्खडिः-मृतकसङ्खडिः ।आचा० ३३०।

पच्छासंखडी–अपरसूर्ये–पच्छासंखडी, अपरस्यां दिशि पच्छासंखडी । बृ० द्वि० १३५ अ । मज्झण्ह पच्छतो पच्छासंखडो । नि० चू० प्र० ३१० अ । अपराण्हे तु क्रियमाणा पश्चात्सङ्खडी । बृ० तृ० १७६ आ ।

पच्छासंथुय–पश्चात्संस्तुतः–श्वसुरकुलसंबद्धः । आचा० ३३६ । पश्चात्संस्तुतः–यदन्तिकेऽधीतं श्रुतं वा तत्संबंधिनो वाऽन्यत्रावासितः । आचा० ३५३ । पश्चात्संस्तुतः–श्वसुरादिः । आचा० ३५१ ।

पच्छासंथव–पश्चात्संस्तवः–श्वश्वादिकल्पनया परिचयकरणम् । पिण्ड० १२१ ।

पच्छित्तं–प्रायसो वा चितं–जीवं शोधयति–कर्ममलिनं विमलीकरोति तेन, प्रायो वा–बाहुल्येन चित्तं स्वेन स्वरूपे अस्मिन् सतीति प्रायश्चितम् । आव० ७८२ ।

पच्छित्तणुवातो–जहा सव्वे मासगुरुसुत्ता पढमुद्देसे अणुवत्तिया, वितियादिसु मासलहु, छट्ठादिसु चउगुरु, बारसमादिसु चउलहु । अहवा पच्छित्तणुवातो पणगादिजोगो जाव चरिमं । नि० चू० तृ० १४८ आ ।

पच्छिप्पिडय–पच्छिकापटिकम् । राज० १४१ ।

पच्छिपिडए–पच्छिकालक्षणपिटकः । भग० ३१३ ।

पच्छिमकंठभाउवगता– । सूर्य० ६५ ।

पच्छिमकाल–पश्चिमः कालः–पाश्चात्यवयः । पिण्ड० १७७ । पश्चिमकालः–संलेखनाकालः । ओघ० १८६ ।

पच्छिमग–पश्चिमकः–चरमाः । ठाणा० २६६ ।

पच्छिमवय–पश्चिमवयः । आव० १३७ ।

पच्छिमपिडगं– । अन्त० १६ ।

पच्छुद्दिट्ठं–पडिच्छगायरिएण उद्दिट्ठं तं पच्छुद्दिट्ठं । नि० चू० तृ० २६ अ ।

पच्छोलंति–पृष्ठतो मुखां चपेटां ददाति । जं० प्र० ४१६ ।

पच्छोलेइ–पृष्ठतो मुखां चपेटां ददाति । भग० १७५ ।

पच्छिमसंजमो–अहक्खायचारित्तं । नि० चू० द्वि० ७ अ ।

पच्छिमा तवा–सुहुमकिरियानियट्टी वोच्छिन्नकिरियमप्पडिवाइं च एते पच्छिमा तवा । नि० चू० द्वि० ७ अ ।

पजगो–साङ्कुरोऽनङ्कुरो वाऽनन्तवनस्पतिः । पञ्चवर्णः । बृ० तृ० १६६ आ ।

पजणणं–प्रजन्यतेऽपत्यं येन तत् प्रजननं शिश्नं–लिङ्गम् । सूत्र० १०३ । प्रजननः–मेहनः । ठाणा० १३८ ।

पजीवण–प्रजीवनकं–जीवनहेतुकं द्रव्यम् । पिण्ड० १३८ ।

पज्जंत–पर्यन्तः–विभागः । प्रश्न० ६८ । पर्याप्तः–शक्तः । भग० ६८४ ।

पज्ज–पादहितं पाद्यं–पादप्रक्षालनस्नेहनोद्वर्त्तनादि । ज्ञाता० २०६ । पद्यं–छन्दोनिबद्धम् । ठाणा० २८८ । वृत्तादि यत् गीयते तत् पद्यम् । ज० प्र० ३६ । पाद्यम् । आव० ३०० । पद्यं–"पज्जं तु होइ तिविहं समम्द्धसमं च नाम विसमं च । पाएहिं अक्खरेहिं य एव विहिण्णू कई बेंति ॥ १७४ ॥" दश० ८७ ।

पज्जणं–सज्जणं कलमोदणं उप्फोसणं धावणादिकिरियाओ य । नि० चू० द्वि० १६६ अ । पायनम् । आव० ५१५ ।

पज्जणघडिया–पायनघटिका । आव० ५१४ ।

पज्जणया–पायनताः । बृ० प्र० १०१ अ ।

पज्जत्त–पादकप्पितो । नि० चू० द्वि० ११६ आ । पन्नत्ति । बृ० प्र० ३० अ ।

पज्जत्ता–पर्याप्ता–या एकपक्षे–निक्षिप्यते सत्या वा मृषा वेति तद्द्रव्यव्यवहारसाधनी सा पर्याप्ता, प्रथमे द्वे भाषे सत्यामृषे पर्याप्ते तथास्वविषयव्यवहारसाधनात्, भाषाभेदः । दश० २१० ।

पज्जत्तापज्जत्तिय–पर्याप्तापर्याप्तिका–शरीरेन्द्रियपर्याप्ति–निर्वर्त्तनोच्छ्वास–पर्याप्त्यनिर्वर्त्तनसमर्था । प्रज्ञा० ४६० ।

पज्जत्ति–पर्याप्तिनाम–आहारादिपुद्गलग्रहणपरिणमनहेतुरात्मनः शक्तिविशेषः । प्रज्ञा० ४७४ । पर्याप्तिः–शक्तिः । बृ० प्र० १८४ आ । पर्याप्तिः–स्वविषयग्रहणसामर्थ्य-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लक्षणा । आव० ३४१ ।

पञ्चत्तियं–पर्याप्तम् । उत्त० १९३ ।

पज्जत्तिया–या प्रतिनियतरूपतया अवधारयितुं शक्यते सा पर्याप्ता, भाषायाः प्रथमो भेदः । प्रज्ञा० २५५ ।

पज्जत्तो–पर्याप्तिः–आहारादिपुद्गलग्रहणपरिणमनहेतुरात्मनः शक्तिविशेषः । जीवा० १० । पर्याप्तिः–नामशक्तिः–सामर्थ्यविशेषः । ठाणा० ५४ । पर्याप्तिः–आत्मशक्तिः । नंदी० १०४ । पर्याप्तिनाम आहारादिपुद्गलग्रहणपरिणमनहेतुरात्मनः शक्तिविशेषः,स च पुद्गलोपचयादुपजायेत।(?) । पर्याप्तिः–आहारादिपुद्गलग्रहणपरिमणनहेतुरात्मनः शक्तिविशेषः । नंदी० १०४ । पर्याप्तिः–समस्तपर्याप्तिता । उत्त० १४५ ।

पज्जपावणं–प्रजल्पकारणम् । भग० ५४४ ।

पज्जय–पर्यायः–परिपाटी प्रस्तावः । उत्त० ६६८ । प्रार्यकः–पितामहः । उत्त० ९८ । पितामहः । आव० ३०५ । प्रार्यकः–पितामहः । आव० ३५७ । पर्ययः–पर्यायः परिपाटिः । भग० ४७० । प्रार्यकः–पितुः पितामहः । ज्ञाता० ४९ । प्रार्यकः–पितुः पितामहः । पर्ययः–पर्यायः । भग० ४७० ।

पज्जयण–अयनं–गमनं वेदनमित्ययः । परिः–सर्वतो भावे, पर्ययनं सर्वतः–परिच्छेदनम् । विशे० ५५ ।

पज्जरत–रत्नप्रभायां महानरके षष्ठः । ठाणा० ३६५ ।

पज्जलण–प्रज्वलयति–दीपयति वर्णवादकरणेन मागधवदिति प्रज्वलन इति । ठाणा० १९३ ।

पज्जलियरोस–प्रज्वलितरोषः । आव० ५६६ ।

पज्जव–पर्यवः–शब्दपर्यवार्थः पर्यवरूपः । उत्त० ७१३ । पर्यायः–नवपुराणादिः क्रमवर्तिधर्मः । प्रश्न० ११७ । पयायः–भङ्गकादिप्रकारः । बृ० द्वि० १९७ अ । परिः–सर्वतो भावे, पर्यवनं समस्तात् परिच्छेदनम् पर्यवः । विशे० ५५ । पर्यायः-गुणो विशेषो धर्मश्च । प्रज्ञा० १७९ । पर्यवः । भग० ८८९ । पर्यवम् । उत्त० ६०६ । पर्यायः–अगुरुलघ्वादिः । आचा० ७ । पर्यवः–विशेषः । आचा० १५६ । पर्यवाः–कालकृता अवस्था, यथा नारकत्वादयो बालत्वादयो वा । सम० ११२ । पर्यवः–परिरक्षापरिज्ञानम् । ठाणा० २२ । पर्यवः–परिच्छेदः विशेषः, अवस्था । ठाणा० ४७ । परिः–सर्वतो भावे अवनं अवः पर्यवः । ठाणा० ३४८ । परि–सर्वतो भावे अवनं अवः, अवनं अवः, अवनं–गमनं, पर्यवः पर्यवनं वा पर्यव इति । आव० ८ । परिः–समन्तादपगच्छति न पुनर्द्रव्यवत् सर्वदैव तिष्ठतीति पर्यायः । परिः–सामस्त्येन एति–अभिगच्छति व्याप्नोति वस्तुतामिति वा पर्यायः–एकगुणकालत्वादिरेव । अनु० १११ । पर्यायः, प्रत्ययकारणम् । विशे० ६५१ । पर्यवः–परिः समन्तादवति–अपगच्छति न तु द्रव्यवत्सर्वदैवावतिष्ठत इति पर्यवाः । अथवा परिः–समन्ताद् अवनानि–गमनानि द्रव्यस्यावस्थान्तरप्राप्तिरूपाणीति पर्यवाः–एकगुणकालत्वादिः । अनु० १११ । पर्यायः–भेदः । दश० २६० । पर्यवः–अपगमः । दश० २७७ । पर्यायः–नारकत्वादिरेककृष्णत्वादिश्च । अनु० १०५ ।

पज्जवकाय–पर्यायान्–वस्तुधर्मान् आश्रीत्य कायः पर्यायकायः । आव० ६६७ ।

पज्जवजाए–पर्यवजातं तैरेव वाग्निस्पृष्टभाषाद्रव्यैर्यानि विश्रेणिस्थानि–भाषावर्गणान्तर्गतानि निसृष्टद्रव्यपराघातेन भाषापर्यायत्वेनोत्पद्यन्ते तानि द्रव्याणि पर्यवजातमित्युच्यन्ते । आचा० ३८५ । पर्यवः–ज्ञानादिविशेषा जाता यस्य स पर्यवजातः । ठाणा० १९ ।

पज्जवजात–पर्यवजातं–सूत्रार्थप्रकारम् । ठाणा० ३०१ । पर्यवयातः–पर्यवान् पर्यवेषु यातः–प्राप्तः पर्यवयातः । ठाणा० २२ । पर्यवः–अवस्थान्तरं जातो यत्र तत् पर्यवजातम् । प्रश्न० १५४ ।

पज्जवजाय–पर्यवाः–ज्ञानादिविशेषा जाता यस्य स पर्यवजातः; विशुध्यति । ठाणा० २१ ।

पज्जवज्जायसत्थ–पर्यवजातशस्त्रं–शब्दादीनां विषयाणां पर्यवः–विशेषास्तेषु तन्निमित्तं जातं शस्त्रं पर्यवजातशस्त्रं शब्दादिविशेषोपादानाय यदप्काण्युपघातकार्यनुष्ठानं तत् । आचा० १५६ ।

पज्जवट्ठिय–पर्यवस्थितः । प्रज्ञा० ३२७ ।

पज्जवनाम–पर्यायनाम–तत्तद्धर्माश्रिताभिधानम् । प्रश्न० १०४ ।

पज्जवपेयालणा–पर्यवपेयालना–पर्यायप्रमाणकरणं–पर्यायसंहति विवक्षा वा । पिण्ड० २६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पज्जवभंगसुहुमता–परमाण्वादीसु वण्णगंधरसफासेसु एगगुणकालगादि पज्जवभंगसुहुमता । नि० चू० तृ० ६७ आ ।

पज्जवयात–पर्यवजातं–जातविशेषं स्फुटतया भविष्यतीति । ठाणा० ३५० ।

पज्जवलाभ–पर्यवलाभः-पर्यवप्राप्तिः । आव० ४२ ।

पज्जवलोढ–अतिजर्णतया कुत्सिते वर्णान्तरयुक्ते स्फुटिते वा । बृ० द्वि० ९२ अ ।

पज्जवसंखा–पर्यवसङ्ख्या । अनु० १३३ (?) ।

पज्जवसाण–पर्यवसानं–संसरणपर्यन्तः । ठाणा० ३४६ । पर्यवसानं-निष्ठाफलम् । प्रश्न० १३६ । पर्यवसानम् । सूर्य० १२ ।

पज्जवसिय–पर्यवसिता-निष्ठां गता । प्रज्ञा० २५६ ।

पज्जवा–पर्यवः-बुद्धिकृता निर्विभागा भागाः, एकगुणश्वेतत्वादयः । ज० प्र० १२८ । पर्यवाः–द्रव्यगुणाश्रिताः । उत्त० ५५७ । पर्यवाः–पञ्चधनुः शतसहस्रमानादिका विशेषाः । जं० प्र० ७० । पर्यवाः–प्रज्ञाकृताः अविभागाः पलिच्छेदाः । भग० १४९ । पर्यायाः–स्वपरभेदभिन्ना अक्षरार्थः पर्यायाः । सम० १०९ । पर्यवाः-शब्दपर्यवार्थपर्यवरूपाः । उत्त० ७१३ ।

पज्जवाग्गं–पर्यायाग्रं–सर्वाग्रम् । आचा० ३१९ ।

पज्जाअ–पर्यायः–अभिप्रायः । सूत्र० २५३ । पर्यायः–निरुक्त तात्पर्यार्थः । सूत्र० २६२ । पर्यायः–अवस्थाविशेषः । सूत्र० २७८ । पर्यायः–परिपाटी । सूत्र० ४१३ ।

पज्जाण–पायनं–लोहकारेणातापितम् । ज्ञाता० ११६ ।

पज्जाय–पव्वज्जा– । नि० चू० प्र० १८३ अ । पर्यायः–भेदः, भाव । विशे० ३९ । 'इण्' गतौ अयनं, आयः, लाभः, प्राप्तिरिति परिस्तर्थव समन्तादायः पर्यायः । विशे० ५५ । पर्यायः–नवपुराणादिः । विशे० ३५६ ।

पज्जाया–उदुबद्धिया दव्वखेत्तकालभावा, एत्थ परिसमंता आसविज्जंति-परित्यजन्तीत्यर्थः । नि० चू० ३३६ आ ।

पज्जिए–प्राजिका । दश० २१६ ।

पज्जित–पायितः । उत्त० ४६१ ।

पज्जित्ता–अज्जियाए माया । दश० चू० १०९ ।

पज्जिया–पायिता । आव० ४०२ ।

पज्जुण्ण–द्वारावत्यां कुमारः । ज्ञाता० २०७ । प्रद्युम्नः । आव० ९४ ।

पज्जुत्तं–पौद्गलिकं भोजनम् । बृ० तृ० ५८ अ ।

पज्जुन्न–प्रद्युम्नः–अभ्युष्ठकुमारमुख्यः । अन्त० २ । चतुर्विधमेवेषु द्वितीयः । ठाणा० २७० । प्रद्युम्नः–अन्तकृद्दशानां चतुर्थवर्गस्य षष्ठसमध्ययनम् । अन्त० १४ । प्रद्युम्नः–यदोरपत्यः । प्रश्न० ७३ । ज्ञाता० २१३ । द्वारामत्यां कुमारविशेषः । ज्ञाता० १०० ।

पज्जुन्नसेण–प्रद्युम्नसेनः । उत्त० ३७९ ।

पज्जुवासण–पर्युपासनं–सेवा । भग० ११५ ।

पज्जुवासणया–पर्युपासनं–सेवा एतद्भावस्तत्ता तया । ज्ञाता० ४४, ४५ ।

पज्जुवासणा–पर्युपासना–सेवा । ठाणा० १५६ ।

पज्जुवासमाण–पर्युपासीनः–सेवमानः । भग० १४ ।

पज्जुवासेमाण–पर्युपासीनः–सेवमानः । सूय० ६ ।

पज्जुसणा–उदुबद्धिया वाससमीवातो जम्हा पगरिसेण ओसंति सव्वदिसासु परिमाणपरिच्छिन्नं तम्हा पज्जुसणा । नि० चू० प्र० ३३६ आ । वासावासो पढमसमोसरणं । नि० चू० प्र० ३३६ आ ।

पज्जुसियं–परियासिय णाम रातो पज्जुसियं । नि० चू० द्वि० ५० आ ।

पज्जेति–पाययति । विपा० ७२ ।

पज्जोय–प्रद्योतः–संवेगोदाहरणे उज्जयिनीनरेशः । आव० ७०९ । प्रद्योतः । आव० ६४ । पारिणामिकी बुद्धौ प्रद्योतः । आव० ४२८ । उज्जेणीए राया । नि० चू० प्र० ३४८ आ । प्रद्योतः–क्षुरावमावी । सूत्र० १०३ । प्रद्योतः–अभयकुमाराहूतो राजा । दश० ५३ । प्रद्योतः । उत्त० ९६ ।

पज्जोयगत–प्रद्योतनं प्रद्योतः प्रद्योतकत्वं–विशिष्टज्ञानशक्तिस्तत्करणशीला । जीवा २५५ ।

पज्जोसवणा–परियाणवत्थणा । नि० चू० प्र० ३३६ आ । अण्णेय दव्वादिया वरिसकालपायोग्गा घेत्तुं आयरिज्जंति तम्हा पज्जोसवणा । पागयत्ति सव्वलोगपसिद्धेण पागतभिधाणेण पज्जोसवणा । नि० चू० प्र० ३३६ आ ।

पर्याया–ऋतुबद्धिकाः–द्रव्यक्षेत्रकालभावसम्बन्धिन उत्सृ-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्यन्ते-उज्झयन्ते यस्यां सा निरुक्तविधिना पर्यासवना, अथवा परोलि सर्वतः क्रोधादिभावेभ्यः उपशाम्यते यस्यां सा पर्युपशमना। अथवा परि-सर्वथा एकक्षेत्रे जघन्यः सप्ततिदिनानि उत्कृष्टतः षण्मासान् वसनं निरुक्तादेव पर्युषणा। स्था० ५११।

पज्जोसवियाण-परीति-सामस्त्येनोषितानां पर्युषणाकल्पेन नियमवद्वस्तुमारब्धानामित्यर्थः। स्था० ३१०।

पज्जोसवेति- । नि० चू० प्र० ३५५ अ।

पज्झंझमाण-शब्दायमानम्। जीवा० १८१। ज० प्र० २४।

पज्झ-पार्यः-प्रतिपितामरः। व्य० प्र० १७१ अ।

पज्झाय-प्रध्यातं-प्रियजनविषयमतिचिन्तितम्। अनु० १३६।

पज्झोय-प्रद्योतः-अवन्तीपतिः। व्य० प्र० १४६ आ।

पञ्चकुलम्- । जीवा० ३४७।

पञ्चत्वं-मरणम्। नंदी० १५६।

पञ्चमुष्टिः-पञ्चाष्टा। उत्त० ४६२ (?)।

पञ्चशिक्षापादिका- । सूत्र० ३६७।

पञ्चाग्नितपः-कायकष्टतपः। आचा० १७७।

पञ्चाल-देशविशेषः। उत्त० ३७७।

पञ्जरभग्नः-सुखमिह वसितुमिति स इत्थंभूतः पञ्जरभग्नः ज्ञातव्यो न प्रतीच्छनीयः। व्य० प्र ५४ अ।

पञ्जरुम्मिलिया-पञ्जरोन्मीलिता-पञ्जरबहिष्कृता। सम० १३६।

पञ्जिका-अर्थे प्रकारः। सम० १११।

पटक-पिशाचभेदविशेषः। प्रज्ञा० ७०।

पटल-पात्रावरणम्। ओघ० २१३। तक्कवरष्टितचीवरादि। दश० ४०।

पटलकम्-वस्त्रम्। उत्त० ५४ (?)। विशे० १३६।

पटलग-कच्चोलकः। नि० चू० द्वि० ६१ अ।

पटुकार-प्रत्यवतारः। बृ० द्वि० २६५ अ।

पटोली-वस्त्रोवेशषः। आचा० ५७।

पट्ट-वस्त्रपट्टः। उत्त० ६०६। पट्टसूत्रमयम्। प्रश्न० ७१। ललाटाभरणम्। विपा० ७०। जीवा० २६६। पट्टः। स्था० ३३८। शिलापट्टकादि। जीवा० २७४। चोलपट्टं। नि० चू० प्र० १६१ अ। पट्टः-एकः शाटकः। ज्ञाता० १५। पट्टक-चोलपट्टकम्। ओघ० १७५। वस्त्रम्। उत्त० ६०६। योगपट्टकः-चिलिमिली। ओघ० २१८। ओघ० १०६ (?)। पट्टं-पट्टसूत्रनिष्पन्नम्। ज० प्र० १०७। पट्टसूत्रजं, जांगमिकवस्त्रभेदः। बृ० द्वि० २०१ अ। छुरिकापट्टिकावत् पट्टो। नि० चू० प्र० १७६ आ। चउरंगुलो सुवण्णमओ पट्टो। नि० चू० प्र० २५४ आ। गंधपट्टः। बृ० तृ० ६८ अ। तिरीडरुक्खस्स तया। नि० चू० प्र० १२६ अ। वल्कलक्षणः। बृ० द्वि० २०१ अ। पट्टसूत्रनिष्पन्नम्। आचा० ३६४।

पट्टइल्ला-श्रेणिविशेषः। ज० प्र० १६३।

पट्टकार-वस्त्रकारः। अनु० १४६।

पट्टजुयलं- । आचा० ४२३।

पट्टण-पत्तनम्। सूत्र० ३०६। पत्तनं-जलपथयुक्तं स्थलपथयुक्तं, रत्नभूमिर्वा। प्रश्न० ५२। जलपथस्थलपथयोरेकतरयुक्तम्। प्रश्न० ६६। जलस्थलपथयोरन्यतरयुक्तम्। प्रश्न० ६२। पत्तनम्। औप० ७४। पट्टनं-पत्तनं वा। जीवा० ४०। पट्टनं-यन्नौभिरेव गम्यम्। जीवा० २७६। पत्तनं-जलपथस्थलपथयोरेकतरयुक्तम्। ज्ञाता० १४०। यच्छकटैर्घोटकैर्नौभिश्च गम्यं पट्टनं यन्नौभिरेव गम्यं तत् पट्टनं पत्तनम् प्रज्ञा० ४८। पतन्ति तस्मिन् समस्तदिग्भ्यो जना इति पत्तनम्। उत्त० ६०५। पत्तनं-नानादेशागतपण्यस्थानम्। अनु० १४२। पट्टनं-नौभिरेव गम्यं पट्टनम्। जीवा० ४०। पत्तनं-पर्याहारप्रवेशस्तत्पत्तनम्। ठाणा० २६४। पट्टनं-जलस्थलनिर्गमप्रवेशः। राज० ११४। पत्तनं-विविधदेशागतं पण्यस्थानम्। भग० ३६। पत्तनं-रत्नयोनिः। ज०प्र० २५८। स्था० ८६। यन्नौभिरेव गम्यम्। जीवा० ४०।

पट्टणमारी-मारीविशेषः। भग० १६७।

पट्टणरूवं- । भग० १६३।

पट्टदुगं-पट्टद्विकं-संस्तारकोत्तरपट्टरूपं पर्याप्तिका संनाहपट्टरूपं वा। बृ० द्वि० २५३ आ०। संथरोत्तरपट्टो य। नि० चू० प्र० १८१ अ।

पट्टनं-यन्नौभिरेव गम्यं तत्पट्टनम्। प्रज्ञा० ४८।

पट्टबद्धय-बद्धपट्टः। आव० ३००।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पट्टयुग्मादि–आच्छादनम् । (?)
पट्टशालारूपो–मण्डपविशेषः । स्था० २३२ ।
पट्टसाडय–वस्त्रं तस्य युगलरूपो यः पट्टशाटकः । सूर्य० २९३ । पट्टसाटिका । अनु० १७५ ।
पट्टसूत्र–पतङ्गकीटलालासमुत्पन्नम् । अनु० ३५ । यत् हंसाण्डकेभ्यो जायते तदण्डजं क्वचित् पट्टसूत्रम् । उत्त० ५७१ । कीटज–यत्तथाविधकीटेभ्यो लालात्मकं प्रभवति यथा पट्टसूत्रम् । उत्त० ५७१ ।
पट्टागा–पट्टकाराः पट्टकूलकुविन्दाः शीलगर्वभेदः । प्रज्ञा० ५६ ।
पट्टिका– । नंदी० १८८ ।
पट्टिया–पट्टिका–वंशानामुपरि कम्बास्थानीया । जीवा०८०। पट्टिका–वंशानामुपरि कम्बास्थानीया । जं० प्र० २३ । पट्टिका । जीवा० २५९ ।
पट्टिश:–प्रहरणविशेषः । उत्त० ४६० ।
पट्टिस–पट्टिसः–प्रहरणविशेषः । प्रश्न० २१ । पट्टिशः–अस्त्रविशेषः । प्रश्न० ४८ ।
पट्टुंती–प्रतिष्ठन्ती । आव० ८२२ ।
पट्ठ–स्पृष्टं–विदारितम् । भग० १२० । प्रष्टुः वागमी । जं० प्र० ३८८ । स्पष्टं–व्याकम् । उपा० ३९ । पृष्ठं पर्याणस्थानम् । जं० प्र० २३५ । स्पष्टं–असंदिग्धम् । उत्त० २४१ । स्पष्टम् । भग० ६८४ ।
पट्ठवए–प्रस्थापकः–विविधकार्येषु प्रवर्तकः । ज्ञाता० ६३ ।
पट्ठवओ–प्रस्थापकः–अवधिज्ञानप्रारम्भकः । आव० ३३ ।
पट्ठवणओ–प्रस्थापकः–प्रारम्भकः । आव० ८४२ ।
पट्ठवणा–दाणं । नि० चू० तृ० १२२ आ । प्रस्थापना–कल्पना । जीवा० १९ ।
पट्ठविति–प्रस्थापयति–प्रतिलेखयति । आव० ७५६ ।
पट्ठविओ–प्रस्थापितः । ओघ० १०६ ।
पट्ठवितिका–जं वहति पच्छित्तं सा पट्ठवितिका । नि० चू० तृ० १३९ आ ।
पट्ठवितिया–आरोपितं प्रायश्चित्तं वहति सा प्रस्थापितिका । व्य० प्र० १२४ आ ।
पट्ठवियं–प्रस्थापितं–मनुष्यगतिपञ्चेन्द्रियजातित्रसबादरपर्याप्तसुभगादेययशःकीर्तिनामसहोदयत्वेन व्यवस्थापितम् । प्रज्ञा० ४०३ । प्रस्थापितः–प्रवर्तितः । नि० चू० तृ० १३९ अ ।
पट्ठविया– । नि० चू० तृ० १३९ आ ।
पट्ठवेज्जा–प्रस्थापयेत्–प्रवर्त्तयेत् । भग० ३८५ ।
पट्ठवेति–प्रस्थापयति–कर्त्तुं आरभत इति । ठाणा० ३०० । प्रस्थापयति–वोढुमारभते । ठाणा० ३२५ ।
पट्ठसंठिआ–पृष्ठसंस्थिता–प्रधानसंस्थाना । जं० प्र० ११४ ।
पट्ठि–पृष्टिः । आव० १९२ । पृष्ठम् । उत्त० ३६७ ।
पट्ठिअओ–प्रस्थितः–संप्रस्थितद्वितीयः । आव० १०० ।
पट्ठिआवाहो–पीठमर्दवाहकः । आव० २०४ ।
पट्ठिओ–प्रस्थितः । दश० ११ ।
पट्ठित–प्रस्थितः । प्रज्ञा० ३२७ ।
पट्ठिमंसं–पृष्ठिमांसं–परोक्षस्य दूषणाविष्करणम् । प्रश्न०४१।
पट्ठिवंस–बलहरणं पृष्ठवंशो । बृ० द्वि० ५४ अ ।
पट्ठोवंसो– । नि० चू० प्र० १०६ आ ।
पड–पदः–स्थानः पक्षः । ठाणा० ३९ । पटं–प्रतीतम् । अनु० १५४ । पट्टशाटकः । प्रश्न० ७१ । पट्टः । जं० प्र० १६१ ।
पडकारक–पटकारकः–तन्तुवायः । प्रश्न० ३० ।
पडगआहरणं– । नि० चू० द्वि० ९२ अ ।
पडणं–पतनं–तिष्ठत एव गच्छतो वा यल्लुठनम् । प्रज्ञा० २९ । निपतितं हिंसाबुद्धया रिपुमोचनम् । जं० प्र० १२५ । पतनं–कालधर्मनयनम् । जं० प्र० १२५ । पतनं–मरणं राजामात्यसेनापतिग्रामभोगिकादीनाम् । ठाणा० ४७७ । पतनम् । भग० ४६९ ।
पडणी–प्रत्यनीका । ग० ।
पडणीय–प्रत्यनीकः शासनादेः । ओघ० ९३ ।
पडमंडव–पटमण्डपः । आव० ४३४ । पटमंडपं दिव्य-पटकृतमण्डपं पटमण्डपलक्षितं प्रासादम् । (?) । नि० चू० प्र० २२३ अ ।
पडलं–उदयविकारेण य दव्वचक्खिंदियस्संतरणं पडलं (?)। नि० चू० प्र० ३०२ आ । पटलः–समूहः । ज्ञाता० १७३ । पटलं–भिक्षावसरे पात्रप्रच्छादकं वस्त्रखण्डम् । प्रश्न० १५६ । पटलं–वृन्दम् । आव० ७८८ । पटलम् । आव० ८३७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडलगं-पटलकम् । जीवा० २१४ ।

पडलाइं-पटलकानि भिक्षायां पात्रोपरि स्थाप्यानि । बृ० द्वि० २३७ अ ।

पडवायं- । नि० चू० प्र० ५३ अ ।

पडविज्जा-विज्जाविसेसो । नि० चू० प्र० १६ अ । पटविद्या । आव० २६५ ।

पडसाडग-पटशाटकः-उत्तरीयं उपरिकायवस्त्रम् । प्रश्न० ७१ । पटशाटकं-उत्तरीयं परिधानम् । जं० प्र० २४७।

पडसाडियं-पटशाटिका । अनु० १७१ ।

पडह-पटहः । जीवा० १०५, २४५, २६६ । पटहः । ज० प्र० १०१ । पटहः-पटहकः । प्रश्न० ४८ । पटहः-आतोद्यः । नंदी० ८८ । पटहः । भग० २१७ । पटहः-आतोद्यविशेषः । प्रज्ञा० ५४२ ।

पडहओ-पटहकः- । आव० ४२० ।

पडहग-पटहकः-विमध्यमावधिसंस्थानदृष्टान्तः । आव० ४१ ।

पडहत्थं- । नि० चू० प्र० ३४४ अ ।

पडहसंठिय-पटहसंस्थितः आवलिकाबाह्यस्य रत्नप्रभानरके संस्थानम् । जीवा० १०४ ।

पडागसठिय-पताकासंस्थितः, अश्लेषानक्षत्रसंस्थानम् । सूर्य० १३० ।

पडागसमाण-यस्य नवस्थितो बोधो विचित्रदेशनावायुना सर्वतोऽपह्रियमाणत्वाद् पताकेव स पताकासमानः । ठाणा० २४३ ।

पडागा-पताका-ध्वजादन्या । भग० ३१६ । पताका-मत्स्यविशेषः । जीवा० ३६ । पताका-चक्रादिलच्छनोपेनादितरा । भग० ४७६ । पताका-ध्वजेतररूपा । ज० प्र० १८८ । पताका । सूर्य० २६३ । मत्स्यविशेषः । प्रज्ञा० ४४ । पताका-गरुडादिवर्जिता ध्वजा । विपा० ४६ ।

पडागाइपडागा-पताकाभ्यो-लोकप्रसिद्धाभ्योऽतिशायिनी-दीर्घत्वेन विस्तारेण च पताका पताकातिपताका । जीवा० १६१ । मत्स्यविशेषः । जीवा० ३६ । पताकाभ्योऽतिशायिन्यो दीर्घत्वेन विस्तरेण च पताकाः पताकातिपताका । जं० प्र० ४४ ।

पडागासंठाणसंठिता-पताकासंस्थानसंस्थिता-वायुकायसंस्थानम् । प्रज्ञा० ४११ ।

पडालि-लघुतरा । आव० २६२ ।

पडालिया-पडालिका-यत्र मध्याह्ने सार्थिकाः तिष्ठन्ति यत्र वा वसन्ति तत्र वा वसन्ति तत्र वस्त्रादिमयं कुवलयनं कुर्वन्ति ता वा अस्य दिने दिने उपलभ्यन्ते तदा स एवैकः सागारिकः शय्यातरो भवति । गाढागतेषु तु अवज्ञया यत्र तत्र गतेषु तु साधुषु यत्र रात्रौ वसन्ति तद्दिवसं स शय्यातरः । इयमत्र भावना-यस्य न नियमेन सडो वा पडालिका वा । व्य० द्वि० २७८ आ ।

पडाली-पडालिका-एकस्मिन् पार्श्वे वृक्षयुगलं समश्रेण्या व्यवस्थितं चतुर्ष्वपि कोणेषु ईषद्दीर्घा वृक्षा व्यवस्थिताः । बृ० प्र० १८३ आ । पडाली-गृहाच्छादनम् । व्य० द्वि० २७६ अ ।

पडालीए- । नि० चू० प्र० २५६ आ ।

पडिसुआ-प्रतिश्रुतः प्रतिशब्दः । ज० प्र० १४४ ।

पडि-प्रति-प्रतीपं प्रतिकूलं वा । आव० ५५१ । प्रति-प्रतिबिम्बं प्रधानं वा । उत्त० ५६ । प्रतिः-सादृश्ये । उत्त० ५८६ ।

पडिअरइ-प्रतिजागर्ति । ओघ० ८४ ।

पडिअरण-प्रतिपालन-निरूपणं-आलोचनम् । ओघ० ४४।

पडिअरिअ-आराध्य । दश० २५५ ।

पडिआइक्खे-प्रत्याचक्षीतः-प्रतिषेधयेत् । दश० १६६ ।

पडिआयइ-प्रत्यापिबति-सेवते । दश० २६५ ।

पडिएक्कं-पृथक् । ज्ञाता० २०६ ।

पडिओ सव्वगत्तेण भूमीए । नि० चू० प्र० ४६ अ ।

पडिओसरइ-प्रत्यवसर्पति । आ० ५४ (?) ।

पडिकप्पावेति-सज्जयति । ज्ञाता० १३८ ।

पडिकप्पेह-सन्नद्धं कुरुतः । भग० ३१७ ।

पडिकुट्ठ-प्रतिक्रुष्टं-प्रतिसिद्धम् । आव० ४७१ । प्रतिकुष्ठं-विरुद्धम् । ओघ० २१५ । प्रतिकुष्ठं-निराकृतम् । पिण्ड० ८४ । निराकृतम् । पिण्ड० ११० । प्रतिकुष्टः-निषिद्धः । प्रश्न० १२७ । प्रतिकुष्टः-प्रतिषिद्धः । ओघ० १४५ । प्रतिकुष्टः-प्रतिषिद्धः । ओघ० २१० । प्रतिकुष्टं-छिम्पकादिगृहं सूतकोपगृहं वा । ओघ० १५७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिकुविय–प्रतिकूजितं-प्रतिभाषितम् । निरय० ३१ ।
पडिकूल–प्रतिकूलः-नानुकूलोऽनभिमतः । आचा० ३६४ । प्रतिकूलः-विपरीतवृत्तिः । ठाणा० २४४ ।
पडिक्कंत–प्रतिक्रान्तम् । दश० ४६ । प्रतिक्रमणं-प्रतिक्रान्तं, प्रज्ञापकात् प्रतीपं क्रमणम् । दश० १४१ ।
पडिक्कओ–प्रतिक्रिया-आधारः । आव० ३०४ ।
पडिक्कमए–प्रतिक्रामति-निवर्त्तते । पिण्ड० ७६ ।
पडिक्कमण–प्रतिक्रमणं-प्रतीपं-पश्चाद् अभिमुखं क्रमणं-प्रतिक्रमणं आगमनमित्यर्थः । आचा० २६२ । प्रतिक्रमणं-प्रतीपं क्रमणं शुभयोगेभ्योऽशुभयोगानुपक्रान्तस्य शुभेष्वेव गमनम्, निवर्त्तनं पुनरकरणमित्यर्थः । ठाणा० ३५० । प्रतिक्रमणं-मिथ्यादुष्कृतदानम् । ठाणा० १३७ । प्रतीपं क्रमणं प्रतिक्रमणम्, अपराधस्थानेभ्यो गुणस्थानेषु वर्त्तनम् । आव० ५४१ । मिच्छादुक्कडं । नि० चू० द्वि० ६१ अ । आलोचनादिषु द्वितीयः । ठाणा० २०० । प्रतिक्रमणं-मिथ्यादुष्कृतम् । भग० ६२० । प्रतिक्रमणं-मिथ्यादुष्कृतम् । ठाणा० १६० । प्रतिक्रमणस्य प्रथमं नाम । आव० ५५२ । प्रतिक्रमणं-दोषात् प्रतिनिवर्त्तनमपुनःकरणतया मिथ्यादुष्कृतप्रदानम्, तदर्हं प्रायश्चित्तम् । व्य० प्र० १४ अ ।
पडिक्कमणारिह–प्रतिक्रमणार्हं-मिथ्यादुष्कृतम् । औप० ४१ । मिथ्यादुष्कृतं, दशविधप्रायश्चित्ते द्वितीयः । भग० ६२० ।
पडिक्कमति–मनोवचनकायलक्षणेन करणेन प्रतिक्रामति निन्दनेन विरमति । भग० ३७० ।
पडिक्कममान–प्रतिक्रामन्-निवर्त्तमानः । आचा० २१७।
पडिक्कमामि–प्रतिक्रमामि-अपुनःकरणतया निवर्त्तयामि । आव० ५४८ ।
पडिक्कमाहि–प्रतिक्रमणं-मिथ्यादुष्कृतदानलक्षणं अकृत्यान्निवर्त्तनं वा । ज्ञाता० २०६ ।
पडिक्कमे–प्रतिक्रामेत्-कायोत्सर्गं कुर्यात् । दश० १७६ ।
पडिक्कमेज्जा–नियत्तेज्जा । दश० चू० ८५ ।
पडिक्कामण–प्रतिक्रामणं यद्यसौ ग्लानः परिक्रामति तस्मात्स्थानान्निवर्त्तनम् । ओघ० ४५ ।
पडिक्खंत–प्रतिक्षमाणः । आव० ६४० ।
पडिक्खलण–धर्मास्तिकायाद्यभावात्तदानन्तर्यवृत्तिरेव प्रतिस्खलनम् । प्रज्ञा० १०८ । प्रतिस्खलनम् । औप० ११६ ।
पडिक्खित–परिक्षिप्तो-विस्तारितः । अन्त० ७ ।
पडिगओ–प्रतिगतः । आव० १६६ ।
पडिगच्छह–प्रतिगच्छामो-निवर्तामहे । उत्त० ३५५ ।
पडिगमणं–उणक्खमणं । नि० चू० प्र० १०६ अ ।
पडिग्गह–पतद्ग्रहः-पात्रम् । आचा० २४० । पतद्ग्रहः काष्ठच्छब्बकादि । आचा० ३५५ । पतद्ग्रहः । आचा० ३४६ । प्रतिग्रहम् । आव० ७६३ । प्रतिग्रहम् । अनु० २५३ । पतद्गृहं-पात्रम् । भग० १३६ । प्रतिग्रहः-पतद्ग्रहो वा पात्रम् । औप० १०० । पतद्ग्रहः-पात्रम् । प्रश्न० १५६ ।
पडिग्गहग– । ज्ञाता० ५३ ।
पडिग्गहति–गृह्णाति । नि० चू० तृ० ७४ आ ।
पडिग्गहधरो–पतद्ग्रहधरः । आव० ३२४ ।
पडिग्गामो–पडिवसभगामो अंतरपल्लिगा वा अण्णो वा पडिग्गामो भण्णति । नि० चू० द्वि० १२१ अ ।
पडिग्गाहित्तत–प्रतिग्रहीतुं आश्रयितुम् । ठाणा० १३६ ।
पडिग्घाओ–प्रतिघातः-विनाशः । उत्त० ३१८ ।
पडिघात–प्रतिघातः-गतिस्खलनम् । ठाणा० १७१ ।
पडिचंद–द्वितीयचन्द्रः । भग० १६६ । प्रतिचन्द्रः-उत्पातादिसूचको द्वितीयश्चन्द्रः । जीवा० २८३ । प्रतिचन्द्रः-उत्पादादिसूचको द्वितीयश्चन्द्रः । अनु० १२१ ।
पडिचरए क्षेत्रप्रत्युपेक्षकान् । बृ० प्र० २३० आ ।
पडिचरगा–गामणगरसेणादियाण भंडिया पडिचरगा । नि० चू० द्वि० ११ अ । प्रतिचरका नाम हेरिकाः परराष्ट्रगवेषकाः । बृ० द्वि० ८२ आ ।
पडिचरति–मेहुणमासेवति । नि० चू० द्वि० ३३ आ ।
पडिचरिओ–प्रतिचरितः । आव० ३६२ ।
पडिचारं–प्रतिचारः-प्रतिकूलश्चारो-ग्रहाणां वक्रगमनादिस्तत्परिज्ञानं, अथवा प्रतिचरणं प्रतिचारो रोगिणः प्रतिकारकरणं तद्ज्ञानम् । जं० प्र० १३६ ।
पडिचोइओ–प्रतिचोदितः । आव० ७६३ । प्रतिचोदितः । आव० २६२ ।
पडिचोयणा–तन्मतप्रतिकूला चोदना कर्त्तव्यप्रोत्साहना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रतिचोदना । भग० ६७५ ।

पडिचोयना-पुनः पुनः स्खलितस्य निष्ठुरं शिक्षापणं प्रतिचोदना । व्य० द्वि० ७२ आ ।

पडिच्छंद-प्रतिच्छन्दम् । आव० ४१६ ।

पडिच्छइ-प्रतीच्छति-गृह्णाति । ओघ० ११२ ।

पडिच्छग-सूत्रार्थग्रहणार्थं ये आयाताः साधवस्ते प्रतीच्छकः । ओघ० ६३ ।

पडिच्छगा-प्रतीच्छका-उपसम्पन्ना । विशे० ६३६ ।

पडिच्छति-प्रतीच्छति । आव० २१७ । प्रतीक्ष्यते । आव० ८५३ ।

पडिच्छभाए-प्रतीक्ष्यभागः । आव० १५० ।

पडिच्छा-प्रतीच्छा प्रतिग्रहणम् । व्य० द्वि० ३४५ आ ।

पडिच्छामि-अङ्गीकरोमि । आउ० ।

पडिच्छामो-प्रतीक्षामहे । आव० ३४८ ।

पडिच्छायणं-प्रतिच्छादनं-आच्छादनम् । सूर्य० २९३ । प्रतिच्छादनं-रजस्त्राणस्योपरि द्वितीयमाच्छादनम्। जीवा० २१० । प्रतिच्छादनं-आच्छादनम् । जीवा० २३२ ।

पडिच्छिअं-प्रतीप्सितं-गृहीतम् । दश० १७७ ।

पडिच्छिए-पुनः पुनरिष्टः भावता वा प्रतिपन्नः । भग० ४६७ ।

पडिच्छिगा-प्रातीच्छिकाः-अनुयोगाचार्यानुमान्याः अध्ययनार्थं गच्छान्तरादागताः स्वाचार्यानुज्ञापुरस्सरमनुयोगाचार्यप्रतीच्छया चरन्ति । नंदी० ५४ ।

पडिच्छण्णे-प्रतिच्छादनं-आच्छादनम् । ज्ञाता० १५ । प्रतीच्छनं-वेलां प्रतिपालयति । ओघ० ४९ ।

पडिच्छिय-प्रतीप्सितं प्राप्तुमिष्टम् । भग० १२१ । प्रतीच्छितम् । आव० ७९३ । प्रत्यैषीत्-प्रतिपन्नवान् । उत्त० ४६४ । प्रतीष्टं-प्रतीप्सितं वा अभ्युपगतम् । ज्ञाता० १८ ।

पडिच्छेज्ज-परीक्षाकार्या । ओघ० १३२ ।

पडिजग्गिउं-प्रतिजागर्यः । आव० ४८४ ।

पडिजागरण-करणम् । व्य० द्वि० १९ अ ।

पडिजागरिज्जा-प्रतिजागृयात् उपचरेत् । दश० २५२ ।

पडिजाणामि-व्युत्सृजामि । महाप्र० ।

पडिजिओ-प्रतिजितः । आव० ४१७ ।

पडिट्ठिय-प्रतिष्ठितं-सिद्धं सत्यं अविचार्यम् । दश० ३३ ।

पडिणं-प्रतीचो-पश्चिमादिक् । दश० २०१ ।

पडिणत्ति-प्रतिज्ञतः । बृ० तृ० २५ आ ।

पडिणिज्जाएमि-प्रतिनिर्यातयामि-समर्पयामि । ज्ञाता० ११८ ।

पडिणिभोवण्णास-प्रतिनिभोपन्यासः । उपन्यासस्य तृतीयभेदः । दश० ५५ ।

पडिणियं-प्रत्यनीकं-यद् आहारादिकाले वन्दते तत्, कृतिकर्मणि सप्तदशो भेदः । आव० ५४४ ।

पडिणीए-प्रत्यनीकः-प्रतिकूलवर्त्ती दोषानीकं प्रति वर्तत इति । उत्त० ४४ । प्रत्यनीकः । ओघ० ४९ ।

पडिणीणेइ-प्रतिमुञ्चति । दश० ९८ ।

पडिणीय-प्रत्यनीकः । आव० २०३ । प्रत्यनीकः-प्रतिकूलः । ठाणा० १६९ । प्रत्यनीकम् । आव० ८४४ । प्रत्यनीकः-प्रतिकूलवृत्तिः । ज्ञाता० ८७ ।

पडिणीयत्ता-प्रत्यनीकता-कार्योपघातकता । भग० ५८१ ।

पडिणीयय-प्रत्यनीकः कार्योपघातकः । ज० प्र० १२३ ।

पडिणीययया-प्रत्यनीकता । आव० ६२० । प्रत्यनीकतासामान्येन प्रतिकूलता । भग० ४११ ।

पडिण्णा-प्रतिज्ञा-स्याद्वादप्रधानत्वान्मौनीन्द्रागमस्यैकपक्षावधारणम् । आचा० १३३ ।

पडितप्पह-वैयावृत्त्यं कुरुत । ओघ० १८० ।

पडिबद्ध-प्रतिस्तब्धः- प्रतिबद्धः । उत्त० ३६८ ।

पडिदार-प्रतिद्वारं-द्वारमेव । प्रश्न० ५९ । प्रतिद्वारं-मूलद्वारानान्तरालवर्त्तिलघुद्वारम् । जीवा० १६० ।

पडिदासो-प्रतिदासी । दश० १०८ ।

पडिदिस-प्रतिदिक्-विदिक् । प्रज्ञा० १०५ । प्रतिदिक् । सूर्य० २६ । प्रतिदिक् विदिक् । जीवा० ३९१ । प्रतिदिक् विदिक् । प्रज्ञा० ३२९ ।

पडिदिसि-प्रतिदिशः-विदिशः । ठाणा० २५१ ।

पडिदुवार-प्रतिद्वारं-अवान्तरद्वारम् । सम० १३८ । प्रतिद्वारं-स्थूलद्वारावान्तरालवर्तिलघुद्वारम् । प्रज्ञा० ८६ । प्रतिद्वारं-मूलद्वारावान्तरालवर्तिलघुद्वारम् । ज० प्र० ७६ । प्रतिद्वारं बाह्यद्वारम् । ज० प्र० २६६ ।

पडिनिकास-सदृशः । ज० प्र० ५७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिनिभे–यत्रोपन्यासोपनये वादिनोपन्यस्तवस्तुनः सदृशं वस्तूत्तरदानायोपनीयते स प्रतिनिभः । ठाणा० २५४, २६० ।

पडिनियत्ता–प्रतिनिवृत्ता । आव० ५५७ ।

पडिनियत्तो–प्रतिनिवृत्तः । उत्त० ३०४ ।

पडिनिवेस-प्रतिनिवेशः–एष पूज्यते अहं तु नेत्येवं परपूजाया असहनलक्षणः । ठाणा० २८५ । प्रतिनिवेशः । आव० २१८ । द्वेषः । आउ० ।

पडिनिसंतंसि–विश्रान्ता यस्मिन् मनुष्या इतीह दृष्टव्यं अथवा सन्ध्याकालसमये सति प्रतिनिश्रान्त । ज्ञाता० १४७

पडिनिस्सीए–प्रतिनिश्रितं उपरिवर्ति । दश० १५५ ।

पडिन्ना–प्रतिज्ञा–आकाङ्क्षा । सूत्र० १८८ ।

पडिपक्ख–प्रतिपक्षः–विसदृशः पक्षः, असदृश इति । ओघ० २३ ।

पडिपहो–दोण्हं गामाणं अवरे मज्झे खेत्ते खलए वा पहं पडिपहो भण्णति, उब्भामाइगतस्स वा अभिमुहो पहे मिलिज्जा एस पडिपहो । नि० चू० द्वि० १२२ अ । पन्थानं प्रति प्रतिपथः । आचा० ३३८ ।

पडिपाय–मूलपादानां–प्रतिविशिष्टोपष्टम्भकरणाय पादः प्रतिपादः । ज० प्र० २८५ ।

पडिपुंजिया–प्रतिपुंजिता–चन्दनादिचर्चिता । ज्ञाता० १२ ।

पडिपुच्छइ–पुनः पृच्छति प्रतिपृच्छति तच्छ्रुतमशङ्कितं करोतीति । आव० २६ ।

पडिपुच्छई–प्रतिपृच्छति–प्रश्नयति । उत्त० ४७३ ।

पडिपुच्छण–प्रतिपृच्छा–आदिष्टस्य कार्यस्य करणकाले पुनः प्रच्छनम् । बृ० प्र० २२२ अ । प्रतिप्रच्छनं-शरीरादिवार्ताप्रश्नः । ज्ञाता० ४४ ।

पडिपुच्छणा–प्रतिप्रच्छनं शरीरादिवार्ताप्रश्नः । भग० ११५ । प्रतिप्रच्छना । ओघ० १५१ । शङ्किते सूत्रादौ शङ्कापनोदाय गुरोः प्रच्छनं प्रतिप्रच्छना । ठाणा० १९० ।

पडिपुच्छन्न–प्रथमं कथितस्य सूत्रादेः पुनः प्रच्छन्नं प्रतिप्रच्छन्नम्,सम्यक्त्वपराक्रमे विंशतितं द्वारम् । उत्त० ५८४ ।

पडिपुच्छा–ग्रामादौ प्रेषितस्य गमनकाले पुनः प्रच्छनं प्रतिप्रच्छना । अनु० १०३ । गुरोः पुनः प्रच्छनं प्रतिप्रच्छना । अनु० १०३ । प्रतिपृच्छा स्वालापकः । भग० ३५२ । दशधा सामाचार्यां सप्तमी । ठाणा० ४९९ । प्रतिपृच्छा–प्राङ्नियुक्तेनापि करणकाले कार्या निषिद्धेन वा प्रयोजनतः कर्तुकामेनेति । आव० २५९ । ठाणा० ५०१ ।

पडिपुण्ण–प्रतिपूर्णः रूपं न पात्यते । अनु० २४० । प्रतिपूर्णः । आव० ११० । सूत्रतो बिन्दुमात्रादिभिरनुनमर्थतस्त्वध्याहाराकाङ्क्षादिरहितं प्रतिपूर्णम् । अनु० १५ । प्रतिपूर्ण–अर्थप्रतीतिजनकम् । सम० १५७ । प्रतिपूर्ण–अपवर्गप्रापकैर्गुणैर्भृतम् । आव० ७६० । प्रतिपूर्णं आत्मस्वरूपेणाविकलः । भग० १४९ । उदात्तादिघोषैर्यत् परिपूर्णम् । दिशे० ४०६ ।

पडिपुण्णगल्लकपोल–परिपूर्णगल्लकपोलः । आव० २८८ ।

पडिपुण्णघोस–प्रतिपूर्णघोषं–उदात्तादिघोषविकलम् । अनु० १६ ।

पडिपुन्न–परिपूर्णं अहोरात्रम् । ठाणा० २३७ । प्रतिपूर्णं–बाह्येन निषद्याद्वयेन युक्तम् । ओघ० २१४ । प्रतिपूर्णं अपवर्गप्रापकैर्गुणैर्भृतम् । ज्ञाता० ४९, ५१ ।

पडिपेल्लिया–विनाश्य । भक्त० ।

पडिपेहित्ता–प्रतिविधाय–पिठित्वा–स्थगित्वा । सूत्र० ३२४।

पडिपोग्गले–स्थास्नोर्गतौ । नि० चू० प्र० २७३ अ ।

पडिप्पहर-प्रतिप्रहारम् । आव० ५५७ ।

पडिबंध–प्रतिबन्धः–अवरोधः । भग० १९ (?)। व्याघातः । भग० १०१ । उपरोधः । भग० ११७, १२३, १३९, ७३८ । प्रतिबन्धः–स्नेहः । ठाणा० ४६५ । प्रतिबन्धः–अयं ममास्याहमित्याशयबन्धरूपः । ज० प्र० १४९ । प्रतिबन्धः-अभिष्वङ्गः, परिग्रहस्य द्वादशं नाम । प्रज्ञा० ९३ । प्रतिबन्धः । आव० ४०१ । प्रतिबन्धः–आसङ्गः । आव० ५२५ । प्रतिबन्धः–रागः । पिण्ड० १४० ।

पडिबद्ध-प्रतिबद्धं–व्याप्तम् । दश० ८६ । प्रतिबद्धं-अनुबद्धं, सदानुगतम् । जीवा० १३० । प्रतिबद्धं–सूत्रार्थग्रहणसक्तम् । बृ० प्र० २४८ आ । प्रतिबद्धः । आव० ३५९ । प्रतिबद्धः । उत्त० ३५८ । प्रतिबद्धः । ओघ० ९८ ।

पडिबद्धया–प्रतिबद्धता–गाढसम्बन्धः । भग० ८८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिबद्धसरीर–प्रतिबद्धशरीरः-दृढावयवकायः – युवा । सूत्र० ३२५ ।

पडिबद्धा–प्रतिबद्धा–युक्ता संश्लिष्टा । नि०चू०प्र१०६ आ ।

पडिबाहिर–प्रतिबाह्य-अनाधिकारणः । सम० ५३ । प्रतिबाह्य–अनधिकारिणं दारेभ्योऽथोगमद्वारेभ्यो वा, दारान् राज्यं वा स्वयमधिष्ठायेत्यर्थः । सम० ५३ ।

पडिबुद्धजीवी–प्रतिबुद्धं–प्रतिबोधः द्रव्यतो जाग्रत्तोभावतस्तु यथावस्थितवस्तुतत्त्वावगमस्तेन जीवितुं–प्राणान्धर्तुंशीलमस्येति, प्रतिबुद्धो वा द्विधाऽपि प्रतिबोधवान् जीवतीत्येवंशीलः–प्रतिबुद्धजीवी । उत्त० २१३ ।

पडिबुद्धि–पटवत् विशिष्टवक्तृवनस्पतिविसृष्टविविधप्रभृतसूत्रार्थपुष्पफलग्रहणसमर्थतया बुद्धिर्येषां ते । औप० २८ ।

पडिबुद्धो–प्रतिबुद्धिः-इक्ष्वाकुराजः साकेतनिवासी । ठाणा० ४०१ ।

पडिबोहु–प्रतिबोधितानि–यौवनेन व्यक्तचेतनावन्ति कृतानि । ज्ञाता०४२ । प्रतिबोधितं–यौवनेन व्यक्तचेतनवन्तं कृतम् । ज्ञाता० ४२ ।

पडिबोहग–प्रतिबोधकः सुप्तस्योत्थापकः । नंदी० १७९ ।

पडिबोहियल्लओ–प्रतिबोधितः । आव० ४०८ ।

पडिभग्ग–प्रतिभग्न.–उन्निष्क्रान्तः । ओघ० १८० । प्रतिभग्नः । आव० २९८ । प्रतिभग्नः । आव० ५२० । प्रतिभग्नः । उत्त० ९० ।

पडिभज्जंतो–प्रतिभग्नः । आव० ४०८ ।

पडिभाग–प्रतिभागः–प्रतिबिम्बः । ज० प्र० १४८ । प्रतिभागः–प्रतिबिम्बमादर्शादाविव विशिष्टः–प्रतिबिम्बवस्तुगत आकारः–प्रतिभागः । ३७२ । प्रतिभागः-खण्डः । प्रज्ञा० २८३ ।

पडिभिण्णो–प्रतिभिन्नः । आव० ३८८, १६ ।

पडिमंठाइ–प्रतिमास्थायी–प्रतिमया कायोत्सर्गेण भिक्षुप्रतिमया वा मासिकयादिकया तिष्ठति यः सः । प्रश्न० १०७ ।

पडिमंजूसा–प्रतिमञ्जूषा । आव० ४०१ ।

पडिम–प्रतिमा । अन्त० २१ ।

पडिमठाती–प्रतिमास्थायी–भिक्षुप्रतिमाकारी । ठाणा० ३९७ । प्रतिमया–एकरात्रिक्यादिकया कायोत्सर्गविशेषेणैव तिष्ठति । ठाणा० २९९ ।

पडिमा–प्रतिमा–अभिग्रहविशेषरूपारेकादशा दर्शनादिः । उत्त० ६१३ । प्रतिमा–दर्शनादिगुणयुक्ताः । आव० ६४६ । कालविशेषमानयुतदर्शनाद्यभिग्रहधरणं कृष्णपाक्षिका क्रियावादिभिन्ना एकादशोपासकावस्था वा । उपास०पंचा०दशाश्रुत० । प्रतिमा नग्नता । वृ० तृ० २५३ आ । प्रतिमा–बिम्बलक्षणम् । आय० ५२४ । प्रतिमा–कायोत्सर्गः । प्रश्न० १४३ । प्रतिमा–प्रतिज्ञा । आव० ६४६ । प्रतिमा–श्रावकस्य पञ्चमी प्रतिज्ञा । आव० ६४६ । गेहचेतियं । नि० चू० द्वि० ६९ आ । प्रतिमा–अभिग्रहः भिक्षुप्रतिमा । ठाणा० ४१६ । प्रतिमा–प्रतिज्ञा–अभिग्रहरूपा । सम० १९ । प्रतिमा–पिण्डैषणाद्यभिग्रहविशेषः । आचा० ३५८ । प्रतिमा–अभिग्रहचारी । व्य० प्र० १३६ आ । प्रतिमा–भिक्षुप्रतिमा । व्य० प्र० १४६ अ । प्रतिमा–अभिग्रहः । ठाणा० ५११ । प्रतिमा–प्रतिज्ञा । ठाणा० २१ । प्रतिमा–प्रतिपत्तिः प्रतिज्ञा । ठाणा० ६५ । प्रतिमा–तथाविधाभिग्रहविशेषरूपा । उनु० ५३१ ।

पडिमाणुसं–प्रतिमानुषम् । आव० ३४५ ।

पडिमाणे–प्रतिमानम् । अनु० १५१ ।

पडिमापडिवण्णओ–प्रतिपन्नप्रतिमः । आव० ९५ ।

पडिमापडिवण्णा– । नि० चू० प्र० ३३८ आ ।

पडिमुडिओ–णिसढो । नि० चू० प्र० ३२० आ ।

पडिमेल्लियपहिणीयया–पेरितशत्रवः । चउ० ।

पडियंति–प्रतियान्ति । दश० ४२ ।

पडियंसि–पतिते–प्रासादादेर्मञ्चके वा ग्लानभावात् । ज्ञाता० ११५ ।

पडिय–वाहनात्पतितः । ज्ञाता० १९३ । पतितं–प्रासादशिखरादेः कलशादिरिवाधो निपतितम् । प्रश्न० १३४ । पतितं–भ्रष्टम् । प्रश्न० १२४ ।

पडियगविठ–प्रत्यगन्तव्यम् । व्य० प्र० ३९९ अ (?) ।

पडियपुयत्थणी–पतितपुतस्तनी-अवनतिगतनितम्बदेशवक्षोजः । ज्ञाता० २४८ ।

पडियरंति–प्रतिजागरणं–निरूपणं कुर्वान्ति । ओघ० १०२ ।

पडियरइ–प्रतिचरति–प्रतिजागरणं करोति । ओघ० २०७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिक्खति । नि० चू० द्वि० १२३ अ ।

पडियरग–प्रतिचारकः–परिपालकः । पिण्ड० ७० ।

पडियरगा–अवराहा । नि० चू० तृ० ६८ आ । परिण्णी-अणसणोवदिट्ठो, तस्स जे वेयावच्चकारिणो ते पडियरगा। नि० चू० प्र० ८६ अ ।

पडियरणा–प्रतिचरणा–आगमनम् । ओघ० ३३ । प्रति-प्रतितेष्वर्थेषु चरणं गमनं तेन तेन आसेवनाप्रकारेणेति–प्रतिचरणा, प्रतिक्रमणद्वितीयपर्यायः । आव० ५५२ । प्रतिचरणा–आगमनम् । ओघ० ३३ ।

पडियरावितो–प्रतिचारितः । आव० २२७ ।

पडियरिए–निरूविए । ओघ० १६१ ।

पडियरिओ–प्रतिचरितः । आव० २६८ ।

पडिया–थिग्गलयं । नि० चू० प्र० १२५ आ । प्रतिज्ञा । नि० चू० द्वि० ५८ आ । वाचना । आव० ६६७ ।

पडियाए–प्रतिज्ञाय–उद्दिश्य । आचा० ३६१ ।

पडियागार– । ओघ० २०६ ।

पडियाण–पटतानकं–पयोणस्याधो यद्दीयते । ज्ञाता० २३० ।

पडियार–शरीरसंस्कारः । नि० चू० प्र० २६४ अ ।

पडियारणा–आसेवना । आचा० ३६४ ।

पडियारी–प्रतिचारिणः–कायिकीमात्रकादिसमर्पकां विश्रामकाः । व्य० प्र० १३१ अ ।

पडिरूव–प्रतिरूपं द्रष्टारं द्रष्टारं प्रति रमणीयम् । सम० १३८ । अस्यामवसर्पिण्यां चतुर्थकुलकभार्या । सम० १५० । प्रतिरूपः–उत्तरनिकाये द्वितीयो व्यन्तरेन्द्रः । भग० १५८ । सदृशम् । भग० ३१६ । प्रतिरूपा–चतुर्थ-कुलकरपत्नी । आव० ११२ । प्रतिरूपः–उचितः । दश० २४१ । द्वितीयो भूतेन्द्रः । ठाणा० ८५ । प्रतिरूपः–रूपवान् । प्रश्न० ११६ । प्रतिरूपः–साधुचित्तस्वरूपः । विपा० ३३ । प्रतिरूपः–रूपवान् । औप० ११ । प्रतिरूपः भूतेन्द्रः । जीवा० १७४ । प्रतिरूपं–प्रतिविशिष्ट असाधारणं रूपं आकारो यस्य सः । ज० प्र० ७५ । प्रतिरूपं उचितम् । उत्त० ५०० । प्रतिरूपं–प्रतिबिम्बम् । सूत्र० ४०७ । प्रतिरूपं–प्रतिविशिष्टं रूपं यस्य तत् । प्रज्ञा० ८७ । प्रतिरूपं–प्रधानरूपं प्रति–प्रतिबिम्बं चिरन्तन-मुनीनां यद्रूपम् (?) । जा वत्थुं वत्थुं पडुच्च अणुरूवो पडंजइ सो । दश० चू० १३० । प्रतिक्षणं नवं नवं रूपं यस्य तद् प्रतिरूपम् । प्रज्ञा० ८७ । प्रतिरूपः–उचितः । व्य० प्र० १६ अ ।

पडिरूवकायकिरिया–प्रतिरूपकायक्रिया–यथा परिपाट्या शरीरविश्रामणम् । व्य० प्र० २२ अ ।

पडिरूवग–प्रतिरूपकं–प्रतिबिम्बम् । राज० ६ । प्रति-रूपकं–सदृशम् । उपा० ८ । प्रतिरूपकं–आकृतिप्रति-बिम्बम् । { ? १३२) । प्रतिरूपकम् । आव० २६६ । प्रतिरूपकं–सदृशम् । आव० ८२३ ।

पडिरूवजोगजुंजण– प्रतिरूपयोगयोजनं–उपचारविनय-भेदः । दश० २४१ ।

पडिरूवन्नु–प्रतिरूपविनयो–यथोचितप्रतिपत्तिरूपस्तं जानातीति प्रतिरूपज्ञः । उत्त० ५०० ।

पडिरूवया–प्रतिः–सादृश्ये ततः प्रतीति स्थविरकल्पिकादि-सदृश रूपं–वेशो यस्य स तथा तद्भावस्तत्ता–अधिकोप-करणपरिहाररूपा । उत्त० ५८६ ।

पडिरूवा–प्रतिविशिष्टं–असाधारणं रूपं यस्याः सा प्रति-रूपा, प्रतिक्षणं नवं नवमिव रूपं यस्याः सा । ज० प्र० २१ । चतुर्थकुलकरभार्या । ठाणा० ३६८ । प्रतिरूपा-द्रष्टारं द्रष्टारं प्रति रूपं यस्याः सा । ज्ञाता० ३ । प्रतिरूपाः–द्रष्टारं द्रष्टारं प्रति रमणीया इति । ठाणा० २३२ ।

पडिलग्गो–प्रतिलग्नः–ग्लानो जातः । आव० ६७८ ।

पडिल(भ)ग्गो–प्रतिलग्नः । आव० ३६२ ।

पडिलभे–प्रतिलभेत–प्राप्नुयात् । उत्त० ४६ ।

पडिलाभिता–प्रतिलम्भयिता–लाभवन्तं करोतीत्येवंशीलो यः च भवति । ठाणा० १०६ ।

पडिलाहेहि–प्रतिलम्भय । आव० ८१५ ।

पडिलेहंति–प्रत्युपेक्षन्ते–पौनःपुन्येन लगन्ति । आचा० ११३ ।

पडिलेह–प्रतिलेखः । आव० ३६६ ।

पडिलेहओ–प्रतिलेखकः–प्रतिलिखतीति, प्रवचनानुसारेण स्थानादिनिरीक्षकः साधुः । ओघ० १३ ।

पडिलेहणं–प्रत्युपेक्षणा–चक्षुषा निरीक्षणम् । प्रश्न० १५६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिलेहणा-प्रत्युपेक्षणा-चक्षुर्व्यापारः । प्रश्न० ११२ । प्रत्युपेक्षणा-आगमविधिना यथावन्निरूपणा ग्रहणप्रतिजागरणरूपा । उत्त० ५८३ । प्रतिलेखनं-प्रतिलेखना-आगमानुसारेण या निरूपणा क्षेत्रादेः सा । ओघ० १२ ।

पडिलेहणिया प्रत्युपेक्षणा । ओघ० ११७ ।

पडिलेहय-प्रतिलेखयतीति प्रतिलेखकः-प्रवचनानुसारेण स्थानादिनिरीक्षकः साधुरिति । ओघ० १३ ।

पडिलेहा-प्रत्युपेक्षणा-गुणदोषपर्यालोचना । आचा० ११४ ।

पडिलेहाए-प्रत्युपेक्ष्य-पर्यालोच्य । आचा० २७२ । आचा० २१४ (?) ।

पडिलेहिअव्व-प्रेक्षितव्यं-आलोचनीयम् । दश० २७२ ।

पडिलेहिऊण-प्रत्युपेक्ष्य-चक्षुषा निरीक्ष्य । ओघ० ११४ ।

पडिलेहित्त-प्रत्युपेक्ष्य-प्रतिजागर्यं । उत्त० ५३९ ।

पडिलेहित्तए-प्रत्युपेक्षितुं-अवस्थानार्थं निरीक्षितुम् । ठाणा० १५७ ।

पडिलेहित्ता-प्रत्युपेक्ष्य-ज्ञात्वा । दश० २५० । प्रत्युपेक्ष्य-दृष्ट्वा । आचा० ७१ ।

पडिलेहिय-प्रत्युपेक्षणं-गोचरापन्नस्य शय्यादेश्चक्षुषा निरीक्षणम् । आव० ८३६ । प्रेक्षितं-पर्यालोचितम् । आचा० १८६ ।

पडिलेहिया-प्रति उप-सामीप्येन ईक्षिता-ज्ञाता प्रत्युपेक्षिता । आचा० २३३ ।

पडिलेहे-प्रत्युपेक्षेत-निरूपयेत् । ओघ० १७८ ।

पडिलेहेइ-प्रतिलेखयति-प्रत्युपेक्षते । उत्त० ४३४ । प्रतिलखति । आव० २१९ ।

पडिलेहेति-प्रतिलेखयति प्रस्थापयति । आव० ७५६ ।

पडिलोम-प्रतिलोमः तद्गन्धाद्विपरीतगन्धः । आचा० ३६४ । प्रतिलोमः-इन्द्रियमनसोरनाल्हादः । ठाणा० २४४ । प्रतिलोमः-अपवादः । ओघ० ६५ । प्रतिलोमं-पश्चानुपूर्व्वी । जं० प्र० ९७ । प्रतिलोमं-प्रतिकूलम् । दश० ५२ । प्रतिकूलं-यत्र प्रातिकूल्यमुपदिश्यते यथा शठं प्रति शठत्वं कुर्यात् । ठाणा० २५३ ।

पडिवइर-प्रतिवैरम् । आव० ६३६ ।

पडिवक्ख-प्रतिपक्षः-तुल्यपक्षः । ओघ० ९७ । प्रतिपक्षः-असदृशः । ओघ० २३ । प्रतिकूलः पक्षः प्रतिपक्षः-अप्रमत्ततया शुभयोगपूर्वकं प्राणाव्यपरोपणम् । दश० २४ । प्रतिपक्षः-सदृशपक्षः । बृ० प्र० २४७ अ । प्रतिपक्षः । आव० १०१ ।

पडिवज्जइ-प्रतिपद्यते । आव० ३१३ । उत्त० १८५ ।

पडिवज्जिण-प्रतिपादिनोऽवश्यं प्रतिपद्यमानस्य । उत्त० २८५ ।

पडिवज्जित्तए-प्रतिपत्तुं-अभ्युपगन्तुम् । ठाणा० ५७ ।

पडिवज्जेजा-प्रतिपद्येत । आव० २२४ ।

पडिवत्ति-प्रतिपत्तिः-द्रव्यादिपदार्थाभ्युपगमः प्रतिमाद्यभिग्रह विशेषो वा । नंदी० २१० । प्रतिपत्तिः-वारकः(?)। प्रतिपत्तिः उपमा । व्य० प्र० २२२ अ । प्रतिपत्तिः-प्रतिपादनं, परिच्छित्तिः, अवधिप्रकृतिर्वा । आव० २९ । प्रतिपत्ति-अभ्यागतकर्तव्यरूपाम् । उत्त० ५०० । प्रतिपत्तिः-प्रकारः भेदः । ओघ० ११७ ।

पडिवत्तिकुसला-प्रतिपत्तिकुशलाः परप्रतिवचनदानसामर्थाः । व्य० द्वि० ५९ अ ।

पडिवत्ती-प्रतिपत्तिः-मतान्तररूपा । सूय० ८ । प्रतिपत्तिः-द्रव्यार्थे पदार्थाभ्युपगमा मतान्तराणि, प्रतिपाद्यनिमाद्यभिग्रहविशेषा वा । सम० १०८ । प्रतिपत्तिः-प्रत्यवताररूपं प्रतिपादनं, संवित्तिः अनुयोगद्वारं अर्थो वा । जीवा० ८ । प्रतिपत्तिः-यथास्वरुचिवस्तुभ्युपगमः । सूर्य० २४ । प्रतिपत्तिः-प्रतिवचनप्रदानम् । बृ० तृ० ५९ अ । प्रतिपत्तिः-उत्तरदानम् । बृ० द्वि० १४७ आ । प्रतिपत्तिः-परमतरूपा । सूय० ८ । प्रतिवचनम् । नि० चू० प्र० ४२ आ । वन्दनम् । चउ० ।

पडिवसम-प्रतिवृषभग्रामः-यत्र ग्रामं भिक्षाचर्यायै गमनम् । बृ० द्वि० ७९ अ ।

पडिवसभा-भिक्खायरियगामादि । नि० चू० प्र० ३३५ आ ।

पडिवाडी-परिपाटी । आव० ९९ ।

पडिवाती-प्रतिपतनशीलं प्रतिपाति-उत्कर्षेण लोकविषयं भूत्वा प्रतिपतति । ठाणा० ३७० ।

पडिवाय-प्रतिपद्यते पक्षस्याद्यतयेति प्रतिपत्, प्रथमो दिवस इति । जं० प्र० ४९१ ।

पडिविद्धंसंति-प्रतिध्वंसन्ते-योनिदोषादुपहतशक्तयो भव-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न्ति, मेहनविश्रोतसा वा योनेर्बहिः पतन्तो विध्वसन्ते इति । ठाणा० ३१४ ।

पडिविलइत्ता-प्रतिविलगिता । आव० ३५० ।

पडिविसिट्ठं-प्रतिविशिष्टम् । सूर्य० २६८ (?) ।

पडिवुज्झणा-वासासु वा सिसिरेसु वा णिवातट्ठा तेसिं चेव पडिवुज्जणा । नि० चू० प्र० २१२ आ ।

पडिवूहं-प्रतिव्यूहं-तत्प्रति द्वन्द्वगानां तद्भङ्गोपायप्रवृत्तानां व्यूहम् । ज० प्र० १३६ ।

पडिवेसिय-प्रतिवेसिकः-सीमान्तवर्ती-प्रत्यर्थी । व्य० प्र० १७० अ ।

पडिसंखिविय-प्रतिसङ्क्षेपणं-शिलायाः पततः संरक्षणम् । भग० ७६७ ।

पडिसंथारगं- । भग० ३२१ ।

परिसंधए-पडिसंधत्ते । कर्मोदयात् त्रुटितमपि संघट्टयति । उत्त० ५५० ।

पडिसंधाय-प्रतिसन्धाय-सह गन्तृभावेनानुकूल्यं प्रतिपद्य वा। सूत्र० ३२१ ।

पडिसंलीण-प्रतिसंलीनः-वस्तु प्रति सम्यग्लीनो निरोधवान्-प्रतिसंलीनः, क्रोधं प्रति उदयनिरोधेनोदयप्राप्तविफलीकरणेन च च प्रतिसंलीनः । ठाणा० २०७ ।

पडिसंलीणपडिमा-प्रतिसंलीनप्रतिमा-संलीनताऽभिग्रहः । औप० ३२ ।

पडिसंलीणया-षष्ठं बाह्यं तपः । भग० ६२१ ।

पडिसंल्लीणा-आश्रयस्थिता । दस० चू० ५२ ।

पडिसंविक्खे-प्रतिसमीक्षतेऽदीनमनाः अलाभमाश्रित्यालोचयति । उत्त० ११८ ।

पडिसंवेइज्जा- । नंदी० १७८ ।

पडिसंवेदेइ-प्रतिसंवेदयति-अनुभवति । आचा० २४ ।

पडिसंसाहणय-अनुव्रजनम् । भग० ६३७ ।

पडिसंसाहेहि-विनयप्रस्तावात् व्रजन्तं प्रतिसंसाधय-अनुव्रज, अथवा संश्लाघय-प्रशंसां कुर्वित्यर्थः । ज्ञाता० १८६ ।

पडिसंहरइ-प्रतिसंहरति । आव० १२४ ।

पडिसवत्त-प्रतिसपत्नः-परस्परविरोधी । दस० १६४ ।

पडिसामियं-प्रतिस्वामितं-स्वामिना प्रतिगृहीतम् । बृ० द्वि० २४ अ ।

पडिसाहरति-प्रतिसंहरति-निरुणद्धि । ठाणा० ११२ । ज्ञाता० ३३ ।

पडिसाहरिए-प्रतिसंहरणं-शिलायाः शिलापुत्रकाश्च संहृत्य पडिकरणम् । भग० ७६७ ।

पडिसीसगं-प्रतिशीर्षकं-दत्तस्वशीर्षं प्रतिरूपम् । प्रश्न० ३६ ।

पडिसुंडिओ-प्रतिसुंडितो-निषिद्धः । बृ० प्र० २८६ आ ।

पडिसुई-आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां जम्बू-ऐरवते नवम कुलकरः । सम० १५३ ।

पडिसुणइ-प्रतिशृणोति-अभ्युपगच्छति । जीवा० २४३ ।

पडिसुणणा-प्रतिश्रवणा । आव० २६५ ।

पडिसुणमाण-प्रतिशृण्वति । आव० ५७६ ।

पडिसुणेति-प्रतिशृण्वति-अभ्युपगच्छति, परस्परं साक्षीकृत्य प्रतिज्ञातं कार्यं कर्तव्यमवश्यमिति दृढीभवन्ति । ज० प्र० २४० ।

पडिसुते-आगमिन्यामुत्सर्पिण्यां सप्तमकुलकरः । ठाणा० ५१८ ।

पडिसुय-प्रतिश्रुतं-प्रतिशब्दः । प्रश्न० २० । प्रतिश्रुतं-प्रतिज्ञानम् । ठाणा० ४७४ । प्रतिश्रुतं-प्रतिशब्दः । राज० २५ । प्रतिश्रुतः-प्रतिशब्दः । भग० ४८३ ।

पडिसुया-प्रतिश्रुता प्रतिशब्दका । ज्ञाता० १०१ ।

पडिसूयग-प्रतिसूचकः-नगरद्वारसमीपेऽल्पव्यापारोऽवतिष्ठति । व्य० प्र० १७० अ ।

पडिसूर-प्रतिसूर्यः-द्वितीयसूर्यः । भग० १६५ । प्रतिसूर्यः-उत्पातादिसूचको द्वितीयः सूर्यः । जीवा० २८३ । प्रतिसूर्यः-उत्पातादिसूचको द्वितीयः सूर्यः । अनु० १२१ ।

पडिसेगा-प्रतिसेकाः नखाः । ज० प० ८१ ।

पडिसेवणा-प्रतिसेवना । ओघ २२५ । सम्माराहणविवरिया पडिगया वा सेवणा । उत्त० २५६ । प्रतिषेवणा-प्राणातिपातादासेवनम् । ठाणा० ४८५ । प्रतिषेवणा-अकल्प्यसमाचरणमितिभावः । व्य० प्र० ११ अ ।

पडिसेवणाकसिण-प्रतिसेवनाकृत्स्नं-ततः परस्यान्यस्य प्रतिसेवना स्थानस्यासम्भवात्, स च यत्कृत्स्नम् । व्य० प्र० ११८ आ ।

पडिसेवणाकुसीलो-प्रतिसेवनाकुशीलः-सम्यगाराधनविप-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रीना प्रतिगता वा सेवना तया कुशीलः । उत्त० २५६ ।
पडिसेवणाणुलोमा–प्रतिसेवनानुलोम्येन–यथैव प्रतिसेवितास्तेनैवानुक्रमेण कदाचिच्चिन्तयति । ओघ० १७५ ।
पडिसेवना–प्रतिसेवनाप्युपचारात् प्रायश्चितम् । व्य० प्र० १४ अ ।
पडिसेवविय उणा–प्रतिसेवविकटना । ओघ० १७६ ।
पडिसेविग–प्रतिसेवको नाम यो भिक्षुर्निष्कारणे कारणाभावेऽपि पञ्चकादीनि प्रायश्चितस्थानानि प्रतिसेवते । व्य० प्र० २५२ आ ।
पडिसेविय–प्रतिसेवितः । आव० ५२ । संयमप्रतिकूलार्थस्य सञ्ज्वलनकषायोदयात्सेवकः प्रतिसेवकः संयमविराधकः । भग० ८६४ ।
पडिसेह–प्रतिषेधः–निराकरणम् । अचिकित्स्योऽयमित्यभिधानरूपः । उत्त० ३०४ ।
पडिसेहति–विनिवर्त्तयति–निराकुर्वती । ज्ञाता० १४६ ।
पडिसेहस्स– । नि० चू० तृ० २६ अ ।
पडिसोतचारी–प्रतिश्रोतश्चारी–दूरादारभ्य प्रतिश्रयाभिमुखचारीत्यर्थः । ठाणा० ३४२ ।
पडिसोय–स्रोतं स्रोतं प्रतीति–प्रतिश्रोतं–प्रतिप्रवाहम् । भग० २३३ ।
पडिसोयगमण–प्रतिश्रोतोगमनं–प्रवाहसन्मुखगमनम् । उत्त० ३२७ ।
पडिस्सय–प्रतिश्रयः । आव० ६२ । प्रतिश्रयः–उपाश्रयः । ओघ० १३८ ।
पडिस्सयवाल–प्रतिश्रयपालः । आव० २६१ ।
पडिस्सुई–प्रतिश्रुतिः द्वितीयकुलकरः । जं० प्र० १३२ ।
पडिस्सुय–प्रतिश्रुतं–गुरौ वाचनादिकं यच्छत्येवमेतदित्यभ्युपगमः । उत्त० ५३५ ।
पडिह–प्रतिघातः–प्रतिहननम् । ठाणा० ३०३ ।
पडिहए–प्रतिहतं–निराकृतम् । भग० १६ ।
पडिहणिओ–प्रतिहतः । आव० ५२ ।
पडिहता–प्रतिहता । सूयं० ६५ ।
पडिहत्थं–उद्धमायं–अधिकं–आपूर्णश्च । नंदी० ४६ । अतिप्रभूतः–देशीशब्दोऽयम् । ज० प्र० २६२ । परिपूर्णः । ज० प्र० ५७ । प्रतिहस्तः–अतिरेकतः अतिप्रभूतः । जीवा० १६८ । प्रतिहस्तः–प्रतिपूर्णः । जीवा० ३५० ।
पडिहयं–प्रतिहतं–क्षपितम् । भग० ३६ । प्रतिहतं–सम्यक्त्वप्राप्त्या ह्रस्वीकृतम् । औप० ८५ । प्रतिहतं–मिथ्यादुष्कृतदानप्रायश्चितप्रतिपत्त्यादिना नाशितम् । प्रज्ञा० २६८ । प्रतिहतं इदानीमकरणतया । आव० ७६२ । प्रतिहतं–अतीतकालसम्बन्धिनिन्दातः । भग० २६५ । प्रतिहतः–स्खलितः । प्रज्ञा० १०८ ।
पडिहाति–प्रतिभाति । आव० ६७ ।
पडिहायइ–प्रतिभासते । आव० ५१२ ।
पडिहार–प्रतिहारः प्रत्यार्पणम् । औ० १०० (?) ।
पडिहारयग–प्रातिहार्यक–भूषणविधिविशेषः । जीवा० २६६ ।
पडिहारितं–कथितं । नि० चू० प्र० २१० आ ।
पडिहारिय–प्रतिहारितः–ज्ञापितः । बृ० द्वि० २१४ आ । प्रत्याहायः । विशे० ११६० ।
पडीणवाय–अपाचीनवातः–योऽपाचीनदिशः समागच्छति वातः सः । जीवा० २६ ।
पडीतंतो–प्रतितन्त्रसिद्धान्तः–यः खल्वथ स्वतन्त्रसिद्धन्तो न परतन्त्रेषु स प्रतितन्त्रसिद्धान्तः । बृ० प्र० ३१ आ ।
पडु–पटुः–दक्षपुरुषः । सूर्य० २६७ । पटुः–स्पष्टध्वनिः । प्रश्न० ४८ । पटु–स्वविषयग्रहणदक्षम् । भग० ४६६ ।
पडुक्खेव–प्रत्युत्क्षेपः–मुरजकांसिकादिगीतोपकारकातोद्यानां ध्वनिः नर्त्तकीपदप्रक्षेपलक्षणो वा । अनु० १३२ ।
पडुच्च–प्रतीत्य–आश्रित्य । जीवा० ५६ ।
पडुच्चकरणं– । नि० चू० प्र० २३१ अ ।
पडुच्चमक्खिय–निर्वृतिप्रत्याख्याने आगारः । आव० ८५४ ।
पडुच्चवित्ती–प्रतीत्यवृत्तिः–आश्रित्य कार्यस्य वृत्तिः । विशे० ७१७ ।
पडुच्चसच्च–प्रतीत्य–आश्रित्य वस्त्वन्तरं सत्यं प्रतीत्यसत्यम् । ठाणा० ४६० । प्रतीत्यसत्यं–यथा अनामिकाया दीर्घत्वं ह्रस्वत्वं चेति । दश० २०८ । दशधा सत्यो षष्ठः । ठाणा० ४८६ ।
पडुच्चसच्चा–प्रतीत्यसत्या । पर्यातिकसत्यभाषायाः षष्ठो भेदः । प्रज्ञा० २५६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडुपण्ण–प्रत्युत्पन्नो–वार्तमानिकः अभूतपूर्वं इत्यर्थः, दोष गुणेत्तरः । ठाणा० ४९२ । प्रत्युत्पन्नः–वार्त्तमानिकः । प्रज्ञा० ५०९ । प्रत्युत्पन्नः–गुणितः । सूर्य० ३८ । प्रत्युत्पन्नः–गुणितः । अनु० २०७ । प्रत्युत्पन्ने–सर्वथा वस्त्वभ्युपगते विशेषो यो दोषोऽकृताभ्यागमकृतविप्रणाशादिः स दोषसामान्यापेक्षया विशेषः,दशसु विशेषेषु षष्ठः । ठाणा० ४९४ ।

पडुप्पण्णा–प्रत्युत्पन्ना । आव० ६६ ।

पडुप्पन्न–लब्धः । ओघ० १७३ । प्रत्युत्पन्नः–तत्कालमुत्पद्यमानः । जीवा० १४१ । प्रत्युत्पन्नं-लब्धम् । दश० १२ । स रूवं जणपयादीहि उववेय । दश० चू० १२५ ।

पडुप्पन्ननंदी–प्रत्युत्पन्नेन–लब्धेन वस्त्रशिष्यादिना प्रत्युत्पन्नो वा–जातः शिष्याचार्यादिरूपेण नन्दति यः स प्रत्युत्पन्ननन्दी, नन्दनं नन्दिः–आनन्दः, प्रत्युत्पन्नेन नन्दिर्यस्य स । ठाणा० २१८ ।

पडुप्पन्नविणास–प्रत्युत्पन्नविनाशं–उदाहरणस्य चतुर्थो भेदः दश० ३५ ।

पडुप्पन्नविणासि–प्रत्युत्पन्नस्य तत्कालोत्पन्नवस्तुनो विनाशोऽभिधेयतया यत्रास्ति तत् प्रत्युत्पन्नविनाशि । ठाणा० २५७ ।

पडुप्पन्ना–प्रत्युपन्नाः–वर्त्तमानकालभाविनः । आचा० १७८।

पडुप्पाएमाण–प्रत्युत्पद्यमानू-गुण्यमानः । जीवा० १७६ ।

पडुप्पायंति– । नि० चू० द्वि० २ अ ।

पडेसुअ–प्रतिश्रुतः–प्रतिशब्दः । जं० प्र० ३९६ ।

पडोआर–प्रतीकारः । आव० ३४७ । नि० चू० प्र० ३५६ आ ।

पडोयार–परिकरणम् । ओघ० १३२ । प्रत्यवतारः–प्रादुर्भावः । जं० प्र० ६९ । प्रति–सर्वतः सामस्त्येन अवतीर्यते व्याप्यते येन सः प्रत्यवतारः । प्रज्ञा० ५३२ । प्रत्यावतारः–उपकरणम् । पिण्ड० १३ ।

पडोलकंद–गुच्छाविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

पडुए–ह्रस्वमहिषी । उत्त० ३०३ ।

पडुच्छखीर–पडुच्छक्षीरं–पारिहिट्ठिक्षीरम् । ओघ० ४८ ।

पडुय–महिषीवत्सः । आव० ७१९ ।

पडुया–पडुका–ह्रस्वगोस्त्री, ह्रस्वमहिषी वा । विपा० ४८ ।

पढम–प्रथमः–प्रधानः । जं० प्र० २०४ । आद्यं–प्रधानं वा । आचा० ६ । प्रथमः–प्रधानः । जं० प्र० २५१ ।

पढम अचरमसमय–प्रथमाचरमसमयः । भग० ९६९ ।

पढम अपढमसमय–प्रथमाप्रथमसमयः । भग० ९६९ ।

पढमग–प्रथमकः–मूलभूतः । जीवा० २२८ । प्रथमकः–मूलभूतः । जीवा० २९४ ।

पढमचरमसमय–प्रथमचरमसमयः । भग० ९६९ ।

पढमद्धा–पढमपौरुष्यां यदर्द्धम् । ओघ० १४८ ।

पढमपढमसमय–प्रथमप्रथमसमयः । भग० ९६९ ।

पढमपत्तं–प्रथमपत्रं–या बीजस्य समुच्छ्रूनावस्था । प्रज्ञा० ३८ ।

पढमपाउस–आसाढो, छण्हं उत्तूणं जेण पढमो पाउसो वणिज्जंति ते । नि० चू० प्र० ३३४ आ । ज्ञाता० ६५ । प्रथमप्रावृट् । आव० २६२ । प्रथमवर्षा । ओघ० १६० । इह आषाढ श्रावणौ प्रावृट्, आषाढस्तु प्रथमप्रावृट्, ऋतुनां वा प्रथमेति प्रथमप्रावृट् । ठाणा० ३०९ ।

पढमपुच्छा–कोसि तुमं को व ते णिव्वेदो जेणं पव्वयसि एवं पुच्छिते पढमपुच्छा । नि० चू० द्वि० ३० आ ।

पढमबिइय–प्रथमपरिषहेण बाध्यमानः– क्षुधित इत्यर्थः । द्वितीयपरिषहेण तृषा बाध्यमानः पिपासया पीड्यमानः । ओघ० १०३ ।

पढमवओ–प्रथमवयः । आव० १३७ ।

पढमसत्तराइंदिया–भिक्षुप्रतिमाविशेषः । ज्ञाता० ७२ ।

पढमसमयणियंठा–योऽन्तर्मुहूर्त्तंनिर्ग्रन्थकालसमयराशौ प्रथमसमयं प्रतिपद्यमानः सः प्रथमसमयनिर्ग्रन्थः । उत्त० २५७ ।

पढमसमयतिरिक्खजोणिय–प्रथमसमयतिर्यग्योनिकः–नरकादिशेषगतित्रयादागतः प्रथमसमयेन वर्त्तमानः । जीवा० ४६३ ।

पढमसमुद्दिस्सग–प्रथमसमुद्दिष्टः–ग्लानादिः । ओघ० १८५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढमसमोसरण-प्रथमं-आद्यं बहूण समवातो-समस्सरणं। नि० चू० प्र० ३३६ आ। प्रथमसमवसरणं-प्रथमवर्षा कालसमयः। व्य० प्र० १६१ आ।

पढमा-प्रथमा-प्रथमालिका। ओघ० ४१। प्रथमालिका। ओघ० १८४। प्रथमिका-मूलभूता। जं० प्र० ३२४।

पढमाओसप्पिणी-अवसर्पिण्याः-प्रथमो विभागः-प्रथमावसर्पिणी। जं० प्र० ४८५।

पढमालिय-प्रथमालियं मात्रकम्। ओघ० १०३। नि० चू० प्र १५५ अ।

पढमालिया-प्रथमालिका-नमस्कारसहितभोजनकालमानम्। आव० २६३। प्रथमालिका। उत्त० ६०।

पढमावलियाए-प्रथमा-उत्तरोत्तरावलिकापेक्षया आद्याऽतस्र आवलिका यस्मिन् स प्रथमावलिकः, अथवा प्रथमात्-मूलभूताद्विमानेन्द्रकादारभ्य याऽसावावलिका-विमानानुपूर्वी। सम० ७७।

पढमा सत्तराइंदिणा-प्रथमा सप्तरात्रिकी। आव० ६४७। सप्तरात्रिन्दियानि यासु ताः सप्तरात्रिन्दिवास्ताश्च तिस्र भवन्तीति सप्तानामुपर्यष्टमी प्रथमासप्तरात्रिन्दिवा। सम० २२।

पढमिल्लुआ-प्रथमिल्लुका-अनन्तानुबन्धिक्रोधमानमायालोभः। विशे० ५४३।

पढमिल्लुग-प्रथममेव प्रथमिल्लुकं-प्रथममनापतसंलोकलक्षणं स्थंडिलं तत्। बृ० प्र० ७२ अ०। प्रथमकं-आविचिमरणम्। उत्त० २४०। जहण्णं। नि० चू० तृ० ६ आ।

पढमिल्लुय-प्रथमः। सं०।

पढमिल्लुया-प्रथमिल्लुका-प्रथमा एव। आव०७७।

पढमेवए-प्रथमे वयसि आद्यौवने। उत्त० ४७५।

पढमोग्गहो-अनुज्ञास्यदाचार्य भोगज्ञापनपूर्वमवग्रहग्रहः। बृ० द्वि० ८६ (?)।

पण-पणः-द्रम्भः। आव० ४२१।

पणइ-प्रणतिः। आव० ४०७।

पणइओ-याचितः। नि० चू० प्र० १६५ अ।

पणउ-उल्लो। दश० चू० ८०। उल्ली। नि० चू० प्र० १८२ आ।

पणए-पनकं-अनन्तकायवनस्पतिभेदः। आचा० ५९। पनकः-वनस्पतिविशेषः। पिण्ड० १२। साधारणबादरवनस्पतिकायिकः। प्रज्ञा० ३४। जलरुहविशेषः। प्रज्ञा० ३३।

पणएमि-याचे। नि० चू० द्वि० १०१ अ। प्रणयामि-प्रार्थयामि। बृ० द्वि० २०४ आ।

पणओ-उल्लो। नि० चू० प्र० १८२ आ। पनकः-सूक्ष्मवनस्पतिजीवविशेषः। विशे० ३१३।

पणग-पनकः-फुल्लि। आव० ५७३। पनकं-उल्लि। दश० १७५। पनकः-उल्लिवनस्पतिः। दश० २२९। पनकः-उल्लीरः। ओघ० १३७। पनकः-उल्लिजीवः। उत्त० ६९२। पंचवण्णो संकुरो अणंकुरो वा। नि० चू० द्वि० ३ अ। आयरिय उवज्झाउ पवत्ती थेरो गणावच्छेइतितो य एते पंच अहवा आयरिय उवज्झाउ थेरो खुड्डो सोहा एते पंच। नि० चू० प्र० १७३ आ। उल्ली। नि० चू० प्र० १२१ अ। नि० चू० प्र० २५५ आ। पनकः काष्ठादावुल्लिविशेषः पञ्चवर्णः। आचा० ३०। पनकः-प्रबलः कर्दमविशेषः। भग० ३०७। पनकः-भूम्यादावुल्लिविशेषः। आचा० २८५। पनकः-उल्ली। ठाणा० ४३०।

पणगजीव-पनकजीवः-वनस्पतिविशेषः। आव० २९।

पणगदगमट्टीमकडासंताणए-सप्तदशं सबलम्। सम० ३९।

पणगमट्टिया-पनकः-अत्यन्तसूक्ष्मरजोरूपः स एव मृत्तिका पनकमृत्तिका। उत्त० ६८९। पवनमृत्तिका-मरुप्रपर्पटिका। उत्त० ६८९।

पणगमत्तिया-नद्यादिपुरप्लाविते देशे नद्यादिपूरेऽपगते यो भूमौ श्लक्ष्णमृदुरूपो जलमलोऽपरपर्यायपङ्कः स पनकमृत्तिका। जीवा० २३।

पणट्ठसंधि-प्रनष्टसन्धिः, सर्वथाऽनुपलक्ष्यमाण पत्रार्धद्वयसन्धिः। (?)।

पणट्ठसंधिय-प्रनष्टसन्धिकं-अनंतजीवम्। आचा० ५९।

पणत-प्रणतो-जात्यादिभावैर्हीनो निम्बादिः। ठाणा० १८२। नंदी० ३।

पणतित-पणयितः। उत्त० २१९। प्रणयितः-याचितः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व्य० द्वि० २९३ अ ।

पणपण्णग–पञ्चकपर्यादयः पण्यं यस्या एकबारप्रतिसेवने सा पञ्चपण्यिका । व्य० प्र० २५० अ ।

पणमिय–प्रनमितम् । भग ३७ । मुद्धाणं सिरं तेण पणामकरणं । नि० चू० प्र० २३७ आ ।

पणय–प्रणयः–स्नेहः । भग० ३०९ । पनकः–प्रतलः कर्दमः । ज० प्र० १६९ । पनकः–प्रतलः सूक्ष्मः कर्दमः । प्रश्न० ६५ । पनकः–फुल्लि । ओघ० १३१ । पनकं–साधारणवनस्पतिविशेषः । प्रज्ञा० ४० ।

पणयए–प्रणयते प्रासादयति । व्य० प्र० १९८ आ ।

पणयमत्तिया–नद्यादिपूरप्लायिते देशे नद्यादिपूरेऽपगते यो भूमौ श्लक्ष्णमृदुरूपो जलमलापरपर्यायः पङ्कः स पनकमृत्तिका । तदात्मका जीवा अप्यभेदोपचारात्पनकमृत्तिकाः । प्रज्ञा० २६ ।

पणया–प्रणता–महताफलभारेण दूरं नता । जीवा० १८२ ।

पणयामि–प्रणयामि–याचे । पिण्ड० १३६ ।

पणयालं–पञ्चचत्वारिंशत् । आव० ६३४ ।

पणयासणं–प्रणतासनम्–निम्नासनम् । जीवा० २०० ।

पणव–भाण्डपटहः । औप० ७३ । पणवः–भाण्डपटहः, लघुपटहो वा । भग० २१६ । पणवः–भाण्डपटहो लघुपटहो वा । ज० प्र० १०१ । गुंजा । नि० चू० तृ० ६२ आ । पणवो–भाण्डपटहो लघुपटहो वा । राज० ४९ । पणवो भाण्डानां वाद्यम् । राज० २५ । भाण्डपटहः । भग० ४७६ । पणवः–भाण्डानां पटहः । जीवा० १०५ । भाण्डानां पणवः । जीवा० २४५ । पणवः–भाण्डपटहो लघुपटहो वा । जीवा० २६६ । पणवः–लघुपटहः । प्रश्न० १५९ ।

पणवन्निय–प्रणपन्निकः–व्यन्तरनिकायानामुपरिवर्त्तिनो व्यन्तरजातिविशेषः । प्रश्न० ६९ । वाणमन्तरविशेषः । प्रज्ञा० ९५ ।

पणवसंठिय–प्रणवसंस्थितः–रत्नप्रभापृथ्व्यां आवलिकाबाह्यस्य सप्तदशं संस्थानम् । जीवा० १०४ ।

पणाम–दृष्टिवादे सूत्रे भेदः । सम० १२८ ।

पणामई–प्रणामयेत्–अर्पयेत् । उत्त० ४६२ ।

पणामय–प्रणामकः–शब्दादिविशेषः । सूत्र० ६८ ।

पणामिओ–दत्तः । दश० ३८ ।

पणामिज्जासि–दद्याः । आव० ३०१ ।

पणामेइ–दातव्यम् । ओघ० १८५ । अर्पयति । आव० ६८७ ।

पणामेउं–अर्पयितुम् । बृ० द्वि० २०३ आ ।

पणाय–विक्रयाय । नंदी० ६२ ।

पणायितुं–विक्रेतुम् । नंदी० ६२ ।

पणालछिड्डुं–मंडविगाछादितमाले वा वासोदगं पविट्ठं, डायाले वा पणालछिड्डुं । नि० चू० प्र० १२० आ ।

पणालि–प्रकृष्टा नाली–शरीरप्रमाणा दीर्घतरा यष्टिः । प्रश्न० ५८ ।

पणिअट्ठ–प्रणितेनार्थोऽस्येति पणितार्थः–प्राणधृतप्रयोजनः । दश० २१९ ।

पणिग–पण्यः । आव० ८२९ ।

पणित–सत्यङ्कारः । नंदी० १४९ ।

पणितसाला–भाण्डशाला–यत्र घटकरकादिभाण्डजातं तैः सङ्गोपितमास्ते । बृ० द्वि० १७५ अ ।

पणिधाय–प्रणिधाय–मर्यादीकृत्यम् । सूर्य० १४ ।

पणिधिए–प्रणिधिना–मायया यथा वाणिजकादिवेषं विधाय गलकर्त्तकाः । सम० ५२ ।

पणिय–पणितः–व्यवहारः । ज्ञाता० ९५ । विक्रयम् । बृ० द्वि० २०० अ । पणितं–क्रयाणकम् । ज० प्र० १२२ । व्यवहारः, क्रयाणकम् । भग० ६७१ । पणितं–भाण्डम् । ज्ञाता० ३ । पण्यः–भाण्डः । ज्ञाता० १५७ । पणितं–भाण्डम् । औप० ४ । पणितम् । नंदी० १४९ ।

पणियगं–पणः । आव० ४१७ ।

पणियगिहं–जत्थ भंडं अच्छति । नि० चू० द्वि० ६९ आ । पण्यगृहं–पण्यापणः । आचा० ३६६ । पणितगृहं–भाण्डनिक्षेपार्थगृहम् । औप० ४१ । पण्यगृहं हट्ट इति । औप० ६१ ।

पणियसाला–जत्थ भायणाणि विक्केति वाणिय कुंभकारो वा । नि० चू० तृ० २१ आ । कुम्भकाराणां वणिजां वा भाजनविक्रयस्थानम् । बृ० द्वि० १७५ अ । पणितशाला–हट्टः । ज्ञाता० ७९ । पण्यशालाः–यङ्गशाला । आचा० ३६६ । पण्यशाला–आपणः । आचा० ३०७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पणितशाला-बहुग्राहकदायकजनोचितो गेहविशेषः। औप० ४१ ।

पणिवयामि-प्रणौमि-अभ्यर्थयामि, अभ्यर्चयामि वा । आव० ३८६ ।

पणिवयामो-प्रणमामः-पूजयामः । आव० ५३० ।

पणिसुणणा-प्रतिश्रवणं-अभ्युपगमः । पिण्ड० ४६ ।

पणिहा-प्रणिधानं-प्रणिधा । जीवा० ३२६ । प्रणिधा-प्रभावः । जीवा० ३२६ ।

पणिहाए-प्रणिधाय-अवधीकृत्य । सूर्य० ३१ । प्रणिधाय-अपेक्ष्य । प्रज्ञा० ३५६ ।

पणिहाण-प्रणिधानं-अन्तःकरणवृत्तिः । सूत्र० ३०६ । प्रणिधिना-एकाग्रचित्तप्रधानेन यद्वचनं प्रणिधानं-गूढपुरुषाणां यद्वचनम् । प्रश्न० ५८ । प्रणिधानं-अकुर्वतोऽपि करणं प्रति दृढाध्यवसानम् । आव० ५८८ । प्रणिधानं-दृढाध्यवसानलक्षणम् । आव० ५८८ । प्रणिधानं-चेतःस्वास्थ्यम् । दश० १०६ । प्रणिधानं-एकाग्रता । ठाणा० १२१ । प्रणिधिः प्रणिधानं-प्रयोगः । ठाणा० १६६ । प्रणिधानं-चित्तैकाग्र्यम् । भग० ६३ । प्रणिधानं-प्रयोगः । उपा० १० । प्राणधानं-चेतःस्वास्थ्यम् । व्य० प्र० १६ अ ।

पणिहाणजोगजुत्तो-प्रणिधानं-चेतःस्वास्थ्यं तत्प्रधाना योगा-व्यापारास्तैर्युक्तः-समन्वितः प्रणिधानयोगयुक्तः । दश० १०६ ।

पणिहाणवं-प्रणिधानवान्-चित्तस्वास्थ्योपेतो न तु रागद्वेषवशगः । उत्त० ४२६ ।

पणिहाय-प्रणिधाय-आश्रित्य । जीवा० १०१ । प्रणिधाय-संयम्य । दश० २३५ । प्रणिधाय-आश्रित्य निरुद्धहृषिकः । जीवा० ३८४ । प्रणिधाय-अपेक्ष्य । जीवा० ३२६ । प्रणिधाय-अपेक्ष्य । ज्ञाता० १७० ।

पणिहि-प्रणिधिः-माया न कार्या । प्रश्न० १४६ ।

पणिहितेंदिय-प्रणिहितेन्द्रियः । प्रश्न० १६० ।

पणिहिय-प्रणिहितः-संवृतः । प्रश्न० १६० ।

पणिहियप्पा-समाधिमदात्मा । मर० ।

पणिही-प्रणिधिः-प्रणिधानं विशिष्टैकाग्रत्वम् । प्रश्न० १४७ । प्रणिधिः-निधानादिप्रणिहितम् । दश० २२५ । प्रणिधिः-माया न कार्या । योगसंग्रहेऽष्टादशो योगः । आव० ६६४ । प्रणिधिः-व्यवस्थापनम् । उत्त० ४६६ । अण्णहाकयं । आव० ६६१ ।

पणो-पणायतं पण्यमिति वा क्रयविक्रयोपजीवी । जीवा० २७६ ।

पणोअ-पणितं-पण्यम् । दश० २२१ । प्रणीतं-स्निग्धम् । दश० १८६ ।

पणीतं-घृतम् । नि० चू० प्र० १५५ अ ।

पणीतरसं-नेहविगतीओ । दश० चू० ८६ ।

पणीय-प्रणीतं-गलद्बिन्दुः । उत्त० ४२६ । प्रणीतं-अर्थकथनद्वारेण प्ररूपितम् । नंदी० १९३ । प्रणीतं-स्निग्धम् । ओघ० ६८ । प्रणीतं-स्निग्धमधुरम् । बृ० प्र० २३५ अ । प्रणीतं-गूढस्नेहं घृतपूराद्यर्द्रखाद्यं अक्षितमण्डकादिस्नेहावगाढकुसणादि वा । बृ० तृ० २०६ आ । निट्ठा पसलं वण्णादि उवचेयं । दश० चू० १२७ । प्रणीतं-पक्वं, आनीतम् । आव० ७४१ । प्रणीतं-गलत्स्नेहं भोजनम् । पिण्ड० १७४ । प्रणीतं-शुभतया प्रकृष्टम् । भग० २२३ । प्रणीतः-गलत्स्नेह बिन्दुः । प्रश्न० १४१ ।

पणीयगहण-स्नेहवद्द्रव्यग्रहम् । ओघ० ६८ ।

पणीयतर-प्रणीततरः-युक्तियुक्तिः । सूत्र० ४१३ ।

पणीयनिद्धभोयणविवज्जण-प्रणीतो-गलत्स्नेहद्विन्दुः स्निग्धभोजनं तस्य वर्जनं प्रणीतस्निग्धभोजनवर्जणम् । पञ्चमं भावनावस्तु । प्रश्न० १४१ ।

पणीयभूमी-प्रणीतभूमिः-व्यवहारभूमिः । हट्टमध्य इति । उत्त० १३३ ।

पणीयरस-प्रणीतरसं-गलद्घृतदुग्धादिबिन्दुः । औप० ४०।

पणीयरसभोई-प्रणीतरसभोजी-गलत्स्नेहरसबिन्दुकस्य भोजनस्य भोजकः । सम० १६ ।

पणीयरसविवज्जए- । भग० ९२१ ।

पणीया-नीता । आव० ७०० ।

पणुल्लयामो-प्रणुदामः-प्रेरयामः । उत्त० ३७१ ।

पणुल्लिज्जा-प्रेरयेत्-उद्घाटयेत् । दश० १६७ ।

पणुल्लिया-प्रेरिता । आव० ३४५ ।

पणोल्लणगती-प्रणोदनगतिः । ठाणा० ४३४ ।

पणोल्लि-प्रणोदिजन्मप्रवर्तकम् । प्रश्न० ६१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पणोल्लि–प्रणोदी–प्राजनकदण्डः । प्रश्न० ५८ । प्रणोदिजन्मप्रवर्त्तकम् । प्रश्न० ६१ ।

पणोल्लिया–प्रणोदिता । उत्त० १५० ।

पण्डक–मेरुसम्बन्धी चतुर्थं वनम् । प्रश्न० १३५ ।

पण्डितः–हेयोपादेयतत्त्वज्ञः । आचा० ११८ । संसारविमुखप्रज्ञतया कोविदः । पिण्ड० ७२ ।

पण्डुरार्या–मायाशल्ये दृष्टान्तः । आव० ५७६ ।

पण्णगइंद–पन्नगेन्द्रः–भुजगवरो नाम कुमारः । प्रश्न० १३५ ।

पण्णगारं–प्राभृतम् । नि० चू० प्र० ३४५ अ ।

पण्णत्तं–योग्यीकृता । औप० (?) २ । उपादेयतया प्रकाशितम् । औप० ५ । प्राज्ञैः–गणधरैस्तीर्थकरादात्तं–गृहीतमिति प्रज्ञातम् । अनु० २ । प्रगुणितः । नि० चू० द्वि० ६६ आ । प्रगुणः । नि० चू० प्र० ३३० अ । प्रज्ञाप्तं–प्रज्ञया–विशिष्टकर्मविषयबुद्धया आप्तं–प्राप्तं अतीव सुष्ठु परिकर्म्मितमिति । सूर्य० २६३ । भग० ५४० ।

पण्णत्ता–प्राज्ञैः–छेकैराप्ता प्रज्ञाप्ता–छेकपुरुषपरिकर्मिता । राज० २ ।

पण्णत्ति–प्रज्ञप्तिः–विद्याविशेषः । आव० ६४ । प्रज्ञप्तिः ।(?)

पण्णत्ती–कुशलाः । तं० ।

पण्णपण्णिका–पञ्चपण्यिका कुलटा । व्य० प्र० २५० ।

पण्णप्पइ–वहति । नि० चू० प्र० १८६ आ ।

पण्णवग–प्रज्ञापकः–मेयद्रव्याणामियत्तानिर्णायकः । ज० प्र० २२७ ।

पण्णवण–प्रज्ञापनम् । विशे० ४२३ ।

पण्णवणा–प्रज्ञापना–सामान्येन भङ्गकथनम् । बृ० द्वि० २१७ आ । जीवादिपदार्थानां प्रज्ञापनं प्रज्ञापना । नंदी० २०४ । प्रज्ञापना–प्रकर्षेण निःशेषकुतीर्थितीर्थंकरासाध्येन यथावस्थितस्वरूपनिरूपणलक्षणेन ज्ञाप्यन्ते–शिष्यबुद्धचामारोप्यन्ते जीवाजीवादयः पदार्था अनयेति प्रज्ञापना । प्रज्ञा० १ । स्वरूपनिरूपणम् । उत्त० ४६७ । प्रज्ञापना–प्ररूपणा । ओघ० ७६ ।

पण्णवणि–प्रज्ञापनी–विनेयस्योपदेशदानरूपा । भग० ५०० ।

पण्णवणिज्जा–जे पण्णवेउं सक्केंति छउमत्थो वा बुद्धी घेत्तुं सक्केति । नि० चू० द्वि० १४० अ ।

पण्णवणी–प्रज्ञाप्यतेऽर्थोऽनयेति प्रज्ञापनी–अर्थप्रतिपादनी, प्ररूपणीयेति वा । प्रज्ञा० २४६ । प्रज्ञापनी–विनीतविनयस्य विनेयजनस्योपदेशदानं यथा प्राणिवधान्निवृत्ता भवन्ति, भवान्तरे प्राणिनो दीर्घायुष्यइत्यादिरूपा भाषा । प्रज्ञा० २५६ ।

पण्णविंति–प्रकर्षेण संज्ञीत्यपनोदायान्तेवासिनो जीवाजीवाश्रवबन्धसंवरनिर्ज्जरामोक्षपदार्थान् ज्ञापयन्ति प्रज्ञापयन्ति । आचा० १७६ ।

पण्णवेंति–उपपत्तिभिः प्रज्ञापन्ति । भग० ६८ ।

पण्णवेइ–व्यक्तपर्यायवचनतः प्रज्ञापयति । जं० प्र० ५४० ।

पण्णा–प्रज्ञा–प्रज्ञानं प्रज्ञा विशिष्टक्षयोपशमजन्या प्रभूतवस्तुगतयथावस्थितधर्मालोचनरूपाः मतिः । आव० १८ । प्रज्ञा–हेयोपादेयविवेचिका बुद्धिः । उत्त० २७८ । प्रज्ञा–प्रक्रमान्मतिश्रुतावधिज्ञानत्रयात्मिका । उत्त० ४६१ । प्रज्ञा–बुद्धिः । नंदी० ६५ । प्रज्ञा–स्वयं विमर्शपूर्वको वस्तुपरिच्छेदो मतिज्ञानविशेषभूत इति । परिषहविशेषः । सम० ४१ । प्रज्ञा–अशेषविशेषविषयज्ञानम् । भग० ५६ । प्रज्ञानं प्रज्ञा–विशिष्टक्षयोपशमजन्या प्रभूतवस्तुगत यथाऽवस्थितधर्मालोचनरूपा मतिः । विशे० २२६ । प्रज्ञा–मतिज्ञानविशेषः । भग० ३६० । प्रज्ञा–हेयोपादेयविवेचनात्मिका मतिः । उत्त० ३२५ । प्रज्ञा–स्वयं विमर्शपूर्वको वस्तुपरिच्छेदः । उत्त० ८३ ।

पण्णाण–प्रज्ञानं–यथावस्थितविषयग्राहिज्ञानम् । आचा० ७६ । प्रज्ञानं–सदसद्विवेको यस्य स । आचा० १८१ ।

पण्णी–पण्णिमया महंता भारगा वज्झंति । नि० चू० प्र० ४५ अ ।

पण्याजीव–वणिक् । जं० प्र० १२२ ।

पण्हय–अनार्यविशेषः । भग० १२७ (?) ।

पण्हयति–पिबति । निरय० ३० ।

पण्हव–पन्हवः–किलातदेशनिवासीम्लेच्छविशेषः । प्रश्न० १४ ।

पण्हवणं–येन परः प्रस्तुतिं भजते प्रल्हत्तौ भवतीति प्रस्तवनम् । विपा० ५४ ।

पण्हवी–गयत्थरणी । नि० चू० द्वि० ६१ अ ।

पण्हवेंति–प्रस्नुवन्ति । व्य० द्वि० १६३ आ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्हा–प्रभाः–अङ्गुष्ठबाहुप्रभादिका मन्त्रविद्या। सम० १२४। प्रभाः-अङ्गुष्ठादिप्रभभावं तदभावं च प्रतीत्य या विद्या–शुभाशुभं कथयन्ति ताः प्रश्नाः। सम० १२४। प्रश्नः–पृच्छकस्य शुभाशुभकथनम्। नंदी० २३४। पृच्छ्यत–इति प्रश्नं-प्रष्टव्यार्थरूपम्। उत्त० २४१। प्रश्नः–देवतादिपृच्छारूपः। बृ० प्र० २१५ अ।

पण्हि–पार्ष्णिः। आव० ५५।

पण्हिया–पार्ष्णिका। आव० ५७४।

पण्हुता–प्रस्नवा–स्तन्या। अन्त० ७।

पण्हुत्त–सबाष्पः। नि० चू० प्र० १४५ अ।

पण्हुया–प्रस्नुता। उत्त० २७४।

पतंग–पतकः–व्यन्तरनिकायोपरिवर्तिनो व्यन्तरविशेषः। प्रश्न० ६५।

पतंगविहिता–पतङ्गः शलभस्तस्य वीथिका–मार्गः तद्वद्या सा, अनियतक्रमा चतुर्था गोचरचर्या। ठाणा० ३६५।

पतंगवीथिका–यस्यां तु त्रिचतुरादीनि गृहाणि विमुच्याग्रतः पर्यटति सा पतङ्गवीथिका–पतङ्गः–शलभः स हि गच्छन्नुत्लुत्यानियतगत्या गच्छति तस्येव या वीथिका-पर्यटनमार्गः सा। बृ० प्र० २५७ अ।

पतइंदा– । ठाणा० ८५।

पतए–प्रथमपतेन्द्रः। ठाणा० ८५।

पतङ्गः–तृणपत्रनिश्रितो जीवविशेषः। आचा० ५५। सम्पाति जीवविशेषः। आचा० ५५। कचवरनिश्रितो जीवविशेषः। आचा० ५५। उद्भेदजः। दश० १४१।

पतच्छेज्जं-पत्रच्छेद्यं अष्टोत्तरशतपत्राणां मध्ये विवक्षितसङ्ख्याकपत्रच्छेदने हस्तलाघवम्। ज० प्र० १३६।

पतट–प्रस्तटः प्रस्तारः। जीवा० ३६०।

पतणतणाइस्सई–प्रकर्षेण स्तनितं करिष्यति–गर्जिष्यति। ज० प्र० १७४।

पतणतणाएति–प्रकर्षेण तणतणायते गर्जतीत्यर्थः। भग० ६६५।

पतणतणायति–प्रत्यन्तं गर्जति। जं० प्र० ३८६।

पतणुरागसंजुत्त–प्रतनुरागसंयुक्तः। आव० ६६।

पतत–प्रततः–स्वप्नसन्तानः। नि० चू० द्वि० ८६ अ।

पतद्गृहं– । व्य० प्र० २१८ आ।

पतनता भ्रमिमूर्च्छादिना। आचा० २५५।

पतयवई–द्वितीयपतेन्द्रः। ठाणा० ८५।

पतरगणियभावणा–प्रतरभावना। जीवा० ३२५।

पतवति–प्रतपति। जीवा० २४८। दीक्षाङ्गारतां प्रतिपद्यते। जं० प्र० ४१६।

पतिव्वया–पतिं–भर्तारं व्रतयति–तमेवाभिगच्छामीत्येवं नियमं करोतीति पतिव्रता। ज्ञाता० २०२।

पतिट्ठा–प्रतिष्ठानं प्रतिष्ठा–संसारभ्रमणविरतिलक्षणा, सम्यग्दर्शनाद्यवाप्तिसाध्या मोक्षप्राप्तिः। सूत्र० २०३।

पतिट्ठाण–प्रतिष्ठाननगरम्। उत्त० १००। नयरविसेसो नि० चू० प्र० ३४० अ। नगरनाम। बृ० तृ० २३६ अ। गोदावर्याः नदीतरे नगरम्। व्य० प्र० १६३ अ।

पतिट्ठावक–प्रतिस्थापकः–राजादिसमक्षं स्वपदनिवेशनः। ज्ञाता० २४०।

पतिट्ठिओ–प्रतिबद्धः। बृ० तृ० २५२।

पतिठिता–प्रतिष्ठिताः–आश्रिताः। ठाणा० ३५८।

पतिभकर–प्रतिभयकरं–भयजनकम्। सम० १२६।

पतिभय–प्रतिभयं–वस्तुवस्तुप्रतिभयम्। प्रश्न० १३।

पतिरिक्क–प्रतिरिक्तः–एकान्तः। जीवा० २६९। प्रतिरिक्तः एकान्तः। ओघ० १०३।

पतिव–प्रतिवः। प्रश्न० ७३।

पतोग–प्रयोगः–वादविषयः। ठाणा० ४२३।

पतोदयं–पतदुदयं–पतितपताकम्। भग० १८७।

पतोस–प्रद्वेषः। व्य० द्वि० ३५७ आ।

पत्त–पत्रं–तमालपत्रम्। प्रश्न० १६२। पात्रम्। आव० ११५। पत्रं–पलाशपत्रकर्मारीपत्रादिकम्। अनु० १५४। प्राप्तं–लब्धिविशेषाद् गृहीतम्। भग० २२४। प्राप्तं–आदानशीलः। ओघ० ९३। पात्रमिव पात्रमतिशयवद् ज्ञानादिगुणरत्नानां प्राप्तिर्वा गुणप्रकर्षमिति। ठाणा० २१। प्राप्तम्। भग० १५९। उत्त० ३२१। सूत्रस्य-तदुभयस्स ग्रहणधारणाशक्तेत्यर्थः। नि० चू० प्र० ७६ आ। तमालपत्रादि। जं० प्र० ६०। पत्रं–पद्मिनी पत्रादि। दश० २२८। पत्रं–पर्णम्। ठाणा० २७३। पत्रं–तमालपत्रम्। भग० ७१३। ज्वालाभिः पिठरं बुध्नेऽग्निः स्पृशति स प्राप्तः। अग्ने पञ्चभेदः। पिण्ड०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५२ । प्राप्तः-आसण्णीभूतः । ओघ १६८ । ज्ञाता० ६५, १८५ । पत्रं-पक्षसञ्चयम् । उत्त० २६६ ।

पत्तइय-पत्रकितः-सञ्जातकुत्सिकाऽल्पपत्रः । ज्ञाता० ११६ ।

पत्तउर-गुच्छाविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

पत्तकयवर-पत्रकचवरः । जीवा० २८२ ।

पत्तकारोणि-विषयभूतं शब्दादिकं वस्तु प्राप्तं संश्लेषद्वारेणाऽऽत्तादितं कुर्वन्ति परिच्छिन्दन्तीति प्राप्तकारीणि प्राप्यकारीणि । विशे० १२३ ।

पत्तग-पत्रकं-लेखः । बृ० प्र० ३३ आ ।

पत्तच्छज्ज-अष्टषष्ठिकलाऽपानम् । ज्ञाता० ३८ ।

पत्तज्झोडण-पत्रज्झोडनं-तरुप्रान्तपल्लवफलादिपातनम् । प्रश्न० २५ ।

पत्तट्ठ-प्राप्तार्थः-अधिकृते कर्मणि निष्ठां गतः प्रज्ञः । अनु० १७७ । प्राप्तार्थः-लब्धोपदेशः । औप० ६५ ।

पत्तण- । भग० २२६ ।

पत्तणाल-पत्रनालम् । आव० ६२४ ।

पत्तणिज्जासो-पत्रनिर्यासः-धातकीपत्ररसः । जीवा० २६५ ।

पत्तन-यत्-शकटैर्घोटकैर्नौभिर्वा गम्यम् । जीवा० ४० । यत् पुनः शकटैर्घोटकैर्नौभिर्वा गम्यं तत् पत्तनं, यथा भृगुकच्छम् । प्रज्ञा० ४८ । शकटैर्घोटकैर्नौभिर्गम्यं पत्तनम् । जीवा० २७६ । जलस्थलपथयुक्तं रत्ननयोनिभूतं वा । (?)

पत्तपणालं-पत्रप्रणालिका । आव० ६२१ ।

पत्तपुड-पत्राणि-तमालपत्रादीनि । ज्ञाता० २३२ ।

पत्तबेंटिया-त्रीन्द्रियविशेषः । प्रज्ञा० ४२ । त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः । जीवा० ३२ ।

पत्तभूमिया-सार्थकोशद्रव्यादागताः । बृ० तृ० १८६ आ ।

पत्तय-पात्रकम् । औप० १६६ । पत्रकं-तलतालादिसम्बन्धि । अनु० ३४ ।

पत्तरक-प्रतरकम् । प्रश्न० १५६ ।

पत्तल-पक्ष्मवत् । औप० ४१ । पत्रलं-पक्ष्मवत् । जीवा० २७३ । पत्रलः-पत्रवर्ती । औप० ६ ।

पत्तवास-पत्रवर्षः-पर्णवर्षणम् । भग० १६६ ।

पत्तविच्छुया-चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः । जीवा० ३२ । चतुरिन्द्रियविशेषः । प्रज्ञा० ४२ ।

पत्तवुट्ठि-पत्रवृष्टिः । भग० १६६ ।

पत्तवेंट-पत्रवृन्तम् । जीवा० २२८ ।

पत्तसगडिया-पत्राणां शकटिका-गन्त्री पत्रशकटिका । ज्ञाता० ७४ ।

पत्तहार-त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः । जीवा० ३२ ।

पत्तहारग-पत्रहारकः-त्रीन्द्रियजीवविशेषः । उत्त० ६६५ ।

पत्ता-प्राप्ता-देवभवे उपनीता । ज्ञाता० २४८ । प्राप्ता-इदानीमुपनता । ठाणा० २४५ । प्राप्ता । ज्ञाता० १३४ । ऊनोदरतायाश्चतुर्थो भेदः । दश० २७ । ठाणा० १४६ ।

पत्ताबंध-पात्रबन्धः । आव० ७२३ । पात्रबन्धः । ओघ० १६६ । पत्तबंधो-पात्रधारणवस्त्रं चतुरस्रम् । बृ० द्वि० २३७ अ ।

पत्तामोडं-तरुशाखामोटितपत्रम् । निरय० २६ । तरुशाखामोटितपत्रम् । भग० ५१६ । शाखिशाखाशिखामोटितपत्रं देवतार्चनार्थमिति पत्रामोटकम् । अन्त० ११ ।

पत्तालग-पात्रालकम् । आव० २०१ ।

पत्तासव-पत्रासवः-पत्रैः धातकीपत्रैर्निष्पाद्य आसवः । प्रज्ञा० ३६४ । पत्रासवः-पत्ररससारः । जीवा० ३५१ । पत्रनिर्याससारः । जीवा० ३६५ ।

पत्ताहार-पत्राहारकः । निरय० २५ । त्रीन्द्रियविशेषः । प्रज्ञा० ४२ ।

पत्ति-प्रीतिः-साम्ना । उत्त० ६३ ।

पत्तिए-प्रतीतिः प्रयोजनमस्येति प्रातीतिकं-शपथादि । उत्त० ६३ । प्रीतः-प्रीतिविषयीकृतः प्रीतितः प्रत्ययितो वा । भग० १०१ ।

पत्तिएज्जह-प्रतीयाः । ओघ० २१ ।

पत्तिएज्जा-प्रत्ययेत्-प्रतीतिविषयं कुर्यात् । प्रज्ञा० ३६६ ।

पत्तिएण-प्रीत्या साम्नैव । उत्त० ६३ ।

पत्तित-प्रीतिकः-स्वविषये उत्पादितप्रीतिर्वा । ठाणा० ३५६ । प्रतीतः-उपपत्तिभिः । ठाणा० ३५६ ।

पत्तितस्स-उपपत्तिभिरथवा प्रीतिकस्य-स्वविषये उत्पादितप्रीतेः । ठाणा० ३५५ ।

पत्तिय प्रीतिरेव प्रीतिकं स्वार्थिककप्रत्ययोपादानेऽपि रूढेर्नपुंसकतेति, तत्करोमि प्रत्ययं वा करोमीति परिणतः प्रीतिकमेव, प्रत्ययमेव । ठाणा० २३५ । चतुरिन्द्रियविशेषः । प्रज्ञा० ४२ । सञ्जातपत्रः । ज्ञाता० १२६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पत्तियति-प्रत्येति-प्रीतिविषयीकरोति । ठाणा० १७६ । प्रत्येति-प्रतिपद्यते । ठाणा० २४७ ।

पत्तियमाण-प्रीयमाणः-असङ्कशक्तिप्रीत्या वश्यन्तः । जीवा० ४ ।

पत्तियाइत्ता-प्रतीत्य-उक्तरूपमेव विशेषत इत्थमेवेति निश्चित्य । यद्वा संवेगादिजनितफलानुभवलक्षणेन प्रत्ययेन प्रतीतिपथमवतार्य । उत्त० ५७२ : प्रतीत्य-विशेषतः निश्चित्य । उत्त० ५७२ ।

पत्तियाणि-प्रीतिकराणि । व्य० प्र० २४१ ।

पत्तियामि-प्रीतिं प्रत्ययं वा सत्यमिदमित्येवं रूपं तत्र करोमि । भग० १२१ । उपपत्तिभिः प्रत्येमि प्रीतिविषयं वा करोमि । भग० ४६७ । प्रत्ययं करोमि । ज्ञाता० ४७ । प्रतिपद्ये प्रीतिकरणद्वारेण । आव० ७६१ ।

पत्तियाविओ-प्रत्यायितः । दश० १०४ ।

पत्तियावित-प्रत्यायितः । आव० ६२ ।

पत्ती-पात्री । जीवा० २३४ । पात्री । ज० प्र० १०१ ।

पत्तीअ-प्रतीतं-ज्ञातम् । (?) ६३ ।

पत्तुल्लग-भाजनम् । आव० ३४९ ।

पत्तेअ-प्रत्येकं-पृथक् पृथक् । दश० १६ ।

पत्तेग-पत्तेगवणस्सती । नि० चू० प्र० ५६ आ ।

पत्तेय-प्रत्येकं-पृथक् पृथक् । आव० ६१६ । प्रत्येकं-असाधारणम् । सूर्य० २४० ।

पत्तेयणाम-यदुदयात् जीवं जीवं प्रति भिन्नं तत् प्रत्येकनाम । प्रज्ञा० ४७४ ।

पत्तेयबुद्ध-प्रत्येकबुद्धास्तु बाह्यप्रत्ययमपेक्ष्य प्रत्येकं-बाह्यं वृषभादिकं कारणमभिसमीक्ष्य बुद्धः प्रत्येकबुद्धः । प्रज्ञा० १६ । प्रत्येकबुद्धः-पूर्वभवाभ्यस्तोभयकरणः । आव० ५३० । प्रत्येकबुद्धः । आव० ५६८ । प्रत्येकं-बाह्यं वृषभादिकं कारणमभिसमीक्ष्य बुद्धः प्रत्येकबुद्धः । नंदी० १३१ ।

पत्तेयरसा-प्रत्येकरसः-एकमेके प्रतिभिन्नो रसो येषां ते, अतुल्यरसा । ठाणा० २८८ ।

पत्तेया-प्रत्येकजीवः-पत्र - पुष्प - मूल - फल - स्कन्धादीन् प्रति-प्रत्येकः जीवो येषां ते प्रत्येकजीवाः । आ०(?)३०७ ।

पत्तोमोअरिआ-चतुर्विंशतेः कवलानां द्वात्रिंशद् द्वितीयार्द्धस्य मध्यभागं प्राप्याच्चतुर्विंशत्या कवलैः प्राप्तावमोदरिका, अथवा प्राप्तेव प्राप्ता द्वात्रिंशतस्त्रयाणां भागानां प्राप्तत्वाच्चतुर्थभागस्य चाप्राप्तत्वादिति । ओप० ३८ ।

पत्तोव-पत्रोपेतवृक्षः । ठाणा० ११३ ।

पत्थंगसत्थयं-सत्थकोस्स भेओ । नि० द्वि० १८ आ ।

पत्थ-पथ्यं-पथि-मोक्षमार्गे हितं, क्षपकश्रेण्यां पूर्वोक्तं गुणत्रयम् । सूत्र० १६८ । सामान्येन पथ्यम् । भग० ५४३ । पथ्यं-रोगोपशमहेतुः । भग० ६७२ । पथ्यं-नीरोगहेतुः । जीवा० ३५५ । पथ्यं-दुःखत्राणम् । भग० १६६ । प्रस्थं-चतुःकुड्यमानम् । दश० १३४ । पथ्यं-अमृतं-मृष्टं वा । आव० ५६५ । कुलवो । नि० चू० तृ० ५५ अ । पथ्यं-आनन्दकारणम् । भग० ६७२ । पथ्यं-आरोग्यकरम् । ज्ञाता० १७५ । प्रस्थः-कुडवचतुष्टयप्रमाणः । अनु० १५१ । चत्वारः कुडवः प्रस्थः-माणकसमानं माप्यम् । ज० प्र० २४४ । प्रस्थः-मागधप्रस्थः-चतुसेतिकाप्रमाणः । ओघ० २१५ । प्रस्थः । आव० ३४२ । प्रस्थः । उत्त० १४६ ।

पत्थए-प्रार्थयते-सेवते । दश० २०५ । भग० ३१३ ।

पत्थग-प्रस्थकः-मागधदेशप्रसिद्धो धान्यमानविशेषः । अनु० २२३ ।

पत्थड-प्रस्तटः-प्रस्तारः । ज० प्र० ४६ । प्रस्तटः-प्रतरः । ज० प्र० २६८ । प्रस्तटः-प्रस्तरः । प्रज्ञा० ६६ । प्रस्तटः-वेश्मभूमिकाकल्पः । जीवा० ६० । प्रस्तरः-प्रतरः । जीवा० १७५ । प्रस्तटः-रचनाविशेषवानु समूहः । ठाणा० १७९ । प्रस्तटः-प्रतरः । सम० १३६ ।

पत्थडोदग-प्रस्तटोदकः-प्रस्तटाकारतया स्थितमुदकं यस्य सः । सर्वतः समोदकः । जीवा० ३२१ ।

पत्थडोदय-प्रसृतोदकः समजलः । भग० २८२ ।

पत्थणय-प्रार्थनं-परं प्रतीष्टार्थयाञ्चा । भग० ५७३ ।

पत्थणिज्जे-प्रार्थनीयः-बाधितुमनभिलषणीयः । उत्त० ५६० ।

पत्थति-प्राथयति-वाचते । ओप० १४ ।

पत्थय-प्रस्थकः-काष्ठघटितो धान्यमानविशेषः । विशे० ८६६ ।

पत्थयण-पथ्यदनं-शम्बलम् । ज्ञाता० १६३ । पथ्यदनम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आव० ८१३ ।

पत्थयत्ति- । ज्ञाता० १६६ ।

पत्थर-प्रस्तारः-प्रायश्चित्तस्य रचनाविशेषः । ठाणा० ३७१ । प्रस्तरः । प्रश्न० ५८ । प्रस्तरः-पाषाणः । बृ० प्र० १५३ ।

पत्थरिज्जइ-प्रस्तीर्यत । आव० ६३१ ।

पत्थल्लं- । ओघ० १९२ ।

पत्थवम्मि-प्रस्तावे । पउ० ६७, ५ ।

पत्था-प्रस्था-अवस्थितिः । निरय० २५ । प्रस्था-अवस्थितिः । भग० ५१९ ।

पत्थाण-प्रस्थानः-परलोकसाधनमार्गः । निरय० २६ । प्रस्थानं-यात्रा । प्रश्न० ४२ । प्रस्थानं-परलोकसाधनमार्गः । भग० ५२० ।

पत्थार-एकापराधे तज्जातीयानां दंडः । बृ० द्वि० ८४ अ । प्रस्तरः-कटः । बृ० द्वि० १४६ अ । प्रायश्चित्तरचनाविशेषः, ज्योतिष्कच्छन्दोगणितप्रायश्चित्तभेदात् । प्रस्तारो नाम विरचना स्थापना इत्यर्थः । बृ० तृ० २२२ अ । प्रस्तारो-विनाशः । बृ० द्वि० ४४ आ । प्रस्तारः-विस्तारः । नि० चू० प्र० ७१ अ । प्रस्तारः-विनाशः । पिण्ड० १४५ । नाशः । पिण्ड० १४३ ।

पत्थारदोस-प्रस्तारदोषः-कुलगणसंघविनाशलक्षणः । बृ० तृ० ५७ अ ।

पत्थारपसंगो-प्रसूरणं प्रस्तारणं प्रस्तारः प्रस्तारे प्रसङ्ग उत्तरोत्तरदुःखसंभवः । नि० चू० प्र० १९६ आ ।

पत्थारेज्ज-विस्तरेण विनाशं कुर्यात् । नि० चू० प्र० ३०१ आ ।

पत्थावाय-पथ्या-वनस्पत्यादिहिता वायवः । भग० २१२ ।

पत्थिए-प्रार्थितः-लब्धुं प्रार्थितः । भग० ४६३ । प्रार्थितः-अभिलाषात्मकः । भग० ११५ । प्रार्थितः । विपा० ३८ ।

पत्थिका-बृहत्पिहिका । ओघ० १६७ ।

पत्थिय-प्रार्थितः-प्रार्थनाविषयः-अभिलाषात्मकः । जं० प्र० २०३ । प्रार्थितः-अभिलाषात्मकः । जीवा० २४२ । प्रार्थितः-अभिलषितः । ज्ञाता० ४१ । प्रस्थितः-प्रवृत्तः । निरय० २६ ।

पत्थिया-प्रोषिता । गणि० ।

पत्थियापिडयं-वंशमयभाजनविशेषः । विपा० ५८ ।

पत्थेइ-प्रार्थनं-वाचा मह्यं देहीति याचनम् । उत्त० ५८७ ।

पत्थेज्जा-प्रार्थयेत्-अनुमन्येत गृहणीयादिति । सूत्र० १८४ ।

पत्थोइ-प्रस्तोत्री-प्रस्ताविका प्रवर्तिका । प्रश्न० ४२ ।

पत्रकं-कुम्मम् । आव० १३२ ।

पत्रलेखनादि- । आव० २६० ।

पथ-पन्थाः । आव० १०८ ।

पथि-स्वपरसमयरूपः । ठाणा० २४१ ।

पथियायि-अप्रमत्तः । ठाणा० २४१ ।

पद-पद्यतेऽनेनेति पदं । आव० ३७९ । आव० ६८ । पदं-विभागः । ज० प्र० २०७ । पदं-यात्रार्थोपलब्धिः तत्पदम् । सम० ३६, १०८ । पदं-पद्यतेऽनेनेति पदं-सूत्रं पदविभागेनोच्चारणाद्वा ससन्धीनि पदानि अत्रेति पदव्याख्यातो भेदः । उत्त० १८ । पदं-स्थानान्तरम् । ओघ० १६७ । प्रकरणमर्थाधिकारश्च । प्रज्ञा० ६ ।

पदकारा-कम्मजुंगिता । नि० द्वि० ४३ आ ।

पदत्त-प्रदतः-गुरुणोपदिष्टः । ज्ञाता० ११३ ।

पदत्थ-पदार्थदोषः-यत्र वस्तुपर्यायवाचिनः पदस्यार्थान्तर परिकल्पनाऽऽश्रीयते, एवंभूतः सूत्रदोषविशेषः । आव० ३७४ ।

पदबद्ध-गेयपदैर्निबद्धम् । ठाणा० ३९६ । गेयपदैर्बद्धं विशिष्टविरचनया रचितम् । अनु० १३२ ।

पदभङ्ग-पश्चाच्चतुष्पदप्रचारादिद्वारेण । प्रश्न० ५८ ।

पदमग्ग-पदानां मार्गः पदमार्गः-सोवाणा । नि० चू० प्र० ११९ आ ।

पदमग्गविहि-पदमार्गप्रचारम् । ज्ञाता० २४० ।

पदरंग-प्रतरकं-भोजनविधिः । आव० ८५९ ।

पदविभागसामाचारी-कल्पव्यवहारः । ओघ० १ । सामाचार्या तृतीयो भेदः । व्य० प्र० १९ आ ।

पदविभागात्मिका-सामाचारभेदः । उत्त० ५४७ ।

पदसमं-यद्गीतपदं-नाभिकादिकं यत्र स्वरे अनुपाति भवति तत् तत्रैव यत्र गीते गीयते तत् पदसमम् । अनु० ११२ ।

पदा-पदाः-संयमस्थाः । प्रश्न० ६० ।

पदानुसारिबुद्धि-ये गुरुमुखादेकसूत्रपदमनुसृत्य शेषं श्रुत-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मपि भूयस्तरपदनिकुरम्बमवगाहन्ते ते पदानुसारिबुद्धयः । बृ० प्र० १६३ आ । एकमपि सूत्रपदमवधार्यं शेषमश्रुतमपि तदवस्थमेव श्रुतमवगाहतेसा पदानु सारिणी । प्रज्ञा० ४२४ ।

पदानुसारिता-ऋद्धिविशेषः । ठाणा० ३३२ ।

पदार्थ-मुनिर्गुणो वा । आव० ७६० । कारकविषयः, समासविषयस्तद्धितविषयो निरुक्तिविषयश्च । आव० ४५५ ।

पदार्थदोषः-यत्र वस्तुनि पर्यायोऽपि सन् पदार्थान्तरत्वेन कल्पते । अनु० २६२ ।

पदिण्णा-प्रदत्तवती । आव० ५३८ ।

पदित्त-प्रदीप्तः । आचा० १५२ ।

पदुग्गाणि-प्रदुर्गाणि-कुड्यप्राकारादीनि । आचा० ४११ ।

पदुट्ठ-प्रद्विष्टः । ओघ० ६३ ।

पदेस-प्रदेशः-लघुतरः । भग० ४८३ । प्रद्वेषः-मस्तरः । प्रज्ञा० ४३५ । प्रदेशः । सूर्य० १६ ।

पदेसकम्म-प्रदेशकर्म-प्रदेशा एव-पुद्गला एव यस्य वेद्यन्ते न यथा बद्धो रसस्तत्प्रदेशमात्रतया वेद्यं कर्म प्रदेशकर्म । ठाणा० ६७ ।

पद्धतिः-राजिः । प्रश्न० ८३ ।

पद्म-जलजम् । जीवा० १३६ । दशरथसुतो रामापरनाम बलदेवः । प्रश्न० ८७ । महाह्रदविशेषः । प्रश्न० ९६ ।

पद्मनाभ-द्रव्यजिनः । जं० प्र० १३ । भावीजिनः । जीवा० ३ । अमरकङ्काधिपतिः । प्रश्न० ८७ । श्रुतमधिकृत्य कामकथायां राजा । दश० १० ।

पद्मनालः-मृणालम् । जीवा० १२३ ।

पद्मपक्ष्म-केशरम् । भग० १२ ।

पद्मपत्र-नाट्यविशेषः । जं० प्र० ४१४ ।

पद्मराग-मणिभेदः । जीवा० २३ । मणिभेदविशेषः । प्रज्ञा० २७ ।

पद्मराज-धातकीखण्डभरतक्षेत्रापरकङ्काराजधानीनिवासिराजा । ठाणा० ५२४ ।

पद्मलता-नाट्यविशेषः । जं०प्र० ४१४ ।

पद्मलता-प्रविभक्त्यशोकलता-प्रविभक्ति-चम्पकलता-प्रविभक्ति-चूतलताप्रविभक्ति-वनलताप्रविभक्ति वा-सन्तीलता-प्रविभक्ति-मुक्तलताप्रविभक्तिश्यामलता-प्रविभक्त्यभिनयात्मको लताप्रविभक्तिनामा-एकविंशतितमो नाट्यविधिः । जीवा० २४७ ।

पद्मलेश्या-पद्मगर्भवर्णानि यानि द्रव्याणि पीतानीत्यर्थः तत्साचिव्याज्जाता । ठाणा० ३२ ।

पद्महृदः-ह्रदविशेषः । आचा० २२० ।

पद्मा-इन्द्रस्य प्रथमाग्रमहिषी । जं० प्र० १५९ ।

पद्माकार-खातविशेषः । नंदी० १६४ ।

पद्मावती-अरिष्टनगराधिपते राममातुलस्य हिरण्यनाभदुहिता । प्रश्न० ८८ ।

पध-उष्णजलतैलादि । प्रश्न० ५८ । छन्दो बद्धं । जं०प्र० २५९ ।

पधंसणं-(?) । नि० चू० प्र० १९० अ ।

पधारेइ-प्रधारयति-दुष्टं सङ्कल्पयति । जं० प्र० २४८ ।

पधारेति-प्रधारयति-प्रकर्षेण धारयति-करोति । प्रज्ञा० ४३६ ।

पधाविय-प्रधावितः-वेगितगतिः । प्रश्न० ५० ।

पधाविया-प्रधाविता । आव० २२४ ।

पधोवणा-अप्पणो पादे पुणो पुणो उच्छालना । नि० चू० प्र० १८८ अ ।

पनक-जलरुहविशेषः । जीवा० २६ । जलरुहविशेषः । प्रज्ञा० ३१ । पनकः-गोमयाश्रितो जीवविशेषः । आचा० ५५ ।

पनकसूक्ष्मम्- । ठाणा० ४२८ (?) ।

पनकादयः-अनन्तजीविकाजीवाः । ठाणा० १२२ ।

पनगो-साङ्कुरोऽनंकुरो वाऽनन्तकायः पञ्चवर्णः । बृ०तृ०(?)।

पन्थकसाधु-शैलकाचार्यस्थिरीकारकः । सम० ११८ ।

पन्न-प्रज्ञस्येदं प्राज्ञं-गीतार्थेनोपात्तम् । सूत्र० ३०१ । प्रकृष्टं ज्ञानं प्रज्ञा-सूक्ष्मार्थविवेचकत्वम् । ठाण० १८३ ।

पन्नकतिल-दुर्गंधितिलः । व्य० प्र० १५८ आ ।

पन्नगभूत-पन्नगभूतः-सर्वकल्पेन आत्मना करण्यभूतः । ज्ञाता० १९७ ।

पन्नति-प्रज्ञप्तिः-स्वसमयपरसमयप्ररूपणा । व्य० प्र० २३५ अ ।

पन्नत्तं-प्रज्ञप्तं-उपादेयतया प्रकाशितम् । ज्ञाता० ३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रज्ञप्तं-तीर्थंकरनामकर्मोदयवर्तितया प्रायः कृतार्थेनाऽपि परोपकाराय प्रकाशितम् । सम० ५ । प्रज्ञप्तं-प्ररूपितम् । दश० २५५ । प्रज्ञप्तः-देशितः । प्रज्ञा० ३९९ । प्रज्ञप्तं-प्ररूपितं तीर्थंकरगणधरैः । प्रज्ञा-बुद्धिः तया आप्तं-आप्तं प्रज्ञाप्तम् । प्राज्ञात्-तीर्थंकरादाप्तं प्रज्ञाप्तं गणधरैरिति । प्राज्ञैः-गणधरैराप्तं प्राज्ञाप्तम् । ठाणा० ६५ ।

पन्नत्ति-प्रज्ञाप्यन्ते प्ररूप्यन्ते भगवता सुधर्मास्वामिना जम्बूनामानमभियस्याम् । प्रज्ञायाः-तद्धेतुभूतबोधस्य व्याख्यासु र्वा प्रज्ञाया आप्तिः-प्राप्तिः आप्तिर्वा-आदानं यस्याः सकाशादसौ प्रज्ञाप्तिः प्रज्ञाप्तिर्वा । प्रज्ञाद्वा-भगवतः सकाशादाप्तिरात्तिर्वा गणधरस्य यस्याः सा तथा । प्रज्ञाप्यन्ते-प्ररूप्यन्ते प्रबोध्यन्ते वा यस्याम् । प्रज्ञप्तिः-अर्थप्रज्ञप्तिः-अर्थप्ररूपणा प्रज्ञप्तिः-प्रज्ञाप्तिः । भग० २ । प्रज्ञप्तिः-संशयापन्नस्य श्रोतुमंधुरवचनैः प्रज्ञापनम् । ठाणा० २११ ।

पन्नत्तिअवखेय-संशयापन्नस्य श्रोतुमंधुरवचनैः प्रज्ञापनम् । ठाणा० २११ ।

पन्नत्तिधर-प्रज्ञप्तिधरः-भगवतीवेत्ता । आव० ५३२ ।

पन्नत्ती-प्रज्ञप्तिः-एतदभिधाना काचिद्विद्या । सूय० ३०३ । प्रज्ञप्ती-प्रज्ञापना । बृ० प्र० १६० आ । प्रज्ञप्तिः-संशयापन्नस्य मधुरवचनैः प्रज्ञापना । दश० ११० । स्वसमयपरसमयप्ररूपणा । व्य० प्र० २३५ ।

पन्नत्ते एगा-प्रज्ञप्ते-प्ररूपिते सत्यका गर्हा भवति, गर्हाया भेदः । ठाणा० २१५ ।

पन्नव-प्रज्ञावान् प्राज्ञो-बुद्धिमान् । दश० २१३ ।

पन्नवग-प्रज्ञापयतीति प्रज्ञापकः-मूलकर्त्ता । दश० ११४ । प्रज्ञापकः-गुरु । नंदा० १७९ ।

पन्नवगदिसा-प्रज्ञापकस्य-आचार्यादेर्दिक् प्रज्ञापकदिक्-पन्नवगदिसा । ठाणा० १३३ ।

पन्नवगपुव्व-प्रज्ञापकपूर्वकं-प्रज्ञापनं(कं) प्रतीत्य पूर्वा दिक् यदभिमुख एवासौ सैव पूर्वा । दश० ८५ ।

पन्नवणा-प्रज्ञापनाविषयं प्रश्नमधिकृत्य प्रवृत्तत्वात्, प्रज्ञापनायाः प्रथमं पद प्रज्ञापना । प्रज्ञा० ६ । प्रज्ञापना-प्ररूपणा । प्रज्ञा० ५०९ । यथावस्थितजीवादिपदार्थज्ञापनात् प्रज्ञापना । अनु० ३८ । प्रज्ञापना-भेदाद्यभिधानम् । ठाणा० १५९ । प्रज्ञापना-विशेषतः कथनम् । ज्ञाता० ४९ ।

पन्नवणाहि- । ज्ञाता० १०१ ।

पन्नवणी-प्रज्ञापनी-असत्यामृषाभाषाभेदः । दश० २१० ।

पन्नवयं-प्रज्ञापयतीति प्रज्ञापकः-गुरुः । अनु० १७७ ।

पन्नविज्जंति-प्रज्ञाप्यन्ते-नामादिभेदाभिधानेन प्ररूप्यन्ते, नामादिस्वरूपकथनेन प्ररूप्यन्ते । सम० १०९ । प्रज्ञाप्यन्ते नामादिभेदोपन्यासेन । नंदी० २१२ ।

पन्नवित्ता-प्रज्ञाप्य-बोधयित्वा । ठाणा० ११९ ।

पन्नवियं-प्रज्ञापितं-सामान्यतो विनेयेभ्यः कथितम् । प्रश्न० ११३ ।

पन्नवेंति-प्रज्ञापयन्ति-उत्पत्तिभिर्बोधयन्ति । ठाणा० १३६ ।

पन्नवेइ-प्रज्ञापयति-जीवाजीवादीन् पदार्थान् बोधयति । ठाणा० ५०३ । प्रज्ञापयन्ति-प्रतिबोधयति शिष्यीकरोति । भग० ७११ ।

पन्नवेज्ज-प्रज्ञापयेत्-भेदभणनतो बोधयेद् । भग० ४३६ ।

पन्नवेति- । भग० ११ (?) ।

पन्ना-प्रज्ञा-बुद्धिरीप्सितार्थसम्पादनविषया कुटुम्बकाभिबुद्धिविषया वा तद्योगाद्दशापि प्रज्ञा प्रकर्षेण जानातीति प्रज्ञा दशदशासु पञ्चमी दशा । ठाणा० ५२९ । प्रज्ञा-सूक्ष्मार्थविषया मतिः । भग० ७६३ । दशदशायां पञ्चमी दशा । नि० चू० द्वि० २८ आ । प्रज्ञा-जन्तो पञ्चमीदशा । दश० ८ । प्रज्ञापनं प्रज्ञा-विशिष्टक्षयोपशमजन्या प्रभूतवस्तुगतयथाऽवस्थितधर्मालोचनरूपा संवित् । नंदी० १८७ ।

पन्नाण-प्रज्ञानं-श्रुतज्ञानम् । आचा० २४९ । एवम्भूतश्चासौ-प्रकर्षेण ज्ञायते ज्ञेयं येन तद् प्रज्ञानम् । आचा० १५४ ।

पन्नाणम्-प्रज्ञानवान्-ज्ञानी । आचा० २४९ ।

पन्नाणमंता-प्रकर्षेण ज्ञायतेऽनेनेति प्रज्ञानं तद्वता सश्रुतिका। आचा० ३३३ ।

पन्नायंति-प्रज्ञायेते-अवबुध्येते । भग० ९१ ।

पन्नुन्न-वलकलतनुनिष्पन्नम् । आचा० ३९४ ।

पप्प-प्राप्य-विज्ञाय । ओघ० ३७ । प्राप्य-विज्ञाय । ओघ० ३७ । प्राप्य-अभ्युपगम्य आश्रित्य । दश० ७० । प्राप्यं-परिहर्तुं शक्यम् । बृ० तृ० २६ अ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पप्पडग–समसरियाए उभयतडेसु पाणिएण जा रेल्लिया भूमी सा तंमि पाणिए ओहट्टमाणे तरिया बद्धा होउं उण्हेण छित्ता पप्पडी भवति । नि० चू० प्र० ३६ आ ।

पप्पडमोअय–पर्यटमोदकः–खाद्यविशेषः । जं० प्र० ११८ ।

पप्पडमोदय–पर्यटमोदकः । प्रज्ञा० ३६४ ।

पप्पडमोयय–पर्यटमोदकः । जीवा० २७८ ।

पप्पडिय–पर्यटिका शालिपर्पटिका । पिण्ड० १५४ ।

पप्पु–उप्लुतं–व्याप्तम् । अनु० १३६ ।

पप्पुय–प्प्लुतः । ज्ञाता० १३२ । प्प्लुतं–प्लुतम् । प्रश्न० १६ ।

पप्पोत्ति–प्राप्नोति । उत्त० ४०१ ।

पप्फुत–प्प्लुतः । अन्त० ७ ।

पप्फुय–प्प्लुतः–प्रवर्त्तितानन्दः । भग० ४६० ।

पप्फुल्लं–प्रफुल्लं–विकसितम् । जीवा० १७६ ।

पप्फोडणं–प्रस्फोटनं–प्रकर्षेण धूननम् । ओघ० ११० । प्रस्फोटनं–आस्फोटनम् । प्रश्न० १५६ । प्रस्फोटनं–आस्फोटनम् । प्रश्न० ११२ ।

पप्फोडणा–प्रस्फोटना–प्रकर्षेण रेणुगुण्डितस्येव वस्त्रस्य झाटना । उत्त० ५४१ । प्रस्फोटना–प्रकर्षेण धूननम् । ठाणा० ३६१ । उक्खोडगप्पदाणं पप्फोडणा । नि० चू० प्र० १८१ अ ।

पप्फोडे–प्रस्फाटयेत्–प्रस्फोटनां कुर्यात् । उत्त० ५४० । प्रस्फोटयेत् । ओघ० १०८ ।

पप्फोडेमाणे-प्रस्फोटयित्वा (?) आभिग्रहिकेनान्येन वा साधुना स्वकीयरजोहरणेन उणिकपादपोच्छ्नेन वा प्रस्फोटनं कारयन् झाटयन्नित्यर्थः । ठाणा० ३२६ ।

पफुसियपविरलं–विरलशीकरं–फुसारम् । आव० १२२ ।

पबंध–प्रबन्धः–विकथादिषु वाऽविच्छेदेन प्रवर्त्तनम् । उत्त० ३४६ । प्रबन्धं–अविच्छेदात्मकम् । उत्त० ३४६ ।

पबाह–प्रबाधा–प्रकृष्टा बाधा । ज्ञाता० ६७ ।

पबुद्धा–प्रबुद्धा–उत्फुल्ला । ज० प्र० ३३६ ।

पब्भार–प्राग्भारः–अग्रतो मुखमवनतत्त्वम् । भग० १७४ । प्राग्भारः–ईषदवनतः । भग० २३८ । प्राग्भारः–जन्तोरष्टमीदशा । दश० ८ । प्राग्भारः–ईषदवनतपर्वतभागः । ज्ञाता० ६३ । प्राग्भारः–ईषत्कुब्जः । प्रज्ञा० ७१ । प्राग्भारः–पुद्गलनिचयः । ठाणा० १२५ । प्राग्भारः–उच्छ्रयादिलक्षणः । ठाणा० २५१ । प्राग्भारं–यत्पर्वतस्योपरि हस्तिकुम्भाकृति कुब्जं विनिर्गतं तत्प्राग्भारम् । नंदी० २२८ । प्राग्भारं–ईषदवनतम् । ठाणा० ५२० । ज्ञाता० ६६ । प्राग्भारः–ईषदवनतः । ज्ञाता० ६६ ।

पब्भारगती–या तु द्रव्यान्तराक्रान्तस्य सा प्राग्भारगतिर्यथा नावादेरधोगतिः । ठाणा० ४३४ ।

पब्भारा–प्राग्भाराः–ईषन्नताः पर्वताः । अनु० १७१ । प्राग्भारं–ईषदवनतमुच्यते तदेवंभूतं गात्रं यस्यां भवति सा प्राग्भारा–अष्टमीदशा । ठाणा० ५२० । दशदशायाममष्टमीदशा । नि० चू० द्वि० २८ आ ।

पभंकर–चतुर्थलोकान्तिकविमानः । ठाणा० ४१२ । प्रभङ्करं-चतुर्थलोकान्तिकविमानम् । भग० २७१ । प्रभङ्करः–एकोनसप्ततीतममहाग्रहः । जं०प्र० ५३५ । एकोनसप्ततितममहाग्रहः । ठाणा० ७६ । प्रभङ्करः–त्रीणिसागरोपमस्थिकः–देवः । सम० ८ । अष्टसागरोपस्थिकः देवः । सम० १४ ।

पभंकरा–चन्द्रस्य चतुर्थी अग्रमहीषी । ठाणा० २०४ । धर्मकथाया अष्टमवर्गस्य चतुर्थमध्ययनम् । ज्ञाता० २५२ । धर्मकथायाः सप्तमवर्गस्य चतुर्थमध्ययनम् । ज्ञाता० २५२ । सूर्यस्य चतुर्थ्यग्रमहिषी । ठाणा० २०४ । सूर्यस्य चतुर्थ्यऽग्रमहिषी । भग० ५०५ । प्रभङ्करा–चन्द्रस्य ज्योतिषेन्द्रस्य तृतीयाऽग्रमहिषी । जीवा० ३८४ । प्रभङ्करा–वच्छवतीविजस्य राजधानी । जं० प्र० ३५२ । प्रभङ्करा–चन्द्रस्य चतुर्थी अग्रमहिषी । जं० प्र० ५३२ । ठाणा० ८० ।

पभंगुर–प्रभङ्गुरः स्वत एव भङ्गशीलः । आचा० २३८ ।

पभंजण–प्रभञ्जनः–उत्तरनिकाये नवम इन्द्रः । भग० १५७ । वातकुमारेन्द्रः । ठाणा० ८५ । चतुर्थो वायुकुमारः । ठाणा० १६८ । चतुर्थो महर्द्धिकदेवः । ठाणा० २२६ । प्रभञ्जनः–वायुकुमाराणामधिपतिः । प्रज्ञा० ६४ । प्रभञ्जनः । जीवा० ३०६ ।

पभ–हरिकान्तस्य प्रथमो लोकपालः । ठाणा० १६७ ।

पभकंते–हरिकेतस्य तृतीयो लोकपालः । ठाणा० १६७ ।

पभणियं–प्रभणितं–भणनारम्भः । विपा० ७६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पभयाल-प्रभवालः तरुविशेषः । जं० प्र० ९८ ।

पभव-प्रभवः-उत्पत्तिस्थानम् । आचा० १३ । प्रभवः-उत्पादः । प्रज्ञा० २५६ । प्रभवः-प्रकृष्टं भवनं प्रभवः-प्रौढतापर्यायः । विशे० ८९० । सत्पुरुषः, कल्पविधिनिषेवकः । बृ० प्र० २३० । नि० चू० द्वि० ३९ आ । नि० चू० तृ० १६ अ । चौरविशेषः । व्य० प्र० २४० ।

पभा-प्रभा-यानादिदीप्तिः । भग० १३२ । प्रभा-यानादिदीप्तिः । औप० ५० । प्रभा-बाहुल्यम् । जीवा० ८९ । भावनावासगता प्रभा । जीवा० १६२ । प्रभा-आकारः । जं० प्र० १०० । प्रभा-स्वभावः । प्रज्ञा० ४३ । प्रभा-प्रकाशः । सूर्य० ७८ । प्रभा भावनावासगता । प्रज्ञा० ८८ । प्रभा-आकारः । प्रज्ञा० ३६५ । प्रभा-स्वरूपम् । प्रज्ञा० ५३२ । प्रभा-प्रभावः माहात्म्यः । ठाणा० ४२१ । प्रभा-प्रभावः । उपा० २६ । प्रभा-उद्गमनसमये यद् द्युतिस्फुरणम् । ज्ञाता० १७० । प्रभा-चन्द्रादिदीधितः । उत्त० ५६१ ।

पभाइ-प्रभाति । आव० २१८ ।

पभावई-मुनिसुव्रतस्वामिमाता । सम० १५१ । प्रभावति । मल्लिमाता । आव० १६० । बलनरपतिराज्ञी । भग० ५३५ । प्रभावती-उदायनराज्ञी । उत्त० ९६ । प्रभावती-शिक्षायोगदृष्टान्ते हैहयकुलसंभूतवैशालिकचेटकप्रथमा पुत्री । आव० ६७६ ।

पभावणा-प्रभावना-तथा तथा स्वतीर्थोन्नतिहेतुचेष्टासु प्रवर्तमानात्मिका । उत्त० ५६७ । प्रभावना-धर्मकथादिभिस्तीर्थख्यापना । दश० १०३ । प्रभावना-धर्मकथादिभिस्तीर्थप्रख्यापना । प्रज्ञा० ५६ ।

पभावती-प्रभावती-उदायनराजपत्नी । आव० २९८ । उदायनस्य राज्ञी । नि० चू० प्र० ३४६ आ । उदायननरपते राज्ञी । भग० ६१८ । कुम्भकराजपत्निः । ज्ञाता० १२४ । प्रभावती । निरय० ९ ।

पभावेइ-प्रभावयति-प्रकाशयति । उत्त० ५८५ ।

पभासंता-व्याख्यानेन प्रभासमानः । आव० ४४८ ।

पभासंति-प्रभासयन्ति-तथाविधवस्तुदाहकत्वेन प्रभावं लभन्ते । भग० ३२७ ।

पभास-जम्बूभरते तृतीयं तीर्थम् । ठाणा० १२२ । सम० ९३ । द्वाविंशतिसागरोपमस्थितिकः देवः । सम० ४१ । प्रभासं-देवोद्योते तीर्थम् । आव० ७०९ । प्रभासः-एकादशमगणधरः । आव० २४० ।

पभासा-प्रभासा तन्निबन्धनत्वात् अहिंसाया एकोनषष्टितमं नाम । प्रश्न० ९९ ।

पभासेइ-प्रभासयति-अतितापयोगाद्विशेषतोऽपनीतशीतं विधत्ते यथा वा सूक्ष्मतरं वस्तु दृश्यते तथा करोति । भग० ७८ । प्रभासयति-अतितापयोगाद् विशेषतोऽपनीतशीतं करोति । जं० प्र० ४६ ।

पभासेमाण-प्रभासयन्-शोभयन् । औप० ५० । प्रभासयमानः सूक्ष्मवस्तूपदर्शनतः । ठाणा० ४२१ ।

पभु-प्रभु राजा । बृ० प्र० ९० आ ।

पभू-घणितो । नि० चू० द्वि० ४३ अ । राया । वि० चू० प्र० १७४ आ । प्रभुः-सक्तः । भग० १७६ ।

पभूय-प्रभूतं-उद्भूतम् । औप० ४६ ।

पभूयदंसी-प्रभूतं- प्रमादविपाकादिकमतीतानागतवर्त्तमानं च कर्म्मविपाकं द्रष्टुं शीलमस्येति प्रभूतदर्शी । आचा० २१८ ।

पभुंजिओ-प्रभुक्तः-भोक्तुं प्रवृत्तः । बृ० तृ० गा० ६०७१ ।

पमइलदुब्बला-प्रमलितदुर्बला स्नानभोजनत्यागात् । ज्ञाता० ३३ ।

पमज्जणा-प्रमार्जना-रजोहरणादिक्रिया । प्रश्न० १५६ । मुहपोत्तियरयहरणगोच्छगेहिं पमज्जणा । नि० चू० प्र० १८१ अ । बीयकणुगादीणं सकृत् अवणयणे आमज्जणा पुणो पुणो पमज्जणा । पुणो पुणो करेंतस्स पमज्जणा । नि० चू० प्र० १९० अ । प्रमार्जना-रजोहरणादिव्यापाररूपा । प्रश्न० ११२ ।

पमज्जति-रयहरणेण पमज्जणं, पुणो पुणो पमज्जति । नि० चू० प्र० १८७ अ ।

पमज्जित-प्रमृज्यात्-कर्दमादि शोधयेत् । आव० ३३८ ।

पमज्जिय-प्रमृज्यात्-शोधयेत् । आव० ३३८ ।

पमज्जेमान-प्रमार्जयन्-शनैर्लूषयन् । ठाणा० ३२९ ।

पमत्त-प्रमत्तः-पञ्चमनिद्राप्रमादवान् । ठाणा० १६४ । प्रमत्तः-अनुपयुक्तः । उत्त० ४३४ । प्रमत्तः-सुप्तो । आचा० १८३ । प्रमत्तः-प्रमत्तसंयतग्रामः । भूतग्रामस्य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

षष्ठं गुणस्थानम् । आव० ६५० । प्रमत्तः-पराभिमुखः । ओघ० १७६ । प्रमाद्यन्ति स्म-मोहनीयादिकर्मोदयप्रभावतः सञ्ज्वलनकषायनिद्राद्यन्यतमप्रमादयोगतः संयमयोगेषु सीदन्ति स्म प्रमत्तः । प्रज्ञा० ४२४ । प्रमत्तः-कषायादिना प्रमादेन रागद्वेषवशं गतः । दश० ११५ । प्रमत्तः-प्रमादवान् । ज्ञाता० ७६ । प्रमत्तः-असंयतः-परतीर्थिको वा । आचा० १८१ । प्रमत्तः पञ्चविधप्रमादयोगात् । ज्ञाता० १११ ।

पमत्ता-प्रमत्ता विषयैः । आचा० १८३ ।

पमत्तायरिए-प्रमादो-मद्यादिस्तेनाचरितः प्रमादाचरितः । आव० ८३० ।

पमदवणं-प्रमदावनम् । आव० ४२५ ।

पमद्द-प्रमर्दं-नक्षत्रविमानानि विभिद्य मध्ये गमनरूपम् । जं० प्र० ४६१ (!) । प्रमर्दः-चन्द्रेण स्पृश्यमानता । ठाणा० ४४२ । प्रमर्दम् । सूर्य० १३७ ।

पमद्दण-प्रमर्दनं-कठिनस्यापि वस्तुनश्चूर्णनकरणम् । जीवा० १२२ । प्रमर्दनं-कठिनस्यापि वस्तुनश्चूर्णनम् । जं० प्र० ३८८ ।

पमयकम्मं-प्रमदाकर्म्म-कंडनपेषणदलनपचनपरिवेषणादि । बृ० तृ० ६७ अ ।

पमयवण-गृहोद्यानम् । ज्ञाता० १४४ । तेतलिपुरनगरे उद्यानम् । ज्ञाता० १८४ ।

पमया-प्रमदा-स्त्री । प्रश्न० ८३ ।

पमाणंगुल-प्रमाणाङ्गुलं-उत्सेधाङ्गुलाद् सहस्रगुणम् । प्रज्ञा० २६६ । सहस्रगुणितादुत्सेधाङ्गुलप्रमाणाज्जातम् । परमप्रकर्षरूपं प्रमाणं प्रातमङ्गुलं वा । युगादिदेवस्य भरतस्य वा अङ्गुलं वा प्रमाणाङ्गुलम् । अनु० १७१ । प्रमाणाङ्गुलम् । अनु० १५६ ।

पमाण-प्रमाणं-स्वाङ्गुलेनाष्टोत्तरशतोच्छ्रयता । औप० १३ । प्रमाणं-प्रमाणराशिः । सूर्य १५८ । प्रमाणं-नीतिर्बलं च । आव० ४६३ । प्रमाणं-आदेयम् । आव० ५३४ । प्रमाणं-युक्तिः । सूत्र० ३४० । प्रमाणं-आत्माङ्गुलेनाष्टोत्तरशताङ्गुलोच्छ्रयता । प्रश्न० ७४ । प्रमाणं-अन्तरमानम् । जं० प्र० ३२६ । प्रमाणकालः-अद्धाकालविशेषो दिवसादिलक्षणः । आव० २५७ । प्रमीयते-परिच्छिद्यते धान्यद्रव्याद्यनेनेति प्रमाणं अस्तिप्रसृत्यादि, इदं चेदं च स्वरूपमस्य भवतीत्येवं प्रतिनियतस्वरूपतया प्रत्येकं प्रमीयते-परिच्छिद्यते यत्तत्प्रमाणं-यथोक्तमेव, धान्यद्रव्यादेरेव प्रमितिः-परिच्छेदः स्वरूपावगमः प्रमाणम् । अनु० १५२ । प्रमाणं-शास्त्रीय उपक्रमः । आव० ३(?) । प्रमाणं-प्रकृष्टं मानं सूक्ष्ममानमित्यर्थः । भग० २४७ । प्रमाणशब्देन विष्कम्भायामौ । जं० प्र० ३२१ । प्रमाणं-आत्माङ्गुलेनाष्टोत्तरशताङ्गुलोच्छ्रयता । ठाणा० ४६१ । प्रमाणं-भक्तपानाभ्यवहारोपध्यादिमानम् । सम० १०७ । प्रमाणं-वस्तुतत्त्वपरिच्छेदनम् । सम० ११५ । प्रमाणं-स्वाङ्गुलेनाष्टोत्तरशतोच्छ्रयता । ज्ञाता० ११ ।

पमाणकसिणं-द्वयादिपटं चर्म । बृ० द्वि० २२२ आ । अधिकविस्तारायामं वस्त्रम् । बृ० द्वि० २२६ अ ।

पमाणकसिणा-दोमादितलीजिए उवहणाए एसा पमाणतो कसिणा पमाणकसिणा । नि० चू० प्र० १३६ आ ।

पमाणकाल-प्रमाणकालः-अद्धाकालविशेषो दिवसादिलक्षणः । दश० ६ । प्रमाणकालः-अद्धाकालः विशेषभूतो दिवसादिलक्षणः । विशे० ८३७ । प्रमीयते-परिच्छिद्यते येन वर्षशतादि तत् प्रमाणं स चासौ कालश्चेति प्रमाणकालः प्रमाणं वा परिच्छेदनं वर्षादेस्तत्प्रधानस्तदर्थो वा कालः प्रमाणकालः-अद्धाकालस्य विशेषो दिवसादिलक्षणः । भग० ५३३ ।

पमाणत्थो-प्रमाणस्थः-मान्यः । व्य० प्र० २० आ ।

पमाणदोस-द्वात्रिंशत्कवलप्रमाणातिरिक्तमाहारमाहारयतः प्रमाणदोषः । आचा० ३५१ ।

पमाणपत्ता-द्वात्रिंशता कवलैः प्राप्तप्रमाणो भवति साधुर्न्यूनोदरः । औप० ३८ । प्रमाणप्राप्ता । आव० २२७ ।

पमाणप्पत्त-प्रमाणं-मानं तत् परिमाणं-मानं येषां ते तथा प्रमाणप्राप्तः । भग० २६२ ।

पमाणवं पुरिसो-बारसंगुलपमाणाइं समुहाइं णवसमुस्सितो पमाणवं पुरिसो । नि० चू० द्वि० ८५ आ ।

पमाणसंवच्छर-प्रमाणं-परिमाणं दिवसादिनां तेनोपलक्षितो वक्ष्यमाण एव नक्षत्रसंवत्सरादिः प्रमाणसंवत्सरः । ठाणा० ३४४ । युगस्य प्रमाणहेतुः संवत्सरः प्रमाणसंवत्सरः । सूर्य० १५३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पमाणाइक्कंत–प्रमाणातिक्रान्तः–बुभुक्षापिपासामात्रानुचितः ज्ञाता० १११ । प्रमाणातिक्रान्तः–प्रमाणातिक्रान्तः–द्वात्रिंशत्कवललक्षणमतिक्रान्तः । भग० १९२ ।

पमाद–प्रमादः–मद्यविकथादिः । भग० ६१६ । अणाभोगो सहस्सकारो । नि० चू० प्र० ६६ आ ।

पमाय–प्रमादः परिहासविकथादिः कन्दर्पादिः । ठाणा० ४८४ । प्रमादः–तदर्थमेव सर्वारम्भेष्वपि प्रवर्तनम् । असंप्राप्तकामभेदः । दश० १६४ । प्रमादः–विषयक्रीडाभिष्वङ्गरूपः श्रेयस्यनुमात्मकः । आचा० १२० । प्रमादो–विकथारूपोऽस्थगिततैलभाजनधरणादिरूपो वा । उपा० ५। प्रमादोऽज्ञानादि । ठाणा० १३५ । प्रमादः–अज्ञानम् । ओघ० ४७ । प्रमादः–विषयकषायाभिष्वंगरूपः शरीराधिष्ठानः । आचा० १२८ । पमादः–कार्यशैथिल्यम् । आचा० १५० । प्रमत्तत्वं–आभोगशून्यता हिताप्रवृत्तौ । ठाणा० ३६० । प्रमादः–शैथिल्यमाज्ञाऽतिक्रमो वा । ठाणा० ३६१ । प्रमादः–धर्मं प्रत्यनुद्यमात्कमः । उत्त० ३३६ । प्रमादः–अज्ञानम् । ओघ० ४७ ।

पमायइ–प्रमाद्यति–प्रमादं करोति । ३४६ ।

पमायए–प्रमादयेत्–विषयादिप्रमादवशगो भूयात् । आचा० २०४ ।

पमायठाण–प्रमादस्थानं उत्तराध्ययनेषु द्वात्रिंशत्तममध्ययनम् । उत्त० ६ ।

पमायठाणाइं–उत्तराध्ययनस्य द्वात्रिंशत्तममध्ययनम् । सम० ६४ ।

पमायति–प्रमादयति–परित्यजति । आव० ५३४ ।

पमायपर–प्रमादपरः–प्रमादनिष्ठः । आव० ५८८ ।

पमायप्पमाय–प्रमादाप्रमादस्वरूपभेदफलविपाकप्रतिपादकमध्ययनं प्रमादाप्रमादम् । नंदी० २०४ । यस्मादस्मिन्नध्ययने प्रमादोऽप्रमादश्च पञ्चविधो वर्ण्यते तस्मादेतत् प्रमादाप्रमादम् । उत्त० १६१ ।

पमायबहुलो–प्रमादबहुलः । आव० ३३० ।

पमार–प्रमारं–मरणक्रियाप्रारम्भम् । भग० ६६१ । प्रमारो–मूर्च्छाविशेषो मारणस्थानं वा । ठाणा० ३०५ ।

पमुइय–प्रमुदितः–हृष्टः । ज्ञाता० ४० । प्रमुदितः । ज्ञात० १ ।

पमुक्ख–प्रमोक्षः–प्रतिवचनम् । उत्त० ५२४ ।

पमुच्चते–प्रमुच्यते । प्रश्न० ६० ।

पमुह–प्रमुखं, द्वारम् । प्रज्ञा० २८ । पञ्चाशत्तममहाग्रहः । ठाणा० ७६ । प्रमुखः–एकोनपञ्चाशत्तममहाग्रहः । जं० प्र० ५३५ । प्रमुखं–गृहद्वारम् । बृ० द्वि० ६१ अ । प्रमुखं–प्रवेशनिर्गममुखम् । बृ० द्वि० १४८ आ ।

पमेइल–प्रमेदुरः–प्रकर्षेण मेदः सम्पन्नः । दश० २१७ ।

पमेदिल–अतीव मेदो जस्स सो । दश० चू० ११० ।

पमेह–रोगो संततकायियं उभरंतं अच्छति । नि० चू० प्र० ११७ अ ।

पमोअ–प्रमोदः–उत्सवः । जं० प्र० २७६ । प्रमोदः–संयोगजो हर्षः । आव० ७२१ । प्रमोदः प्रमोदोत्पादकत्वात् । अहिंसाया एकत्रिंशत्तमं नाम । प्रश्न० ६६ ।

पमोक्ख–प्रमोक्षं–उत्तरम् । उत्त० १५७ । प्रमोक्षं–उत्तरम् । भग० ११४ । यः प्रकर्षेण मोक्षयति–मोचयतीति प्रमोक्षः–आत्मनो दुःखापगमहेतुः । उत्त० ६२१ । प्रमोक्षः अपगमः । उत्त० ६२१ ।

पमोद–प्रमोदः–महोत्सवः । अन्त० १६ ।

पम्ह–पक्ष्मः–कर्प्पासरुतादि । ठाणा० २०३ । पक्ष्मं–बहुलत्वम् । भग० १२ । नवसागरोपमस्थितिको देवः । सम० १५ । पद्मं–पद्मगर्भः । विपा० ३४ । पक्ष्म–बहुलत्वम् । औप० ८३ । पद्मं–पद्मकेसराणि । सूर्य० ४ । पद्मम् । भग० १२ । पद्मं पक्ष्मकेशरम् । भग० ६२ । अवयवे समुदायोपचारात् पद्मशब्देन पद्मकेसराण्युच्यन्त तद्वद् गौर इति । जं० प्र० १५ । पक्ष्मविजयः । जं० प्र० ३५७ । पक्ष्म । अनु० १७६ ।

पम्हकंत–नवसागरोपसस्थितिको देवः । सम० १५ ।

पम्हकूड–नवसागरोपमस्थितिकदेवः । सम० १५ । पद्मकूटः–नीलवन्तवक्षस्कारपर्वते कूटः । जं० प्र० ३४६ । पक्ष्मकूटः–विद्युत्प्रभवक्षस्कारे कूटः । ज० प्र० ३५५ ।

पम्हगंध–पद्मसमगन्धः, भारते वर्षे मनुष्यभेदः । भग० भग० २७६ । पद्मगन्धाः । जं० प्र० १२८ ।

पम्हगावई–पक्ष्मकावती विजयः । ज० प्र० ३५७ ।

पम्हगावती– । ठाणा० ८० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पम्हज्झय–नवसागरोपमस्थितिकदेवानां विमानम् । सम० १५ ।

पम्हट्ठा–विस्मृता । बृ० नृ० १४ अ ।

पम्हट्ठपम–नवसागरोपमस्थितिकदेवानां विमानम् । सम० १५ ।

पम्हलसुकुमाला–पक्ष्मवती सुकुमालाचेत्यर्थः । भग०४७७ । पक्ष्मला च सा सुकुमारा च पक्ष्मलसुकुमारा । जीवा० २५३ ।

पम्हला–पक्ष्मला, पक्ष्मवती । ज० प्र० २७५ ।

पम्हलेस–नवसागरोपमस्थितिकदेवानां विमानम् । सम० १५ ।

पम्हवण्णं–नवसागरोपमस्थितिकादेवानां विमानम् । सम० १५ ।

पम्हसिग–नवसागरोपमस्थितिकादेवानां विमानम् । सम० १५ ।

पम्हसिट्ठ–नवसागरोपमस्थितिकदेवानां विमानम् । सम० १५ ।

पम्हा– । ठाणा० ८० ।

पम्हावई–पद्मावती रम्यविजये नगरी । ज० प्र० ३५२ । ठाणा० ८० ।

पम्हावती–सीतानदीदक्षिणे वक्षस्कारः । ठाणा० ३२६ ८० ।

पम्हावत्त–नवसागरोपमस्थितिकदेवानां विमानम् । सम० १५ ।

पम्हुट्ठ–विस्मृतम् । ठाणा० ४०३ । विस्मृतम् । प्रश्न० १२४ । प्रमृष्ठः । ओघ० ९७ । विस्मृत्या त्यक्तम् । बृ० द्वि० २४ अ । विस्मृतम् । ज्ञाता० १४८ । विस्सरियं । नि० चू० प्र० २१३ अ । पडियं, वीसरियं । नि० चू० प्र० २७४ आ । विस्मृतम् । बृ० द्वि० २०९ अ । विस्मृतम् । बृ० द्वि० २४ अ । विस्मृतम् । व्य० प्र० ६३ अ ।

पम्हुट्ठदिसाभाए–विस्मृतदिग्भागः । ज्ञाता० २४० ।

पम्हुत्तरवडिंसगं–नवसागरोपमस्थितिकदेवानां विमानम् । सम० १५ ।

पम्हुसइ–विस्मरति । आव० ३०७ ।

पम्हुसाविया–विस्मारिता । उत्त० ८७ ।

पयंग–पतङ्गः–चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः । जीवा० ३२ । पतङ्ग–व्यन्तरनिकायानामुपरिवर्त्तिनो व्यन्तरजातिविशेषाः । प्रश्न० ६९ । चतुरिन्द्रियविशेषः । प्रज्ञा० ४२ । पतङ्गः–वाणमन्तरविशेषः । प्रज्ञा० ९५ । पतङ्गः–चतुरिन्द्रियजीवभेदः । उत्त० ६९६ ।

पयंगवाहिया–भिक्षाविशेषः । नि० चू० तृ० १२ अ ।

पयंगविही–भिक्षाचर्यायां भेदः । उत्त० ६०५ ।

पयंड–प्रकाण्डः–उत्कटः । प्रचण्डो दुःसाध्यसाधकत्वात् । सम० १५७ । प्रकाण्डः–अत्यर्थम् । सम० १२७ । प्रकाण्डः–प्रचण्डः । प्रश्न० ७४ । प्रचण्डः–प्रकाण्डो वा दुःसाध्यसाधकत्वात् । प्रश्न० ७४ ।

पयंडा–प्रचण्डा–शीघ्रं शरीरव्यापिका, घोरा प्रचण्डपरिवर्त्तितत्वात् । प्रश्न० १७ ।

पयंडेमाण–प्रचण्डयन्–आज्ञाप्रधानः सन्नवश्यं कर्तव्यतया निरूपयन् । ज्ञीवा० १६६ ।

पय–पदं–प्रकरणम् । भग० १०७ । पदम् । ओघ० ९८ । पदम् । आव० ७९३ । पदं–निमित्तकारणम् । आचा० १९७ । पदं–स्थानम् । आव० ८३९ । पदं–पद्यते गम्यते गुणैर्ज्ञानादिभिरिति । ज्ञानादिगुणस्थानम् । उत्त० ५८ । पदं–पादविक्षेपरूपम्, स्थानं च । उत्त० २१७ । पदं–निराकाङ्क्षतयाऽर्थगमकत्वेन वाक्यमेव । उत्त० ५७९ । अस्थपरिछेयवायगं पयं । नि० चू० प्र० २ अ । पदं–आवश्यकपदाभिधेयम् । अनु० २० । पदं–धूलीबहुलभूमिसमुत्थचरणप्रतिबिम्बम् । पिण्ड० २९ । पदं–मुष्टिस्थानम् । भग० १९४ । सुप्रसिद्धं समयप्रसिद्धं वा सङ्ख्येयम् । अनु० २३४ ।

पयइसभाव–प्रकृतिस्वभावः । आव० ३५१ ।

पयउ–परः । तं० ।

पयए–पदगः–दाक्षिणात्यपदगतव्यन्तराणामिन्द्रः । प्रज्ञा० ९८ ।

पयक्खिणाणुकुलं– । ज्ञाता० २२८ ।

पयगवई–पदगपतिः–औदीच्यपदगतव्यन्तराणामिन्द्रः । प्रज्ञा० ९८ ।

पयग्ग–पदाग्रं–पदपरिमाणम् । सम० ३६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पयच्छामो-भवते एव दद्मः, सामान्यतः प्रयच्छामः प्रकर्षणेति-विशेषः । भग० ४७६ ।

पयट्ट-प्रवृत्तः । आव० ३८५ । ओघ० १४२ ।

पयट्टओ-प्रकर्षकः-प्रवर्तकः । प्रश्न० ५ ।

पयट्टाविओ-प्रवर्त्तितः । आव० ४३६ ।

पयट्टिए-प्रवृत्तान् प्रवर्त्तितान् वा । उत्त० २०६ ।

पयट्टियं-प्रवर्तितम् । आव० १७३ ।

पयट्टिया-प्रवर्त्तिता । आव० ३९८ ।

पयडत्था-प्रकटार्था-जिनवचनतत्त्ववेदिनामुत्तानार्था। सूर्य० २९६ ।

पयडि-प्रकृतिः-श्रुतज्ञानांशस्तद्भेदोऽङ्गप्रविष्टादि, हेतुर्बाह्याभ्यन्तरभेदभिन्नो यः श्रुतज्ञानस्य स, श्रुतस्य स्वभावो वैकेन्द्रियादीनां चतुर्दशपूर्वधरान्तानां जीवनां तारतम्येन भिन्नरूपः प्रकृतिः । विशे० २५१ ।

पयडिय-प्रपतितं-प्रकर्षेण श्लथीभूतम् । ज्ञाता० १३७ ।

पयडी-णालिएरि । नि० चू० प्र० १२१ अ । प्रकृतिः-भेदः । आव० २४ । प्रकृतिः-स्वभावः । आचा० ३५३ (?) ।

पयण-पचनम् । प्रश्न० १४ । पचनं-कडिल्लकाकृतिः । सूत्र० १२६ । पतनं-स्थानम् । उत्त० ४४ । पाकस्थानं चुल्ल्यादि । ज्ञाता० ११० ।

पयणगं-प्रचनकं-प्रचण्डम् । आव० ६५१ ।

पयणसाला-जहिं पच्चंति भायणाणि । नि० चू० तृ० २१ आ । पचनशाला-वर्षासु भाजनापाकस्थानम् । बृ० द्वि० १७५ अ ।

पयणु-प्रतनुः-अतिमन्दीभूतः । जीवा० २७७ ।

पयणुए-प्रतनुकं-अघनम् । भग० १८९ ।

पयत- प्रयतः-आद्रियमाणः । ज० प्र० १९३ । प्रयतः-प्रयत्नवान् । पदतवाः- तथाविधानुस्मर्यमाणसूत्रालापकात् । उत्त० ५८ । प्रकृष्टसंयमयुक्तत्वात् प्रयताम् । ठाणा० २४७। प्रयत्नो-आदरः । बृ०प्र० २३ अ । पदत्रः-सिद्धान्तः । उ० मा० गा० ३२९ । प्रयत्नः-यथागमादरः । पिण्ड० १४७ । प्रदत्ता-गुरुभिरनुज्ञाता । अनुत्त० ३ । प्रदत्तः-अनुज्ञातो गुरुभिः, प्रयतो वा-प्रयत्नवान् प्रमादरहित इत्यर्थः । भग० १२५ ।

पयत्तकड-प्रयत्नकृतम् । आचा० ३९० ।

पयबद्ध-यदेकाक्षरादि यथा-ते ते इत्यादि । ज० प्र० ३९ ।

पयय-प्रयतः-प्रयत्नः । ओघ० १९९ । प्रयत्नः-सद्भावः । ओघ० १७९ ।

पययया-प्रयता-प्रकृष्टयत्नवतः । अनुत्त० ३ ।

पयरंगुले-सूची सूच्यैव गुणिता प्रतराङ्गुलम् । अनु० १५८ । प्रतराङ्गुलम् । अनु० १७३ ।

पयर-प्रतरं-भूषणविधिविशेषः । जीवा० २६९ । प्रतरम् । अनु० १५६ । प्रतरम् । अनु० १७३ । श्रेणिरेव श्रेण्या गुणिता प्रतरः । उत्त० ६०१ । प्रतरः-प्रस्तरः । ज० प्र० २९८ । नंदी० ११० । श्रेणिरेव श्रेण्या गुणिता प्रतरः । उत्त० ६०१ । प्रतरः-आभरणविशेषः । औप० ५३ । प्रतरः-एकप्रादेशिकश्रेणिरूपः । प्रज्ञा० २७९ ।

पयरइ-प्रचरति । आव० ८१४ ।

पयरग-प्रतरकं-वृत्तप्रतलः-आभरणविशेषः । औप० ५५ । प्रतरकं-सुवर्णपत्रकम् । जीवा० १८१ । प्रतरकं-आभरणविशेषः । प्रश्न० ७५ । प्रतरकः-पत्रकः । ज०प्र० २४ । प्रतरकं-स्वर्णादिमयं आभरणविशेषः । ज्ञाता० १४ । प्रतरकं-प्रतरप्रवृत्तरूपं आभरणम् । ज्ञाता० ३५ ।

पयरच्छेय-प्रतरच्छोदः-तरिकाछेदः । औप० १८७ ।

पयरण-प्रतरणं-प्रथमदातव्यभिक्षा । बृ० द्वि० १८७ आ । भिक्खं । नि० चू० प्र० १५५ आ ।

पयरतव-श्रेण्या गुणिता श्रेणिः प्रतरः उच्यते, तद्रूपलक्षितं षोडशपदात्मकं तपः प्रतरतपः । उत्त० ६०१ ।

पयरवट्ट-बाहल्यतो हीनं प्रतरवृत्तं मण्डकवत् । भग० ८६१ ।

पयराभेद-प्रतरभेदः । प्रज्ञा० २६७ ।

पयलइ-छिन्तरुहावनस्पतिः । भग० ८०४ ।

पयला-प्रचला-ऊर्ध्वस्थितनिद्राकरणलक्षणा । भग० २१८ । प्रचला-या ऊर्द्ध्वं स्थितस्यापि वा पुनश्चैतन्यमस्फुटीकुर्वतो समुपजायते निद्रा सा प्रचला । जीवा० १२३ । उपविष्ट ऊर्ध्वस्थितो वा प्रचलत्यस्यां स्वापावस्थायामिति प्रचला । ठाणा० ४६७ । प्रचला-निषण्णस्य सुप्तजागरावस्था । बृ० द्वि० २०७ आ । उपविष्टः ऊर्ध्वस्थितो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा प्रचलयति-घूर्णयति यस्यां स्वापावस्थायां सा प्रचला। प्रज्ञा० ४६७ ।

पयलाइआ-भुजपरिसर्पविशेषः । प्रज्ञा० ४६ ।

पयलाएज्ज-प्रचलायेत्-प्रचलां-उर्ध्वस्थितनिद्राकरणलक्षणां कुर्यात् । भग० २१८ ।

पयलापयला-प्रचलातोऽतिशायिनी प्रचलाप्रचला । प्रज्ञा० ४६७ ।

पयलायइ-प्रचलयति-निद्रां गच्छति । आव० ७६८ ।

पयलाया-भुजपरिसर्पः तिर्यग्योनिकः । जीवा० ४० ।

पयलिय-प्रचलितम्, प्रवलिकं-प्रजातवलीकम् । ज्ञाता० १३३ ।

पयलिज्ज-प्रचलेत्-कम्पेत् । आचा० ३३७ ।

पयल्ले-चतुष्पञ्चाशत्तममहाग्रहः । ठाणा० ७६ ।

पयविभाग-पदविभागः । विशे० ८४१ । पदविभागसामाचारी, छेदग्रन्थगतसूत्ररूपा । विशे० ८४२ । पदविभागः-सामाचारी । आव० २५८ ।

पयस-पायसम् । आव० १८८ ।

पयसमं-पदसमं-यद् गेयपदं नाभिकादिकमन्यतरबन्धेन बद्धं सत्र स्वरे अनुपाति भवति तत्तत्रैव यत्र गीते गीयते तत् पदसम् । ठाणा० ३६६ ।

पया-प्रजाः-जन्तवः । आचा० २०३ । प्रजा-स्त्री । आचा० १६३ । प्रजाः-पृथिव्यादयो जन्तवः स्त्रियो वा । सूत्र० १८६ । प्रजा-जनसमूहरूपा, प्रजायत इति वा प्रजा । उत्त० १८२ ।

पयाएज्जसि-प्रजनिस्यति । विपा० ७७ ।

पयाग-प्रयागं-तीर्थविशेषः । आव० ६८६ ।

पयाण-प्रतननं-प्रतानो विस्तारस्तद्रूपः स्वप्नो यथा तथ्यः तदन्यो वा प्रतान इत्युच्यते । पञ्चस्वप्ने द्वितीयः । भग० ७०६ ।

पयाणय- । ओघ० ४६ ।

पयाणीक-पदात्यनीकः-चतुर्थी सेना । जीवा० २१७ ।

पयाणुसारिबुद्धि-पदानुसारिबुद्धिः । प्रज्ञा० ४२४ ।

पयाणुसारी-पदेन-सूत्रावयवेनैकेनोपलब्धेन तदनुकूलानि पदशतान्यनुसरन्ति-अभ्यूहयन्तीत्येवंशीलाः पदानुसारिणः । औप० २८ ।

पयायामि-प्रजनयामि । ज्ञाता० ८१ ।

पयार-प्रचारं-अटनम् । ओघ० १६१ । प्रचारम् । ओघ० १५० ।

पयारधम्म-चक्षुरादीन्द्रियवशतारूपादिषु प्रवृत्तिः प्रचारधर्मः । दश० २१ ।

पयारेइ-प्रतारयति । दश० ५६ ।

पयावइ-प्रथमवासुदेवपिता । सम० १५२ । प्रजापतिः-पोतनपुरे राजा । आव० १७४ । प्रजापतिः-त्रिषष्ठवासुदेवपिता । आव० १६३ । प्रजापतिः । दश० ६६ । प्रजापत्यः । सूर्य० १४६ । प्रजापतिः-लोकप्रभुः । प्रश्न० ३३ ।

पयावण-प्रतापनं शीतापनोदाय । आचा० ५० । प्रतापनं-उत्तेजनम् । बृ० तृ० १४२ आ ।

पयावणा-प्रतापना-अग्निप्रज्वलना । ओघ० १२४ ।

पयाविज्जा-प्रतापनं-निरन्तरं बहु तापनम् । दश० १५३ ।

पयास-प्रकाशः-प्रकटत्वं-आविर्भावः । विशे० १०६२ ।

पयासयर-प्रकाशकरः-प्रभासकरो वा । आव० ५१० ।

पयाहिणजलं-प्रदक्षिणजलं-सामायिकदानस्य स्थानम् । आव० ४७० ।

पयाहिणावत्तमंडल-प्रकर्षेण सर्वासु दिक्षु विदिक्षु च परिभ्रमतां चन्द्रादीनां दक्षिण एव मेरुर्भवति यस्मिन्नावर्त्तन-मण्डलपरिभ्रमणरूपे स प्रदक्षिणः प्रदक्षिण आवर्त्तो येषां मण्डलानां तानि प्रदक्षिणावर्त्तानि मण्डलानि येषां ते तथा । सूर्य० २७६ । प्रकर्षेण सर्वासु दिक्षु विदिक्षु च परिभ्रमतां चन्द्रादीनां दक्षिण एव मेरुर्भवति यस्मिन्नावर्त्ते-मण्डलपरिभ्रमणरूपे स प्रदक्षिणः २ आवर्त्तो यस्य मण्डलस्य तत् तच्च मण्डलं मेरुं प्रति यस्य स प्रदक्षिणावर्त्तमण्डलः । जीवा० ३३७ ।

पयोग-प्रयोगः-परप्रतारणव्यापारः । आचा० १६७ ।

पयोगकम्म-प्रयोगकर्म-वीर्यान्तरायक्षयोपशमाविर्भूतवीर्येणात्मनः प्रकर्षेण युज्यते इति प्रयोगः । आचा० ६४ ।

पयोगपरिणता-प्रयोगपरिणता-जीवव्यापारेण तथाविधपरिणतिमुपनीता । ठाणा० १५२ ।

पयोगविससापरिणय-प्रयोगेण-जीवव्यापारेण विश्रसया च स्वभावेन परिणत-अवस्थान्तरमापन्नः । ज्ञाता० १७४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पयोस–प्रद्वेषः–मात्सर्यः । ठाणा० ४८४ ।
परंआभियोजितुकामा–परमभियोक्तुकामः–अभिभवितुकामः । ज्ञाता० १६१ ।
परंगण–नृत्यद् । निरय० ३४ ।
परंगामण–भूमौ सर्पणम् । भग० ५४५ ।
परंघया–पर्यन्ता । व्य० द्वि० २२७ ।
परंति–सर्वतो भ्रमन्ति । प्रश्न० ५३ ।
परंदम–परान्–अन्यान् दमयति–यत्कृत्याभिमतकृत्येषु प्रवर्तयति इति परन्दमः । उत्त० २७५ ।
परंपर–दृष्टिवादे सूत्रस्य भेदः । सम० १२८ । परम्परं–व्यवहितम् । भग० २१५ । परे च परे चेति विप्सायां परम्परशब्दनिष्पत्तिः । प्रज्ञा० १८ । परम्परकं–विकारपरम्परा । पिण्ड ६० ।
परंपरगए–परम्परया–मिथ्यादृष्टयादिगुणस्थानकानां वा मनुष्यादिसुगतीनां वा पारम्पर्येण गतो भवाम्भोधिपारं प्राप्तः परम्परागतः । भग० १११ ।
परंपरगढिया–परम्परैः–व्यवहितैः सह ग्रथिता परम्परग्रथिता । भग० २१५ ।
परंपरघाए–परम्परा–निरन्तरता तत्प्रधानो घातः–ताडनः परम्पराघातः उपर्युपरिघातः । भग० २५१ ।
परंपरबंध–येषां तु बन्धानां द्वितीयादिः समयो वर्त्तते तेषां परम्परबन्धः । भग० ७६१ ।
परंपरय–परम्परकम् । आव० ५२० ।
परंपरवल्ली–मातापित्रोर्मात्रादिषट्करूपा । बृ० तृ० ४२ आ ।
परंपरसिद्धा–परे च परे चेति वीप्सायां पृषोदरादय इति परम्पराशब्दनिष्पत्ति, परम्परे च ते सिद्धाश्च परम्परसिद्धाः । अनु० ११३ ।
परंपरा–परम्परा–अव्यवच्छिन्नशिष्यप्रशिष्यसन्तानलक्षणा । (?) । परम्परा–ज्ञानदर्शनचारित्ररूपा मिथ्यादृष्टयादिभेदभिन्ना । प्रज्ञा० ११२ ।
परंपरासो–परम्परास्पर्शः । आव० ३२४ ।
परंपरोगाढ–परम्परावगाढः–यदात्मप्रदेशान्तर्वर्त्तीनि तदवगाढसम्बन्धात् परम्परावगाढम् । भग० २१ ।
परंपरोववण्णगा–परम्परोपपन्नकः–परम्परया उपपन्नकः उत्पत्त्यनन्तरं द्वित्र्यादिसमयवर्त्ती । प्रज्ञा० ३०४ ।
परंभर–परं बिभर्त्तीति परम्भरः । ठाणा० २४८ ।
परंमुहो–पराङ्मुखः । आव० २२० । पराङ्मुखः । आव० ४२७ ।
पर–परः–तीर्थकृत् । आचा० २२८ । परः–शत्रुः । आव० ६० । परः–मोक्षः । आव० ३२६ । परः–चोदकः । ओघ० १०८ । परं–देशविरताद्ययोगिकेवलिपर्यन्तं गुणस्थानकम् । आचा० १७३ । संयमः । आचा० १७३ । सम्यग्दृष्टिगुणस्थानः । आचा० १७३ । परशब्दविषये–नामादिः षड्विधो निक्षेपः । आचा० ४१५ । आरवाची नि० चू० प्र० १२६ आ । परः–तीर्थकृत्, सर्वज्ञः । आचा० २० । परं–स्वर्गम् । आचा० १७३ । परं–दर्शनमोहनीयचारित्रमोहनीयक्षयं, घातिभवोपग्राहिकर्म्मणां वा क्षयम् । आचा० १७३ । परं–परलोकः–प्रव्रज्यापर्यायः मोक्षो वा । सूत्र० ५६ । परं–परलोकाख्यं नारकादिकं वा । सूत्र० १५२ । परं–प्रकृष्टः । भग० ७४६ । परं–अग्रतः । उत्त० ६५६ । स्वामी । व्य० प्र० १७२ अ ।
परइड्ढी–परमर्द्धिः–अष्टमवासुदेवनिदानकारणम् । आव० १६३ टी० ।
परए–परकं–अतिक्रमः । उत्त० ६५४ ।
परक–भाजनविधिविशेषः । जीवा० २६६ ।
परकड–परेण–गृहिणाऽऽत्मार्थं परार्थं वा कृतं–निर्वर्तितं परकृतम् उत्त० ६० ।
परकडपरनिट्ठिय–परार्थं कृतं–आरब्धं परार्थं च निष्ठितं अन्तं गतं परकृतपरनिष्ठितम् । दश० ६७ ।
परकिरिआ–परस्मै–स्त्र्यादिपदार्थाय क्रिया परक्रिया विषयोपभोगद्वारेण परोपकारकरणं, परेण वाऽऽत्मनः सम्बाधनादिका क्रिया परक्रिया । सूत्र० १२० ।
परक्कंत–पराक्रान्तः–पराक्रमस्तपःप्रभृतिकम् । भग० १६३ ।
परक्क–परकीयम् । विशे० ३१ ।
परक्कम–पराक्रमः–पुरुषकारः । ठाणा० २३ । पराक्रमः । ठाणा० ११६ । पराक्रमः–स एव निष्पादितविषयो बलपर्ययोर्व्यापारणम् । ठाणा० ३०४ । पराक्रमः–शरीरसामर्थ्यात्मकः । उत्त० ३४६ । पराक्रमः–उत्तरोत्तरगुण-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रतिपत्त्या कर्मारिजयसामर्थ्यलक्षणः । उत्त० ५७१ । पराक्रमं–जीववीर्योल्लासरूपमुत्साहम् । उत्त० ३११ । पराक्रम्य–आसेव्य । दश० २३३ । पराक्रमः–उत्साहातिरेकः । ठाणा० ४४१ । पराक्रमः–मार्गान्तरः । आचा० ३३८ । पराक्रमः–निष्पादितस्वविषयः । ज्ञाता १३५ । प्रकम्यतेऽनेनेति–प्रक्रमः मार्गः । आचा० ३३७ । पराक्रमः–स एव साधिताभिमतप्रयोजनः । शत्रुवित्रासनम् । ज० प्र० १३० । पराक्रमः–शत्रुवित्रासनशक्तिः । ज० प्र० १८२ । पराक्रमः । सूर्य० २८६ । पराक्रमः–साधिताभिमतप्रयोजनः शत्रुनिराकरणं वा । भग० ५७ । पराक्रमः–निष्पादितस्वप्रयोजनः । भग० ३२३ । पराक्रमः–अन्यमार्गः । दश० १६४ । पराक्रमः–प्रवृत्तिबलम् । दश० २७६ । पराक्रमः–सामर्थ्यम् । सूत्र० २७३ । साधिताभिमतफलः–पुरुषकारः पराक्रमः । प्रश्न० ७३ । पराक्रमः–विक्रमः । जीवा० २७० । पराक्रमः–चेष्टा । आव० १८१ । निष्पादितस्वविषयः पराक्रमः । प्रज्ञा० ४६३ । पराक्रमः–कषायजयः । आव० ३६१ ।

परक्कमइ–पराक्रमते–चेष्टते । दश० १०६ ।

परक्कमणं–विवक्षितदेशगमनं पराक्रमणम् । सूत्र० २७३ ।

परक्कममाण–उल्लङ्घयद् । निरय० ३४ ।

परक्कमितव्वं–पराक्रमितव्यं–शक्तिक्षयेऽपि तत्पालने पराक्रमः–उत्साहातिरेको विधेय इति । ठाणा० ४४१ ।

परक्रियासप्तैककः–षष्ठं सप्तिकाऽध्ययनम् । ठाणा० ३८७ ।

परग–वंशनिष्पन्नं छब्बकादि । आचा० ३५७ । परकं–येन तृणविशेषेण पुष्पाणि ग्रथ्यन्ते । आचा० ३७२ । सूत्र० ३०७, ३०६ ।

परग्घ–परार्घ–उत्तमार्घं, महार्घम् । दश० २२१ ।

परचक्करायो–परचक्रराजा–अपरसैन्यनृपतिः । ज्ञाता० १५१ ।

परचक्र–दुरितविशेषः । भग० ८ ।

परज्झ–पारवश्यम् । भग० ३१४ । देशीपदत्वात् परवशः रागद्वेषग्रहग्रस्तमानसतया न स्वतन्त्रः । उत्त० २२८ । परतन्त्रता । ठाणा० ५०५ । परवशीकृतः । बृ० तृ० १२३ अ । पराधीनः । महाप्र० । पराक्रमः । मर० ।

परज्झा–प्रारब्धः । मर० ।

परट्ठाणंतरं–परमाणोर्यत्परस्थाने-द्व्यणुकादावन्तर्भूतस्थानन्तरं–चलनव्यवधानं तत्परस्थानान्तरम् । भग० ८८६ ।

परट्ठाण–परस्थानं–छब्बकादिकम् । पिण्ड० ८६ ।

परट्ठाणवड्ढी–विसरिसं जहा मासलहुयाउ दोमासियं, दुमासातो तेमासितं एवं सव्वा विसरिसा परट्ठाणवड्ढी । नि० चू० प्र० २३४ आ ।

परट्ठाणसन्निगासेणं–विजातीययोगमाश्रीत्येत्यर्थः । भग० ६०१ ।

परततियवावड–परतश्चिन्ताव्यावृत्तः–परकृत्यचिन्तनाक्षणिकः । प्रश्न० ३८ ।

परत–परत्र । उत्त० ५४० ।

परतर–पच्छित्तकरणे समत्थं णत्थि, वेयावच्चकरण लद्धी से अत्थि । नि० चू० तृ० १२३ अ ।

परत्तीकते– । ज्ञाता० ६६ ।

परत्थ–परार्थं मोक्षार्थम् । आव० ३२६ । परत्रैव–जन्मान्तरे अर्थ आस्था वा यस्य स परार्थः । ठाणा० २४८ ।

परत्र–पश्चात्कालम् । नंदी० १५ ।

परद्ध–विक्षिप्तम् । आव० १६६ । व्याप्तः । भक्त० ।

परद्धा–पराभविता । नि० चू० प्र० ११ आ ।

परधणंमि गेही–परधने गृद्धिः, अधर्मद्वारस्य सप्तमं नाम । प्रश्न० ४३ ।

परनिन्दात्मोत्कर्षविप्रयुक्त–त्रयोविंशतितमवचनातिशयः । सम० ६३ ।

परपंडित–परः–प्रकृष्टः पण्डितः परपण्डितः–बहुशास्त्रज्ञः, परो वा मित्रादिः पण्डितो यस्य स । ठाणा० ४५२ ।

परपइट्ठिय–परप्रतिष्ठितः–परेणाक्रोशादिना प्रतिष्ठितः–उदीरितः परस्मिन् वा प्रतिष्ठितो–जातः परप्रतिष्ठित इति । ठाणा० ६२ । परेणाक्रोशादिनोदीरितः परप्रतिष्ठितः परविषयो वा । ठाणा० १६३ ।

परपक्ख–गवादयोऽसंयतः । बृ० द्वि० १६४ अ । गृहस्थः । बृ० द्वि० ११४ अ । परपक्षाः–पाखण्डिनः । बृ० तृ० ५ अ । परपक्षः–गृहस्थादिः । ओघ० १२० । परपक्षः–गृहस्थः । पिण्ड० ६७ । असंजतो । नि० चू० तृ० १४ अ ।

परपक्खजयणा–जयणाए तईयो भेओ । नि० चू० तृ०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२ आ ।

परपक्षः-अपरभिक्षाचरवर्गः । आचा० ३२६ ।

परपक्षकषायदुष्टः-राजवधकः । ठाणा० १६४ ।

परपज्जया-परपर्यया:-इकारादिसम्बन्धिनो घटादिगताश्चास्य परपर्यायाः । विशे० २६२ ।

परपज्जाय-परपर्यायः । भग० ३६३ ।

परपतिट्ठिए-यदा पर उदीरयति आक्रोशादिना कोपं तदा किल तद्विषयः क्रोध उपजायत इति स परप्रतिष्ठितः । प्रज्ञा० २६० ।

परपरिवाए-विप्रकीर्णं परेषां गुणदोषवचनम् । भग० ८०। परपरिवादः-प्रभूतजनसमक्षं परदोषविकत्थनम् । प्रज्ञा० ४३८ । परपरिवादः-परेषामपवदनं परितापः । भग० ५७२ । पञ्चदशमं पापस्थानकम् । ज्ञाता० ७५ । परपरिवादः-विकत्थनम् । प्रश्न० १२४ ।

परपरिवात-परपरिवादः-परदोषपरिकीर्त्तनम् । ठाणा० २७५ ।

परपरिवाय-परेषां परिवादः परपरिवादः-विकत्थनम् । ठाणा० २६ ।

परपुट्ठ-परपुष्टः-कोकिलः । ज० प्र० ३२ । परपुष्टः-कोकिलः । प्रज्ञा० ३६० ।

परपासंड-परपाषण्डः-सर्वज्ञप्रणीतपाषण्डव्यतिरिक्तः । आव० ८१६ ।

परपासंडपसंसा-परपाषण्डप्रशंसा-सर्वज्ञप्रणीतपाषण्डव्यतिरिक्तानां प्रशंसा, प्रशंसनं प्रशंसा-स्तुतिः । आव० ८११ ।

परपासंडसंथव-परपाषण्डसंस्तवः-सर्वज्ञप्रणीतपाषण्डव्यतिरिक्तस्तवनम् । आव० ८११ ।

परपासंडो-अण्णाणं मिच्छत्तं कुव्वंतो कुतित्थिए वाएति, जिणवयणं च णाभिगच्छति सो परपासंडो । नि० चू० तृ० ८४ अ ।

परपिंडतक्कक-परपिण्डतर्ककः-परदत्तभोजनगवेषकः । प्रश्न० ६३ ।

परपेस-परप्रैषः । उत्त० २६३ ।

परप्पवित्त-परस्मै प्रवृत्त-परैः स्वार्थं निष्पादितत्वेन परप्रवृत्तम् । उत्त० ३५६ ।

परब्भंत-उपद्रुतः । नि० चू० प्र० १७३ आ ।

परब्भमाण- । भग० ६७७ ।

परब्भाहए-पराभ्याहतो-बाधितः । ज्ञाता० ६३ ।

परभवसंकामकारय-भरभवसङ्क्रमकारकः-प्राणवियोजितस्यैव परभवे सङ्क्रान्तिसद्भावात्, प्राणवधस्य सप्तदशमः पर्यायः । प्रश्न० ५ ।

परभविय-वर्तमानानन्तरभाविन्यनुगामितया यद्वर्तते तत् पारभाविकम् । भग० ३३ ।

परभाग-शोभा । उत्त० ४८३ ।

परभाववंकणया-परभावस्य वङ्कनता-वञ्चनता या कूटलेखकरणादिभिः सा परभाववङ्कणता । ठाणा० ४२ ।

परभाववंचणा-परभाववञ्चनता-मायाप्रत्ययिकीक्रियाया द्वितीयो भेदः । आव० ६१२ ।

परमंगाणि-परमाणि च तानि प्रत्यासन्नोपकारित्वेन अङ्गानि च मुक्तिकारणत्वेन परमाङ्गानि । उत्त० १८१ ।

परमंता-परे-गृहस्थाः तेषां मन्त्राः-तत्कार्यालोचनरूपाः परमन्त्राः । उत्त० ४४६ ।

परम-मोक्षं ज्ञानादिकम् । आचा० १५६ । सुहं । दश० चू० ६२ आ । परमः-अत्युग्रो रसः । दश० २६७ (?) ।

परमकेवलं-परमं च तत्केवलं च-परिपूर्णं विशुद्धं वा मतिश्रुतावधिमनःपर्यायापेक्षया क्षायिकज्ञानमिति । प्रश्न० १३५ ।

परमग्गसूर-परमाग्रशूरः-दानसंग्रामशूरापेक्षया प्रधानः शूरः । दश० २५४ ।

परमट्ठ-परमार्थः-मोक्षः । उत्त० ४८७ ।

परमट्ठपए-परमार्थपदं-सम्यग्दर्शनादि । उत्त० ४८७ ।

परमट्ठभेदक-परमार्थभेदकं-मोक्षप्रतिघातकम् । प्रश्न० ३६ ।

परमण्णं-परमान्नं-पायसलक्षणम् । आव० १४४ । परमान्न-पायसम् । जीवा० २६८ ।

परमत्थ-परमार्थः-जीवादिः । उत्त० ५६६ । परमार्थं-हेयोपादेयवचनैदम्पर्यम् । प्रश्न० १२० ।

परमत्थसंथव-परमाश्च-तात्त्विकाश्च ते ऽर्थाश्च जीवादयस्ते परमार्थाः-तेषु संस्तवः-परिचयः, तात्पर्येण बहुमानपुरस्सरं जीवादिपदार्थावगमायाभ्यासः । प्रज्ञा० ५६ ।

परमट्ठा-पडिमट्ठंति जे ते परमट्ठा शयनकाले परिपिट्ठंति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नि० चू० प्र० २७७ अ ।

परमनिउण-परमनिपुणः, तत्र मोक्षाङ्गत्वात् अव्यंसकत्वाच्च । आव० ६१ ।

परमन्न-परमान्नं क्षीरेयि । भग० ६६४ ।

परमपय-परपदम् । ज्ञाता० ५५ ।

परमसब्भाव-परमसद्भावः-अत्यंतसत्यता वस्तूनामेदम्पर्यम् । सम० १११ ।

परमसाहू-परमसाधुः-नैष्ठिकमुनिः । प्रश्न० ११४ ।

परमसुक्कज्झाणं-परमशुक्लध्यानं शुक्लध्यानचतुर्थभेदरूपम् । प्रश्न० १३५ ।

परमसुक्का-शुक्लध्यानतृतीयभेदावसरे या लेश्या सा परमशुक्ला, साऽपीतरजीवशुक्ललेश्यापेक्षया स्नातकस्य परमशुक्ला । भग० ६०२ ।

परमसुह-परमसुखं आत्यन्तिकसुखं-निःश्रेयः । ज० प्र० १५३ ।

परमसोमणस्सिए-परमं सौमनस्यं-सुमनस्कता संजातं यस्य स परमसौमनस्यितस्तद्भावोऽस्यास्तीति परमसौमनस्यिकः । भग० ११६ । शोभनं मनो यस्यासौ सुमनास्तस्य भावः सौमनस्य परमं च तत् सौमनस्यं च परमसौमनस्यं तत्संजातमस्मिन्निति परमसौमनस्यितः । जीवा० ३४३ ।

परमहंस-परमहंसः परिव्राजकः । औप० ६१ ।

परमा-महास्थितयो महाकर्मतः । भग० ७६१ ।

परमाणु-परमाश्च तेऽणवश्च परमाणवो निर्विभागद्रव्यरूपाः स्कन्धत्वपरिणामरहिताः केवलाः परमाणवः । प्रज्ञा० १० ।

परमाणुपुग्गला-परमाणुपुद्गलाः स्कन्धत्वपरिणामरहिताः केवलाः परमाणवः । जीवा० ७ । अनु० १६० ।

परमान्न-पायसम् । ज० प्र० १०४ ।

परमाराम-परमारामः-परमश्वासावारामश्च-ज्ञाततत्त्वमपि जनं हासविलासोद्गूर्णनिरीक्षणादिभिर्विब्बोकैर्मोहयतीत्यर्थः । आचा० २१८ ।

परमावत्ता-सप्तापतीगङ्गास्वरूपा । भग० ६७४ ।

परमाहम्मिअ-परमाधार्मिकः-असुरविशेषः । सम० २६ ।

परमाहम्मिय-परमाधार्मिकः-नारकाणां दुःखोत्पादकः-असुरकुमारविशेषः । प्रश्न० १४३ । परमधर्मः-परमं सुखं तद्धर्मा-सुखधर्मा-सुखाभिलाषी । दश० १४२ ।

परमाहोहिओ-परम-आधोवधिकादयः स परमाऽधोऽधिकः । स च समस्तरूपिद्रव्यासङ्ख्यातलोकमात्रालोकखण्डासङ्ख्यातावसर्पिणीविषयावधिज्ञानः । भग० ६७ ।

परमोहि-परमावधिः प्रभूतावधिः । व्य० प्र० १०६ अ ।

परलाभ-परलाभः परस्माद् द्रव्यागमः अधर्मद्वारस्य पञ्चमं नाम । प्रश्न० ४३ ।

परलिङ्गं-कुतीर्थिकलिङ्गं गृहस्थलिङ्गम् । भग० ८६५ ।

परलोइया-हयगयादी । नि० चू० द्वि० ७१ आ ।

परलोकभयं-परभवात् यत् प्राप्यते । आव० ४७२ । विजातीयात्तिर्यगादेर्मनुष्यादिकस्य भयम् । प्रश्न० १४३ ।

परलोग-प्रधानलोकः परलोकः-मोक्षः । आव० ५३१ । परलोकः-देवलोकः । आव० ८४० ।

परलोगभत-विजातीयात्-तिर्यग्देवादेः सकाशान्मनुष्यादीनां यद्भयं तत् परलोकभयम् । ठाणा० ३८६ ।

परलोगभय-परलोकभयं-यद्विजातीयात् । सम० १३ । परलोकभयं विजातीयात्तिर्यग्देवादेः सकाशाद् यद्भयम् । आव० ६४५ ।

परलोगसंवेयणी-परलोकसंवेदनी, यथा देवा अपि ईर्ष्याविषादमदक्रोधलोभादिभिर्दुःखैरभिभूता किमङ्गं पुनः तिर्यग्नारकाः । दश० ११२ । परलोगसंवेदनी-देवादिभवस्वभावकथनरूपा, देवा अपीर्ष्याविषादभयवियोगादिदुःखैरभिभूताः किं पुनस्तिर्यगादय इति । ठाणा० २१० ।

परलोगासंसप्पओग-परलोकाशंसाप्रयोगः-देवलोकाभिलाषप्रयोगः । आव० ८३६ ।

परलोयावाय-परलोकापायः-नरकगमनादिः । आव० ५८६ ।

परवडिय-परानीतं यदशनादि । आचा० ४०३ ।

परवत्थ-परवस्त्रं-प्रधानं वस्त्रं परस्य वा वस्त्रं परवस्त्रम् । आचा० ३ ६ ।

परववएसे-परव्यपदेशः-आत्मव्यतिरिक्तव्यपदेशः । आ० १८३ (?) ।

परवारिङ्गुति- । नि० चू० तृ० ५२ अ ।

परविवाहकरण-परं-स्वापत्यव्यतिरिक्तमपत्यं तस्य कन्या-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फललिप्सया स्नेहबन्धनेन वा विवाहकरणं परविवाहकरणम् । आव० ८२५ ।

परवेयावच्चकम्मपडिमा-परेषां आत्मव्यतिरिक्तानां वैयावृत्यकर्म्माणि-भक्तपानादिभिरुपष्टम्भक्रियास्तद्विषयाः प्रतिमाः अभिग्रहविशेषाः परवैयावृत्यकर्म्मप्रतिमाः । सम० ९५ ।

परशुरामः-मानहतः । भक्त० ७ । जमदग्निसुतः-सप्तवारान् निःक्षत्रा पृथिवीकर्ता । सूत्र० १७०, ३०८ । कृतवीर्यव्यापादकः । सूत्र० ३६५ । अप्रतिष्ठाननरके वेदनावेदकः । जीवा० १२१ ।

परसमय-परसमयः-साङ्ख्यशाक्यादिसिद्धान्तः । दश० १११ ।

परसमयसूत्रं यथा पञ्चखंधे वयंतेगे । बृ० प्र० २०१ आ ।

परसम्पत्-विभूतिः । आव ५८७ ।

परसरीरसंवेगणी-परसरीरं चेव असुई, अहवा परस्स सरीरं वण्णेमाणो सोयारस्स संवेगमुप्पाएई परशरीरसंवेजनी । संवेजनीकभाषाया द्वितीयो भेदः । दश० ११२ । परशरीरसंवेगनी-परशरीरं-मृतशरीरं शरीरमेतदशुचिः । ठाणा० २१० ।

परसु-परशुः कुठारः । प्रश्न० २१ । परशुः-शस्त्रविशेषः । आव० ६५१. ८३१ । परशुः-कुठारः । उत्त० ४१३ । परशुः-कुठारः । बृ० द्वि० २३३ आ । परशुः-कुठारः । अनु० २२३ ।

परसुविज्जा-पर्शुविद्या । आव० ३९२ ।

परस्पर-एकैकः । उत्त० ३८२ ।

परस्परगुणनिकाय- । आचा० २४९ ।

परस्सर-परस्परः-गण्डः । जीवा० । २८२ । परस्परः-गण्डः । प्रज्ञा० २५४ । परासरः-सनखश्चतुष्पदविशेषः । जीवा० ३८ । शरभः । भग० ३०९ । सनखपदश्चस्तुष्पदविशेषः । प्रज्ञा० ४५ ।

परस्सलोभाविल-परस्य-अन्यस्य सम्बन्धिरूपवद्वस्त्विति गम्यते लोभाविलः'-लोभकलुषः, यद्वा परेषां स्वं-परस्वं, प्रक्रमाद् यद्रूपवस्तु तस्मिन् लोभो-गार्ध्यं तेनाविलः-परस्वलोभाविलः । उत्त० ६३२ ।

परहडं-परस्मात्मकाशाद् धृतं परहृतम्, अधर्मद्वारस्य द्वितीयं नामा । प्रश्न० ४३ ।

परहत्थपाणाइवायकिरिया-परहस्तेनापि तयैव परहस्तप्राणातिपातक्रिया । ठाणा० ४१ ।

परहुअ-परभृतः-कोकिलः । जं० प्र० २०० ।

परहुय-परभृतः-कोकिलः । ज्ञाता० २२२ । परभृतः-कोकिलः । ज्ञाता० २१ ।

परा-असिएण-दात्रेण । नि० चू० प्र० ३२४ अ । नि० चू० प्र० १३ आ । प्रधानां । आव० ८३७ । नृणविशेषः । प्रश्न० १२८ ।

पराइए-पुरुषसिंहवासुदेवनिदानकारणम् । आव० १६३ टी० ।

पराइय-आगतः । पउ० ९५ ।

पराइज्जइ- । भग० ९४ ।

पराइणइ- । भग० ९४ ।

पराकय-परसम्बन्धिनि । उत्त० ६६५ ।

पराक्कममाण-पराक्रममाणः-गच्छन् । आचा० ३३७ ।

पराक्कमिज्जा-पराक्रमेत-गच्छेत् । आचा० ३७७ ।

पराक्कम-बलवीर्ययोर्व्यापारणमिति । ठाणा० ३८४ ।

पराक्कान्त-आक्रान्तं-स्थानमेकाकिनो भवति । ठाणा० ३८४ (?) ।

पराघाए-पराघाते वासनायाम् । विशे० २०७ ।

पराघातनाम-यदुदयात् पुनरोजस्वी दर्शनमात्रेण वाक्सौष्ठवेन वा महानृपसभामपि गतः सभ्यानामपि त्रासमापादयति प्रतिवादिनश्च प्रतिभाविघातं करोति तत्पराघातनाम । प्रज्ञा० ४७३ ।

पराघाय-पराघातः-गर्तापातादिसमुत्थः । आव० २७२ । पराघातः-निसृष्टभाषाद्रव्यैस्तदन्येषां तथापरिणामापादनक्रियावत् प्रेरणम् । दश० २८८ ।

पराघायनाम-यतोऽङ्गावयव एव विषात्मको दंष्ट्रास्वगादि परेणोपघातो भवति तत्पराघातनाम । सम० ६७ ।

पराजइत्थ-पराजितवान्-हारितवान् । भग० ३१७ ।

पराजिओ-पराजितः-पराभवमभ्यमानः । उत्त० ३७६ ।

पराजिणित्ता-भृशं जित्वा परिभङ्गं वा प्राप्य सुमना भवति पराजितवान्-प्रतिवादिनः । ठाणा० १३१ ।

पराजिणिस्सइ-पराजेष्यते-अभिभविष्यति । निरय० ६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पराजिय-पराजितः-तद्विधराज्योपार्जने कृतसम्भावनाभङ्गः । औप० १२ ।
पराणग-परकीयम् । ग० ।
पराणि-द्रव्येन्द्रियमनांसि पुद्गलमयत्वात् । बृ० प्र० ८ अ ।
पराणुग्गहपरायणा-परानुग्रहपरायणः-धर्मोपदेशादिना परानुग्रहोद्युक्तः । आव० ५६७ ।
पराभए-पराभवः । विपा० ३६ ।
पराभग्ग-पराभग्नः । आव० ६७ ।
परामट्ठ-यद्विपर्यासी कृतं भङ्क्ते तदेतत् परामृष्टम् । ओघ० १६२ ।
परामर्श-प्रमार्जनम् । ओघ० १६० ।
परामुट्ठो-परामृष्टः । आव० ३६७ ।
परामुसंति-परामृशन्ति-उपतापयन्ति दण्डकशताडनादिभिर्घातयन्तीत्यर्थः । आचा० १६८ ।
परामुसइ-परामृशति-गृह्णाति । भग० २३० । गृह्णाति । विपा० ८७ । परामृशति-हस्तेन स्पृशति गृह्णाति । ज० प्र० ३ । परामृशति-स्पृशति । जं० प्र० २०० । परामृशति-आरभते । आचा० १४१ ।
परामुसह-परामृशत-नानापीडाकरणैर्बाधयत । आचा० २७३ ।
परामुसिए-परामृश्य तथाविधकरणव्यापारेण संस्पृश्य । भग० २१८ ।
परायग-परकीयम् । आव० ८२६ । नि० चू० प्र०२९३ ।
परायण-परायणः-उद्युक्तः । आव० ५८७, ५६७ ।
पररि- । आचा० १२२ ।
परावर्त्यमानः- । नंदी० २०६ ।
परासर-परभः । भग० १६१, ५४२ । पाराशरः-माहणपरिव्राजकः । औप० ६१ ।
परासुः-मृतः । नंदी० १५५ ।
परास्कन्दी-लुण्टाकः । नंदी० ६३ ।
पराहुत-पराङ्मुखम् । आव० ५४१ । पराङ्मुखः । ओघ० १८० । पराङ्मुखः-पराभिमुखः । ओघ० १७६ ।
परि-सर्वतः । प्रज्ञा० ५२७ । पुनः पुनः बहिर्वा । आव० ८२८ ।
परिअ-पर्यायः अन्यथा भवनम् । उत्त० २०२ ।
परिअट्ट-परावर्त्तः-पुद्गलपरावर्त्तः । अनन्तोत्सर्पिण्यवसर्पिणीप्रमाणो द्रव्यादिभेदः भिन्नः । आव० ४६५ ।
परिअट्टणा-परावर्तना-पुनः पुनः सूत्रार्थाभ्यासलक्षणा । अनु० १६ ।
परिअट्टय-पर्यायकः-परिपूर्णः । औप० २१ । परिवर्त्तकः वृद्धिकारी अग्रेगामी परिपूर्णो वा । औप० २१ ।
परिअण-परिजनः-दासादिः । ज० प्र० २७० ।
परिआए-पर्यायः-प्रव्रज्यारूपः । दश० २७६ । पर्यायः-तीर्थकृतः केवलीत्वकालः । जं० प्र० १५५ । पर्यायः-चारित्रपालनम् । ज० प्र० १५४ ।
परिआयट्ठाण-पर्यायस्थानं-प्रव्रज्यारूपम् । दश० २३८ ।
परिआविअ-परितापितः-समन्ततः पीडितः । आव० ५७४ ।
परिउवट्ठिय-पर्युपस्थितः-उभयत्रोद्यतः । उत्त० ५१२ ।
परिएसिज्जमाणे-तदीयमानाहारेण भोज्यमानान् । आचा० ३२७ ।
परिकंखए-प्रतिकाङ्क्षति-प्रतिपालयति । उत्त० २७३ ।
परिकच्छिय-परिकच्छितः-परिगृहीतः । जं० प्र० ४०३ ।
परिकट्टलिय-परिकट्टलितं-एकत्र पिण्डीकृतम् । पिण्ड० ८१ ।
परिकप्पेह-सन्नाहवतं करेह । ज्ञाता० ३५ ।
परिकम्म-परिकर्म्म-संकलिताद्यनेकविधं गणितप्रसिद्धं तेन यत्सङ्ख्येयस्य सङ्ख्यानं-परिगणनं तदपि परिकर्म्म । ठाणा० ४९७ । दृष्टिवादप्रथमभेदः । सम० १२८ । परिकर्म । आव० १८८ । परिकर्म-वस्त्रपात्रादेः छेदनसीवनादि । ठाणा ३२० । परिकर्म-संलेखना । उत्त० ६०३ । परिकर्म-रोगोत्पत्तौ चिकित्सारूपम् । उत्त० ४६ । प्रतिकर्म । आव० २२६ । परिकर्म-स्थाननिषदनत्वग्वर्त्तनादिना विश्रामणादि च तपभेदः । उत्त०६०२ । पराक्रम्य-समीपमागत्य अभिभूय वा । सूर्य० १० । परिकर्म-क्रियाविशेषेण यो वस्तूनां गुणविशेषपरिणामो गुणविशेषाधानमित्यर्थः । विशे० ४३४ । परिकर्मः-तद्व्यापारे लग्नः । ओघ० १२८ । परिकर्म्म-द्रव्यस्य गुणविशेषपरिणामकरणम् । व्य० प्र० १ अ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिकम्मण–सिक्खावणं । नि० चू० प्र० ३ आ । नि० चू० द्वि० १६६ अ ।

परिकम्मणा–उवहिप्पमाणप्पमाणेण संजयप्पाउग्गं करेति । नि चू० प्र० २३५ अ ।

परिकम्मिज्जमाण–क्रियमाणशोधनार्थोपक्रमः । भग० २५४।

परिकम्मोवघाते–परिकर्म्म–वस्त्रपात्रादेः छेदनसीवनादि तेन तस्योपघातः अकल्प्यता परिकर्मोपघातः । ठाणा० ३२० ।

परिकर–वागुरा । राज० १२२ ।

परिकरण–पात्रबन्धादिकम् । ओघ० १३२ ।

परिकर्म–दृष्टिवादप्रथमभेदः । सम० ४१ । अवस्थितस्यैव द्रव्यस्य गुणविशेषापादनम् । ज० प्र० ५ । तुलना । विशे० ११ । द्रव्यस्य गुणविशेषपरिणामकरणम् । आव० ५४ । विनाशः–गुणान्तरोत्पादनम् । ठाणा० ४ ।

परिकर्षकः–अग्रेगामी । ओप० २१ ।

परिकिण्ण–परिकीर्णः–परिवृतः । उत्त० ३४६ ।

परिकिलेस–परिक्लेशो महामानसायासः । भग० ४७० । परिक्लेशः–उपतापः । प्रश्न० ३७ ।

परिकुंचनाप्रायश्चित्तं–प्रायश्चित्तप्रकारः । व्य० प्र० ११ अ ।

परिकुविय–परिकुपितः–शरीरे समन्ताद् दर्शितकोपविकारः भग० ३२२ ।

परिक्कमंति–परान् वा–इन्द्रियकर्म्मरिपून् आक्रमन्ते–पराक्रमन्ते । आचा० २३३ । पराक्रमः–वीर्यं परेषामाक्रमणमाक्रमः पराक्रमः । विशे० ४८६ ।

परिक्कम–परिकर्म–अवस्थितस्यैव वस्तुनो गुणविशेषाधानम् । अनु० ४६ ।

परिक्कमिज्ज–पराक्रमेत–विहरेत् तिष्ठेद्वा । आचा० २७ ।

परिक्कमे–परिक्रमेत्–चङ्क्रम्याद् । आचा० २६३ ।

परिक्केस–परिक्लेशयतीति परिक्लेशः–पुत्रकलत्रादिसंबन्धः । उत्त० ५२२ ।

परिक्खग–जेहिं सद्दसत्थाणि णयादीणि सत्थाणि अधीताणि ते । दश० चू० १८ ।

परिक्खभासी परीक्ष्यभाषी–आलोचितवक्ता । दश० २२३ ।

परिक्खा–परीक्षा–युक्तायुक्तविचारणम् । आचा० १७५ ।

परिक्खित्त–परिक्षिप्तः परिषेकः । प्रश्न० २१ । परिक्षिप्तः–व्याप्तः । जं० प्र० ३७ । परिक्षिप्तः–विस्तारितः । ज० प्र० ३७ । अन्त० ७ । परिक्षिप्तं–वेष्टितम् । ज्ञाता० २२२ ।

परिक्खित्ता–परिक्षिप्ता–परिकरिता । भग० ४७८ । परिक्षिप्ता–वेष्टिता । ज्ञाता० २३६ ।

परिक्खित्तया–परिक्षिप्तो–विस्तारितः । भग० ४६० ।

परिक्खिया–परीक्षिता–पराजिता । आव० ५०४ ।

परिक्खिव–प्रतिक्षिपेत्–सूत्रतोऽर्थत उभयतो वा न्यसेत् । सूर्य० २६६ । परिक्षेपः–परिरयः । ज० प्र० २१ । परिक्षेपः–भित्यादेरेव परिधिः नगरपरिखादिर्वा । अनु० १५४ । बाहिरिका । नि० चू० प्र० १६८ अ । परिक्षेपः–परिधिः । भग० ११६ । परिक्षेपः–संक्षेपः । आचा० २६४ । परिक्षेपः । अनु० १७५ (?) ।

परिक्खेव–परिक्षेपः–वृत्तिवरंडकादिसमन्विते अबाह्ये । व्य० प्र० ४० आ ।

परिक्खेपणं–परिवेष्टनम् । उत्त० १७४ ।

परिखा–उपरि विशाला । सम० १३७ । परिखा–अध उपरि च समखातरूपा । भग० २३८ । उपरि विशाला ऽधः सङ्कुचिता । जीवा० १५६ ।

परिखेव–परिक्षेपः–परिधिः । जीवा० ६७ ।

परिगय–परिगतं–वेष्टितम् । प्रश्न० ७३ । परिगृहीतं–परिवेष्टितम् । ज्ञाता० ४२ । परिगतम् । आव० ४२६ ।

परिगर–परिकरः–मल्लकच्छबन्धेन युद्धोचितवस्त्रबन्धविशेषः । जं० प्र० २०१ । परिकरः–प्रगाढगात्रिकाबन्धः । ज० प्र० २०५ ।

परिगलत्सोतः–जलाशयः । आचा० २२० ।

परिगालण परिगालनं–शुक्तिशङ्खमत्स्यादिग्रहणार्थं जलनिःसारणम् । प्रश्न० १४ ।

परिगिज्झ–परिगृह्य–अङ्गीकृत्य । उत्त० ६४ । परिगृह्य–आश्रित्य । आचा० १२३ ।

परिगीयं–परि–समन्ताद् गीतं–ध्वनितं यत्र तत् । ज्ञाता० ४० ।

परिगुव्वति–परिगुप्यति–व्याकुलीभवति, मतं भ्रमती-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्यर्थः । ठाणा० ५०३ ।

परिग्गह–परिग्रहः–धर्मोपकरणवर्जंवस्तु स्वीकारो धर्मोपकरणमूर्च्छा च । भग० ४२ । परिग्रहः–परिवारः । प्रश्न० ४७ । पञ्चमं पापस्थानकम् । ज्ञाता० ७५ । परिग्रहः–अङ्गीकारः । ज० प्र० १२७ । परिग्रहः–परिवारः । प्रश्न० ४७ । परिगृह्यत इति परिग्रहः–शरीरोपध्यादिः, परिग्रहणं वा परिग्रहः–स्वीकारः, परिग्रहस्य प्रथमं नाम । प्रश्न० ६२ । परिग्रहः–धर्मोपकरणवर्जंवस्तुस्वीकारः धर्मोपकरणमूर्च्छा च । प्रज्ञा० ३३५ । परिग्रहः–स्वस्वामिभावेन मूर्च्छा । प्रज्ञा० ४३८ । परिग्रहः–स्वीकारः । प्रश्न० ४ । प्रतिग्रहम् । आव० २६२ । परिसमन्तात् गृह्यत इति परिग्रहो–द्विपदचतुष्पदधनधान्यहिरण्यसुवर्णादिषु ममीकारः । सूत्र० १७७ । परिसमन्तात् गृह्यत इति परिग्रहः–धनधान्यद्विपदचतुष्पदादिसंग्रहः, आत्मात्मीयग्रहो वा । सूत्र० १९२ । परिग्रहः–संयमातिरिक्तमुपकरणादिः । आचा० १३२ । परिगृह्यते–स्वीक्रियत इति परिग्रहः । ठाणा० २६ । परिग्रहणं परिग्रहः–मूर्च्छा । ठाणा० २६ । परिग्रहः–धर्म्मसाधनव्यतिरेकेण धनधान्यादयः । ठाणा० ४६ ।

परिग्गहसण्णा–परिग्रहसंज्ञा–परिग्रहाभिलाषः–तीव्रलोभोदयप्रभव आत्मपरिणामः । आव० ५८० ।

परिग्गहसन्ना–लोभोदयात् प्रधानभवकारणाभिष्वङ्गपूर्विका सचित्तेतरद्रव्योपादानक्रियैव परिग्रहसञ्ज्ञा । भग० ३१४ । परिग्रहसञ्ज्ञा–लोभावपाकोदयसमुत्थमूर्च्छापरिणामरूपा । जीवा० १५ । लोभोदयात्प्रधानसंसारकारणाभिष्वङ्गपूर्विका सचित्तेतरद्रव्योपादानक्रिया परिग्रहसञ्ज्ञा । प्रश्न० २२२ ।

परिग्गहिया–परिग्रहो–धर्मोपकरणवर्जंवस्तुस्वीकारः धर्मोपकरणमूर्च्छा स च प्रयोजनं यस्याः सा पारिग्रहिकी, सम्यग्दृष्ट द्वितीया क्रिया । प्रज्ञा० ३३४ । प्रगृहीता–अभिग्रहयुक्ता । बृ० प्र० २२४ अ । परिग्रहे भवा पारिग्रहिकी । ठाणा० ४१ । पारिग्राहिका–विंशतिक्रियामध्ये द्वितीया । आव० ६१२ ।

परिग्गाहिय–परिगृहीतः–स्वीकृतः । ओघ० १४० ।

परिघट्टयंत–परिघट्यमानः । उत्त० ३०३ ।

परिघट्टिया–परिघट्टिता–संस्पृष्टा । जीवा० १९३ ।

परिघासियं–परिगुण्डितम् । आचा० ३२१ ।

परिघासेउं–परिघासयितुं–भोजयितुम् । आचा० २७२ ।

परिघित्तव्वा–परिग्राह्या भृत्यदासदास्यादि, ममत्वपरिगृहीतः । आचा० १७९ ।

परिघोलणं–परिघोलनं–विचारः । आव० ४२६ । नंदी० १६४ ।

परिघोलेमाणे–गमागमं कुर्वन् । औप० ६१ ।

परिचत्तकामभोग–परित्यक्तकामभोगः–सर्व्वविरतः । ठाणा० १२६ ।

परिचत्तलोगवावार–परित्यक्तलोकव्यापारः, मुनेर्लक्षणम् । आव० ४०० ।

परिचय–परिचयः–हेवाकः । बृ० प्र० २०७ अ ।

परिचयसंस्तव–सम्बन्धिसंस्तवः । पिण्ड० १३९ ।

परिचार–एकोनपञ्चाशततमकला । ज्ञाता० ३८ ।

परिचारग–परिचारकः–कामुकः, यः परिचारणां–मैथुनाभिष्वङ्गं करोति स । प्रश्न० ३० ।

परिचित–दिट्ठो भट्ठो पुव्वदृभुसितो पुव्व एगगामणिवासी वा । नि० चू० द्वि० ११५ आ । स्थिरः । आचा० १९५ ।

परिचितसूत्रता–उत्क्रमक्रमवाचनादिभिः स्थितसूत्रता । उत्त० ३९ ।

परिचोइओ–परिचोदितः । आव० १९५ ।

परिच्चइत्तए–परित्यक्तम् । ज्ञाता० १३४ ।

परिच्चाग–विवेगकरणं । नि० चू० प्र० १७ अ ।

परिच्छडो– । नि० चू० प्र० ७ आ ।

परिच्छा–तुलणा । नि० चू० प्र० २६४ अ ।

परिच्छाय–परिच्छेदः–आच्छादनं–कटकम्बादिभिरावरणम् । ज० प्र० २०९ ।

परिच्छिद–नैयत्ये व्यवस्थापितम् । विशे० ३०७ । आव० ५९१ ।

परिच्छी–प्रीतीच्छिकी । ग० ।

परिच्छेद–गणिः । नंदी० १९३ ।

परिच्छेय–परिच्छिकः–लघुः । औप० ६३ । परिच्छेको–लघुः । ज्ञाता० २२१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिजण–परिजनः–दासादिः । भग० ४८३ ।
परिजनकथा–परिजनसम्बन्धकथा । प्रश्न० १३९ ।
परिजवन–परिजल्पनं–परिजल्पः । नि० चू० प्र० १८४ अ ।
परिजविय–परैः–सार्धं भृशमुल्लापं कुर्वन् । आचा० ३८० ।
परिजाणामि–परिजानामि–आसेवनपरिज्ञानेन परिवर्धेऽहमित्यर्थः । आचा० २७१ ।
परिजाणिय–परियानं–देशान्तरगमनं तत्प्रयोजनं येषां तत् परियानिकं गमनप्रयोजनम् । ठाणा० ५१८ ।
परिजायकुसुमं–परिजातकुसुमम् । प्रज्ञा० ३६१ ।
परिजितं–समन्ताज्जितं, परावर्त्तनम् । अनु० १५ ।
परिजिय–परिचितः । ठाणा० ३४२ । परिजितम् । विशे० ४०५ ।
परिजुण्णा–परिद्यूना दारिद्र्यात् । ठाणा० ४७४ । परिसमंतओ जुण्णा–दुर्बलभावमुपगता । दश० चू० १३५ ।
परिजुन्न–परिजीर्णं–समन्ततोदुर्बलभावमापन्नम् । दश० २४८ । परिजीर्णं–समन्तात् हानिमुपगतम् । उत्त० ९२ ।
परिजुन्ना–दशविधप्रव्रज्यायां तृतीया,परिद्यूना–दारिद्र्यात्काष्ठहारकस्येव या सा परिद्यूना । ठाणा० ४७४ ।
परिजुसित–निसेवितः परिझुसियः–परिक्षीणो जरादिना । ठाणा० १८८ ।
परिजुसिय–पर्युषितं–रात्रिपरिवसनम् । ठाणा० २२० । परिजुषितः–सेवितः प्रीतो वा । औप० ४३ । सेवितः–पीतः । भग० ९२५ ।
परिजुसियसंपन्न–पर्युषितसम्पन्नः–पर्युषितं–रात्रिपरिवसनं तेन सपन्नः । ठाणा० २२० ।
परिजूरइ–परिजीर्यति–सर्वप्रकारां वयो हानिमनुभवति । उत्त० ३३८ ।
परिजूसियकामभोगसंओगसंपउत्ते–परिजुषितकामभोगसप्रयोगसंप्रयुक्तः–सेवितः प्रीतो वा यः कामभोगः–शब्दादिभोगो मदनसेवा । औप० ४३ ।
परिज्जए–कृष्णपुद्गलः । सूर्य० २८७ ।
परिज्झा–कामभोगपिपासा । दश० चू० १४ ।
परिज्झिओ–अनुगओ । दश० चू० १४ ।
परिझुसिय–सेवितः पीतः । भग० ९२५ ।
परिज्ञा–प्रार्थना । आचा० ३७९ ।
परिज्ञानं–परिपालनम् । आचा० १६९ ।
परिट्ठविज्ज–प्रतिष्ठापयेयुः–त्यजेयुः । आचा० ३८४ ।
परिट्ठविज्जमाणं–परित्यज्यमानं देवायतनाच्चतुर्दिक्षु क्षिप्यमानम् । आचा० ३३७ ।
परिट्ठविज्जा–प्रतिष्ठापयेत्–व्युत्सृजेत् । दश० १७८ ।
परिट्ठविय–परिष्ठापितम् । व्य० द्वि० ३०८ अ ।
परिट्ठविया–परिस्थापिता–पतिता परित्यक्ता । बृ० द्वि० ६७ ।
परिट्ठवे–परिष्ठापयति । ओघ० १५४ ।
परिट्ठवेइ–परिष्ठापयेत्–परित्यजेत् । आचा० ३५२ ।
परिट्ठवेज्जा–परिष्ठापयेद् बहिर्नीत्वा त्यजेत् । उपा० ४२ ।
परिट्ठवेत्ता–प्रतिस्थाप्य प्रतिनिवृत्य । ओघ० १७३ ।
परिट्ठावणं–परिस्थापनं–प्रदानभाजनगतद्रव्यान्तरोज्झनलक्षणम् । आव० ५७६ । पारितः–सर्वैः प्रकारैः स्थापनं अपुनर्ग्रहणतया न्यासः । आव० ६१९ ।
परिट्ठावणिया–परिस्थापनं–प्रदानभाजनगतद्रव्यान्तरोज्झनलक्षणं तेन निवृत्ता या परिस्थापनिका, येन भाजनेन भिक्षां ददाति तस्मिन् पतितोदानादि जातं सहसा परिस्थापितम् । आव० ५७६ ।
परिट्ठाविज्ज–परिस्थापयेद्–व्युत्सृजेत् । दश० २३१ ।
परिठाणुववाइयं–परिस्थानोपपातिकम् । प्रज्ञा० २०८ ।
परिणइ–विश्रम्भः । पउ० १३–२५ ।
परिणए–परिणतं–पर्यायान्तरमापन्नम् । भग० २४९ ।
परिणत–परिनिष्ठतां गतम् । अनु० १७७ ।
परिणता–सूत्रेण वयेण य वत्ता–व्यक्ता । नि० चू० प्र० २६ आ । धर्मश्रद्धालवः स्थिरचेतसश्च । बृ० द्वि० १६६ आ ।
परिणद्ध–परिणहनम् । ज्ञाता० १३३ । परिगतम् । ज्ञता० १६१ ।
परिणमति–परिणमति अतिक्रामति । ठाणा० ३४५ । परिणमति–भवति । भग० ५५ । परिणमति–प्रपद्यते । जीवा० ३०७ । परिणमति–परिसमाप्तिमुपयाति । सूर्य० १७२ । विपरिणामं भजते । व्य० द्वि० १६० अ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिणममाणंसि-परिणमति, पूर्यमाणे, परिपूर्णप्राये । जं० प्र० १९८ ।

परिणममाण-पूर्यमाणे-परिपूर्णप्रायः । ज्ञाता० ३४ ।

परिणमिज्जा-परिणमेत्-निवर्तेत । आचा० १२९ ।

परिणमिय-परिणामितः-पूर्वस्वभावत्याजनेनात्मभावनीतः। भग० ६८३ ।

परिणय-परिणतः-गीतार्थः । ओघ० ७९ । परिणतं-उदकदायकावस्थाप्राप्तम् । ठाणा० १४२ । परिणतः परिनिष्ठिततां गतः । जं० प्र० ३८७ । परिणतः-परिगतः औप० ७ । परिणतः-प्रस्तावादात्मरूपनामापन्नम् । उत्त० ६६२ । परिनिष्ठिततां गतः । भग० ६३१ । परिणतः अवस्थान्तरमापन्नः । ज्ञाता० १७४ । परिणतः-स्वकाय-परकायशस्त्रादिना परिणामान्तरमापादितः, अचित्तीभूतः । ठाणा० ५४ ।

परिणयवए-सम्पन्नावस्थाविशेषः, तरुणः परिणतवयः । प्रश्न० ३८ ।

परिणयवय-परिणयवयः-विगतयौवनः । ज्ञाता० १५७ ।

परिणयापरिणय-दृष्टिवादे सूत्रभेदे द्वितीयो भेदः । सम० १२८ ।

परिणाम-परिणामः-भावः । भग० ८९० । समन्तान्नमनं परिणामः-सुदीर्घकालपूर्वापरार्थावलोकनादिजन्य आत्म-धर्मः । आव० ४१५ । समन्तान्नमनम् । जं० प्र० (?) । सर्वथाऽपरित्यक्तपूर्वावस्थस्य यद्रूपान्तरेण भवनं परिणामः । अनु० १२० । संघर्षम् । आचा० ३६३ । परिणामः-परिसमापकः । जं० प्र० ५०५ । परिणामः, प्रज्ञापनायां त्रयोदशं पदम् । प्रज्ञा० ६ । परिणामः-इहलोकाद्या-शंसालक्षणः । आव० ८४८ । परिणामः-विश्रसारूपः । भग० १८८ । परिणामः-परिणतिः । औप० ९९ । परिणामः-अध्यवसायविशेषः । आव० ३३९ । परिणामं-पर्यायान्तरापत्तिलक्षणम् । दश० २३७ । परिणामः-आहारपरिपाकः । जं० प्र० १२७ । परिणामः-परिपाकः जं० प्र० १६८ । भवांतरगमणं । दश० चू० १२७ । परिः-समन्तान्नमनं परिणामः-सुदीर्घकालपूर्वापरार्थावलो-कनादिजन्य आत्मधर्मः । भग० ५७३ । परिणामः जीवपरिणतिः । जं० प्र० २७९ । परिणामः-आहार-पाकः । जीवा० २७७ । परिणामः-द्रव्यक्षेत्रादिसाम-ग्रीवशतस्तत्तद्रूपास्कन्दनम् । जीवा० ३७४ । परिणामः-आहारपरिणतिः । प्रश्न० ८३ । परिणमनं परिणतिः-प्रवृत्तिभावमङ्गलपरिणामः । विशे० ३४ । परिणामः-अवस्थातोऽवस्थान्तरगमनम् । ठाणा० २०१ । परिणामः-आकारबोधक्रियाभेदात् त्रिधा । ठाणा० १८३ । परि-णामः-सुदीर्घकालपूर्वापरार्थावलोकनादिजन्य आत्मधर्मः । ठाणा० २८३ । परिणामः पर्यायः स्वभावः धर्मः । ठाणा० ३७९ । परिणामः-विपाकः । ठाणा० ३७५ । परिणामः-अपरित्यक्तपूर्वावस्थस्यैव तद्भावगमनमित्यर्थः । ठाणा० ३७८ । परिणामः-धर्मः । सम० ४१ । सम्यक्परिणतजिनवचनास्तु मध्यस्थवृत्तिः परिणामः । विशे० ९३१ । परिणामं परिसमापकम् । सूर्य० १११ । नंदी० १४४ ।

परिणामक-तत्तथा श्रद्दधाति तमेवं श्रद्धानं रोचयंतं जानीहि परिणामकं साधुम् । बृ० प्र० १३२ अ ।

परिणामगा-अववादसद्दहणा । नि० चू० प्र० ३२४ आ ।

परिणामणय-परिणतिरिन्द्रियादिविभागः । भग० ६०४ । शब्दादिविषयोपभोगः । सम० १४६ ।

परिणामपयं-प्रज्ञापनानां त्रयोदशं पदम् । भग० ६४१ ।

परिणामिकारणं-मृत्पिण्डः । ठाणा० ४९४ ।

परिणामिणी-कायिकी । बृ० तृ० १४८ अ ।

परिणामिया-परिणामान्तरमापादितम् । भग० ५७९ ।

परिणामेइ-कथयति । आव० ४२३ ।

परिणामेज्जमाणे-परिणम्यमानः । ठाणा० ४७२ ।

परिणाह-परिणाहः-ज्याधनुः पृष्ठयोर्यत्प्रमाणम् । ठाणा० ६८ । परिणाहः-परिधिः । ठाणा० ६९ । परिणाहः-मध्य-परिधिः । जं० प्र० २३४ । परिणाहः-परिधिः । जं० प्र० ३१२ । परिणाहः-परिधिः । ठाणा० ६८ । विस्थारो । नि० चू० प्र० २६६ आ । नातिस्थौल्यं नातिदुर्बलता बाह्वोर्विष्कम्भोवा । बृ० प्र० ३०९ आ ।

परिणिट्ठिय-परिनिष्ठितं-सुनिष्पन्नम् । जं० प्र० २११ ।

परिणिट्ठिय-परिनिष्ठितं-सिद्धम् । उत्त० ११७ । परि-निष्ठितः-ज्ञाननिष्ठां प्राप्तः । आव० २६४ । परार्थ-मचित्तीकृतम् । बृ० द्वि० १०६ अ । परि-समन्तात्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निष्ठितः परिनिष्ठितो, ज्ञाननिष्ठां प्राप्त इत्यर्थः । आव० २६४ ।

परिणिव्वाइ–परिनिर्वाति सामस्त्येन शीतीभवति । प्रज्ञा० ६०६ ।

परिणिव्वाण–परिनिर्वाणं–मरणम् । भग० १२६ । मृतशरीरपरिष्ठापनम् । भग० १२६ ।

परिणिव्वाणयत्तियं–परिनिर्वाणं–मरणं तत्र यच्छरीरस्य परिष्ठापनं तदपि परिनिर्वाणमेव तदेव प्रत्ययो–हेतुर्यस्य सः परिनिर्वाणप्रत्ययम् । भग० १२६ ।

परिणिव्वाति–परिनिर्व्वाति–सकलकर्म्मकृतविकारव्यतिकरनिराकरणेन शीतिभवति । ठाणा० १८१ ।

परिणिव्वुय–परिनिवृतः-कषायान्युपशमनः–समन्तात् शीतीभूतः । उत्त० ३४१ ।

परिण्णता–अभिग्गहिया । नि० चू० द्वि० १११ अ ।

परिण्णा–परिज्ञा–अनशनम् । बृ० द्वि० २१५ अ । परिज्ञादिवसचरिमप्रत्याख्यानम् । बृ० तृ० ११७ आ । परिज्ञानवान्–अनशनी । बृ० तृ० ५ आ । प्रत्याख्यानं तपो वा । बृ० तृ० १५० अ । परिज्ञा । आव० ६३७ । प्रत्याख्यानम् । व्य० प्र० ११५ अ । नि० चू० प्र० १३४ अ । अणासगं । नि० चू० प्र० ३५२ आ । पच्चक्खाणं । नि० चू० प्र० ३०७ आ । पच्चक्खाणं । नि० चू० तृ० १३३ अ । परिज्ञा–अन्तक्रियालक्षणा सम्यग्विधेया । ठाणा० ४४५ । परि–समन्ताज्ज्ञानं पापपरित्यागेन परिज्ञा सामायिकमिति । आव० ३६४ ।

परिण्णाय–परिज्ञाय–परिज्ञया ज्ञात्वा । भग० १०० । परिज्ञातं–प्रत्याख्यातम् । आचा० ६६ । परिज्ञातः–तत्त्वस्वरूपादिपरिज्ञानात्प्रत्याख्यातः । सम० २० ।

परिण्णो–अणसणोवविट्ठो । नि० चू० प्र० ८६ अ ।

परितंत–परितान्तः–सर्वतः खिन्नः । ज्ञाता० १३६ । परिश्रान्तः । दश० १०५ । परिश्रान्तः । आव० १६२ । परितान्तः-सर्वथा श्रान्तः । आव० ५३५ । परिश्रान्तः–गुरुवैयावृत्यकरणादिना । आव० ७८४ । परितान्तः–खिन्नः । उत्त० १२६ । रोगार्तः । ओघ० २०० । परितान्तः–सर्वथा खिन्नः । ज्ञाता० २२७ । उद्विग्नाः । बृ० तृ० ५६ आ ।

परितण–परिजनः–शिष्यवर्गः । ठाणा० ४४१ ।

परितलिय–परितलितं–सुकुमालिकादि । ओघ० ४६ ।

परितात–पर्यायः जन्मकालः प्रव्रज्याकालो वा । ठाणा० ३५८ । परिवारः–परिकरः । ठाणा० २७२ ।

परिताभाए–परिवेसयति । नि० चू० प्र० ३५ अ ।

परितायति–परिसमन्तात् पीडयति–तापयति । आचा० ७१ ।

परितायथेरा–पर्यायस्थविराः–विंशतिवर्षप्रमाणप्रव्रज्यापर्यायवन्तः । ठाणा० ५१६ ।

परितारण–वेदोदयप्रतीकारः, तत्र स्त्रीपुंसयोः कायेन परिचारणा–मैथुनप्रवृत्तिः । ठाणा० ३०३ ।

परिताव–निट्ठुरवायणतज्जियस्स जो महणं संतावो सो । दश० चू० १३६ । परितापः–रविकिरणादिजनितस्तापः । उत्त० ८६ । परितापः–पीडाकरणम् । भग० १८१ ।

परितावणेअण्हओ–परितापनपूर्वक आश्रवः परितापनाश्रवः प्राणवधस्य षड्विंशतितमः पर्यायः प्रश्न० ६ ।

परितावणा–परितापना दुःखासिका । ओघ० ६५ ।

परितावित्र–परितापितः क्वथितम् । बृह० प्र० २३४ आ । परितलितम् । ओघ० ६७ ।

परितावेइ–परितापयति–समन्ततः पीडयति । भग० २३० ।

परितावेति–परितापयति–पीडयति । प्रज्ञा० ५६२ ।

परितावेह–परितापयथ–समन्ताज्जातसन्तापां कुरुथ । भग० ३८१ ।

परितासं–परित्रासम् । ज्ञाता० ३६ ।

परितियंकटनं–कटादिभिः समन्ततः पार्श्वानामाच्छादनम् । बृ० प्र० ६२ अ ।

परित्त–परित्तः–परिमितः । राज० ४७ । परितः–समस्तदेवादिभवाल्पतापादनेन समन्तात्खण्डितः, परिमित इति । उत्त० ७०८ । त्राणम् । पउ० ३१-२१ । परित्तः–प्रत्येकशरीरी शुक्लपाक्षिकश्च । प्रज्ञा० १३ । परीत्तं–नियतपरिमाणम् । भग० २४८ । प्रत्येकम् । पिण्ड० १४६ । परीत्तः–प्रत्येकशरीरी । जीवा० ४८ । परीतः–भवकायभेदभिन्नः । प्रज्ञा० १३६ । परीतं–प्रदेशतः परिमितम् । भग० २४८ । परीतः–परिः–समन्तादितो–गतः प्रभृष्ट इति । सूत्र० ३६३ । परीत्तः–प्रत्येकशरीरी–आभि-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निबोधिकज्ञानविचारे पञ्चदशमद्वारम् । आचा० २१ । परीतः-पृथग्शरीराणामेकद्वित्रिअसंख्येयानां जीवानामाश्रयः । ओघ० ३४ । विशे० ५४४ । परिमितोपधिः । बृ० द्वि० १६ आ । नि० चू० प्र० ६५ आ । एकप्रदेशिकत्वेन विष्कम्भाभावेन परिमितः । भग० ५५६ ।

परित्तजीव-प्रत्येकशरीरजीवात्मकम् । प्रज्ञा० ३६ ।

परित्तमिस्सय-परीत्तविषयं मिश्रकं परीत्तमिश्रकं यथा अनन्तकायलेशवति परित्तो परीत्तोऽयमित्यभिदधतः ।ठाणा० ४६१ ।

परित्तमिस्सिया-प्रत्येकवनस्पतिसङ्घातमनन्तकायिकेन सह राशीकृतमवलोक्य प्रत्येकवनस्पतिरयं सर्वोऽपीति वदता प्रत्येकमिश्रिता । प्रज्ञा० २५६ ।

परित्तमीसग-परीतमिश्रा-सत्यामृषाभाषाभेदः । दश० २०६ ।

परित्तमीसय-सत्यामृषाभाषायां अष्टमीभाषा । ठाणा० ४६० ।

परित्तसंखेज्जय-परीत्तासङ्ख्येयकं, संख्याविशेषः । अनु० २३६ ।

परित्तसंसारिता-परीत्तसंसारिकाः-संक्षिप्तभवाः । ठाणा० ६० ।

परित्तसंसारी-परीत्तसंसारी-कतिपयभवाभ्यन्तरमुक्तिभाग् । उत्त० ७०८ ।

परित्ता-परीत्ताः-प्रत्येकशरीराः । ठाणा० १३२ । संख्येया आद्यन्तोपलब्धेर्नानन्ता । सम० १०८ । परिमिता । नंदी० २१० ।

परित्ताणंतय-परीत्तानन्तकं सङ्ख्याविशेषः । अनु० २४२ ।

परित्तास-परित्रासः-आकस्मिकं भयम् । जं० प्र० १५० ।

परित्तीकरेति-स्तोकं कुर्वति । भग० ६५ ।

परित्तीकुर्वति-संसारसागरं ह्रस्वनां नयति । सम० १२७ ।

परिदाह-परिदाहः-बहिः स्वेदमलो बहिर्वा अन्तश्च तृष्णाया जनितदाहस्वरूपः । उत्त० ८६ ।

परिदाहपडियाए- । आचा० ३८० ।

परिदेवइत्ता-परिदेवयेत्-स्वेदं यायात् । दश० २५३ ।

परिदेवण-परिदेवनं-पुनःपुनः क्लिष्टभाषणम् । आव० ५८७ ।

परिदेवणता-परिदेवनता-पुनःपुनः क्लिष्टभाषणम् । ठाणा० १८६ ।

परिदेवणया-परदेवनता-पुनःपुनः क्लिष्टभाषणता । भग० ६२६ ।

परिदेविय-परिदेवितः-विलपितः । प्रश्न० २० ।

परिद्युनः-परिपेलवः-निःसारः । आचा० ३५ ।

परिधानीय-शृङ्खलकम् । जं० प्र० २७५ ।

परिनिट्ठित-परिज्ञाय-परिज्ञातः परिनिष्ठितः-अप्रतिष्ठितो वा । व्य० द्वि० ३६० आ । यथायोगं विधिर्यतनया वा सम्यक् परिज्ञातः-प्रतिष्ठितः । व्य० प्र० ३६० आ ।

परिनिट्ठिय-परिनिष्ठितः कृतः । ओघ० १६६ ।

परिनिर्वाप्यवाचना-परीति सर्वप्रकारं निर्वापयतो निरो निर्दग्धादिषु भृशार्थस्यापि दर्शनात् भृशं गमयतः-पूर्वदत्तालापकादि सर्वात्मना स्वात्मनि परिणमयतः शिष्यस्य सूत्रगताशेषविशेषग्रहणकालं प्रतीक्ष्य शक्यनुरूपप्रदानेन प्रयोजकत्वमनुभूय परिनिर्वाप्य वाचना-सूत्रप्रदानम् । उत्त० ३६ ।

परिनिव्वाइ-स एव तेषां कर्मपुद्गलानामनुसमयं यथा-यथा क्षयमाप्नोति तया तथा शीतीभवन् परिनिर्वातीति । भग० ३४ ।

परिनिव्वाइस्सति-परिनिर्वास्यति- कर्मकृतविकारविरहाच्छीतो भविष्यति । सम० ७ ।

परिनिव्वाण-परि-समन्तान्निर्वाणं-सकलकर्मकृतविकारनिराकरणतः-स्वस्थीभवनं परिनिर्वाणम् । ठाणा० २५ । परिनिवृतिः-परिनिर्वाण आनन्दसुखावाप्तिः । सूत्र०३४१ । परिनिर्वाणं-सुखम् । आचा० ७१ ।

परिनिव्वाणवत्तिय-परिनिर्वाणमुपरतिर्मरणं, तत्प्रत्ययो-निमित्तं यस्य स परिनिर्वाणप्रत्ययः मृतकपरिष्ठापना कायोत्सर्गः । ज्ञाता० ७७, १६८ ।

परिनिव्वाति-परिनिर्वाति सर्वथा सिद्धिं प्राप्नुवति । दश० ११६ ।

परिनिव्वायति-परिनिर्वाति कर्मदावानलोपक्षमेन । उत्त० १७२ । परि-समन्तात् निर्वाति, सर्वदुःखानामन्तं करोति। आव० ७६१ ।

परिनिव्वुओ-परिनिर्वृतः-क्रोधादिज्वालानिर्वाणात्। आचा०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५० ।

परिनिव्वुड-परिनिर्वृत्तः-रागद्वेषविरहाच्छातीभूतः । सूत्र० ६४ । परिनिर्वृतः-कर्म्मकृतविकारविरहात् स्वस्थीभूतः । ठाणा० ३६ । भग० १११ । स्वास्थ्यातिरेकात् । ज्ञाता० १०३ ।

परिनिव्वुडा-जाइजरामरणरागादीहिं सव्वप्पगारं णति विप्पमुक्का । दश० चू० १२ आ ।

परिन्न-परिज्ञा-भक्तप्रत्याख्यानम् । बृ० द्वि० ५ अ ।

परिन्नचारि-परिज्ञानं परिज्ञा-सदसद्विवेकस्तया चरितुं शीलमस्येति-परिज्ञाचारी ज्ञानपूर्वं क्रियाकारी । आचा० ४३१ ।

परिन्ना-परिज्ञा वस्तुस्वरूपस्य ज्ञानं-तत्पूर्वकं च प्रत्याख्यानम् । ठाणा० ३१७ । परिज्ञा-ज्ञानपूर्वकं प्रत्याख्यानम् । ठाणा० ४४४ । परिण्णा-परिज्ञा-प्रत्याख्यानम् । ओघ० १९९ ।

परिन्नाविवेग-परिज्ञाविवेकः परिज्ञानविशिष्टता, कस्यचित् कोऽप्यव्यवसायः संसारवैचित्र्यहेतुः । आचा० २११ ।

परिपग-विपाकः । व्य० प्र० २० आ ।

परिपच्छति-पर्यवश्यति । उ० मा० गा० १३ ।

परिपट्टगा-वस्त्रपरावर्तं गृह्णन्ति ये ते परियट्टगा, आभरणमंडयं । नि० चू० प्र० २२७ अ ।

परिपडइ-परिपतति-तिर्यग् निपतति । जीवा० २४८ ।

परिपडति-परिपतति तिर्यग् निपतति । जं० प्र० ४१९ ।

परिपाण्डुः- । प्रज्ञा० २५९ ।

परिपिंडित-अव्यवच्छिन्नं करचरणं वचनकरणं वा यस्य । बृ० तृ० ११ आ ।

परिपिंडिय-परिपिण्डितं-प्रभूतानेकवन्दनेन वन्दते अवर्तान् व्यञ्जनाभिलापान् वा व्यवच्छिन्नान् कुर्वन्, कृतिकर्मणि चतुर्थः दोषः । आव० ५४३ ।

परिपिरिय-कोकिलपुटकावनद्धमुखो वाद्यविशेषः । भग० २१६ ।

परिपुण्ण-परिपूर्ण-संभिन्नम् । प्रज्ञा० ५४१ ।

परिपूणग-परिपूणकः-घृतपूर्णक्षीरकगालनकं चिटिकावासो वा । आव० १०२ । परिपूणको नाम सुघरीचिटिकाविरचितो नीडविशेषः । विशे० ६३२ । सुघरीचिटिकागृहम् । विशे० ६२७ । परिपूर्णकः-येन घृतपूर्णयोग्यं पानं गल्यते । बृ० प्र० ५५ अ । परिपूर्णकः-घृतक्षीरगालनकं सुगृहाभिधचटिकालायो वा । (?) ।

परिपूय-परिपूतं-वस्त्रेण गालितम् । औप० ६४ ।

परिपूर्णेन्द्रियता-अनुपहतचक्षुरादिकरणता । उत्त० ३६ ।

परिपेरंत-पर्यन्तेषु परितः । आव० २१७ । परितः पर्यन्ते । आव० २१९ । ओघ १८० ।

परिपेलवरसः-मन्दानुभावः । भग० ३५ ।

परिफल्गु-निस्सारम् । अनु० २६१ ।

परिफल्गुवचसः-परिव्राजकादयः । आचा० ४७ ।

परिब्भट्ठय-परिभ्रष्टः । आव० ४२२ ।

परिब्भमति-परिभ्राम्यति । आव० २९३ ।

परिब्भुसित-बुभुक्षितः । नि० चू० प्र० १५१ आ ।

परिभज्जमाण-परिभृज्यमानः । आव० ८१४ ।

परिभट्ठया-परिभ्रष्टा । आव० ४२९ ।

परिभव-खिंसना । ओघ० २१५ । परिभवः-विधेयकरणम् । आव० ७५९ ।

परिभवणिज्जे-परिभवनीयोऽनुत्थानादिभिः । ज्ञाता० ६४ ।

परिभवह-परिभवः समस्तपूर्वोक्तपदाकरणेन । भग० २१९ ।

परिभाइज्जमाणं-परिभज्यमानं-विभज्यमानं-स्तोकं स्तोकमन्येभ्यो दीयमानम् । आचा० ३३७ ।

परिभाइत्ता-परिभाज्य-विभागीकृत्य । आचा० ४०१ ।

परिभाइयपुव्व-पूर्वमेवास्माभिरियं भातृव्यादेः परिकल्पितेत्येवंभूता भवेत् । आचा० ३६९ ।

परिभाएउं-परिभाजयितुं दायादादीनां परिभाजने तत्परिणामं दन्तवन्तौ । ज्ञाता० ३९ ।

परिभाएज्जमाण-पार्श्ववर्तिभ्यो मनाक् मनाक् दीयमानं परिभाज्यमानम् । जं० प्र० ३६ । परिभज्यमानं-पार्श्ववर्तिभ्यो मनाक् मनाक् दीयमानम् । जीवा० १९२ ।

परिभाएत्ता-दातव्यं विभज्य, दातव्यद्रव्यात्किञ्चिदंशं गृहीत्वेत्यर्थः । आचा० ३५५ ।

परिभाएह-परिभजध्वं विभज्य । आचा ३३९ ।

परिभाजयितुं-दायादादीनां परिभाजने तत्परिणामं दन्तवन्तौ । ज्ञाता० ४४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिभामिया–परिभ्रामिताः कृतप्रभाभ्रंशाः । ज्ञाता० २७।
परिभायंतियं–परिभाजयन्तिकां–पर्वदिने स्वजनगृहेषु खण्डखाद्यादेः परिभाजनकारिकां महानसे नियुक्ता । ज्ञाता० ११७ ।
परिभावणाओ–आभाव्यार्थपरिहारेण व्यक्रियाः । औप० १०३ ।
परिभावितं–विचारितम् । नंदी० १५२ ।
परिभावेमाण–परिभावयन् ददत् । भग० १६४ ।
परिभाव्य–विचार्य । नंदी० १६७ ।
परिभाषा–लोकन्यायः । आव० ४८४. २५७ ।
परिभास–परिभाषणं परिभाषा अपराधिनं प्रति कोपाविष्कारेण मा यासीति अभिधानम् । ठाणा० ३९९ ।
परिभासणा–परिभाषणा–भरतकाले दण्डनीतिः । जं० प्र० १३४ । परिभाषणा–परिभाषणं परिभाषा–कोपाविष्करणेन मा यास्यसीत्यपराधिनोऽभिधानम् । आव० ११४ ।
परिभासी–परिभाषी–पराभवकारी । आव० ६५४ ।
परिभासेइ–परिभाषते–निन्दति । सूत्र० ४२५ ।
परिभुंजणया–परिभोजनता–अवस्थानम् । सम० ४५ ।
परिभुंजमाण–परिभुज्यमानं–परिभोगायोपयुज्यमानम् । जं० प्र० ३६ ।
परिभुंजेमाण–भोज्यं भुञ्जानः–परिभुञ्जानः । भग० १६४ ।
परिभुक्ता– । बृ० प्र० १०४ आ ।
परिभुङ्क्ते–आसेवते । ठाणा० ३०० ।
परिभुज्जइ–परिभुज्यते बध्यते छोड्यते च । पिण्ड० १०७ ।
परिभुज्जति कम्मं ण कारविज्जति । नि०चू०द्वि० १०६ अ ।
परिभुज्जमाणं–परिभुज्यमानं परिभोगायोपभुज्यमानम् । जीव० १९२ ।
परिभुत्तं–परिभुक्तम् । आचा० ३२५ ।
परिभोग–परिभोगः–उपयोगः । पिण्ड० २० । परिभोगः–पुनःपुनर्भोगः, बहिर्भोगो वा । आव० ८२८ । तेन कार्यकारणमित्यर्थः । नि० चू० प्र० १३० आ । परिभोगः पुनःपुनर्भोगः । भग० २९७ ।
परिभोगपरिहरण–यत् सौत्रिककल्पादिपरिभुङ्क्ते प्रावृणोति । व्य० प्र० ४५ अ ।
परिभोगेसणा–परिभोगः–आसेवनं तद्विषयैषणा परिभोगैषणा । उत्त० ५१६ ।
परिभ्रष्टः–व्यपगतः । जीवा० १०३ ।
परिमंडल–परिमंडलं–वृत्तभावः । औप० ६७ । परिमाण्डल्यं–वृत्तत्वम् । जं० प्र० ३९७ । वृत्तम् । प्रश्न० ७५ । परिमण्डलः–संस्थानविशेषः । प्रज्ञा० २४२ । षट्संस्थाने प्रथमः । भग० ८५८ ।
परिमंडिया–परिमण्डिका–धात्रीविशेषः । ज्ञाता० ४१ ।
परिमण्डलसण्ठाणपरिणया–परिमण्डलसंस्थानपरिणता वलयवत् । प्रज्ञा० ११ ।
परिमद्दणं–परिमर्दनं–सर्वतः शरीरमलनम् । प्रश्न० १३७ । परिमर्दनं–पिष्टादिमलनमात्रम् । ठाणा० २४७ ।
परिमद्दा–पुणो पुणो सा संवाहणा । नि० चू० प्र० ११६ अ । अणेगसो संबाधेति सा । नि० चू० प्र० १८८ अ ।
परिमन्थू– । ठाणा० ३४३ ।
परिमाण–परिमाणं–नियमनम् । ठाणा० २९१ ।
परिमाणकड–दशधाप्रत्याख्याने सप्तमम् । परिमाणसंख्यानं दत्तिकवलगृहभिक्षादीनां कृतं यस्मिंस्तत्परिमाणकृतम् । ठाणा० ४९८ । परिमाणकृतं–दत्त्यादिकृतपरिमाणम् । आव० ८४० ।
परिमाणकय–दत्त्यादिकृतपरिणामम् । भग० २९६ ।
परिमासा–परिमर्शो–जलधिजलस्पर्शः । ज्ञाता० १५७ ।
परिमितपिंडवाय–परिमितपिण्डपातः–अर्द्धपोषादिलाभः । औप० ३९ ।
परिमितपिंडवाविते–परिमितो–द्रव्यादिपरिणामतः पिण्डपातो–भक्तादिलाभो यस्यास्ति स परिमितपिण्डपातिकः । ठाणा० २९८ ।
परिमियपिंडवाइय–परिमितपिण्डपातिकः परिमितगृहप्रवेशादिना वृत्तिसङ्क्षेपवान् । प्रश्न० १०६ ।
परिमोस–परिमोषः । उत्त० २१४ ।
परियंचिऊणं–परीत्य । आव० १९६ ।
परियंतजगं–पर्यन्तयुगं कलियुगम् । प्रश्न० ५१ ।
परियंति–पर्यटन्ति । उत्त० ५५३ ।
परियंदा–रमयति क्रीडयति उल्लापयति वा । आव० ८२४ ।
परियंदिज्जमाण–स्तूयमानः । राज० १४८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिय-पर्यायः द्वारम् । सूत्र० ५ ।

परियच्छिज्जइ-परीक्ष्यते परिज्ञायते । आव० ६२८ ।

परियट्टं-परिवर्तनम् । विपा० ३७ ।

परियट्टइ-पर्यटति पौनःपुन्येन भ्रमति । भग० ६५ ।

परियट्टण-पूर्वाधीतस्यैव सूत्रादेरविस्मरणनिजरार्थमभ्यासः परिवर्तनम् । ठाणा० १६० ।

परियट्टणा-परिवर्तना सूत्रस्य गुणनम् । प्रश्न० १२६ । परिवर्तना-प्रच्छनाविशोधितस्य सूत्रस्य मा भूद्विस्मरणं इति सूत्रस्य गुणनम् । ठाणा० ३४६ । परावर्तना-गणनम् । उत्त० ५८४ ।

परियट्टणाए- । ज्ञाता० ६१ ।

परियट्टिउं-परिकर्षयितुं, परिवर्द्धयितुं वा परिपालयितुमिति । प्रश्न० १५३ ।

परियट्टिए-परिवर्तितं साधुनिमित्तं कृतपरावर्तं, दशम उद्गमदोषः । पिण्ड० ३४ ।

परियट्टिय-अप्पणिज्जं देति परसंतियं गेण्हावेति त्ति परियट्टियं । नि० चू० द्वि० २०५ अ ।

परियट्टियलावण्णं-परिवर्तितं कालपरिणत्याऽन्यथाकृतं लावण्य-अभिरामगुणात्मकमस्येति परिवर्तितलावण्यम् । उत्त० ३३४ ।

परियट्टेइ-परिवर्त्तयति-गुणयति । ओघ० १६६ ।

परियडति-सातत्येन पर्यटति । उत्त० २६६ ।

परियण-परिजनः दासादिः । भग० १६३ । परिजनः-परिवर्गः । उत्त० ३०७ ।

परियणादिकं-जेण दोसा समिज्जंति तं च परियणादिकं । नि० चू० द्वि० ६६ आ ।

परियत्तंति-परियट्टंति य परिवर्तमाना अतिक्रामन्ति । उत्त० ४७६ ।

परियत्त-संभावना । बृ० द्वि० १२ आ (?) ।

परियत्तणं-इयरदिसीकरणं । नि० चू० प्र० २११ अ ।

परियत्ते-परावृत्तमधोमुखं स्थितम् । ओघ० १६१ । परिवर्तिते अधोमुखीकृते । ओघ० १६८ ।

परियत्तेति-अधोदेशस्य तथैव पुनःस्थापनेन परिवर्तयति । ज्ञाता० ६४ ।

परियर-परिकरः-कवचः । प्रश्न० ४७ । परिकरः । उत्त० २१६ ।

परियरबंध-परिकरबन्धः-विशिष्टनेपथ्यरचना । अनु० १४३ ।

परियल्ल-पर्यटनः । नि० चू० प्र० १८५ आ । परावर्तकः । वेष्टनम् । ओघ० २१४ ।

परियस्सअ-परिपार्श्वतः । भग० ६३० ।

परियाइए- । सूर्य० ३ ।

परियाइणया-पर्यादानता पर्यादानं-यथायोगमङ्गप्रत्यङ्गैर्लोभहारादिना समन्ततः पुद्गलादानं तद्भावः । प्रज्ञा० ५४४ ।

परियाइत्त-पर्यादाय-परिगृह्य । भग० १८८ ।

परियाइय-पर्यायमतीताः पर्यायातीताः पर्याप्ता वा सामस्त्यगृहीताः कर्मपुद्गलवत् । ठाणा० ६४ । पर्यापनं-अङ्गप्रत्यङ्गैः समन्तादापानम् । भग० ६०४ पर्याप्तम् । राज० ११३ ।

परियाइयाइं-पर्याप्तानि जीवेन सर्वावयवैरात्तानि तद्रसादानद्वारेण । भग० ५६६ ।

परियाइयकंडकलावा-विचित्रकाण्डकलापयोगात् पर्याप्तकाण्डकलापः । जीवा० २५६ ।

परियाइयणय-पर्यादानमङ्गप्रत्यङ्गैः समन्तात्पा(दादा)नमित्यर्थः । सम० १६४ ।

परियाए-पर्यायः अवस्था । भग० ६७३ ।

परियाएति-पर्यादत्ते । भग० १५५ ।

परियागं-पर्यायान् विचित्रपरिणामान् । ठाणा० ४६६ ।

परियागते-पर्यायः प्रसवकालक्रमेणागतः पर्यायागतः । ज्ञाता० ९१ ।

परियागयं-पर्यागतं । प्रज्ञा० ३२८ । पर्यायागतः-पर्यायगतः वा सर्वनिष्पन्नतां गतः । ज्ञाता० ११६ ।

परियागववत्थणा-पज्जोसवणा । जम्हा पज्जोसवणादिवसे पव्वाज्जापरियागो व्यपदिश्यते-व्यवस्थाप्यते संखा एत्तियो वरिसा मम उवट्ठाविस्सति तम्हा परियागवत्थवणा । नि० चू० प्र० ३३६ आ ।

परियाणति-परिजानति-अनुमन्यते । राज० ४८ ।

परियाणाति-परिजानाति-प्रत्यभिजानाति । ज्ञाता० ३४ ।

परियाणामि-ज्ञपरिज्ञया परिज्ञाय प्रत्याख्यानपरिज्ञया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत्याख्यामि प्रतिजानामि । आव० ७६१ ।

परियाणिया–परियायते–गम्यते यैस्तानि परियानानि तान्येव परियानिकानि परियानं वा–गमनं प्रयोजनं येषां तानि परियानिकानि यानकारकाभियोगिकपालकादिदेवकृतानि । ठाणा० ४४० ।

परियादिया–विवक्षितं पर्यायमतीताः पर्यायातीताः पर्याप्ता वा सामस्त्यगृहीता कर्मपुद्गलवत् । ठाणा० ६३ ।

परियानं–तिर्यग्लोकादिवितरणादि । ठाणा० १४६ । देशान्तरगमनम् । ठाणा० ५२८ । विविधव्यतिकरपरिगमनम् । भग० ६६१ ।

परियायंतकरभूमी–पर्यायः तीर्थंकरस्य केवलित्वकालस्तमाश्रीत्यान्तकरभूमिर्या सा । ज्ञाता० १५४ ।

परियाय–पर्यायः अवस्था प्रव्रज्यादिलक्षणा । ठाणा० २०७ । पर्यायः–श्रामण्यः । आचा० २४३ । पर्यायः–प्रव्रज्याप्रतिपत्तिलक्षणः । आव० २६६ । पर्यायः–प्रव्रज्या सम्यक्समितया वा पर्यायः । आचा० २०२ ।

परियायइ–पर्यादत्ते सामस्त्येनोपादत्ते निधत्तादिकरोति । भग० २६१ ।

परियार–परिचारः–प्रवीचारः । प्रज्ञा० ५४६ । परिवारः–स्वकपरिवारः । भग० ५०६ । परिचारः–वृत्तिः, खड्गादिकोशो वा । प्रश्न० १३ ।

परियारग–परिचरति सेवते स्त्रियमिति परिचारकः । ठाणा० १०० ।

परियारण–सागारियसेवणं । नि० चू० प्र० ११३ अ ।

परियारणय–शब्दादिविषयोपभोगः । भग० ६०४ ।

परियारणा–यथायोगं शब्दादिविषयोपभोगः । प्रज्ञा० ५४४ । परिचारणा–देवमैथुनसेवा । ठाणा० १०६ । परिचारणा–कामासेवा । ठाणा० १७३ । आसेवना । आचा० ३३१ ।

परियारणासद्दं–पुरिसेणित्थी परिभुज्जमाणा जं सद्दं करेंति । नि० चू० प्र० ११२ आ ।

परियारसद्दो–पुरुषेण स्त्रीभुज्यमानायां शब्दं करोति स परियारशब्दः । बृ० द्वि० ५७ अ ।

परियारिया–पडिभुज्जमाणि । नि० चू० प्र० १०६ आ ।

परियारेई–मैथुनं सेवते । ठाणा० ६२ । परिचारयति–परिभुङ्क्ते । भग० १३२ ।

परियारेमाणे–परिचारयन्–कामक्रीडां कुर्वन् । भग० ५७६ ।

परियाल–परिवारः । भग० १६३ ।

परियावज्जण–पर्यापद्यते–कोथमायाति । पिण्ड० ६० । पर्यापदनं पर्यापत्तिरासेवेतियावत् । ठाणा० १७४ ।

परियावज्जिज्जा–पर्यापद्येरन्-भवेयुः । आचा० ४०१ ।

परियावज्जेज्ज–पर्यापद्येत जलरूपतया परिणमेत् । अनु० १६२ । पर्यापद्येत–विनश्येत् । भग० २३३ ।

परियावण–परितापः–पीडाकरणम् । प्रज्ञा० ४३५ ।

परियावणियं–परियापनिका च कालान्तरं यावत् स्थितिरित्युत्थानपरियापनिकं च तत्परिकथयतीति । ज्ञाता० १८६ ।

परियावणिया–परितापनं परितापः–पीडाकरणमित्यर्थः, तस्मिन् भवा तेन वा निर्वृत्ता परितापनमेव वा पारितापनिकी । चतुर्थी क्रिया । प्रज्ञा० ४३५ ।

परियावण्णं–पर्यापन्नम् । आव० ७४२ । पर्यापन्नम् । आव० ७४३ । पर्यापन्न–विवर्णी भूतम् । व्य० द्वि० २४६ आ । जहा रुहिरं चेव पूयपरिणामेन ठियं । नि० चू० तृ० ७२ आ । परिष्ठानम् । बृ० द्वि० ६४ आ ।

परियावन्नं–उववासिगमादी आवलिया तेसिं भोतिगादि आवलिया एय पुछिऊण परिट्ठावणाए गतो एतदेव परियावन्नं । नि० चू० द्वि० १४ आ । विस्मृतं–पर्यापन्नं । बृ० तृ० ४७ अ । पर्यापन्नं–लब्धम् । आचा० ३५२ । पर्यायापन्नः–सूक्ष्मपर्यायमापन्नः–भावसूक्ष्मः । दश० १२२ ।

परियावन्नग–पर्यापन्नः–व्यापिनः । प्रज्ञा० ७४ ।

परियावसह–पव्वज्जापरियाए ट्ठिता तेसिं आवसहो परियावसहो । नि० चू० प्र० १८३ अ ।

परियावह–पर्यावसथः–मठः । आचा० ३६५ । पर्यावसथः–भिक्षुकादिमठः । आचा० ३४८ ।

परियावाए–परिवादाय दस्युरयं रिशुनो वेत्येवं मर्मोदघट्टनाय । आचा० १६३ ।

परियाविज्ज–परितापयेत्–पीडामुत्पादयेत् । आचा० ४२८ ।

परियाविज्जति–परिताप्यते । आव० ३७१ । पर्यापद्यते । आव० ४०० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परियाविया-परितापिता-पीडिता । ७६६ ।
परियास-पर्यासः-परिक्षेपः, परिभ्रमणं वा । सूत्र० २२१ ।
परिरओ-परिरयः-परिधिः । उत्त० ६८५ ।
परिरब्भमाण-रूढ्यमानः । आव० ८१५ ।
परिरय-परिभ्रमणम् । बृ० प्र० १५६ आ । त्रीन्वारान् भ्रमणम् । बृ० द्वि० १८७ आ । परिरयः-परिधिः । सम० ११४ । मार्गान्तरेण गमनम् । बृ० द्वि० ६४ अ । परिरयः-परिक्षेपः । जं० प्र० २१ । परिरयः-भ्रमणम् । ओघ० २० । परिरयः-भ्रामड्यः । ओघ० ५९ । परिरयः-गिरिसरित्परिरयः । परिहरणायाः चतुर्थो भेदः । आव० ५५२ । गिर्यादेः । ओघ० २० ।
परिरयवुड्ढी-परिरयवृद्धि । सूर्य० ३८ ।
परिलितणिद्धो-परिलीयमानगृद्धः । प्रश्न० ५० ।
परिलित-परिलीयमाना अन्तत आगत्य लयं यान्तः । ज्ञाता० ५ । परिलिताः परिलीयमानः-संश्लिष्यतः । ज्ञाता० २७ ।
परिली-गुच्छाविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।
परिल्लं-चरमम् । आव० ६०६ ।
परिवंदण-परिवन्दनं-संस्तवः-प्रशंसा । आचा० २६ । परिवन्दनं-परिसंस्तवः । आचा० १६६ ।
परिवच्छिय-परिक्षिप्तः-परिगृहीतः । ज्ञाता० २२१ । परिपक्षितः-परिगृहीतः । ३१७ ।
परिवज्जियाण-परिवर्ज्यापमानं अवगणय्य । आचा० ३०६ ।
परिवट्टणं-परिवर्त्तनं-पुनर्वामपार्श्वेनैव वर्त्तनम् । आव० ५७४ । परिवर्त्तनं-द्विगुणत्रिगुणादिभेदभिन्नम् । आचा० १०० । परिवर्त्तनं-पुनःपुनर्भवनम् । प्रश्न० २२ ।
परिवट्टणा-परिवर्त्तना-परिवर्त्तनं, अभ्यसनं, गुणनमिति वा । दश० ३२ ।
परिवट्टा-परमाणूनां मीलनानि । भग० ५६८ ।
परिवट्टेति-पुणो पुणो परिवट्टेति । नि० चू० प्र० ११६ आ ।
परिवत्थ-निर्णयः । बृ० द्वि० ३ आ ।
परिवत्थिय-परिपक्षितं-परिगृहीतं-परिवृत्तम् । ओप० ६२ ।
परिवत्थुणिद्देसो-भद्दं तं चेव भणति तुमं जातिहीनो । नि० चू० प्र० २७७ आ ।
परिवयंत-परिवदन्-निन्दन् । प्रश्न० ६४ ।
परिवयति- परिवदति-परि - समन्ताद्वदति - यथाऽयं न म्रियते नापि मञ्चकं ददाति, यदि वा परिवदति-परिभवतीत्युक्तं भवति । आचा० १०५ । निन्दति, अवगायति परिभवति । आचा० १०५ ।
परिवसंति- । ठाणा० २३० ।
परिवसइ-परिवासयति-आक्रोशति । आव० ४२८ ।
परिवसणा-जम्हा एगखेत्ते चत्तारिमासा परिवसंतित्ति तम्हा परिवसणा । नि० चू० प्र० ३३६ आ ।
परिवहइ-सर्वतो व्यथते-कदर्थयति । भग० १६६ ।
परिवाइणि-परिवादिनी-सप्ततन्त्री वीणा । जंप्र० १०१ ।
परिवाइणी-परिवादिनी-सप्ततन्त्री वीणा । जीवा० २६६ ।
परिवाओ-परिवादः-काक्वा परदोषापादनम् । सूत्र० २६३ ।
परिवाग-परिपाकः-परिपूर्णः पाकः । प्रज्ञा० ३६५ ।
परिवाडी-परिपाटी-गृहपंक्तिः । उत्त० ५६ । परिपाटिः-पद्धतिः । सम० ४१ । परिपाटिः-पद्धतिः । बृ० द्वि० ६ अ ।
परिवाद-अयसो-अगुणकित्तणं । नि० चू० प्र० २७६ अ ।
परिवादादिदोषत्रयास्पृष्ट- । आचा० १०९ ।
परिवादिनी-सप्ततन्त्री वीणा । राज० ५० ।
परिवाय-परिवादः-निन्दा । ओप० १०६ ।
परिवायओ- । आव० ४२२ ।
परिवायग-परिव्राजकः-पापवर्जकः । दश० २६२ । नि० चू० प्र० १८६ अ ।
परिवार-परिवारः-दासीकर्मकरादिकः परिकरो वा, गृहादेर्वृत्त्यादिकः । सूत्र० ३०६ । कोशः । सूत्र० २७६ ।
परिवारण-निराकरणम् । प्रश्न० २२ ।
परिवारणा-परिवारकरणम्, परिवारस्थापनम् । जं० प्र० ३२८ ।
परिवारिए-परिवारः-परिकरः सञ्जातोऽस्येति परिवारितः । उत्त० ३५१ ।
परिवारियं-परिवारितं-समन्ततो वेष्टितम् । जीवा० १६० ।
परिवाविय-द्विस्त्रिर्वा उत्पाट्य स्थानान्तरारोपणतः परि-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वपनवती शालिकृषिवत् । ठाणा० २७६ ।

परिवासियं- । बृ० प्र० ३० आ ।

परिवुसिए-पर्युषितः-सयमे उद्युक्त विहारी । अन्तप्रान्तभोजी । आचा० २४२ । पर्युषितः । आचा० ३७६ । पर्युषितः-संयमे व्यवस्थितः । आचा० २८० । पर्युषितः-व्यवस्थित इति । आचा० २४४ ।

परिवुसे-पर्युषिते, वसे । नि० चू० प्र० २७४ अ ।

परिवूह-सप्तचत्वारिंशततमकला । ज्ञाता० ३८ ।

परिवेढिओ-सव्वदिसि ठितेसु दिसि विदिसासु विच्छिण्णठितेसु परिवेष्टितः, दुग्गादिसु पंतीसु समंता परिट्ठियासु परिवेष्टितः । नि० चू० तृ० ४६ आ ।

परिवेढिय-पुरतो पिट्ठतो पासीता ठिच्चा । नि० चू प्र० १८४ आ ।

परिवेसंतिया-परिवेषयन्तिका-भोजनपरिवेषणकारिका । ज्ञाता० ११७ ।

परिवेसति-परिवेशयति-भोजयति । ज्ञाता० ८६ ।

परिव्राजका-चरगा । नि० चू० तृ० ३१ अ ।

परिव्वाओ-सव्वसो पावं परिवज्जंतो । दश० चू० ३३अ ।

परिव्वायए-परिव्राजकः । ज्ञाता० १०५ । परिव्राजकः-कपिलमुनिसूनुः । प्रज्ञा० ४०५ ।

परिव्वायगा-गेरुआ । नि० चू० द्वि० ६८ अ ।

परिशाटकरणं-करणस्य द्वितीयभेदः । आव० ४५८ ।

परिशिल्पमाना-अभ्यस्यमाना । नंदी० १०७ ।

परिषा-परिषत्-सदेवमनुजासुरा सभा । उत्त० ५१२ ।

परिसंकमाण-परिशङ्कमानः-अपायं विगणयन् । उत्त० २१७ ।

परिसंखाय-परिसङ्ख्याय-सर्वैः प्रकारैः ज्ञात्वा । दश० २६२ (?) ।

परिसंठिय-परिस्थितं-स्वच्छीभूतम् । ओघ० १८४ ।

परिसंता-पाहुणगादि । नि० चू० तृ० ७३ आ ।

परिसक्किर-परिष्वष्कितुं शीलं येषां ते तथा । ज्ञाता० २६ ।

परिसडइ-परिशटति-उपयुज्यते । आचा० ३५२ ।

परिसडिय-परिसटितः-पतितः । ज्ञाता० ११४ । परिसटितं-कुष्ठाद्युपहताङ्गमिव विध्वस्तम् । प्रश्न० १३४ ।

परिसडियकंदोहारा- । निरय० २५ ।

परिसप्प-उरसा भुजाभ्यां वा परिसर्पतीति परिसर्पः । प्रज्ञा० ४५ । उरसा भुजाभ्यां वा परिसर्पतीति परिसर्पः, अहिनकुलादयः । जं.वा० ३८ ।

परिसर-परिसरः । आव० ३६८ । सरभम् । आचा० ३३८ ।

परिसर्प-षष्ठं क्षुद्रकुष्ठम् । प्रश्न० १६१ ।

परिसर्प्प-क्षुद्रकुष्ठे पञ्चम् । आचा० २३५ ।

परिसा-परिषद् । सूय० २ । परिषद्-परिवारविशेषः-यथा मातापितृपुत्रादिका अभ्यन्तरपरिषद् दासीदासमित्रादिका बाह्यपरिषदिति । सम० १२० । परिषत्-परिवारः । ठाणा० ११७. १२८ । पर्षत्-परिवारः । भग० ४६० ।

परिसाड-परिशाटः-उज्झनम् । आव० ५७६ ।

परिसाडइत्ता-परिशाटयित्वा-विनाशयित्वा । प्रज्ञा० ५०३ ।

परिसाडणा-परिः-समन्ताच्छटतां पृथग् भवतामौदारिकादिपुद्गलानां यदात्मनस्तान्प्रति तत्तच्छरीरविमोक्षात्मकं प्रयोजकभवनं सा परिशाटना । उत्त० १९८ ।

परिसाडी-गच्छतो यत्र धूल्यादि निपतति । ओघ० ३१ । कुसाततणसंथारए परिभुज्जमाणे जस्स किंचि परिसडति सो परिसाडी । नि० चू० प्र० १६८ अ । परिशाटी । ओघ० १८२ ।

परिसामंत-पार्श्वतः । भग० ६०७ ।

परिसामियं-परिश्यामितः-कृष्णकृतः । ज्ञाता० २७ ।

परिसाविय-परिस्राव्य-निर्गाल्य । आचा० ३४७ ।

परिसिच्चेज्जा-परिषिञ्चेत्-आर्द्रीकुर्यात् । उत्त० ६० ।

परिसिट्ठं-परिशिष्टं-प्रभूतत्वाद् भूक्तोद्धरितम् । आचा० १२३ ।

परिसित्तग-उण्होदगेन दहिमट्टिया तिव्वगलिज्जंति तं परिसत्तियं । नि० चू० प्र० २०३ आ ।

परिसित्तिय-परिषक्तपानकम् । बृ० प्र० २५३ अ ।

परिसिल्ल-सव्वस्स संविग्गासंविग्गस्स परिसनिमित्तं संगरं करेति । नि० चू० तृ० २६ आ ।

परिसुक्कमुह-परिशुष्कं-विगतनिष्ठीवनतयाऽनार्द्रतामुपगतं मुखमस्येति परिशुष्कमुखः । उत्त० ८६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिसूअं- । ओघ० ९७ ।

परिसेय-परिषेकः । ठाणा० ३३९ । परिषेकः-दुष्टव्रणादुपरि जलसिञ्चनम् । पिण्ड० ११ ।

परिसेवणापारंची-प्रतिसेवनापाराञ्चिकः । ठाणा० १६३ ।

परिसोसिय-परिशोषितः-नीरसीकृतः । ज्ञाता० ६५ । परि-समन्ताच्छोषितं-अपचितीकृतमांसशोणितं कृशीकृतमिति परिशोषितम् । उत्त० ३५८ ।

परिस्थूरम्- । जीवा० १३४ ।

परिस्संत-परिश्रान्तः । उत्त० २७७ । परिश्रान्तः-प्राघूर्णकादिः । आव० ७४६, आव० ५१३ ।

परिस्समं-परिश्रमम् । आव० २३७ ।

परिस्सवति-कहेति । नि० चू० तृ० १२८ आ ।

परिस्सवा-परिस्रवाः-कर्म्मनिर्जरास्पदानि । आचा० १८१ । परिस्रवाः-निर्जरकाः । आचा० १८२ ।

परिहए-परिहितं-निवसितम् । ज्ञाता० २१३ ।

परिहत्थ-(देश्यः)परिपूर्णम् । राज०४९ । परिहस्तः-दक्षः । प्रश्न० ६२ । परिहस्तः-दशः । ओप० ४७ । पूर्णः । मर० । आलम्बनम् । मर० । युद्धनिपुणः । पउ० ९०-१५ ।

परिहरंत-परिहरन्-प्रतिसेवमानः । ओघ० २१९ । इयं सामयिकीपरिभाषा प्रतिसेवनार्थे वर्तते । ओघ० २१९ । प्रतिसेवयन् । ओघ० २१९ ।

परिहरइ-करोति । नि० चू० तृ० ८९ आ ।

परिहरणं-परिरयः । ओघ० २० ।

परिहरणदोस-परिहरणं-आसेवा स्वदर्शनस्थित्या लोकरूढ्या वा अनासेव्यस्य तदेव दोषः परिहरणदोषः, अथवा परिहरणं-अनासेवनं सभारूढ्या सेव्यस्य वस्तुनस्तदेव तस्माद्वा दोषः परिहरणदोषः, अथवा वादीनोपन्यस्तस्य दूषणस्य असम्यक्परिहारो जात्युत्तरं परिहरणदोषः । ठाणा० ४९२ ।

परिहरणया-वस्त्रादेः शास्त्रीययाऽऽसेवनया । ठाणा० ४८९ ।

परिहरणा-आसेवा तयोपध्यादेरकल्पता । ठाणा० ३२० । परिभोगः । आव० ३२५ । सर्वप्रकारैर्वर्जना । प्रतिक्रमण तृतीय-अष्टभेदभिन्नं प्रतिक्रमणमेव (?) । परिभोगः । आव० ३२५ । परिभोगो । नि० चू० प्र० २३५ आ ।

परिहरणोवघाते-परिहरणा-आसेवा तयोपध्यादेरकल्पता, तत्रोपघेर्यथा एकाकिना हिंडकसाधुना यदासेवितमुपकरणं तदुपहतं भवतीति समयव्यवस्था । ठाणा० ३२० ।

परिहरति-परिहरति-परिभुङ्क्ते । दश० १९९ । परिभोगपरिहारेण धारणापरिहारेण परिहरति । दश० २०२ । परिहरति-कुर्वंतीत्यर्थः । भग० ६६८ । आचरति । नि० चू० प्र० १४० आ ।

परिहरित्तए-परिहर्तुं-आचरितुम् । बृ० द्वि० ८६ अ । परिहर्तुं-कर्त्तुम् । बृ० तृ० ३१ आ । परिहर्तुं-परिभोक्तुम् । बृ० द्वि० २०१ अ ।

परिहरित्तते-परिभोगः । ठाणा० १३८ । परिहर्तुं-परिभोक्तुम् । ठाणा० १३८ । परिहर्तुं-आसेवेतुम् । ठाणा० ३३८ ।

परिहरिय-परिवृत्य-निक्षिप्य । उत्त० ३५९ ।

परिहरियवं-परिहर्तव्यं-परिभोक्तव्यम् । प्रश्न० १५६ ।

परिहरियव्वं-परिभोक्तव्यम् । प्रश्न० ११२ ।

परिहरे-परिभुञ्जे । नि० चू० प्र० २३३ ।

परिहवंत-परिभवन्तः पार्श्वस्थादयः । व्य० प्र० ५४ आ ।

परिहाविता-पासत्थादो । नि० चू० तृ० ९४ ।

परिहा-परिखा उपरि विशाला अधः सङ्कुचिता । ज० प्र० ७६ । परिखा-अधःसङ्कीर्णोपरि विस्तीर्णा खातरूपा । अनु० १५९ । खातिया । नि० चू० द्वि० ६९ आ ।

परिहाइ-परिहायइ-परिहीयते । आव० ४४३ ।

परिहाई-परिहीयते । ज्ञाता० १७१ ।

परिहाणी-परिहानिः-सूत्रार्थविस्मरणम् । ओघ० ४८ ।

परिहायति-परिहायते । आव० ११० ।

परिहारंतर-परिहारान्तरम् । आव० ९७ ।

परिहार-परिहारः-तपोविशेषः । ठाणा० ३२४ । परिहारः-तपोविशेषः । आव० ७० । परिहारः-तपोविशेषः, अनेषणीयादेः परित्यागो वा । अनु० २२१ । परिहारः-पुरीषम् । ओघ० २१३ । तपोविशेषः । भग० ३५१ । परिहारः-परिभोगः । भग० ६६८ । परिहरणं परिहारः-तपोविशेषः । प्रज्ञा० ६४ । परिहारः-वर्जनम् । व्य० प्र० ४५ अ । परिहारः-लौकिकलोकोत्तरभेदभिन्नः, परिहरणायाः पञ्चमो भेदः । आव० ५५२ । परिहारः-विशिष्टतपोरूपः । उत्त० ५६८ । परिहारः-स्थापना ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बृ० द्वि० ७० आ । परिहरणं परिहारः-तपोविशेषः । विशे० ५५४ । धारणपरिभोगरूपम् । बृ० तृ० ३१ आ । परिहारः-पुरीषः । ओघ० १३५ । परिहारः-पुरीषम् । पिण्ड० २० । जो गिरिं नदीं वा परिहरंतो जाति परिहारो । नि० चू० तृ० ८९ आ । परिभोगो । नि० चू० द्वि० ११८ आ । पुरीषम् । बृ० द्वि० १८१ आ । मासलघुकादि । बृ० द्वि० १७० अ । वज्जणं-वहणं । नि० चू० तृ० ८५ अ ।

परिहारविशुद्धिककल्प-कल्पविशेषः । विशे० १० ।

परिहारविशुद्धिकल्पिकः-साधुभेदविशेषः । भग० ४ ।

परिहारविसुद्धिय-परिहारः-तपोविशेषस्तेन विशुद्धं,अथवा परिहारः-अनेषणीयादेः परित्यागो विशेषेण शुद्धो यत्र तत्परिहारविशुद्धं तदेव परिहारविशुद्धिकम् । अनु० २२१ । परिहारस्तपोविशेषः, तेन विशुद्ध परिहारविशुद्धम्, अथवा तकोऽसौ परिहारो विशेषेण शुद्धो यत्र तत्परिहारविशुद्धम्, तदेव स्वार्थिकप्रत्योपादानात् परिहारविशुद्धिकम् । विशे० ५५७ ।

परिहारविसुद्धीयं-परिहरणं परिहारस्तपोविशेषः तेन कर्मनिर्जरारूपा विशुद्धिर्यस्मिञ्चारित्रे परिहारविशुद्धिकम् । विशे० ५५४ । परिहारविशुद्धिकं । परिहरणं परिहारः तपोविशेषः तेन विशुद्धिर्यस्मिंस्तत् । आ० १७९ (?) ।

परिहारिका- । ठाणा० ३२४ ।

परिहारियकूल-गुरुगिलाणबालवुड्ढआदेसमादियाण जत्थ पाउग्गं लभति ते । नि० चू० प्र० २९४ आ ।

परिहित-परिहितः-निवसितः । सूर्य० २९२ । ज्ञाता० २७ ।

परिहिय-परिहितः-परिहितवान् । प्रज्ञा० ९१ ।

परिहिस्सामि-परिधास्यामि । आच० २४४ ।

परिहेरगं-रूढ्यवसेयम् । औप० ५५ ।

परित्त-परिमितः । बृ० प्र० ११६ । प्रत्येकवनस्पतिकायः । प्र० ७१ । परीत्तः-प्रत्येकशरीराः । अल्पसंसारी वा मुख्यः । भग० २५७ ।

परासह-परीषहाः-क्षुत्पिपासादयः । आव० १३४ । परीषहः-परि-समन्तात् स्वहेतुभिरुदीरिता मार्गाच्यवननिर्जरार्थं साध्वादिभिः सह्यत इति । उत्त० ७२ । उत्तराध्ययनेषु द्वितीयमध्ययनम् । सम० ६४ । परीषहः-उत्तराध्ययनेषु द्वितीयमध्ययनम् । उत्त० ९ । परीषहः-क्षुत्पिपासादिः । दश० ११९ । परिपद्यमाणं-निश्चलचित्ततया धार्यमाणम् । उत्त० ८३ । परीषहः-अरतिपरीषहः । भग० ८६ । परीषहाः-परीषहश्चमूर्मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः । बृ० प्र० २१९ अ ।

परीसहप्रभंगुरा-परीषहप्रभाङ्गिनः,परीषहैः सद्भिर्भङ्गुराः । आचा० २७५ ।

परीसहा-चमत्कारा, ण्हाविता । नि० चू० द्वि० ४३ आ । परीति-समन्तात् स्वहेतुभिरुदीरिता मार्गाच्यवननिर्जरार्थं साध्वादिभिः सह्यन्त इति परीषहाः । भग० ३८९ । परीषहा क्षुदादयः । भग० २०१ । परीषहा-सम्यग्दर्शनादिमार्गाच्यवनार्थं ज्ञानावरणादिकर्मनिर्जरार्थं च परि-समन्तादापतन्तः क्षुत्पिपासादयो द्रव्यक्षेत्रकालभावापेक्षाः सोढव्या-सहितव्या इत्यर्थः । आव० ६५६ ।

परीसहोवसग्ग-परीषहाः-क्षुदादयस्त एवोपसर्गा-उपसर्जनात्-धर्मभ्रंशनात् परीषहोपसर्गाः, अथवा द्वाविंशतिपरीषहाः तथा उपसर्गाः-दिव्यादयः । भग० १०१ ।

परूढपणयं-प्ररूढप्रणयम् । उत्त० २०७ ।

परूण्ण-प्ररूणः । आव० २२५ । प्ररुहिता । आव० ३५३ । प्ररूदिता । उत्त० ३०२ ।

परूत्- । आचा० १२२ ।

परूवंति-प्रभेदादिकथनतः-प्ररूपयन्ति । ठाणा० १३६ । एवं "सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः" "मिथ्यात्वाविरतिप्रमादकषाययोगा बन्धहेतवः" "स्वरूपभावेन सदसतो तत्त्वं-सामान्यविशेषात्क"मित्यादिना प्रकारेण प्ररूपयन्ति । आचा० १७९ ।

परूवइत्ता-प्ररूप्य प्रभेदतः । ठाणा० ११९ ।

परूवग-परूपकः मूलकृतस्याख्याता । दश० ११४ ।

परूवण-प्ररूपणं-स्वरूपकथनम् । आव० ६१९ । प्ररूपणं-प्ररूपणाकारकमध्ययनम् । नंदी० ५४ । स्वरूपकथनम् । नि० चू० प्र० २४ अ ।

परूवणा-भासा विभासा अर्थ-व्याख्या इत्यर्थः । नि० चू० प्र० २१ आ । प्ररूपणा- एकैकभङ्गनिरूपणम् । बृ० द्वि० २१७ आ । पन्नवणा । नि० चू० प्र० १७ आ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्ररूपणा–विस्तारवती व्याख्या । अनु० १७६ । प्ररूपणा–प्रदर्शना । उत्त० २३० । प्ररूपणा यथास्वं विनियोगः । आचा० ७ ।

परूविज्जंति–नामादीनामेव भेदानां सप्रपञ्चस्वरूपकथनेन पृथग्विभक्ताः ख्याप्यन्ते । ठाणा० २१२ ।

परूवियं–प्ररूपितं भेदानुभेदकथनेन । प्रश्न० ११३ ।

परूविया–प्ररूपिता–प्रसाधिता । आचा० ५८ ।

परूवेंति–प्ररूपयन्ति भेदकथनतः । भग० ६८ ।

परूवेइ–प्रतिसूत्रमर्थकथनेन । भग० ७११ । प्ररूपयति उपपत्तितः । जं० ५४० ।

परूवेज्ज उपपत्तिकथनतः । भग० ४३६ ।

परूवेति–प्ररूपयति प्रतिसूत्रमर्थकथनेन । ठाणा० ५०२ ।

परेण परं अत्थि–परेणापि परमस्ति–तीक्ष्णादपि तीक्ष्णतरमस्ति । आचा० १७४ ।

परेऽवं–परतरे । पिण्ड० ८२ ।

परोक्खं–अक्षस्य–आत्मनो द्रव्येन्द्रियाणि द्रव्यमनश्च पुद्गलमयत्वात् पराणि वर्तन्त–पृथग्वर्त्तन्ते इत्यर्थः, तेभ्यो यदक्षस्य ज्ञानमुदयते तत्परोक्षम्, परैः–इन्द्रियादिभिः–सह उक्षः–सम्बन्धो विषयविषयिभावलक्षणो यस्मिन् ज्ञाने न तु साक्षादात्मनो, धूमादग्निज्ञानमिव तत्परोक्षम् । नंदी० ७२ । परोक्षः–न जानाति । बृ० प्र० ८९ अ । परोक्षं–इन्द्रियमनोव्यवधानेनात्मनोर्थप्रत्यात्मसाक्षात्कारी, परैरुक्षा–सम्बन्धनं–जन्यजनकभावलक्षणमस्येति-परोक्षम् । ठाणा० ५० ।

परोवदेस–परोपदेशः । आव० ८२२ ।

परोहड–गृहस्य पश्चादङ्गणः । ओघ० १५२ ।

पर्जन्य–मेघविशेषः । जं० प्र० १७३ ।

पर्यङ्कः–शयनः । दश० ९१, २०४, २२८ । ठाणा० २९९ ।

पर्यङ्का–जिनप्रतिमानामिव या पद्मासनमिति रूढा । ठाणा० ३०२ ।

पर्यन्त–पार्श्वतः । बृ० प्र० ३१० अ ।

पर्ययः– । ठाणा० ३४८ ।

पर्यवगुणे–निर्भजना । आचा० ८६ ।

पर्यवचरक–अवमचरकः । उत्त० ६०६ ।

पर्यागलवृत्तोत– । आचा० २२० ।

पर्याणं–मिलानम् । औप० ७० । पर्याणम् । जं० प्र० ९ ।

पर्याणादिका– । ठाणा० २४० ।

पर्यापत्तिः–समूर्च्छनम् । आचा० ५५ ।

पर्याप्ति–क्रियापरिसमाप्तिः । तत्त्वा० ८–१० । क्रियापरिसमाप्तिरात्मनः । तत्त्वा० ९–१२ ।

पर्याय–स्वभावः । ठाणा० ३७५ । पर्ययः । ठाणा० ३४८ । देशः प्रस्तावः अवसरः विभागः । विशे० ८३७ । पर्ययः । ठाणा० ३४८ ।

पर्यायगुण–द्रव्यस्यावस्थाविशेषः पर्यायः स एव गुणः पर्यायगुणः । आचा० ८६ ।

पर्यायागत–प्रव्रज्यापर्यायप्राप्तम् । (?)

पर्यायास्तिकः–नयविशेषः । सम० ४२ ।

पर्यालोचनं–अनुचिन्तनम् । आव० ५८९ ।

पर्यालोचयति–ईहते । आव० २६ ।

पर्याहार–निर्गमः । ठाणा० २९४ ।

पर्याहारप्रवेशः– । आचा० ३२९ ।

पर्युपासीनः–उपासनाकारकः । नंदी० १६७ ।

पर्युपास्ति–सेवना । प्रज्ञा० ६० ।

पर्युषणाकल्पः–नियमवद्वस्तुमारब्धः–न्युनोदरताकरणं १ विकृतिनवकपरित्यागः २, पीठफलकादिसंस्तारकादान ३ मुखारादिमात्रकसग्रहणं ४, लोचकरणं ५, शैक्षाप्रव्राजनं ६, प्राग्गृहीतानां भस्मगडगलकादीनां परित्यजनमितरेषां ग्रहणं ७ द्विगुणवर्षोपग्रहोपकरणधरण ८ मभिनवोपकरणाग्रहणं ९ स क्रोशयोजनात् परतो गमनवर्जन १० मित्यादिकः । ठाणा० ३१० ।

पर्युषितं–सन्निधिः । दश० १९८ ।

पर्व–ग्रन्थिः । प्रज्ञा० ३६ ।

पर्वणिः–पौर्णमास्याममावास्यायां वा चन्द्रादित्ययोरूपरागं करोति । सम० ३० । पर्वणी–कौमुदीप्रभृतिः अधिकरागभूतम् । ज्ञाता० ८१ ।

पर्वत–चन्द्रगुप्तसहायकः । जं० प्र० २६३ ।

पर्वतविद्रुमर्ग्य–अनेकपर्वतसंघातः । व्य० (?) ।

पर्वमध्य–अन्तरूच्छ्रयम् । आचा० ४०५ ।

पर्वाणि–अष्टम्यादितिथयः । आव० ८३५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परशुरामः-जामदग्निसुतः । जीवा० १२१ ।
पलंजी-पलञ्जी-असारधान्यम् । उत्त० २५६ ।
पलंडु-कन्दविशेषः । उत्त० ६९१ । पलाण्डु-कन्दविशेषः । आव० १०१ ।
पलंडू-पलण्डूकन्दः, वनस्पतिविशेषः । प्रज्ञा० ३७ ।
पलंब-विंशतिसागरोपमस्थितिकदेवविमानम् । सम० ३८ । प्रलम्बं-तालफलादि । दश० १७६ । प्रलम्बः-इषल्लम्बमानः । ज० प्र० ११५ । प्रलम्बमानाञ्चलं गृहीतं । ओघ० ११० । प्रलम्बः-आलम्बः । भग० १७५ । त्रिषष्ठीतममहाग्रहः । ठाणा० ७९ । प्रलम्बः-ईषल्लम्बमानः । प्रश्न० ८४ । प्रलम्बः-एकषष्ठीतममहाग्रहः । ज० प्र० ५३५ । विषमगहणं व कोणं वा । ओघ० ११० । प्रलम्बः-फलम् । ठाणा० १८५ । प्रलम्ब-यद्विषमग्रहणेन प्रत्युपेक्ष्यमाणवस्त्रकोणानां लम्बनम् । उत्त० ५४१ । प्रलम्बा-आप्रदीपना । सम० १५८ ।
पलंबजाय-पलंबजातं-फलसामान्यम् । आचा० ३४८ ।
पलंबमाण-प्रलम्बमानं-झुम्बमानम् । भग० ३१९ ।
पलंबवणमाला-प्रलम्बो-झुम्बनकं वनमाला-आभरणविशेषः । प्रलम्बवनमाला । आप० ५० ।
पलंबा-फला । नि० चू० प्र० ५२ आ ।
पल-कर्षचतुष्टयम् । अनु० १५३ ।
पलञ्जी- । आव० ८२३ ।
पलपमाण-पलप्रमाणः । आव० ४२७ ।
पलयं-प्रचारम् । दश० ४८ ।
पलल-पललं-तिलक्षोदः । पिण्ड० ७२ ।
पललिय-प्रललितः-प्रक्रीडितः । ज्ञाता० ६३ । प्रललितं-ललितमेव "हस्तपादाङ्ग" इतिश्लोकोक्तलक्षणः । प्रश्न० १४० ।
पलवितं-प्रलपितं-अनर्थभाषणम् । प्रश्न० २० ।
पलाइय-पलायितं-पलायनं-कुत्सिश्चिन्नाशनम् । दश० १४१ ।
पलाई-राज्यान्तरे गतो भटः । बृ० द्वि० ८२ अ ।
पलाण-नष्टः । ओघ० १७२ ।
पलादिण-जे भडादिया रण्णो अणापुच्छते सपुत्तदारधणादिया अन्नरज्जं गंतुकामो ते पलादिणो । नि० चू० द्वि० ११ अ ।
पलायंत-पलायमानः । आव० २९७ ।
पलाय-पलायितः । आव० १९६ ।
पलायण-पलायनं-कुत्सिश्चिन्नाशनम् । दश० १४१ ।
पलायति-नश्यति । नि० चू० प्र० १०२ अ । देशान्तरं गच्छति । नि० चू० प्र० ३७ अ ।
पलालं-प्रकृष्टा लाला यत्र तत्पलालम् । अनु० १४१ । कङ्गवादीनाम् । प्रश्न० १२८ ।
पलालखेला-नि० चू० प्र० ३२७ अ ।
पलालपुंज-पलालपुञ्जः-मञ्चोपरिव्यवस्थितः । आचा० ३०६, ३०७ ।
पलाला- । सम० ३०७ ।
पलालुण्हा-पलालोष्मा । आव० ४१६ ।
पलाव-प्रलापः-जल्पः । प्रश्न० ७४ । प्रलापः-निरर्थकं वचनम् । ठाणा० ४०८ । प्रलापः-आलापः । सम० १५७ ।
पलाविज्जिहिति-प्रप्लाविष्यते । ओघ० २१ ।
पलावियं-प्लावितम् । आव० ६३० । प्लावितम् । बृ० द्वि० २०९ अ ।
पलासं-कोमलं । नि० चू० प्र० ११८ आ । अष्टमभवनवासीदेवस्य चैत्यवृक्षः । ठाणा० ४८७ । वृक्षविशेषः । भग० ८०३ । पलाशः-वरुणस्य पुत्रस्थानीयो देवः । भग० १९९, ५११ । पलाशः-किंशुकः । प्रज्ञा० ३१ । पलाशः-मंदरपर्वते दिग्हस्तिकूटनाम । ज० प्र० ३६ । पलाशः-किंशुकः, भगवत्यामेकादशशतके तृतीयोद्देशकः । भग० ५११ । पलाशः-दलः । ज्ञाता० ९६ ।
पलिअंक-पर्यङ्कः । जं० प्र० ८५ । पर्यङ्कः-पद्मासनम् । ज० प्र० १५८ ।
पलिअ-पलितं-पाण्डुरः । ज० प्र० १६६ । कर्म जुगुप्सितमनुष्ठानम् । आचा० २४२ ।
पलिआमं-जं परियाए कतं परियायं वा पत्तं तहावि आमं तं पलिआमं । नि० चू० द्वि० १२५ आ ।
पलिउंगच्छ-प्रतिकुञ्चकः स्वदोषप्रच्छादकतया । उत्त० ६५६ ।
पलिउंचंति-तत् प्रयोजनानिष्पादनं पृष्टाः सन्तोऽपह्नुवते वयं वयमुक्ताः । गता वा तत्र वयं नत्थऽम्हो हुट्टेति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्त० ५५३ ।

पलिउंचण–पलिकुञ्चनं–परि–समन्तात् कुञ्चयन्ते-वक्रतामापायन्ते क्रिया येन मायानुष्ठानेन तत् । माया । सूर्य० १७१ ।

पलिउंचणा–परिकुञ्चनं–अपराधस्य द्रव्यक्षेत्रकालभावानां गोपायनमन्यथा सतामन्यथा भणनं परिकुञ्चना परिवञ्चना वा । ठाणा० २०० ।

पलिउंचणापायच्छित्त–परिकुञ्चनं–अपराधस्य द्रव्यक्षेत्रकालभावानां गोपायनमन्यथा सतामन्यथाभणनं परिकुञ्चनापरिवञ्चना वा प्रायश्चित्तम् । ठाणा० १९९ ।

पलिउंचयंति–निह्नुवते, सदपि प्रमादस्खलितमाचार्यादिनाऽऽलोचनादिकेऽवसरे पृष्टाः सन्तो मानृस्थानेनावर्णवादभयान्निह्नुवते । सूत्र० २३३ ।

पलिउंचिअ–मनोज्ञं गोपित्वा । आचा० ३५५ ।

पलिउंचुणया–प्रतिकुञ्चनं सरलतया प्रवृत्तस्य वचनस्य खण्डनम् । भग० ५७३ ।

पलिउंचे–मोहनीयस्य एकोनविंशतितमस्थानम् । आव० ६६१ ।

पलिउंज्जिय–परि–समन्ताद् योगिकाः परिज्ञानिनः । भग० १५० ।

पलिओवम–पल्योपमः । अनु० १८० । पल्योपमम् (?) । पल्येनोपमा येषु तानि पल्योपमानि असङ्ख्यातवर्षकोटाकोटीप्रमाणानि । ठाणा० ८६ । पल्यवत्पल्यस्तेनोपमा यस्मिंस्तत्पल्योपमम् । ठाणा० ९० । पल्योपमं–कालमानविशेषः । भग० २१० । पल्योपमम् । भग० २७५ । ८८८ । पल्येन–वक्ष्यमाणस्वरूपेणोपमा यस्य तत्पल्योपमम् । ज० प्र० ९२ । पल्योपमं–उद्धाराद्धाक्षेत्रभेदैस्त्रिधा, प्रत्येकं बादरसूक्ष्मतया द्वेधा, अङ्गुलमानवालसप्ताष्टखण्डतदसङ्ख्यखण्डोद्धारात् – प्रतिसमयवर्षशतस्पृष्टोत्तरप्रदेशापहारैः । अनु० १०० ।

पलिच्छिन्न–परिच्छिन्नः–यथास्वविषयग्रहणं प्रतिनिरुद्धः । आचा० १९३ । परिच्छिन्नः–परिवारवस्त्रादिलक्षणैः सूत्रार्थोभयैश्च युक्तः । व्य० द्वि० १ अ । प्रतिच्छन्नः–आच्छादितः । ज्ञाता० ९६ ।

पलितंमि–प्रदीप्ते–अत्याकुलीकृते । उत्त० ४५५ ।

पलित्त–पराभग्नः । बृ० द्वि० ७२ अ । प्रकर्षेण दीप्तः प्रदीप्तः । ज्ञाता० ६१ । प्रकर्षेण ज्वलितम् । भग० १२१ । प्रदीप्तः । दश० ९२ । पर्याप्तः–प्रतिपूर्णः । जीवा० २६६ । प्रदीप्तम् । आव० ९१ ।

पलित्तक–प्रदीप्तकं–प्रदीपकनम् । प्रश्न० ६० ।

पलित्तजाला–प्रदीप्तज्वाला । प्रश्न० १४ ।

पलित्तनेह–पर्याप्तः–प्रतिपूर्णः स्नेहः तैलादिरूपो यस्य तत् पर्याप्तस्नेहम् । जीवा० २६६ ।

पलित्तपायं–प्रलिप्तपादम् । आव० १३७ ।

पलित्तयं–प्रदीप्तम् । उत्त० १०२ ।

पलिपासग–बंधणा । नि० चू० द्वि० ५९ आ ।

पलिबाहिर–परि–समन्तात् गुरोरवग्रहात् पुरतः पृष्ठतो वाऽवस्थानात् सदा कार्यमृते बाह्यः स्याद् । आचा० २१५ ।

पलिभंजणं–पायम्मि पलिभंजणं । नि० चू०प्र० २४५ अ ।

पलिभज्जह–प्रतिभज्यते । आव० ३०८ ।

पलिभाग–प्रतिभागं–प्रतिबिम्बम् । प्रज्ञा० ३०५ । प्रतिभागः–सादृश्यम् । भग० ८९७ । प्रतिभागः–सादृश्यम् । प्रज्ञा० ४९१ । प्रतिरूपो भागः प्रतिभागः–प्रतिबिम्बम् । आव० ३३८ ।

पलिभेओ–खंडाखंडिकरणं । नि० चू० प्र० २४४ आ ।

पलिमंथ–पलिमन्थः–कालचणकः । ठाणा० ३४४ । औषधिविशेषः । प्रज्ञा० २३ । पलिमन्थः–दोषविशेषः । ओघ० १७७ । पलिमन्थः–विघ्नः । सूत्र० ६४ । संजमो मंथिज्जति जेण सो । नि० चू० प्र० १९६ आ । पलिमन्थः–विलोडनं विघातश्च । सूत्र० ४२५ । विघ्नः । ठाणा० ८ । परिमन्थः–स्वाध्यायादिक्षतिः । उत्त० ५८८ । पलिमन्थः–दोषविशेषः । ओघ० ४९ । पलिमन्थः–दोषविशेषः । ओघ० १०५ ।

पलिमंथए–बध्नीयात् । उत्त० ३११ ।

पलिमंथग–वृत्तचनकः कालचनकः । भग० २७४ । धान्यविशेषः । भग० ८०२ ।

पलिमंथू–परिमन्थूः–घातकः । ठाणा० ३७३ ।

पलिमत्ता–गोभक्तः । व्य० प्र० १२१ अ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पलियंक-गिहिनिसेज्जा । नि० चू० द्वि० ६५ अ । अङ्कः । नि० चू० द्वि० २५६ अ । पल्यङ्कः-शय्याविशेषः । व्य० द्वि० ३७० आ । पर्यङ्कः-मञ्चकादि । सम० ३६ । पर्यङ्कः आसनविशेषः । भग० १९१ । पर्यङ्कः-विशिष्टशय्या । भग० २४९ । पर्यङ्कः । दश० ११७ । आसनविशेषः । ठाणा० २९९ ।

पलियंकणिसण्ण-पलयङ्कनिषण्णः-पर्यङ्कासननिषण्णः । जीवा० २२८ ।

पलियंतं-पल्योपमान्तं-पल्योपमस्थान्तः मध्ये वर्तते तत् परि-समन्तात् अन्तोऽस्येति पर्यन्तं-सान्तमिति । सूत्र० ५७ ।

पलियंतकर-पर्यन्तं कर्म्मणा संसारस्य वा करोति तच्छीलश्चेति पर्यन्तकरः । आचा० १७१ ।

पलिय-अनुष्ठानम् । आचा० २५२ । पल्योपमम् । आव० ३६ । पलितं-कर्म्म । आचा० १८९ । पलितं-कर्म । आचा० २०३ । कर्म्म । आचा० ३०७ ।

पलियत्तणं-परावृत्तिम् । नि० चू० तृ० २७ अ ।

पलियस्सओ-परिपार्श्वतः । भग० २६९ ।

पलिसप्पइ-परिसर्पति परि-समन्तादूगच्छति । भग० ७६३ ।

पलिहा-परिघा-अध उपरि समजातरूपा । औप० ३ ।

पलिहोच्छूढ-पर्यवक्षिप्तः-प्रसारितः । औप० १८ ।

पलीणा-प्रकर्षेण लीनाः लयं-विनाशं गताः प्रलीनाः । व्य० द्वि० ४४० आ ।

पलीवणग-प्रदीपनकः । आव० ७४२ । प्रदीपनकं-अग्निः । आव० ८२० ।

पलीवेइ-प्रदीपयति । आव० ५२ ।

पलेइ-प्रकर्षेण लीयते प्रलीयते-अनेकप्रकारे संसारं बम्भ्रमीति । सूत्र० २३५ ।

पलेमाण-प्रलीयमानः । आचा० १८० । प्रलीयमानः-मनोज्ञेन्द्रियार्थेषु पौनःपुन्येनैकेन्द्रियद्वीन्द्रियादिकां जातिं प्रकल्पयति संसाराविच्छित्तिं विदधतीत्यर्थः । आचा० १८१ ।

पलोएंत-प्रलोकमानः । आव० १९६ ।

पलोएति-गुल्लति । नि० चू० द्वि० १९ आ ।

पलोएइ-प्रलोक्यते-प्रकर्षेण निश्चीयते । भग० २४९ ।

पलोट्टइ-प्रलोटति-परिवर्त्तते । भग० १०२ । प्रलोट्यते । आव० ६२१ ।

पलोठेति-विप्रतारयति । बृ० तृ० ८९ आ ।

पलोयए-प्रलोकयेत्-पर्यालोचयेत् । आचा० ४२९ ।

पलोयणा-रसवतीए पलिं विसित्ताओ अणाति पलोइउं भणाति इतो इतो य पयत्थाहित्ति एस पलोयणा । नि० चू० प्र० १८५ आ ।

पल्लंक-पल्यङ्कः । आव० ५७८ ।

पल्लंघणं-प्रकृष्टं लङ्घनं-प्रलिङ्घनम् । भग० ९२५ । पौनःपुन्येनातिक्रमणं प्रलङ्घनम् । औप० ४२ । प्रलङ्घनम् । प्रज्ञा० ६०६ । प्रलङ्घनं अर्गलादेः । ठाणा० ४०९ । प्रलङ्घनं-सामान्येन गमनम् । उत्त० ५११ ।

पल्ल-पल्यं-वंशकटकादिकृतो धान्याधारविशेषः । ठाणा० १२४ । पल्यः-वंशादिमयो धान्याधारविशेषः । भग० २७४ । पल्यो-धान्याश्रयविशेषः । ज० प्र० ९५ । पल्यम् । अनु० १८० । पोट्टं । नि० चू० द्वि० १४७ आ । पल्यं-वंशकटकादिकृतो धान्याधारः । बृ० द्वि० १६८ आ ।

पल्लक-पल्लकः-लाटदेशे धान्याधारविशेषः । नंदी० ८८ ।

पल्लग-पल्यङ्कः-लाटदेशप्रसिद्धो वंशदलेन निर्मापितो धान्याधारकोष्ठकः । जं० प्र० ३०० । पल्लकः-लाटदेशे धान्यालयः । आव० ४१ ।

पल्लच्छिज्जति-प्रस्तीर्यते-प्रच्छादयति । आव० ६२३ ।

पल्लट-पर्वतशिखराद् गण्डशैल इव स्वाभयाच्चलितम् । प्रश्न० १३४ ।

पल्लत्थ-पर्यस्तं-निवेशितम् । विपा० ४९ ।

पल्लत्थय- । नि० चू० प्र० ७ अ ।

पल्लत्थिया-पर्यास्तिका प्रसिद्धा । उत्त० ८ ।

पल्लत्थेइ- । दश० चू० ४४ अ ।

पल्लय-पल्लकः-लाटदेशे धान्यधामः । आव० ७५ (?) ।

पल्लल-पल्वलं-नड्वलम् । प्रश्न० १४ । पल्वलं-प्रल्हादनशीलः । भग० २३८ ।

पल्ललए-पल्वलं-आखतं सरांसि । प्रज्ञा० ७२ ।

पल्लव-कोमलं पत्रम् । प्रश्न० ९२ । किशलयम् । समता०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३६ । पल्वलः-प्रल्हादनशीलः । ज्ञाता० ६३ । पल्लवः-जातपूर्णप्रथमपत्रभावरूपः । जं० प्र० ३२४ । पल्लवः-अङ्कुशः । सम० ६१ । शाखाभङ्गः । आचा० ३४५ । पल्वः-सञ्जातपरिपूर्णप्रथमपत्रभावरूपः । जीवा० २२६ ।

पल्लवग-पर्ययपरिमाणं-अभिधेयादि तद्धर्मसङ्ख्यानं यथा 'परित्ता तसा', पर्ययशब्दस्य 'पल्लव'त्ति निर्देशः, प्राकृतत्वात् पर्यङ्कः-पल्यङ्कः इत्यादिवदिति, अथवा पल्लवा इव पल्लवाः-अवयवास्तत्परिमाणम् । सम० ११३ ।

पल्लवग्राहिणी-पल्लवमात्रग्राहि । बृ० प्र० ५८ आ ।

पल्लवप्रविभक्तिकं-विंशतितमनाट्यभेदः । जं० प्र० ४१७ ।

पल्लावाङ्कुर-प्रवालः । प्रज्ञा० ३१ ।

पल्लि-ग्रामः । बृ० तृ० ७२ अ । गामो । नि० चू० प्र० ११५ अ ।

पल्ली-सन्निवेशः । आव० ५७८ । पल्यन्तेऽनया दुष्कृतिविधायिनो जना इति, वृक्षगहनाद्याश्रितः प्रान्तजननिवासः उत्त० ६०५ ।

पल्लीण-प्रलीनः-पश्चात् प्रकर्षेण लीनः । भग० ६२४ ।

पल्लीपति- । ठाणा० २७० ।

पल्लोट्ट-प्रवृत्त-उत्पन्नः । ज्ञाता० २६ ।

पल्लोय- । द० (?) ।

पल्लोवम-पल्योपमं-शीर्षप्रहेलीकैव गणितस्य विषयोऽतः परमोपमिकं कालपरिमाणम् । जीवा० ३४५ ।

पल्हगा- । आव० १४८ ।

पल्हत्थ-पर्यस्तं-अधोमुखतया न्यस्तम् । भग० १८० । स्थापितः । आव० ७०३ ।

पल्हत्थमुह-पर्यस्तं-अधोमुखतया न्यस्तं मुखम् । भग० १८० ।

पल्हत्थिय-पर्यस्ततं-पर्यस्तीकृतं सर्वतः निक्षिप्तम् । ज्ञाता० २१६ । भग० १६० । पर्यस्तम् । दश० ४४ ।

पल्हत्थिया-पर्यस्तिका । योगपटः । बृ० द्वि० २५३ आ । पर्यस्तिका जानुजङ्घोपरिवस्त्रवेष्टनाऽऽत्मिका । उत्त० ५४ ।

पल्हव-म्लेच्छविशेषः । प्रज्ञा० ५५ ।

पल्हवदेशज-पल्हविकः । ज० प्र० १६१ ।

पल्हवि-प्रल्हत्तिः । ठाणा० २३४ । प्रल्हत्तिः-दुष्प्रतिलेखितदुष्यपञ्चके प्रथमो भेदः । आव० ६५२ ।

पल्हविण-पल्हविकः-देशविशेषः । ज्ञाता० ४१ ।

पल्हविय- । भग० ४६० ।

पल्हाओ-क्रोधादिपरितापोपशमात् प्रल्हादितः-आपन्नसुखः । आचा० १५० ।

पल्हायणभाव-प्रल्हादनभावः-चित्तप्रसत्तिरूपोऽभिप्रायः । उत्त० ५८४ ।

पल्होट्ट-पल्हुठं-एकान्तेन विस्मृतम् । व्य० द्वि० ७७ आ ।

पवंच-प्रपञ्चः- पर्याप्तकापर्याप्तकसुभगादिद्वन्द्वविकल्पः । आचा० १७० । प्रपञ्चः-संसारः । सूत्र० १६५ । प्रपञ्चः-विस्ताः । प्रश्न० २२ । प्रपञ्चः-उपहासवचनम् । बृ० द्वि० ६० आ । प्रपञ्चः-प्रत्युपेक्षणमनुकरणम् । बृ० द्वि० १८० अ ।

पवंचए-उद्घट्टकान्-कुर्वन्ति । ओघ० ८६ ।

पवंचणं-प्रवञ्चनं-विप्रतारणम् । प्रश्न० १७ ।

पवंचा-प्रपञ्चतेः-व्यक्तीकरोति प्रपञ्चयति वा, विस्तारयति लेखकासादि या सा प्रपञ्चा, प्रपञ्चयति वा-लंसयति आरोग्यादिति प्रपञ्चा । ठाणा० ५१९ । इषत् प्रपञ्चा, जन्तोः सप्तमी दशा । दश० ८ ।

पवंचेति-प्रवञ्चयते-मुखमर्कटिकां करोति । उत्त० ५१ ।

पवए-प्लवकः-उत्प्लवनकारी । भग० ६२८ ।

पवग-प्लवकः-यो झम्पादिभिर्गर्तादिकमुत्प्लवते गर्तादिलङ्घनकारी, तरति नद्यादिकं यो इति । ज० प्र० १२३ । प्लवकः-य उत्प्लवते नद्यादिकं वा तरतीति । औप० ३ । प्लवकः-य उत्प्लुत्य गर्तादिकं झम्पाभिर्लङ्घयति नद्यादिकं-वा तरति सः । अनु० ४६ । प्लवकः-य उत्प्लवते नद्यादिकं वा तरति । प्रश्न० १४१ । प्रवकः-सुपर्णकुमारः । प्रश्न० १३५ ।

पवगा-समुद्रादिसु जे तरंति ते पवगा । नि० चू० प्र० २७७ अ ।

पवट्टइ-प्रवर्त्तते । आव० ५५६ ।

पवडण-प्रपतनम् । ठाणा० ३२८ । थाणत्थो उड्ढं उप्पइत्ता जो पडइ । नि० चू० द्वि० ५२ अ । प्रपतनं-भूमिप्राप्तं सर्वगात्रैर्वा पतनम् । बृ० तृ० २२६ आ । पतनं-तिष्ठत एव गच्छतो वा यल्लुटनम् । प्रज्ञा० ३२६ ।

पवडणता-प्रपतनता-प्रपतनया वा । ठाणा० २८० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पवडणया–प्रपतनता–न च प्रयत्नेन चङ्क्रम्यते तत्र दुःख्यते । आव० ४०५ । प्रपतना–वङ्कगतेश्चतुर्थो भेदः । प्रज्ञा० ३२८ ।

पवडुक–कटकम् । ओघ० ५२ ।

पवण–प्लवनं–मनाक् पृथुतरविक्रमगतिगमनम् । जीवा० १२२ । प्लवनं–मनाग् विक्रमवद् गमनम् । जं० प्र० ३८८ । प्लवनं–धावनम् । उत्त० १३५ । प्लवने–मनाक् पृथुतरविक्रममति गमने । राज० २२ ।

पवणसुय–पवनसुतः । पउ० ५०–१ ।

पवण्ण–प्रपन्नः । उत्त० २२० ।

पवतणनिण्हग–प्रवचनं–आगमं निह्नुवते–अलपत्यन्यथा प्ररूपयतीति प्रवचननिह्नवः । ठाणा० ४१० ।

पवति–प्रवृत्ति–वार्त्ताम् । ज्ञाता० २१५ ।

पवत्त–वृत्तं–उत्क्षेपावस्थीतो विक्रान्तं मनाग्भारेण प्रवर्तमानम् । जीवा० २४७ ।

पवत्तए–प्रवृत्तिः निर्गमो यस्य स तथा । ज० प्र० २६० ।

पवत्तण–प्रवर्त्तनः–प्रथमप्रारम्भः । बृ० द्वि० १६६ आ ।

पवत्तय–प्रवृत्तकं प्रथमसमारम्भादूर्द्धमाक्षेपपूर्वकप्रवर्त्तमानम् । जीवा० १६४ ।

पवति–प्रवृत्तिः–तपःसंयमयोगेषु यो यत्र योग्यस्तं तत्र प्रवर्त्तति । असहं च निवर्त्तयति गणचिन्तकः प्रवृत्तिः । प्रश्न० १२६ । प्रवर्त्ती प्रवर्त्तकः । प्रज्ञा० ३२७ ।

पवतिणी–पंचविहसंयतीए पढमा । नि० चू० प्र० १३२ आ । प्रवत्तीनि–समस्तसाध्वीनां नायका, आचार्यस्थानीया । व्य० प्र० १४१ ।

पवत्तिय–पवित्रकं–ताम्रमयमङ्गुलीयकम् । ज्ञाता० १० । यथोचितप्रशस्तयोगेषु साधून् प्रवर्त्तयन्तीत्येवंशीलः । व्य० प्र० १७१ आ । प्रवत्तितः–प्रेरितः । सम० ८५ । प्रवर्त्तितम्–प्ररूपितम् । उत्त० ४७५ ।

पवत्तिवाउ– । नि० चू० प्र० ३४६ अ ।

पवत्ती–प्रवर्त्तयति–साधूनाचार्योपदिष्टेषु वैयावृत्यादिष्विति प्रवर्त्ती । ठाणा० १४३, २४४ । प्रवृत्तिः–वार्त्ता । ओघ० ५६ ।

पवत्तीए–प्रवृत्तिकः । ज्ञाता० ३६ ।

पवनबाण–पवनबाणः–तथाविधपवनस्वरूपतया परिणतः । जं० प्र० १२५ ।

पवय–प्लवकः । आव० ४२७ । प्लवकः । नंदी० १६५ ।

पवयण–प्रवचनं–द्वादशाङ्गं जिनशासनम् । प्रश्न० २ । प्रवचनम्–श्रुतम् । आव० ३२६ । प्रवचनम् । आ० (?) ४८६ । प्रवचनम्–द्वादशाङ्गं सूत्रार्थतदुभयरूपम् । आव० ५१० । प्रवचनं–तीर्थम् । आव० ३२५ । प्रकर्षेणोच्यतेऽभिधेयमनेनेति प्रवचनं–आगमः । भग० ७६३ । प्रवचनं–आगमः । भग० ६१ । प्रवचनं–तीर्थम् । बृ० प्र० १६६ आ । प्रकृष्टं–प्रशस्तं प्रगतं वा वचनं–आगमः–प्रवचनं द्वादशाङ्गः तदाधारो वा सङ्घः । ठाणा० ५१५ । प्रवचनं–श्रुतज्ञानम् । ज्ञाता० १२२ । प्रवचनं–प्रोच्यतेऽनेन जीवादयः पदार्था इति प्रवचनम्। प्रशब्दस्याऽव्ययत्वेनाऽनेकार्थद्योतकत्वात् प्रगतं जीवादिपदार्थव्यापकं प्रधानं, प्रशस्तं आदौ वा वचनं–प्रवचनं द्वादशाङ्गं–गणिपिटकम् । चतुर्विधश्रीश्रमणसङ्घोऽपि प्रवचनमुच्यते. जीवादितत्त्वं प्रवक्तीति प्रवचनम् । विशे० २ । प्रवचनम् । भग० ६६ । प्रवचनं–सामान्यश्रुतज्ञानम् । आव० ८६ । प्रवचनं–श्रुतज्ञानं सङ्घो वा, विंशतिस्थानके तृतीयः । आव० ११६ । प्रवचनः–द्वादशांगः–तदाधारे वा सङ्घः । सम० १४ । प्रवचनं–आगमः । आव० ६१ । प्रवचनं–द्वादशाङ्ग गणिपिटकं सङ्घो वा । आव० ६८ । प्रवचनं–प्रशस्तवचनं–प्रधानवचनं–प्रथमवचनं वा । अनु० ३८ । प्रवचनं–चतुर्वर्णसङ्घः । बृ० द्वि० १६८ आ । दुवालसंगं संघो । नि० चू० प्र० १०३ अ । प्रवचनं–प्रवचनमपि तीर्थम् । विशे० ५६१ ।

पवयणउब्भावणता–प्रवचनस्य-द्वादशाङ्गस्योद्भावनं-प्रभावनं प्रावचनिकत्वधर्म्मकथावादादिलब्धिभिर्वर्णवादजननं प्रवचनोद्भावनं तदेव प्रवचनोद्भावनता । ठाणा० ५१५ ।

पवयणकुसल–सूत्रार्थहेत्वादिप्रवचनावर्णवादिनिग्रहान्तगुणः । व्य० प्र० २३६ ।

पवयणगोयत्थ–प्रवचनगीतार्थः–सर्वसारेण प्रवचनस्य गृहीतोऽर्थः । व्य० द्वि० ४१२ आ ।

पवयणपभावणया–प्रवचनप्रभावनता–यथाशक्त्या मार्गदेशना, विंशतितमस्थानकम् । णाव० ११६ ।

पवयणभावणा–यथाशक्तिमार्गदेशनादिकया च प्रवचन-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रभावना । ज्ञाता० १२२ ।

पवयणमाऊ-प्रवचनमाता । आव० ७७८ ।

पवयणमाय-प्रवचनमातृ प्रवचनमातं वा, उत्तराध्ययनस्य चतुर्विंशतितममध्ययनम् । उत्त० ५११ ।

पवयणरहस्स-अपवादपदं, छेदसुत्तं । नि० चू० तृ० ८१ आ । प्रवचनरहस्यं-अपवादपदम् । बृ० प्र० १३१ अ ।

पवयणवच्छल्लया-प्रवचनं-द्वादशाङ्गं तदाधारो वा सङ्घस्तस्य वत्सलता-हितकारिता प्रत्यनीकत्वादिनिरासेनेति प्रवचनवत्सलता । ठाणा० ५१५ ।

पवयणसार-प्रवचनसारः-चारित्रः । ज्ञाता० १६६ ।

पवर-प्रवरः-सुभगः । जीवा० २७६ ।

पवरकुंदुरुक्क-प्रवरकुन्दुरुक्कं-चीडाभिधानं गन्धद्रव्यम् । सम० ६१ । प्रवरकुन्दुरुक्कः-चीडाभिधानो गन्धद्रव्यविशेषः । ज० प्र० ५१ ।

पवरगवल-प्रवरगवलं-वरमहिषशृङ्गम् । ज्ञाता० २२२ ।

पवरवर-प्रवरवरः-अतिप्रधानः । ज्ञाता० १२ ।

पवह-प्रवहे यतः स्थानात् नदी वोढुं प्रवर्त्तते स प्रवहः । जं० प्र० २९३ । प्रवहः-मूलः । ज० प्र० २९५ । प्रवहः-ह्रदनिर्गमः । जं० प्र० ३०९ ।

पवहणं किच्चु-प्लवनकृत्यं-तरकाण्डम् । ज्ञाता० १९१ ।

पवहण-प्रवहणं-वेगसरादि । औप० ५९ । प्रवहणं-यानम् । आव० ४२० ।

पवा-प्रपा-उदकदानस्थानम् । आचा० ३६६ । प्रपा-उदकदानस्थानम् । आचा० ३०७ । प्रपा-आगमनगृहम् । ठाणा० १५७ । भग० २३७ । प्रपा-जलदानस्थानम् । प्रश्न० ८ । प्रपा-जलदानस्थानम् । औप० ४१ । प्रपा-जलदानस्थानम् । प्रश्न० १२६ । प्रपा-जलदानस्थानम् । ज० प्र० १४४ । प्रपा-जलस्थानम् । ज्ञाता० ७९ । गिम्हादिसु उदगदाण ठाणं । नि० चू० द्वि० ६९ आ ।

पवाए-प्रपातः-प्रपतज्जलौघः । ज० प्र० २९ । प्रपातः-गर्तः । ज्ञाता० १९१ । प्रवाढः-व्याजः । सूत्र० ११३ । प्रपातो-यत्र पर्वतात् पानीयं पतति । बृ० द्वि० १०६ अ ।

पवाओ गर्ता । बृ० तृ० ५७ अ ।

पवात-प्रपातः । बृ० द्वि ३१ अ ।

पवातखड्डा-प्रपातगर्त्ता । आव० ३७४ ।

पवाय-प्रपाणं-उत्तरोष्ठतलम् । ज० प्र० २३७ । प्रपातः-पर्वतात्प्रपतज्जलसमूहः । सम० ८५ । प्रपातः-प्रपतज्जलसन्तानः । सम० ४५ । प्रपातः-गर्त्तः । विपा० ५५ । प्रपातः भृगवो यत्र मुमूर्षवो जनः झम्पां ददति, अथवा प्रपातः रात्रिधाटीः । ज० प्र० ६६ । प्रपातः-भृगुर्यत्र जनः काश्चित् कामनां कृत्वा प्रपतति । ज० प्र० १२४ । प्रपातः-गच्छज्जनस्खलनहेतुः पाषाणः भृगुः वा । ज० प्र० २२३ । प्रवादः-प्रकर्षेण प्रतिवादनमस्मिन्निति । उत्त० ७३ । प्रपातः-भृगुः । ज्ञाता० ९९ । पवादं-सर्वज्ञोपदेशम् । आचा० २२७ । छिन्नटङ्कानदी प्रपातः । भृगुपातादिकं वा । व्य० प्र० ६१ आ । प्रवादः-प्रकृष्टो वादः प्रवादः-आचार्यपारम्पर्योपदेशः-प्रवादः । आचा० २२७ ।

पवायए-प्रकर्षेण प्रधान आदौ वा वाचकः प्रवाचकः । आव० ६१ ।

पवायतड-प्रपाततटः-भृगुतटः । ज्ञाता० २६ ।

पवाया-प्रवाताः । आचा० ३२९ । प्रवाता-या ग्रीष्मकालेऽपराह्णे उपलेपनादिकरणेन धर्म्मं नाशयति । बृ० प्र० २६३ (?) ।

पवालंकुर-प्रवालः-शिलीदलं तस्याङ्कुरः प्रवालाङ्कुरः । प्रज्ञा० ३६१ ।

पवाल-प्रवालं-विद्रुमम् । भग० १६३ । प्रवालः-पल्लवाङ्कुरः । भग० ३०६ । प्रवालः-पल्लवाङ्कुरः । जं० प्र० २९, ३० । प्रवालः-पल्लवाङ्कुरः । प्रज्ञा० ३१ । प्रवालम् । ज० प्र० १२२ । प्रवालः-पल्लवः । जं० प्र० १६८ । प्रवालं-पल्लवाङ्कुरः । ठाणा० ३४५ । प्रवालं-पृथिवीभेदः । आचा० २९ । प्रवालः-शिलादलम् । प्रज्ञा० ३६२ । प्रवालं-विद्रुमः । प्रज्ञा० २७ । प्रवालः-पल्लवाङ्कुरः । औप० ७ । प्रवालः-ईषदुन्मीलितपत्रभावरूपः । (?) । प्रवालं पल्लवम् । दश० १८५ । प्रवालकं-विद्रुमः । उत्त० ६८९ । प्रवालं-विद्रुम । जीवा० २३ । प्रवालं-विद्रुमम् । प्रश्न० ३८ । प्रवालं-पल्लवाङ्कुरम् । जीवा० १८८ । प्रवालः-पल्लवाङ्कुरः । जीवा० १८७ । प्रवालः-रत्नविशेषः, प्रवालाङ्कुरः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीवा० १६१ । प्रवालः-ईषदुन्मीलितपत्रभावः । जीवा० २२० । प्रवालः-ईषदुन्मीलितपत्रभावः-पल्लवः । जीवा० २६४ ।

पवालता-प्रवालता-नवाङ्कुरता । ठाणा० २६७ ।

पवालवण्ण-प्रवालवर्णः-विद्रुमवर्णः । ज्ञाता० २३० ।

पवालिणो परिणमंति-प्रवालिनः परिणमन्ति-प्रवालः-पल्लवाङ्कुरस्तद्युक्ततया परिणमन्ति । सूर्य० १७२ ।

पवाह-प्रवाहः-अनादिकालसन्ततिपतितः । जीवा० २१७ । प्रवाहः-अनादिकालसन्ततिपतितः । ज० प्र० ६२ ।

पविइण्ण-प्रविकीर्णः-गमनागमनाभ्यां व्याप्तः । औप० ४ ।

पविइन्न-प्रविकीर्णः-गमनागमनाभ्यां व्याप्तः । ज्ञाता० ३ ।

पविकत्थइ-प्रविकत्थते-आत्मानं श्लाघते । सम० ५४ ।

पविज्जआयति-प्रकर्षेण विद्युतं कुर्वति । जं० प्र० ३८६ ।

पविल्लल-रुधिरपूयादिना पिच्छिलः । सूत्र १३६ ।

पविज्जुयाति- । भग० ६६५ ।

पविट्ठ-प्रविष्टः-एककालं तद्भावेन परिणतः । जीवा० ६८ । प्रविष्टः व्यवस्थितः । जीवा० १०५ ।

पविट्ठपुव्व-प्रविष्टपूर्वः-परिणतपूर्वः । जीवा० ६८ ।

पविणेति-प्रविनयति-क्षपयति । भग० १०० ।

पवितर-प्रवितरं-स्फुटितम् । जीवा० १२२ ।

पवित्तय-पवित्रकं-ताम्रमयान्यङ्गुलीयकम् । औप० ६५ । पवित्रकं-अङ्गुलीयकम् । भग० ११३ । पवित्रकं-अङ्गुलीयकम् । औप० ६३ ।

पवित्ता-पवित्रा-अहिंसायाः पञ्चपञ्चाशत्तमं नाम । प्रश्न० ६६ ।

पवित्ति-प्रवृत्तिः । आव० ५१३ ।

पवित्तिवाउय-प्रवृत्तिव्यापृत्तः-वार्ताव्यापारवान् वार्तानिवेदक इति । औप० १३ ।

पवित्ती-प्रवृत्तिः यथायोगं वैयावृत्त्यादौ साधूनां प्रवर्त्तकः । आचा० ३५३ ।

पवित्थर-प्रविस्तारः-धनधान्यादिविस्तारः परिग्रहस्य विंशतितमं नाम । प्रश्न० ६२ । प्रविस्तारः-धनधान्याद्विपदचतुष्पदादिविभुतिविस्तरः । उपा० २ ।

पविद्ध-प्रवृद्धं-उपचाररहितम् । बृ० तृ० ११ अ ।

पविद्धत्थं-प्रविध्वस्तं-सर्वथा भस्मसाद्भूतम् । जीवा० १२२ ।

पविभत्त-प्रविभक्तं-प्रतिनियतम् । प्रज्ञा० ३२६ ।

पविभत्ती-प्रविभक्तिः-प्रकर्षेण स्वरूपसम्मोहाभावलक्षणेन विभागः पृथक्त्या । उत्त० ८३ ।

पवियक्खणा-प्रविचक्षणा, अभ्यासातिशयतः क्रियां प्रतिप्राविण्यवन्तः । उत्त० ३२० ।

पवियारणा-प्रविचारणा, प्रज्ञापनायाश्चतुस्त्रिंशत्तमं पदम् । प्रज्ञा० ६ ।

पवियारियंत-प्रविचारयन् । उत्त० ३८६ ।

पविरल-प्रविरलं-लम्बमानम् । जीवा० २६८ ।

पविरलपप्फुसियं-प्रविरलाः प्रस्पृशिका-विप्रुषो यत्र तत्तथा । भग० ६६५ ।

पविरलफुसिय-प्रविरलस्पृष्टं-प्रविरलानि घनभावे कर्दमसम्भवात्मकर्षेण यावता रेणवः स्थगिता भवन्ति तावन्मात्रेणोत्कर्षेण स्पृष्टानि-स्पर्शनानि यत्र वर्षे तत् प्रविरलस्पृष्टम् । जीवा० २४५ ।

पविरलसाहुसहिओ-प्रविरलसाधुसहितः । आव० २६३ ।

पविलीणं-प्रविलीनं-नवनीतमिव सर्वथा गलितम् । जीवा० १२२ ।

पविरल्लियं-विस्तारवत् । प्रश्न० ६२ ।

पविसइ-प्रविशति-पविसइ । आचा० ३६५ ।

पविसमाणे-प्रविशन् । सुय० १२ ।

पविसारिय-प्रविसारितम् । दश० ६६ ।

पविसिणि-णिगच्छति णिति । नि० चू० प्र० ५१ अ ।

पविसियओ-प्रोषितः । आव० ४२३ ।

पवीलए-तत उर्द्धमधोतागमः परिणतार्थसद्भावः सन् प्रकर्षेण विकृष्टतपसा पीडयेत् प्रपीडयेत् । आचा० १६२ ।

पवीला-प्रपीडनं-बहुपीडनम् । दश० १५३ ।

पवुट्ठदेव-प्रवृष्टो देवः । आचा० ३८६ ।

पवेअए-प्रवेदयति-कथयति । दश० २६६ ।

पवेइआ-प्रकर्षेण प्रशस्ताऽऽदौ वा वेदिता प्रवेदिता । आचा० २५ ।

पवेइय-प्रवेदितः-प्रकर्षेण-स्वयं साक्षात्कारित्वलक्षणेन ज्ञातः । उत्त० ८१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पवेइया-प्रवेदिता-केवलालोकेन प्रकर्षेण वेदिता प्रवेदिता विज्ञाता । दश १३७ ।

पवेईयं-प्रवेदितं-प्रतिपादितम् । आचा० १३४ ।

पवेतणं-प्रवेदनं-प्ररूपणं फलकथनम् । बृ० तृ० २५ अ ।

पवेदणं-प्रवेदनं-पूत्कृतम् । बृ० द्वि० ६३ आ ।

पवेपति-प्रवेपते दन्तवीणादिसमन्वितः कम्पते । आचा० ३०६ ।

पवेस-प्रवेशः-कुड्यस्थूलत्वमष्टयोजनान्युच्चमिति । ठाणा० २२७, २६४ । प्रवेशः-निमज्जनं जलप्रवेशः । उत्त० ७११ । प्रवेशः-उपपातः । आचा० ६९ ।

पवेसण-नवमशतकसप्तनृतीयोद्देशके गाङ्गेयाभिधानानगरकृतनरकादिगतप्रवेशनविचारः । भग० ३३६ ।

पवेसणए-गत्यन्तरादुद्वृत्तस्य विजातीयगतौ जीवस्य प्रवेशनं, उत्पाद इत्यर्थः । भग० ४४२ ।

पवेसियल्लओ-प्रवेशितः । आव० ४०५ ।

पवेसेत्ता-प्रवेशयित्वा-नीत्वा । आव० ६६२ ।

पव्व-पर्व-मेघलादि दृष्ट्वा पर्वतो वा । सूत्र० १४७ । पर्व-जानुकुर्परादि । उत्त० ८४ । पर्वः-पक्षः । सूर्य० १५५ । प्रसवः-पुत्रजन्मः । ज्ञाता० ५३ । अमावासी पौर्णमासी वा तदुपलक्षितः पक्षोऽपि पर्व । ठाणा० ३७० । प्रर्व-कौमुदीप्रभृतिः । ज्ञाता० ७६ ।

पव्वइए-प्रव्रजितः-पापान्निष्क्रान्तः । दश० २६२ । प्रव्रजेयं गृहान्निष्क्रामेयम् । उत्त० ४०६ ।

पव्वइओ-प्रव्रजितः-प्रकर्षेण-विषयाभिष्वङ्गादिपरिहाररूपेण व्रजितो-निष्क्रान्तः । उत्त० ४४२ । प्रव्रजितः । आव० ४३४ ।

पव्वइतो-पर्वतः-इन्द्रदत्तराजस्य दासचेटः । उत्त० १४८ ।

पव्वइय-प्रव्रजितः-शाक्यादिः । अनु० २४४ । प्रव्रजितः-प्रगतः-प्रातः, प्रव्रजितः-प्रव्रज्यां प्रतिपन्नः । जं० प्र० १४२ । प्रव्रजितः-द्विपृष्ठवासुदेवपूर्वभवः । आव० टी० १६३ ।

पव्वए-वंसो । नि० चू० प्र० ६० आ ।

पव्वओ-उभओ पेरुरहितं । नि० चू० तृ० २३ अ ।

पव्वगो-उभसारित्थो । नि० चू० द्वि० ६९ आ । पर्वगः-स्थावरविशेषः । सूत्र० ३०७ । पर्वकः-वाद्यविशेषः । प्रश्न० १५६ । पर्वगः-इक्षुप्रभृतिः । भग० ३०६ । पर्वगः-इक्ष्वादि । ज० प्र० १७४ । पर्वगः । प्रज्ञा० ३७ । पर्वगः-इक्ष्वादि । जीवा० २६ । वनस्पतिविशेषः । सूत्र० ३०७ ।

पव्वज्ज- । ज्ञाता० २०२ ।

पव्वज्जा-प्रव्रजनं-गमनं पापाच्चरणव्यापारेष्विति प्रव्रज्या । ठाणा० १२६ । प्रव्रज्या । ठाणा० ४७३ ।

पव्वट्टुणं-पुणो पुणो पव्वट्टुणं । नि० चू० प्र० १६० आ ।

पव्वणी-पर्व्वणी-कार्त्तिक्यादि । भग० ४७३ ।

पव्वतओ-पर्वतः-दासचेटः । आव० ३४३ ।

पव्वतिंद-पर्वतेन्द्रः । सूर्य० ७८ ।

पव्वतियग-पर्वत्रिकम् । आव० २१० ।

पव्वदेसकाल-पर्वदेशकालः । आव० १४६ ।

पव्वपेच्छतिणो-काश्यपगोत्रभेदः । ठाणा० ३६० ।

पव्वबीय-पर्वबीजः-इक्ष्वादिः । सूत्र० ३५० ।

पव्वय-पर्वगः-तापसभेदः । आव० ६७३ । पर्वतः । जं० प्र० ४२६ । तृणविशेषः । प्रज्ञा० ३३ । पर्वतः । भग० १७० । पर्वताः पर्वतनात्-उत्सवविस्तारणात्पर्वताः-क्रीडापर्वताः, उज्जयन्तवैभारादिः । भग० ३०६ । पर्वतः-क्रीडापर्वतः । ज० प्र० १६८ । पर्वतः-क्षुद्रगिरिः । ज० प्र० ६६ । पर्वगः-इक्ष्वादिः । उत्त० ६६२ । पर्वतः-तितिक्षोदाहरणे द्वितीयो दासचेटः । आव० ७०२ । पर्वतः-मथुरायां राजा आव० ३४४ ।

पव्वयकडगं-पर्वतकटकं भगुः । प्रश्न० ५६ ।

पव्वयगिह-पर्वतगृहं-पर्वतगुहः । आचा० ३८२ ।

पव्वयमह-पर्वतमहः । जीवा० २८१ । पर्वतमहोत्सवः । ज्ञाता० ३६ ।

पव्वयय-द्वितीयवासुदेवपूर्वभवः । सम० १५३ ।

पव्वयराया-पर्वतराजः-पर्वतेन्द्रः । जीवा० ३४७ ।

पव्वयविदुग्गं-पर्वतदुर्गः-पर्वतसमुदायः । भग० ६२ । सूत्र० ३०७ ।

पव्वया-पर्वजाः-पर्वाणि सन्धयस्तेभ्यो जातः । उत्त० ६६२ ।

पव्वराहू-पर्वणि-पौर्णमास्यां अमावास्यायां वा यथाक्रमं चन्द्रस्य सूर्यस्य वा उपरागं करोति स पर्वराहुः । सूर्य०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६० । पर्वराहुः-यः कदाचिदकस्मात्समागत्य निजविमानेन चन्द्रविमानं सूर्यविमानं वाऽन्तरितं करोति । जीवा० ३३९ । पर्वराहुः । भग० ५७६ ।

पव्वहइ-प्रव्यथते-प्रकृष्टव्यथामिवोत्पादयति । भग०१६६ ।

पव्वहणा-प्रव्यथना-भयोत्पादनम् । औप० १०३ ।

पव्वहेज्ज-प्रव्यथते-बाधते अन्तर्भूतकारितार्थत्वाद्वा प्रवाहयेत् । ठाणा० ३०६ । प्रव्यथेत-ग्रामाच्चालयेन्निष्काशयेत् कश्चित् उदर्को वा आगच्छति ततो नश्येदिति । ठाणा० ३१० ।

पव्वा-लोकपालस्य तृतीया परसद् । ठाणा० १२७ ।

पव्वाओ-पर्वाणि-जानुकूर्परादीनि । उत्त० २५१ ।

पव्वाण-प्रम्लानं-मनाक् शुष्कम् । ओघ० १७० ।

पव्वाय-प्रम्लानः-अर्धशुष्कः । पिण्ड० १६ । प्रम्लानं-म्लानवृन्तम् । बृ० प्र० १७६ आ ।

पव्वायचिक्खल-प्रवातकर्दमः । ओघ० ७३ ।

पव्वायण-प्रव्राजनं-रजोहरणादिवेषदानेन संयमस्वीकरणम् । भग० १२२ ।

पव्वायणा-प्रव्राजना । दश० ३१ ।

पव्वायणायरिओ-प्रव्राजनाचार्यः-आचार्यविशेषः । दश० ३१ ।

पव्वायणायरित प्रव्राजनाचार्यः । ठाणा० २३६ ।

पव्वावण्णा-पव्वावणिज्जपरिक्खा पव्वावण्णा । नि० चू० द्वि० ४६ आ ।

पव्वावित्तए-प्रव्राजयितुं रजोहरणादिदानेन । ठाणा० ५६।

पव्वाहा-प्रवाहाः-अपकृष्यनिप्रकर्षवन्ति उदकवहनानि । भग० १६६ ।

पविद्धं-प्रविद्धं-वन्दनकं दददेव नश्यति, कृति कर्मणि तृतीयो दोषः । आव० ५४३ ।

पविहति-पगरिसेण विहि खिवति । नि० चू० प्र० २५६ आ ।

पव्वीसग-पव्वीसकं वाद्यविशेषः । प्रश्न० ७० ।

पव्वोणीए-अमोग्गतिता, सन्मुखगमनम् । नि० चू० प्र० प्र० २८५ आ ।

पशवः-पश्यन्ति प्रसूयन्ते वा । सम० ६२ ।

पश्चात्कर्तुं-पराजेतुम् । नंदी० १५० ।

पश्चात्तापकृत्-पश्चादनुतापकः । उत्त० ३४० ।

पश्चानुपूर्वी-गणनानुपूर्व्यां द्वितीयो भेदः । ठाणा० ४ ।

पश्चिम-अधिक्षेपः । नंदी० २१ ।

पश्चिमरुचक-दिक्कुमारिवास्तव्यपर्वतः । ज्ञाता० १२७ ।

पसंग-प्रसङ्गः-अनुष्ठानम् । आचा० ६६ । प्रसङ्गः-आसेवनः । ओघ० १६२ । प्रसङ्गो-अवशस्यानिष्टप्राप्तिः । नि० चू० प्र० २५ अ । प्रसङ्गः-परम्परा । बृ० द्वि० १२३ आ । प्रसङ्गः-भूयः कारापणम् । बृ० द्वि० १६३ आ । प्रसङ्गः-अभ्यासः । आव० ४२६ । प्रसङ्गः-आसेवनारूपः । सम० ४६ । प्रसङ्गः-तथाविधासक्तिरूपः । उत्त० ६१७ । प्रसङ्गः-अभ्यासः । नंदी० १६४ । प्रसङ्गः-कामेषु प्रसजनमभिषङ्गः, अब्रह्मण एकोनत्रिंशत्तमं नाम । प्रश्न० ६६ ।

पसंत-प्रशान्त-सर्वथाऽसदिव । जं० प्र० ३८६ । प्रशान्तः बहिर्वृत्त्या । भग० ४६०, ६२४ । प्रशान्तः-प्रशाम्यति क्रोधादिजनितोत्सुक्यरहितो भवत्यनेनेति, परमगुरुवचःश्रवणादिहेतुसमुल्लसित उपशमप्रकर्षात्मरसः । अनु० १३५ । प्रशान्तः-क्रोधादिदोषपरिहारात् । अनु० १४० । प्रस्वान्तः-प्रकृष्टचित्तः । जं० प्र० १४६ । प्रशान्तः । ओप० ३५ ।

पसंतजोवी-प्रशान्तजीवी बहिर्वृत्त्यपेक्षया । प्रश्न० १०६ ।

पसंते-पसन्ते-कषायोदयस्य विफलीकरणात् । ज्ञाता० १०३ ।

पसंधण-पसन्धनं-सातत्येन प्रवर्त्तनम् । पिण्ड० १३३ ।

पसंस-प्रशस्यः-प्रशस्यते सर्वैरप्यविगानेनाद्रियत इति लोभः । सूत्र० ६६ ।

पसंसइ-प्रशंसति-स्तौति-बहुमन्यते । आव० ५८७ ।

पससा-प्रशंसा-वन्दनं-संस्तवः । आचा० २६ । प्रशसनं-प्रसंसा स्तुतिः । आव० ८१६ ।

पसंसिए प्रशंसितः-स्तुतः । आचा० १२८ ।

पसइओ-प्रसृतिः-नावाकारतया व्यवस्थापिता प्राञ्जलकरतलरूपा । ज० प्र० २४४ ।

पसई-द्वे असृती प्रसृतिः । ज्ञाता० ११६ । प्रसृतिः-नावाकारता व्यवस्थापितप्राञ्जलकरतलरूपा । अनु० १५२।

पसञ्जणा-प्रसजना-प्रायश्चित्तवृद्धिः । बृ० द्वि० ६ आ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पसज्झ-प्रसह्य-प्रकटमेव । सूत्र० ६६ । प्रसह्य-धर्मनिरपेक्षतया प्रकटम् । दश० २७७ ।

पसढं-प्रसह्य-अनेकदिवसस्थापनेन प्रकटम् । दश० १७६ । प्रकर्षेण शठः प्रशठः । सूत्र० ३६४ ।

पसण्ण-प्रसन्नः-द्राक्षादिद्रव्यजन्या मनःप्रसक्तिहेतुरिति । विपा० ४६ । प्रसन्नः-सुराभेदः । ज्ञाता० २०६ ।

पसण्णकित्तीणं-प्रसन्नकीर्त्तिः । पउ० ५०-१६ ।

पसण्णचंद- । नि० चू० तृ० २३ आ ।

पसत्ता-प्रशास्ता-बुद्धयुपजीवीमन्त्रिप्रभृतिः । सूत्र० २७८ ।

पसत्थ-प्रशस्तं-उचितसेवनया हितम् । जीवा० ४ । प्रशस्तं-शोभनम् । जीवा० २०७ । प्रशस्तम् । आ० ३५५ (?) । प्रशस्तं-सामायिकस्य तृतीयपर्यायः । आव० ४७४ । प्रशस्तः-प्रशंसास्पदीभूतः । जीवा० २२६ ।

पसत्थदमसासण-प्रशस्तदमशासनः-प्रशस्तः-प्रशंसास्पदो दमश्च-उपशमः शासनं च सर्वज्ञागमात्मकं यस्य सः । उत्त० ४६५ ।

पसत्थनिज्जराए-प्रशस्तनिर्जराकः-कल्याणानुबन्धनिर्जरः । भग० २५१ ।

पसत्थर-प्रकर्षेण शास्ता प्रशस्ता तं धर्मपाठकादिलक्षणम् । आव० ५१६ ।

पसत्थाइं-प्रशस्तानि-प्रशस्तितानि-श्लाघितानि । ठाणा० २६७ ।

पसत्थार-प्रशस्तारः-धर्मशास्त्रपाठकः । ओप० २७ । प्रशास्ता-अनुशासको मर्यादाकारी सभानायकः सभ्यो वा । ठाणा० ४६२ । प्रशास्ता-लेखाचार्यादिः धर्मशास्त्रपाठकः । ठाणा० १२६ । प्रशास्ता-धर्मोपदेशकः । ठाणा० ५१६ । लेखाचार्यः, भर्त्ता वा । आव० ६६३ ।

पसत्थारथेरा-प्रशासति-शिक्षयन्ति ये ते प्रशास्तारः-धर्मोपदेशकास्ते च ते स्थिरीकरणात् स्थविराश्चेति प्रशास्तृस्थविराः । ठाणा० ५१६ ।

पसत्थारदोस-प्रशास्ता-अनुशासको-मर्यादाकारी सभयानकः सभ्यो वा तस्माद् द्विष्टादुपेक्षकाद्वा दोषः प्रतिवादिनो जयदानलक्षणो विस्मृतप्रमेयप्रतिवादिनः प्रमेयस्मारणादिलक्षणो वा प्रशास्तृदोषः । ठाणा० ४९२ ।

पसन्न-प्रसन्ना-सुराविशेषम् । उपा० ४६ । प्रसन्ना-सुराविशेषः । ज० प्र० १०० । प्रसन्नं-परिणतम् । दश० २०७ । प्रसन्ना-सुराविशेषः । जीवा० २६५ । प्रसन्नं-विकाररहितम् । उत्त० ४४२ ।

पसन्नचंद-प्रसन्नचन्द्रः-उत्कृष्टबाह्यकरणवतः सप्तमनरकप्रायोग्यकर्मबन्धकः । आव० ५२६ । प्रसन्नचन्द्रः-द्रव्यव्युत्सर्गोदाहरणे क्षितिप्रतिष्ठितनगरे राजा । आव० ४८७ ।

पसम-प्रशमः । आव० ५६१ । प्रकर्षेण शमः प्रशमः-खेदः स्वपरसमयतत्त्वाधिगमरूपः । आव० ५६१ ।

पसमथेज्जाइगुणगणोवेओ-प्रश(श्र)मस्थैर्यादिगुणगणोपेतः-प्रशमः-स्वपरसमयतत्त्वाधिगमरूपः खेदः स्थैर्यं जिनशासने निष्प्रकम्पता प्रभावनादिकं च त एव गुणास्तेषां गणः-समूहस्तेनोपेतो-युक्तो यः सः । अथवा प्रशमादिगुणगणः-प्रशमसंवेगनिर्वेदानुकम्पास्तिक्याभिव्यक्तिलक्षणः । आव० ५६१ ।

पसय-पसयः-आटविको द्विखुरश्चतुष्पदविशेषः । अनु० ३६ । प्रशयः-द्विखुर आटव्यपशुविशेषः । प्रश्न० ७ । पसयः-आटव्यो द्विखुरश्चतुष्पदविशेषः । भग० ३४५ । प्रश्नयः-द्विखुरः आटव्यपशुविशेषः । ज० प्र० १२४ । पसय-आटव्यचतुष्पदविशेषः । ज्ञाता० ६३ ।

पसर-प्रसरम् । ओघ० १४८ । प्रसरः-विस्तारः । प्रश्न० ७६ ।

पसव-प्रसवः-पुत्रादिजन्मः । ज्ञाता० ७६ ।

पसवई-प्रसूते-निर्वर्त्तयति । दश० १८७ ।

पसवसरित्थ-पशुसदृक्षः । पउ० २८, ६४ ।

पसाय-प्रसादः-शुभस्वरूपता । विशे० १२४५ ।

पसायट्ठी-प्रसादार्थी-गुरुपरितोषाभिलाषी । उत्त० ५५ ।

पसायपेहिए-प्रसादप्रेक्षी-प्रसादं प्रेक्षितुं-आलोचितुं शीलमस्येति । उत्त० ५५ ।

पसारंति-मन्त्रयति । व्य० प्र० २७६ ।

पसार-पर्यालोचः । उ० मा० गा० ४७५ ।

पसारण-प्रसारणं-अङ्गानां विक्षेपः । आव० ५७४ ।

पसारिय-प्रसारितः-विरलीकृतः । उत्त० ३६७ । प्रसारितं-गात्रविततकरणम् । दश० १४१ ।

पसारेज्ज-प्रसारयेत् । आव० ८५३ ।

पसासेमाणे-प्रसाधयन्-पालयन् । ज्ञाता० ६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पसाह–प्रशाख:–शाखाविनिर्गतशाख: । जं० प्र० ३२४ ।
पसाहण–प्रसाधनम् । आव० ५५५ । प्रसाधनं–मण्डनम् । ज्ञाता० ३६, ६३ ।
पसाहणघरगं–प्रसाधनगृहकं–यत्रागत्य स्वं परं च मण्डयति । जीवा० २८० । प्रसाधनगृहकं–यत्रागत्य स्वं परं च मण्डयति । ज० प्र० ४५ ।
पसाहन–प्रसाधनं–मण्डनम् । ज्ञाता० ४३ ।
पसाहि–प्रसाधि–प्रतिपालय । उत्त० ३८६ ।
पसाहिउं–प्रसाध्य–प्रगुण्य । आव० ७०३ ।
पसाहिए–प्रसाधित:–संस्कृत: । उत्त० ४६३ ।
पसाहिता–प्रसाध्य–वशीकृत्य । उत्त० ४४८ ।
पसिअ–प्रसित:–प्रकर्षेण बद्ध: । ज० प्र २११ ।
पसिढिलं–प्रशिथिलं दृढम् । ओघ० ११० । प्रशिथिलं–दोषो यददृढमनिरायन्तं वा वस्त्रं गृह्यते । उत्त० ५४१ । प्रशिथिलं–अदृढम् । ओघ० ११० ।
पसिणं–प्रश्नं–आदर्शप्रश्नादि । सूत्र० १८१ । प्रश्न: । आव० ७६३ । प्रश्न: । भग० ११६ । प्रश्न:–शिष्यपृष्टस्यार्थस्य प्रतिपादनरूप: । जं० प्र० ५४१ । प्रश्न:–अङ्गुष्ठस्वप्नप्रश्नादि । वृ० तृ० ३३ अ । प्रश्नं पृच्छचमानत्वात् । ज्ञाता० ११० । प्रश्न:–अङ्गुष्ठकुड्यप्रश्नादि: ठाणा० ३०१ ।
पसिणवागरण–प्रश्नव्याकरणम् । उपा० ३६ । प्रश्नव्याकरणं–प्रश्नोत्तरम् । ज्ञाता० ११० ।
पसिणसयं–प्रश्नशतं–या विद्या मन्त्रो वा विधिना जप्यमान: पृष्टा एव सन्त: शुभाशुभ कथयन्ति ते प्रश्ना: तेषामष्टोत्तरं शतम् । नंदी० २३४ ।
पसिणाइ–प्रश्नविद्या । ठाणा० ५१२ ।
पसिणापसिण–प्रश्नाप्रश्नं स्वप्नविद्यादि । भग० ५१ । प्रश्नाप्रश्न: स्वप्नविद्यादि । प्रज्ञा० ४०६ । प्रश्नाप्रश्न:–पृच्छतोऽपृच्छतो वा शुभाशुभकथनम् । नंदी० २३४ । प्रश्नप्रश्नं–"पसिणापसिणं सुमिणे विज्जासिद्ध कहेइ अन्नस्स । अहवा आइंखिणिया घटियसिट्ठं परिकहेइ ।" बृ० प्र० २१५ अ । सुविणयविज्जाकहियं कथितस्स पसिणापसिणं भवति । नि० चू० द्वि ८५ अ ।
पसिद्धं–प्रसिद्ध–प्रख्यातम् । प्रश्न० ११३ । प्रसिद्धि:–आशङ्कापरिहाररूपा । आव० ३७७ ।
पसिमा–अंबफलाइ । नि० चू० द्वि० ६० अ ।
पसु–पशु:–ग्राम्य: । सम० ६२ । पशु:–छगलक: । अनु० ३६ । मण्डल । नि० चू० द्वि० ८६ अ ।
पसुधम्म–पशुधर्म:–मात्रादिगमनलक्षण: । दश० २२ ।
पसुपाली–पशुपाली । आव० ५३८ ।
पसुया–द्विखुरविशेष: । प्रज्ञा० ४५ ।
पसुवह–पशुवध: । आव० ६५१ ।
पसू–पशु:–अश्वादिक: । उत्त० १८८ ।
पसूअ–प्रसूत:–निर्गतशीर्षक: । दश० २१६ ।
पसूई–प्रसुति:–शालिरत्नम् । आव० ४३५ ।
पसूति–प्रसूति:–नखादिविदारणेऽपि चेतनया असंवितिस्तद्रूप: । ओघ० १६३ ।
पसूया–प्रसूता–कणिशानां पत्रगर्भेभ्यो विनिर्गमात् । ज्ञाता० ११६ ।
पसेढि–श्रेणेर्या विनिर्गताऽन्याश्रेणि: सा प्रश्रेणि: । ज०प्र० ३१ ।
पसेढी–प्रश्रेणि:–श्रेणेर्या विनिर्गताऽन्या श्रेणि: प्रश्रेणि: । जीवा० १८६ ।
पसेणइ–अस्यामवसरपिण्यां पञ्चमकुलकर: । ठाणा० ३८६ ।
पसेणइए–प्रसेनजित्–पञ्चमकुलकर: । आव० १११ ।
पसेणई–प्रसेनजित्–योगसंग्रहे शिक्षादृष्टान्ते कुशाग्रपुरे राजा । आव० ६७१ । प्रसेनजित्–द्वादशमकुलकरनाम । ज० प्र० १३२ । प्रसेनजित्–औत्पत्तिकीबुद्धिदृष्टान्ते मुद्रारत्ने राजा । आव० ४१७ । प्रसेनजित्–श्रावस्तिनृपति: । उत्त० २८६ । पञ्चमकुलकर: । सम० १५० ।
पसेणतो–प्रसेनजित्–अन्तकृद्दशानां प्रथमवर्गस्य नवममध्ययनम् । अन्त० १ ।
पसेणीय–प्रश्रेणय:–स श्रेण्यवान्तरभेद: । ज० प्र० २६४ ।
पसेवय–प्रसेवक:–क्षुरादिभाजनम् । उपा० १२ ।
पस्स–पश्यन्–अवलोकयन् । उत्त० २६८ ।
पस्सवण–प्रश्रवणं–मूत्रम् । दश० ६७ ।
पहंस–प्रधर्ष्य–पराभूय । उत्त० ३५३ ।
पह–वस्त्रैषणायां द्वितीया ऐषणा । आचा० २७७ । पन्था–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रथ्या । भग० १३७, २०० । प्रभाकरः-सम्यग्दृष्टौ महाबलस्य राज्ञश्चित्रकरः-प्रभासः । आव० ७०६ । पन्थः-साधारणमार्गः । अनु० १५६ । पन्था-रथ्यामात्रम् । ओप० ५७ । पन्था-सामान्यमार्गः । प्रश्न० ५८ । पन्था-उपदेशतो सम्यग्दर्शनप्राप्तौ दृष्टान्तः । आव० ७५ । पन्था-मार्गः । आव० १३६ । पथः-पथमात्रम् । ज्ञाता० २८ । प्रभा-एकैकदुर्नयाभ्युपगमपरिस्फूर्तिः । नंदी० ४५ । पथः-रथ्यामात्रम् । ठाणा० २६४ ।

पहओ-प्रहतः-आसेवितः । आव० ३८६ ।

पहकर-पहकरः-सङ्घातः । जीवा० १८८ । समूहः । भग० ४६४ । समूहः । मर० । पहकरः-समुदायः । प्रश्न० ४७ । पहकरः-संघातः । जं० प्र० ३० । पहकरः-सङ्घातः । राज० ३ । देशोशब्दोऽयं समूहवाची । जं० प्र० १४५ । विस्तारवृन्दं देशोशब्दः । जं० प्र० १६६ । समूहः । जं० प्र० १०० ।

पहट्ठ-प्रहृष्टः-प्रहसितवदनः समुद्भूतरोमहर्षः । बृ० प्र० २४७ आ । प्रहृष्टः-प्रहर्षवान् । उत्त० २८७ । प्रहृष्टः-समर्थस्तरुणः । ओघ० १२६ ।

पहण-प्राहन्-प्रहतवान् । उत्त० ४४८ ।

पहयर-प्रहकरः-समूहः । विपा० ३६ ।

पहरणं-प्रहरणं-अक्षेप्यं शस्त्रम् । प्रश्न० ४७ । प्रहरणं करवालादि । प्रश्न० १३ । प्रहरणं क्षेप्यम् । विपा० ४६ । प्रहरणं-असिकुंतादि । जीवा० २५६ । प्रहरणं-खड्गादि । उत्त० १४३ । प्रहरणं खड्गादि । आव० ३४६ । प्रहरणं-अक्षेप्यास्त्रम् । भग० १६४ । प्रहरणं । भग० ३१८ । प्रहरणं-क्षेप्यशस्त्रं नाराचादि । भग० १३८ । प्रहरणं-लकुटमुसुण्ढ्यादि । आचा० ६० । प्रहरणः खड्गः । ठाणा० ४५० । प्रहरणं-अस्यादि । ज० प्र० २५६ । प्रहरणं-कुन्तादि । ज्ञाता० २२१ ।

पहरणकोस-प्रहरणकोशः-प्रहरणस्थानम् । जीवा० २३२ ।

पहराइया-लिपिविशेषः । प्रज्ञा० ५६ ।

पहराय-पञ्चमवासुदेवस्य प्रतिशत्रुः । सम० १५४ । दत्तवासुदेवशत्रुः, सप्तमवासुदेवशत्रुः । आव० १५६ ।

पहलिय-म्लेच्छविशेषः । प्रज्ञा० ५५ ।

पहवति-प्रभवति । आव० ३८४ ।

पहसित-प्रहसितः । भग० ५४५ ।

पहसिय-प्रहसितं-हसितुमारब्धम् । ज्ञाता० १३३ । प्रभा-तया सित इव बद्ध इव प्रहसित इव प्रकर्षेण हसितः इव । जं० प्र० २९७ । प्रहसितं-हसितुमारब्धम् । विपा० ८२ । प्रभासितः-प्रभा तया सित इव बद्ध इव । प्रहसितः-प्रकर्षेण हसितः । जीवा० २०६ ।

पहसति-प्रहसति । उत्त० ५१ ।

पहसिए-प्रहसितः-प्रहसित इव प्रभापटलपरिगततया प्रहसितः-प्रभया वा सितः-शुक्लः संबद्धो वा प्रभासित इति । भग० १४५ ।

पहा-प्रभा-ज्योत्स्ना । आव० ५१० ।

पहाइओ-प्रधावितः-आगतः । आव० ६६५ ।

पहाडेति-स्वेच्छयेतश्चेतश्चानाथं भ्रमयति । सूत्र० १२५ ।

पहाण-प्रधानः-कथितः । जीवा० २६८ । पाषाणम् । आव० ६१३ ।

पहाणदव्वसुद्धी-प्राधान्यद्रव्यशुद्धिः द्रव्यशुद्धिभेदः । उत्त० २११ ।

पहाणपर-प्रधानत्वेन परः प्रधानपरं-द्विपदानां तीर्थंकरः चतुष्पदानां सिंहादिः अपदानामर्जुनसुवर्णपनसादिः । आचा० ४१५ ।

पहाणाय-प्रकृष्टं हीनम्-अपगमः प्रहाणं तत्प्रयोजनो-लाभः प्रहाणायः-प्रहाणः प्रहानि वा । उत्त० १८३ ।

पहायदेसकाल-प्रभातदेशकालः । आव० ३६८ ।

पहार-प्रहारः-कशादिभिस्ताडनम् । दश० २६७ ।

पहारेत्ता-प्रधारयिता-स्थापयिता । भग० २३१ ।

पहारेत्थ-प्रधारितवान्-सङ्कल्पितवान् । भग० ११६ । प्रधारितवान्-विकल्पितवान् । ज्ञाता० १३१ । संप्रधारितवान् । अन्त । १२ । प्रधावितवान् । जीवा० २५४ । प्रधारितवान् । ज० प्र० २६६ । प्रधारितवान्-चिन्तितवान्, प्रवृत्तवान् । ज्ञाता० ३४ ।

पहावण-प्रधावनं-क्षेत्रमार्गणा क्षेत्रप्रत्युपक्षणा उपधिमार्गणा च । व्य० द्वि० ३५४ अ ।

पहाविओ-प्रधावितः । आव० ५६८ ।

पहावेति-प्रधावयति-भ्रमयति । आव० ६५० ।

पहास-प्रहासः-अतीवहासरूपः । दश० २३५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पहासा-पंचसेले अच्छरा । नि० चू० द्वि० ४२ अ । प्रहासा-पञ्चशैले-विद्युन्मालेरग्रमहिषी । नि० चू० प्र० ३४५ अ ।

पहिअकित्ती-प्रथितकीर्तिः । उत्त० ३२१ ।

पहिल्लमाणे-प्रहीयमाणं-प्रभ्रश्यत्, परिपतत् । भग० १८ ।

पहिट्ठमुहवण्ण-प्रहृष्टमुखवर्णः । उत्त० २८६ । प्रहृष्टः-प्रहर्षवान् मुखवर्णो-मुखछाया यस्य स तथा, यद्वा प्रहृष्टः मुखस्येव मुखवर्णो यस्य । उत्त० २८७ ।

पहिया-पथि गच्छन्तीति पथिकाः, प्रहिताः केनापि क्वचित् प्रेषिता । ज्ञाता० १५२ । णाणाविधगामणगरदेसहिंडगा, पहपडिवण्णगा पहिया । नि० चू० द्वि० ११ अ ।

पहीण-प्रहाणं-जीवप्रदेशैः सह संश्लिष्टस्य कर्मणस्तेभ्यः पतनम् । भग० १६ । प्रक्षीणं-प्रहीणं वा । भग० ८६ । प्रहीणः-किंचित्सत्तावन्तः । ठाणा० २६४ । प्रहीनं-प्रकर्षेण हानिं गतम् । प्रक्षीणम् । उत्त० ५६६ ।

पहीणगोत्तागार-प्रहीणगोत्रागारं-प्रहीणं वीरलीभूतमानुषं गोत्रागारं तत् स्वामिगोत्रगृहम् । भग० २०० ।

पहीणजरमरण-प्रक्षीणजरामरणः कारणाभावात् । आव० ५०७ ।

पहीणमग्ग-प्रहीणमार्गम् । भग० २०० ।

पहीणसंसार-प्रहीणसंसारः-प्रहीणचतुर्गतिगमनः । भग० १११ ।

पहीणसंसारवेयणिज्जे-प्रक्षीणसंसारवेदनीयः । प्रक्षीणसंसारवेद्यकर्मा । भग० १११ ।

पहीणसामिय-प्रहीणस्वामिकं-स्वल्पीभूतस्वामिकम् । भग० २०० ।

पहीणसेउय-प्रहीणसेचकः-प्रहीणः-अल्पीभूतः सेक्ता-सेचकः-धनप्रक्षेप्ता । भग० २०० ।

पहु-नेता स्वामी । आव० ६६१ ।

पहुच्चमाण-पर्याप्यते । ओघ० १७३ ।

पहुट्ठो-प्रकर्षेण हृष्टः प्रहृष्टः प्रहसितमनः । नि० चू० प्र० २०० आ ।

पहुप्पंति-तत्तदनुष्ठीयते । ओघ० १०२ ।

पहुप्पइ- । ओघ० १५२ ।

पहुप्पति-प्रभवति- समर्था भवति । दश० १०७ ।

पहुप्पते-पर्याप्यते । ओघ० ५४ ।

पहुप्पवति-पर्याप्यते । ओघ० ११२ ।

पहू-प्रभुः-समर्थः योग्यो वा । आचा० ७५ । प्रभुः-वीर्यान्तरायक्षयतो विशिष्टसामर्थ्यवान् । उत्त० ६६८ । स्वगृहमात्रनायकः । पिण्ड० ११२ । प्रभवति-सम्बन्धिवस्तु तत्र तत्र स्वकृत्ये नियोक्तुं समर्था भवतीति प्रभुः । उत्त० ४२ ।

पहेण-वध्वा नीयमानाया यत्पितृगृहभोजनमिति । आचा० ३३४ ।

पहेणग-प्रहैणकं-लाहनकम् । पिण्ड० १०३ ।

पहेणय-प्रहेणकं-लाहनकम् । व्य० द्वि० ३५४ अ० । ओघ० ८७ ।

पहेणाए-प्रहेणकार्थम् । आचा० १३० ।

पहेरक-प्रहेरकः-आभरणविशेषः । प्रश्न० १५६ ।

पहेलिअ-प्रहेलिकां-गूढाशयपद्यम् । ज० प्र० १३८ ।

पहेलिय-द्वाविंशतितमकला । ज्ञाता० ३८ ।

पहोइज्ज-प्रकर्षेण वा हस्तादेर्द्धावनं कुर्यात् । आचा० ३४२ ।

पांडुराया-मायाहता । भक्त० ।

पांशुक्षारः-उषः । दश० १७० ।

पांशुपिष्टः- । ठाणा० ४७७ ।

पांसुलि-पांशुलिका-पार्श्वास्थि । अनुत्त० ५ ।

पाइ-पात्री-अयोमयं भाजनम् । सूत्र० ३४० ।

पाइक्क-पदातिः । प्रश्न० ४८ ।

पाइक्कबलं चउब्बले पढमं । नि० चू० प्र० २७२ अ ।

पाइण-प्राची पूर्वः । दश० २०१ ।

पाइणण-तुत्तगो । आव० ७६७ ।

पाइणवाय-यः प्राच्या दिशः समागच्छति वातः स प्राचीनवातः । प्रज्ञा० ३० ।

पाइल्लक-कटकरणम् । विशे० १२५६ ।

पाइल्लगं-नूपुरविशेषः । उत्त० १६५ ।

पाई-पात्री । जीवा० २१३ । प्राची-पूर्वादिक् । दश० २०१ । पात्री । ज० प्र० ४१० । पात्री । ज० प्र० ८२ ।

पाईओ-पाश्चो । राज० ७० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाईण-प्राचीनं-पूर्वा । ज० प्र० ६६ ।
पाईणदाहिणं-प्राचीनदक्षिणं-पूर्वदक्षिणदिगन्तरम् । भग० २०७ ।
पाईणवडीणा-पूर्वपश्चिमम् । ज्ञाता ६६ ।
पाईणवाय-यः प्राच्या दिशः समागच्छति वातः सः प्राचीनवातः । जीवा० २६ ।
पाउं-पातुं-अभ्यवहर्तुम् । आचा० ४७ । पातुं-पीत्वा । आचा ३३० ।
पाउंछण-प्रादप्रोञ्छनम् । ठाणा० ३३० ।
पाउ-प्रादुः-प्राकाश्यम् । भग० १२७ । प्रादुः-प्राकाश्ये । अनु० २३ ।
पाउआउ-पादुके । आव० ३६० ।
पाउआओ-पादुके, पादत्राणे । ज० प्र० १८७ ।
पाउआजाय-पादुकायोगः-पादुकायुगम् । औप० ६६ ।
पाउआणालिया-पादुकानालिका । आव० ३६० ।
पाउओ-प्रावृतः । आव० ११७ ।
पाउकरणं-प्रादुःक्रियते-अन्धकारापवरकादेः साध्वर्थं बहिः करणेन दीपमल्यादिधरणेन वा प्रकाश्यते यत्तत् प्रादुष्करणं अशनादि । प्रश्न० १५४ ।
पाउकरे-प्रादुष्कृत्य-कांश्चिदर्थतः कांश्चन सूत्रतोऽपि प्रकाश्य प्रज्ञाप्य । उत्त० ७१२ । प्रादुष्करोमि-प्रकटीकरोमि-प्रतिपादयामीति । उत्त० ४४६ ।
पाउक्करिस्सामि-प्रादुष्करिष्यामि उत्पादयिष्यामि । उत्त० २० ।
पाउग्गं-प्रायोग्यं-आहारपानीयादिकम् । आव० ७००(?) । प्रायोग्यं नाम समाधिकारकम् । नि० चू० प्र० १०१ आ । ओसहं भत्तं पाणं वा । नि० चू० प्र० ३३४ अ । उग्गमउप्पादणएसणाहिं सुद्धो । नि० चू० प्र० १६७ अ । प्रायोग्यो-अप्रतिहार्यः । व्य० (१) । गुरुमादीपुरिसविभागेण जोग्गो सो । नि० चू० प्र० १६७ अ ।
पाउड-प्रावृतः-छादितः । आचा० १२७ । प्रावृतः गुण्ठितः । आचा० ११३ ।
पाउण-प्रावृत्य । ओघ० ३४ ।
पाउणइ-प्राप्नोति । औप० ११३ । प्राप्नोति-अयोगताप्राप्त्यभिमुखो भवति । प्रज्ञा० ६०६ ।
पाउणति-प्रापयति-पूरयति । औप० ६२ । प्राप्नुवति । प्रश्न० ८६ ।
पाउणिज्जति-प्रावियते-प्रावार्यते । आव० ६३१ । परिभुंजति । नि० चू० तृ० ८६ आ ।
पाउणित्ता-प्राप्य । सम० ७२ । पालयित्वा । उपभुज्य । ज० प्र० १५८ ।
पाउणिस्सामि-प्रावरिष्यामि । आचा० २४४ ।
पाउणीओ-प्रावृत्तः । आव० ६३१ ।
पाउणेज्ज-प्राप्नुयात् । भग० २७३ । प्राप्नुयात् । ठाणा० १०० ।
पाउता-प्रावृत्ता-प्रमाणातिरिक्तमहामूल्यवस्त्राच्छादितवपुषः । बृ० तृ० २५३ आ ।
पाउत्त-प्रयुक्तं-माणिक्ययुक्तकङ्कणम् । औप० ५५ ।
पाउब्भवत्तिए- । ज्ञाता० ३१ ।
पाउब्भावेज्ज-आगताः । भग० ६५६ ।
पाउब्भाव-प्रादुर्भावः-आगमनम् । सम० १२३ ।
पाउय-प्रावृत्तम् । ओघ० ५५ ।
पाउया- । भग० ११३ ।
पाउर-प्रादुः-प्रकटं प्रत्युपेक्षणयोग्यमशुषिरम् । आचा० २६३ ।
पाउरण प्रावरणं-वर्षाकल्पादि । उत्त० ४३२ । प्रावरणीयं-अजिननिष्पन्नं वस्त्रम् । आचा० ३६४ ।
पाउल्लाइं-भोज्जे काष्ठपादुके वा । सूत्र० ११८ ।
पाउवदाउं-पादोदकदायिका पादशौचदायिका । ज्ञाता० ११७ ।
पाउस-प्रावृड्-आषाढश्रावणौ । ज्ञाता० ६३,१६० । आसाढो सावणो य दो मासो । (?) । प्रावृड् । सूर्य० २०६ । प्रावृड्-आसाढो सावणो सावणो भद्दवओ वा । बृ० द्वि० ७७ आ । प्रावृट्-श्रावणादिः । भग० ४६२ ।
पाउसिआ-प्रद्वेषो-मत्सरस्तेन निर्वृत्ता प्राद्वेषिकी । सम० १० ।
पाउसिए-प्रदोषिक-प्रकृष्टदोषम् । आचा० ४२५, ४२८ । प्रकृष्टदोषं प्रदोषिकम् । आचा० ४२५ ।
पाउसिया-प्रद्वेषः-मत्सरतत्र भवा तेन वा निर्वृत्ता स । एव वा प्राद्वेषिकी । भग० १८१ । प्रद्वेषो-मत्सरस्तेन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निर्वृत्ता प्राद्वेषिकी । ठाणा० ४१ । प्राद्वेषिकी-पञ्चविधक्रियायां तृतीया । प्रज्ञा० ४३५ । प्रद्वेषः मत्सरस्तेन निर्वृत्ता क्रिया प्राद्वेषिकी । आव० ६११ । प्रद्वेषः-मृगेषु दुष्टभावस्तेन निर्वृत्ता प्राद्वेषिकी । भग० ६३ ।

पाऊय-प्रावृत्तम् । उत्त० १०५ ।

पाए-प्रगे-प्रभृति । बृ० प्र० २४१ अ ।

पाएस-आचारप्रकल्पस्य पञ्चदशो भेदः । आव० ६६० ।

पाएसरीया-पात्रकेसरिका-मुखवस्त्रिका । ओघ० ११८ । पात्रकेसरिका पात्रकमुखवस्त्रिका । ओघ० ११७ ।

पाएसा-आचाराङ्गे पञ्चदशममध्ययनम् । सम० ४४ । आचाराङ्गस्य पञ्चदशममध्ययनम् । उत्त० ६४७ (?) ।

पाओअर-प्रादुः-प्रकटत्वेन देयस्य वस्तुनः करण प्रादुष्करणम् उपचारात् भक्तादि, सप्तम उद्गमदोषः । पिण्ड० ६४ । साधुनिमित्तं मण्डपादिस्थापनेन भित्त्यादिपनयनेन वा प्रादुः-प्रकटत्वेन देयस्य वस्तुनः करणं प्रादुष्करणं, तद्योगोद्भुक्तादयपि प्रादुष्करणं यद्वा प्रादुः-प्रकटं करणं यस्य तत् प्रादुष्करणम् । पिण्ड० ३५ ।

पाओउक्खितो-पाद उत्क्षिप्तः-प्रतिज्ञा कृता । आव० ४३३ ।

पाओगिअं-प्रयोगेन निर्वृत्तं प्रायोगिकम् । आव० ४५७ ।

पाओग्गं-प्रायोग्यम् । आव० ३४७ ।

पाओवगत-पादपवत् उपगतो-निश्चेष्टतया स्थितः पादपोपगतः-अनशनविशेषं प्रतिपन्नः । ठाणा० २३७ ।

पाओवगमण-पादवन्निस्पन्दतयाऽवस्थानम् । भग० ६२१ । नियमादप्रतिकर्म-शरीरप्रतिक्रियावर्जं पादपोपगमनम् । ठाणा० ६४ । पादपस्योपगमनं-अस्पन्दतयाऽवस्थानम् पादपोपगमनम् । ओघ० ३८ । पादपोपगमनं मरणस्य सप्तदशो भेदः । उत्त० ३३० ।

पाओवगमणमरण-पादवस्येवोपगमनं-अवस्थानं यस्मिन् तत् पादोपगमनं तदेव मरणम् । सम० ३५ ।

पाओवगय-पादोपगतः-पादो-वृक्षस्तस्य भूगतो मूलभागस्तत्रेवाप्रकम्पतयोपगतं-अवस्थानं यस्य सः । ज० प्र० २८० । ज्ञाता० ७४ ।

पाओसिया-प्रादोषिका-प्रदोषकाले भवा पौरुषी सूत्रपौरुषी । ओघ० २२ ।

पाग-पाकः-एतन्नामा इन्द्रस्य ब वानू रिपुः । भग० १७४ । पाकः-बलवान् रिपुः । (?) ३८८ । पाको नाम बलवान् । उपा० २६ । पाकः-बलवान् रिपुः । प्रज्ञा० १०१ ।

पागइय-प्राकृतिकः-प्रकृतीनां मध्ये यः । ओघ० १२० ।

पागट्ठो-प्राकर्षी-प्रकर्षको अग्रगामी । ज्ञाता० ६३ ।

पागड-प्राकृतः-अनतिशायी । सूर्य० २७४ । प्रगटः-जगत् प्रतीतः । ज० प्र० १८४ । प्रकटः । मर० ।

पागडभाव-प्रकटभावः-निर्मायता । प्रश्न० १५८ ।

पागडा-चरणमालिका-संस्थानविशेषकृतं पादाभरणम् । ज० प्र० १०६ ।

पागत-प्राकृतः । आव० १९२ ।

पागतितो-छिराते हरंतो, राउलवग्गस्स अवकंतितो पागयजणस्स हरंति उ पागतितो । नि० चू० द्वि० ३८ आ ।

पागय-प्राकृतः-अनतिशायी । जीवा० ३३६ । प्राकृतं-भोजनम् । ओघ० ७२ । प्रकृतिषु भवः-प्राकृतः । आव० २३९ ।

पागसासण-पाको नाम बलवान् रिपुः स शिष्यते-निराक्रियते येन सः पाकशासनः इन्द्रः । प्रज्ञा० १०१ । पाको नाम बलवान् रिपुस्तं यः शास्ति निराकरोत्यसौ स पाकशासनः-इन्द्रः । भग० १७४ । पाकः-बलवान् रिपुः स शिष्यते-निराक्रियते येन सः पाकशासनः इन्द्रः । जीवा० ३८८ ।

पागसासणि-पाकशासनी-इन्द्रजालसंज्ञिका विद्या । सूत्र० ३१९ ।

पागार-प्राकारः-वप्रः । भग० २३७ । प्राकारः, शालः । प्रज्ञा० ८६ । प्राकारः । जीवा० २५८, २६९ । प्राकारः-वप्रः । ज० प्र० १०६ । प्राकारः-शालः । प्रश्न० ८ । प्रकर्षेण मर्यादया च कुर्वन्ति तमिति प्राकारः धूलीष्टकादिविरचितः । उत्त० ३११ । ज्ञाता० ९९ ।

पागारच्छाया-प्राकारछाया । सूर्य० ९५ ।

पागारजढं-प्राकारजढं प्राकाररहितम् । आव० २३४ ।

पागारसंठिय-प्राकारसंस्थितः । सूर्य १३० ।

पागारा-प्राकारा । आचा० ३३७ ।

पाजावच्चे-प्राजापत्यः स्थावरकायविशेषः । ठाणा० २९२ ।

पाञ्जिए-प्राजिका-प्राजिका मातृमातुः पितृमातुर्वा माता ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दश० २१६ ।

पाञ्चजन्य–वासुदेवस्य शङ्खः । उत्त० ३५० । विष्णुशङ्खः । प्रश्न० ८८ । शङ्खविशेषः । प्रश्न० ७७ । शङ्खविशेषः । सम० १५७ ।

पाटकं– । ओघ० १४६ ।

पाटनम्– । आव० ५८८ ।

पाटल–वृक्षविशेषः । जीवा० १६१ ।

पाटला–पुष्पजातिविशेषः । ज्ञाता० २३१ ।

पाटलिपुत्र–नगरम् । भग० ३२ । वसतिदृष्टान्ते नगरम् । अनु० २२५ ।

पाटलिपुर–मरुण्डराजराजधानी । नंदी० १६२ ।

पाटलीपुत्र–मौर्यवंशीयाशोकश्रीभूषनगरम् । विशे० ४०६ । नगरम् । उत्त० ७९ ।

पाटीगणितं–गणितविशेषः । ठाणा० ४६७ ।

पाठ–पठनं–पाठः, पठ्यते वा–व्यक्तीक्रियते तदिति पाठः । विशे० ५६१ । संमूर्च्छिमतरुजीवः । आचा० ५७ ।

पाठक–सूत्रधरः पृच्छति प्रश्नयति सूत्रादिव्याकरोति ब्रूते तदेवेति । ठाणा० १६७ ।

पाठान्तर–वाचनाभेदः । जं० प्र० ८७ ।

पाठीण–पाठीनः–मत्स्यविशेषः । प्रश्न० ७ ।

पाडंतिय–प्रतिश्रुतिकं–द्वितीयोऽभिनयविधिः । जीवा० २४७ ।

पाडग–घरपंती । वाडग । नि० चू० प्र० १८७ अ ।

पाडणा–यैरुपायैरखण्ड एव गर्भः पतति सा पातना । विपा० ४२ ।

पाडल–चतुर्दशतीर्थंकरचैत्यवृक्षः । सम० १५२ । पुष्पविशेषः । दश० १७४ ।

पाडलपुड– । ज्ञाता० २३२ ।

पाडलय–पाटलः–कथाकथकस्तालाचारः । उत्त० १३४ ।

पाडलसंड–पाटलखण्डः, सिद्धार्थराजधानी । विपा० ७४ ।

पाडला–गुच्छाविशेषः । प्रज्ञा० ३२ । पाटला गौविशेषः । आव० ८८ ।

पाडलावासि–वनस्पतिविशेषः । भग० ८०३ ।

पाडलिपुत्त–पाटलिपुत्रं, क्षितिप्रतिष्ठितस्य षष्ठं नाम । उत्त० १०५ । पाटलिपुत्रं दक्षिणापथे नगरम् । दश० ४४ । पाटलिवृक्षोत्पत्तिस्थानम् । भग० ६५३ । चन्द्रगुप्तनृपतेर्नगरी । नि० चू० द्वि० १०२ अ । पाटलिपुत्रं-योगसंग्रहेऽनिश्रितोपधानदृष्टान्ते नगरम् । आव० ६६८ । पाटलिपुत्रं-वैनयिकीबुद्धिदृष्टान्ते ग्रन्थिविषये मुरुण्डराजधानी । आव० ४२४ । पाटलिपुत्रं-आचारोदाहरणे नगरम् । आव० ७०७ । पाटलिपुत्रं-प्रशंसाविषये नगरम् । आव० ८१७ । पाटलिपुत्र-गुणोदाहरणे नगरम् । आव० ८१६ । अशोकचन्द्रराजधानी । बृ० प्र० ४७ अ० । अशोकनृपस्य नगरम् । नि० चू० तृ० ४४ आ । नि० चू० प्र० २४३ अ । पाटलिपुत्रं-धनश्रेष्ठिनगरम् । आव० २६३ । पाटलीपुत्रं-नगरविशेषः । यत्र जितशत्रु राजा, लोभे च लुब्धनन्दो वणिक् । आव० ३६७ । पाटलिपुत्रं-शिल्पसिद्धदृष्टान्ते जितशत्रुराजधानी । आव० ४०६ । पाटलिपुत्रं-परिणामिकीबुद्धिदृष्टान्ते नगरम् । आव० (?) ४३३ ।

पाडलिसंड–पाटलिसण्डं–सुपार्श्वनाथस्य प्रथमपारणकस्थानम् । आव० १४६ ।

पाडव– । नि० चू० प्र० २७४ अ ।

पडि–प्रतिविशिष्टं–असाधारणम् । राज० ३ ।

पाडिऊण–पातयित्वा । आव० ३५४ ।

पाडिएक्कं–एकमात्मानं प्रति प्रत्येकं पितुः फलकाद्भिन्नमित्यर्थः । भग० ६६१ ।

पाडिक्कएणं–एकं जीवं प्रति गतं–यच्छरीरं प्रत्येकशरीरनामकर्मोदयात् तत्प्रत्येकं तदेव प्रत्येककम् । ठाणा० १६ ।

पाडिच्छगा–सूत्रार्थग्रहणार्थं ये आचार्यसमीपमागच्छन्ति । ओघ० १३६ ।

पाडियक्क–पृथक्–विभिन्नम् । निरय० ३३ । प्रत्येकम् । व्य० द्वि० २०६ आ ।

पाडियाओ–उत्तरीयवस्त्राणि । भग० ६६३ ।

पाडियाछगण–नि० चू० प्र० ३५६ आ ।

पाडिवहिया–प्रातिपथिकाः–समुखाः पथिकाः । आचा० ३८२ ।

पाडिवेसिअ–प्रातिवेश्मिकः । ओघ० १९४ ।

पाडिस्सुइअं–प्रातिश्रुतिकं अभिनयविशेषः । जं० प्र० १२ ।

पाडिहर–प्रातिहार्यम् । दश० ४८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाडिहारिक-प्रत्यर्पणीयः । नि० चू० प्र० १६७ आ ।
पाडिहारितं-गिहिसंतिय उवकरणं पडिहरणीयं पाडिहारितं । नि० चू० प्र० ७३ आ । प्रतिहियते-प्रतिनीयते यत्तत्प्रतिहारप्रयोजनत्वात् प्रातिहारिकम् । ठाणा० ३१२ ।
पाडिहारिय-प्रत्यर्पण तदर्हं प्रातिहारिकम् । बृ० तृ० २६ अ । अधुवं । नि० चू० द्वि० ११७ आ । प्रातिहारिकः-पुनः समर्प्यणीयः । राज० १२८ । प्रातिहारिकं पुनः समर्प्यणीयम् । ज्ञाता० १०७ ।
पाडिहारेय-प्रतिहारिकः-सागारिकभुक्तशेषः । व्य० द्वि० ३३६ आ ।
पाडिहेर-प्रतिहारो-दौवारिकस्तद्वत्सदा सन्निहितवृत्तिर्देवताविशेषोऽपि प्रतिहारस्तस्य कर्म्म प्रातिहार्यम् । उत्त० २५४ । प्रातिहार्यम् आव० २६५ ।
पाडिहेराइं-प्रातिहार्याणि-यथाभिलषितार्थोपढौकनलक्षणानि । बृ० द्वि० २६७ अ ।
पाडिहेरिए-प्रातिहारिकं भूयोऽप्यस्माकं प्रत्यर्पणीयम् । बृ० द्वि० २०० आ ।
पाडुच्चिया-बाह्यवस्तु प्रतीत्य-आश्रित्य भवा प्रातीत्यकी । ठाणा० ४२ । जीवादीन् प्रतीत्य या । ठाणा० ३१७ । प्रातीत्यिकी-विंशतिक्रियामध्येऽष्टमी । आव० ६१२ ।
पाडेइ-पातयति निर्यातयति । बृ० तृ० १४६ अ ।
पाडेक्क-प्रत्येकं-एकैकशः । ओप० ६१ ।
पाढ-पाठः-पठनं पठ्यते वा तदिति पाठः, पठ्यते वाऽनेनास्मादस्मिन्निति वाऽभिधेयमिति पाठः व्युत्पाद्यते इति । आव० ८६ ।
पाढट्ठिओ-पाठार्थी । ओघ० ६५ ।
पाढव-पार्थवमिव पार्थिवं शीतोष्णदिपरिषहसहिष्णुतया समदुःखसुखतया च पृथिव्यामिव भवं पार्थिवम् । उत्त० १८६ । पृथिव्या विकारः पार्थिवः, स चेह शैलः, ततश्च शैलेशीप्राप्त्यपेक्षयाऽतिनिश्चलतया शैलोपमत्वात्परमसिद्धया वा पार्थिवम् । उत्त० १८६ ।
पाढा-पावारणवादरवनस्पतिकायविशेषः । प्रज्ञा० ३४ । पाठा-वनस्पतिविशेषः । प्रज्ञा० ३६४ ।
पाढ.णं-देशविशेषः । भग ६८० ।
पाढामिए-वनस्पतिविशेषः । भग० ८०४ ।
पाढो-पाठी यः सकलं बाहडादि पठति स । पाठो-सकलं बाहडादि पठति स । ओघ० ४२ ।
पाढेहु-वनस्पतिविशेषः । भग० ८०४ ।
पाणंधि-(देशीपदं) वर्त्तिली । व्य० प्र० १७७ आ ।
पाण-पानं-सुरादि । सूर्य० २६३ । पानम् । आव० ११५ । पानं-मद्यम् । प्रश्न० १६३ । पानं-पेयमुदकादि । आव० ८१६ । अनु० २१७ । चाण्डालः । आव० ४८१ । चाण्डालः । व्य० प्र० ५२ अ । पाणः-चाण्डालः । आव० ७१७ । पाणः-मातङ्गः । आव० ७४३ । पाणः-भाजनविशेषः । अनु० ५ । पानः-यायामादि । उत्त० २६६ । पानं-द्राक्षापानादि । आव० ८११ । गुल्मविशेषः । प्रज्ञा० ३२ । मातङ्गः । ठाणा० २६४ । चाण्डालः । भग० १६४ । उदुम्बरः । व्य० द्वि० २४७ अ । पानं-सुरादि । भग० ३२६ । पीयते तत् पानं मृद्वीकापानादि । दश० १४६ । उच्छ्वासनिःश्वासो य इति गम्यते एषः प्राणः । जं० प्र० ६० । गुच्छाविशेषः । प्रज्ञा० ३२ । पानं-धान्यरससंस्कृतं जलम् । उपा० २२ । पानं-सुरादि । ठाणा० ११६ । पानं-आचाम्लादि । उत्त० ५२४ । पीयत इति पानं खर्जूररसादिः । उत्त० ६०७ । प्राणिः-द्वीन्द्रियादिः । दश० १५६ ।
पाणइवाइए- । आचा० ४२५ ।
पाणक्कमणं-द्वीन्द्रियादित्रसप्राणिनां आक्रमणं-पादेन पीडनं प्राण्याक्रमणम् । आव० ५७३ ।
पाणक्खय-प्राणक्षयः-बलक्षयः । १६७ ।
पाणग-पानकं-द्राक्षापानकादि । सूर्य० २६३ । पानकं-द्राक्षापानकादि । प्रश्न० १६३ । पानकं-काञ्जिकम् । पिण्ड० १७ । पानक-द्राक्षापानादि प्राणानां-इन्द्रियादिलक्षणानामुपग्रहे-उपकारे यद् वर्तते इति तत् । (?) । पानक-द्राक्षापानकादि । भग० ३२६ । जलविशेषः । भग० ६८४ । पानकं-आचाम्लम् । ओघ० १३३ । पानकं-द्राक्षापानकादि । ठाणा० ११६ ।
पाणगजाय-पानकजातं-पानीयसामान्यम् । आचा० ३४६ । पानकाक्षणिकम् । ओघ० १०४ ।
पाणगारं-जत्थ पाणियकम्मं तो सुरामधुपीधूखंडगं मच्छं-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डियमुद्दियापभित्तीणि पाणगाणि । नि० चू० प्र० २७२ आ ।

पाणगोरि-कल्लालावणे । नि० चू० तृ० ६६ आ ।

पाणजाइया-प्राणिजातयः-भ्रमरादिकाः । आचा० ३०२ ।

पाणत-एकोनविंशतिसागरोपमस्थितकदेवविमानम् । सम० ३७ ।

पाणपीय-प्राणप्रीतः-उश्वाच्छ्वासादिप्राणप्रियः प्राणपीतः भक्षितप्राणः । प्रश्न० ५९ ।

पाणभोयणविप्परियासिया-पानभोजनवैपर्यासिकी-रात्रौ पानभोजनपरिभोग एव तद्विपर्यासः । आव० ५७५ ।

पाणभोयणा-प्राणिनो-रसजादयः भोजने दध्योदनादौ सङ्क्षट्टयन्ते-विराध्यन्ते व्यापाद्यन्ते वा यस्यां प्राभृतिकायां सा प्राणिभोजना । आव० ५७५ ।

पाणमंति-प्राणन्ति । भग० १९ । "णमु प्रह्वत्वे" इत्येतस्याऽनेकार्थत्वेन श्वसनार्थत्वात् प्राणमन्ति । भग० १९ । प्राणन्ति अन्तःस्फुरन्तो निःश्वासक्रियां कुर्वन्ति । प्रज्ञा० २१९ ।

पाणयं-प्राणमन्ति-द्विपृष्ठवासुदेवागमनम् । आव० १६३ । टी० ।

पाणया-प्राणताः-कल्पोपपन्नवैमानिकभेदः दशमवैमानिकः । प्रज्ञा० ६९ ।

पाणयावडिंसए-प्राणतावतंसकः-प्राणतदेवलोकस्य मध्ये ऽवतंसकः । जीवा० ३९२ ।

पाणवत्तियाए-प्राणसंधारणार्थम् । ओघ० १८९ ।

पाणवह-प्राणवधः-प्राणिघातः । प्रश्न० ५ ।

पाणवाडग-चाण्डालपाटकः । उत्त० २६३ ।

पाणविक- । प्रश्न० ९० ।

पाणविहि-पानविधि दकमृत्तिकालया प्रसादितस्य सहजनिर्मलस्य तत्तत्संस्कारकरणं, अथवा जलपानविधि जलपानविषये गुणदोषविज्ञानम् । ज० प्र० १३७ ।

पाणसाला-जत्थ उदगादिपाणं सा । नि० चू० प्र० २७२ आ ।

पाणसिव- । नि० चू० प्र० ८ आ ।

पाणसुहुम-प्राणिसूक्ष्मं-अनुद्धरिः कुन्थुः । दश० २३० । प्राणसूक्ष्मं-अनुद्धरिः कुन्थुः । ठाणा० ४३० । अणुधरी कुंथु जा चलमाणावि नाविज्जइ ठिया दुव्विभवो एयं तं । दश० चू० १२१ ।

पाणा-प्राणाः-सत्त्वाः । आचा० ३९ । प्राणाः-द्वित्रिचतुरिन्द्रियाः । जं० प्र० ५३९ । ये ग्रामस्य नगरस्य च बहिराकाशे वसन्ति तेषां गृहाणामभावात् प्राणा । व्य० प्र० २८५ । प्राणाः-द्वीन्द्रियादित्रसाः । प्रश्न० १५७ । प्राणाः-द्वीत्रिचतुरिन्द्रियाः । प्रज्ञा० १०७ । प्राणाः-द्वीन्द्रियादयः । प्रज्ञा० ४३५ । ये ग्रामस्य नगरस्य च बहिराकाशे वसन्ति तेषां गृहणामभावात् । व्य० प्र० २३१ अ । प्रकर्षेणानन्तीति-श्वसन्तीति प्राणाः-द्वीन्द्रियादयः । उत्त० ३७० । हृष्टस्य अनवकल्पस्य निरुपक्लिष्टस्य च जन्तोरेक-उच्छ्वासयुक्ता निःश्वासाः प्राणाः । अनु० १७९ । द्वीन्द्रियादयः । ठाणा० १३६ । प्राणाः-पृथव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः द्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रियाश्चेन्द्रियबलोच्छ्वासनिश्वासायुष्कलक्षणप्राणधारणात् प्राणाः । आचा० १७९ । प्राणाः-प्राणिनः । आचा० ३४० । प्राणाः-उच्छ्वासादयो बलं वा । ठाणा० ३६० । जातिजुंगितविसेसो । नि० चू० द्वि० ४३ आ । मातङ्गा । बृ० तृ० १५२ अ । मातङ्गा । नि० चू० तृ० ७२ आ । प्राणा-"द्वित्रिचतुः प्रोक्ताः" । ज्ञाता० ६० । प्राणिनः-द्वित्रिचतुरिन्द्रियः । आचा० ७१ । प्राणा-प्राणोद्वीन्द्रियादित्रसः । आव० ५७३ । प्राणिनः-पृथिव्यादयः । ओघ० । प्राणिन्-दशविधाः प्राणाः विद्यन्ते येषां ते प्राणिनः ते । सामान्यतः संज्ञिपंचेन्द्रियाः । आचा० २५६ ।

पाणाइवाए-प्रथमं पापस्थानकम् । ज्ञाता० ७५ ।

पाणाइवाओ-पाणाणमइवाओ तेहिं पाणेहिं सह विसंजोगकरणं । दश० चू० ६५ अ ।

पाणाइवाय-प्राणाः-इन्द्रियादयः तेषामिति पातः प्राणातिपातः जीवस्य महादुःखोत्पादनम् । दश० १४४ ।

पाणाइवायकिरिया-प्राणातिपातक्रिया - प्राणातिपातविषयाक्रिया । आव० ६१२ । प्राणातिपातिकी-प्राणातिपातः प्रसिद्धस्तद्विषया क्रिया प्राणातिपात एव वा क्रिया प्राणातिपातक्रिया । भग० १८१ ।

पाणाई-पानकादि । ओघ० ११४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाणाउ-द्वादशमं पूर्वम् । ठाणा० १९९ । अत्र प्राणिनामायुर्विधानं-सभेदमभिधीयते तत् प्राणायुर्दादशं पूर्वम् । सम० २६ ।

पाणाउपूव्वं-प्राणा-जीवा आयुश्चानेकधा वर्ण्यन्ते तत्प्राणायुः- द्वादश पूर्वम् । सम० २६ ।

पाणाऊ-प्राणायु-प्राणाः पञ्चेन्द्रियाणि त्रीणि मानसादीनि बलानि उच्छ्वासनिश्वासौ चायुश्च ततो यत्र प्राणा आयुश्च सप्रभेदमुपवर्ण्यन्ते तदुपचारतः प्राणायुः । द्वादशमं पूर्वम् । नंदी० २४१ ।

पाणागार-पानागार-मद्यगेहम् । ज्ञाता० ७९ । विपा० ५२ ।

पाणाच्चए-प्राणात्यये-अत्यर्थम् । ओघ० १९५ ।

पाणाणुकंपा-प्राणानुकम्पा-दयाप्रकर्षः । ज्ञाता० ६६ ।

पाणामं- । भग० १०९ ।

पाणामा-प्राणामिकी । आव० २१३ । भग० १६१ ।

पाणावली-भाजनविशेषावली । अनुत्त० ५ ।

पाणि- । ज्ञाता० ३९ ।

पाणिक्खय-प्राणिक्षयः-गवादिक्षयः । ज० प्र० १२५ ।

पाणियत्तं-प्राणिपात्रम् । आव० १९१ ।

पाणिपरियावन्ना-पाणिपर्यापन्नां-हस्तस्थिताम् । आचा० ३५७ ।

पाणिपिज्जा-प्राणिपेयः-तटस्थप्राणिपेया नदी । दश० २२० ।

पाणियमंचिता-पानीयमञ्चिका । आव० ८४५ ।

पाणियमंडुक्को-पानीयमण्डूकः । आव० ६४१ ।

पाणी-वल्लीविशेषः । प्रज्ञा० ३२ । चाण्डाली । उत्त० ३०१ ।

पाणीय-पानीयं-जलम् । ठाणा० ११९ । पानीयं-जलम् । सूर्य० २९३ । पानीयं-जलम् । प्रश्न० १६३ । पानीयं-जलम् । भग० ३२६ ।

पाणीपाय-पाणिपात्रः । आव० ३२३ ।

पाणु-प्राणः-मनुष्यादेरेक उच्छ्वासेन सह निःश्वास उच्छ्वासनिःश्वासः य इति गम्यते एषः प्राण इत्युच्यते । भग० २७६ ।

पाणू-णासो । दश० चू० ५४ अ ।

पाण्डुः-राजाविशेषः मायारहितः । सूत्र० १७३ ।

पाण्डुकम्बला-शिलाविशेषः । सूर्य० ७८ ।

पाण्डुकवनं-अचलेन्द्रमूर्ध्निस्थितं वनम् । आव० ४७ ।

पाण्डुमथुरा- । ठाणा० ४३३ ।

पाण्डुरतलहर्म्य- । जीवा० २६९ ।

पाण्डुराजः-हस्तिनागपुरपतिः युधिष्ठिरादिपिता । प्रश्न० ८७ ।

पाण्डू-पाण्डुमृत्तिकानाम देशविशेषे या धूलीरूपा पाण्डू इति प्रसिद्धा । प्रज्ञा० २६ ।

पात-पातः । सूर्य० १०८ । पात्रं-भाजनम् । उत्त० २६५ ।

पातकहत-पातकेन-ब्रह्महत्यालक्षणेन मातापित्रादिपातकलक्षणेन वा हतः पातकहतः । व्य० प्र० ७ आ ।

पातन-गालनम् । निरय० ११ ।

पातनिका-अवतरणम् । नंदी० ७५ ।

पाताल-पातालकलशः । अनु० १२१, १७१ ।

पातालललङ्कापुरं-खरदूषणसम्बन्धिपुरम् । प्रश्न० ९ ।

पाति-नृपः । नि० चू० प्र० २४३ आ ।

पातीणगामिणी-प्राचीनगामिनी । आव० २२७ ।

पात्रः-अभिनेतव्यप्रकारः । ज० प्र० २६३ ।

पात्रकर्णम्-ओघ० १८४ ।

पात्रकल्पिकः-कल्पिके भेदः । बृ० प्र० १०८ अ ।

पात्रपरिकरः-पात्रनियोगः । ओघ० २०८ ।

पात्री-भाजनविधिविशेषः । जीवा० २६६ ।

पाद-पादः-षडङ्गुलप्रमाणः । भग० २७५ । प्रातः-प्रभातसमः । सूर्य ४५ । पादो-वृत्तपादः । ठाणा० ३९७ ।

पादकाञ्चनिका-पादधावनयोग्या काञ्चनमयी पात्री । जीवा० २६६ ।

पादकेसरिया-पात्रकेसरिका-पात्रप्रमार्जनपोतिका । प्रश्न० १५६ ।

पादठवणं-पात्रस्थानं यत्र कम्बलखण्डे पात्रं निधीयते । प्रश्न १५६ ।

पाददद्दरयं-पाददर्दरकं पादेन भूम्यास्फोटनरूपम् । जं० प्र० ४१९ ।

पादपीठं-आसनविशेषः । उत्त० ४३ ।

पादपुंछण-पट्टयदुनिसिज्जवज्जियं रओहरणं । नि०चू० प्र०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११६ आ । पादपुञ्छनं-पादकम्बलम् । उत्त० ४३४ ।
पादपोपगमन-अभ्युद्यतमरणम् । विशे० १० । अनशनविशेषः । ठाणा० ५८ । अनशनभेदः । ठाणा० ३६४ । तत्र हि सव्याघाताव्याघातभेदतो द्विभेदेऽपि पादपवन्निश्चेष्टतयैव स्थीयते अविचारं अनशनभेदः । उत्त० ६०२ ।
पादबंधण-पात्रबन्धनं पात्रबन्धः । प्रश्न० १५६ ।
पादबन्धकतन्तुः-जलचरजन्तुविशेषः । पिण्ड० १०२ ।
पादमूलिया-पिंडिगरा । नि० चू० द्वि० १४४ अ ।
पादलिप्तसूरिः-मुरुण्डेनोपलक्षितसूरिः । पिण्ड० १४१ ।
पादलिप्ताचार्याः-पाटलिपुरे आचार्यविशेषः । नंदी० १६२ ।
पादसमा-पादसमया उच्छ्वासा-यावद्भिः समयः पादो वृत्तस्य नीयते तावत्समया उच्छ्वासा गीते भवतीत्यर्थः । ठाणा० ३९४, ३९६ ।
पादा-मूलं । दश० चू० ५ आ ।
पादाद्याक्रमणम्-आगमनम् । उत्त० १५९ ।
पादीणवाह-प्राचीनवाहः सरस्वत्याः पूर्वादिग्वाहः । बृ० द्वि० १३६ अ ।
पादुगालेव-पादुकालेपः । आव० ४१२ ।
पादुब्भूए-प्रादुर्भूतः । सूर्य० ३ ।
पादोज्जल-पादोज्वलं-भूषणविधिविशेषः । जीवा० २६९ ।
पादोनपौरुषी-पूर्वदिक् संबद्धे चतुर्भागः । उत्त० ५३६ ।
पादोसिय-प्रादोषिकम् । आव० ८९ । प्रादोषिकम् । दश० १०३ । प्रादोषिकं प्रदो० । (?) ।
पाधोवण-पुणो पुणो पाधोवणं । नि० चू० प्र० ११६ आ ।
पानीयसामान्यं-पानकजातम् । आचा० ३४६ ।
पाप-ऐश्वर्यात् जीविताद्वा भ्रंशनं पापम् । नि० चू० प्र० ३०३ अ । घृन्नम् । दश० २०४ ।
पामरकः- । उत्त० ५५० ।
पामा-कुट्ठभेदो । नि० चू० द्वि० ६२ अ । नि० चू० प्र० १८८ आ । दशमं क्षुद्रकुष्ठम् आचा० २३५ । कच्छूः । भग० ३०८ । दशम क्षुद्रकुष्ठम् । प्रश्न० १६१ ।
पामिच्च-उच्छिन्नम् । आचा० ३२५ । अपमित्यक-साध्वर्थमुद्धारगृहीतम् । ठाणा० ४६७ । साध्वर्थमन्यत उद्यतकं यद्गृह्यते तत् । सूत्र० १८० । अपमित्यकं-उद्यतकं-उच्छिन्नम् । प्रश्न० १५४ । प्रामित्यं-साध्वर्थमुच्छिद्य दानलक्षणम् । दश० १७४ । अपमित्यकं-साध्वर्थमुद्धारगृहीतम् । ठाणा० ४६० । अपमित्यं-भूयोऽपि तव दास्यामीत्येवमभिधाय साधुनिमित्तमुच्छिन्नं यद् गृह्यते भक्तादि । नवम उद्गमदोषः । पिण्ड० ३४ ।
पामिच्चित्तं-उच्छिण्णं । नि० चू० तृ० ६३ अ ।
पामिच्चेइ- । भग० ४६६ ।
पामिच्चेति-उच्छिण्णं । नि० चू० द्वि० १०४ अ ।
पामूलं-पादमूलम् । आव० ३९१ । पादमूलम् । भक० ।
पामोक्ख-उत्तरं-आक्षेपस्य परिहारः । ज्ञाता० १४९ ।
पायंक-पादाङ्क-मुद्राविशेषः । आव० ४३२ ।
पायंचणिउ-पादकाञ्चनिका पादधावनयोग्या काञ्चनमयी पात्री । ज० प्र० १०१ ।
पाय-पादः-आसन्नलघुपर्वतः । ज्ञाता० ३५ । षडङ्गुलानि पादः, पादस्य मध्यतलप्रदेशः, अथवा पादो-हस्तचतुर्थांशः । ज० प्र० ९४ । प्रातः-प्रभातः । उत्त० ३७० । पादः-श्लोकपादः । आव० ७९७ । पादः-षडङ्गुलानि । अनु० १५७ । पादः । ठाणा० २९९ । पादः-चतुर्थांशः । सूर्य० १३४ । पाक्यं-पाकप्रायोग्यम् । दश० २४७ (?) । पात्र भाजनम् । आचा० ३३२ । पादः-मूलपादः । ज० प्र० २८५ । पादं-गाथादिचतुर्थं रूपम् । अनु० २३३ । पाप-अधोभागः । ज्ञाता० २८ ।
पायओ-घोषणा- । आव० ४१९ ।
पायकंबल-पादकम्बल-पादपुञ्छनम् । उत्त० ४३४ ।
पायकेसरिया-पात्रकेसरिका-पात्रप्रत्युपेक्षणिका । बृ० द्वि० २३७ अ । पात्रकेसरिका-पात्रकमुखवस्त्रिका । ओघ० २०८ ।
पायकुक्कडसामवन्ना-पादकुक्कुटः-कुक्कुटविशेषः तद्वत् श्यामवर्णः । ज्ञाता० २३८ ।
पायखज्ज-पाकखाद्यं-बद्धास्थी । दश० २१८ । पाकखाद्यं-बद्धास्थी । आचा ३९१ ।
पायगो-पादप-लघुवृक्षः । आव० ६८९ ।
पायच्छित्तं-पापं छिनत्तीति पापच्छित्, यथावस्थितं प्रायश्चित्तं शुद्धधर्मापन्नानि प्रायश्चित्तम् । दश० ३० । पादच्छुत्त-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चक्षुर्दोषपरिहारार्थं पादेन पादे वा छुप्तम् । भग० १३७ । पापच्छेदक प्रायश्चित्तविशोधकं वा । ठाणा० १३७ । पापच्छेदकत्वात् प्रायश्चित्तविशोधकत्वाद्वा प्राकृते प्रायच्छित्तमिति शुद्धिः उच्यते तद्विषयः शोधनीयातिचारोऽपि प्रायश्चित्तम् । ठाणा० १६० । प्रायश्चित्तं–अभ्यन्तरतपे प्रथमम् । भग० ६२२ । प्रायश्चित्तं–अतिचारविशुद्धिः । औप० ४१ । प्रायश्चितम् । आव० ५२ । पापं छिनत्ति प्रायश्चित्तं वा विरोधयतीति नैरुक्तविधिना प्रायश्चित्तम् । उत्त० ५८३ । पापं–कर्मोच्यते तत् पापं छिनत्ति यस्मात् कारणात् प्राकृतशैल्या पायच्छित्त । संस्कृते तु पापं छिनत्तीति पापच्छित्तुच्यते, प्रायसो वा चित्तं जीवं शोधयति कर्ममलिनं विमलीकरोति तेन कारणेन प्रायश्चित्तम् । प्रायो वा–बाहुल्येन चित्तं स्वेन स्वरूपेण अस्मिन् सतीति प्रायश्चित्तम् । आव० ७८२ । प्रायश्चित्तं–अपराधशुद्धिः । भग० ६२४ ।

पायच्छित्तकरणं–प्रायच्छित्तकरणम् । आव० ७७६ । प्रायश्चित्तकरणं–योगसंग्रहे एकत्रिंशत्तमो योगः । आव० ६६४ ।

पायच्छिरा–पादशिरा । आव० ३७१ ।

पायठवणं–पात्रस्थापनकं–कम्बलमयं पात्रस्थापनम् । बृ० द्वि० २३७ अ ।

पायड–प्रकटम् । आव० ५२० । प्रकटः तथाविधविशिष्टवचनरचनाविशेषतः सुखप्रतिपाद्यो योऽक्षरेष्वव्याख्यातेष्वपि पायः स्वयमेव परिस्फुरन्निव लक्ष्यते स प्रकटः । पिण्ड० २८ ।

पायत्त–पदातीनां पत्तीनां समूहः पादातम् । ठाणा० ३०३। पादातं–पत्तिसमूहः । भग० ४७६ । पादातीनां–समूहः पादातम् । उत्त० ४३८ । पादात्तं तेयविशेषः । जं० प० ४२३ (?) ।

पायत्ताणीयं–पाइक्कबलदरिसणा पायत्ताणीयं । नि० चू० द्वि० ७१ अ ।

पायदद्दर–पाददर्दरः–पापप्रहारः । औप० ६० ।

पायदद्दरग–पाददर्दरकं–भूमेः पादेनास्फोटनम् । भग० १७५ ।

पायदद्दरय–पाददर्दरकम् । जीवा० २४७ ।

पायनिज्जोग–पात्रनियोगः–पात्रपरिकरः । ओघ० २०८ ।

पायनियोग–पात्रनियोगः । बृ० द्वि० ८६ अ ।

पायपडिलेहणीआ–पात्रकप्रत्युपेक्षणिका–पात्रकमुखवस्त्रिका ओघ० २१२ ।

पायपरियावन्न–पात्रपर्यापन्ना–पात्रस्थिता । आचा० ३५७ ।

पायपीढ–पादपीठः–पदासनम् । ज० प्र० १८७ ।

पायपुंछण–पादपुञ्छनकं–रजोहरणम् । ओघ० १७५ । पादप्रोञ्छनं–रजोहरणम् । ठाणा० ३०५ । पादपुञ्छनम् । अनु० २५३ । पादपुञ्छनकं–रजोहरणम् । आचा० २४० । पापप्रोञ्छनं–रजोहरणम् । ज्ञाता० २०६ । पादप्रोञ्छनकं–रजोहरणम् । रज० १२३ । पादप्रोञ्छनं–रजोहरणम् । प्रश्न० १२० । पादपुञ्छनं–आसनविशेषः । उत्त० ५५ । पादप्रोञ्छनं–रजोहरणम् । भग० १३६ । पादपुञ्छनं–रजोहरणम् । दश० १६६ । पादप्रोञ्छनम् । आव० ७६३ । पादपुञ्छनम् । आचा० ४०६ । पादप्रोक्षणम् । औप० १०० ।

पायपोवगमण–अनशनिनः पादपस्येवोपगमनं–सामीप्येन वर्तनं पादपोपगमनम् । दश० २६ ।

पायपोसं–अपानदारं । नि० चू० प्र० १५० आ ।

पायबद्धं–पद्वृत्तादिचतुर्भागमात्रे पादे बद्धं–उत्क्षिप्तकं, प्रथमतः समारभ्यमाणम् । ज० प्र० ३६ ।

पायभूमीए– । नि० चू० द्वि० ११० अ ।

पायमूल–पादमूल–मूलभूमी । ज० प्र० २७७ ।

पायय–पात्रकं–समाधिस्थानम् । आचा० ४११ । प्राकृतः । ज्ञाता० ५० । प्राकृतः । मरु० ।

पायरास–प्रातराशं–प्राभातिकं भोजनकालम् । ज्ञाता० १५० । प्रातराशः–प्रातरशनम् । आव० १३६ । प्रातरशनं–प्रातराशः । आचा० १३० ।

पायरासु– । आचा० ४२२ ।

पायलित्तायरियं–आयरियविसेसो । नि० चू० द्वि० ३०२ अ ।

पायलेहणिया–पादलेखनिका–वटोदुम्बरप्लक्षाम्लिकाकाष्ठमयी वर्षासु पादकर्दमापनयनी । बृ० द्वि० २५३ अ ।

पायल्लग–हथियारविशेषः । नि० चू० प्र० १०५ अ ।

पायवंदते– । ज्ञाता० २६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पायवगमण–पादपस्येवोप-सामीप्येन गमनं-वर्त्तनं पादपोपगमनम् । आचा० २६२ ।

पायवच्चं– । नि० चू० प्र० २४७ आ ।

पायविवखंभ–पादविष्कम्भं-पानीयम् । आव० ३८८ ।

पायवोढग–पादशीर्षकं–पादानामुपरितनोऽवयवविशेषः । जीवा० २१० ।

पायसंखा–पादसङ्ख्या–गाथादिचतुर्थांशरूपसङ्ख्या । अनु० २३३ ।

पायसंहरण–पादं प्राणिनि निपतन्तं धारयतीत्यर्थः । ओघ० १२७ ।

पायस–परमान्नम् । जीवा० २६८ ।

पायसमास–पादसमासो–गाथापादसंक्षेपः । आचा० १८७ ।

पायसीसग–पादशीर्षकं–पादस्योपरितनाऽवयवविशेषः । ज० प्र० ५५ ।

पायहंसा–लोमपक्षीविशेषः । प्रज्ञा० ४६ ।

पायहर–विद्धपादः । भग० ।

पायाल–पातालं–समुद्रजलतलम् । प्रश्न० ६२ । पातालः–पातालकलशः वलयामुखप्रभृतिः । प्रज्ञा० ७१ । महापातालकलशः वलयामुखादिः । भग० ४३६ । पातालः–समुद्रः । सूत्र० ८६ । पातालः–पातालकलशः । प्रश्न० ६२ ।

पायावच्च–प्राजापत्यः । जं० प्र० ४६३ । नि० चू० प्र० ११८ अ । नि० चू० प्र० ७८ आ ।

पायावरणा–पात्रावरणं–स्थगनपटलम् । ओघ० २१३ ।

पारंचिए–प्रायश्चित्ते दशमो भेदः । ठाणा० २०० । सर्वोपरितमं प्रायश्चित्तम् । पारं–प्रायश्चित्तान्तमश्नुते–गच्छतीति पारञ्चिकम् । पुरुषविशेषस्य स्वलिङ्गराजपत्न्याद्यासेवनायां यद् भवति । आव० ७६४ ।

पारंचिय–पाराञ्चिको–बहिर्भूतः क्रियते तत् । ठाणा० ४८७ । दशमप्रायश्चित्तभेदवन्तमपहृतलिङ्गादिकमित्यर्थः । ठाणा० ३०० । पारं–तीरं तपसा अपराधस्याश्नुते–गच्छति ततो दीक्ष्यते यः स पाराञ्चो स एव पाराञ्चिकः तस्य यदनुष्ठानं तच्च पाराञ्चिकं, दशमं प्रायश्चित्तं, लिङ्गक्षेत्रकालतपोभिर्बहिःकरणमिति भावः । ठाणा० १६३ ।

पारंचियारिह–दशविधप्रायश्चित्ते दशमम् । भग० ६२० । पारञ्चिकार्हं–तपोविशेषेणैवातिचारपारगमनम् । ओप० ४२ ।

पारंपरप्पसिद्धी–पारम्पर्यप्रसिद्धि–स्वरूपसत्ता । आव० ५३३ ।

पार–पारः-मोक्षः संसाराटवितटवृत्तित्वात्तत्कारणानि ज्ञानदर्शनचारित्राण्यपि पारः । आचा० ११३ । तटः । आचा० १२४ । ज्ञानदर्शनचारित्रम् । आचा० ११४ । क्षयः–आयुष्कपुद्गलानां क्षयः–मरणम् । आचा० २६५ । निष्ठा । आव० २६६ । निर्वाणम् । बृ० प्र० २०१ अ । मोक्षम् । बृ० प्र० ५१ अ ।

पारए–पारगः–पारगामी । ज्ञाता० ११० । पारगः–पारगामी । भग० ११२ ।

पारग–पारगः–सर्वेषां संशयानां छेदकः । प्रश्न० १५७ । पारगः–सम्यग्वेत्ता । आचा० २६० ।

पारगए–संसारसागरस्य पारंगतः । भग० १११ ।

पारगय–पारगतं–इन्द्रियविषयात्परतोऽवस्थितम् । भग० २१७ । पारं–पर्यन्तं संसारस्य प्रयोजनव्रातस्य वा गत इति पारगतः । प्रज्ञा० ११२ ।

पारणय–यत्पार्यते–पर्यन्तः क्रियते गृहीतनियमस्यानेनेति पारणं तदेव पारणकं–भोजनम् । उत्त० ३६६ ।

पारणा–तपसः श्रुतस्कन्धादिश्रुतस्य वा पारगमनम् । प्रश्न० १२६ ।

पारत्त–परत्र । तन्दु० ।

पारत्तगुण–परत्रगुणः–ग्लानादिप्रतिजागरणादिकः । ओघ० ३६ ।

पारत्तियं–पारत्रिकम् । आव० ४०५ ।

पारद–सासमम् । प्रज्ञा० २७ ।

पारदारिय–पारदारिकः–परेषां दारेषु रतः । दश० ४२ । ज्ञाता० २३६ ।

पारदोच्चा–चौरभयम् । बृ० द्वि० २२८ आ ।

पारद्ध–उपसर्गयितुं प्रारब्धः । आव० ४११ । प्रारब्धः–अभिभूतः अपराद्धो वा । प्रश्न० ६० । प्रारब्धः । आव० ४११ । प्रारब्धः–हन्तुमारब्धः । आव० ६७१ । प्रारब्धं–आरब्धम् । ज्ञाता० २२ ।

पारपाणग–पाणगविशेषः । ज्ञाता० २२६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पारमाणि-परमक्रोधसमुद्घातं व्रजतीति भावः । ठाणा० १६६ ।
पारयित्वा-भोजयित्वा । ओघ० ६६ ।
पारलोइय-पारलौकिकं दानादि । दश० १२६ ।
पारस-पारसः-चिलातदेशनिवासीम्लेच्छविशेषः । प्रश्न० १४ । म्लेच्छविशेषः । प्रज्ञा० ५५ । पारसदेशजः-पारसीकः । जं० प्र० ११६ ।
पारसकुलं-साहिरण्णस्स रायहाणी । नि० चू० प्र० ३०४ आ ।
पारसविसओ-पारसविषयः-वैनयिकीबुद्धौ लक्षणे देशविशेषः । आव० ४२४ ।
पारसी-धात्रीविशेषः । ज्ञाता० ४१ । देशविशेषः । भग० ४६० ।
पारसीक-अश्वस्वामी । नंदी० १६१ ।
पाराइं-लोहकुसीविशेषः । प्रश्न० ५७ ।
पाराए-पारे महानदीपूरम् । आचा० ११३ (?) । परलोकसुखभाजः । सू० २१० (?) ।
पारावयम्- । आचा० १८५ ।
पारावत-पानार्थिनः, पक्षिविशेषः । आचा० ३१४ ।
पारायणं-नाम सूत्रार्थतदुभयानां पारगमनम् । व्य० द्वि० १ अ । सूत्रकाद्या. परिपाट्यः । व्य० प्र० २५७ ।
पाराशर-पाराशरः-महर्षिर्यः शीतोदकबीजहरितादिपरिभोगात्सिद्धः । सूत्र० ६५ । पारासरः शरभः । ज्ञाता० ६५ । महाकायः आटव्यपशुविशेषः, यो हस्तिनमपि पृष्ठे समारोपयति । प्रश्न० ७ (?) । वाशिष्ठगोत्रे सप्तमभेदः । ठाणा० ३६० ।
पारासरढढण-अलाभसहः । मर० ।
पारि-दुग्धभरणमानविशेषः । पिण्ड० १११ ।
पारिआसिए-परिवासितं-ह्यस्तनमित्यर्थः । भग० ६६१ ।
पारिओसियं-पर्युषितम् । आव० ६५ ।
पारिगा- । नि० चू० प्र० २५५ अ ।
पारिच्छं-जं परिच्छिज्जति तं च रयणमादि । नि० चू० प्र० ८६ आ ।
पारिजाणिए-परियानप्रयोजनाः पारियामिकाः । भग० ५४७ ।
पारिजातकुसुमं-कुसुमविशेषः । जीवा० १६१ ।
पारिट्ठावणिया-परितः-सर्वैः प्रकारैः परिस्थापनं-अपुनर्ग्रहणतया न्यास इत्यर्थः । तेन निर्वृत्ता पारिस्थापनिकी । आव० ६१६ ।
पारिट्ठावणियागारो-पारिष्ठापनिकाकारः । आव० ८५३, ८५४ ।
पारिणामिय-परिणमनं-परिणामः स एव पारिणामिकः । भग० ६४६ । परिणमनं-तेन तेन रूपेण वस्तूनां भवनं परिणामः, स एव तेन वा निर्वृत्तः पारिणामिकः । अनु० ११४ ।
पारिणामिया-परिः-समन्तान्नमनं परिणामः-सुदीर्घकालपूर्वापरार्थावलोकनादिजन्म आत्मधर्म इत्यर्थः, स कारणमस्यास्तत्प्रधाना वा पारिणामकी बुद्धिः, बुद्धेः चतुर्थो भेदः । आव० ४१४ । पारिणामिकी-प्रायो वयोविपाकजन्या । राज० ११६ ।
पारितापणिया-परितापनं-ताडनादिदुःखविशेषलक्षणं तेन निवृत्ता परितापनिकी । सम० १० । परितापनं-ताडनादिदुःखविशेषलक्षणं तेन निर्वृत्ता पारितापनिकी क्रिया । आव० ६१२ ।
पारिप्पव-पारिप्लवः-पक्षिविशेषः । प्रश्न० ८ ।
पारिप्पवा-लोमपक्षिविशेषः । प्रज्ञा० ४६ ।
पारिप्लवः-उदभिज्जपक्षिविशेषः । दश० १४१ ।
पारिभाषिकसंज्ञा-रूढसंज्ञा कल्पितसंज्ञा वा । भग० २२५ ।
पारियल्लं-बाह्यपृष्ठस्य बाह्यभ्रमिः । नंदी० ४३ ।
पारियाणिए-पारियानिकं उद्यानादिगमनार्थो रथः । बृ० द्वि० २३३ आ ।
पारियानिकम्-चरितम् । विशे० ६६१ ।
पारियावणिया-परितापनं-परितापः-पीडाकरण तत्र भवा तेन वा निर्वृत्ता तदेव वा पारितापनिकी, क्रियाविशेषः । भग० १८१ । परितापनं-ताडनादिदुःखविशेषलक्षणं तेन निर्वृत्ता पारितापनिकी । ठाणा० ४१ ।
पारियाविए- । आचा० ४२५ ।
पारियासियं णाम रातो पज्जुसियं । नि० चू० द्वि० ५० आ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पारिवय-पारापतः । व्य० द्वि० २०४ अ ।
पारिषद्याः-वयस्यस्थानीयाः । तत्त्वा० ४-४ ।
पारिसाडणिया-परिशाटः-उज्झनलक्षणः प्रतीत एव तस्मिन् भवा पारिशाटनिका । आव० ५७६ ।
पारिसाडि-परिशाटिः । आव० ७११ ।
पारिहट्ट-पडुच्छि । ओघ० ४१ ।
पारिहत्थिय-प्रकृत्यैव दक्षः सर्वप्रयोजनानामकालहीनतया कर्त्तेति । ठाणा० ४५२ ।
पारिहारिकाणि-स्थापनाकुलानि कुत्सितानि कुलानि जुगुप्सितानि । बृ० द्वि० ७१ अ ।
पारिहारिय-पारिहारिकः-परिहरणं परिहारस्तेन चरति पारिहारिकः-पिण्डदोषपरिहरणाद्युक्तविहारो साधु इत्यर्थः । आचा० ३२४ ।
पारिहिट्ठिक्षीरं-पडुच्छिक्षीरम् । ओघ० ४८ ।
पारिहेरग-पारिहार्य-बलयविशेषः । ज० प्र० १०६ ।
पारी-पाची-स्नेहभाण्डम् । ज० प्र० १०१ । भाजनविधिविशेषः । जीवा० २६६ ।
पारुक्खं-यदिन्द्रियद्वारेण मनोद्वारेण वाऽऽत्मनो ज्ञानमुपजायते तत्परोक्षम् । पृष्ठोदरादित्वात्परशब्दात्परः सकारागमः, परैर्द्रव्येन्द्रियमनोरक्षा-सम्बन्धो यस्मिन् तत्परोक्षम् । बृ० पृ० ८ अ । परोक्ष-पुनरक्षस्य वर्तमानं ज्ञानं भवति । बृ० प्र० ८ अ ।
पारुद्धरुद्ध-परुद्धरुद्धः-अतिरुद्धः । सम० ११७ ।
पारेवत-विभसागतौ फलविशेषः । प्रज्ञा० ३२८ ।
पारेवय-पारापतः पक्षिविशेषः । उत्त० ६५३ । लोमपक्षिविशेषः । जीवा० ४१ । पारापतः-फलविशेषः । प्रज्ञा० ३६५ ।
पारेवयग-पारापतकः-पक्षिविशेषः । प्रभ० ८ ।
पारेवयगोवा-पारापतगोवा, नीललेश्यावर्णः । प्रज्ञा० ३६० ।
पारेवया-लोमपक्षिविशेषः । प्रज्ञा० ४६ ।
पारोक्खी-परोक्षेषु विषयेषु भवं पारोक्षं-परोक्षविषयं ज्ञानं तदस्यास्तीति पारोक्षी । व्य० (?) ।
पार्यते-पर्यन्तः क्रियते । उत्त० ३६६ ।
पार्श्वम्- । आचा० ३८ ।
पार्ष्णि-गृह्णाति पार्श्वतो ग्रामेषु यथास्वेच्छं विहरति । बृ० प्र० ५१८ आ ।
पार्ष्णिः-गुल्फयोरधोरभागः । नंदी० १६१ ।
पार्ष्णित्र-चर्मकोशः । आचा० ३७० ।
पालंक-शाकविशेषः (महाराष्ट्रीयः) बृ० प्र० ३१४ आ ।
पालंब-प्रालम्ब-तपनीयमयो विचित्रमणिरत्नभक्तिचित्र आत्मप्रमाण आभरणविशेषः । ज० प्र० २७५ । प्रालम्बं भूषणविधिविशेषः । जीवा० २६६ । प्रालम्बं-दीर्घम् । भग० ३१६ । प्रालम्बः-आप्रदीपन आभरणविशेषः । आचा० ३६३ । प्रालम्बः-तपनीयमयो विचित्रमणिरत्नभक्तिचित्र आत्मनः प्रमाणेन स्वप्रमाण आभरणविशेषः । जीव० २५३ । प्रलम्बते इति प्रलम्बः-पदकः । राज० १६ । प्रालम्बं झुम्बनकम् । ज० प्र० १०६ ।
पालंबसुत्त-भूषणविशेषः । आचा० ४२३ ।
पाल-हस्तिपालः । बृ० तृ० २३१ आ ।
पालइत्ता-पालयित्वा अतिचाररक्षणेन, परावर्त्तनादिना अभिरक्ष्य । उत्त० ५७२ ।
पालए-खंडगच्छमारगो । नि० चू० प्र० ३०३ अ ।
पालओ-पालकः । आचा० १२४ ।
पालक-पालकः-विमानविशेषः । औप० ५२ । स्कन्दकाचार्यस्य विरूपं कर्ता । सूत्र० २३६ । द्रव्यसङ्कोचो न भवसङ्कोच इत्येकः, यथा पालकस्य । आव० ३७६ । जन्माभिषेकागमनविमानकारकः देवविशेषः । ज्ञाता० १२७ । द्रव्यसङ्कोचो न भावसङ्कोचः, यथा पालकः । विशे० ११२६ । द्रव्यसङ्कोचो न भावसङ्कोचे दृष्टान्तः ज० प्र० १० । यानविमानम् । प्रश्न० ६५ ।
पालकी-हरितभेदः । आचा० ५७ ।
पालक्का-हरितविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।
पालग-पालकः-स्कंधकादिपञ्चशतमुनिघातको मन्त्री । उत्त० ११४ । वासुदेवपुत्तो भत्तिबहुमाणवउभंगे पढममभगे दिट्ठंतो । नि० चू० प्र० ८ अ । पालकविमानकारकः । भग० ७०० । पालको नाम मरुकः पुरोहितः । व्य० द्वि० ४३२ अ । पालक-ग्रामविशेषः । आव० २२५ । पालकः-अज्ञातोदाहरणे प्रद्योतजेष्ठपुत्रः । आव० ६६६ । पालकः-कालिकपुत्रः । आव० ६८१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पालत-पालकं-पालकदेवनिर्मितं सौधर्मेन्द्रसम्बन्धियानम् । ठाणा० २५० ।

पालय-पालकं-यानविमानं-सौधर्मेन्द्रसम्बन्ध्याभियोगिक-पालकाभिधानदेवकृतं वैक्रियम् । सम० २ । पालकः-अभियोगिको देवः । जं० प्र० ३९६ । पालकः-कृतिकर्म-दृष्टान्ते मुख्यो वासुदेवपुत्रो द्रव्यवन्दकः । आव० ५१५ । पालकः-कृतिकर्मणि पञ्चमो दृष्टान्तः, द्वारिकायां वासुदेव-पुत्रो द्रव्यवन्दकः । आव० ५१५ ।

पालयामि- । ज्ञाता० १६३ ।

पालयित्थ-पालितवन्तः । ठाणा० ७६ ।

पालयित्वा-तद्विहितानुष्ठानस्यातिचाररक्षणेन । उत्त० ५७२ ।

पालविहि-सप्तदशमकला । ज्ञाता० ३८ ।

पालाअ-पालका-महत्तरिका । व्य० द्वि० ३५ आ ।

पालासय-संनिवेसविशेषः । भग० १०२ ।

पालि-पालिः-सेतुः । राज० ११३ । पालिः-जीवित-नलधारणाद्भवस्थितिः सा चोत्तरत्र महाशब्दोपादानादिह पल्योपमप्रमाणा । (?) ।

पालित-पादलिप्तः-विद्यामन्त्रद्वारविवरणे सूरिः । पिण्ड० १४२ ।

पालित्तय-पादलिप्ताचार्यः । बृ० तृ० ६९ अ ।

पालित्तयकए-पादलिप्तसूरिकृतः । नि०चू०तृ०११८ आ ।

पालित्ता-पादलिप्ताः वैनयिक्यां ग्रन्थिविषये आचार्यः । आव० ४२४ ।

पालिय-पालितः-पुनःपुनरुपयोगप्रतिजागरणेन रक्षितः । आव० ८५१ । पुनःपुनरुपयोगप्रतिजागरणेन रक्षितः ठाणा० ३८८ । पालित-सततं सम्यगुपयोगेन प्रतिचरितम् । प्रश्न० ११३ । पालितः-चम्पायां श्रावकः । उत्त० ४८२ ।

पाली-सयममहातडागस्यानतिक्रमणलक्षणः सेतुः । वसति । बृ० द्वि० २०५ अ । पालिः-सेतु । जीवा० २६० । प्रज्ञा० ८५ ।

पालुंगाहरय-'माहुरय'त्ति अनम्लरसानि शालनकानि 'पालङ्ग'त्ति वल्लिफलविशेषश्च । उपा० ४ ।

पालु-अपानं । नि० चू० प्र० १८९ आ ।

पालेइ-असकृदुपयोगेन पालयति प्रतिजागरणात् । भग० १२४ । सततोपयोगप्रतिजागरणेन रक्षति । उपा० १५ ।

पालेति-पालयति-असकृदुपयोगेन प्रतिजागरणात् । ज्ञाता० ७२ ।

पाव-पापं-पांशयतीति पापं, पिबति वा हितम्, कर्म वा । आव० ४०७ । पापं-कर्म । आव० ७८२ । पापं-पांशूलकराकीर्णत्वादिभिरशोभनम् । उत्त० ११० । वल्ली-विशेषः । प्रज्ञा० ३२ । पापं-पापानुष्ठानम् । आचा० २६८ । पातयति, पासयतीति पापम् । आचा० ११५ । पापम् । आव० ७८२ । पापं-क्लिष्टं-ज्ञानावरणादि । दश० १५६ । पापं-घातिकर्म । ठाणा० ५२६ । पातयति नरकादाविति पापम् । आव० ८३० । पापः-कर्मः । उत्त० ५९२ । पापः-अपुण्यरूपः । ज्ञाता० २०५ ।

पावए-पापकः-अमनोज्ञः । ज्ञाता० २३३ ।

पावकम्म-पापकर्म-ज्ञानावरणादि । ओप० ८५ । पापकर्म प्राणातिपातादि । भग० ३६ । पापकर्म-ज्ञानावरणाद्य-शुभं कर्म । भग० ३६ । पापकर्म-घातिकर्म सर्वमेव वा ज्ञानावरणादि । ठाणा० १०१ । पापकर्म-ज्ञानावरणादि । ज्ञाता० २२१ । पापकर्म-ज्ञानावरणीयादि । दश० १५२ ।

पावकम्मकरण-पापकर्मकरणम्,अधर्मद्वारस्य द्वादशं नाम । प्रश्न० ४३ ।

पावकम्मनेम्म-पापकर्मणां-ज्ञानावरणादीनां मूलम् । प्रश्न० ९६ ।

पावकम्मोवएस-पापकर्मोपदेशः-पापप्रधानकर्मण उपदेशः । आव० ८३० ।

पावकारी-पापकारी-पातकनिमित्तानुष्ठानसेवी । उत्त० २०७ ।

पावकोव पापं-अपुण्यप्रकृतिरूपं कोपयति-प्रपञ्चयति-पुष्णाति यः सः पापकोपः, पापं चासौ कोपकार्यत्वात् कोपश्चेति वा, प्राणवधस्यैकोनविंशतितमः पर्यायः । प्रश्न ५ ।

पावग-पावकं-शुभमनुष्ठानम् । उत्त० ४८ । पावकं-अत्यन्तमहितम् । दश० १५७ । पावकः-अग्निः । उत्त० १३५ । पावकं-पापमेव पापकम् । उत्त० ४८ । पापकं-अशुभम् । ज्ञाता० २०५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पावजीवी-कौटलाजीवी । व्य० प्र० २५१ ।
पावण-प्लावनं-रक्षणम् । पिण्ड० ११ ।
पावनुवण-प्राप्नुवन्-गृण्हन् । जं० प्र० ४४६ ।
पावपरिक्खेवी-पापैः-कथञ्चित्समित्यादिषु स्खलितलक्षणैः परिक्षिपति-तिरस्कुरुत इत्येवंशीलः पापपरिक्षेपी । उत्त० ३४५ ।
पावमण-पापमनाः-अवस्थितमना अनवस्थितमना वा । आव० ३६६ ।
पावय-पुनातीति पावकः समयप्रसिद्धया तु पापहेतुत्वात्पापकः । पावकः-लोकप्रसिद्धया अग्निः । उत्त० १८६ । प्राप्नुहि । ज्ञाता० ५५ ।
पावयणं-प्रवचनं-शासनम् । ठाणा० २४६ । प्रावचनं प्रकर्षेणाभिविधिनोच्यन्ते जीवादयो यस्मिन् तत्प्रावचनम् । प्रगतं । आव० ७६० । प्रावचनं, प्रगतं, प्रशस्त, प्रधानम्, आदौ वा जीवादिष्वभिविधिमर्यादाभ्यां वचनं प्रावचनम्, शिवप्रापकं वा वचनं प्रावचनमुच्यते । विशे० ५६१ । प्रशस्तं प्रगतं प्रथमं वा वचनं प्रवचनम्, आगमः । ठाणा० १७६ । प्रवचनं जैनं शासनम् । ज्ञाता० ४७ ।
पावयणि-प्रावचनी-आचार्यादिर्युगप्रधानः । आचा ४३८ ।
पावयणी-प्रावचनिका-प्रवचनार्थकथननियुक्ताः । नंदी० ५४ ।
पावलोभो-पापलोभः-पापं-अपुण्यं लुभ्यति-प्राणिनि स्निह्यति संश्लिष्यतीति यावत् यतः सः पापलोभः, पापं चासौ लोभश्चेति वा तत्कार्यत्वात्पापलोभः । प्राणवधस्य विंशतितमः पर्यायः । प्रश्न० ५ ।
पावरण-प्रावारः-प्रावरणविशेषः । ज्ञाता० २२६ । वस्त्रम् । आचा० ३६३ ।
पावसमण-पापेन उक्तरूपेणोपलक्षितः श्रमणः पापश्रमणः उत्त० ४३२ ।
पावसमणिज्जं-पापश्रमणीयं, उत्तराध्ययनेषु सप्तदशमध्ययनम् । सम० ६४ । पापश्रमणीयं-उत्तराध्ययनेषु सप्तदशमध्ययनम् । उत्त० ६ ।
पावसुतं-व्याकरणादि । नि० चू० उ० १३ अ
पावसुय-एकोनत्रिंशत् पापश्रुतप्रसङ्गः । प्रश्न० १४५ ।
पावसुयपसंगा-पापोपादानानि श्रुतानि पापश्रुतानि तेषु प्रसज्जनानि प्रसङ्गाः-तथाविधासक्तिरूपाः पापश्रुतप्रसङ्गाः उत्त० ६१७ ।
पावा-पापा-नगरीविशेषः । आव० २४० । पासयति पातयति वा भवावर्त्तं इति पापा । उत्त० ८८ । भङ्गजनपदे **आर्यक्षेत्रम्** । प्रज्ञा० ५५ ।
पावाइया-प्रावादिकाः-प्रकर्षेण मर्यादया वदितुं शीलं येषां ते प्रावादिनः त एव प्रावादिकाः यथावस्थितार्थस्य प्रतिपादनाय वावदूकाः । आचा० १८६ ।
पावाजीवी-पापेन-विद्यादिना परद्रोहकरणरूपेण जीवनशीलाः पापाऽऽजीवीनः । पिण्ड० १४२ ।
पावाभिगम-पापाभिगमः-पापमेवोपादेयमित्यभिगमः । प्रश्न० १५ ।
पावार-प्रावारः । ठाणा० २३४ । प्रावारः-दुष्प्रतिलेखितदूष्यपञ्चके तृतीयो भेदः । ६५१ ।
पावारग-प्रावारकम् । आव० ८३३ । प्रावारकः- उल्वणरोमा बृहत्कम्बलः । बृ० द्वि० २२० अ ।
पाविओ-प्राप्तः । ज्ञाता० १६६ ।
पाविज्जइ-प्रोच्यते । आव० २७४ ।
पाविया-प्राप्यति नरकमिति प्रापिका, पापा एव वा पापिका, कुत्सिता, पापहेतुर्वा । उत्त० २६२ । पापैव पापिका-कुत्सिता । उत्त० ३८७ ।
पाषाणधातुः-धातुविशेषः । उत्त० ६५३ ।
पासंड-पाषण्ड-व्रतम् । अनु० २५ । पाषण्डं-व्रतम् । उत्त० ५०१ । पाषण्डः । आव० २२३ । लिङ्गिनः । ज्ञाता० १५० । पाषण्डः-शेषव्रतिः । उत्त० ५०१ । पाखण्ड-पाखण्डिजनोत्थापितमिथ्यावादः । ज० प्र०६६ । पाखण्डः-शाक्यादिः । ज० प्र० १६७ ।
पासंडत्थ-पाषण्डस्थः । आव० ३६७ ।
पासंडधम्मे-पाखण्डधर्मः-पाखण्डिनामाचारः । ठाणा० ५१५ ।
पासडिमिसं-पाषण्डिमिश्र, मिश्रस्य द्वितीयो भेदः । बृ० प्र० ८३ अ ।
पासंडी-पाषण्डी-पाखण्डीनः । दश० २६२ ।
पास-पश्यति समस्तभावान् केवलालोकनावलोकत इति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पश्यः । उत्त० २७० । पाशः-द्यूतोपकरणम्, उत्त्रस्ताश्वादिबन्धनं वा । औप० ६६ । पश्यति सर्वभावानिति पार्श्वः, त्रयोविंशतितमो जिनः, यस्मिन् गर्भगते माता सप्तशिरसं नागं शयनीये निर्विजने दृष्टवती तेन पार्श्वः । आव० ५०६ । पाशः-स्त्र्यादिः । उत्त० २०६ । छिड्डिका । बृ० द्वि० ६० अ । पार्श्वः-आसन्नः । ओघ० १६२ । पार्श्वः-पार्श्वनाथस्तीर्थंकरः । भग० २४८ । पाशः-बन्धनम् । भग० ६३ । त्रयोविंशतितमतीर्थंकरः । ज्ञाता० २५३ । पाशः-कूटजालः एव बन्धनविशेषः । उत्त० ४६० । पाशः-बन्धनम् । आचा० ४७ । पार्श्वा । ठाणा० २६९ । पाशः-शकुनिबन्धनविशेषः । प्रश्न० १५ । पासा-द्यूतोपकरणानि उत्त्रस्ताश्वादिबन्धनानि वा । ज० प्र० २६४ । म्लेच्छविशेषः । प्रज्ञा० ५५ ।

पासइ-पश्यति-अवग्रहेहापेक्षयाऽवबुध्यते । भग० ३५८ । पश्यति-दृशिरूपलब्धिक्रिय इत्यत उपलभते-अवगच्छति । आचा० १६६ ।

पासग-पश्यतीति पश्यकः-सर्वज्ञः । आचा० १२४ । पश्यकः-सर्वनिराकरणात्पश्यति-उपलभत इति पश्यः स एव पश्यकः तीर्थकृत् । आचा० १७१ । पश्यकः-परमार्थदृशः । आचा० १४८ । ज्ञात० १६० ।

पासगबद्ध-पासिकबद्धः-कसाबद्धः । बृ० द्वि० २५२ आ ।

पासजाइपहे-पाशाः-अत्यन्तपारवश्यहेतवः कलत्रादिसम्बन्धास्त एव तीव्रमोहोदयादिहेतुतया जातीनां एकेन्द्रियादिजातीनां पन्थानः-तत्प्रापकत्वान्मार्गाः पाशजातिपथाः । उत्त० २६४ ।

पासट्ठीनं-अट्ठविहा उ कम्मपासा उडीणो । दश० चू० ३३ आ ।

पासणया-पश्यत्ता-पश्यतो भावः पश्यतोपयोग इत्यर्थः । विशे० ३०१ । पश्यतो-भावः पश्यत्ता-बोधपरिणामविशेषः । भग० ७१४ । पश्यत्ता-संदर्शनम् । ओघ० ३६ । दर्शनता-प्रज्ञापनायास्त्रिंशत्तमं पदम् । प्रज्ञा० ६ । पश्यतो भावः-पश्यत्ता । प्रज्ञा० ५२६ । पश्यत्ता-संदर्शनम् । ओघ० ३६ ।

पासणिए- । नि० चू० प्र० २६२ अ ।

पासणिओ-जणवयववहारेसु णडणट्टादिसु वा जो पेक्खणं करेति सो पासणिओ । नि० चू० द्वि० ६२ अ ।

पासणिय-प्राश्निकः-सभ्यः । व्य० द्वि० १६० अ ।

पासतो- । ज्ञाता० १९० ।

पासत्थ-पार्श्वे-बहिर्ज्ञानादीनां देशतः सर्वतो वा तिष्ठतीति पार्श्वस्थः । ठाणा० ५१४ । पार्श्वस्थः-ज्ञानाचारादिबहिर्वर्त्ती साध्वाभासः । प्रश्न० १३७ । पाशस्थः-पाशेषु तिष्ठतीति पाशस्थः । व्य० प्र० १६० अ । दर्शनादीनां पार्श्वे तिष्ठतीति पार्श्वस्थः मिथ्यात्वादिपाशेषु वा तिष्ठतीति पाशस्थः । आव० ५१७ । प्रकर्षेण आसमंतात् ज्ञानादिषु निरुद्यमतया स्वस्थः । व्य० प्र० १६० अ । ज्ञानादीनां पार्श्वे तिष्ठतं ति पार्श्वस्थः-पाशस्थः । व्य० प्र० १५७ आ । पार्श्वे ज्ञानादीनां बहिस्तिष्ठतीति पार्श्वस्थः-गाढग्लानत्वादिकारणं विना शय्यातराभ्याहृतादिपिण्डभोजकत्वाद्यागमोक्तविशेषणः । ज्ञाता० ११३ । णाणदंसणचरित्ताण पासे ट्ठितो पासत्थो । नि० चू० प्र० २१७ अ ।

पासत्थविहारी-पार्श्वस्थानां यो विहारो-बहूनि दिनानि यावत्तथा वर्त्तनं स पार्श्वस्थविहारः सोऽस्यास्तीति पार्श्वस्थविहारी । ज्ञाता० १११ ।

पासत्थि-ज्ञानादिबहिर्वर्त्ती । भग० ५०२ ।

पासपयट्टिय-पाशा इव पाशाः स्त्र्यादयस्तेषु प्रवृत्तः तेन प्रवर्त्तितः पाशप्रवृत्तः-पाशप्रवर्त्तितः । उत्त० २०६ ।

पासपरिवत्तो-पार्श्वपरिवर्त्ती । आव० ४२१ ।

पासपुट्ठ-पार्श्वस्पृष्टः-स्तुतमात्रः । ठाणा० ४७१ ।

पासमिओ-पार्श्वमितः साकेतनगरस्योत्तरकुरूद्याने यक्षः । विपा० ६५ ।

पासय-द्वादशमकला । ज्ञाता० ३८ ।

पासल्ली-पार्श्वतः । आव० ६४८ ।

पासवणं-प्रश्रवण-मूत्रम् । आव० ६१६ । कायिकी । आव० ७२८ । प्रश्रवणं-कायिकी । आव० ६३४ । प्रश्रवणः-मूत्रः । समं० ११ प्रकर्षेण स्रवतीति-प्रश्रवण एकिका । आचा० ४०६ । ज्ञाता० ६१ । प्रश्रवण-मूत्रम् । उत्त० ५१७ । ज्ञाता० १०३ । प्रश्रवणं-मूत्रम् । ज० प्र० १४८ । मनुष्याणां अशुचिभूतस्थानम् । प्रज्ञा० ५० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पासवणभूमि–प्रश्रवणभूमिः द्वादशभेदभिन्ना भूमिः । आव० ७८४ ।

पाससूल–पार्श्वशूलम् । भग० १९७ ।

पासहत्थ–पाशः–शकुनिबन्धनविशेषः स हस्ते यस्य सः पार्श्वहस्तः । प्रश्न० १३ ।

पासा–पाशाः–अत्यन्त पारवश्यहेतवः कलत्रादिसम्बन्धाः । उत्त० २६४ ।

पासाइय–प्रसादीयं–कृष्णावभासत्वादिना गुणेन मनःप्रसादहेतुः । राज० ३ ।

पासाइया–प्रासादेषु भवा प्रसादीया–प्रासादबहुला । राज० ३ ।

पासाईय–प्रासादीयः–मनःप्रसादकरः दर्शनीयस्तं चक्षुषा पश्यन्नपि न श्रम गच्छति । ठाणा० २३२ ।

पासाईया–चित्तप्रसादजनिका । ज्ञाता० १३ । प्रासादीयं प्रसादाय मनःप्रसत्तये हितानि–मनःप्रसत्तिकारीणि । जीवा० १६१ ।

पासाण–पाषाणः–विजातीयरत्नम् । दश० १९३ ।

पासाणजलं–जलविसेसो । नि० चू० द्वि० ७९ अ ।

पासाणधातू–जत्थ पासाणे जुत्तिणा जुत्ते वा धम्ममाणे सुवण्णादि पडति सो । नि० चू० द्वि० ८६ आ ।

पासादिय–प्रासादाः संजाता यस्मिंस्तत् प्रासादितम् । सूत्र० ४०७ । प्रसादीयं–मनःप्रसत्तिकारि । प्रज्ञा० ८७ । मनःप्रसादहेतुः । सूर्य० २६४ ।

पासादीया–प्रासादीया–प्रासादबहुला । सूर्य० २ । प्रसादाय–मनःप्रसत्तये हिता तत्कारित्वात् प्रासादीया मनःप्रल्हादकारिणीति भावः । जं० प्र० २१ ।

पासामो– । ज्ञाता० १०१ ।

पासाय–प्रासादः–प्रासादा, आयामाद्विगुणोच्छ्रितवास्तुविशेषः । जं० प्र० २९७ । प्रासादः । जं० प्र० ३९६ । प्रासादः–एकस्तम्भं हर्म्यम् । दश० २१८ । प्रासादः–नरेन्द्राश्रयः । प्रश्न० ८ । प्रासादः । जीवा० २६९ । प्रासादः–राज्ञां देवतानां च भवनम्, उत्सेधबहुलो वा । जीवा० २७९ । प्रासादः–नरेन्द्राश्रयः । जं० प्र० १०६ । प्रासादः–देवतानां राज्ञां वा गृहं उच्छ्रयबहुलो वा । जं० प्र० १२१ । प्रासादः–देवस्य राज्ञो वा भवनम् अथवा उत्सेधबहुलः प्रासादः । भग० २३८ । प्रासादः–सप्तभूमादि । उत्त० ३०८ । प्रासादः–द्वितीयभूमिका । आचा० ३६२ । प्रासादः–आयामद्विगुणोच्छ्रायः । जं० प्र० ८८ । प्रासादः–सप्तभूमिकादि । भग० ४८३ ।

पासायवडिंसग–प्रासादावतंसको नाम प्रासादविशेषः । जं० प्र० ५३ ।

पासायवडिंसय–प्रासादावतंसकः–प्रासादविशेषः । जीवा० २०९ २१९ । प्रासादः अवतंस इव–शेखरक इव प्रधानत्वात् प्रासादावतंसकः । भग० १४५ । प्रासादावतंसकः–स्वस्वकूटवर्तिक्रीडावासः । जं० प्र० ३८४ ।

पासायवडेंसग–प्रासादावतंसकः–प्रासादविशेषः । राज० ६९ ।

पासायसंठिय–प्रासादसंस्थितः । जीवा० २७९ ।

पासायसंठिया–प्रासादस्येव संस्थानं यस्याः सा प्रासादसंस्थिता । सूर्य० ६९ ।

पासाया–राजानां देवतानां च भवनानि प्रासादाः । उत्सेधबहुला वा प्रासादाः । अनु० १५९ ।

पासायालोअण–प्रासादे प्रासादस्य वाऽऽलोकनं तस्मिन्–सर्वोपरिवर्तिचतुरिकारूपो गवाक्षः प्रासादलोकनम् । उत्त० ४५१ ।

पासावच्चिज्ज–पार्श्वापत्यस्य–पार्श्वस्वामिशिष्यस्यापत्यं–शिष्यः पार्श्वापत्यीयः । सूत्र० ४०९ । पार्श्वापत्यीयं–पार्श्वजिनशिष्यस्येयं पार्श्वापत्यीयः । भग० १०० । १३६, २४७ । पार्श्वापत्यः । आव० १९१, २०३ ।

पासावच्चिभा–नि० चू० प्र० २८३ आ ।

पासिय–वनस्पतिविशेषः । भग० ८०३ ।

पासिल्लउव्व–पृष्ठतो वा, अर्द्धावनतादिस्थानतः पार्श्वस्थितो वा तिर्यक्स्थितो वा । आव० ४४३ ।

पासिल्लए–पार्श्वगतः । तन्दु० ।

पासु–पार्श्वे । ओघ० ११७ ।

पासुत्त–प्रसुप्तः । उत्त० १३६ ।

पासुतेल्लय–प्रसुप्तः । आव० ६३२ ।

पासेल्लिय–पार्श्वगः । आव० ४२७ ।

पाहुणगं–बहुघरातो वरगिहं । जमन्न गिहं निज्जति तं । नि० चू० द्वि० २२ अ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाहणाउ-उपानही । ठाणा० ३०४ ।
पाहणाओ- । भग० ६६३ ।
पाहाणगुण-प्राधान्यगुणं-वैमल्यगुणम् । आव० ५२१ ।
पाहाण-पाषाणः । दश० १६ । पाषाणः । आ० (?) १६७ ।
पाहाणजलं-पाषाणजलं-यत्पाषाणानामुपरि वहति । ओघ० ३२ ।
पाहाणवट्टओ-पाषाणवर्त्तुलः । आव० १२३ ।
पाहाणोदग-पाषाणजलं-यत्पाषाणानामुपरि वहति । ओघ० ३२ ।
पाहुड-प्राभृतं लोकप्रसिद्ध यदभीष्टाय देशकालोचितं दुर्लभं वस्तु परिणामसुन्दरमुपनीयते, प्रकर्षेणासमन्ताद् ह्रियते-पोष्यते चित्तमभीष्टस्य पुरुषस्यानेनेति प्राभृतम् । सूर्य० ७ । प्राभृतं-अधिकारविशेषः । सम० ८२ । प्राभृतं-प्राभृतिका । प्रश्न० १५४ । प्रदत्तम् । आचा० ३६७ । प्राभृतं-नरकपालकौशलिकं परमक्रोधः । ठाणा० १६६ । प्राभृतं-अधिकरणकारी कोपः । ठाणा० २४७ । प्राभृतं-योनिप्राभृतम् । व्य० द्वि० ४ आ । प्राभृतं-अधिकरणम् । बृ० द्वि० १४८ अ । प्राभृतमिव प्राभृतः-तीव्रक्रोधः । बृ० तृ० १०४ आ । कलहः । नि० चू० प्र० २४४ अ । नि० चू० प्र० २६४ अ । नि० चू० तृ० २८ अ । प्राभृतं-कलहम् । व्य० द्वि० २२३ अ ।
पाहुडछेदा-अर्थछेदा । नि० चू० तृ० ११७ आ ।
पाहुडपाहुड-प्राभृतप्राभृतं-प्राभृतेषु अन्तरगतम् । सूर्य० ७ । प्राभृतादि-प्राभृतम् । दश० ८५ ।
पाहुडपाहुडिआसंखा-प्राभृतप्राभृतिकासंख्या, दृष्टिवादे सङ्ख्या । अनु० २३४ ।
पाहुडसंखा-प्राभृतसंख्या पूर्वान्तर्गतश्रुताधिकारसंख्या । अनु० २३४ ।
पाहुडसीलया-प्राभृतशीलता कलहनसम्बन्धता । ठाणा० २७५ ।
पाहुडा-'प्र' इति-प्रकर्षेण 'आ' इति-साधुदानलक्षणमर्यादया 'भृता'-निर्वर्तिता यका भिक्षा सा प्राभृता । पिण्ड० ३५ ।
पाहुडि-प्राभृतनामश्रुतस्कन्धः । व्य० द्वि० ७८ आ ।
प्राभृतिका-बालादिनिमित्तं संस्थाप्य या ददाति भिक्षा सा प्राभृतिका । पिण्ड० १६२ ।
पाहुडिआसंखा-प्राभृतिकासंख्या-दृष्टिवादे सङ्ख्याविशेषः । अनु० २३४ ।
पाहुडिया-प्राभृतिका । आव० ७२८ । प्राभृतिका । आव० ४०५, ६४० । प्राभृतिका, भिक्षा अर्चनिका । व्य० द्वि० १४ अ । प्राभृतिका-भिक्षापि अर्घवनिकापि । बृ० प्र० ८८ अ । भिक्षावलि कूरपरिसाडणं वा । नि० चू० प्र० १७२ आ । प्राभृतिका-सार्वजनिका । बृ० प्र० ८७ आ । प्राभृतिका-वसतेश्छादनलेपनादिरूपा । बृ० प्र० २६१ आ । प्राभृतिका-सुरेन्द्रादिकृता समवसरणरचना । बृ० प्र० १६६ अ । प्राभृतिका-हरितछेदनाद्यधिकरणरूपा । बृ० प्र० २४० अ । प्राभृतिका बलिः । बृ० प्र० २२३ अ । कस्मैचिदिष्टाय पूजाय वा बहुमानपुरस्सरी कारेण यदभिष्टवस्तु दीयते तत्प्राभृतमुच्यते, ततः प्राभृतमिव प्राभृतं साधुभ्यो भिक्षादिकं देयं वस्तु, प्राभृतमेव प्राभृतिका, पूर्वं नपुंसकस्वेऽपि कप्रत्यये समानीते सति स्त्रीत्वं, यद्वा 'प्र' इति प्रकर्षेण 'आ' इति साधुदानलक्षणमर्यादया 'भृता' निर्वर्तिता यका भिक्षा सा प्राभृता, ततः स्वार्थिककप्रत्ययविधानात् प्राभृतिका । पिण्ड० ३५ । अधिकरणदोषः । नि० चू० प्र० ३२४ अ । प्राभृतिका-सुरविरचितसमवसरणमहाप्रातिहार्यादिपूजा लक्षणा । बृ० तृ० ७६ अ ।
पाहुण-प्राघूर्णकः-आगन्तुकः भिक्षुकः । ठाणा० ४६७ । कुलगणसङ्घानां स्थविरः । बृ० द्वि० २०८ आ । प्राघूर्णकः । ओघ० ५१ ।
पाहुणग-प्राघूर्णकः । आव० ८५८ ।
पाहुणगभत्त-प्राघूर्णकः-कोऽपि क्वचिद्गतो यत्प्रतिसिद्धये संस्कृत्य ददाति प्राघूर्णका वा साध्वादय इहायाता इति यद्दापयति तत्प्राघूर्णकभक्तम् । ओघ० १०१ । भग० ४६७ ।
पाहुणभत्त-प्राघूर्णकाः-आगन्तुकाः भिक्षुकाः एव तदर्थं यद्भक्तं तत्तथा प्राघुर्णको वा गृही स यद्दापयति तदर्थं संस्कृत्य तत्तथा । ठाणा० ४६०, ४६७ ।
पाहुणिय-षष्ठोः महाग्रहः । ठाणा० ७८ । प्राघुनिकाः षष्ठो महाग्रहः । जं० प्र० ५३४ । सूर्य० २६४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाहुण्णं-प्राधूर्ण्यम् । आव० ३५५ ।
पाहेज्जं-पाथेयं-कंटकमर्दनवेतनम् । बृ० प्र० २९७ आ ।
पाहेणग-प्रहेणकं मोदकादि । पिण्ड० ९२ ।
पिकारे-अपिकारे । ठाणा० ४९३ ।
पिंगल-कपिलम् । ठाणा० ३९७ । **पिङ्गलं**-कपिलम् । ज्ञाता० १३३ । **पिङ्गलः**-कपिलः । ज्ञाता० १६ । चत्वारिंशत्तममहाग्रहः । ठाणा० ७९ ।
पिंगलक्खग-पिङ्गलाक्षः-पक्षिविशेषः । प्रश्न० ८ ।
पिंगलगणिहि-सर्वं आभरणविधिं, यः पुरुषाणां यश्च महिलानां तथाऽश्वानां हस्तिनां च स यथौचित्येन पिङ्गलकनिधिः । ज० प्र० २५८ ।
पिंगलते- । ठाणा० ४२८ (?) ।
पिंगलय-पिंगलकः-स्कन्दकचरित्रे श्रावस्तीनगर्यां वैशालिकश्रावको भगवद्वचनामृतपाननिरतः श्रमणः । भग० ११२ । कृष्णपुद्गलः । सूर्य० २८७ । पिंगलकः-चत्वारिंशत्तममहाग्रहः । जं० प्र० ५३५ । सूर्य० २९४ ।
पिंगला-पिङ्गला-कपिला । अनु० १३३ । पिङ्गला-पोतस्य लघुसुता ब्रह्मदत्तराज्ञी । उत्त० ३७९ ।
पिंगलायणा-कुत्सगोत्रे भेदः । ठाणा० ३९० ।
पिंगा-पिङ्गा कपिञ्जला । सूत्र० ९८ ।
पिंगायण-पिङ्गायनं मघागोत्रम् । जं० प्र० ५०० ।
पिंगायणसगोत्त-मघानक्षत्रगोत्रम् । सूर्य० १५० ।
पिंगुल-पिङ्गुलः पक्षिविशेषः । प्रश्न० ८ ।
पिंजितं-पिंजनिकया तडितं कृतम् वा । बृ० द्वि० ११६ आ ।
पिंड-अद्रवः स्त्याद्यानः विकृत्यादिकम् ? । बृ० तृ० २०६ आ । ओदनादिकः । बृ० द्वि० ८६ अ । भत्तट्ठो । नि० चू० प्र० १४२ आ । पिण्डः-समुदायः । विशे० ४२६ । पिण्डः-पिण्डनीयं पिण्डनं वा, परिग्रहस्य नवमं नाम । प्रश्न० ९२ । पिण्डः-ओदनादिरन्नः । उत्त० २६९ । पिण्डः-आहारः । उत्त० ६० । पिण्डं पिण्डः-सङ्घातरूपः । ओघ० १२ । पिण्डः-गुडपिण्डादिरूपः । पिण्ड० २ । पिण्डं-शाल्योदनादिकम् । आचा० ३३६ । पिण्ड्यते-सङ्घात्यते, कोऽर्थः ? गृहिभ्य उपलभ्य सम्मील्यत इति पिण्डस्तमायामकादि । उत्त० ४१९ । पिण्डः-पोषः । आचा० ३२६ । पिण्डः-आहारोपधिरूपः । ठाणा० ३११ । पिण्डनं पिण्डः-संघातरूपः । भिक्षाशोधिः । ओघ० १२ । यदशनादिकं सम्पन्नं विशिष्टाहारगुणयुक्तं षट्रसोपेतम् । बृ० द्वि० १७८ अ । पिण्ड्यो-लुम्ब्यः । ज० प्र० २५ ।
पिंडकप्पित-प्रत्येकं त्रिकं त्रिकमवसातव्यमेषः पिंडकल्पिकः बृ० ८३ अ ।
पिंडगुड-पिण्डगुडः-पिण्डीभूतो गुडविशेषः । आव० ८५४ ।
पिंडगुल-पिण्डगुडः-पिण्डीभूतो गुडः । आव० ८५७ ।
पिंडग्गह-पिण्डग्राह्यं-पिण्डरूपतया हस्ते ग्रहीतुं शक्यते पिण्डविकृतिर्वा । बृ० द्वि० १७८ आ ।
पिंडणिगर-दाइयभत्तं, पितिपिंडपदाणं । नि० चू० प्र० २६८ आ ।
पिंडनियर-पिण्डनिकरः-पितृपिण्डः । आचा० ३२८ ।
पिंडय-उण्डकः पादयोर्यः पिण्डरूपतया लगति स पिण्डकः । ओघ० २९ ।
पिंडरस-पिण्डरसः खर्जूरादिमिश्रम् । बृ० प्र० २६७ आ ।
पिंडलग-पटलकं पुष्पभाजम् । ठाणा० ३८९ ।
पिंडवाय-पिण्डपातः भिक्षालाभः । आचा० ३२१ । पिण्डपातं आहारम् । आचा० ३३१ । पिण्डपातं-भैक्षम् । आचा० ३३६ । पिण्डपातं-भिक्षाम् । आचा० ३५१ । पिण्ड्यते इति पिण्डो-भिक्षा तस्य पातः-पतनं प्रक्रमात्पात्रेऽस्मिन्निति पिण्डपातं-भिक्षाऽटनम् । उत्त० ६६७ । पिण्डपातः-विशुद्धसमुदानम् । दश० १७९ ।
पिंडपायपडियाए-पात्रे पिण्डस्य प्रवेशः तत्प्रतिज्ञा । बृ० द्वि० ८६ अ ।
पिंडवायपडियाय-पिण्डपातो-भिक्षालाभस्तत्प्रतिज्ञा-अहमत्रभिक्षां लप्स्य इति । आचा० ३२१ । पिण्डस्य पातो भोजनस्य पात्रे गृहस्थान्निपतनं तत्र प्रतिज्ञा-ज्ञानं-बुद्धिः पिण्डपातप्रतिज्ञा । भग० ३७४ ।
पिंडहलिद्दा-अनन्तकायभेदः । भग० ३०० ।
पिंडार-पिण्डारः-भिक्षुकजातिविशेषः । आव० ५६१ । नि० चू० द्वि० ४१ आ ।
पिंडि-पिण्डी-लुम्बी । भग० ३७ ।
पिंडिम-पुद्गलसमूहरूपः । ज० प्र० ३० । पिण्डिमः-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुद्गलसमूहरूपः । औप० ८ । पिण्डिमः-बहलः । प्रश्न० १६२ । घोषवर्जितः शक्कादिशब्दवत् । ठाणा० ४७१ ।

पिंडिमणीहारिमा-पिण्डिमं निहारिमा पुद्गलसमूहरूपः दूरदेशगामिनी च । औप० ८ ।

पिंडिमा-पिण्डिता । राज० ७ ।

पिंडिय-पिण्डितः-मिलितः । ओघ० १०३ । पिण्डितं-स्वकर्मणा संयोजितम् । जीवा० २७३ । पिण्डितः-एकजातिमापन्नः । आव० २८३ ।

पिंडिया-पिण्डिका-पाषाणपिण्डिका । औप० १६ ।

पिंडिसिया-पिण्डैशिका, पिण्डो-भोजनम् । भग० ४८२ ।

पिंडो-पिण्याकपिण्डिका वायसपिण्डिका । बृ० द्वि० १३३ अ । पिण्डः-भिन्नकम् । सूत्र० ३९६ ।

पिंडीभूत-पिण्डीभूतः । आव० २७४ ।

पिंडेसण-आचाराङ्गे दशममध्ययनम् । सम० ४४ । पिण्डैषणा-आचाराङ्गस्य दशममध्ययनम् । उत्त० ६१६ ।

पिंडेसणा-पिण्डैषणा-आचारप्रकल्पे द्वितीयश्रुतस्कन्धस्य प्रथममध्ययनम् । प्रश्न० १४५ । पिण्डैषणा-सप्तपिण्डैषणा । आव० ७७८ । पिण्डैषणा-आचारप्रकल्पस्य दशमो भेदः । आव० ६६० ।

पिंडोलग-पिंडोलकः-परपिण्डप्रार्थकः । सूत्र० ८१ ।

पिंडोलय-पिंडावलगाः-यः स्वयमाहाराभावतः परदत्तोपजीवी । उत्त० २५० । पिण्ड्यते-तत्तद्गृहेभ्य आदाय सङ्घात्यत इति पिण्डः तमवलगति-सेवते पिण्डावलगः । उत्त० २५० ।

पिअ-प्रियः-भूयोऽभिलषणीयः । प्रज्ञा० ४६३ ।

पिअण-पानम् । आचा० ४१ ।

पिअवयस्स-प्रियवयस्यः महाबलमित्रः । आव० ११६ ।

पिइयंग-पितृकाङ्गं, शुक्रविकारबहुलम् । भग० ८८ ।

पिइय-गुल्मविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

पिउं-पिबामि । आव० ९० ।

पिउ-पितुः । आव० ६६६ ।

पिउगा-व्रीहीपक्का भज्जिता तट्टे फुड्डिया तुसावणिणया पिउगा भण्णति । नि० चू० द्वि० १५७ आ ।

पिउगाम-पुरुषमैथुनम् । नि० चू० प्र० २५३ आ ।

पिउच्छा-पितृष्वसा । आव० १७३ ।

पिउडं- । नि० चू० प्र० ६३ अ ।

पिउडाई-सिक्थादि । विशे० ९४५ ।

पिउत्था- । ज्ञाता० २२५ ।

पिउदत्त-पितृदत्तः गाथापतिः । आव० २०५ ।

पिउपज्जयागए-पितुः प्रपितामहः । ज्ञाता० ४९ ।

पिउमंद- । नि० चू० प्र० २२४ आ ।

पिउसिया-पितृष्वसा-पितुर्भगिनी । विपा० ५७ ।

पिउसेणकण्हा-पितृषेणकृष्णा-अन्तकृद्दशानामष्टमवर्गस्य नवममध्ययनम् । अन्त० २५ । निरयावल्याः प्रथमवर्गस्य नवममध्ययनम् । निरय० ३ ।

पिएण-प्रीत्या । आव० ३४७ ।

पिक्कमंसि-पक्वा-संस्कृता मांसीति - गन्धद्रव्यविशेषः पक्वमांसी । प्रश्न० १६२ ।

पिक्खुर-पिक्खुरान्, म्लेच्छविशेषान् । ज० प्र० २२० ।

पिचुगाला-निर्गलितम् । आव० ८५५ ।

पिचुमंद-अरिष्टो वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३१ ।

पिच्च-जनपदसत्यत्वे उदाहरणं, पयः, उदकम् । दश० २०८ ।

पिच्चिय-कुट्टितत्वकम् । ठाणा० ३३९ ।

पिच्छ-पत्रम् । प्रश्न० ८ ।

पिच्छज्झया-पिच्छध्वजा-पिच्छचिह्नोपेता ध्वजा । जीवा० २१५ ।

पिच्छिका-वरट्टा । प्रज्ञा० ५८ ।

पिच्छिदिति-पिच्छइ । बृ० प्र० ४७ आ ।

पिजियं-रूयपडलं पिंजियं । नि० चू० प्र० २२८ आ ।

पिज्ज-प्रेम-प्रियेषु प्रीतिहेतुः । उत्त० २६१ । पेयाः यवागूः । पिण्ड० १६८ । प्रेम्णि निश्चितम्, दशविधमृषाभाषायां पञ्चमी । ठाणा० ४८९ ।

पेज्जे-पाययं स्तन्यम् । पिण्ड० १२२ ।

पिज्जनकः-रथावयवौ । ज० प्र० २८० ।

पिज्जुनिक-घनस्वरभेदः । ठाणा० ६३ ।

पिटक-भाजनविशेषः । पिण्ड० ७८ ।

पिट्टण-पिट्टनं-मुद्गरादिना हननम् । औप० १०७ । ताडनम् । ओघ० १२३ । पिट्टनं-कुट्टनम् । पिण्ड०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६ ।

पिट्टणा-पिट्टना नापि पिट्टयति काष्ठपिट्टनेन स्त्रीवत् । ओघ० १३३ ।

पिट्टति-पिट्टयति । आव० ३४३ ।

पिट्टयगलोट्टभंडण- । नि० चू० तृ० ७१ अ ।

पिट्टापिट्टि- । नि० चू० प्र० २९५ आ ।

पिट्टापिट्टी-केशाकेशी । आव० १०३ ।

पिट्टावणाता-पिट्टणप्रापणा । भग० १८४ ।

पिट्टिणिका-दर्द्दूरोपरि विभागविशेषः, दर्द्दूरोपरि मालप्रवेशमार्गछादनम्, यन्त्ररूपकपाटम् । पिण्ड० १०६ ।

पिट्टेति-पिट्टयति । आव० ७०३ ।

पिट्टेतुं-पिट्टयितुम् । आव० ८१९ ।

पिट्ठंत-अपानद्वारम् । नि० चू० प्र० २५२ आ ।

पिट्ठ-पिष्टं-अच्छटिततन्दुलचूर्णः । आचा० ३४२ । पिष्टः-शालिलोटः । ज्ञाता० ९१ । पृष्ठं-फलकम् । प्रश्न० ८३ । पृष्ठं-पाश्चात्यभागः । ज० प्र० ६७ । पिष्टः-आमतण्डुलक्षोदः । दश० १७० । पृष्ठः-मार्गः । दश० २३५ । चूर्णम् । नि० चू० तृ० ९ अ । पिष्टं-मुद्गादि चूर्णम् । बृ० प्र० २६७ आ । पिष्टं-सूक्ष्मतंदुलादिचूर्णनिष्पन्नम् । बृ० प्र० १४२ अ ।

पिट्ठओ किच्चा-पृष्ठतः कृत्वा-धर्मबन्धनहेतुत्वियमितिमत्या तिरस्कृत्य । उत्त० ९९ । पृष्ठतः-पश्चाद्भागः । ज्ञाता० ६२ ।

पिट्ठकड- । नि० चू० प्र० १९६ आ ।

पिट्ठकरंडग-पृष्ठकरण्डकं, पृष्ठवंशवर्त्युन्नताः अस्थिखण्डाः पंशुलिका । ज० प्र० ११७ ।

पिट्ठकरंडय-पृष्ठकरंडकः-पृष्ठवंशः । जीवा० १५४ । पृष्ठकरण्डकः । तन्दु० ।

पिट्ठग-पिष्टम् । आव० ६२२ ।

पिट्ठपयणगं-पिष्टपचनकं-यत् सुखासन्धानाय पिष्टं पच्यते तत् । जीवा० १०५ ।

पिट्ठपयणगसंठितो-पिष्टपचनकसंस्थितः-आवलिकाबाह्यस्य द्वितीयं संस्थानम् । जीवा० १०४ ।

पिट्ठपोवलिया-पृष्ठपोलिका । आव० ८५५ ।

पिट्ठा-पिष्ठा । भग० ७६६ ।

पिट्ठि-पेषणम् । नि० चू० तृ० ९ अ । पृष्ठः-स्कंधः । ठाणा० ११९ ।

पिट्ठिमंसं-पृष्ठिमांसं-परोक्षदोषकीर्त्तनरूपम् । दश० २३५ ।

पिट्ठिमंसभक्खयं-जं परमुहस्स अवबोलिजइ तं तस्स । दश० चू० १२५ आ ।

पिट्ठिमंसिय-पृष्ठिमांसाशिकः-पराङ्मुखस्य परस्यावर्णवादकारी, दशममसमाधिस्थानम् । सम० ३७ । पृष्ठमांसादः-यः पराङ्मुखस्यावर्णं भणति, दशममसमाधिस्थानम् । आव० ६५३ ।

पिट्ठिमाइया-अनुत्तरोपपातिकदशानां तृतीयवर्गस्य सप्तमाध्ययनम् । अनुत्त० २ ।

पिट्ठी-पृष्ठम् । उत्त० १४३ ।

पिट्ठीचंप-पृष्ठिचम्पानगरी-भगवन्महावीरविहारक्षेत्रम् । आव० २०४ ।

पिट्ठीचंपा-पृष्ठिचम्पा-शालराजधानी । उत्त० ३२१, ३२३, ३२४ ।

पिट्ठुंडि-पिष्टं-विसारितम् । बृ० तृ० ९० आ । पिष्टस्य-शालिलोटस्य डण्डी-पिण्डी पिषोण्डी । ज्ञाता० ९१ ।

पिठर-पिठरं-स्थाल्यादि । पिण्ड० १५५ । पिठरः-पृष्ठिचम्पायां यशोमतीभर्त्ता । आव० २८६ ।

पिठरक-भाजनम् । आचा० ३४४ । पात्रकम् । भग० ६९१ । भाजनम् । आचा० ३२७ ।

पिठरी-स्थाली । सूर्य० २९३ ।

पिडग-पिटकमिव पिटकं-आश्रयः । भग० ७११ । पिटकं वणिज इव सर्वस्वस्थानम् । ठाणा० ५०२ । पिटकं-सर्वस्वभाजनं गणिपिटकम् । सम० १०७ । पिटकं-सर्वस्वाऽऽधारः । उत्त० ५१३ । पिटकं-सर्वस्वं समूहश्च । नंदी० १९३ । पिटकं-सर्वस्वमाधारो वा । सूत्र० २५३ । पिटकं-चन्द्रद्विकसूर्यद्विकरूपम् । जीवा० ३३६ । पिटकं-द्वौ चन्द्रौ द्वौ सूर्यौ च । सूर्य० २७५ । पिटकं-सर्वस्याऽऽधारः । उत्त० ५१३ ।

पिडगर-पिडगृहं-चिक्खल्लपिडेर्निष्पादितम् । व्य० द्वि० १०६ अ ।

पिडिगा-पिटिका । दश० ४४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पिढर-पिढरं-स्थाली । पिण्ड० ८६ । पिढरः-यशोमती-भर्त्ता । उत्त० ३२३ ।
पिणद्ध-पिनद्धं-आविद्धम् । जीवा० २०७ । पिनद्धं-बद्धम् । जं० प्र० १८६ ।
पिण्डं-बाहुल्यम् । ज० प्र० ५३ ।
पिण्डहरिद्रा-वनस्पतिकायिकभेदः । जीवा० २७ ।
पिण्डोलकः-कृपणः । दश० १८४ ।
पिण्ड्यते-प्रचुरीक्रियते । ओघ० १४७ ।
पिण्णात-घयगुलमिस्सो, सत्तुओ । नि० चू० तृ० ३६ आ ।
पिण्णियं-पिन्निका-श्यामकाख्यं गन्धद्रव्यम् । उत्त० १४२ ।
पितदरिसण-नवग्रैवके पञ्चमः प्रस्तरः । ठाणा० ४५३ ।
पितधम्म-आलोचनार्हे दृष्टान्तः । ठाणा० ४८४ ।
पितियंगा-पित्रङ्गानि-प्रायः शुक्रपरिणतिरूपाणीत्यर्थः । ठाणा० १७० ।
पितुसेणकण्हा-पितृसेनकृष्णा-मुक्तावलीतपकारिका । अन्त० ३१ ।
पितृग्रामः-त्रिविधा पुरुषाः । बृ० प्र० १८४ आ ।
पितृपिण्ड-पिण्डनिकरः । आचा० ३२८ ।
पितृवन-श्मशानम् । दश० २६७ ।
पितृवनकाष्ठ-श्मशानकाष्ठः । आचा० २५३ ।
पित्तं-दोषविशेषः । प्रश्न० ८ । पित्त-दोषविशेषः । ज्ञाता० १४७ । मनुष्याणामशुचिस्थानम् । प्रज्ञा० ५० ।
पित्तज्वर-पित्तज्वरः । ज्ञाता० १११ ।
पित्तमुच्छा-पित्तमूर्च्छा-पित्तप्राबल्यात् मनाग् मूर्च्छा । आव० ७७६ ।
पित्तित-चतसृषु वाधिषु द्वितीयः, पीतोद्भवः । ठाणा० २६५ । पैत्तिकः । आव० ४०५ ।
पिन्ना- । सूत्र० २७७ ।
पिन्नाग-पिण्याकः-खलः । सूत्र० ३६६ ।
पिपासा-विषयेच्छा । आव० ५६ ।
पिपीलिका पृथव्याश्रितो जीवभेदः । आचा० ५५ । काष्ठनिश्रिता पिपीलिका । आचा० ५५ । समूर्च्छनु विशेषः । दश० १४१ । त्रीन्द्रियविशेषः । प्रज्ञा० ४२ ।
पिपीलिया-पिपीलिकाः-कीटिकाः । उत्त० ६६५ ।
पिप्परी-पिप्पली-वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३२ । इच्छियाभिहाणी । नि० चू० प्र० १६२ आ ।
पिप्पल-पिप्पलः-ह्रस्वक्षुरः । विपा० ७१ । पिप्पलः खाद्ये वृक्षविशेषः । आव० ८२८ । पिलंक्खूः । नि० चू० प्र० १२४ अ । ठाणा० ३३६ । पिप्पलकः-किञ्चिद्वक्रः क्षुरविशेषः । पिण्ड० १७ । पिप्पलकः-क्षुरकः । ओघ० १३३ ।
पिप्पलग-पिप्पलकः क्षुरप्रः । बृ० द्वि० २५३ आ । नि० चू० द्वि० १८ आ ।
पिप्पलपोतग-पिप्पलपोतकः । आव० ५५५ ।
पिप्पलि-वृक्षविशेषः । भग० ८०३ ।
पिप्पलिया-गुच्छाविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।
पिप्पली-वृक्षविशेषः । आचा० ३४८ । प्रज्ञा० ३६४ ।
पिप्पलीचुण्ण-पिप्पलीचूर्णम् । प्रज्ञा० ३६४ ।
पिप्पलीमूलं-पिप्पलीमूलम् । प्रज्ञा० ३६४ । आचा० ८८ ।
पियंकर-प्रियङ्करः-प्रियं-अनुकूलं करोतीति । उत्त० ३४७ ।
पियंगाला-चतुरिन्द्रियविशेषः । प्रज्ञा० ४२ ।
पियंगु-सुमतिनाथस्य चैत्यवृक्षः । सम० १५२ । प्रियङ्गुः-धनदेवसार्थवाहभार्या । विपा० ८८ । प्रियङ्गुः-संवेगोदाहरणेऽमात्यधर्मघोषभार्या । आव० ७०६ ।
पिय-प्रियं-अनुकूलम् । उत्त० ३४७ । प्रियः-प्रियार्थः । जं० प्र० १४३ । प्रियः-प्रेमकर्त्तः । ज्ञाता० १६५ । प्रियं-प्रेमकारी । सूर्य० २९२ । ज्ञाता० ३७ ।
पियए-अभिनन्दनजिनचैत्यवृक्षः । सम० १५२ ।
पियकारिण-प्रियकारिणः-समाधिविधिस्तवः । बृ० प्र० ११ ।
पियकारिणी-त्रिशलायाः तृतीयं नाम । आचा० ४२२ ।
पियगंधव्व-गीतप्रियः । ज्ञाता० २१३ ।
पियचंदो-प्रियचन्द्रः-कनकपुरनगरनृपतिः । विपा० ६५ ।
पियण-अपकायस्य परिभोगे दृष्टान्तः । ठाणा० ३३६ ।
पियदंसण-प्रियदर्शनः धातकीखण्डद्वीपे महर्द्धिको देवः । जीवा० ३२८ । देवविशेषः । ठाणा० ७६ । श्र० भ० महावीरपुत्री । आचा० ४२२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पियदंसणा–प्रियदर्शना, चन्द्रावतंसकराजपत्नी । आव० ३३६ । प्रियदर्शना, अपरनामाऽनवद्याङ्गी । उत्त० १५३ ।

पियधम्म–प्रियो धर्म्मो यस्य तत्र प्रीतिभावेन सुखेन च प्रतिपत्तेः स प्रियधर्म्मा । ठाणा० २४२ । प्रियधर्मा–धर्म्मप्रियः । प्रश्न० ११६ । प्रियः-इष्टो धर्मोऽस्येति प्रियधर्मा । ओघ० २०२ ।

पियधम्मा–प्रियधर्मा दृढधर्मा । भग० १२७ ।

पियपुच्छय–प्रियपुच्छकः । आव० २२१, २२६ ।

पियमित्त–षष्ठवासुदेवस्य पूर्वभवनाम । सम० १५३ । प्रियमित्रः–पुरुषपुण्डरीकवासुदेवपूर्वभवः । आव० १६३ टी० । प्रियमित्रः–चक्रवर्त्ती । आव० १७७ । प्रियमित्रः–चक्रवर्तिविशेषः । आव० १६७ । पितृमित्रम् । आव० २१६ ।

पियसेण–प्रियसेनः–नपुंसको गणिकापुत्रः । विपा० ५४ ।

पिया–पिता "जनेता चोपनेता च, यस्तु विद्यां प्रयच्छति । अन्नदाता भयत्राता, पञ्चैते पितरः स्मृताः ।" ज्ञाता० २४० । सुदंसणगाथापतेः पत्नी । निरय० ३७ । ज्ञाता० ८८ । पाति–रक्षत्यपत्यमिति पिता । उत्त० ३८ ।

पियादए–आत्मवत् सुखप्रियत्वेन प्रियादया–रक्षणं येषां तानु प्रियदयान्, प्रिय आत्मा येषां तान् प्रियात्मकान् । उत्त० २६५ ।

पियापुत्ताणि–पितापुत्र्यौ । उत्त० १२६ ।

पियायया–आयतः–आत्माऽनाद्यनन्तत्वात् स प्रियो येषां ते तथा । आचा० १२२ ।

पियाल–वृक्षविशेषः । भग० ८०३ । प्रियालं–प्रियालफलम् । दश० १८६ । प्रियालः–वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३१ ।

पिरलो–तृणरूपवाद्यविशेषः । जीवा० २६६ । जं० प्र० १०१ ।

पिरिपिरिता–तस्स मुहत्थाणे खरमुहाकारं कट्ठमयं मुहं कज्जति । नि० चू० तृ० ६२ अ ।

पिरिपिरिया–कोलियकपुटावनद्धा वंशादिनलिका । आचा० ४१२ ।

पिलंखु–पिप्परी । आचा० ३४८ ।

पिलंखुरुक्खे–शीतलजिनचैत्यवृक्षः । सम० १५२ ।

पिलंखुमंथु–पिप्परीमंथुः । आचा० ३४८ ।

पिलक्खुरुक्ख–वृक्षविशेषः । भग० ८०३ ।

पिलक्खू–पिप्पलभेदो । नि० चू० प्र० १६२ आ ।

पिलगा– । नि० चू० प्र० १८६ अ ।

पिलुंखु–खाद्यवृक्षविशेषः । आव० ८२८ ।

पिलुक्ख–प्लक्षः–वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

पिल्लओ–प्रेरकः । बृ० प्र० ३१० आ ।

पिल्लक–निर्णकः । व्य० प्र० १८० अ ।

पिल्लग–अपत्यम् । उत्त० १३५ ।

पिल्लण–प्रेरण, आरूढस्य पुंसोऽभिमुखदर्शनधावनादिना संज्ञाकरणपूर्वकं प्रवर्त्तनम् । जं० प्र० २३७ ।

पिल्लति–प्रेरयति निष्काशयति । उत्त० १३६ ।

पिल्लियय–प्रेरितः । आव० २२४ ।

पिल्लुविकय–पीतः, पूटकृतः । आव० ६६३ ।

पिवास–पिपासा । आव० २३७ ।

पिवासा–पिपासा–प्राप्तेऽप्यर्थेऽतृप्तिः । भग० ८६ । पिपासा । आव० ७११ । पिपासा–वध्यं प्रतिस्नेहरूपा । प्रश्न० ५ । पिपासा–अप्राप्तार्थाभिलाषाकाङ्क्षा । औप० ४७ । पिपासा–द्वितीयः परीषहः । आव० ६५६ ।

पिवीलिया–पिपीलिका–कीटिका, सामायिकलाभे दृष्टान्तः । आव० ७५ ।

पिवरिया–विपर्ययकरणम् । नि० चू० प्र० ८ अ ।

पिसल्लग–पिसल्लकः–पिशाचकः । प्रश्न० १६२ । पिसल्लयः–पिशाचः । प्रश्न० २५ ।

पिसाचा–व्यन्तरभेदविशेषः । प्रज्ञा० ६६ ।

पिसाची–पिशाची–ग्रथिला । बृ० तृ० २३३ अ ।

पिसाय–पिशाचः–ग्रथिलः । बृ० प्र० ५६ अ । पिशाचः । आव० ४२१ ।

पिसिय–पिसितं–मांसम् । आव० ८५४ ।

पिसुअ–पिशुकः–चञ्चटः । जं० प्र १८४ ।

पिसुग–पिशुकः–चञ्चटादिः । जीवा० २८२ ।

पिसुण–पिशुनं–परदोषाविष्करणरूपम् । प्रश्न० ३६ । पिशुनं–परोक्षस्य परस्य दूषणाविष्करणरूपम् । प्रश्न० ११६ । पिशुनः–पृष्ठिमांसखादकः । दश० २५१ । पिशुनः–छेदभेदकर्ता । दश० २५४ । पिशुनः–खलः । प्रश्न०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४१ । पिशुनः–परदोषोद्घाटकः । उत्त० २४५ । पिशुनः–सूचकः । उत्त० ५४६ । पीतिं सुण्णं करेतीति । दश० चू० १३८ । पीतिं सुण्णं करेति, प्रीतिं विच्छेदं करोति । नि० चू० तृ० ८० आ ।

पिसुणग–पिशुनकम् । आव० ३८५ ।

पिसुया–त्रीन्द्रियजन्तुविशेषः । जीवा० ३२ । त्रीन्द्रियविशेषः । प्रज्ञा० ४२ ।

पिहज्जण–पृथग्जनः–सामान्यजनः । ठाणा० १२२ ।

पिहड–यत्र प्रभूतजनयोग्यं धान्यं पच्यते । जीवा० १०५ ।

पिहडय–पिठरकं–स्थालीः । उपा० ४० ।

पिहण–पिधानं–स्थगनम् । आव० ८३८ ।

पिहाइ–स्पृहयति अभिलषति पिधत्ते वा, अथवा अक्षिणी पिधत्ते–निमीलयति । भग० १७५ ।

पिहिआसव–पिहिताश्रवः–स्थगितप्राणातिपाताद्याश्रवः । दश० १५७ ।

पिहिउब्भिन्नं–आदौ पिहितं पश्चादुद्भिन्नं पिहितोद्भिन्नम् । पिण्ड० १०५ ।

पिहित–घट्टितम् । ओघ० १६६ ।

पिहितकपाट–अर्गलितकपाटम् । ओघ० १६६ ।

पिहितेन्द्रिय–निरुद्धहृषीकः । प्रश्न० १६० ।

पिहिपिहीभूत–पृथक्पृथग्भूतः । आव० २०८ ।

पिहिमोदणं– । नि० चू० प्र० ३२८ आ ।

पिहिय–पिहितः स्थगितः कम्बलाद्यावृतशरीरः । आचा० ३०९ । पिहितः–स्थगितः । आचा० ३०३ । पिहितं–सचित्तेन स्थगितम् चतुर्थं एषणादोषः । पिण्ड० १४७ । पिहितं–स्थगितम् । भग० २७४ । स्थगितः । ठाणा० १२४ ।

पिहियच्च–पिहितार्चः–पिहिता–स्थगिताऽर्चा–क्रोधज्वाला येन स तथा, यदि वा पिहितार्चो गुप्ततनुः । आचा० ३०४ ।

पिहिस्सामि–पिधास्यामि–स्थगयिष्यामि । आचा० ३०१ ।

पिहुंड-पिहुण्डं–नगरविशेषः । उत्त० ४८२ ।

पिहुखज्ज–पृथुकभक्ष्यं पृथुकभक्षणयोग्यम् । दश० २१६ ।

पिहुग–पृथुकीकृतः । आव० ८५५ ।

पिहुगा–पृथुका–ये व्रीहयः परिपक्वाः सन्तो भ्राष्ट्रादौ भृज्यन्ते ततः स्फुटिता अपनीतत्वचः पृथुका । बृ० प्र० १७६ आ । जवगोहुमादीणं । दश० चू० ११२ अ ।

पिहुज्जण–पृथग्जनः–सामान्यलोकः । दश० २७६ ।

पिहुण–बर्हः । आचा० ३४५ । पेहुणं–मयूरादिपिच्छम् । दश० १५४ ।

पिहुणहत्थ–पेहुणहस्तः–मयूरादिपिच्छसमूहः । दश० १५४ । बर्हकलापः । आचा० ३४५ ।

पिहुभिन्न–पिहितोद्भिन्नम् । नि० चू० तृ० ५६ आ ।

पिहुय–पृथुकं शाल्यादिलाजान् । आचा० ३४२ । पृथुकं–भुग्नशाल्याद्यपगततुषम् । आचा० ३५७ । पृथुकम् । आचा० ३२३ ।

पिहुल-पृथुलं–विस्तीर्णम् । ठाणा० २५ ।

पिहुला–पृथुला दक्षिणोत्तरतः । जीवा० २७५ ।

पिहेंति–पिधन्तः–स्थगयन्तः । ज्ञाता० १६६ ।

पिहेइ–पिदधाति–स्थगयति अपनयतीति । उत्त० ५८० ।

पीइ–प्रीतिः–प्रीणनं–आप्यायनम् । भग० ३१७ । चित्तोल्लासः । जं० प्र० ५२८ । जीवितम् । आव० ६६० । प्रीतिः–प्रियत्वं न कार्यवशादित्यर्थः । ज्ञाता० ३५ ।

पीइगम प्रीतिगमः षष्ठदेवलोके विमानम् । औप० ५२ ।

पीइदाण–प्रीतिदानं–सन्तोषदानं प्राभृतरूपम् । ज० प्र० २०४ ।

पीइमणे–प्रीतिमनाः–प्रीतिः प्रीणनमाप्यायनं मनसि यस्य सः । भग० ११६ । प्रीतिर्मनसि यस्यासौ प्रीतिमनाः । जीवा० २४३ ।

पीइवद्धण–प्रीतिवर्द्धनः–द्वादशममासनाम । ज०प्र० ४६० ।

पीई–प्रीतिः–साम्मत्यलक्षणा । प्रज्ञा० ५६६ ।

पीईसुण–पिशुनी–प्रीतिं शून्यां करोतीति पिशुनी, नैरुक्तीशब्दनिष्पतिः । बृ० प्र० १२८ आ ।

पीट्ठं–पिष्टम् । आव० ८५५ ।

पीठ–पाषाणभेदः । प्रज्ञा० २७ । आचा० ३७६ ।

पीठमद्द–पीठमर्दः–अस्थाने आसनासन्नसेवकः, वयस्यः । औप० १४ ।

पीठमद्दा–पीठमर्दाः–अस्थाने आसन्नप्रत्यासन्नसेवका वयस्याः । राज० १२१ ।

पीठरकं–भाण्डम् । प्रश्न० १२७ ।

पीठिका–ग्रन्थभूमिका । आव० ३८२ । उपवेशनादिस्थान-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विशेषः । (?) ।
पीठिकागीत-पीठिकामात्रम् । बृ० प्र० ५६ अ ।
पीठी-ऊर्ध्वम् । ओघ० १७८ ।
पीडय-पीडकः । ओघ० २०६ ।
पीडा-विणासो । दश० चू० ७५ ।
पीढं-पीठम् । प्रज्ञा० ६०६ । पीठं-आसनविशेषः । आव० ६५४ । पीठं-गोमयादिमयासनम् । पिण्ड० १०६ । आचा० ३७८ । पीठं-आसनम् । भग० १३६ । पीठं-आसनविशेषः । ज० प्र० १६४ । पीठः-वज्रसेनधारिण्योः पुत्रः । आव० ११७ । पीठ-पट्टादिकम् । ठाणा० ३१२ । पीठ-आसनम् । उत्त० ४३४ । आसनम् । ज्ञाता० १०७ । पीठकम् । आचा० ३४४ ।
पीढग-तृषिका वा काष्ठमयं वा पीठकम् । बृ० द्वि० २११ अ । नि० चू० प्र० २०८ अ । पलालपीढगादि । दश० चू० ६६ अ । पीठकं-काष्ठमयं छगणमयं वासनम् । बृ० द्वि० २५३ अ ।
पीढगा-पीठिका-चयिका । पिण्ड० १०७ ।
पीढमद्द-पीठमर्दः-आस्थाने आसनासीनसेवकः वयस्य इत्यर्थः । भग० ३१८ ।
पीढमद्दण-पीठमर्दः-आस्थाने आसनासन्नसेवकः-वयस्यः वेश्याचार्यः । ज० प्र० १९० ।
पीढय-पीठकं काष्ठपीठादि । दश० १७२ । ण्हाणपीढयं नाणपीढाइ । दश० चू० ८० आ ।
पीढसप्पि-जन्तुगर्भदोषात् पीठसर्प्पित्वम् । आचा० २३३ ।
पीढाणित-पीठानीकं-अश्वसैन्यम् । ठाणा० ३०३, ४०७ ।
पीढि-पीढः । ओघ० १०६ ।
पीढियावाहग-पीठिकावाहकः । आव० २११ ।
पीण-पीनः-स्थूलः । प्रश्न० १५२ । पीनं-पीवरम् । (?) ।
पीणणिल्ल-प्रीणनीयं-रसादिधातुसमताकारि । ठाणा० ३७५ । रसरुधिरादिधातुसमताकारी । औप० ६५ ।
पीणति-पीनयति-पीनमात्मानं करोति-स्थूलो भवति । जीव० २४७ ।
पीणाइय-पीनाया-मङ्डा तया निर्वृत्तं पैनायिकम् । ज्ञाता० ६३ ।
पीणिए-प्रीणितः-तर्प्पितः । उत्त० २७३ ।
पीणित-प्रीणितः-उपचयं नीतो यो योगः । सूर्य० २३३ ।
पीणिय-प्रीणितः । दश० २१७ ।
पीणियसरीर-पीनशरीरः । उत्त० २७२ ।
पीतकणवीर-पीतकणवीरः । प्रज्ञा० ३६१ ।
पीतबन्धुजीव-पीतबन्धुजीवः । प्रज्ञा० ३६१ ।
पीतासोग-पीताशोकः । प्रज्ञा० ३६१ ।
पीतिदाणं-स्वप्नपाठके दानम् । ज्ञाता० २१ ।
पीतिबद्धणे-प्रीतिवर्द्धनः-लोकोत्तरे चतुर्थमासनाम । सूर्य० १५३ ।
पीयवाई-केनचिदप्रियमुक्तोऽपि प्रियमेव वदतीत्येवंशीलः प्रीयावादी आचार्याभिप्रायानुवर्त्तितयैव वक्ता । उत्त० १४७ ।
पीरिपीरिया-पीरिपीरिका-कोलिकपटावनद्धमुखवाद्यविशेषरूपम् । राज० ४६ ।
पीलग-पिलको रूढिगम्यः । ज० प्र० १७२ ।
पीलण-पीडनं-इक्ष्वादेरिव । आव० २७३ ।
पीलिम-पीडावत्-संवेष्टितवस्त्रभङ्गावलीरूपम् । दश० ८६ । पीडावत्-संवेष्टितवस्त्रभङ्गावलीरूपम् । दश० ८७ ।
पीलिय-पीडितः जलार्द्रवस्त्रे निष्पीड्यमाने । ठाणा० ३३६ । पीलितः-अचित्तस्य तृतीयो भेदः-पोत्तचम्माई । ओघ० १३३ ।
पीलियग-पीडितको यन्त्रैरिक्षुवद् । औप० ८७ ।
पीलु-वृक्षविशेषः । भग० ८०३ । क्षीरं-पयः । पिण्ड० ५० । पीलुः-वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३१ ।
पील्लू-पीलु । आव० ६२२ ।
पीवर-पीवरः-महान् । प्रश्न० १५२ । स्थूलः । ज्ञाता० १६ । पीवरः-स्थूरः । ज्ञाता० १६० ।
पीवरगब्भा-पीवरगर्भा-आसन्नप्रसवकाला । ओघ० ७४ ।
पीवरपउट्ठ-पीवरप्रकोष्ठः-अकृशकलाचिकः । जीव० २७१ ।
पीसंतिय-पेषयन्तिका-गोधूमादीनां घरट्टादिना पेषणकारिकाम् । ज्ञाता० ११७ ।
पीसे-पेषयन्ती । ओघ० १६५ ।
पीहग-पीहकः-हारः । बृ० प्र० ३७ अ ।
पीहगपा- । निरया० ३४ (?) ।
पीहति-स्पृहयति-अनावाप्तमवाप्तुमिच्छति । औप० २४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पीहय-स्पृहयं-पृथुकम् । आव० ६३ । बृ० प्र० २६ आ ।
पीहे-स्थगयेत् । सूत्र० ६५ ।
पीहेज्ज-स्पृहयेद्-अभिलषेद् । ठाणा० १४५ ।
पीहेति- । ज्ञाता० १६६ ।
पुंख-पृङ्खः-पृष्ठभागः । ज० प्र० २०१ । द्वादशसागरोपमस्थितिकदेवविमानम् । सम० २२ ।
पुंछ-प्रोञ्छ-उन्मीलय । बृ० द्वि० १६७ अ ।
पुंछडा-पुञ्छम् । बृ० द्वि० १४६ अ ।
पुंछणं-रजोहरणम् । बृ० द्वि० ८६ अ । प्रोञ्छनं-घर्षणम् । बृ० प्र० २७० आ ।
पुंछणी-पुञ्छनी-निपीडतरच्छादनहेतुश्लक्ष्णतरतृणविशेषस्थानीया । ज० प्र० २३ । जीवा० १८० ।
पुंछन-आसनम् । उत्त० ४२३ ।
पुंछे-वस्त्रतृणादिभिः पुञ्छयेत् । दश० २२८ ।
पुंज-पुञ्जः-राशिः । ओघ० १६३ । पुञ्जः । विशे० ४२६ । निकरः । ज्ञाता० २२६ । पुञ्जः । आव० ४२२ ।
पुंड-पुण्ड्रः-जनपदविशेषः । अन्त० १६ । पुण्ड्रः-पुण्ड्रदेशः, यत्र विशिष्टानि हरितानि शाड्वलानि भवन्ति । जीवा० ३५५ । द्वादशसागरोपमस्थितिकदेवविमानम् । सम० २२ । पोण्डं-पुष्पम् । उत्त० १४३ । वैताढ्यगिरिप्रदेशे जनपदः । ठाणा० ४५८ । पुण्ड्रः-वरुणस्य पुत्रस्थानीयो देवः । भग० १६६ ।
पुंडपइया-पुण्डानि-धवलानि पदानि पादा येषां ते तथा, ते एव पुण्डपदिकाः । ज्ञाता० २३० ।
पुंडरंगिणी-पुण्डरीकिणी-पुष्करावतीविजये नगरम् । आव० ११७ ।
पुंडरिगिणि-पुण्डरीकिणी-उत्तररूचकवास्तव्या दिक्कुमारी । आव० १२२ । पुण्डरीकरायनगरीविशेषः । आव० २८८ । पुण्डरीकिणी-पुष्कलावतीविजये नगरी । उत्त० ३२६ । जम्बूपूर्वविदेहे पुष्कलावतिविजये नगरी । ज्ञाता० २४२ ।
पुंडरीअ-अष्टादशसागरोपमस्थितिकदेवविमानम् । सम० ३५ ।
पुंडरीअनायं-पुण्डरीकज्ञातम् । उत्त० ३२१ ।
पुंडरीआ-पुण्डरीका-उत्तररूचकवास्तव्या तृतीया दिक्कुमारी महत्तरिका । ज० प्र० ३६१ ।
पुंडरीए-पुण्डरीकं षष्ठाङ्गे एकोनविंशतितमं ज्ञातम् । उत्त० ६१४ ।
पुंडरीए पव्वए-आदिदेवगणधरनिर्वाणित उपलक्षितः पर्वतः, स तत्र प्रथमनिर्वृतत्वात्पुण्डरीकपर्वतः-शत्रुञ्जयः । ज्ञाता० १०८ ।
पुंडरीओ-स्तोककालेनोर्ध्वगामी । मर० ।
पुंडरीक-ऋषभस्वामिनो ज्येष्ठगणधरः । व्य० द्वि० १०६ अ ।
पुंडरीकिणी-महाविदेहे नगरी । विपा० ६४ ।
पुंडरीगिणी-पुण्डरीकिणी-पश्चिमदिग्भाव्यञ्जनपर्वतस्योत्तरस्यां पुष्करिणी । जीवा० ३६४ । पुण्डरीकिणी-राजधानी नाम । ज० प्र० ३४७ ।
पुंडरीय-पुण्डरीकं सितपद्मम् । जीवा० २७३ । पुण्डरीक-सूत्रकृताङ्गे सप्तदशममध्ययनम् । ३२६ । पौण्डरीकः-पुण्डरीक इव प्रधानः-तिर्यक्षु मनुष्येषु देवेषु च प्रधानानामुपमा । सूत्र० २६७ । पुण्डरीकः-क्षीरवरद्वीपे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३५३ । पुण्डरीकं-सूत्रकृताङ्गे द्वितीयश्रुतस्कन्धे प्रथमाध्ययनम् । आव० ६५८ । पुण्डरीकं-सूत्रकृताङ्गस्य सप्तदशममध्ययनम् । उत्त० ६१६ । पुण्डरीकं-सिताम्बुजम् । प्रज्ञा० ३६३ । पुण्डरीकं-प्रधानम् । उत्त० ४८४ । महापद्मपद्मावत्योः पुत्रः । ज्ञाता० २४३ । पुण्डरीकः-महाराजपुत्रः, सदनुष्ठानपरायणतयाऽस्य शोभनत्वे उपमा । सूत्र० २६८ । पुण्डरीकः-अलोभोदाहरणे साकेतनगराधिपतिः । आव० ७०१ । पुण्डरीकः-महापद्मराजस्य ज्येष्ठसुतः । उत्त० ३२६ । पुण्डरीकः-पुण्डरिकिण्यां राजा । आव० २८८ । पुण्डरीकं-सितपद्मम् । ज्ञाता० ६६ । पुण्डरीकः-ज्ञाताया मेकोनविंशतितममध्ययनम् । आव० ६५३ । पुण्डरीकं-सितम् । भग० ५२० । पौण्डरीकः-शिखरीणः पर्वते ह्रदः । ठाणा० ७३ । सूत्रकृताङ्गस्य सप्तदशममध्ययनम् । सम० ४२ । पुण्डरीकं-सहस्रपत्रम् । भग० ७ ।
पुंडरीयगुम्मं-अष्टादशसागरोपमस्थितकदेवविमानम् । सम० ३५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुंडरीयणाय–पुण्डरीकज्ञातम्, ज्ञातायां प्रथमश्रुतस्कंधे एकोनविंशतितममध्ययनम् । ज्ञाता० ६ ।
पुंसयति–रुक्षयति । बृ० प्र० ७१ आ ।
पुक्कलीपुष्प–कूष्माण्डिकाकुसुमम् । जं० प्र० ३४ ।
पु-पूः शरीरम् । आव० २७७ ।
पुक्कंत–पूत्कुर्वन्–पूत्कारं कुर्वाणः । प्रश्न० ४६ ।
पुक्करिमाणे– । ज्ञाता० २४० ।
पुक्खर–पुष्करं–चर्मपुटम् । राज० ३१ । पुष्करं–चर्मपुटकम् ज० प्र० ३१ । पुष्करं–चर्मपुटकम् । जीवा० १८६ ।
पुक्खरकण्णिया–पुष्करकर्णिका–पद्ममध्यभागः । ठाणा० १४५ । पुष्करकर्णिका–पद्मबीजकोशः । जीवा० १७८ । पुष्करकर्णिका–पद्मबीजकोशः–कमलमध्यभागः । ज० प्र० १६ ।
पुक्खरणी–पुष्करिणी–तडागरूपा । सूत्र० २८६ । चतुरस्रा वापी पुस्करणी । ठाणा० ८६ । पुष्करिणी–वृत्ता पुष्करवती वा । औप० ८ । पुष्करिणी–वृत्ताकारा वापी, पुष्कराणी विद्यन्ते यस्यां सा वा । जीवा० १६७ । चाउरस्सा पुक्खरणी । नि० चू० द्वि० ७० आ ।
पुक्खरवर–पुष्करवरः–पुष्करवरोपलक्षितो द्वीपः । जीवा० ३३३ । पुष्कराणि–पद्मानि तैर्वरः–प्रधानः पुष्करवरः द्वितीयो द्वीपः । आव० ७८८ । पुष्करवरः–कालोदधिसमुद्रानन्तरो द्वीपः । प्रज्ञा० ३०७ ।
पुक्खरवरदीव–पुष्करवरद्वीपः–पद्मवरोपलक्षितो द्वीपः । अनु० ६० ।
पुक्खरवरसमुद्द–पुष्करवरसमुद्रः–पुष्करवरद्वीपानन्तरं समुद्रः । प्रज्ञा० ३०७ ।
पुक्खरसंवट्टग–पुष्कलसंवर्त्तकः–उदकरसो प्रथमो महामेघः। पुष्कलं–प्रचुरमपि सर्वमशुभानुभावं भूमिरूक्षतादाहादिकं प्रशस्तोदकेन संवर्तयति–नाशयति । अनु० १६० ।
पुक्खरसारिया–लिपिविशेषः । प्रज्ञा० ५६ ।
पुक्खरिणी–पुष्करिणी वृत्ता वाप्येव जलाशया पुष्करवती वा । अनु० १५६ । पुष्करणी–पुष्करवती वर्तुला । प्रश्न० १६० । पुष्करिणी वर्तुलः । औप० ६३ । पुष्करिणी–पुष्कराण्यस्यां विद्यन्त इति । जीवा० १२३ । पुष्करिणी–वृत्ता वापी, पुष्कराणि विद्यन्ते यस्यां सा वा । जीवा० १८८ । वापी वृत्ता । ज० प्र० ३० । पुष्करिणी–वृत्ताकारा । प्रज्ञा० २६७ । वृत्ताकारा । ज० प्र० ४१ । वृत्ताकारा वापी–पुष्करिणी, यदि वा पुष्कराणि–पद्मानि विद्यन्ते यासु ता पुष्करिण्यः । प्रज्ञा० ७२ । पुष्करिणी वृत्तः पुष्करवान् वा जलाशयविशेषः । भग० २३८ ।
पुक्खरोद–पुष्करोदः–समुद्रविशेषः । ज्ञाता० १२८ । पुष्करोदः–पुष्करवरद्वीपपरिक्षेपतोऽपि शुद्धोदकरसास्वादः समुद्रविशेषः । अनु० ६० ।
पुक्खल–पद्मकेसरम् । आचा० ३४८ । पुष्कलं–प्राचुर्यम् । सूत्र० २८६ । पुष्कलं–सम्पूर्णम् । आव० ७८८ । पुष्कलं सर्वं अशुभानुभावरूपं भरतभूरौक्ष्यदाहादिकम् । ज० प्र० १७३ ।
पुक्खलविजय–पुष्कलावर्तः सप्तमो विजयः । ज० प्र० ३४६ ।
पुक्खलविभंग–पद्मकन्दम् । आचा० ३४८ ।
पुक्खलसंवट्टओ–पुष्करसंवर्त्तकः–जम्बूद्वीपप्रमाणो महामेघः । आ० १० (?) ।
पुक्खलसंवट्टग–पुष्कलसंवर्त्तकः–महामेघः । भग० २३२ ।
पुक्खलसंवट्टत–एकया वृष्ट्या वर्षसहस्रं वासयितुं समर्थो मेघः । ठाणा० २७० ।
पुक्खलसंवट्टय–पुष्कलं–सर्वं अशुभानुभावरूपं भरतभूरौक्ष्यदाहादिकं प्रशस्तस्वोदकेन संवर्तयति–नाशयतीति पुष्कलसंवर्त्तकः । ज० प्र० १७३ ।
पुक्खला–महाविदेहे विजयः । ठाणा० ८० ।
पुक्खलावइविजओ–पुष्कलावतीविजयः । आव० ११६, ११७ ।
पुक्खलावई–जम्बूपूर्वविदेहे विजयः । ज्ञाता० २४२ । महाविदेहे विजयः । ठाणा० ८० ।
पुक्खलावईकूड–पुष्करावतीकूटं एकशैलवक्षस्कारकूटनाम । ज० प्र० ३४७ ।
पुक्खलावतीविजओ–पुष्कलावतीविजयः–जम्बूमहाविदेहे विजयः । उत्त० ३२६ ।
पुक्खलावत्तकूड–पुष्करावर्त्तकूटं– एकशैलवक्षस्कारकूटनाम । ज० प्र० ३४७ ।
पुग्गल–पुद्गलं लेष्ट्वादिकम् । जीवा० ३७५ । पुद्गलं–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उष्णोदनादि । दश० १५४ । पुद्गलः-आत्मा । प्रधानः । सूत्र० २३७ । पुद्गलं-मांसम् । दश० १७६ ।

पुग्गलपरियट्टा-पुद्गलैः-पुद्गलद्रव्यैः सह परिवर्त्ताः-परमाणूनां मिलनानि पुद्गलपरिवर्त्ताः । भग० ५६७ ।

पुच्छ-बालधौ । उत्त० ५५१ । मेहनम् । औप० ८७ ।

पुच्छण-प्रोच्छनं-दारुदण्डकम् । बृ० द्वि० १०८ आ ।

पुच्छणा-पृच्छना-इङ्गिणिकादिलक्षणा । आव० १२९ । पृच्छना-विस्मृतसूत्रार्थप्रश्नः । प्रश्न० १२६ । गृहीतवाचनेनापि संशयाद्युत्पत्तौ पुनः प्रष्टव्यमिति, पूर्वाधीतस्य सूत्रादेः शङ्कितादौ प्रश्नः, प्रच्छना । ठाणा० ३४६ । प्रच्छना-गुरुं प्रति प्रश्नलक्षणा । अनु० १६ । पृच्छना-सूत्रस्य अर्थस्य वा प्रच्छना । दश० ३२ ।

पुच्छणाए- । ज्ञाता० ६१ ।

पुच्छणो-पृच्छनी-अविज्ञातस्य संदिग्धस्य वाऽर्थस्य ज्ञानार्थं तदभियुक्तप्रेरणरूपा । भग० ५०० । पृच्छनी-अविज्ञातस्य सन्दिग्धस्य कस्यचिदर्थस्य परिज्ञानाय तद्विदः पार्श्वे चोदना, असत्यामृषाभाषाभेदः । प्रज्ञा० २५६ । प्रच्छनी, असत्यामृषाभाषाभेदः । दश० २१० ।

पुच्छा-अपुणरुत्तं जाव बिओ कड्ढउं पुच्छति सा पुच्छा तिहिं सिलोगेहिं एगा पुच्छा, जत्थ पगतं समप्पति थोवं बहुं वा सा एगा पुच्छा जत्तियं आयरिएण तरइ, उच्चारित घेत्तुं सा एगा पुच्छा । नि० चू० तृ० ६७ आ । पुव्वदिट्ठे पुच्छा, नामेण वा गोत्तेण वा दिसाए वा पुच्छा । नि० चू० प्र० १६६ अ । आहारणतद्देशे तृतीयभेदः । ठाणा० २५३ । पृच्छा । आव० ३८२ । पृच्छा-जिज्ञासोः प्रश्नः । व्याख्याने एकादशमद्वारम् । उत्त० ७३ । पृच्छा-प्रश्नः । दश० ४६ ।

पुच्छियट्ठं-पांशूयिकार्थप्रश्नकरणात् । भग० १३५ । संशये सति परस्परतः । भग० ५४२ । संशये सति पुच्छियट्ठं । ज्ञाता० १०६ ।

पुच्छीअ-पृष्टवान् । आव० १५८ ।

पुच्छे- । भग० ११४ ।

पुच्छेज्ज-पृच्छेत्-अर्थयेत् । ओघ० १३५ ।

पुज्ज-पूज्यः-पूजार्हः-कल्याणभाग् । दश० २५२ ।

पुज्जसत्थ-पूज्य-सकलजनश्लाघादिना पूजार्हं शास्त्रमस्येति-पूज्यशास्त्रः । उत्त० ६६ । पूज्याः शास्ता गुरुरस्येति पूज्यशास्त्रकः । उत्त० ६६ । पूज्यश्चासौ शास्तश्चेति-पूज्यशास्तः । उत्त० ६६ ।

पुञ्छणा-पुञ्छनि-निबिडतराच्छादनहेतुश्लक्ष्णतरतृणविशेषस्थानीया । राज० ६२ ।

पुट-काष्ठादिगन्धद्रव्यम् । जीवा० १६२ ।

पुटकः- । दश० ११८ ।

पुटग-पुटकः खल्लकम् । बृ० द्वि० १०१ अ ।

पुटभेदः- । आचा० ५९ ।

पुट्ट-उदरम् । बृ० प्र० २३५ आ ।

पुट्टत्थर-नि० चू० प्र० ३१८ आ ।

पुट्टिल-चतुर्थो वासुदेवः । ठाणा० ४५७ ।

पुट्टिला- । ज्ञाता० २०४ ।

पुट्ठं-स्पृष्टं-बद्धस्पृष्टनिकाचितम् । सूत्र० ७१ । पृष्टं-उपरितलम् । सूत्र० १२६ । आत्मप्रदेशस्पर्शवति । भग० २१ । गाढतरबन्धेन पोषितम् । भग० ६० । स्पृष्टं-अग्निसम्पर्कानन्तरं सकृत् घनकुट्टितः सूचीकलापवत् । प्रज्ञा० ४०२ । अतीव स्पर्शेन स्पृष्टम् । प्रज्ञा० ४५६ । स्पृष्टं-आत्मप्रदेशस्पर्शविषयम् । जीवा० २० । कथितत्वादिना अकिञ्चित्करः । व्य० द्वि० ३०६ अ । स्पृष्टं-स्पर्शमात्रोपेतम् । जीवा० १३ । स्पृष्टः-इन्द्रियसम्बद्धः । ठाणा० २५३ । स्पृष्टम् । भग० १३१ । पृष्ठं-चक्रपरिधिरूपम्, यल्लोके पूंठी इति प्रसिद्धम् । ज० प्र० २११ । स्पृष्टः-अभिद्रुतः । उत्त० ८६ । स्पृष्टः-व्याप्तः, पुष्ट इव पुष्टः । उत्त० ११६ । स्पृष्टः बाधितः । उत्त० १४० । स्पृष्टं-प्राप्तम् । ज० प्र० ६७ । स्पृष्टः-विदारितः । औप० ८८ । स्पृष्टः-स्पृष्टवान् । जीवा० २६१ । स्पृष्टः-व्याप्तः । प्रज्ञा० ६०१ । स्पृष्टः-यथाऽबद्धः । आव० ३२१ । स्पृष्टं-तनौ रेणुवत् । भग० ५६६ । पुष्टः-उपचितः । ज्ञाता० ६१ । पृष्ठः-पुष्टः । उत्त० १२० । प्रोञ्छितं-सुधृष्टम् । बृ० प्र० २७१ अ । स्पृश्यत इति स्पृष्टस्तं स्पृष्टं तनौ रेणुवदालिङ्गितमात्रमेवेत्यर्थम् । विशे० १६६ । फुडं-जीवप्रदेशैः स्पर्शनात् स्पृष्टम् । भग० १८४ । आत्मप्रदेशविषयम् । प्रज्ञा० ५०२ ।

पुट्ठतो-पृष्ठतः । ज्ञाता० १६० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुट्ठपविट्ठ-श्रोत्रादीनि चक्षुरहितानि स्पृष्टमर्थं प्रविष्टम् । भग० १३१ ।

पुट्ठलाभित-पृष्टस्यैव साधो ! दीयते ते ? इत्येवं यो लाभस्तेन चरतीति प्राग्वत् पृष्टलाभिकः । ठाणा० २९८ ।

पुट्ठलाभिय-पृष्ठलाभिकः-यः कल्पते इदं इदं च भवते साधो ! इत्येवं प्रश्नपूर्वकमेव लब्धं गृह्णाति यः सः । प्रश्न० १०६ ।

पुट्ठवंसा-पृष्ठवंशा मध्यवलकाः । ज० प्र० २३ ।

पुट्ठवई-प्रौष्ठपदी । सूर्य० १२७ ।

पुट्ठसेणियापरिकम्मे-दृष्टिवादे परिकर्मे तृतीयो भेदः । सम० १२८ ।

पुट्ठा-स्पृष्टा-छुप्तवती । ज० प्र० ६८ । स्फुटा:-स्फुटीकृता शोधिता । ज्ञाता० ११९ ।

पुट्ठापुट्ठ-दृष्टिवादे सूत्रे चतुर्दशमो भेदः । सम० १२८ ।

पुट्ठेया-पुष्टिः-पृच्छा ततो जाता पृष्टिजा-प्रश्नजनितो व्यापारः, अथवा पृष्टं-प्रश्नः वस्तु व तदस्ति कारणत्वेन यस्यां सा पृष्टिका, अथवा स्पृष्टिः-स्पर्शनं ततो जाता स्पृष्टिजा, तथैव स्पृष्टिकाऽपीति । ठाणा० ४२ । जीवादीन् रागादिना पृच्छतः स्पर्शतो वा । ठाणा० ३१७ । स्पृष्टिजा-स्पर्शनक्रिया, विंशतिक्रियामध्ये सप्तमी । आव० ६१२ । स्पर्शिकी-स्पर्शनक्रिया । आव० ६१३ ।

पुट्ठिल-अनुत्तरोपपातिकदशानां तृतीयवर्गस्य नवममध्ययनम् । अनुत्त० २ ।

पुट्ठी-पुष्टिः-अतिशायी पोषः । जीवा० २६८ । पुष्टिः-पुण्योपचयः, अहिंसायास्त्रयोविंशतितमं नाम । प्रश्न० ९९ । पृष्टिः । आव० ३५० ।

पुड-पुटं-नासापुटम् । उपा० २१ । पुष्करम् । उपा० २१ ।

पुडभेयण-कुङ्कुमादीनां पुटा यत्र विक्रयार्थं भिद्यन्ते तत् पुटभेदनम् । बृ० प्र० १८१ आ । पुटभेदनं-प्रधाननगरम् । उत्त० ४७५ ।

पुडा-पुटा-पुटिका । भग० ७१३ ।

पुडिया-पुटिका । आव० ३९९ ।

पुढ-पृथग्भूतः-व्यवस्थितः । सूत्र० ५५ ।

पुढवाए-पुटपाकाः-कुष्ठिकानां कणिकावेष्टितानामग्निना पक्वानि, अथवा पुटपाकाः-पाकविशेषनिष्पन्ना । ज्ञाता० १८१ ।

पुढवि-भगवत्यां द्वादशशतके रत्नप्रभापृथिवीविषयः तृतीयोद्देशकः । भग० ५५२ । पृथिवी-लोष्टादिरहिता । दश० १५२ ।

पुढविकाइया-पृथिव्येव कायो येषां ते पृथिवीकायिकः, पृथिवीकायिका, पृथिव्येव वा काया-शरीरं सो यस्य अस्ति ते पृथिवीकायिकाः । ठाणा० ५३ ।

पुढविसत्थ-पृथ्वीशस्त्रम् । आव० ५१४ ।

पुढविसिलावट्टय-पृथिवीशिलारूपः पट्टकः-आसनविशेषः पृथिवीशिलापट्टकः । भग० १२७ । पृथिवीशिलापट्टकः-आसनविशेषः । ज० प्र० २८० ।

पुढवी-पृथिवी, पृथ्व्याः प्रथमभेदः । आचा० २९ । पृथिवी-धूलिः । आचा० ५१ । इशानदेवेन्द्रस्य प्रथमाऽग्रमहिषी । ठाणा० २०४ । भग० ५०५ । भगवत्यां त्रयोदशशतके प्रथमचतुर्थउद्देशकौ । भग० ५९६ । पृथिवीति-भामा सत्यभामावत् शुद्धपृथिवी च नदीतटभित्त्यादिरूपा । प्रज्ञा० २७ । पृथिवी-केदाराद्युपरिवर्त्तिनी शुष्ककोपट्टिका श्लक्ष्णा खटिका निमित्ता वा । बृ० प्र० १६१ आ । पृथ्वी रत्नप्रभादिः । अनु० १७३ ।

पुढवीओ-पृथिव्यः भगवत्याः प्रथमशतके पञ्चमोद्देशकः । भग० ६ ।

पुढवीकाय-पृथिवीकायः-उदयभूधरशिरः । अस्तमयभूधरशिरो वा । सूर्य० ४७ ।

पुडवीवडेंसय-पृथिव्यवतंसकं-रोहीटकनगरे उद्यानम् । विपा० ८२ ।

पुढवीसिरी-पृथिवीश्रीः-इन्द्रपुरनगरे गणिका । विपा० ८८ ।

पुढेगत्तं-पृथक्कालदेशभेदेन कदाचित्क्वचिदित्यर्थः । ठाणा० ३८४ ।

पुढो-पृथक्-प्रत्यक्षज्ञानी परोक्षज्ञानी च । आचा० ३६ । पृथग्भेदेन । उत्त० १८१ । पृथग्-विभिन्नम् । आचा० ३५ । पृथग् प्रत्येकम् । आचा० १२१ । पृथग्-विभिन्नम् । आचा० १४१ ।

पुढोछंदा-पृथग्-भिन्नः छन्दः-अभिप्रायः येषां ते पृथग्छन्दाः । आचा० २०५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुढोजण-पृथग्जनः-प्राकृतपुरुषः अनार्यकल्पः। सूत्र० ८१।
पुण-पुनः। प्रश्न० १५५। पुनः-एवकारार्थः। आचा०१०। पुनः-द्वितीयवाराऽपेक्षः। व्य० प्र० १५७ अ। पुनःशब्दः-केवलार्थः। व्य० द्वि० ११ अ।
पुणउत्ति-(देसी,भासते वुच्चंति। नि० चू० प्र० १२१ अ।
पुणट्ठा-साधुवादानङ्गीकरणेन यत्पुण्यार्थं कृतम्। दश० १७३।
पुणनंद-श्रेयांसजिनप्रथमभिक्षादाता। आव० १४७।
पुणब्भव-पुनर्भवः-संसारः। प्रज्ञा० १०८।
पुणब्भवलया-पुनर्भवः। मर०।
पुणभद्द-चंपायां चैत्यम्। उपा० १।
पुणरावत्ती-पुनरावृत्तिः-परावृत्तिः सुस्थता। आव० ८६३। पुनरावृत्तिः। दश० ६४।
पुणरावि-पुनरपि-भूयोऽपि। उत्त० ३३६।
पुणरुत्त-शब्दार्थयोः पुनर्वचनं पुनरुक्तम्, सूत्रदोषविशेषः। आव० ३७४। पुनरुक्तं शब्दतोऽर्थतश्च पुनर्वचनम् अनु० २६१। अर्थादापन्नस्य स्वशब्दस्य पुनर्वचनम्। आव० ३७५।
पुणव्वसु-पुनर्वसुः-नारायणवासुदेवपूर्वभवः। आव० १६३। नक्षत्रम्। ठाणा० ७७। शीतलनाथप्रथमभिक्षादाता। सम० १५१। अष्टमबलदेवपूर्वभवनाम। सम० १५३।
पुणव्वसू-पुनर्वसुः। सूर्य० १३०। शीतलजिनप्रथमभिक्षादाता। आव० १४७।
पुणोपुणो-करेति एवं प्रसङ्गः। नि० चू० प्र० २३३ आ। पौनःपुन्येन-यावृत्त्या। आचा० २०१।
पुण्डरीक:-औत्पत्तिक्यां स्त्रीलम्पटः। नंदी० १५४। व्याघ्रः। उत्त० १३५। सूत्रकृताङ्गद्वितीयश्रुतस्कन्धे प्रथमाध्ययनम्। ठाणा० ३८७।
पुण्डरीकदलं-श्वेतपद्मम्। जीवा० १६१।
पुण्ड्र-तिलकः। सम० १३६। तिलकः। जीवा० १७५।
पुण्ड्रप्रभा-वापीनाम। जं० प्र० ३७१।
पुण्ड्रवर्धनकः- । व्य० द्वि० २०४ आ।
पुण्ड्रा-वापीनाम। ज० प्र० ३७१।
पुण्ण-प्रणति-शुभीकरोति पुनाति वा-पवित्रीकरोत्यात्मानमिति पुण्यं-शुभकर्म। ठाणा० १७। पुण्यं-पुण्यहेतुभूतं शुभानुष्ठानम्। उत्त० ३८८। पुण्यः-षष्ठो दक्षिणनिकायेन्द्रः। भग० १५७। पूर्णः। जीवा० १७०। पुण्यार्थं यत्र बहु रन्धयित्वा श्रमणानानां दीयते, अथवा पूर्णं यद्गृहस्थैर्बहुभिस्तत्। ओघ० १५६। पूर्णः-सम्भृतः। जीवा० २६५। पूर्णः-क्षोदोदे समुद्रे पूर्वार्द्धाधिपतिर्देवः। जीवा० ३५५। महर्धिकः। ब्र तृ० १७० अ। भृतो जलस्य भग० ८३। पूर्ण-उदात्तादिघोषैर्यत् परिपूर्णम्। विशे० ४०६। पुण्या-पवित्रा। ज्ञाता० १३६। पुण्यं-श्रुतचारित्रफलभूतं शुभकर्म। भग० ९०। यत्स्वरकलाभिः पूर्णं गीयते तत्पूर्णम्। जीवा० १६४। यत् स्वरकलाभिः पूर्णं गीयते तत् पूर्णम्। ज० प्र० ४०। स्वरकलाभिः सर्वाभिरपि युक्तं कुर्वतः पूर्णम्। अनु० १३२। पुण्यकूटं-वैताढ्यकूटः। ज० प्र० ३४१।
पुण्णकलस-पूर्णकलशः-अनार्यग्रामः। आव० २०७।
पुण्णघोस-जम्बूवरवत आगामिन्यां उत्सर्पिण्यां तीर्थकरः। सम० १५४।
पुण्णणंद-श्रेयांसनाथप्रथमभिक्षादाता। सम० १५१।
पुण्णपत्त-पूर्णपात्रं-अक्षतभृतपात्रम्। उत्त० ३८१।
पुण्णप्पभ-पूर्णप्रभः-क्षोदोदे समुद्रे पश्चिमार्द्धाधिपतिर्देवः। जीवा० ३५५।
पुण्णप्पमाण-पूर्णप्रमाणः-स्वप्रमाणं यावज्जलेन पूर्णः। जीवा० १२२। पूर्णप्रमाणः-पूर्णं वा जलेनात्मनो प्रमाणं यस्य, मानं वा यस्य पूर्णमात्मनः। भग० ८३।
पुण्णभद्द-पूर्णभद्रः-चम्पायां यक्षविशेषः। आव० २२५। पुण्यभद्रः-दक्षिणनिकाये तृतीयो व्यन्तरेन्द्रः। भग० १५८। पुण्यभद्रं-रविविषयप्रश्ननिर्णये चम्पानगर्यां चैत्यम्। भग० २०६। पूर्णभद्रः। अन्त० १६। पूर्णभद्रं-चम्पायां चैत्यविशेषः। उत्त० ३२१। सौधर्मकल्पवासिदेवः। निरय० ३६। सौधर्मकल्पे विमानविशेषः। निरय० ३६। चंपानगर्यां उत्तरपूर्वायां चैत्यः। ज्ञाता० ३। धातकिखण्डभरतचम्पायां चैत्यम्। ज्ञाता० २२२। चंपायां चैत्यम्। उपा० १६। नि० चू० प्र० २३ अ। पूर्णभद्रः-चम्पानगर्यां चैत्यविशेषः। प्रश्न० १। पूर्णभद्रः-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यक्षेन्द्रः । जीवा० १७४ । चम्पायां चैत्यम् । ज्ञाता० २५२ । जितशत्रुराज्ञोः चंपानगर्यां चैत्यम् । ज्ञाता० १७३ । मणिपतिकानगर्यां गाथापतिः । निरय० ३६ ।

पुण्णभद्दकूड पूर्णभद्रनाम्नो व्यन्तरेशस्य कूटं पूर्णभद्रकूटम् । ज० प्र० ३३८ । पूर्णभद्रनाम्नो देवस्य निवासभूतं कूटं पूर्णभद्रकूटम् । ज० प्र० ७७ ।

पुण्णमासी–पूर्णो मासो यस्यां सा पौर्णमासी, पूर्णो मासः–चन्द्रमा अस्यामिति वा पौर्णमासी । जीवा० ३०५ ।

पुण्णरत्ता–परिपूर्णमधुरा । उपा० २८ ।

पुण्णस्स–तीर्थंकरगणधरार्चार्यादिना येन प्रकारेण पुण्यवान् सुरेश्वरचक्रवर्तिमाण्डलिकादिः । आचा० १४५ ।

पुण्णा–धर्मकथायाः पञ्चमवर्गस्य नवममध्ययनम् । ज्ञाता० २५२ ।

पुण्णं–शुभम् । आव० ५९२ ।

पुता–नातिमन्दा नातित्वरिता । बृ० प्र० २५६ अ ।

पुताई–उद्भ्रामिका । बृ० तृ० २११ आ ।

पुत्तंजीव–वृक्षविशेषः । भग० ८०३ ।

पुत्तंजीवय–पुत्रजीवकः वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३१ ।

पुत्त–पुनाति पितुराचारानुवर्त्तितयाऽऽत्मानमिति पुत्रः । उत्त० ३८ । पुनाति पितरं पाति वा पितृमर्यादामिति पुत्रः–सूनुः । ठाणा० ५१६ । पुत्रः–पुत्रमांसोपमया भोक्तव्यम्, साधोर्भोक्तव्य उपमा । दश० १९ । वस्त्रम् । बृ० प्र० २८ अ । परिधानवस्त्रम् । बृ० तृ० २५३ अ ।

पुत्तगो–पुत्तलकः । बृ० तृ० १४८ अ ।

पुत्तजम्म–पुत्रजन्म । आव० ३४४ ।

पुत्तभंड–पुत्रभाण्डम् । आव० २०५ । आव० २७३ ।

पुत्तलपिंड–असद्भावस्थापनायां दृष्टान्तः । ओघ० १२९ ।

पुत्तलिका–पुस्तकर्मविशेषः । ओघ० १२९ ।

पुत्ता–पूर्णभद्रजक्षस्य प्रथमा अग्रमहिषी । ठाणा० २०४ ।

पुत्तागुपुत्तियं–पौत्रानुपुत्रिकां–पुत्रपौत्रादियोग्यम् । ज्ञाता० ३९ ।

पुत्तिया–चतुरिन्द्रियजीवः । उत्त० ६९६ । चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः । जीवा० ३२ ।

पुत्थ–पुस्तं–वस्त्रकृतम् । आव० ७६७ ।

पुत्थारा–तुन्नाकविशेषः–शिल्पाचार्यः । प्रज्ञा० ५६ ।

पुत्थी–पुस्ती–पोतस्य ज्येष्ठा सुता, ब्रह्मदत्तराज्ञो । उत्त० ३७९ ।

पुत्रभाण्डः– । आचा० १०६ ।

पुद्गलोद्देशः–भगवत्यामुद्देशकः । आव० १०६ ।

पुधोवणं–पुणो पुणो धोवणं पुधोवणं । नि० चू० द्वि० ११८ आ ।

पुन्न–प्रथमो द्विपकुमारेन्द्रः । ठाणा० ८४ । पूर्णः–द्वीपकुमाराणामधिपतिः । प्रज्ञा० ९४ । पूर्ण–भृतं प्लुतम् । ज्ञाता० ७१ । पूर्ण–स्वरकलाभिः । ठाणा० ३९६ । पुण्यं पुण्यहेतुत्वात् । सूत्र० ४०३ ।

पुन्नभद्द–चम्पायां जक्षायतनम् । भग० ४८४ । भग० ६१८ । शुद्धपाणके देवः । भग० ६८० । पूर्णभद्रः–चम्पायां चैत्यविशेषः । अन्त० १ । पूर्णभद्रः–अन्तकृद्दशानां षष्ठवर्गस्य एकादशममध्ययनम् । अन्त० २३ । पूर्णभद्रं–चम्पानगर्यामुद्यानम्, तत्रैव यक्षश्च । विपा० ९५ । महापद्मस्य सेनाकर्मकरदेवः । ठाणा० ४५९ । द्वितीयो जक्षेन्द्रः । ठाणा० ८५ । पुण्यभद्रः वैश्रमणस्य पुत्रस्थानीयो देवः । भग० २०० । चंपायां चैत्यः । ज्ञाता० १९३ । चम्पायां चैत्यः । निरय० १९ । पुष्पिकायाः पञ्चममध्ययनम् । निरय० २१ । चम्पानगरयां चैत्यम् । निरय० ४ । चम्पायां चैत्यम् । अन्त० १ । पूर्णभद्रः चम्पायां चैत्यविशेषः । अन्त० २५ । विपा० ३३ । पूर्णभद्रः–अन्तकृद्दशानां षष्ठवर्गस्य एकादशममध्ययनम् । अन्त० १८ ।

पुन्नरक्ख–पुण्यरक्षः वैश्रमणस्य पुत्रस्थानीयो देवः । भग० २०० ।

पुन्नरूव–पूर्णरूपः पुण्यरूपो वा विशिष्टरजोहरणादिद्रव्यलिङ्गसद्भावात् सुसाधुरिति । ठाणा० २७९ ।

पुन्नसेण–पुण्यसेनः–अनुत्तरोपपातिकदशानां द्वितीयवर्गस्य त्रयोदशममध्ययनम् । अनुत्त० २ ।

पुन्ना–जक्षेन्द्रस्याग्रमहिषी । भग० ५०४ ।

पुन्नाग–लताविशेषः । आचा० ३० । वृक्षविशेषः । भग० ८०३ । पुन्नागः–एकास्थिक वृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३१ ।

पुप्फ–विंशतिसागरोपमस्थितिकदेवविमानम् । सम० १८ । पुष्पं–कुन्दकलिका । जीवा० १६३ । सूचनात् सूत्रमिति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कृत्वा सप्रशिखा पुष्पभृता चङ्गेरी पुष्पचङ्गेरी परिगृह्यते, तदाकारोऽवधिर्ग्रैवेयकविमानवासि देवानाम् । विशे० ३५३ । पुष्पशिखावलिरचिता चङ्गेरी पुष्पचङ्गेरी । आव० ४१ । पुष्य:—नक्षत्रविशेषः । सूर्य० १३० । पुष्पं-अच्छोदकम् । नि० चू० प्र० १५० अ । पुष्पं-विकसितं अग्रथितम् । अनु० २४ । पुष्पं—वर्णगन्धोपेतम् । आचा० ३५२ ।

पुप्फकंत—विंशतिसागरोपमस्थितिकदेवविमानम् । सम० ३८ ।

पुप्फग—पुष्पकः-देवविमानः । औप० ५२ ।

पुप्फकरंडए-पुष्पकरंडकं-हस्तिशीर्षनगरे उद्यानम् । विपा० ८६ ।

पुप्फकरंडगहत्थगय-पुष्पकरंडकहस्तगतः । आव० ३७० ।

पुप्फकरंडय-पुष्पकरंडकं राजगृह उद्यानम् । आव० १७२ ।

पुप्फकुंथुय-पुष्पकुन्थुः पुष्पकीटः । आव० ८३१ ।

पुप्फकेउ—पुष्पकेतुः-सप्ताशीतितममहाग्रहः । ठाणा० ७६ । जं० प्र० ५३५ । जम्बूवैरवते आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां सप्तमतीर्थंकरः । सम० १५४ । पुष्पकेतुः-पुष्पभद्रनगराधिपतिः । आव० ६८८ । पुष्यकेतुः-पुष्पपुरे राजा । बृ० प्र० २१८ आ ।

पुप्फग—बुध्नम् । ओघ० ११७ ।

पुप्फचंगेरिया-पुष्पचङ्गेरिका । जं० प्र० ३९० ।

पुप्फचंगेरी-पुष्पचङ्गेरी । जीवा० २१४, २३४ । पुष्पचङ्गेरी । जं० प्र० ४१० ।

पुप्फचूल—पुष्पचूलः—वैनयिक्यां पुष्पसेनराजपुत्रः । आव० ४२६ । पुष्पचूलः—पुष्पभद्रनगराधिपतिः पुष्पकेतोः पुत्रः । आव० ६८८ । पुष्पचूलः—अङ्गेषु चम्पास्वामी, यो ब्रह्मपत्न्याश्चुलिन्या भ्राता । उत्त० ३७७ ।

पुप्फचूला—पार्श्वनाथस्य प्रथमा शिष्या । सम० १५२ । पुष्पचूला—वैनयिक्यां पुष्पसेनराजपुत्री । आव० ४२६ । आर्यिकालाभद्वारे आर्या । आव० ५३७ । पुष्पभद्रनगरे पुष्पकेतोः पुत्री । आव० ६८८ । निरयावलिकायाः चतुर्थवर्गे साध्वीविशेषः । निरय० ३८ । पार्श्वनाथस्य शिष्या । ज्ञाता० २५३ । पुष्पकेतोः दारिका । बृ० प्र० ११८ आ ।

पुप्फचूलिया—पुष्पितायाः अधिकृतार्थविशेषप्रतिपादिका पुष्पचूडाः । नंदी० २०८ । निरयावल्युपाङ्गस्य चतुर्थो वर्गः । निरय० ३ ।

पुप्फच्छज्जिया—छाद्यते—उपरि स्थग्यते इति छाद्या छाद्यैव छाद्यिका—पुष्पैर्भृता छाद्यिका पुष्पच्छाद्यिका । जं० प्र० ३९० ।

पुप्फछज्जिया—पुष्पच्छज्जिका द्वारशाखा । आव० ५१४ ।

पुप्फज्झय—विंशतिसागरोपमस्थितिकदेवविमानम् । सम० ३८ ।

पुप्फतंबोल-पुष्पताम्बूलम् । आव० ८३१ ।

पुप्फथामं-पुष्पस्थानम् । दश० ८७ ।

पुप्फदंत—हस्तिराजा । ठाणा० ३०३ । पुष्पदन्तः—क्षीरवरद्वीपेऽपरार्द्धाधिपतिर्देवः । जीवा० ३५३ ।

पुप्फदत्त-पुष्पदत्तः—अणगारविशेषः । विपा० ६५ ।

पुप्फपडलग-पुष्पपटलकं-पुष्पाधारभाजनविशेषः । जं० प्र० ३९० ।

पुप्फपडलय-पुष्पपटलकम् । जीवा० २३४ ।

पुप्फपभ—विंशतिसागरोपमस्थितिकदेवविमानम् । सम० ३८ ।

पुप्फपुंजोवयार—पुष्पपुञ्जोपचारः—बलिप्रकारः । जं० प्र० ३९० ।

पुप्फपुडिया-पुष्पपुटिका । आव० ६७६ ।

पुप्फपुर-पुष्पकेतो राजधानी । बृ० प्र० २१८ आ ।

पुप्फपूयय—पुष्पशेखरम् । ज्ञाता० २०५ ।

पुप्फबेंटिया—त्रीन्द्रियविशेषः । प्रज्ञा० ४२ ।

पुप्फभद्दं-पुष्पभद्रं—गङ्गातटे नगरम् । आव० ६८८ । पुष्पभद्र पारिणामिकीदृष्टान्ते नगरम् । आव० ४२६ ।

पुप्फमाणव-पुष्पमाणवः—लक्षणविशेषः । जीव० १८६ ।

पुप्फमाला—पुष्पमाला अधोलोकवास्तव्या सप्तमा दिक्कुमारी । जं० प्र० ३८३ । पुष्पमाला—अधोलोकवास्तव्या दिक्कुमारी । आव० १२१ ।

पुप्फय—पुष्पकः—ईशानेन्द्रस्य विमानकारी देवः । ज० प्र० ४०५ ।

पुप्फयविमाण—पुष्पकविमानम् । आव० १४४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुप्फलेस-विंशतिसागरोपमस्थितिकदेवविमानम् । सम० ३८ ।

पुप्फवई-पुष्पवती-पुष्पकेतो राज्ञी । बृ० प्र० २१८ आ । पुष्पकेतोः देवी । बृ० प्र० २१८ आ । पुष्पवती-पारिणामिक्यां पुष्पभद्रनगरे पुष्पसेनराज्ञो । आव० ४२९ ।

पुप्फवण्ण-विंशतिसागरोपमस्थितिकदेवविमानम् । सम० ३८ ।

पुप्फवती-धर्मकथायाः पञ्चमवर्गस्य चतुर्विंशतितममध्ययनम् । ज्ञाता० २५३ । किम्पुरिसेन्द्रस्य चतुर्थी अग्रमहिसी । ठाणा० २०४ । मल्लिनाथस्य प्रथमा शिष्या । सम० १५२ । पुष्पवती-गङ्गातटे पुष्पभद्रनगरे पुष्पकेतुराज्ञी । आव० ६८८ । किम्पुरुषस्य चतुर्थाऽग्रमहिषी । भग० ५०४ । पुष्पवतिकं-तुङ्गिकानगर्यां चैत्यम् । भग० १३६ ।

पुप्फवद्दलं-पुष्पवर्दलं यैः क्षितिविभूषा । आव० २३० ।

पुप्फवद्दलयं-पुष्पवर्दलम् । आव० १२२ ।

पुप्फपासा-पुष्पवर्षा-कुसुमवर्षणम् । भग० १९९ ।

पुप्फवुट्ठी-पुष्पवृष्टिः । भग० १९९ ।

पुप्फसाल-पुष्पशालः-मगधविषये गूबरग्रामे गाथापतिः । आव० ३५५ । पुष्पशालः-श्रोत्रेन्द्रियोदाहरणे सुस्वरो गान्धर्वकः । आव० ३९८ ।

पुप्फसालसुय-पुष्पशालसुतः-पुष्पशालगाथापतिपुत्रः । आव० ३५५ ।

पुप्फसिग-विंशतिसागरोपमस्थितिकदेवविमानम् । सम० ३८ ।

पुप्फसिद्ध-विंशतिसागरोपमस्थितिकदेवविमानम् । सम० ३८ ।

पुप्फसुहुमं-पुष्पसूक्ष्मं-वटोदुम्बराणां पुष्पाणि । दश० २३० । पुष्पसूक्ष्मं वटोदुम्बराणां पुष्पाणि तानि तद्वर्णानि सूक्ष्माणि । ठाणा० ४३० । वडउंबरादीणि संति पुप्फाणि सुहुमाणि । दश० चू० १२१ ।

पुप्फसेण-पुष्पसेनः-पारिणामिकीबुद्धिदृष्टान्ते पुष्पभद्रनगरे राजा । आव० ४२९ ।

पुप्फावकिण्णं-पुष्पाणीव इतस्ततोऽवकीर्णं विप्रकीर्णं पुष्पावकीर्णम् । जीवा० ३९८ ।

पुप्फावत्त-विंशतिसागरोपमस्थितिकदेवविमानम् । सम० ३८ ।

पुप्फासव-पुष्पासवः । प्रज्ञा० ३६४ । पुष्पासवः-पुष्परससारः । जीवा० ३५१ ।

पुप्फाहार-पुष्पाहारकः । निरय० २५ ।

पुप्फिआ-पुष्पिता-यासु ग्रन्थपद्धतिषु गृहवासमुत्कलनपरित्यागेन प्राणिनः संयमभावपुष्पिताः सुखिता उषिता भूयः संयमभावपरित्यागतो दुःखावाप्तिमुकुलनेन मुकुलिताः पुनस्तत्परित्यागेन पुष्पिताः प्रतिपद्यन्ते ताः पुष्पिताः । नंदी० २०७ ।

पुप्फिया-निरयावल्युपाङ्गस्य तृतीयो वर्गः । निरय० ३,२१ ।

पुप्फुत्तर-पुष्पोत्तरं-विमानविशेषः । उत्त० २९९ । विमानविशेषः । आचा० ४२१ । पुष्पोत्तरः-शर्करामेदः । ज० प्र० ११८ ।

पुप्फुत्तरवडिंसग-विंशतिसागरोपमस्थितिकदेवविमानम् । सम० ३८ ।

पुप्फुत्तरा-पुष्पोत्तरा-आस्वादविशेषः । प्रज्ञा० ३६४ ।

पुप्फुत्तरि-पुष्पोत्तरावतंसकः-विमानविशेषः । आव० १७७ ।

पुप्फोत्तरा-पुष्पोत्तरा । जीवा० २७८ ।

पुप्फोवयार-पुष्पोपचारः-पुष्पप्रकरः । सम० ६१ ।

पुप्फोवयारसंठित-पुष्पोपचारसंस्थितः-शतभिषानक्षत्रसंस्थितः । सूर्य० १३० ।

पुयलि-पुततटि-पुनप्रदेशम् । भग० ६७९, ६८४ ।

पुयावइत्ता-प्लावयित्वा अन्यत्र नीत्वाऽऽर्यरक्षितवत्, पूतं वा दूषणव्यपोहेन कृत्वा या सा पूतयित्वा । ठाणा० २७६ । 'प्लुङ्गतो' इति प्लावयित्वा-अन्यत्र नीत्वा आर्यरक्षितवद् या प्रव्रज्या दीयते सा । ठाणा० १२९ ।

पुरंदर-पूश्च शरीरमप्युच्यते तद्विकृष्टतपोऽनुष्ठानतो, दारयतीव दार्यतीति पुरन्दरः । उत्त० ३५१ । असुरादिपुराणां दारणात् पुरन्दरः-इन्द्रः । भग० १७४ । पुरन्दरः-लोकोक्त्या च पूर्दारणात् पुरन्दरः । उत्त० ३५० ।

पुरंदरजसा-कुम्भकारकटे देवी । व्य० द्वि० ४३२ अ । पुरन्दरयसा-जितशत्रुराजकन्या । उत्त० ११४ ।

पुरंदरा-चंपाणामणगरी तत्थ खंदगो राया तस्स भगिणी ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नि० चू० तृ० ४४ अ ।

पुर–नगराद्येकदेशभूतं प्राकारावृतम् । ठाणा० २६४ । नि० चू० प्र० २६५ अ ।

पुरओ–पुरतः-अग्रतः । ज्ञाता० १६२ ।

पुरओकाउं–अग्रे विधाय पुरस्कृत्य वा प्रधानीकृत्य वा । भग० १२३ ।

पुरकम्म–भिक्षायाः पुरतः–प्रथममेव यत्कृतं कर्म कडुच्छुकादिप्रक्षालनादि तत् पुरःकर्म । ओघ० १७० । पुरःकर्म-अप्कायरक्षिते प्रथमभेदः भक्तादेर्दानात् पूर्वं यत्साध्वर्थं कर्म हस्तमात्रादेर्जलप्रक्षालनादि क्रियते तत्पुरःकर्म । पिण्ड० १४६ ।

पुरक्कार–पुरस्कारः–सद्भूतगुणोत्कीर्त्तनम् । वन्दनाभ्युत्थानासनप्रदानादिव्यवहारश्च । आव० ६५८ । पुरस्करः–अभ्युत्थानासनादिसम्पादनम् । उत्त० ८३ । पुरस्कारः–सर्वकार्येष्वग्रतः स्थापनम् । आचा० २१६ । पुरस्कारः–राजादिकृताभ्युत्थानादिः भग० ३६ । पुरस्करणं–पुरस्कारः–मुखवानयमिति गौरवाध्यारोपः । उत्त० ५८० । पुरस्कारः–अभिमानविशेषः । ज्ञाता० १४० ।

पुरक्खड–पुरस्कृतः-पुरोवर्त्ती । भग० २६ । पुरस्कृतः पुरोवर्त्ती भविष्यन् । भग० २११ । पुरस्कृतः–अतीसमयः । सूर्य० १६६ ।

पुरच्चरण–पुरश्चरणम् । उत्त० २६३ ।

पुरच्छिम–पूर्वदिक् । ठाणा० ६८ । पौरस्त्यः । भग० ६ । पूर्वस्याम् । ज० प्र० ७३ ।

पुरतोउदया–पुरत उदया । सूर्य० ६५ ।

पुरत्थरुयग–पौरस्त्यरुचकम् । ज्ञाता० १२७ ।

पुरत्थि–प्रातः । सूत्र० ४२२ ।

पुरत्थिम–पूर्वा दिक् । ज० प्र० ४७ ।

पुरत्थिमतुंगार–पूर्वतुङ्गारः । आव० ३८७ ।

पुरत्थिमवेयालीए– । ज्ञाता० । २१७ ।

पुरत्थिमसत्तासुय–पूर्वसत्त्वासुकः । आव० ३८६ ।

पुरमंतरंजि–पुरमन्तरञ्जिका–सप्तमनिह्नवोत्पत्तिस्थानम् । विशे० ६३४ ।

पुरवर–नगरैकदेशभूतम् । प्रश्न० ६२ । राजधानीरूपम् । प्रश्न० ६६ ।

पुरवरधम्म–पुरवरधर्मः प्रतिपुरवरं भिन्नः क्वचित् क्वचिद्विशिष्टोऽपि पौरभाषाप्रदानादिलक्षणः सद्वितीया योषिद्गेहान्तरं गच्छतीत्यादिलक्षणो वा । दश० २२ ।

पुरसमाणवो–मागधः । ज्ञाता० १३३ ।

पुरा–पूर्वभवः । ज्ञाता० २०५ ।

पुराकाउं–पुरस्कृत्य-आश्रित्य पुरस्कृत्य–मुख्यतयाऽङ्गीकृत्य । उत्त० २८३ ।

पुराण–पच्छाकडो । नि० चू० प्र० १२० अ । पच्छाकडो । नि० चू० प्र० ३२५ अ । पश्चात्कृतः । बृ० द्वि० १२७ अ । प्रभूतवर्षधृतः । उत्त० २६४ । चिरन्तनम् । ठाणा० २६४ । पुराणे-पुरातनम् । ज्ञाता० ३ । बृ० प्र० २६३ अ । वृद्धः–शास्त्रविशेषः । ठाणा० ४५२ । बहुकालीनम् । ठाणा० ३६४ । पुराणः–अग्रेतनः । प्रज्ञा० ५०३ । पुराणः । आव० ४०८ । पुरातनवस्तुविषयम् । ठाणा० ४५० । जूर्णम् । ओघ० १३८ । अनेकभवोपात्तत्वेन चिरन्तनम् । उत्त० ८ ।

पुराणकुम्मास–पुराणकुल्माषं–बहुदिवससिद्धस्थितकुल्माषम् । आचा० ३१५ ।

पुराणगहणं–प्राग्गृहित–चोलपट्टादेः कर्पूरादिना ग्रहणम् । बृ० द्वि० २८५ आ ।

पुराणसंविग्ग–प्राक्संविग्नः पश्चात्पार्श्वस्थः । बृ० तृ० १४२ अ । यस्तु संविग्नमुण्डितत्वात् पूर्वं संविग्नः पश्चादवसन्नीभूतः स पुराणसंविग्नः । बृ० प्र० २०७ आ ।

पुराणसड्ढ–पुराणश्राद्धः । आव० ७३६ ।

पुराणिय–पौराणिकम् । आव० ४३२ ।

पुरिमंतरंजि–पुरमन्तरञ्जि त्रैराशिकनिह्नवोत्पत्तिस्थानम् । आव० ३१२ ।

पुरिम–कर्दममयं कुण्डिकारूपं अनेकच्छिद्रं पुष्पस्थानम् । दश० ८७ । आदिमम् । आव० ५६३ । पूर्वाः–पूर्वं क्रियमाणतया तिर्यक्कृतवस्त्रप्रस्फोटनात्मका क्रियाविशेषः । उत्त० ५४१ । पुरिमम् । ओघ० १०८ । पूरिमम् । ओघ० १०८ । पूरिमं–यत् पूरणतो भवन्ति कनकादिप्रतिमावत् । ज्ञाता० १७६ ।

पुरिमकंठभाउवगता– । सूर्य० ६५ ।

पुरिमड्ड–परिमार्द्धं–प्रथमप्रहरद्वयकालावधिप्रत्याख्यानम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आव० ८५२ ।

पुरिमताल–महाबलराजधानी । विपा० ५५ । विनीतानगर्यां उद्यानस्थानं–पुरिमतालम् । आव० १४७ । २१० । चित्रजन्मस्थानम् । उत्त० ३८२ । उदितोदयराज्ञः पुरः । नंदी० १६६ । उदितोदयस्य राजधानी । नंदी० १६६ । नगरम् । भग० ६५३ । पुरिमतालः नगरविशेषः । जं० प्र० १५० । पुरिमतालं–पुरविशेषं ऋषभदेवस्य केवलोत्पत्तिस्थानम् । आव० १३६ ।

पुरिमपुर–द्रव्यव्युत्सर्गे गान्धारविषये नग्गतिराजधानी । आव० ७२० ।

पुरिमयाल–पुरिमतालं–पारिणामिक्यां नगरविशेषः । आव० ४३० ।

पुरिमा–भरतैरावतेषु चतुर्विंशतेरादिमाः । ठाणा० २९६ । उसभसामिणो सिस्सा । नि० चू० प्र० ३५३ अ ।

पुरिमार्द्ध–पूर्वाह्णलक्षणं प्रत्याख्यानविशेषः । ठाणा० २६८ ।

पुरिय–पुरिकानगरी । आव० २६५ ।

पुरियाइ– । आव० ५३६ ।

पुरिल्ल–पुरोवर्त्ती अभिधारित आचार्यः । बृ० तृ० १३२ अ । पाश्चात्येऽनन्तानुबन्ध्यादिके कर्मणि क्षपयितुमारब्धे सावशेष एव । विशे० ५०५ । पुरातनम् । व्य० प्र० ३१ अ । पौरस्त्यः । आव० ३४८ ।

पुरिवट्टा–पुरिवर्त्ता आर्यसार्धपञ्चविंशतिजनपदे जनपदः । प्रज्ञा० ५५ ।

पुरिसंतकाड–पुरुषादपरः पुरुषः पुरुषान्तरं तत्कृतं वा पुरुषान्तरकृतम् । आचा० ३२५ ।

पुरिस–पुरुषः–जन्तुः मनुष्यो वा । आचा० २४ । पुरुषः–सामायिकलाभे दृष्टान्तः । आव० ७५ । पुरि शयनात् पुरुषः । दश० ५५ । पुरुषं–पारिणामिकादिरूपम् । दश० ११५ । पुरुषः–शङ्कुः पुरुषशरीरं वा । नंदी २०५ । पुरि–शरीरे शयनाद् वा पुरुषो–जीवः, पूर्णः सुखदुःखानामिति पुरुषः । विशे० ३७६ । पूर्णः–सुखदुःखयोः पुरिशयनाद्वा, पुरुषो–जन्तुः । आचा० १६८ । पूर्णः–सुखदुःखानामिति पुरुषः पुरि शयनाद्वा । आव० ४६ । पुरुषः पुरुषं घनन्नित्यादिवक्तव्यतार्थः चतुस्त्रिंशत्तमं । भग० ४२५ । पुरि शयनात् पुरुषः–जीवः । सूत्र० ४०२ । पुरीषः । ज्ञाता० ४९ ।

पुरिसकार–पुरुषकारः–पौरुषाभिमानः । सूर्य० २८६ । पुरुषकारः–साधिताभिमतप्रयोजनम् । सूर्य० २९६ । पुरुषकारः–अभिमानविशेषः । ठाणा० २३ ।

पुरिसक्कार–पुरुषकारः पौरुषाभिमानः पुरुषक्रिया वा । भग० ५७ । पुरुषकारः–पुरुषाभिमानः । भग० ३२३ । पुरुषकारः–कर्मशत्रून् प्रति स्ववीर्योत्कर्षलक्षणः । दश० ११० । पुरुषकारः–अभिमानविशेषः । प्रज्ञा० ४६३ । पुरुषकारः अभिमानविशेषः । ठाणा० ११६ । पुरुषाकारः–पौरुषाभिमानः पुरुषकारः पुरुषक्रिया । ज० प्र० १३० ।

पुरिसक्कारपरक्कम–पुरुषाभिमानेन साधितस्वप्रयोजनः । भग० ३११ ।

पुरिसगार–पुरुषकारः–अभिमानविशेषः । ज्ञाता० ७१ ।

पुरिसच्छाया–पुरुषच्छाया–प्रथमतः सूर्यस्योदयमानस्य दृष्टिपथप्राप्तता । सूर्य० ५८ ।

पुरिसजाता–पुरुषजातानि पुरुषप्रकाराः । ठाणा० ११३ ।

पुरिसजाया–पुरुषजातानि पुरुषप्रकाराः । ठाणा० १३१ ।

पुरिसजुग–पुरुषयुगं–पुरुषकालम् । ठाणा० ४३१ । पुरुषयुगं–पुरिसजुगाइं पुरुषाः–शिष्यप्रशिष्यादिक्रमव्यवस्थिता युगानीव–कालविशेषा इव क्रमसाधर्म्यात्पुरुषयुगानि । सम० ६८ ।

पुरिसजुगा–पुरुषा–गुरुशिष्यक्रमिणः पितापुत्रक्रमवन्तो वा युगानि इव पुरुषयुगानि । ठाणा० १७८ ।

पुरिसनपुंसगो– । नि० चू० द्वि० २५ आ ।

पुरिसनिवडण–पुरुषनिपतनं महायुद्धादिकार्यभूतम् । भग० १६७ ।

पुरिसपुंडरीय–पुरुषपुण्डरीकः–षष्ठो वासुदेवः । आव० १५६ ।

पुरिसपुर–पुरुषपुरं–नग्गतिराजधानी । उत्त० ३०४ ।

पुरिसयार–पुरुषकारः–अभिमानविशेषः, पुरुषकर्त्तव्यम् । ठाणा० ३०४ ।

पुरिसलक्खण–त्रयोविंशतमकला । ज्ञाता० ३८ ।

पुरिसवरगंधहत्थि–वरश्चासौ गन्धहस्ती च वरगन्धहस्ती पुरुष एव वरगन्धहस्ती पुरुषवरगन्धहस्ती, यथा गन्ध-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हस्तिनो गन्धेनैव सर्वगजा भज्यन्तो तथा भगवतस्तद्देश-विहरणेन ईतिपरचक्रदुर्भिक्षजनडमरकादीनि दुरितानि शतयोजनमध्ये नश्यन्तीति अतस्तेन पुरुषवरगन्धहस्तिनः। सम० ३ ।

पुरिसवरगंधहत्थी-पुरुषोवरगन्धहस्तीव परचक्रदुर्भिक्ष-मारिप्रभृतिक्षुद्रगजनिराकरणेनेति पुरुषवरगन्धहस्ती । जीव० २५५ । पुरुष एव वरगन्धहस्ती पुरुषवरगन्ध-हस्ती महावीरः । भग० ७ ।

पुरिसवरपुंडरीय-पुरुष एव वरं पुण्डरीकं प्रधानं धवल-सहस्रपत्रं पुरुषवरपुण्डरीकं महावीरः। पुरुषाणां-तत्सेवक-जीवानां वरपुण्डरीकमिव-वरच्छत्रमिव । भग० ७ । वरं च तत्पुण्डरीकं च वरपुण्डरीकं-धवलं सहस्र-पत्रं पुरुष एव वरपुण्डरीकं पुरुषवरपुण्डरीकम् । सम० ३ । पुरुषो वरपुण्डरीकमिव संसारजलासङ्गादिना धर्म-कलापेनेति पुरुषवरपुण्डरीकः । जीवा० २५५ ।

पुरिसविचओ-पुरुषविचयः पुरुषा विचीयन्ते-मृग्यन्ते विज्ञानद्वारेणान्वेष्यन्ते येन सः । उत्त० ३१७ (?) ।

पुरिसविजय-पुरुषविजयः-केषाञ्चिदल्पसत्त्वानां तेन ज्ञान-लवेनातिधिप्रयुक्तेनानर्थानुबन्धिना विजयात् । सूत्र० ३१८ ।

पुरिसविज्जा-उत्तराध्ययनेषु षष्ठमध्ययनम् । सम० ६४ ।

पुरिसवेद-पवणविकोवितपत्तिधणंतरजलिय तिव्वएलालद-वग्गिसमाणोवत्तलक्खणो पुरिसवेदो । नि० चू० द्वि० ३१ अ ।

पुरिसवेय-पुरुषस्य वेदः पुरुषवेदः। पुरुषस्य स्त्रियं प्रत्य-भिलाष इत्यर्थः, तद्विपाकवेद्यकर्मापि पुरुषवेदः। प्रज्ञा० ४६९ । पुंसः स्त्रियामभिलाषः पुंवेदः । जीवा० १८ ।

पुरिसवेसिणी-पुरुषद्वेषिणी देवदत्ता गणिका । दश०१०८ ।

पुरिससिंह-पुरुषसिंहः-सिंह इव सिंहः पुरुषश्चासौ सिंह-श्चेति पुरुषसिंहः । सम० ३ । पुरुषाणां मध्ये शौर्या-धिक्येन सिंह इव सिंहः पुरुषसिंहः महावीरः । भग० ७ । पुरुषसिंहः-तीर्थकरादिः । आव० १७९ । पुरुषसिंहः-पञ्चमो वासुदेवः । आव० १५९ । पुरुषः सिंह इव कर्मगजान् प्रति पुरुषसिंहः । जीवा० २५५ ।

पुरिससेण-पुरुषसेनः-अनुत्तरोपपातिकदशासां प्रथमवर्गस्य चतुर्थाध्ययनम् । अनुत्त० १ । अन्तकृद्दशायां चतुर्थ-वर्गस्य चतुर्थमध्ययनम् । अन्त० १४ ।

पुरिसादाणिय-पुरुषश्चासौ पुरुषाकारवर्तितया आदानी-यश्च आदेयवाक्यतया पुरुषादानीयः । उत्त० २७० । पुरुषै-र्वाऽऽदानीयो ज्ञानादिगुणतया । उत्त० २७० । पुरुषा-दानीयः-पुरुषाणां मध्ये आदानीयः-उपादेयः पुरुषश्चासा-वादानीयश्चेति वा । ठाणा० ३६९ ।

पुरिसादाणीय-पुरुषैरादीयते पुरुषादानीयः । निरय०२२ । पुरुषाणां मध्ये आदानीयः-आदेयः पुरुषादानीयः । भग० २४८ ।

पुरिसुत्तम-पुरुषोत्तमः-चतुर्थो वासुदेवः । आव० १५९ । पुरुषाणामुत्तमः पुरुषोत्तमः । जीवा० २५५ । पुरुषाणां मध्ये तेन तेन रूपाद्यतिशयेन ऊर्ध्ववर्तित्वादुत्तमः पुरुषो-त्तमः महावीरः । भग० ७ ।

पुरिसोत्तम-पुरुषाणां मध्ये तेन तेनातिशयेन रूपादिनोद्गत-त्वाद् ऊर्ध्ववर्तित्वादुत्तमः पुरुषोत्तमः । सम० ३ ।

पुरिसोवयार-पुरुषोपचारः-कामशास्त्रप्रसिद्धः । विपा० ४५ ।

पुरीष-पची । ओघ० १५२ । विट् । नंदी० १५२ । ज्ञाता० ४९ ।

पुरुष-शङ्कुः पुरुषशरीरं वा । नंदी० १०५ ।

पुरुषच्छाया-चक्षुः स्पर्शः । जं० प्र० ४४२ ।

पुरुषविज्ञान-किमयं प्रतिवादी पुरुषः साङ्ख्यः सौगतोऽन्यो वा प्रतिभादिमानितरो वेति परिभावनम् । उत्त० ३९ ।

पुरुषविलयः- । आव० ७७० ।

पुरुषवृक्षभा-किंपुरुषभेदविशेषः । प्रज्ञा० ७० ।

पुरुषा-किंपुरुषभेदविशेषः । प्रज्ञा० ७० ।

पुरुषाद्वैत- । ठाणा० ४२५ ।

पुरुषोत्तमा-किंपुरुषभेदविशेषः । प्रज्ञा० ७० ।

पुरेकडं-पुरा-पूर्वं तत्कालापेक्षया कृतं-विहितम् । उत्त० ३३५ ।

पुरेकम्म-पुरः भोक्ष्याम इति पुरःकर्म । दश० २०३ ।

पुरेकम्मकय-पुरः-अग्रतः कृतं-प्रक्षालनादिकं कर्म-क्रिया यस्य । आचा० ३४१ ।

पुरेकम्मिया-पुरः कर्म यस्यामादौ सा प्राभृतिका पुरः-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर्मिका । आव० ५७६ ।

पुरेक्खड–पुरस्कृतः–अनागतकालभावी । प्रज्ञा० ५६३ । पुराकृतं–पूर्वभवकृतम् । प्रश्न० २२ ।

पुरेवाय–मनाक् सस्नेहवाताः । भग० २१२ ।

पुरेवाया–पुरोवाताः–मनाक् सस्नेहवाताः । ज्ञाता० १७१ ।

पुरेसंखडी–पुरःसङ्खडी पूर्वाह्णसंखडी । बृ० द्वि० १३५ । पुव्वदिव्वे पुरे संखडी । नि० चू० प्र० ३१० अ ।

पुरेसंथुया–पुरः संस्तुताः भ्रातृव्यादयः । आचा० ३३६ । पुरःसस्तुताः–यदन्तिके प्रव्रजितस्तत्संबधिनः । आचा० ३५३ ।

पुरोसंखडी–पूर्वाह्णे या क्रियते–पुरःसङ्खडी । पूर्वाह्णेया संखडी । बृ० तृ० १७६ आ ।

पुरोहड–गृहपुरतः । आव० १६४ । अग्रद्वारः । ओघ० १६८ । गिहस्स वा पासे अंगणं । नि० चू० द्वि० १२७ अ । गृहपश्चाद्भागः । बृ० प्र० ३१० आ । दुःशीलजनपरिवृतम्, बृ० द्वि० ६ अ । बृ० प्र० ५६ अ ।

पुरोहिअरयण–पुरोहितरत्नं शान्तिकर्मकृत् । ज० प्र० २६३ ।

पुरोहित–सपुरजणवयस्स रण्णो जो होमजावादिएहि असिवादी पसमेति । नि० चू० प्र० २०६ अ । पुरोहितः–शांतिकर्मकारी । ठाणा० ३६६ ।

पुरोहियरयण–पुरोहितः शान्तिकर्मकारी । ठाणा० ३६८ ।

पुरोहिय–पुरोहितः कार्यं प्रति प्रवर्त्तयिता । सूत्र० २८३ । पुरोहितः–शान्तिकर्मकारी । प्रज्ञा० १०६ । पुरोहितः शान्तिकर्मकारी । जीवा० ३६३ । पुरोहितः शान्तिकर्ता । उत्त० ३६७ । पुरोहितः शान्तिकर्मकारी । प्रश्न० ६६ । पुरोधा–पुरोहितः शान्तिकारी । ठाणा० ४६२ । पुरोहितः–शान्तिकर्मकारी । प्रश्न० ७६ ।

पुलंपुलं–पुलम्पुलं–अनवरतम् । औप० ४६ । अनवरतम् । प्रश्न० ५० ।

पुलंपुलप्पभूया–पुलम्पुलप्रभूता–अनवरतोद्भूता । औप० ४६ ।

पुलक–पृथ्वीकायभेदः । जीवा० २३ । ग्राहविशेषः । सम० १३५ ।

पुलकित– । नंदी० १५० ।

पुलग–पुलकः–लवः । सूर्य० ४ । पुलकः–बिन्दुः । सूर्य० ४ । पुलकः–ग्राहविशेषः । जीवा० ३६ । पुलको–लवः । राज० ५७ । पुलको–द्रव्यत्वे सति बिन्दुः । राज० ५७ । पुलकः रत्नविशेषः । ज्ञाता० ३४ । पुलकः–लवः । निरय० २ । पुलकः–लवः । ज्ञाता० ६ । पुलकः–लवः । विपा० ३४ ।

पुलनिप्पुलाय–पुलाकनिष्पुलाकः–संयमासारतापादकदोषरहितः मुनिः । दश० २६८ ।

पुलय–पुलकः–लवः । भग० १२ । पुलकः–लवः, सारो वा वर्णातिशयः । औप० ८३ । पुलककाण्डं–रत्नप्रभाखरकाण्डे पुलकानां सप्तमं, विशिष्टो भूभागः । जीवा० ८६ । पुलकः । प्रज्ञा० २७ । पुलकः–सारः वर्णातिशयः, बिन्दुः । भग० १२ । पुलकः–लवः । ज० प्र० १५ । पुलकः–मणिभेदः । उत्त० ६८६ ।

पुलया–ग्राहविशेषः । प्रज्ञा० ४४ ।

पुला–पुलकिका लघुतरस्फोटिका । ठाणा० ५२१ ।

पुलाकत्वं–ऋद्धिविशेषः । ठाणा० ३३२ ।

पुलाकादि–साधुभेदविशेषः । भग० ४ ।

पुलाकिमिया–पुलाकृमिः अपानवायुप्रदेशोत्पन्ना कृमिः । जी० ३१ । पुलाकिमिया नाम अपानवायुप्रदेशोत्पन्नकृमिः । प्रज्ञा० ४१ ।

पुलाकोद्देशकादि– । विशे० ६४५ ।

पुलाग–असारः । उत्त० २५६ । पुलाकः–निर्ग्रन्थे प्रथमभेदः । व्य० द्वि० ४०२ अ । असारं–निष्पावादीनि धान्यानि विकटपलांडुलसुणादीनि दुर्गन्धानि क्षीरविचिणिकाद्राक्षरसादीनि वा । बृ० तृ० २११ अ । पुलाकम्–असारं वल्लचनकादि । उत्त० २६५ । पुलाकं–यवनिष्पावादि । आचा० ३१५ ।

पुलागलद्धि–लद्धिवेसेसो । नि० चू० प्र० २७६ अ ।

पुलात–पुलाकः–आसेवापुलाकः । ठाणा० ३३७ । पुलाकः–तंदुलकणशून्या पलंजि तद्वद् यः तपःश्रुतहेतुकायाः सङ्घादिप्रयोजने चक्रवर्त्त्यादेरपि चूर्णन समर्थाः लब्धेस्तजीवनेन ज्ञानाद्यतिचारसेवनेन वा संयमसाररहितः स पुलाकः । ठाणा० ३३६ ।

पुलाय–पुलाकः–निस्सारो धान्यकणः पुलाकवत्पुलाकः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संयमसारापेक्षया स च संयमवानपि मनाक् तमसारं कुर्वन् पुलाक इत्युच्यते । भग० ८९१ ।

पुलिंद-पुलिन्दः-शबरः-अनार्यविशेषः । भग० १७० । पुलिन्द्रः-किरातदेशनिवासी म्लेच्छविशेषः । प्रश्न० १४ । म्लेच्छविशेषः । प्रज्ञा० ५५ । पुलिन्द्रः-भिल्लजातिविशेषः । आव० ८२९ । पुलिन्द्रः । ओघ० २२३ । पुलिन्द्रः-देशविशेषः । ज्ञाता० ४१ ।

पुलिंदकोट्टं- । नि० चू० द्वि० १२८ अ ।

पुलिंददृष्टान्तः- । १ (?) ।

पुलिंदि-पुलिन्द्रीः धात्रीविशेषः । ज्ञाता० ४१ ।

पुलिंदी-म्लेच्छविशेषः । भग० ४६० ।

पुलिअ-पुलितं-गतिविशेषः । जं० प्र० २६५ ।

पुलिन्द्र-म्लेच्छविशेषः । आचा० ३७७ ।

पुलिन्द्रदेशजः-पुलिन्द्र्यः । ज० प्र० १९१ ।

पुलिय-पुलितं-गतिविशेषः । भग० ४८० । औप० ७० । ज० प्र० ५२९ ।

पुलिस-पुरीषम् । उत्त० १३७ ।

पुलीन्द्र-वनचरः । प्रश्न० ३८ ।

पुलुय-पुलकः-ग्राहविशेषः । प्रश्न० ७ ।

पुव्वंगं-पूर्वाङ्गं-चतुरशीतिवर्षशतसहस्राणि । जीवा० ३४५ । पूर्वाङ्गं-चतुरशीतिवर्षलक्षप्रमाणम् । ज० प्र० ४८५ । चतुरशीतिवर्षलक्षप्रमाणं पूर्वाङ्गम् । ठाणा०८६ । पूर्वाङ्ग-चतुरशीतिवर्षलक्षानाम् । भग० २११, ८८८ । पूर्वाङ्गः-प्रथमदिवसनाम । ज० प्र० ४९० । पूर्वाङ्गः । सूर्य० १४७ । चतुरशीतिः वर्षशतसहस्राणि यानीति गम्यते तदेकं पूर्वाङ्गम् । ज० प्र० ९१ । पूर्वाङ्गं-चतुरशीतिलक्षवर्षैः । अनु० १०० ।

पुव्वंति-प्लवन्ते-गच्छन्ति । भग० ६७० ।

पुव्वंभागा-पूर्वभागानि चन्द्रस्याग्रयोगीनि । ठाणा०३६८ । सूर्य० १०४ ।

पुव्व-पुरा-परिचिता मातृपित्रादयः पूर्वः । उत्त० २९० । पूर्वः-परिमाणं वर्षाणां सप्ततिकोटिलक्षाः षट्पञ्चाशच्च कोटिसहस्राः । आचा० २४६ । 'पॄ पालनपूरणयो' रित्यस्य धातोः पूर्यते प्राप्यते पाल्यते च येन कार्यं तत्पूर्वम् । नंदी० १४१ । विशिष्टं पूर्वोपलब्धं चिह्नं पूर्वम् । अनु० २१३ । पूर्वं-चतुरशीतिः पूर्वाङ्गशतसहस्राणि । जीवा० १४५ । पूर्वश्रुतप्रत्याख्यानम् । आव० ४७९ । पूर्वं-कारणम् । दश० ८२ । 'पॄ पालनपूरणयो' रित्यस्य धातोः पूर्यते प्राप्यते च येन कार्यं तत्पूर्वं औणादिको-वक्प्रत्ययः, कारणमित्यर्थः । नंदी० १४१ । पूर्वाङ्गमेव चतुरशीतिलक्षगुणितं पूर्वम् । ठाणा० ८६ । उस्सगो । नि० चू० तृ० १४६ अ । चतुरशीतिः पूर्वाङ्गशतसहस्राणि यानीति गम्यते तदेकं पूर्वम् । ज० प्र० ९१ । चतुरशीत्या लक्ष्यैः पूर्वाङ्गैः पूर्वम् । अनु० १०० । पूर्वः-अतीतः । प्रज्ञ० ५०९ । पूर्वः-कालमानविशेषः । भग० २७५ । पूर्वः । भग० ८८८ । पर्व्व-पौर्णमासिरमावासिश्च । भग० ५७७ । पूर्वं-अतिक्रान्तम् । आचा० १६७ । पूर्वः-असंयमोऽनादिभवाभ्यासात्तेन । आचा० १९२ ।

पुव्वकालियवयणं-पूर्वकालिकवचनं-वक्तुकामस्य वचनाद् यत् पूर्वतरमभिधीयते पराभिप्रायं लक्षयित्वा तत्पूर्वकालिकं वचनम् । प्रश्न० ३० ।

पुव्वकीलिय-स्त्र्यादिभिरेव पूर्वकालभावि दुरोदरादिरमणात्मकं पूर्वक्रीडितम् । उत्त० ४२६ । पूर्वक्रीडितं-गृहस्थावस्थायां द्यूतादिरमणलक्षणम् । ठाणा० ४४५ । पूर्वक्रीडितं-गृहस्थावस्थाश्रयं द्यूतादिक्रीडनम् । प्रश्न० १४० ।

पुव्वग-श्रामण्यपूर्वकम् । ओघ० २०३ ।

पुव्वगत-सर्वश्रुतात्पूर्वं क्रियन्त इति पूर्वाणि उत्पादपूर्वादीं चतुर्दशः तेषु गतः-अभ्यन्तरीभूतस्तस्य भावः पूर्वगतः । ठाणा० ४९१ । पूर्वगतं-दृष्टिवादाङ्गभागभूतानि तेषु गतं प्रविष्टं तदभ्यन्तरीभूतं तत्स्वरूपं यच्छ्रुतं तत्पूर्वगतम् । ठाणा० ११७ ।

पुव्वगय-तेषु गतं-प्रविष्टं यत् श्रुतं तत्पूर्वगतं-पूर्वाण्येव । ठाणा० २०० । तीर्थकरः तीर्थप्रवर्त्तनाकाले गणधराणां सर्वसूत्राधारत्वेन पूर्वं-पूर्वगतम् । सम० १२८ ।

पुव्वट्ठिया-पूर्वस्थिताः-क्षेत्रप्रत्युपेक्षकाः । ओघ० ९४ ।

पुव्वण्हिकाइकाला-पूर्वाह्णादिकालः । उत्त० २२६ ।

पुव्वण्हिय-पौर्वाह्णिकम् । आव० ३६६ ।

पुव्वतराय-पूर्वमेव । आव० ७२५ ।

पुव्वतव-पूर्वतपः-सरागावस्थाभावि तपस्या । भग०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३८ ।

पुव्वतवसंजमा-सामादियं छेदोवट्ठावणियां परिहारविसुद्धियं सुहुमसंपरागं च, एते पुव्वतवसंजमा । नि० चू० द्वि० ७ अ ।

पुव्वदारयं-यस्मिन् नक्षत्रे पूर्वस्यां दिशि गच्छतः प्रायः शुभमुपजायते तन्नक्षत्रं पूर्वद्वारकम् । सूर्य० १७४ ।

पुव्वदारिआ-अभिजिदादीनि सप्तदशनक्षत्राणि पूर्वद्वारिकाणि, पूर्वदिशि येषु गच्छतः शुभं भवति । सम० १३ ।

पुव्वदारिता-पूर्वद्वारिकाणि पूर्वस्यां दिशि गम्यते येष्वित्यर्थः । ठाणा० ४१४ ।

पुव्वदेस-पूर्वदेशः । आव० २९५ ।

पुव्वधर-पूर्वाणि धारयतीति पूर्वधरः-दशचतुर्दशपूर्ववित् । आव० ४८ ।

पुव्वपक्ख-पूर्वपक्षः । आव० ३१९ ।

पुव्वपच्छिमं-पूर्वपश्चिमम् । जीवा० २८६ ।

पुव्वपडिलेहिए-गहितो । नि० चू० द्वि० १४७ आ ।

पुव्वपयव्वाहय-पूर्वपदव्याहतं-पूर्वपदं-देवस्वं व्यभिचरति । विशे० ८८५ ।

पुव्वपरिच्चओ-पूर्वपरिचयः । आव० ३४३ ।

पुव्वमहाकडे-यान्येकखण्डानि अतूर्णितानि च तानि यथाकृतानि पूर्व-प्रक्षालयति । ओघ० १३२ ।

पुव्वरत-पूर्वरतं-गृहस्थावस्थायां स्त्रीसम्भोगानुभवनम् । ठाणा० ४४५ ।

पुव्वरत्त-पूर्वरात्रः-रात्रेः पूर्वो भागः । भग० १२७ । रत्तीए पढमो जामो । दश० चू० १६४ आ ।

पुव्वरत्तावरत्त-रात्रेः पूर्वभागे पश्चाद्भागे वेति, पूर्वरात्रापररात्रकालसमयः । विपा० ८६ ।

पुव्वरत्तावरत्तकाल-रात्रौ प्रथमचरमौ प्रहरौ । दश० २८३ ।

पुव्वरत्तावरत्तकालसमय-प्रदोषसमयः-प्रातःसमयः । जीवा० १९३ ।

पुव्वरयं-पूर्वरतं-गृहस्थावस्थाभाविनी कामरतिः । प्रश्न० १४० ।

पुव्वराय-पूर्वरात्रं-रात्रेः प्रथमो यामः । आचा० २१० ।

पुव्वव-पूर्ववत्-पूर्वोपलब्धविशिष्टचिह्नद्वारेण गमकथनम् । अनु० २१३ ।

पुव्वविढत्तं-पूर्वार्जितम् । आव० ५५८ ।

पुव्वविदेह-पूर्वस्यां दिशि विदेहः पूर्वविदेहः । ठाणा० ६८ । नीलवर्षधरपर्वते कूटम् । ठाणा० ७२ । पूर्वविदेहो यो मेरोर्जम्बूद्वीपगतः प्राग्विदेहः । ज० प्र० ३२० । पूर्वविदेहाधिपकूटम् । ज० प्र० ३७७ । पूर्वविदेहः । आव० ११७ । जम्बूद्वीपे पूर्वविदेहः । ज्ञाता० २४२ ।

पुव्वविदेहकूड-निषधवर्षधरपर्वते पूर्वविदेहपतिकूटम् । ज० प्र० ३०८ ।

पुव्वविसारया-पूर्वविशारदाः-पूर्वेषु विपश्चितः । आव० २६ ।

पुव्ववेताली-पूर्ववैताली पूर्वसमुद्रतीरम् । प्रज्ञा० ३२७ ।

पुव्ववेतालीया पूर्ववैतालिका । दश० ५५ ।

पुव्वसंगइय-पूर्वसङ्गतिकः । ओघ० १५९ । पूर्वसङ्गतिकः । आव० २९१ ।

पुव्वसंगतिए-पूर्वसङ्गतिकः । ज्ञाता० ३४ ।

पुव्वसंगतिय-पूर्वसङ्गतिकः-गृहस्थत्वे परिचितः । भग० १६७ ।

पुव्वसंजोग-पूर्वसंयोगः मातापित्रादिभिः । आचा० ४१ । पूर्वसंयोगः पूर्वमितृपित्रादिभिः संयोगः-[illegible] पूर्वसंयोगः । उत्त० २९० ।

पुव्वसंठिती-पूर्वसंस्थितिः-भवितव्यता । आव० ८२४ ।

पुव्वसंथव-पूर्वसंस्तवः-मात्रादिकल्पनया परिचयकरणम् । पिण्ड० १२१ ।

पुव्वसंथुया-पूर्व-वाचनादिकालदारतः संस्तुतः-परिचितः सम्यक्स्तुता वा पूर्वसंस्तुता । उत्त० ६५ ।

पुव्वसंलत्त-पूर्वसंलप्तः । आव० ७२५ ।

पुव्वसूर-पूर्वसूर्यं-पूर्वाह्णः । आव० १३५ ।

पुव्वहोत्त-पूर्वाभिमुखः । आव० २९० ।

पुव्वा-जिगमिषितदिशं गच्छतोऽभिमुखा दिक् पूर्वा । ज० प्र० ५२७ । पूर्वा । आव० ६३० ।

पुव्वाइ-पूर्वाणि-प्रभूतानि वर्षाणि । आचा० २४५ ।

पुव्वाउत्त-पूर्वमेव दण्डधारिघोषणानन्तरमुपयुक्तः । ओघ० २०३ । आगमनात् पूर्वं तुल्यमारब्धो रन्धनायाः । आगमनात् पूर्वं पाकाय सभीहितम् । आगमनात् पूर्वं गृहस्थैः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वभावेन राज्यमानः । व्य० द्वि० १३५ आ । पूर्वायुक्तं पूर्वतप्तम् । बृ० प्र० २६८ आ ।

पुव्वाआसाढा-नक्षत्रम् । ठाणा० ७७ ।

पुव्वाणुन्ना-यो अवग्रहः पुरातनसाधुभिरनुज्ञापितः स यत्याश्रार्त्यैरेवमेव परिभुज्यते । न भूयोऽनुज्ञाप्यते सा पूर्वानुज्ञा । बृ० प्र० १०८ आ ।

पुव्वाणुपुव्वि-पूर्वश्च स पूर्वानुपूर्वः एत्थ णिवरिसणं एक्कगस्स दो अणु तेयगितस्स पुव्वादुग्गसतित्ति अणुतेयचउक्कगस्स पुव्वो अहवा पूर्वं वा अनुपूर्वः स एव पूर्वानुपूर्वी-अणुपरिवाडी । नि० चू० तृ० १३५ आ ।

पुव्वाणुपुव्वी-पूर्वः-प्रथमस्तसमादारभ्यानुपूर्वी-अनुक्रमः परिपाटीः-निक्षिप्यते-विरच्यते यस्यां सा पूर्वानुपूर्वी । अनु० ७३ ।

पुव्वापोट्ठवता-पूर्वा प्रौष्ठपदा । सूर्य० १३० ।

पुव्वाफग्गुणी-पूर्वाफाल्गुनी । सूर्य० १३० ।

पुव्वालोइयकवडो-पूर्वालोचितकपटः । आव० ४०१ ।

पुव्वावर-पूर्वापरः । सूर्य० १५५ ।

पुव्वावरण्हकालसमय-प्रत्यपराह्णकालसमयो-विकालः । ज्ञाता० ६० । पाश्चात्यापराह्णकालसमयः-दिनस्य चतुर्थप्रहरलक्षणः । निरय० २७ ।

पुव्वा[illegible]त्तं-पुव्वसुत्तनिबद्धो पच्छासुत्तेण अविरुज्झमाणो पुव्वावरसुत्तं । नि० चू० द्वि० ३६ अ ।

पुव्वासाढाणक्खत्तं-पूर्वाषाढानक्षत्रम् । सूर्य० १३० ।

पुव्वाहारिय-पूर्वाहृतः-पूर्वकाल एकीकृतः सङ्गृहीतः अभव्यहृतो वा । भग० २३ ।

पुव्वाहूत्त-पूर्वमुखः । आव० २१५ ।

पुव्विव-पूर्वं-पूर्वानुभूतम् । आचा० १६७ ।

पुव्विआ-पूर्विका कारणिका । नंदी० १६० ।

पुव्वियावणं-कान्दविकापणम् । आव० ४१७ ।

पुव्वुच्चिय-पूर्वावचितः-प्राग्गृहीतः । आव० ५३७ ।

पुव्वुट्ठाइ-पूर्व-प्रव्रज्या अवसरे संयमानुष्ठानेनोत्थातुं शीलमस्येति पूर्वोत्थायी । आचा० २०९ ।

पुव्वुत्तरा-पूर्वोत्तरा । आव० ६३० ।

पुव्वुद्दिट्ठं-आयरिएण जीवं तेण उद्दिट्ठं तं । नि० चू० तृ० २९ अ ।

पुव्वेल्लयं- । ओघ० १८८ ।

पुव्वोवट्ठपुराण-पूर्वमुपस्थ-उपस्थितः पूर्वोपस्थितः स चासो पुराणश्च पूर्वोपस्थपुराणः । व्य० द्वि० ४४६ अ ।

पुस्कलः-समर्थः । आचा० ४८ ।

पुस्तका-कम्बिका । जीव० २३७ ।

पुस्पक-यानविमानम् । प्रश्न० ६५ ।

पुस्पकेतु-पुस्पपुरनगरे राया । बृ० प्र० २१८ आ ।

पुस्पचूल-पुस्पकेतुः पुत्रः । बृ० प्र० २१८ आ ।

पुस्पचूला-पुस्पवत्याः पुत्री । नंदी० १६६ ।

पुस्पपुर-पुस्पकेतो राजधानी । बृ० प्र० २१८ आ ।

पुस्पफलोकुसुम-कूष्माण्डीकुसुमम् । जीवा० १६१ ।

पुस्पमाण-नाट्यविशेषः । ज० प्र० ४१४ ।

पुस्पमालिनी-वापीनाम । ज० प्र० ३७१ ।

पुस्पमित्र-तगरायामाचार्यस्य शिष्यः । व्य० प्र० ३१७ ।

पुस्पलम्बूसक-गण्डूकः । राज० १०४ । गण्डूकः । जीवा० २५३ । गेन्दूकः । ज० प्र० २७५ ।

पुस्पवती-वापीनाम । ज० प्र० ३७१ । पुस्पचूलामाता । नंदी० १६६ ।

पुस्पा(पुंस्फ)लिका-सुवर्णयूथिका । प्रज्ञा० ३६३ ।

पुस्पावलिः-नाट्यविशेषः । ज० प्र० ४१४ ।

पुस्पोत्तर-दशमदेवलोके विमानः । सम० १०६ ।

पुस्पोत्तरा-वापीनाम । ज० प्र० ३७१ ।

पुस्पमित्रः- । व्य० द्वि० १७० आ ।

पुसकोइलगं-पुंसकोकिलगं-पुमांश्चासौ कोकिलश्च परपुष्टः पुंस्कोकिलकः । ठाणा० ५०२ ।

पुस्स-सुविधिनाथप्रथमभिक्षादाता । सम० १५१ । पुष्यः-सुविधिजिनप्रथमभिक्षादाता । आव० १४७ ।

पुस्सभूती-पुष्यभूतिः-सूक्ष्मेध्याने कुशल आचार्यः । व्य० प्र० १६८ आ । २०० आ ।

पुस्सायण-पुष्यायनं रेवतीगोत्रम् । जं० प्र० ५०० ।

पुस्सायणसगोत्त-पौष्यायनसगोत्रं रेवतीनक्षत्रगोत्रम् । सूर्य० १५० ।

पुहत्त-पृथक्त्वं-भिन्नत्वम् । विशे० ४६१ । पृथक्त्वं-भेदः । विशे० ६२१ । पृथक्त्वम् । विशे० ४६२ । पृथक्त्वं-पृथगेव । विशे० ४६१ । पृथक्त्वं-विस्तारः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दश० चू० १६ आ । पृथक्त्वं-द्विप्रभृतिरानवम्यः । जीवा० ४० । पृथक्त्वं-बहुः । जीवा० ११६ । पृथक्त्वं-द्विप्रभृतिरानवम्यः । प्रज्ञा० २६६ ।

पुहत्तमत्थ-अर्थपृथक्त्वं-श्रुतज्ञानसंज्ञा । विशे० ४६२ ।

पुहविविजयलंभ-पृथ्वीविजयलाभमिति । जं० प्र० २१३ ।

पुहवी-पृथिवी-शातवाहनस्याग्रमहिषी । व्य० द्वि० १६८ अ । सुपार्श्वनाथमाता । सम० १५१ । तृतीयवासुदेवमाता । सम० १५२ । पृथिवी-पाश्चात्यरूचकवास्तव्या तृतीया दिक्कुमारी महत्तरिका । जं० प्र० ३६१ । पृथ्वी-पश्चिमरुचकवास्तव्या दिक्कुमारी । आव० १२२ । पृथ्वी-सुपार्श्वमाता । आव० १६० । पृथ्वी-स्वयम्भूवासुदेवजननी । आव० १६२ । पृथिवी-इन्द्राग्निवायूभूतीनां माता । आव० २५५ ।

पुहुत्तं-पृथक्त्वं-बहुत्वम् । भग० २३१ । पृथक्त्वं-द्विप्रभृतिरानवम्यः । आव० ३६३ । पृथक्त्वं-एकद्रव्याश्रितानामुत्पादादिपर्यायाणां भेदः पृथुत्वं वा विस्तीर्णभावः । ठाणा० १६१ । पृथक्त्वं-द्विप्रभृतिरानवम्यः । भग० २६ । पृथक्त्वं-द्विप्रभृतिरानवम्यः । भग० ३१ । पृथक्त्वं-द्विप्रभृतिरानवम्यः । आव० ३१ । पृथक्त्वं-बहुत्वं सामस्त्यापेक्षया । उत्त० ६८६ । पृथक्त्वं-समयपरिभाषया द्विप्रभृत्यानवम्यः । विशे० ३२१ । पृथक्त्वं-अनेकत्वं यमलशङ्खादिशब्दवत् । ठाणा० ४७१ ।

पुहुत्तवियक्के सविआरी-पृथक्त्वेन-एकद्रव्याश्रितानामुत्पादादिपर्यायाणां भेदेन वितर्को-विकल्पः पूर्वगतश्रुतालम्बनो नानानयानुसरणलक्षणे यत्र तत् पृथक्त्ववितर्कं, तथा विचारः-अर्थाद्व्यञ्जने व्यञ्जनादर्थे मनःप्रभृतियोगानां चान्यस्मादन्यतरस्मिन् विचरणं सह विचारेण यत्तत्सविचारि । ओप० ४४ ।

पुंठी-चक्रपरिधिरूपं पृष्ठम् । जं० प्र० २११ ।

पूः-शरीरम् । विशे० ८६४ ।

पूअ-पूजां-वस्त्रपात्रादिभिः सपर्याम् । उत्त० ४१६ । **पुंयं**-कर्णिकादिमयम् । दश० १७६ ।

पूअण-पूजनं-विशिष्टवस्त्रादिभिः प्रतिलाभनम् । उत्त० ६६८ ।

पूअणट्ठा-पूजार्थं-स्वपक्षपरपक्षाभ्यां सामान्येन पूजा भविष्यन्ति । दश० १८७ ।

पूअणवत्तिया-पूजनप्रत्ययं-अभ्यर्च्चननिमित्तम् । आव० ७८६ ।

पूअफलि-पूगफली-क्रमुकतरुः । ज० त्र० ६८ ।

पूआ-पूजा-वस्त्रमाल्यादिजन्या । आव० ४०६ ।

पूइंतराणि-पूत्यन्तराणि-देहस्य मध्ये पूतिविशेषान् । आचा० १३७ ।

पूइअ-पूजितं-सेवितं आचरितम् । दश० १८६ । पूतं-निर्बुसीकृतम् । जं० प्र० २४४ ।

पूइआलुगं- । आचा० ३४८ ।

पूइएइ- । भग० ४५५ (?) ।

पूइकड-पूतिकृतं-आधाकर्मादिसिक्थेनाप्युपसृष्टम् । सूत्र० ४१ ।

पूइकम्म-पूतिकर्म-सम्भाव्यमानाधाकर्मावयवसंमिश्रलक्षणम् । दश० १७४ ।

पूइपिन्नाग-पूतिपिन्नागं-कुथितखलम् । आचा० ३४८ । पूतिपिण्याकं सर्षपखलम् । दश० १८५ ।

पूइम-पूज्यः । दश० २७५ ।

पूइय-वृक्षविशेषः । भग० ८०३ । पूतिः-एकास्थिकवृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३१ । पूजितः पूष्पादिना । भग० ५८२ । पूजितः सुगन्धिपुष्पप्रकरप्रक्षेपादिना । द्रव्यस्तवेन । नंदी० १६२ ।

पूइयपूता-पूजितेन पूजा पूजितपूजा । आव० २३५ ।

पूइया- । नि० चू० प्र० २४४ अ ।

पूई-पूति-कुथितं स्वस्वभावचलितम् । जीवा० २८२ । पूतीः-परिपाकतः कुथितगन्ध पक्वरक्तं वा पूतिः । उत्त० ४५ ।

पूईकम्म-पूतिकर्म-पूतीकरणम् । पिण्ड० ८२ ।

पूए-समूर्च्छिममनुष्योत्पत्तिस्थानम् । प्रज्ञा० ५० ।

पूगफलं-तंबोलपत्तसहिया खायइ, तंबोलदव्वं । नि० चू० द्वि० ६० अ । आव० ८१६ ।

पूजयंत-पूजयतः । विशे० ११४० ।

पूजयामु-पूजयामः-सत्कारयामः । सूत्र० ८७ ।

पूजिय-पूजितं श्लाघितम् । बृ० द्वि० २८७ अ ।

पूज्ज-पूजयितुमर्हः पूज्यः आचार्यादिः । उत्त० ६५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूण्णभद्द-चंपायां चैत्यम् । ज्ञाता० १५६ ।
पूतणा-पूतना-कृष्णपितृवैरिणी विकुर्वितगन्त्रीरूपा विद्याधरयोषित् । प्रश्न० ७५ ।
पूतनी- । व्य० प्र० २१७ अ ।
पूतफलिवण-पूगीफलवचनम् । जीवा० १४५ ।
पूतरक-उदकाश्रितजीवः । आचा० ४६ ।
पूतरग-बूतरकः-अप्काये जीवविशेषः । आव० ८३१ ।
पूता-पूजा स्तवादिरूपा । ठाणा० ३५८ ।
पूतासक्कार-पूजा-स्तवादिरूपा तत्पूर्वकः सत्कारो-वस्त्राभ्यर्चनं, पूजायां वा आदरः पूजासत्कारः । ठाणा० ३५८ । पूजासत्कारं-पुष्पाच्चंनवस्त्राद्यर्चनम् । ठाणा० ३८६ ।
पूति-वावण्णं-विणट्ठं कुहितं । नि० चू० प्र० १२८ अ । पूतिः-कुथितः । उत्त० २८४ ।
पूतिकेश- । उपा० ६ ।
पूतिगन्धय-अशुचिः । सम० १३६ ।
पूतित-अविसोधिकोटिदोसजुएणं सम्मिस्सं पूतितं भण्णति । नि० चू० प्र० १२८ अ ।
पूतिय-सिद्धत्थपिंडगो । दश० चू० ८६ । पूतिकं-जीर्णतया कुथितप्रायम् । ज्ञाता० १६० । शुद्धमपि कर्माद्यवयवैरपवित्रीकृतं पूतिकम् । ठाणा० ४६० ।
पूत्कृतः- । विशे० २७४ ।
पूपलिय-पूपलिका । बृ० प्र० ७५ आ ।
पूपा-अपूपः-भक्ष्यपिष्टपदार्थः । पिण्ड १५४ ।
धूपिकापण-आपणः । नंदी० १५० ।
पूपूरपुण्णा- । नि० चू० प्र० १३६ आ ।
पूय-यद् आधाकर्मावयवसंपृक्तं शुद्धमप्याहारजातं पूति भवति तद् । सूत्र० १८० । रुतं । नि० चू० द्वि० ६१ अ । पूतिः-अशुचिविशेषः । प्रज्ञा० ८० । पूतिकं-कुथितम् । भग० ४७० । पूयम् । आचा० ३५२ । पूयम् । ज्ञाता० ४६ ।
पूयइ-आपूपिकः । नंदी० १६५ ।
पूयण-पूजनं वस्त्रादिलाभरूपम् । सूत्र० ७४ । पूजनं-गन्धमाल्यादिभिः समभ्यर्चनम् । जं० प्र० ३६८ । पूजनं-गन्धमाल्यादिभिरभ्यर्च्चनम् । आव० ७८७ । वस्त्रादिदाणं । दश० चू० १६३ आ । पूजनं-गन्धमाल्यादिभिः समभ्यर्चनम् । राज० २७ ।
पूयणा-पूतना-दुष्टव्यन्तरी । पिण्ड० १२६ । पूतना-डाकिनी गडुहिका वा । सूत्र० १०० । पूजना-कामविभूषा । सूत्र० १०० । पूतवा । नि० चू० द्वि० ६५ आ ।
पूयणिअ- । ओघ० १३७ ।
पूयणिज्जं-पूजनीयं पुष्पैः । औप० ५ । पूजनीयं-वस्त्रादिभिः । सूर्य० २६७ ।
पूयणिज्जाओ- । भग० ५०५ ।
पूयफल-वृक्षविशेषः । भग० ८०३ ।
पूयफली-वलयविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।
पूयरअ-पूतरकः । आव० ६२५ ।
पूयलग-पूपम् । आव० ८१४ । व्य० प्र० १०७ अ ।
पूयलिय-पूपलिका । आव० ६२१ ।
पूयलियाखाओ-पूपलिकाखादकः-अव्यक्तवाक्वृद्धः । बृ० द्वि० ५६ ।
पूया-पूजनं पूजा-द्रविणवस्त्राशनसत्कारप्रणामसेवाविशेषरूपा । आचा० २६ । पूता-पवित्रा पूजा वा भावतो देवतार्चनम्, अहिंसायाः सप्तपञ्चाशत्तमं नाम । प्रश्न० ६६ । पूजा-प्रशस्तमनोवाक्कायचेष्टा । आव० ५११ । पुष्पादिपूजनम् । ठाणा० ५१५ । पूजा-उचितप्रतिपत्तिरूपा । उत्त० ३४४ । असणपाणखातिमसातिमवस्थकम्बलातो जस्स वा जं पाउग्गं तेण से पडिलाभणं पूया । नि० चू० प्र० १३ आ । पूजनार्हः-उपाध्यायः गुरुर्वा, गुरोः सम्बन्धिपितृव्यादिः । बृ० द्वि० २८१ अ । पूजनार्हः-उपाध्यायः गुरुः पितृव्यादिर्वा । बृ० द्वि० १६ आ । सादरस्निग्धमधुरभोजनादिरूपा । बृ० तृ० १२४ अ । पूज्याः-स्वामिकलाचार्यादयः । बृ० द्वि० २०० आ । पूजा-पुष्पादिभिः । ठाणा० १३७ ।
पूयासंसप्पतोग-पूजा-पुष्पादिपूजनं मे स्यादिति पूजाशंसाप्रयोगः । ठाणा० ५१५ ।
पूयाहिज्ज-पूजाहार्यः । ठाणा० ३४२ । पूजाहार्यः-पूजितपूजकः । पिण्ड० १३१ ।
पूरंती-पूरयंती । बृ० प्र० ५६ आ ।
पूर-पूरः-पूर्णता । उत्त० ३०५ । पूरः-क्षीरप्रवाहः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्त० ६५३ । पूर्णम् । आव० ८२६ । पूरः-समूहः । प्रश्न० ६२ ।

पूरण-पूरणा-असुरकुमारगतिशक्तिप्ररूपणायां विन्ध्यपादमूले 'वेभेले'-नामकसन्निवेशे गाथावती । भग० १७१ । पूरणः-अन्तकृद्दशानां द्वितीयवर्गस्य सप्तममध्ययनम् । अन्त० ३ । कर्णमलादिना भरणम् । आव० ७६४ । अन्तकृद्दशायां प्रथमवर्गस्य सप्तममध्ययनम् । अन्त० ३ । भगवत्यामभिहितो बालतपस्वी । उपा० १५ । महाबलबालवयंसकः । ज्ञाता० १२१ ।

पूरणतापसः-कूणिकजीवावस्थानान्तरम् । भग० ३२२ ।

पूरयंतीपर्षद्-अधीतश्रुता । बृ० ५० (?) ।

पूरावेरयं-पूरः-पूर्णता अवरेको-रिक्तताऽनयोः समाहारे पूरावेरकम् । उत्त० ३०५ ।

पूरिअ-पूरितं-परिपूर्णव्याप्तम् । प्रभूतीकृतं स्वप्रमाणमानीतं स्वव्यक्तौ समर्थीकृतं वा । नंदी० १८० ।

पूरितगण्डपार्श्व-रूपवान् । ओघ० १८३ ।

पूरिम-पूरिमं-मृन्मयमनेकछिद्रं, वंशशलाकादिपञ्जरं वा यत्पुष्पैः पूर्यत इति । ठाणा० २८६ । येन वंशशलाकामयपञ्जरकादि कूर्चादि वा पूर्यते । भग० ४७७ । येन वंशशलाकादिमयपञ्जरी पूर्यते । जीवा० २५३ । यल्लघुच्छिद्रेषु पुष्पनिवेशेन पूर्यते । जीवा० २६७ । पूरणेन निर्वृत्तं पुष्पपूरितवंशपञ्जरकरूपशेखरकवत् । प्रश्न० १६० । पूरिमं-यल्लघुच्छिद्रेषु पुष्पनिवेशेन पूर्यते । ज० प्र० १०४ । पूरिमं-येन वंशशलाकामयपञ्जरकादिकूर्चादि वा पूर्यते । ज्ञाता० ५३ । पूरिमं-भरिमं-पित्तलादिमयप्रतिमावत् । अनु० १२ ।

पूरिमा-गान्धारग्रामस्य तृतीया मूर्च्छना । ठाणा० ३६३ । गान्धारस्वरस्य तृतीया मूर्च्छना । जीवा० १६३ ।

पूरिमाणि-यान्यन्तः पूरणेन पुरुषाद्याकृतीनि भवन्ति । आचा० ४१४ ।

पूरी-पूरिका-स्थूलशणगुणमयपदार्थिका । बृ० द्वि० २२० अ ।

पूरेइ-पूरयति-व्याप्नोति । आचा० ८६ । पूरयति-परिपूर्णं करोति । भग० १२४ ।

पूरेसंथुया-पूर्वसंस्तुताः-पितृव्यादयः । आचा० ३५१ ।

पूर्ण-लोकपालः । ठाणा० २०५ ।

पूर्णभद्र-यक्षभेदविशेषः । प्रज्ञा० ७० ।

पूर्वगत-दृष्टिवादे तृतीयभेदः । सम० ४१ ।

पूर्वदेश-धान्यपूरकाभिधानसन्निवेशः । आचा० २०२ ।

पूर्वधरता-लब्धिविशेषः । ठाणा० ३३२ ।

पूर्वपदव्याहृत-गत्यागतिलक्षणभेदः । आव० २८१ ।

पूर्वपूर्व-चतुर्दशानां पूर्वाणामाद्यम् । दश० ८५ ।

पूर्ववत् त्रिविधानुमाने प्रथममनुमानम् । भग० २२ ।

पूर्वानुपूर्वी-आनुपूर्व्याः प्रथमो भेदः । ठाणा० ४ ।

पूर्वाषाढा-तोयमित्यवरनाम नक्षत्रम् । ज० प्र० ४६६ ।

पूलिय-पूलिका । नि० चू० प्र० ३५० अ ।

पूव-आर्द्रखाद्यम् । बृ० द्वि० १७८ अ । नि० चू० प्र० १४७ अ ।

पूवलगं- । नि० चू० प्र० ११ आ ।

पूविगा-पूवलगादि । नि० चू० तृ० ४५ अ ।

पूविय-आपूपिकः । आव० ३५४ ।

पूवियसाल-आपूपिकशाला । आव० ३६७ ।

पूव्व-पूर्वशब्दः पूर्वानुपूर्वीवाचकः । व्य० प्र० ११६ अ । पूर्वः-पूर्वशब्दश्चायमिह कारणपर्यायो द्रष्टव्यः । विशे० ७० । पूर्वः-असंयमोऽनादिभवाभ्यासः । आचा० १६२ । पूर्वं-अतिक्रान्तम् । आचा० १६७ ।

पूव्वपूरिस-पूर्वपुरुषः-अतीतनरः । ज्ञाता० ३ ।

पूव्वसूराओ- । आचा० ४२२ ।

पूस-षष्ठं नक्षत्रम् । ठाणा० ७७ । पुष्पः-सामुद्रिकपुरुषविशेषः । आव० १६६ । पुष्यः-प्रभासजन्मनक्षत्रम् । आव० २५५ । पुष्यः-नक्षत्रविशेषः । ज्ञाता० १३३ ।

पूसनंदी-पुष्पनन्दी-वैश्रमणदत्तराजकुमारः । विपा० ८२ । पुष्यनन्दी-युवराजः । विपा० ८५ ।

पूसफलं- । ओघ० १६० । पुष्पक (पुंस्क)लम् । प्रज्ञा० ३७ ।

पूसफलिका-वनस्पतिविशेषः । भग० ८०३ ।

पूसफली-वल्लीविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

पूसभूई-आर्यपुष्पभूतिः-ध्यानसंवरयोगविषये शिम्बावर्द्धननगरे बहुश्रुत आचार्यः । आव० ७२२ ।

पूसमाणव-पुष्पमाणवः-मागधः । ज० प्र० १४२ । मागधः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भग० ४८२ । पुष्पमाणवः-नग्नाचार्यः । ज्ञाता० ५८ । पूष्पमानवः-मागधः । औप० ७३ ।

पूसमित्त-पुष्यमित्रः-ध्यानसंवरयोगविषये आचार्य पुष्यभूतिशिष्यो बहुश्रुतः । आव० ७२२ । पुष्यमित्रः-कौशिकजीवः, स्थूणायां ब्राह्मणः । आव० १७१ । पूष्यमित्रः-तगरायामाचार्यशिष्यः । व्य० प्र० २५६ आ । नि० चू० प्र० ३३२ आ ।

पूसमीत्त-पुष्यमित्रं सद्व्यवहारकाचार्यः । व्य०प्र० २५६ ।

पूसियार-तेतलीपुरनगरे पुष्यकारः श्रेष्ठी । आव० ३७३ ।

पृथक्कृत-रूपादिभ्यो व्यावृत्तम् । विशे० १६१ ।

पृथक्त्ववितर्कसविचार-शुक्लध्यानप्रथमभेदः । आव० ६०३ ।

पृथक्त्वानुयोगः-अनुयोगद्वितीयभेदः, यत्र क्वचित् सूत्रे चरणकरणमिव क्वचित् पुनर्धर्मकथैवेत्यादि । दश० ४ ।

पृथक्प्रहेणार्थ- । सूत्र० ३०० ।

पृथग्भूत-उन्मुक्तः प्राबल्यमुक्तः । आव० ५०८ ।

पृथग्विमात्राः-पृथग् विविधा मात्रा येषूपसर्गेषु ते पृथग्विमात्राः-हास्यादित्रयान्यतरारब्धाः । आचा० २५५ ।

पृथुत्व- । विशे० ४९२ । नंदी ९१ ।

पृष्ठ-शरीराङ्गम् । आचा० ३८ ।

पृष्ठमांसकत्व-परोक्षस्यावर्णवादित्वम्, दशममसमाधिस्थानम् । प्रश्न० १४४ ।

पृष्ठवंश-पृष्ठकरण्डकः । जीवा० १५४ ।

पेंखोलमाण-प्रेङ्खोलमानः-चञ्चलम् । ज्ञाता० ३५ । पेङ्खोलमानं-दोलायमानम् । ज्ञाता० ३५ ।

पेंडिओ-मरहट्ठविसए फलाण कयलकप्पमाणाओ पेंडिओ । नि० चू० तृ० ३९ आ ।

पेआल-पेयालं-प्रमाणं सारः । आव० ४२३ ।

पेए-पेचकः-पुच्छमूलः । ठाणा० २०९ ।

पेक्खणं-प्रेक्षणं-रूढिवशात्साकारपश्यत्तायां चिन्त्यमानायां प्रदीर्घकालं अनाकारपश्यत्तायां चिन्त्यमानायां प्रकृष्टं परिस्फुटरूपमीक्षणम् । प्रज्ञा० ५३० ।

पेच्च-प्रेत्य-जन्मान्तरे । आचा० १६ ।

पेच्चभव-प्रेत्यभवः-जन्मान्तरम् । भग० ११५ ।

पेच्चा-ज्योतिष्केन्द्रसूर्यस्य बाह्या पर्षत् । जीवा० १७६ ।

पेच्चाभाविय-प्रेत्य-जन्मान्तरे भवति शुद्धफलतया परिणमतीत्येवंशीलं प्रेत्यभाविकम् । प्रश्न० ११० ।

पेच्चेह-आक्रमथ । भग० ३८१ ।

पेच्छंता-प्रेक्ष्यमाणा-दृश्यमाना । ज्ञाता० १३३ ।

पेच्छण-प्रेक्षणं-प्रेक्षणकम् । ज्ञाता० ९३ ।

पेच्छणघर-प्रेक्षणकगृहं-यत्रागत्य प्रेक्षणकानि विदधति निरीक्षन्ते च तत् । जीवा० २०० ।

पेच्छणयं-प्रेक्षणकम् । आव० ८१४ ।

पेच्छमाणो-प्रेक्षमाणा पश्यन्ती । ज्ञाता० ३८ ।

पेच्छयण-पेक्षणकम् । आव० ३६० ।

पेच्छा-'प्रेक्षा' इति पदैकदेशे पदसमुदायोपचारात् प्रेक्षागृहं-नाट्यगृहम् । ज० प्र० १२१ । प्रेक्षा-प्रेक्षणकं, कौतुकदर्शनोत्सुकजनमेलकः । ज० प्र० १२३ ।

पेच्छागिहसंठिअ-प्रेक्षागृहसंस्थितः । जीवा० २७९ ।

पेच्छाघर-प्रेक्षागृहं वास्तुविद्याप्रसिद्धम् । सूर्य० ६९ ।

पेच्छाघरमंडव-प्रेक्षा-प्रेक्षणकं तदर्थं गृहरूपो मण्डपः प्रेक्षागृहमण्डपः । ठाणा० २३० । प्रेक्षागृहमण्डपः । जीवा० २२८ । प्रेक्षागृहमण्डपः-रङ्गमण्डपः । ज० प्र० ३२३ । प्रेक्षागृहमण्डपः-प्रेक्षाः प्रेक्षणकं-तदर्थं गृहरूपो मण्डपः । ठाणा० २३१ ।

पेच्छाघरसंठिता-पेक्षागृहस्येव वास्तुविद्याप्रसिद्धस्य संस्थितं संस्थानं यस्याः सा । सूर्य० ६९ ।

पेज्जंजमाण-शब्दायमानम् । राज० ३९ ।

पेज्ज-प्रियस्य भावः कर्म्म प्रेम-अनभिव्यक्तमायालोभलक्षणभेदस्वभावमभिष्वङ्गमात्रम् । ठाणा० २६ । प्रेमः-अनभिव्यक्तमायालोभस्वभावमभिष्वङ्गमात्रम् । भग० ८० । प्रेयं-उष्णं सत् शीतम् । आव० ८५८ । प्रेमः । औप० ७९ । प्रेयः-प्रकर्षेण वा इज्या-पूजाऽस्येति प्रेज्यं प्रेयं । औप० ९५ । प्रियस्य भावः कर्म्म वा प्रेमः । ठाणा० २६ । प्रेमः-पुत्रादिविषयः स्नेहः । भग० ५७३ । दशमं पापस्थानकम् । ज्ञाता० ७५ ।

पेज्जणिस्सिया-प्रेमनिःसृता-यदतिप्रेमवशाद्दासोऽहं तवेत्यादि वदतो भाषा । प्रज्ञा० २५६ ।

पेज्जनिस्सिआ-प्रेमनिसृता-मृषाभाषाभेदः । दश० २०९ ।

पेज्जवत्तिता-प्रेमः-रागो वृत्तिः-वर्त्तनं रूपं प्रत्ययो वा-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हेतुर्यस्याः सा प्रेमवृत्तिका प्रेमप्रत्यया वा । ठाणा० ६८ । पेम्मराग इत्यर्थः, प्रेमप्रत्ययिकी विंशतिक्रियामध्ये अष्टादशी । आव० ६१२ ।

पेज्जा–पेया । आव० ८१४ ।

पेज्जामोल्लं–पेया(पोषण)मूल्यम् । आव० ४३३ ।

पेज्जायअ–पेयायायी । आव० ८१४ ।

पेटुक–वेणूकार्यविशेषः । सूत्र० ११७ ।

पेट्ठग– । नि० चू० प्र० २७२ अ ।

पेठीवंस–पृष्ठवंशः–उपरितनस्तिर्यक्यातो । बृ० प्र० ६२ ।

पेडा–पेटा–यस्यां तु साधुः क्षेत्रं पेटावच्चतुरस्रं विभज्य मध्यवर्त्तीनि गृहाणि मुक्ता चतसृष्वपि दिक्षु समश्रेण्या भिक्षामटति सा पेटा । बृ० प्र० २५७ अ । पेटा–वंशदलमयं वस्त्रादिस्थानम् । ठाणा० ३६६ । पेडिका इव चउकोणा । उत्त० ६०५ ।

पेडिया–पेटिका मञ्जूषा । आव० ५६१ ।

पेढ–पीठम् । आव० ५१३ ।

पेढाल–पेढालं–उद्यानविशेषः । आव० २१६ । नि० चू० द्वि० ४६ अ ।

पेढालग–पेढालकः विद्यासिद्धः परिव्राजकः । आव० ६८५ । पेढालकः–विद्यासिद्धः परिव्राजकः । आव० ६५ (?) ।

पेढालपुत्त–जम्बुद्वीपे आगमिन्यामवसर्पिण्यामष्टमतीर्थकृत् । सम० १५३ । पेढालपुत्रः–अनगारः, अनुत्तरोपपातिकदशानां तृतीयवर्गस्याऽष्टममध्ययनम् । अनुत्त० २ । पेढालपुत्रः–प्रधानः दर्शनवतोऽपि चारित्रेण विनाऽधरगतिं नरकगतिं प्राप्तिः । आव० ५३२ ।

पेढालपुत्त–प्रद्वेषे दृष्टान्तः । आचा० १४६ ।

पेणि–प्रेणी–हरिणीविशेषः । प्रश्न० ७० ।

पेम्माणुराग–सर्वज्ञप्रवचनप्रीतिलक्षणकुसुम्भादिरागेण रक्ता इव रक्ता । ज्ञाता० १०६ ।

पेयकाइय–प्रेतकायिकः–व्यन्तरविशेषः । भग० १६८ ।

पेयदेवतकाइय–प्रेतदेवकायिकः–प्रेतसत्कदेवतानां सम्बन्धी । भग० १६८ ।

पेया–महती काहला । राज० ४६ । ओघ० ६७ । यवागूः । बृ० प्र० २३४ आ ।

पेयापेया– (?)

पेयाल–रहस्यम् । संस्ता० । प्रमाणं–सारः । नंदी० १५६ । प्रमाणम् । नंदी० ५० । सारः–प्रधानः । उपा० ६ । पेयालः–सम्यग्विषश्रुतसूत्रार्थं इति तात्पर्यार्थः । व्य० प्र० ३३७ आ । परिमाणम् । व्य० प्र० २३७, २६२ ।

पेयालिय–विचारितः । विशे० ६३८ ।

पेरंत–पर्यन्तः । बृ० प्र० १४२ आ । पर्यन्तम् । आव० ६७४ । पर्यन्तं–बहिःप्रदेशः । जीवा० १९२ । पर्यन्तः । जीवा० २०४ ।

पेरंतचक्कपालं–पर्यन्तचक्रवालं बाह्यपरिधिः । प्रश्न० ६१ ।

पेरुउ–पव्वदेससहितं । नि० चू० तृ० २३ अ ।

पेलव–मृदुः । भग० ४७७ । पेलवः–प्रतनुः । व्य० द्वि० ४०८ आ । पेलवत्वं मृदुत्वलघुत्वलक्षणः । ज्ञाता० २७ । अहढम् । बृ० द्वि० २२४ अ । पेलवं–कोमलम् । ज० प्र० २७५ ।

पेलवगहणं–इमे अदिण्णदाणा जो आगच्छति तमो भासंति । नि० चू० प्र० १८४ अ ।

पेलवसत्त–पेलवसत्त्वा–तुच्छधृतिबलः । बृ० द्वि० ६० अ ।

पेला–अभिग्रहविशेषः । नि० चू० तृ० १२ अ । ओघ० १६७ ।

पेलु–रुतपूणिका । आव० ४५६ । रुतपूणिका । पिण्ड० ६२ । पेलुः–पूणिका । विशे० १२५६ । वलितं । नि० चू० प्र० २२८ आ ।

पेलुगा–साधारणबादरवनस्पतिकायविशेषः । प्रज्ञा० ३४ ।

पेलेज्जा– । औप० ६८ ।

पेल्ल–दरिद्रः । नि० चू० द्वि० ४५ अ । डिम्भः । विपा० ५४ ।

पेल्लए–अनुत्तरोपपातिकदशानां तृतीयवर्गस्य चतुर्थमध्ययनम् । अनुत्त० २ ।

पेल्लओ–प्रेरकः–प्रमाणभूतः । बृ० द्वि० १२८ अ ।

पेल्लण–प्रेरणं–विक्षेपणं आघातः । ओघ० १६२ । अक्कमणं । नि० चू० द्वि० ४८ आ ।

पेल्लणा–बलामोटिका । बृ० तृ० ५८ अ ।

पेल्लणया–प्रेरणा । बृ० प्र० ३०६ आ ।

पेल्लवा–अणालोइयपुव्वावरक्कारिणो पेल्लवा । नि० चू० द्वि० १२२ अ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पेल्लिओ-प्रेरितः । आव० १७३ ।
पेल्लिज्जिहिइ-प्रेरयेत् । आव० ६४ ।
पेल्लितं-लुण्ठितम् । आव० ८२२ ।
पेल्लितो-आक्रान्तः । नि० चू० प्र० १३७ अ ।
पेल्लिय-पेल्लियः-शिशुः । आव० ६७० । पातितम् । व्य० प्र० १८४ अ ।
पेल्लियमुह-प्रेरितमुखः-चम्पितमुखावयवोष्ठनासिकः । पिण्ड० १२३ ।
पेल्लु-पूणिकया वलितं रुतम् । बृ० द्वि० ११६ अ ।
पेल्लेइ-प्रेरयति-उल्लंघयति । आव० ६१७ ।
पेल्लेज्जा-प्रेरयेत्-अतिक्रामयेत् । ओघ० १४६ ।
पेल्लेयव्व-प्रेरणीयः । ओघ० १५ ।
पेस-प्रेष्यः भृत्यादिः । आचा० ६१ । प्रेष्यः-बलाद्विनियोज्यः । आव० ८३५ । प्रेष्यः-आरम्भेषु व्यापारणीयः । सम० २० । सिन्धुविषय एव, सूक्ष्मचर्मा: पशवः तच्चर्मनिष्पन्नम् । आचा० ३६४ । प्रेष्यः-प्रेषणयोग्यो भृत्यदेश्यः । सूत्र० ३३१ । प्रेष्यः-प्रेषणार्हो जनो दूतादिः । ज० प्र० १२२ । प्रेष्यः-शूद्रः । सूत्र० ४०३ । प्रेष्यः-प्रयोजनेषु प्रेषणीयः । प्रश्न० ६१ । प्रेष्यवर्जकः-श्रावकस्य नवमी प्रतिज्ञा । आव० ६४६ ।
पेसण-प्रेषणम् । आव० ३०३ । प्रेषणः-व्यापारः । बृ० द्वि० ४ अ । प्रेष्यः । उपा० १० ।
पेसणकारिआ- । ज्ञाता० ३६ ।
पेसपरिण्णाय-अष्टमी उपासकप्रतिमा । सम० १६ ।
पेसल-पेशल-सुश्लिष्टं, प्राणिनामहिंसादिप्रवृत्त्या प्रीतिकारणम् । सूत्र० ६४ । पेशलं आस्वादमनोज्ञत्वात् । जीवा० ३३१ । पेशलं-शोभनम् । आचा० २५८ । पेशलं-अतिमनोज्ञम् । उत्त० २६८ । पेशलः-मिष्टवाक्यो विनयादिगुणसमन्वितः । सूत्र० २३४ । पेसलः-मनोज्ञः । जीवा० ३५१ । सूक्ष्मचर्मपक्षोः चर्मसूक्ष्मपक्षनिष्पन्नम् । आचा० ३६४ ।
पेसला-पेशला-मनोज्ञा । प्रज्ञा० ३६४ ।
पेसवणप्पओग-प्रेष्यप्रयोगः-बलादिनियोज्यस्य प्रयोगः । आव० ८३४ ।
पेसा- । नि० चू० प्र० २५५ अ ।
पेसारंभ-प्रेषारम्भः । आव० ६४७ ।
पेसिता-प्रेष्याः । नि० चू० प्र० २७७ अ ।
पेसिया-पेशिका-खण्डम् । अनुत्त० ५ ।
पेसी-दोहागारा । नि० चू० द्वि० १२४ आ । अर्बुदजाता । तन्दुः । प्रलम्बानामूर्द्ध्वयिताः फालयः । बृ० प्र० १७६ आ । मांसपेसिका आम्रपेशिका वा । बृ० प्र० ३०६ आ ।
पेसुन-पैशुन्यं-पिशुनकर्म्म प्रच्छन्नं सदसद्दोषाभावनम् । ठाणा० २६ ।
पेसुन्न-पैशुन्यं-परोक्षे सतोऽसतो वा दोषस्योद्घाटनम् । प्रज्ञा० ४३८ । प्रच्छन्नं-असद्दोषाविष्करणम् । भग० ८० । चतुर्दशमं पापस्थानकम् । ज्ञाता० ७५ । पैशुन्यं-कर्णेजपत्वं, परगुणासहनतया तद्दोषोद्घट्टनम् । सूत्र० २६३ ।
पेसेल्लिया-प्रेष्यिका । आव० ३६७ ।
पेस्स-प्रेस्यः-आदेश्यः । प्रश्न० ४१ । प्रेष्यः-प्रेषणयोग्यः । जीवा० २८० । प्रेष्यत्वं यस्य स प्रेस्यः । प्रज्ञा० १०६ । प्रेष्यः-ये तथाविधप्रयोजने नगरान्तरादौ प्रेष्यते । ज्ञाता० ८८ । दासमादौ । नि० चू० द्वि० ६६ अ ।
पेस्सजण-प्रेष्यजनः-प्रयोजनेषु प्रेषणीयो लोकः । प्रश्न० ३८ ।
पेहइ-पश्यति । उत्त० ४५२ ।
पेहति-पश्यति । प्रज्ञा० ३०५ । प्रतिलेखयति प्रस्थापयति वा । आव० ७५६ ।
पेहमाणे-प्रेक्षमाणः । आव० १२४ ।
पेहा-प्रेक्ष्यतेऽनयेति प्रेक्षा दृष्टिः । दश० ६३ । आव० ७६८ । प्रेक्ष्य-आलोच्य प्रेक्षया वा । उत्त० ५८ । प्रेक्षा-प्रत्युपेक्षणा । बृ० द्वि० ६० आ । प्रेक्ष्य । नि० चू० द्वि० २२ आ । नि० चू० प्र० २७४ अ । वित्ता । दश० चू० ३८ अ ।
पेहाए-प्रेक्ष्य । भग० ७५४ । प्रेक्षितं-दृष्टम् । आचा० ३६५ ।
पेहावत्थं-प्रेक्षावस्त्रं प्रेक्षाऽऽलोकनं तत्पुरःसरं यद्वस्त्रादि याच्येत तत् । बृ० प्र० ६७ अ ।
पेहाहि-पेक्षस्व-निरूपय लभस्वेति । सूत्र० ११६ ।
पेहि-कथय । सूत्र० १४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पेहित्ता-प्रेक्ष्य । आव० ७८४ ।
पेहिय-प्रेक्ष्य । सूत्र० ५५ । प्रेक्षितं-अर्धकटाक्षनिरीक्षितादि । उत्त० ४२८ ।
पेहुजण-पृथग्जनो लोकः । बृ० प्र० ६ अ ।
पेहुण-पिच्छम् । बृ० द्वि० ६१ अ । मयूराङ्गगिरः । बृ० तृ० ३३ आ । मयूराङ्गमयी पिच्छिका । (?) । मयूराङ्गम् । प्रश्न० १६३ । प्रश्न० ८ । मयूरपिच्छम् । प्रश्न० १५२ । जीवा० १९१ । ज० प्र० ३५ । मयूराङ्गम् । प्रश्न० १६३ । मयूरपिच्छम् । राज० ३३ । नि० चू० प्र० ६० आ ।
पेहुणकलाव-मयूरङ्गकलापः । ज्ञाता० ९५ ।
पेहुणमिंजिया-पेहुणमिञ्जिका-मयूरपिच्छमध्यवर्त्तिनी-मिञ्जा । जीवा० १९१ । पेहुणं-मयूरपिच्छं तन्मध्यवर्त्तिनी मिञ्जा पेहुणमिञ्जा । प्रज्ञा० ३६१ ।
पेहुणहत्थ- । नि० चू० प्र० ६० आ ।
पेहे-पश्यति । ओघ० १२७ । निरूपयति । ओघ० १३३ ।
पेहेति-पडिलेहित्ति । नि० चू० प्र० २०८ अ ।
पोंड-पोण्डं-फलम् । प्रश्न० ८२ । पुण्डरीकं-पद्मम् । आव० ९६ । पोण्डं-अविकसितावस्थं कमलम् । विशे० ६१५ ।
पोंडमया-खोम्मा । नि० चू० प्र० २५४ आ ।
पोंडयं-पोण्डगं-वनीफलादुत्पन्नं कार्पासिकम् । विपा० १२ । पुण्डजम् । उत्त० ३४२ । कप्पासो । नि० चू० प्र० १२१ अ ।
पोंडरिगिणी-अञ्जनपर्वते पुष्करणी । ठाणा० २३० । ठाणा० ८० ।
पोंडरिय-पुण्डरीकं-श्वेताम्बुजम् । राज० ८ ।
पोंडरीअं-सप्तदशसागरोपमस्थितिकं देवविमानम् । सम० ३३ ।
पोंडरीगिणी-जम्बूमहाविदेहे पुक्खलावतीविजये राजधानी । ज्ञाता० १९१ ।
पोंडरीय-पुण्डरीकं-श्वेतपद्मम् । ज० प्र० २६ । पुण्डरीकं ज्ञातायां एकोनविंशतितमं ज्ञातम् । सम० ३६ । पोण्डरीकं-सिताम्बुजम् । जीवा० १७७ । पुण्डरीकः-लोमपक्षिविशेषः । जीवा० ४१ ।
पोंडरीयदल-पुण्डरीकदलं-सिताम्बुजपत्रम् । प्रज्ञा० ३६१ ।
पोंडरीयय-जलरुहविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।
पोंडरीया-लोमपक्षीविशेषः । प्रज्ञा० ४९ ।
पोंडा-कप्पासो । नि० चू० प्र० १९१ आ ।
पोअए-पोतः-बोहित्थः । आव० १२८ । प्रकर्षेण उतनं प्रोतः मुक्ताफलादीनां प्रोतनम् । आव० १२९ ।
पोअण-पोतनं-त्रिपृष्ठपुरम् । आव० १६२ । पोतनं-पुरुषोत्तमवासुदेवनिदानभूमिः । आव० १६३ टी० । प्रोतनं-प्रवेशनम् । आव० ४७४ ।
पोअणपुरं-पोतनपुरं नगरम् । आव० १७४, १७६ ।
पोअया-पोतं-वस्त्रं-तद्वज्जरायुर्वर्जितत्वाज्जाताः, पोतादिव वा बोहित्थाज्जाताः पोतजाः । ठाणा० ११४ ।
पोआई-पोताकी-शकुनिका, पोताकीविद्या । आव० ३१८ ।
पोइय-पोतितं-निमग्नम् । ओघ० ६४ ।
पोइयल्लय- । ओघ० १८० ।
पोइया-पोतिताः-त्रासिताः । बृ० प्र० ३१७ अ ।
पोक्कण-पोक्कणः-किलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेषः । प्रश्न० १४ ।
पोक्काउ- । नि० चू० प्र० १९२ अ ।
पोक्खरं-पुष्करम् । आव० २९९ ।
पोक्खरकण्णिआ-पुष्करकर्णिका-पद्ममध्यभागः । सम० १३७ ।
पोक्खरगय-पुष्करं-मृदङ्गमङ्गचादिभेदभिन्नं तद्विषयकं विज्ञानं पुष्करगतम् । ज० प्र० १३७ । अष्टमिकला । ज्ञाता० ३८ ।
पोक्खरणी-पुष्करणी-वर्तुला पुष्करवती । ज्ञाता० ६३, ६७ । पुष्करिणी पुष्करवती चतुष्कोणा वा । प्रश्न० ८ ।
पोक्खरत्थिभाय-पुष्करास्थिभागः कमलबीजविभागः । ज० प्र० २८४ ।
पोक्खल-पद्मकेसरम् । आचा० ३४९ । जलरुहविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।
पोक्खलत्थिभूय-जलरुहविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।
पोक्खलावती-जम्बूमहाविदेहे विजयः । ज्ञाता० १९१ ।
पोक्खली-श्रावस्त्यां श्रमणोपासकः । भग० ५५२ ।
पोग्गल-पुद्गलपरिणामनामाष्टमशतके प्रथमोद्देशकः । भग०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३२८ । पुद्गलविषयो द्वादशशतके चतुर्थोद्देशकः । भग० ५५२ । पुद्गलार्थाभिधायकः चतुर्दशशतके चतुर्थोद्देशकः । भग० ६३० । पुद्गलः-पूरणगलनधर्मा । आव० २५७ । पोग्गलं-मासम् । पिण्ड० २२ । पुद्गलः-जीवः । दश० ५० । पुद्गलं-मांसम् । आव० ७४० । पुद्गलः-मूर्तः । भग० १५० । पुद्गलम् । आव० ८५४ । पुद्गलाः-पूरणगलनधर्माणः । ठाणा० ३४ । पुद्गलाः-पूरणगलनधर्माणः-परमाण्वादयोऽनन्ताणुकस्कन्धपर्यन्ताः । अनु० ७४ । पुद्गलः-परमाणुः । भग० ६६ । पौद्गलं-मांसम् । विशे० १३९ । मांसम् । नि० चू० प्र० ३६ अ । पोद्गलं पुद्गलसमूहो मेघः । ठाणा० १४२ ।

पोग्गलगती-पुद्गलगतिः-विहायोगतेः पञ्चमो भेदः । प्रज्ञा० । ३२७ ।

पोग्गलपरिअट्ट-पुद्गलपरावर्त्तः-अनन्त उत्सर्पिण्यवसर्पिणीमानः । अनु० ९९ ।

पोग्गलपरियट्ट-पुद्गलानां-रूपिद्रव्याणामाहारकवर्जितानां औदारिकादिप्रकारेण ग्रहणतः एकजीवापेक्षया परिवर्त्तनं-सामस्त्येन स्पर्शः पुद्गलपरिवर्त्तः, स च यवता कालेन भवति स कालोऽपि पुद्गलपरिवर्त्तः । ठाणा० १५८ । अन्तसमयात्मकः । भग० ८८८ ।

पोग्गलपरियट्टा-पुद्गलद्रव्यैः सह परिवर्त्ताः-परमाणूनां मीलनानि पुद्गलपरिवृत्ताः । भग० ५६८ ।

पोग्गलरस-पुद्गलरसः । आव० ८५७ ।

पोग्गलादिण्णं-पुद्गलं-मांसं तेन सर्वमाकीर्णं-व्याप्तम् पुद्गलाकीर्णम् । आव० ७४० ।

पोग्गलिय-पौद्गलिकः-शाल्योदनः पिण्ड० १०० । दश० १७५ ।

पोग्गलुद्देस-भगवत्यां पुद्गलोद्देशकः । विशे० ६४७ ।

पोच्चड-पूर्णम् । नि० चू० द्वि० ४३ अ । विलीनम् । ज्ञाता० १७७ । अतिनिबिडम् । प्रश्न० १४ । असारम् ज्ञाता० ९४ ।

पोच्चडग-श्लथत्वम् । नि० चू० प्र० २८९ आ ।

पोट्ट-उदरम् । ओघ० १४८ । उदरम् । आव० ३१८, ३५३, ४३४, ८१६ । पृष्ठः । उत्त० १६८ । जठरः । उ० मा० गा० ४८८ । उदरम् । दश० ११ । उदरम् । ज० प्र० १२५ । जठरम् । उपा० २२ । उदरं । दश० चू० १२३ ।

पोट्टदरा-कडपल्लादि पोट्टाणि चेव पोट्टदरा । नि० चू० द्वि० १४७ आ ।

पोट्टल-भरः । तन्दु० ।

पोट्टलग-पोट्टलकः । ओघ० १०० ।

पोट्टलय-पोट्टलिकः । उत्त० २०९ ।

पोट्टलिका-वस्त्रैकदेशेन निबद्धं वस्तुजातम् । भग० ७९ ।

पोट्टलिया-पोट्टलिका । आव० ६९४ ।

पोट्टशाल-परिव्राजकविशेषः । बृ० प्र० १२४ अ ।

पोट्टसरणी-अतिसारः । आव० ६९८, ८१३ ।

पोट्टसाल-पोट्टशालः । उत्त० १६८ । पोट्टशालः-लोहपट्टबद्धपोट्टः-जम्बूवृक्षशालायोगात् लोके 'पोट्टशाल' इति नाम जातम् । विशे० ९८२ ।

पोट्टसूलं-पोट्टशूलं-उदरशूलम् । ओघ० २१७ ।

पोट्टिया-पोट्टिकः महोदरः जलोदरी । आव० ६७८ ।

पोट्टिल-अनगारविशेषः । ठाणा० ४५६ । राजपुत्रः । सम० १०६ । जम्बूभरते आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां नवमतीर्थंकृतः । सम० १५३ । प्रोष्ठिलः-प्रियमित्रचक्रिधर्माचार्यः । आव० १७७ ।

पोट्टिला-कलादमूषिकारश्रेष्ठिसुता । विपा० ८८ । पुष्पकारश्रेष्ठिदुहिता । आव० ३७३ । भद्राकालकयोः पुत्री । ज्ञाता० १८४ ।

पोट्टिल्ल-आगामिन्यामुत्सर्पिण्यां चतुर्थतीर्थंकृत्पूर्वभवनाम । सम० १५४ ।

पोट्ठवया-प्रोष्ठपदा उत्तरभद्रपदा । सूर्य० ११४ ।

पोट्ठवात-पोट्ठवए-पोष्ठपदः भाद्रपदः । सूर्य० १०७ ।

पोडइ-वृक्षविशेषः । भग० ८०३ ।

पोडइला-तृणविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

पोढ-प्रौढः-समर्थः । बृ० प्र० ६१ अ ।

प्रोढा-प्रौढा-समर्था । बृ० प्र० ६१ आ ।

पोणओ- । नि० चू० प्र० १२१ अ ।

पोत-पोतं-लघुबालोचितवस्त्रखण्डम् । पिण्ड० ९६ । अपक्खजायओ पक्खिसावो । दश० १२६ आ । पोतको-बालक इति वस्त्रम् । ठाणा० ४६५ । पोतजः-पोतमिव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वस्त्रमिव पोतादिव वा बोहित्थादिव जातः हस्त्यादिः । प्रश्न० ६० । वस्त्रम् । बृ० प्र० १४१ (?)

पोतजा-पोतजाः हस्तिवल्गुलीप्रभृतयः । ठाणा० ३८५ ।

पोतनपुर-शुद्धाहारगवेषणाहृष्टान्ते नगरम् । पिण्ड० ७५ । पोतनपुरः-परतीर्थिकवादस्थानम् । व्य० प्र० १८८ आ ।

पोतिए- । नि० चू० प्र० ३२७ आ ।

पोतितं-देशीवचनत्वात्त्रासितम् । बृ० प्र० २३१ आ ।

पोत्त-पोत्तं-वस्त्रम् । आव० ३९९ । वस्त्रम् । आव० ८२४ । वस्त्रम् । आव० ९० । वस्त्रम् । ओघ० ७२ ।

पोत्तग-ताड्यादिपत्रसङ्घातनिष्पन्नम् । आचा० ३९३ ।

पोत्ति-चिलिमिनीम् । ओघ० ९२ । वस्त्रम् । उत्त० ८ । मुखवस्त्रिका । ओघ० १३२ ।

पोत्तिय-पोतमेव पोतकं-कार्प्पासिकम् । ठाणा० ३३८ । कार्पासिकं-वस्त्रम् । बृ० द्वि० २०१ अ ।

पोत्तिया-वस्त्रधारिणः तापसविशेषः । निरय० २५ ।

पोत्ती-वस्त्रम् । आव० ३०७ ।

पोत्तीया-वस्त्रिका । आव० ६३ ।

पोत्तुल्लए-वस्त्रमयपुत्रिका । ज्ञाता० २३५ ।

पोत्थं-पोतं-वस्त्रम् । पुस्तकं-सम्पुटकरूपं, ताडपत्रादि । अनु० १३ । प्रोत्थं वस्त्रं प्रकृष्टोत्थानरूपम् । उत्त० ४७५ । प्रोत्था-प्रकृष्टोत्थानरूपा । उत्त० ४७५ । लेप्यगं । नि० चू० तृ० २ आ । पुस्तं-लेप्यम् । विशे० ६१५ । पुस्ते धीउल्लिकादि पुत्तलिकादि । ओघ० १२९ । पुस्तं-वस्त्रम् । ज्ञाता० १७९ । पुस्तं-वस्त्रम् । प्रश्न० १६० ।

पोत्थकम्म-पोत्थ-पोतं वस्त्रमित्यर्थः, तत्र कर्म्म-तत्पल्लवनिष्पन्नं धीउल्लिकारूपकमित्यर्थः, अथवा पोत्थं-पुस्तकं तच्चेह संपुटकरूपं गृह्यते, तत्र कर्म्म-तन्मध्ये वर्तिकालिखितं रूपकमित्यर्थः, अथवा पोत्थं-ताडपत्रादि तत्र कर्म्म-तच्छेदनिष्पन्नं रूपकम् । अनु० १३ । पुस्तकर्म-लेप्यकर्म । आचा० ४१४ ।

पोत्थकार-पोस्तकारः । अनु० १४९ ।

पोत्थगपणगं- । नि० चू० प्र० १८१ अ ।

पोत्थपणय-पुस्तकपञ्चकं-गण्डी १ कच्छपी २ मुष्टि ३ संपुटफलक ४ सृपाटिका ५ पुस्तकलक्षणम् । आव० ६५२ ।

पोत्थयं-पोतं-वस्त्रम् । अनु० ३४ । पुस्तकः-पत्रकसङ्घातनिष्पन्नः । अनु० ३४ ।

पोत्थयपणगं-गंडी-कच्छपी-मुष्टिः-सम्पुटफलः सृपाटिका रूपं पुस्तकपञ्चकम् । ठाणा० २३३ ।

पोत्थयरयणं-पुस्तकरत्नम् । जीवा० १३७ ।

पोत्रक-वृषणः । उपा० २२ ।

पोदकी-श्वापदविशेषः । उत्त० ४१७ ।

पोमे- । नि० चू० प्र० १९० अ ।

पोम्हं-अदसं । नि० चू० प्र० २४५ आ ।

पोय-पोतः शिशुः । आचा० २४८ । पोतः-ब्रह्मदत्तराज्ञोः पुरतीपिङ्गलयोः पिता । उत्त० ३७९ ।

पोयघाय-पोतघातः-शवघातकः । प्रश्न० १३ ।

पोयय-पोतजः-हस्त्यादिः । ओप० ३७ । पोतजः-वल्गुल्यादिः । भग० ३०३ ।

पोयया-पोता एव जायन्त इति पोतजाः हस्तिवल्गुलीजलौकाप्रभृतयः । दश० १४१ ।

पोयवहणं-पोतवाहनं-नौ । उत्त० २२१ ।

पोयसत्थो-पोतसार्थः-बोहित्थसमुदायः शावकसमूहो वा । प्रश्न० ३९ ।

पोयहंस-पोतहंसः-लोमपक्षिविशेषः । जीवा० ४१ ।

पोया-महती काहला । भग० २१६ ।

पोयाइ-पोताक्यः शकुनिकाः । विशे० ९८२ ।

पोयागी-पोताकी-शकुनिका । उत्त० १६९ ।

पोयाल-मृगादिपोतलकः । ओघ० १५८ । साण्डवृषभः । व्य० प्र० १८४ अ ।

पोर-अङ्गुष्ठपर्वः । ओघ० २१४, २१८ । नि० चू० प्र० १६१ अ ।

पोरकव्वं-पुरःकाव्यं-पुरतः पुरतः काव्यं-शीघ्रकवित्वम् । ज० प्र० १३७ ।

पोरग-हस्तिविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

पोरजाय-पर्वतजातम् । आचा० ३४९ ।

पोरपरिग्गहं-पोरं-अङ्गुष्ठपर्वं तस्मिन्नङ्गुष्ठपर्वणि लग्नया प्रदेशिन्या यद्भवति छिद्रं तद्यथा पूर्यते तेन दण्डनकेन बाह्यनिषद्याद्वयरहितेन तथा कर्तव्यं । अङ्गुष्ठपर्वप्रदेशिनीकुण्डलिकापूरणम् । ओघ० २१४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पोरबीय-पर्वगबीजं-इक्ष्वादि । आचा० ३४६ । पर्वबीजः-इक्ष्वादयः । ठाणा० १८७ । पर्वबीजः-इक्षुवंशवेत्रादि । आचा० ५७ । पर्वबीजं इक्ष्वादि । दश० १३६ ।

पोरवच्चं-पुरपतेः कर्म पौरपत्यं-सर्वेषामात्मीयानामग्रेसरत्वम् । जीवा० १६२ ।

पोराण-तित्थयरभासितो जस्सत्थो गंथो य गणधरनिबद्धो तं पाययबद्ध । नि० चू० द्वि० ३६ अ । पुराणं-प्रागुपात्तम् । दश० १७ । पुराणम् । भग० १६३ । पुरातनम् । सम० ३८ । पुराणः-जरठः, कक्खडीभूत इति । विपा० ३८ । अतीतकालभावि । ज्ञाता० २०५ । तीर्थकरगणधरलक्षणः पूर्वपुरुषः । बृ० तृ० १०३ अ ।

पोराणगा-पुराणतरा अज्ज, जस्स पपोत्तादिभावो । नि० चू० द्वि० २९ आ ।

पोराणय-पुरातनम् । मर० ।

पोराणिय-पुराणामेव पौराणिकीम् । उत्त० ३०६ । पुराणामेव पौराणिकीं-चिरन्तनीम् । उत्त० ३६७ ।

पोरायामं-अङ्गुष्ठपर्वणि प्रतिष्ठितायाः प्रदेशिन्या यावन्मात्रं शुषिरं भवति तदापूरकम् । ओघ० २१४ । पर्यायाम-अङ्गुष्ठपर्वप्रदेशिन्यपान्तरालायायम् । बृ० द्वि० २३६ अ ।

पोरिसि-पुरुषप्रमाणा पौरुषी आत्मप्रमाणा वीथी । आचा० ३०२ ।

पोरिसिअद्धा-पौरुषीकालः । ओघ० ६७ ।

पोरिसिमंडल-पुरुषः-शङ्कुः पुरुषशरीरं वा तस्मान्निष्पन्ना पौरुषी, पौरुषी यत्राध्ययने व्यावर्ण्यते तदध्ययनं पौरुषीमण्डलम् । नंदी० २०५ ।

पोरिसी-पौरुषी । आव० ८५२ ।

पोरिसीच्छाया-पुरुषे भवा पौरुषी तां पौरुषीं छायापौरुषीच्छाया । सूर्य० ६२ ।

पोरुष-पुरुषाणां समूहः पौरुषम् । उत्त० २६५ ।

पोरुसं-पौरुषेयं पदात्यादिपुरुषसमूहः । उत्त० २६५ । पौरुषेयं-पदातिसमूहः । उत्त० १८८ ।

पोरुसा-पुरुषाणां चरमावस्थां प्राप्ताः, अत्यन्तवृद्धा एव पौरुषाः । सूत्र० १५८ ।

पोरुसादा-पौरुषादाः-प्रस्तावात्पुरुषसम्बन्धिमांसभक्षका राक्षसा इति । उत्त० ३६४ ।

पोरेकच्चं-चतुर्दशकला । ज्ञाता० ३८ ।

पोरेवच्चं-पुरस्य पतिः पुरपतिः तस्य कर्म पौरपत्यं-सर्वेषामग्रेसरत्वम् । प्रज्ञा० ८६ । पुरोवर्त्तित्वं-अग्रगामित्वम् । सम० ८६ । पुरोवर्त्तित्वं-अग्रगामित्वम् । भग० १५४ । पुरस्य पतिः पुरपतिस्तस्य कर्म्म पौरपत्यं-पुरपतेः कर्म, सर्वेषामग्रेसरत्वम् । जीवा० २१७ ।

पोलंडे-पोलंडेत्ति-प्रकर्षेण द्विस्त्रिर्वोल्लघयति । ज्ञाता० ६१ ।

पोलास-पोलासं-श्वेतविकायामुद्यानविशेषः। आव० ३१५। पोलासं-चैत्यविशेषः । आव० २१६ । श्वेताम्ब्यामुद्यानविशेषः । उत्त० १६० ।

पोलासपुर-अतिमुक्तकुमारश्रमणवास्तव्यनगरम् । अन्त० ६ । विजयराजधानी । अन्त० २३ । जितशत्रो राजधानी । उपा० ३६ ।

पोलिन्दी-लिपिविशेषः, भाषार्ये अष्टादशमः । प्रज्ञा० ५६ ।

पोलियं-पोलिका । उत्त० १४७ ।

पोल्ल-अन्तःशुषिरः । उत्त० ४७८ । ऊषिरं जीवाश्रयस्थानमित्यर्थः । नि० चू० द्वि० ६० आ ।

पोल्लक-पोइल्लक-कटनिर्वर्तकमयोमयं चित्रसंस्थानम् । रुतपुणिकानिर्वर्त्तकं शलाकाशल्यकाङ्गरुहादिर्वा । आव० ४५६ ।

पोल्लर-शुषिरा । उत्त० ४७८ ।

पोल्लरुक्ख-शुषिरवृक्षः : ज्ञाता० ६३ ।

पोल्लिया-पोलिका । आव० ३५४ ।

पोवलिय-पोलिका । आव० ३४३ ।

पोषधोपवास-अन्यतमां तिथिमभिगृह्य चतुर्थाद्युपवासिना व्यपगतस्नानानुलेवनगन्धमाल्यालंकारेण न्यस्तसर्वसावद्ययोगेन कुशसंस्तारकफलकादीनामन्यतमं संस्तारमास्तीर्य-स्थानं वीरासननिषद्यानामन्यतममास्थाय धर्मजागरिका । तत्त्वा० ७-१६ ।

पोस-अपानम् । प्रश्न० ८३ । पोसः-अपानदेशः । जीवा० २७७ । पोसः-अपानदेशः । ज० प्र० ११७ । अधिष्ठानम् । ओघ० १८४ । तेन सेव्यमानेन पुष्यत इति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पोषः, आत्मानं वा तेन तेन पोषयतीति पोषः, तदर्थिनो वा तं पोषयतीति पोषः मृगीपदमित्यर्थः । नि० चू० प्र० २५२ आ । अपानदेशः । औप० १६ ।

पोसए–उपस्था । ठाणा० ४५१ ।

पोसणं–पोषणं–यवसादिदानतः पुष्टिकरणम् । प्रश्न० ३८ ।

पोसवत्थं–कामं पुष्णातीति पोषं कामोत्कोचकारि शोभनमित्यर्थः, तच्च तद्वस्त्र पोषवस्त्रम् । सूत्र० १०५ ।

पोससुद्ध–पोषमासशुद्धः । ज्ञाता० १५२ ।

पोसह–पोषधं पर्वदिनानुष्ठेयं तप उपवासादिः । ज० प्र० १९७ । पोषधः– अष्टमादिपर्वदिनम् । औप ८२ । पोषधः–पर्वोपवासः । प्रश्न० ३२ । पोषधः–व्रताभिग्रहविशेषः । सूत्र० ४०८ । आव० ७९३ । पोषं दधातीति पोषधम् । व्य० प्र० २८ आ । पोषधः–पोषणं पोषः, स चेह धर्मस्य तं धत्त इति पोषधः–आहारपोषधादिः । उत्त० २५१ । पोषं–धर्मपुष्टिं धत्त इति पौषधः अष्टम्यादितिथिषु व्रतविशेषः । उत्त० ३१५ । पोषधं-अभिमतदेवतासाधनार्थंकव्रतविशेषो अभिग्रहः । ज० प्र० १९७ । पोषधं पर्वम् । आव० ८३५ । पोषधं–अष्टम्यादिपर्वः । प्रज्ञा० ३९९ । पोषधशब्दोऽष्टम्यादिपर्वसु रूढः । उपा० ११ । पौषधं–पर्वदिनानुष्ठानम् । भग० १३६ । पोषधप्रतिमा–श्रावकस्य चतुर्थी प्रतिज्ञा । आव० ६४६ । पोषधः–पर्वदिनमष्टम्यादि । ठाणा १२६ । पोषधः–अष्टम्यादिपर्वदिनं, तत्रोपवसनं–आहारशरीरसत्कारादित्यागः । सम० १२० । पोषधं–पर्वादिनानुष्ठानमुपवासादि । ज्ञाता० ३४ ।

पोसहपडिमा–पोषधकाले प्रतिमा, पञ्चमी श्रावकप्रतिमा । आव० ६४६ ।

पोसहिय–पौषधिकः–आसन्नपारितपोषधव्रतः । ज० प्र० २१३ । पोषधिकः–अष्टम्यादिषु पर्वेषु परं तपः कारयतः व्य० द्वि ३९६ अ ।

पोसहियतव–पौषधिकः–अष्टमीपाक्षिकादिपोषधे भवं पौषधिकं तच्च तत् तपश्च पौषधिकतपः । व्य० प्र० २८ आ ।

पोसहोववास–पौषधः पर्वदिनमष्टम्यादि तत्रोपवसनं, अभक्तार्थः–पौषधोपवासः । ठाणा० २३६ । पौषधोपवासः अष्टम्यादिषु पर्वदिनेषूपवसनं आहारशरीरसत्काराब्रह्मव्यापारपरिवर्जनमित्यर्थः । ज्ञाता० १३४ । पोषधः रूढया पर्वः, पर्वाणि–अष्टम्यादितिथयः, पूरणात् पर्व, धर्मोपचयहेतुत्वादित्यर्थः पौषधे उपवासनं पौषधोपवासः नियमविशेषाभिधानं चेदं पौषधोपवासम् । आव० ८३५ । पौषधोपवासः–पर्वदिनोपवसनम् । भग० ३६८ । पौषधोपवासः–पर्वदिनोपवासः । भग० ३२३ । पौषधोपवासः–अष्टम्यादिपर्वदिनेषूपवसनम् । औप० १०१ । पौषधोपवासः । आव० ८३५ ।

पोसहोववासनिरय–पोषं-पुष्टिं कुशलधर्मणां धत्ते यदाहारत्यागादिकमनुष्ठानं तत्पौषधं तेनोपवसनं–अवस्थानमहोरात्रं यावदिति पौषधोपवास इति, अथवा पोषधं–पर्वदिनमष्टम्यादि तत्रोपवासः–अभक्तार्थः पौषधोपवास इति, इयं व्युत्पत्तिरेव, प्रवृत्तिस्त्वस्य शब्दस्याहारशरीरसत्काराब्रह्मचर्यव्यापारपरिवर्जनेष्विति, तत्र पौषधोपवासे निरतः–आसक्तः पौषधोपवासनिरतः (यः) सः । श्रावकस्य चतुर्थी प्रतिमा । सम० १९ ।

पोह–गोमयं छगणपोहः । पिण्ड० ८३ ।

पोहत्तं–पृथुत्वम् । भग० १३१ । पृथुत्वं–विस्तारः । प्रज्ञा० २९३ ।

पोहत्तिए–पृथत्वसूत्रं–बहुवचनसूत्रम् । भग० २१८ ।

पोहत्तं–विस्तारो । नि० चू० प्र० १३९ अ ।

पोहदरा– । नि० चू० प्र० १२६ अ ।

पोण्डक–पौण्डर्जं–यद्वमनितिन्दुकोद्भवं यथा कर्पाससूत्रम् । उत्त० ५७१ ।

पोण्डरीक–षष्ठं महाकुष्ठम् । प्रश्न० १६१ । सप्तममहाकुष्ठो पञ्चमः । आचा० २३५ ।

पोद्गलिक–व्य० द्वि० १७४ आ ।

पौरुषघ्नी–भिक्षाविशेषः । उत्त० २० ।

पौलाषाढ–चैत्यविशेषः । विशे० (?) ।

पौलोमी–इन्द्राणी । नंदी० १५० ।

प्पिणण–अर्प्पणम् । आव० १०३ ।

प्र–'प्र'शब्दः–अनुवृत्तार्थे । ज० प्र० ४१५ । 'प्र'शब्दः आदिकर्मार्थः । ज०प्र० २५ । 'प्र'शब्दः आदिकर्मार्थत्वे । ठाणा० १४३ ।

प्रकटत्व–आविर्भावः । विशे० १०६२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकम्पित–विधूतः, अपनीतः । आव० ५०७ ।
प्रकर–धान्यस्य मर्दनम् । ओघ० ७५ ।
प्रकरण–संङ्खडी । ओघ० ४७ । जिनवचनमुपादातुं प्रकारः । आव० ६८ । प्रकृतं, प्राघूर्णभोजनादिकम् । पिण्ड० १४८ । आचा० ३२८ ।
प्रकर्ष–भावसारम् । दश० ११६ ।
प्रकर्षगति–पारम्पर्यम् । आचा० १७४ ।
प्रकामशायी–अतिनिद्रः । दश० २३५ ।
प्रकारकात्स्न्र्यम्–कतिचित्पर्यायान्वितम् । उत्त०५५५ (?)
प्रकाशः–श्वेतता । सुर्य० ६ । ओजः । सुर्य० ७ ।
प्रकाशक्षेत्र–उदयास्तान्तरं तापक्षेत्रम् । ज० प्र० ४५५ ।
प्रकाशदीप–प्रकाशाय दीपः प्रकाशदीपः । आचा० २४७ ।
प्रकीर्णक–चामरम् । प्रश्न० ७० । पौरजनपदस्थानीयः । तत्त्वा० ४–४ ।
प्रकीर्णकथा–सा चोत्सर्गकथा, द्रव्यास्तिनयकथा वा, कथायाः चतुर्थो भेदः । सम० २४ ।
प्रकृतिः–प्रजा । आचा० ११, २८१ ।
प्रकृष्ट–प्रधानः । सूय० ६ । सर्वसूक्ष्मः–निरंशः । अनु० ६७ ।
प्रेक्षते–गणयति आलोचयति च । आ० (?) ५२६ ।
प्रेक्षापूर्वकारिता– । आव० ८५० ।
प्रक्षेपक–साधुनामेवार्थाय या वस्त्रस्थापना स । बृ० प्र० १०२ अ ।
प्रगाढा–प्रकर्षवती । ठाणा० ४६१ ।
प्रगुणं–सरलम् । उत्त० १२६ ।
प्रगृहीततरं–पूर्वस्थानाद् भक्तपरिज्ञेङ्गितमरणरूपात्प्रकर्षेण ग्रहोऽत्र पादपोपगमने, प्रग्रहिततरमेतदित्यर्थः । आचा० २९४ ।
प्रगृहीता–षष्ठी पिण्डैषणा । आचा० ३५७ ।
प्रग्रहः–रश्मिः । उत्त० ५०७ ।
प्रचय–कायः । ठाणा० २१७ ।
प्रचुरा–प्रशस्ता अतिशायिनी वा । ठाणा० ३३२ ।
प्रजन–प्रसवः । नंदी० १६१ । चिह्नम् । बृ० द्वि० २४ अ ।
प्रज्ञप्ति–स्वसमयप्ररूपणा । व्य० प्र० २८९ । विद्यादेवी नामनिक्षेपः । ज० प्र० ९ ।
प्रज्ञप्तिविद्या–विद्याविशेषः । विशे० ६१० ।
प्रज्ञा–स्वबुद्धिः । सुय० ३६८ । बुद्धिः । ठाणा० ५१९ । प्रकर्षेण ज्ञायते उत्सर्गापवादः तत् । बृ० प्र० १३० अ ।
प्रज्ञापना–प्रज्ञापनोपाङ्गं तस्यैव प्रथमं पदं च । जीवा० ४१६ ।
प्रज्ञाप्तं–प्रज्ञया भव्यजन्तुभिराप्तं–प्राप्तम् । अनु० २ ।
प्रज्ञाप्तभूमिः– । व्य० द्वि० ४४९ अ ।
प्रणाला–जिह्विका । ज० प्र० २९१ ।
प्रणालिका–कढिः । जीवा० ८ ।
प्रणिधानं–प्रयोगः । आव० ८३४ । प्रणिधानम् । भग० ५० (?) ।
प्रणिहितेन्द्रिय–पिहितेन्द्रियः । प्रश्न० १६० ।
प्रतनुकषायं– । आव० १२६ ।
प्रतर– । दश० १५७ ।
प्रतरपरिमण्डलं–विंशतिपरमाण्वात्मकं विंशतिप्रदेशावगाढं च, तच्चैवं–प्राच्यादिषु चतसृषु दिक्षु प्रत्येकं चत्वारश्चत्वारोऽणवः स्थाप्यन्ते विदिक्षु च प्रत्येकमेकैकोऽणुः स्थाप्यते । प्रज्ञा० १२ ।
प्रतरभेद–अभ्रपटलस्येव । ठाणा० ४७५ । अभ्रपटलानामिव यो भेदः । भग० २२४ ।
प्रतारयति–छलति । नंदी० १५७ ।
प्रति–अनुरूपं–समानम् । नंदी० ४१ ।
प्रतिकारविधिः–उपायविधिः । नंदी० १६२ ।
प्रतिकृति–प्रतिमा । आचा० ८० । सदृशः । सूर्य० २६४ ।
प्रतिक्रमण–मिथ्यादुष्कृतसंप्रयुक्तः प्रत्यवमर्शः प्रत्याख्यानं कायोत्सर्गकरणं च । तत्त्वा० ९–१२ ।
प्रतिचारग–प्रतिचारकः । आव० २०९ ।
प्रतिच्छन्दभूतः–सदृशः । नंदी० १४७ ।
प्रतिच्छन्ना–भूते नवमभेदः । प्रज्ञा० ७० ।
प्रतिजिह्वा–शरीरावयवः । प्रज्ञा० ४७३ ।
प्रतिजिह्विक–आत्मोपघातकः । सम० ६७ ।
प्रतिज्ञप्त–वैयावृत्यकरणायापरैः उक्तः – अभिहितः । आचा० (?) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रतिज्ञापनम्- । नंदी० १७६ ।
प्रतिद्वन्दी-प्रतिपक्षी । नंदी० १५० ।
प्रतिनियत-प्रतिभक्तम् । प्रज्ञा० ३२६ ।
प्रतिनिर्यातव्य-समर्प्पणीयम् । व्य० द्वि० ३०७ आ ।
प्रतिपत्तिः-सर्वातिशयनिधानमतीन्द्रियार्थोपदर्शनाव्यभिचारि चेदं जिनप्रवचनमित्येवंरूपा प्रतिपत्तिः । सम० १२५ । रीतिः । आव० ४४१ । कालः । प्रज्ञा० ३८५ । नंदी० १६७ । वार्त्ता । वारकः । नंदी० ५१ । उपमा । व्य० प्र० २७४ ।
प्रतिपादनताः-प्रतिपत्तय इति विग्रहः । सम० १२० ।
प्रतिबोधक-गृहचिन्तकः । व्य० प्र० २२२ अ ।
प्रतिभा-प्रकाशः । जीवा० १६४ । मतिविशेषः । प्रज्ञा० ५६ ।
प्रतिभासः- । सूय० ७ ।
प्रतिमा-कायोत्सर्गः । आव० १४३ ।
प्रतिमाकल्पिकः-साधुभेदविशेषः । भग० ४ ।
प्रतिमानं-गुञ्जा,वल्लादि । ठाणा० १६८ । सुवर्णादिमानहेतुः गुञ्जादि । जं० प्र० २२७ ।
प्रतिमाप्रतिपत्तिः-प्रतिज्ञा । ठाणा० ३८१ ।
प्रतिराश्यते- । सूर्य० २११ ।
प्रतिरूप-असाधारणं रूपं आकारो यस्य स । सूर्य० २ ।
प्रतिरूपकव्यवहार-सुवर्णरूप्यादीनां द्रव्याणां प्रतिरूपकक्रियाव्याजीकरणानि च । तत्त्वा० ७-१६ ।
प्रतिरूपयोगयोजन-औपचारिकविनयविशेषः । उत्त० ५० ।
प्रतिरूपा-भूतद्वितीयो भेद । प्रज्ञा० ७० ।
प्रतिवचन-उत्तरम् । सूर्य० ११ ।
प्रतिविधान-उपायः । नंदी० ६१ ।
प्रतिविशिष्ट-असाधारणम् । सूर्य० २ ।
प्रतिवृषभग्रामः- । बृ० प्र० ३०५ आ ।
प्रतिशठः-प्रतिपक्षी शठः । नंदी० १५२ ।
प्रतिशब्दः-पडहवाची । नंदी० १७३ ।
प्रतिशलाकापल्यः-सङ्ख्यापरिमाणे द्वितीयःपल्यः । अनु० २३७ ।
प्रतिश्रान्तः-विश्रान्तः । बृ० द्वि० १५ आ ।
प्रतिश्रुतिः- जं० प्र० १७७ ।
प्रतिष्ठा-गाथा निश्चितिश्च । आव० ८०४ ।
प्रतिष्ठानपुरं-विद्यामन्त्रद्वारविवरणे मुरुण्डराजधानी । पिण्ड० १४२ ।
प्रतिष्ठितः- । व्य० द्वि० ३६० आ ।
प्रतिसंलीन-गुरुसकाशेऽन्यत्र वा कार्यं विना न यतस्ततश्चेष्टते । उत्त० ३४७ ।
प्रतिसंलीनताप्रतिमा-पञ्चप्रतिमायां चतुर्थी । सम० ६६ ।
प्रतिसेवक-कारणभावेऽपि पञ्चकादीनि प्रायश्चित्तस्थानानि प्रतिसेवते । व्य० प्र० ३११ ।
प्रतिसेवना-सम्यगाराधनविपरीता प्रतिगता वा सेवना । ठाणा० ३३७ ।
प्रतिसेवनानुलोम्य-आलोचनानुलोम्यः, ये यथाऽऽसेवितः । आव० ७८१ ।
प्रतिसेवमानः-प्रथमभङ्गवर्त्ती । व्य० प्र० ८ आ ।
प्रतीत्यमहत्-आपेक्षिकम् । दश० १०० ।
प्रतोली-नगरद्वारम् । नंदी० १४६ । नगरस्यैव कपाटम् । सम० १३८ ।
प्रत्यग्रं- । आचा० २४४ ।
प्रत्यञ्चा-ज्या-धनुष्यारोप्यमाणा रज्जुः । भग० १६३ । जीवा-दवरिकेति । सूर्य० २२ । दवरिका । सूर्य० ४८ । जीवा-दवरिका । सूर्य० २३३ । धनुःसत्का जीवा । उत्त० ३११ ।
प्रत्यय-उपयोगः । विशे० ३६ ।
प्रत्ययिकः- । आचा० १०६ । उत्त० ३७८ ।
प्रत्यर्पणम्- । आव० ४४१ ।
प्रत्यवतारः- । भग० २६ (?) ।
प्रत्यवस्था-समाधानम् । आचा० १२ ।
प्रत्यवस्थान-प्रतिवचनम् । बृ० प्र० १३६ अ । गुरुकथनम् । दश० २१ ।
प्रत्याख्याताशनादिभोजनं-सप्तमः शबलः । प्रश्न० १४४ ।
प्रत्याख्यान-कषायस्य द्वितीयो भेदः । आचा० ६१ ।
प्रत्याख्यानक्रिया-सूत्रकृताङ्गद्वितीयश्रुतस्कंधे तृतीयमध्य-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यनम् । ठाणा० ३८७ ।
प्रत्याख्यानत्रय-संभोगोपकरणाहाराणां प्रत्याख्यानम् । उत्त० ५८८ ।
प्रत्याख्यानपूर्वम्- । आचा० ३२० ।
प्रत्याचक्षीत-अपनुहुवीत । आचा० ४४ ।
प्रत्याचक्षे-प्रतिषेधस्यादरेणाभिधानं करोमीति । आव० ४५५ ।
प्रत्यात्मेन्द्रकाणि-अहमिन्द्राणि । सम० ४३ ।
प्रत्यालीढ-आलीढाद्विपरीतं स्थानम्, पश्चस्थाने द्वितीयम् । उत्त० १०५ । अग्रतो मुखमाधाय दक्षिणमुरुं पश्चान्मुखमपसारयति अन्तरा चापि पादवोन्यं च पादास्ततः पूर्वप्रकारेण युध्यते तत्प्रत्यालीढम् । व्य० प्र० ४६ आ । तृतीयं योधस्थानम् । आचा० ८६ । ठाणा० ३ ।
प्रत्यावर्त्तः-नाट्यविशेषः । जं० प्र० ४१४ ।
प्रत्यासत्तिः-न्यायविशेषः । विशे० ५७ । ७६४ ।
प्रत्युत्पन्न-लोकरूढम् । ठाणा० ४९७ ।
प्रत्युपेक्षितं-आलोकितम् । आचा० ४२८ ।
प्रत्युपेक्षेत-पर्यालोचयेत् । आचा० ३५१ ।
प्रत्यूषः घोषः । आव० ७८१ ।
प्रत्येकबुद्धाः-प्रतीत्यैकं किञ्चित् वृषभादिकं अनित्यतादिभावनाकारणं वस्तु बुद्धाः-बुद्धवन्तः परमार्थमिति प्रत्येकबुद्धाः । ठाणा० ३३ ।
प्रथमानुयोग-तीर्थकरादिपूर्वभवादिव्याख्याग्रन्थः । ठाणा० ४ । दृष्टिवादे चतुर्थो भेदः । सम० ४१ ।
प्रथमालिकार्थम्- । आचा० २६५ ।
प्रदर्शन-चिह्नम् । आव० ८३० ।
प्रदर्श्यन्ते उपमाप्रदर्शनेन । नंदी० २१२ ।
प्रदानं-त्यः सम्प्राप्तो घनोत्सर्गः, उत्तमाधममध्यमः । प्रतिदानं तथा तस्य, गृहीतस्यानुमोदनम् ।" ठाणा० १५२ ।
प्रदीपित-ज्वालितम् । उत्त० ३७८ ।
प्रदेशनिष्पन्न-द्रव्यप्रमाणे प्रथमो भेदः । ठाणा० १६८ ।
प्रदेशार्थता-प्रकृष्टो देशः प्रदेशो निरवयवोऽंशः, स चासावर्थश्चेति प्रदेशार्थः, तस्य भावः प्रदेशार्थता-गुणपर्यायाधारा(रता) अवयवलक्षणार्थतेतियावत् । ठाणा० ११ । निरंशदेशार्थता परमाणुत्वमितिभावः । अनु० ६७ ।
प्रदेशोदीरणा-प्राप्तोदयैर्नियतपरिमाणकर्म्मप्रदेशैः सहाप्राप्तोदयानां नियतपरिमाणानां कर्म्मप्रदेशानां यद्वेदनं सा । ठाणा० २२१ ।
प्रदोषसमयः-प्रातःसमयः । जीवा० १६३ ।
प्रद्युम्न-कृष्णस्य अहमधन्यत्वे दृष्टान्तः । ठाणा० ४३३ ।
प्रद्योतः-गणिकाभिरभयकुमारवञ्चकः । सूत्र० ३२६,३१३ । वारत्रकमहर्षेरुपहसिता । बृ० प्र० ३०६ आ ।
प्रद्वेषः-वैरम् । उत्त० २६५ ।
प्रधानः-महान् प्रभूतो वा । आव० ५९६ ।
प्रधानक्षत्रिय-संकरक्षत्रियः-द्विजेन क्षत्रिययोषितो जातः । आचा० ८ ।
प्रधानफरक-वरफलकम् । प्रश्न० ४७ ।
प्रधानाग्र-सचित्तादि । आचा० ३१८ ।
प्रधावसि-प्रकर्षेण प्रकृतो वा धावसि । बृ० प्र० १९१ आ ।
प्रपञ्चते-व्यक्तीकरोति । ठाणा० ५२० ।
प्रपञ्चयति-लंबयति विस्तारयति । ठाणा० ५२० ।
प्रपञ्चितज्ञः-विनेयविशेषः । उत्त० ४७ । प्रज्ञा० ४२५ ।
प्रपतन्तो- । ठाणा० ३२८ ।
प्रपुन्नाटा-स्वापविबोधवत्यौषधिः । आचा० ६६ ।
प्रबध्नाति-ग्रन्थिबन्धं करोति । भग० २०२ ।
प्रभञ्जन-लोकपालविशेषः । ठाणा० २०५ । रत्नसञ्चयकूटाद्वितीयनाम । ठाणा० २२४ ।
प्रभव जम्बूस्वामिशिष्यः परम्परागमवान् । आव० ५७ । नालोद्घाटिन्यवस्वापिन्यादिभिरुपेतः चोरः । व्य० प्र० २४० । चतुर्दशपूर्वी । उत्त० २४० । अनाचीर्णे दृष्टान्तः । बृ० प्र० १६६ अ ।
प्रभवा-प्रभवति । उत्त० ३५२ ।
प्रभविष्णुः-सहिष्णुः । बृ० प्र० १७६ अ ।
प्रभा-आकारम् । ज० प्र० ३१६ ।
प्रभावकः- (?) १-१-३ ।
प्रभावति-उदायनराज्ञी । प्रश्न० ८६ ।
प्रभावित्छुरितं- । नंदी० १६७ ।
प्रभास-वृतवैताढ्ये देवः । ठाणा० ७१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रभूतः-महान् प्रधानो वा । आव० ५९६ ।
प्रभूताग्रं-द्वितीयं भावाग्रम् । आचा० ३१८ ।
प्रभूतविदर्पितार्थं-लब्धार्थः । सूर्य० १९२ ।
प्रमर्दं-चन्द्रः मध्येन तेषां गच्छतीत्येवंलक्षणम् । सम० १४ ।
प्रमर्हंता-परिणतवया । नि० चू० प्र० २६७ अ ।
प्रमाणं-निश्चितं निर्गमः । ठाणा० ४३५ । स्वाङ्गुले-नाष्टोत्तरशताङ्गुलोच्छ्रयता । भग० ११९ । शास्त्रीयोपक्रमे तृतीयः । आव० ५६ । शास्त्रीयोपक्रमे तृतीयः । ठाणा० ४ । स्वलक्षणम् । ठाणा० ४९३ ।
प्रमाद-स्मृत्यनवस्थानं कुशलेष्वनादरः योगदुष्प्रणिधानं च । तत्त्वा० ८-१ ।
प्रमादनिष्ठ-प्रमादपरः । आव० ५८८ ।
प्रमादबहुलः-प्रमादैर्बहुलो व्याप्तः । उत्त० ३३६ ।
प्रमेयरत्नमञ्जूषा-जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तिनाम । ज० प्र० १, ८८ । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिवृत्तिः । ज० प्र० ४२४ । जम्बू-द्वीपप्रज्ञप्तिटीका । ज० प्र० ५४६ । जं० प्र० १ ।
प्रमोद-विनयप्रयोगः वन्दनस्तुतिवर्णवादवैयावृत्यकरणा-दिभिः सम्यक्त्वज्ञानचारित्रतपोऽधिकेषु साधुषु पश्चात्मो-भयकृतपूजाजनितः सर्वेन्द्रियाभिव्यक्तो मनःप्रहर्षः । तत्त्वा० ७-६ । व्य० प्र० २१७ अ ।
प्रमोदविजय-गृहविशेषः । ज० प्र० २०९ ।
प्रम्लानम्- । ओघ० १३४ ।
प्रयत्न-आदरः । ज० प्र० १९२ ।
प्रयोगमतिसम्पत्-आत्मपुरुषक्षेत्रवस्तुविज्ञानात्मिका । उत्त० ३९ ।
प्रयोजन-करणम् । नंदी० १४४ । प्रस्तावः । विशे० ८५९ ।
प्रलंब-प्रकर्षेण लंबते प्रलंबं मूलम् । बृ० प्र० १३५ अ । मूलम् । बृ० प्र० ३५ आ ।
प्रलप्तं-भाषणम् । राज० ५ ।
प्रलयीभूताः-नष्टाः । उत्त० २६३ ।
प्रलेपः-चित्रादौ । आव० ८८ ।
प्रवचन-श्रुतम् । विशे० ४१६ ।
प्रवर्हति- । उत्त० ३५२ ।
प्रवादः-किंवदन्ती । नंदी० ६१ । संलापः । आव० २४१ ।
प्रवाल-हरितम् । आचा० २८५ ।
प्रवाहः-वंशः, आवलिका । ज० प्र० २५८ । सन्तानः । आव० ६०१ । आचा० ३४१ । वंशः, आवलिका । ज० प्र० १६६ ।
प्रविष्टतिर्यक्शल्यं- । नंदी० १५५ ।
प्रवी(वि)चारः-मैथुनविषयोपसेवनम् । तत्त्वा० ४-८ ।
प्रवीचारः-परिचारः मैथुनोपसेवनम् । प्रज्ञा० ५४९ ।
प्रवृत्तिः-गतिः । विशे० २२० ।
प्रवेशः-आगमनम् । ठाणा० २९४ ।
प्रव्रज्या- । नंदी० ४४ ।
प्रव्राजनाचार्य-दीक्षादाताचार्यः । ठाणा० २९९ ।
प्रव्राजयति-समस्तं लोचं करोतीति भावः । व्य०द्वि० ६१ अ ।
प्रव्राजयितुं सामायिकार्पणतः । व्य० द्वि० २१९ अ ।
प्रशंसा-ज्ञानदर्शनगुणप्रकर्षोद्भावनम् । तत्त्वा० ७-८ ।
प्रश्न-अङ्गुष्ठादिप्रश्नविद्या, विद्याविशेषश्च । प्रश्न० १ । संशयापन्नो असंशयार्थं विद्वत्सन्निधौ स्वविवक्षासूचकं वाक्यम् । आव० ६८ ।
प्रश्नवाहन-कुलविशेषः । अनु० २७१ ।
प्रश्नव्याकरण-प्रश्नाः अङ्गुष्ठादिप्रश्नविद्या व्याक्रियन्ते-अभि-धीयन्तेऽस्मिन्निति । प्रश्न० १ ।
प्रश्रवण-मूत्रम् । ठाणा० ३४३ । प्रज्ञा० १०५ ।
प्रश्रेणि-नाट्यविशेषः । ज० ४१४ ।
प्रसङ्ग आसेवनारूपः । आव० ६६० ।
प्रसङ्गसाधन-न्यायविशेषः । विशे० ९६९ ।
प्रसन्न- । आचा० ३३० ।
प्रसन्नचन्द्र-स्वल्पकालेन सप्तमनरकप्रायोग्यमसतावेदनीय-कर्मबन्धकः । विशे० ८४५ ।
प्रसभं-प्रसभम् । ओघ० १२६ ।
प्रसरं समन्ततः । पिण्ड० १३६ ।
प्रसूता-जङ्घा । प्र० ७० (?) ।
प्रसेनजित्-श्रेणिकपिता । नंदी० १५० ।
प्रस्खलन्ति-गत्या प्रपतन्ती । ठाणा० ३२८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्ताव-अधिकारः-प्रयोजनम्। विशे० ८५९। अवसरः। विशे० ८३७।
प्रस्फोटका-चक्षुषा निरूप्य परावर्त्य । ठाणा० ३६२ ।
प्रहतः- । आचा० ४४ ।
प्रहरणं-अस्त्रम् । भग० ९४ ।
प्रहसनिका-हासः । प्रश्न० १३९ ।
प्रहेणक-फलिकम् । ठाणा० १४८ । ओप० ३९ ।
प्रहेलिका-कुहेटका। वक्रोक्तिविशेषरूपा। बृ० प्र० ९१३ आ ।
प्रहेलिकादानं-क्रीडादानम् । उत्त० ४७ ।
प्रन्हुत-प्रच्छुतम् । प्रश्न० १९ ।
प्रांशुत्व-महाकायः । सूत्र० २७७ ।
प्राकारकः- । आ० ८३५ ।
प्राकारकोष्ठकं-अट्टालकम् । उत्त० १११ ।
प्राकृत-सामान्यः । भग० ८ ।
प्राग्भार- । आचा० २२९ ।
प्राग्विदेह-निषधपर्वते चतुर्थंकूटम्। ठाणा० ७२ ।
प्राचुर्य-उत्पूरम् । प्रश्न० ४३ ।
प्राजनकः-तोत्रम् । उत्त० ६२ । तोत्रम्। उत्त० ५४८।
प्राजिता-सारथिः । भग० ३२२ ।
प्राज्ञाप्त-प्राज्ञात्-तीर्थंकरादाप्तं प्राज्ञाप्तं गणधरैरिति गम्यते, अथवा प्राज्ञैः-गणधरैराप्तं प्राज्ञाप्तम् । नंदी० ६५ ।
प्राञ्जलता- । उत्त० ५९० ।
प्राञ्जलाः- । विशे० २०७ ।
प्राणः- । भग० ११२ ।
प्राणतकल्प-देवलोकः । आव० १७७ ।
प्राणापानपर्याप्ति-यया पुनरुच्छ्वासप्रायोग्यानि दलिकान्यादायोच्छ्वासरूपतया परिणमय्यालम्ब्य मुञ्चति सा। बृ० प्र० १८४ आ ।
प्रातःसमय-प्रदोषसमयः । जीवा० १९३ ।
प्रातिभं-"प्रज्ञा नवनवोल्लेखशालिनी मता" सैव प्रातिभं, नत्वत्र श्रुतकेवलातिरिक्तं सामर्थ्ययोगजन्यं प्रातिभम् । ज्ञानम्, आ, (?) ९ ।
प्रातिवेशिक- । आचा० ३७१ ।
प्रादोषिका-सूत्रपौरुषीम् । ओघ० २२ ।
प्रादोशिकादिः-कालविशेषः । उत्त० ५८३ ।
प्राप्तख्यातिः-लब्धशब्दः । प्रश्न० ७१ ।
प्राप्ति-देशान्तरविषया पर्यायान्तरविषया च । प्रज्ञा० ३२८ ।
प्राबल्येन मुक्तः-उन्मुक्तः पृथग्भूतः । आव० ५०८ ।
प्राभृतं-पूर्वान्तरगतः श्रुतविशेषः । विशे० ५०६ । आव० ६८ । प्राभृतं-इष्टः श्रुतस्कंधः । व्य० द्वि० ७८ अ ।
प्राभृतिका-दानार्थं कल्पिता वसतिरिह गृह्यते । आचा० ३६९ । भिक्षा । आव० ४७८ ।
प्रायश्चित्त-दानादित्रिप्रकारं प्रायश्चितम् । बृ० प्र० ४८ आ ।
प्रायसः-उत्सन्नं । आव० २८५ ।
प्रायिकत्वं-कादाचित्कत्वम् । ठाणा० ५६ ।
प्रायोगिक-कुसुम्भरागादिः, नोकर्मद्रव्यरागभेदः । आव० ३८७ ।
प्रार्थयति-निरूपयति । ओघ० ७९ ।
प्रार्थित-लब्धुमाशंसितः । ज्ञाता० ३४ ।
प्रार्यिका-प्रार्जिका मातृमातुः पितृमातुर्वा माता । दश० २१६ ।
प्रार्वत्तत- । नंदी० १५७ ।
प्रावचनः-कालापेक्षया बह्वागमः पुरुषः । भग० ६१ ।
प्रावरण- । दश० २५२ ।
प्रावीण्यं-कुशलत्वम् । उत्त० १४३ ।
प्रासाद-उच्छ्रितं गृहम् । आव० ८२६ ।
प्रासादबहुल-प्रासादीयः । सूर्य० २ ।
प्राहारिकपुरुष-रक्षकपुरुषः । उत्त० ३५१ ।
प्राहुणक-आदेशः । उत्त० २७५ ।
प्रियङ्कर-आधाकर्मरहितशुद्धाहारगवेषकः क्षपकः । पिण्ड० ७५ ।
प्रियङ्गु-पुष्पविशेषः । जीवा० १३६ ।
प्रियङ्गुरुचिका-गोचरविषयोपयुक्ततायां गुणसेनपत्नी । पिण्ड० ७८ ।
प्रियङ्गुलतिका-गोचरविषयोपयुक्ततायां गुणचन्द्रपत्नी । पिण्ड० ७८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रियङ्गुसारिका-गोचरविषयोपयुक्ततायां गुणशेखरपत्नी । पिण्ड० ७८ ।

प्रियङ्गुसुन्दरी-गोचरविषयोपयुक्ततायां गुणचूडपत्नी । पिण्ड० ७८ ।

प्रियदर्शना-आधासंवासदृष्टान्ते वसन्तपुरे अरिमर्दन । (?)

प्रियमति-परग्रामदूतोत्वदोषविवरणे धनदत्तस्त्री । पिण्ड० १२७ ।

प्रीति-बाह्या प्रतिबन्धः । उत्त० ३९४ ।

प्रीतिदानं-यत्पुनः स्वनगरे भगवदागमननिवेदकाय नियुक्ताय वा हर्षप्रकर्षाधिरूढमानसेदीयते तत् । बृ० प्र० १९९ अ । आव० २३० ।

प्रेतभूमिः-श्मशानम् । उत्त० ६६५ ।

प्रेत्य-मृत्वा पुनर्जन्म-परलोकः । आव० २४२ ।

प्रेत्यसञ्ज्ञा-प्राक्तनी घटादिविज्ञानसंज्ञा । आव० २४३ ।

प्रेरयति-विनयति अतिवाहयति च । प्रश्न० ६४ ।

प्रेहा-प्रेक्ष्य । नि० चू० द्वि० २२ आ ।

प्रोथः-घ्राणम् । ज० प्र० २३७ ।

प्रोषितः-विदेशप्राप्तः । नंदी० १६३ ।

प्रोषितपिता-श्रोत्रेन्द्रियनष्टः । भक्त० ।

प्रौढी- । आचा० १०६ ।

प्रम\
प्रमेय२

आगमोद्धारक-आचार्यश्रीआनन्दसागरसूरिसङ्कलित—

अल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोशस्य

तृतीयो भागः

समाप्तः

॥ श्रेष्ठी देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फण्डे ग्रन्थाङ्क. ११६ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शेठ देवचंद्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फंड

गोपीपुरा बडेखांनो चकलो, सुरत.

वेचाणमां नवीन पुस्तको

	नाम		सम्पादक	किंमत
१०१, ११५	अल्पपरिचितसैद्धांतिक शब्दकोष	भाग १+२	गणि कंचनसागरजी	६+५
१०३	दशवैकालिक वृत्ति (सुमति साधुकृत)		गणिकंचनसागरजी	३-००
१०४, ११२	उत्तराध्ययन-अवचूरि	भाग १+२	गणिकंचनसागरजी	४+५
१०५	पिंडनिर्युक्तिअवचूरि		गणिकंचनसागरजी	३-००
१०६	श्राद्धविधिकौमुदी		आ० विजयविक्रमसूरिजी	४-००
१०७, ११३	नंदीअवचूरि	भाग १+२	आ० म० विजयविक्रम सूरिजी	प्रेसमां
१०८	आवश्यकअवचूर्णि	भाग १+२	पं० मानविजयजी	५+३
१०९, ११०	सुयगडांगदीपिका	भाग १+२	पं० बुद्धि मुनिजा	५+३
१११	जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिचुर्णिकरण		गणि अभयसागरजी	प्रेसमां
११४	ज्ञातासूत्र		पं० भद्रंकर विजयजी (आ० लब्धिसूरिम०ना)	,,
११६	अल्पपरिचित०कोश.	भाग ३	गणिकंचनसागरजी	,,
११७	भगवती अवचूरि		आ० म० विजयविक्रमसूरिजी	,,
११८	आचारांग दीपिका		,, ,, ,,	,,
११९	जंबुवृत्ति		गणिअभयसागरजी	,,
१२०	योगशास्त्रभाषान्तर		आ० हेमसागर सूरिजी	,,
१२१	ओघनिर्युक्तिअवचूरि		गणिसूर्योदयसागरजी	,,
१२२	स्थानांग दीपिका		मित्रानंद विजयजी (पं० भानू विजयना शिष्य)	,,
१२३	आवश्यक अवचूर्णि	भाग ३जो	मुनि प्रमोदसागरजी	,,
१२४	चउपन्न महापुरिस चरियं भाषान्तर		आ० हेमसागर सूरिजी	,,
१२५	जीवाभिगम हारिभद्रीय		पं० मानतुंग विजयजी (आ० रामसूरिना शिष्य)	
१२६	अल्पपरिचित०कोष	भाग ४	गणि कंचन सागरजी	,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

શેઠ દેવચંદ લાલભાઇ જૈન વિદ્યાર્થી ભવન

જે મકાનમાં શેઠ દેવચંદ લાલભાઇ જૈન પુસ્તકોદ્ધાર ફન્ડ
પ્રકાશિત પુસ્તકોનો સંગ્રહ છે તેમજ પુસ્તકાલય છે.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org